एक ही परमेश्वर एक ही संदेश

रहस्य की खोज करो
यात्रा पर निकलें

एक ही परमेश्वर
एक ही संदेश

लेखक : पी. डी. ब्रॅमसेन

डी. सी. ब्रॅमसेन द्वारा चित्रण

अनुवादक : सॅमसन लंकेश्वर

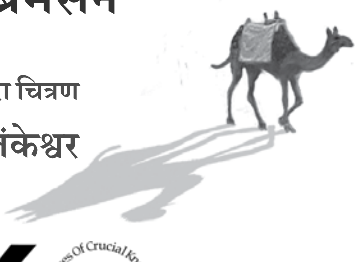

Relief Opportunity & Care for Kids
ROCK INTERNATIONAL
Resources Of Crucial Knowledge

पी. डी. ब्रॅमसेन द्वारा **एक ही परमेश्वर एक ही संदेश**
डी. सी. ब्रॅमसेन द्वारा चित्रण

सॅमसन लंकेश्वर द्वारा हिंदी भाषा में अनुवादित
एक ही परमेश्वर एक ही संदेश का हिंदी संस्करण

Copyright © 2024 ROCK International
All rights reserved.

First Printing

ISBN 978-1-62041-0288

Hindi edition of ***One God One Message***
Copyright © 2007, 2008, 2014, 2017, 2024 ROCK International

A Publication of
ROCK International

• ***R**elief, **O**pportunity & **C**are for **K**ids*
• ***R**esources **O**f **C**rucial **K**nowledge*
P.O. Box 4766, Greenville, SC 29608
www.rockintl.org • resources@rockintl.org

बाइबल सोसायटी, भारत द्वारा 1997 में अनुवादित हिंदी बाइबल का मुख्य रूप से उपयोग किया गया है। 2012 में बाइबल सोसायटी, भारत द्वारा संस्करण का भी उपयोग कई स्थानों में अधिकांश रूप से किया गया है। बाइबल के उद्धरण इन्ही दो संस्करणों में से लिए गए हैं।

डी. सी. ब्रॅमसेन द्वारा पृष्ठ चित्र रचना और चित्रण
क्रिस्टेन गोल्सन, जारीफ मीना, पी. डी. ब्रॅमसेन द्वारा पन्नों का विन्यास

एक ही परमेश्वर एक ही संदेश यह अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध है।
One God One Message is available in other languages.

www.one-god-one-message.com
For permission to translate this book, contact
pdbramsen@rockintl.org

भारत में मुद्रित

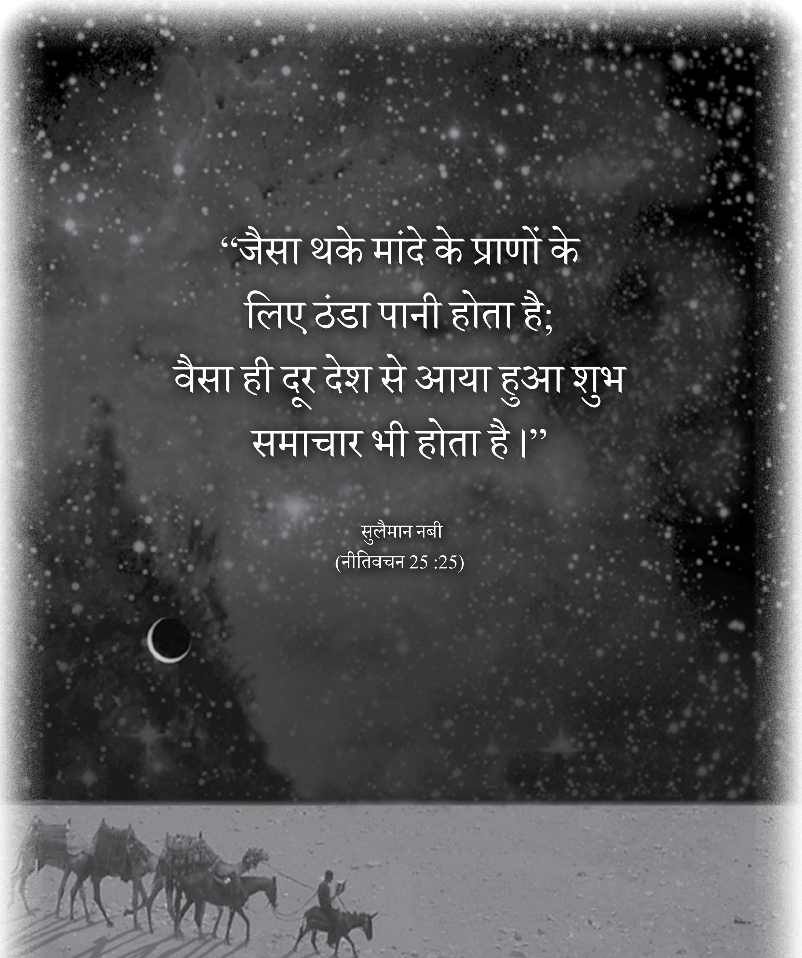
"जैसा थके मांदे के प्राणों के
लिए ठंडा पानी होता है;
वैसा ही दूर देश से आया हुआ शुभ
समाचार भी होता है।"
सुलैमान नबी
(नीतिवचन 25 :25)

विषय सूचि

प्रस्तावना 1

भाग I : यात्रा की तैयारी

बाधाओं का सामना करना

1. सच्चाई को मोल लेना 6

2. बाधाओं पर विजय प्राप्त करना 17

3. भ्रष्ट या संरक्षित? 30

4. विज्ञान और बाइबल 42

5. परमेश्वर का हस्ताक्षर 51

6. सुसंगत गवाही 61

7. नींव 71

भाग II : यात्रा

रहस्य खोज निकालना

8. परमेश्वर कैसा है 80

9. उसके समान कोई नहीं 95

10. एक विशेष रचना 110

11. बुराई का प्रवेश 122

12. पाप और मृत्यु की व्यवस्था 132

13. दया और न्याय 141

14. श्राप 148
15. दोहरी मुसीबत 156
16. स्त्री का वंशज 168
17. यह कौन हो सकता है? 178
18. परमेश्वर की अनन्त योजना 196
19. बलिदान की व्यवस्था 204
20. एक महान बलिदान 213
21. ज्यादा लहू बहा 223
22. मेमना 233
23. पवित्रशास्त्र की पूर्ति 245
24. पूरा चुकाया दाम 254
25. मृत्यु पराजित हुई 265
26. धर्मनिष्ठ और परमेश्वर से बहुत दूर 276

भाग III : यात्रा का अंत

श्राप को उलटना

27. चरण 1 : परमेश्वर की पिछली योजना 294
28. चरण 2 : परमेश्वर की वर्तमान योजना 313
29. चरण 3 : परमेश्वर की भविष्य की योजना 331
30. स्वर्ग का पूर्वदर्शन 348
परिशिष्ट भाग 362
अंतिम टिप्पणियां 364
यात्रा पर चिंतन करना 403

प्रस्तावना

“क्योंकि अच्छे काम जो आप ने किए हैं, आप स्वर्ग जाने के पात्र है, लेकिन संदेश जो आप ने प्रचार किया है, आप नरक जाने को पात्र है!” गाँव के एक बुजुर्ग ने मेरे मित्र से कहा।

मेरा मित्र और उसकी पत्नी पिछले दस वर्षो से सहारा के किनारे पर इस आदमी के गाँव में पिछले दस साल से रह रहे थे। उन्होंने वहाँ एक सिंचाई परियोजना का आरंभ और एक चिकित्सा केंद्र की स्थापना की थी। उन्होंने साथ ही जिन्हें सुनने में दिलचस्पी थी उन्हें भविष्यद्वक्ताओं की कहानी और संदेश भी सुनाये।

गाँव के एक बुजुर्ग के अनुसार, मेरे मित्र ने “स्वर्ग जाने के योग्य” क्या किया था? उसने अच्छे काम कियें थें।

और उसने “नरक जाने के योग्य” क्या किया था? उसने भविष्यद्वक्ताओं का संदेश बाइबल अनुसार सिखाया था।

क्या मेरे मित्र के काम और संदेश के बारे में उस गाँव के बुजुर्ग का आकलन सही था? क्या वह आधा सही था? क्या वह पूर्ण रूप से गलत था?

अगर आप तय नहीं कर पा रहे है कि क्या सोचें, तब फिर यह पुस्तक आपके लिए है।

कहाँ

मैं अमरीका में पैदा हुआ, लेकिन इस पुस्तक का जन्म अफ्रीका में हुआ।

घटनास्थल: पश्चिम अफ्रीका, सेनेगल का साहेल[1] क्षेत्र।

परिस्थिति: प्रार्थना के लिए भोर होने से पहले की पुकार समाप्त हुई। सुबह की गुलाबी और नारंगी बेला की पहिली किरण रेत पर, कांटेदार पेड़ से जड़े क्षितिज पर छाया किए हुई थी। तापमान खुशनुमा रूप से शीतल था, लेकिन यह कुछ ही पल के लिए है। मैं मेरा लॅपटॉप लेकर हमारे गाव के घर के बाहर बरामदे में बैठा था। किबोर्ड के ऊपर एक पारदर्शक प्लास्टिक आवरण लगा हुआ था जो उसे सहारा के धुल से बचा रहा था जो हवा में थे। गधे की प्रासंगिक चीख़ और मुर्गे की बांग को छोड़ के, गाव में ख़ामोशी है। एकमात्र आवाज जो मुझे अभी सुनाई दे रही है, वह है, किबोर्ड पर मेरी उंगलियों के चलने की, जब विचार शब्द का रूप लेते और शब्द वाक्य में बदल जाते थे।

क्यों

मैं इसलिए लिखता हूं क्योंकि एक जिसने मुझे जीवन, आनंद, शांति और उद्देश्य की आशीष दी है उसने मुझे लिखने के लिए कुछ दिया है।

मैं अपने मुस्लिम मित्रों के लिए आदर और प्रेम भाव से लिखता हूं, खांस कर वे जो सेनेगल मैं हैं, जहा मेरी पत्नी और मैंने हमारे तिन्हों बच्चों की परवरिश की हैं और हमने अपना अधिकांश वयस्क जीवन बिताया हैं।

मैं लिखता हूँ क्योंकि हाल के वर्षों में मुझे दुनिया भर के मुसलमानों से एक हजार से अधिक ई-मेल प्राप्त हुए हैं। उनकी टिप्पणियों और प्रश्नों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

मैं लिखता हूँ क्योंकि मुझे उन लोगों के प्रति सहानुभूति है, जो धार्मिक अगुवों के वही पुराने घिसेपिटे जवाबों से थक चूकें हैं जैसे कि, "बाइबल सत्य है क्योंकि यह ऐसा कहती है!" अथवा, "कुरान यह सत्य है क्योंकि कोई भी इस प्रकार की पुस्तक नहीं लिख सकता है!"

मैं इसलिए लिखता हूँ क्योंकि मैं एक सत्य परमेश्वर के सुसंगत संदेश को छोड़कर किसी भी अन्य चीज़ पर विश्वास करने के लिए मानव हृदय के झुकाव से आहत हूँ।

क्या

एक ही परमेश्वर एक ही संदेश एक उत्तम अवसर प्रदान करती है : कि दुनिया की सबसे अधिक बेचीं जानेवाली पुस्तक के द्वारा बिना जल्दबाज़ी की यात्रा पर निकलें और इसे लिखने वाले भविष्यद्वक्ताओं के संदेश को जाने। इस धार्मिक यात्रा में भाग लेने वालों को अनगिनत बाधाओं पर विजय प्राप्त करने (भाग I), रहस्यमय क्षेत्रों में प्रवेश करने (भाग II) और परिदृश्यों और संतोषजनक सत्य के तेजोमय राज्य में प्रवेश करने का अवसर दिया जाएगा (भाग III)।

किसके लिए

यह यात्रा मुख्य रूप से एकेश्वरवादीयों के लिए रचा गया है-जो एक परमेश्वर में विश्वास करते है। लेकिन इसके बावजूद, बहुदेववादी और सर्वेश्वरवादी, मानवतावादी और नास्तिक[2] इन सभी लोगों का समान रूप से स्वागत है। यह किसी के भी लिए है जो उनके अनंतकाल का कुछ डझन घंटों से अधिक मूल्य लगाते है। लगभग इतना ही समय इस पुस्तक को ऊँची आवाज़ में पढ़ते हुए समाप्त करने में लगेगी।

आप की पृष्ठभूमि जो भी हो, जिस किस पर भी आप विश्वास करते हो अथवा विश्वास ना

करते हो, आपको पवित्र पुस्तक द्वारा इस यात्रा में आमंत्रित किया है जिसका सम्मान करने का दावा बहुतसे लोग करते हैं, लेकिन बहुत थोड़े हैं जो उस पर विचार करना चुनते हैं।

तीन हजार वर्षो पहले, एक भविष्यद्वक्ता ने यह प्रार्थना सृष्टिकर्ता और दुनियाके स्वामी को अर्पित की: “मेरी आँखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।” (भजन संहिता 119:18)

भले ही जो हम देखें वह सब हमें पसंद न आए, फिर भी हम देखने से न चूकें।

आपका सहयात्री,

पी. डी. ब्रॅमसेन

भाग I
यात्रा की तैयारी

बाधाओं का सामना करना

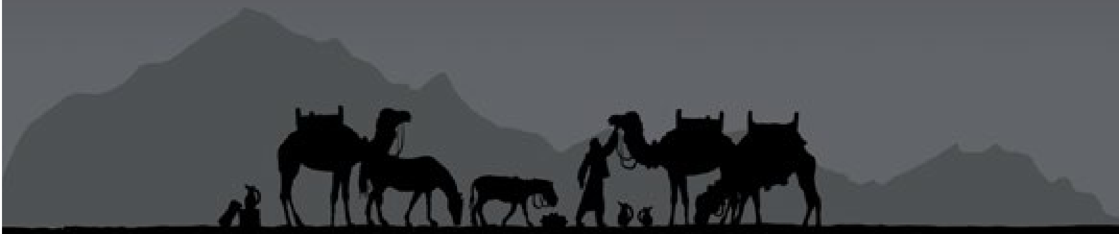

1 - सच्चाई को मोल लेना
2 - बाधाओं पर विजय प्राप्त करना
3 - भ्रष्ट या संरक्षित?
4 - विज्ञान और बाइबल
5 - परमेश्वर का हस्ताक्षर
6 - सुसंगत गवाही
7 - नींव

पाठ 1

सच्चाई को मोल लेना

"सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं......" — सुलैमान नबी (नीतिवचन 23:23)[3]

कल्पना करें कि आप अरबों लोगों से भरे भीड़-भाड़ वाले बाज़ार में चल रहे हैं।

जी हां, अरबों।

जहाँ तक नज़र जा सकती हैं उससे भी दूर दस हजार दुकाने और झोपड़ियाँ हैं। हर एक दिशा से, उत्साही विक्रेता पुकार रहे, चिल्ला रहे, राग अलाप रहे, वाद-विवाद, बिनती, याचना कर रहे हैं- कुछ धीमे से, कुछ लाउडस्पीकर द्वारा, हर एक दावा कर रहा है कि आप जो खरीदने आए है बिल्कुल वही वह बेच रहा है:

सत्य!

हँसना नहीं। ऑक्सफोर्ड विद्यापीठ प्रेस ने एक विश्वकोष प्रकाशित किया है जिसमे दुनिया भर में दस हजार विभिन्न धर्मो की पहचान की है। और उसमे उन धर्मों में पायें जानेवाले हजारों पंथ और सम्प्रदाय शामिल नहीं है। [4]

तो हम क्या ख़रीदे? हमें किस पर विश्वास करना हैं?

यदि यहा केवल एक ही सत्य परमेश्वर है, और यदि उसने मानवजाति के लिए अपने आप को और उसकी योजना को प्रकट किया है, तो हम उसे सम्भवतः कैसे पहचान सकते हैं?

चार हजार वर्षों पहले, अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने इसी प्रकार प्रश्न उपस्थित किया था :

> ***"परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है? और समझ का स्थान कहा है?*** *उसका मोल मनुष्य को मालूम नहीं;......चोखे सोने से वह मोल लिया नहीं जाता,....बुद्धि का मोल माणिक से भी अधिक है।"* (अय्यूब 28:12-13,15,18)

क्या हमें उलझन और अनिश्चितता में भटकते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए? या फिर क्या हम एकमात्र सच्चे परमेश्वर के ज्ञान और उसके सत्य को जान सकते हैं? हम अब उसे खोजनेवाले हैं।

किताबों में महान पुस्तक

बाइबल यह शब्द यूनानी शब्द बिब्लिया से आता है, उसका अर्थ किताबों में महान पुस्तक या ग्रन्थालय।

आदम, नूह, और अब्राहम जैसे व्यक्तियों के साथ और उनके द्वारा दो हजार से अधिक समय तक मौखिक संवाद के बाद, परमेश्वर ने अपने संदेश के लेखन के लिए 15 से अधिक सदियों में लगभग 40 पुरुषों का इस्तेमाल किया। इन संदेशवाहकों को नबी अथवा प्रेरित कहा गया हैं। शब्द *नबी* का शाब्दिक अर्थ है, एक जो घोषणा करता है। *प्रेरित* का अर्थ संदेशवाहक। आज हमारे पास एक ग्रंथ के रूप में उन सभी का लेखन है -बाइबल। शब्द जैसे पवित्र धर्म पुस्तके, भविष्यद्वक्ताओं की लिखावट, और परमेश्वर का वचन इन्हें भी बाइबल के संदर्भ में उपयोग में लाया जाता हैं। *तौरात, भजन संहिता और सुसमाचार* इन्हें बाइबल में विशेष भाग कहके संदर्भित किया हैं। अरबी भाषा में, इन पवित्र धर्म पुस्तकों को *अल-पुस्तक-अल-मुक़द्दस*, अर्थात पवित्र पुस्तक कहा जाता है।

सदी दर सदी, दुनिया में बाइबल अन्य हर एक पुस्तकों से अधिक बेचीं गई है। वर्तमान में, आंशिक या पूर्ण रूप से, बाइबल के धर्म पुस्तकों का अनुवाद 2, 400 से भी अधिक भाषाओँ में किया गया हैं, साथ ही 1, 940 अनुवाद अभी प्रक्रिया में हैं।[5] कोई और पुस्तक इस तरह अनुवादित नहीं की गई है।

इसकी अतुलनीय प्रसिद्धि के बावजूद, मानवी इतिहास में बाइबल यह सबसे अधिक तिरस्कृत और भयभीत करनेवाली पुस्तक है। सदियों से, दुनिया की सरकारे और अगुंवे, धर्मनिरपेक्ष और धर्मी सभी ने, जो सबसे अधिक बेचीं जानेवाली पुस्तक है उसे गैरकानूनी घोषित करते आ रहे हैं, और जिनके पास वह पाई जाती है उन नागरिकों को सताया और यहां तक कि मार डाला गया।[6] वर्तमान में, कुछ राष्ट्र इस नीति को जबरन लागु कर रहे है। कुछ मसीही देशों में भी[7] सार्वजनिक अध्ययनकक्षों और संस्थाओं में बाइबल पढ़ने पर प्रतिबंध है।

उत्पीड़ित

जब मैं वयस्क हो रहा था, मेरे पिता रिचर्ड नाम के व्यक्ति के मित्र थे, जिसने पुर्वीय यूरोप में कम्युनिस्ट जेल में चौदा वर्ष बिताएं थे जहां उन्हें नियमित रूप से नींद से वंचित, भूखा रखना, उलटा लटकाया जाता और मारा जाता, बर्फ समान ठण्ड कोठरी में बंद किया जाता, लाल गरम लोहे की छड़ों से जलाया जाता था, और चाकुओं से बदन को खरोंचा जाता था। मैंने खुद अपनी आँखों से उनके शरीर पर कुछ गहरे और बदसूरत निशान देखे हैं। रिचर्ड की पत्नी को भी गिरफ्तार किया गया था और उसके पति समान "अपराधी गतिविधि" के लिए उसे भी जेल में जबरन मज़दूरी करने की सजा दी गई थी। [8]

नास्तिक राष्ट्र के विरोध में उनका अपराध क्या था?

दूसरों को बाइबल की शिक्षा देते हुए उन्हें पकड़ा गया था।

निष्कासित किया जाना

मेरा मित्र अली बड़े मुसीबत में था। उसके पिता ने परिवार के पुरुषों की बैठक का आयोजन किया था।

बड़े चाचा उपस्थित थे।

जवान भाइयों को बुलाया गया था।

अली जो पहिलौठा जन्मा पुत्र था उसे बीच में बिठाया गया था।

अली के पिता ने एक भावुक भाषण दिया, जिसकी समाप्ति कुछ इस प्रकार हुई: "तुम ने हमारे परिवार को शर्मिंदा किया है! तुम ने हमारे धर्म का विश्वासघात किया है! तुम्हे अब घर छोड़ना चाहिए और फिर कभी वापस नहीं आना। मैं तुम्हारा चेहरा दोबारा देखना नहीं चाहता!"

चाचा ने बीच में कहा, "हां, और अगर तुम कल तक नहीं गएँ, तो मैं तुम्हारा सामान रास्ते पर फ़ेंक दूंगा!"

यह गुस्सा, किस लिए?

करीबन एक वर्ष तक बाइबल पढ़ने के बाद में, अली ने उस पर विश्वास करने का फैसला कर लिया था।

जीवित वचन

क्या है जो बाइबल को विवादात्मक पुस्तक बनाती है?

क्या है जो सरकारें इसे मना करती है और इस पर विश्वास करने के कारण माता-पिता अपने

बच्चों को त्याग देते हैं?

इन प्राचीन लेखों के प्रति अपनी घृणा में नास्तिकों के साथ एकजुट होकर लाखो एकेश्वरवादियों को क्या प्रेरित करता है?

क्या परमेश्वर के वचन के जीवित, क्रियाशील, आर-पार भेदनेवाले और न्याय करने के बाइबल के दावे का इससे कोई लेना-देना हो सकता है?

> *"क्योंकि परमेश्वर का वचन **जीवित** और **प्रबल** और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है। और प्राण और आत्मा को,और गांठ-गांठ और गुदे-गुदे को अलग करके **आर-पार छेदता है** और मन की भावनाओं और विचारों को **जांचता** है।"* (इब्रानियों 4:12)

पुस्तक के साथ दृढ़ रहे

मेरी पत्नी और मैं, और हमारे अब-वयस्क हुए बच्चों ने, पश्चिम अफ्रीका, सेनेगल में पिछले पच्चीस वर्षो का अधिकतम समय बिताया था। हमारे पड़ोसी इस्लाम धर्म का अनुसरण करते है। इस्लाम शब्द का अर्थ समर्पण या अधीनता है। मुस्लिम शब्द का अर्थ जो समर्पित हो गया है। मुस्लिम लोग जिस पुस्तक का सम्मान करते है वह कुरान है। जो मैं लिखता हूं वह सेनेगल और दुनिया भर से मुस्लिम मित्रों और परिचितों के साथ हजारों व्यक्तिगत संवादों का परिणाम है।

हालाँकि मैंने बाइबल और कुरान दोनों का अध्ययन किया है, एक ही परमेश्वर और एक ही संदेश यह बाइबल पर ध्यान केन्द्रित होगा। कई वर्षो पहले, सेनेगल का एक मित्र और मैंने सेनेगल के वोलोफ भाषा में 100-कार्यक्रम की कालानुक्रमिक रेडिओ शृंखला निर्माण की थी।[9] प्रत्येक प्रसारण में बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहानी और एक संदेश विशेष रूप से दिया गया है। कुछ श्रोताओं ने पूछा, "आप कुरान भी क्यों नहीं सिखाते?" मेरा उत्तर यह है :

> इस देश में, बच्चे तीन या चार साल की उम्र से ही कुरान पढ़ना शुरू कर देते हैं। कुरान के शिक्षक और पाठशालाएं हर मोहल्ले में मिल जाएंगे। लेकिन तौरात, भजन संहिता और इंजील में निहित कहानियों और संदेश को सिखाने में कौन समर्थ और इच्छुक है? जैसे आप जानते हैं, कुरान स्पष्ट करती है कि बाइबल की ये पुस्तके मनुष्यजाति को परमेश्वर द्वारा "**मार्गदर्शन** और **प्रकाश**.....और **परामर्श** के लिए दी गई हैं।" (सूरा 5:46[10]) कुरान इस तरह भी कहती है: *"अगर आप सन्देह में हो कि हमने आप को क्या प्रकट किया है, तो फिर उन्हें पूछो जो इस **किताब** [बाइबल] को आप के **पहले से पढ़ रहे है**।"* (सूरा 10:94[11]) और जो लोग बाइबल में विश्वास करते हैं, उन्हें कुरान कहती है:

*"**ओ किताबवालो!** आपको कोई आधार नहीं होता **जिस पर दृढ़ रहे** जब तक आप नियम [तौरात], **इंजील और सभी प्रकाशितवाक्य** पर स्थिर खड़े रहे जो आपके पास आपके परमेश्वर से आया है।"* (सूरा 5:71) किताबवालों में से एक जो तीन दशकों से अधिक समय से पुस्तक को पढ़ रहा है और इसके साथ खड़ा है, यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि मैं भविष्यद्वक्ताओं की उन कहानियों और संदेशों को साझा करूँ जिन्हें आप ने कभी नहीं सुना। कुरान से 2,000 साल पहले लिखे गए इस पवित्रशास्त्र में वह सच्चाई पाई जाती है जो कहीं और नहीं पाई जाती।

उसकी कहानी

आपके माता-पिताओं ने आपको सिखाया होगा, "कभी भी किसी अंजान व्यक्ति पर भरोसा नहीं करना।" उन्हें पता है कि इससे पहले कि आप किसी पर निश्चित रूप से भरोसा कर सकें, आपको उनके के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी होनी चाहिए।

कुछ ऐसे लोगों के बारे में सोचें जिन पर आपको भरोसा है।

आप उन पर भरोसा क्यों करते हैं?

आप उन पर इसलए भरोसा करते हैं क्योंकि समय के साथ आपने सिखा है कि वे भरोसे के लायक हैं। उन्होंने आपके साथ बुरा नहीं, अच्छा किया। जब उन्होंने आपको कहा कि वे कुछ करेंगे, तो उन्होंने वह कियां। जब उन्होंने आपको कुछ तो देने का वायदा किया, तो उन्होंने वह दिया। आप जानते हो वे भरोसे के लायक हैं क्योंकि आपको उनके बारे में जानकारी है।

पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के साथ परमेश्वर की बातचीत की कई ऐतिहासिक कहानियां बाइबल में पाई जाती हैं। हर एक कहानी स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता से मिलने और उसके वचन को सुनने और मानव इतिहास के हजारों वर्षों के संदर्भ में उसके कार्यों का अवलोकन करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती है। वह कैसा है? जी हां, वह महान है, लेकिन किस तरह वह महान है? क्या वह स्थिर है? क्या वह कभी अपने विपरीत जाता है? क्या वह अपने वादों को पूरा करता है? क्या वह हमें धोखा देगा? क्या उस पर भरोसा किया जाना चाहिए?

उसकी कहानी इन सभी प्रश्नों और अन्य हजारों प्रश्नों के उत्तर देती है।

बाइबल परमेश्वर की इतिहास की पुस्तक है जो न केवल मानवी इतिहास की बड़ी तस्वीर प्रकट करती है; पर यह **उसकी कहानी** कहती है।

परम नाटय

एक अच्छी कहानी सभी को पसंद है।

बाइबल में सैंकड़ो कहानियाँ हैं जो एकसाथ मिलकर एक कहानी को बुनती है- अब तक की सबसे मनमोहक कहानी। परमेश्वर और मनुष्य के विषय में बाइबल की कहानी यह परम रहस्यमय नाटय है, प्रेम और युद्ध, भलाई और बुराई, संघर्ष और विजय की एक कहानी है। उत्पति से भविष्य की घटनाओं तक, जीवन के बड़े प्रश्नों के तर्कसंगत, संतोषजनक उत्तर प्रदान करती है। इसका चरमोत्कर्ष और निष्कर्ष ऐसा हैं जो किसी ओर समान नहीं है।

कुछ वर्षों पहले, सेनेगल में हमारे घर में पुरुषों और स्त्रियों के एक समूह को परमेश्वर की कहानी सुनाने के बाद, एक स्त्री ने, रोते हुए कहा, "वाह! अद्भुत कहानी है! भले ही लोग परमेश्वर में विश्वास न करते हो, लेकिन कम से कम उन्होंने यह मान लेना चाहिए कि सभी युगों का वह सर्वोत्तम पटकथा लेखक है!" इस स्त्री को यह झलक मिल गई कि युगों के नाटय को प्रस्तुत करने के लिए पवित्रशास्त्र के बहुत से हिस्से कैसे एकत्र होते हैं, जिसमे लेखक और नायक दोनों ही परमेश्वर स्वयं है।

सबसे महान संदेश

बाइबल में अब तक की सबसे मनमोहक कहानी से कहीं अधिक है। अब तक का सबसे विवश करने वाला संदेश—परमेश्वर का संदेश—इसकी कहानियों में सन्निहित है।

पिछले अनेक वर्षों में, हजारों मुस्लिम लोगों के साथ मैंने बाइबल संदेश पर विचार-विमर्श किया है। मेरे कई निजी मित्र हैं, अन्य लोगों को मैं केवल ई-मेल के द्वारा जानता हूं। दोनों ही संदर्भ में, हमारे अधिकतर विचार-विमर्श का निचोड़ यह केवल एक ही प्रश्न में समेटा जा सकता है :

एकमात्र सत्य परमेश्वर का संदेश क्या है?

ई-मेल संबंधी प्रतिक्रिया

इस प्रश्न को कई प्रकार से पूछा जाता है।

निम्नलिखित ई-मेल मुझे मध्य पूर्व से मिला, जो एक आदमी द्वारा लिखा गया, जिसे हम अहमद कहेंगे।[12]

भेजो **विषय** : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

नमस्ते। यीशु, मसीहा बनकर आया और मैं यह मानता हूँ, लेकिन उन्होंने कभी नहीं कहा कि वह परमेश्वर हैं। मुहम्मद (उन्हें शांति मिले[13]) के पहले वह परमेश्वर के पास जाने का मार्ग था, लेकिन उसके बाद, सभी मसीहीयों को मुसलमान बन जाना चाहिए था क्योंकि जब मसीह इस जगत के अंत

में वापस आएंगे, तो वह नए नियम द्वारा नहीं कुरान द्वारा शासन करेंगे।

मसीहा को क्रूस पर कभीभी चढ़ाए नहीं गया। यदि आपको यथोचित होना है, तो भले ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, इसका यह अर्थ नहीं कि उसके कारण लोगों के पापों को यूँही मिटा दिया गया। मेरे लिए इसका कोई अर्थ नहीं है। इसके अलावा अगर आप मुझे यह कहेंगे कि परमेश्वर ने उसके इकलौते प्रिय पुत्र को बलिदान किया है, तो फिर मैं आपसे कहूँगा : क्या परमेश्वर इतना महान नहीं है कि लोगों को बताए कि वह क्या चाहता है और उसके "प्रिय पुत्र" का बलिदान किए बिना और उसका सताव किए बिना???? क्या वह उनके पापों को मिटा नहीं सकता। मुझे समझ नहीं आता कि यह पापी होना क्या है।

धरती पर अब तक का सबसे सिद्ध धर्म इस्लाम है, और यही तो कारण है कि मैं सोचता हूँ कि यह सत्य है और परमेश्वर की ओर से दिया गया एकमात्र धर्म है। यह एकमात्र ऐसा धर्म है जिसके पास जीवन के हर पहलू का समाधान है। आपको यह अनुमान लगाने के लिए नहीं छोड़ा गया है कि किसी एक निश्चित बात पर परमेश्वर की राय क्या होगी।

कुरान किसी नबी के साथ हुआ अब तक का सबसे बड़ा चमत्कार है! ठीक है, एक आयत की रचना करके बताएं जो उसके समान है, या कुरान की आयतों में से एक के आसपास भी है!! आप ऐसा कभी भी नहीं कर पाओगे भले ही आप उच्च स्तर की अरबी भाषा में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति होंगे....

इसके अलावा आपके बाइबल में मुहम्मद के आने के बारे में मूल नबूवतें हैं...

मेरा यह मानना है और मैं यह जानता हूँ कि बाइबल अधिकांश रूप से झूठ और भ्रष्ट है क्योंकि इसकी सभी पुस्तकें तोड़-मरोड़ कर पेश की गई हैं....

मित्र, आपके जानकारी के लिए, मैंने नया नियम पढ़ा है, इसलिए नहीं कि सत्य की ख़ोज करू, लेकिन व्यक्तिगत रूचि के कारण , और एक बार नहीं, बल्कि दो बार, और मैं यह देखता हूं कि यहा पर दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं जो कुरान की महानता के करीब आ सकता है जो वास्तव में परमेश्वर का वचन है, उसके दूत द्वारा मुहम्मद को भेजा गया है, और अगर आप इसके विपरीत साबित कर सकते हैं, तो सबित करें। [असल में[14]]

सलाम,

"अहमद"

अहमद की चुनौती और टिप्पणीयों को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए।

हमारा सृष्टिकर्ता ऐसे विषय को सहज से नहीं लेता, और ना ही हमें ऐसा करना चाहिए। भविष्यद्वक्ताओं के प्राचीन लेखों में, अहमद द्वारा उठाये गए प्रत्येक मुद्दे को परमेश्वर ने स्पष्ट उत्तर दिया है क्योंकि प्रत्येक मुद्दा हमेशा से-महत्वपूर्ण प्रश्न से संबंधित है:

*एक ही सत्य परमेश्वर का संदेश **क्या** है?*

अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने इसी समान कुछ प्रश्नों को उठाया था :

"परन्तु बुद्धि कहां मिल सकती है?" (अय्यूब 28:12)
"...मनुष्य परमेश्वर के दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है?" (अय्यूब 9:2)

यात्रा

हजारों असंगत प्रतिक्रियाओं के साथ भरी हुए अस्तव्यस्त दुनिया में, इस मिश्रण में अपने विचारों को जोड़ना यह मेरा उद्देश्य नहीं हैं। इसके बजाय, मैं आपको इस जीवन के परम प्रश्नों के उत्तर की खोज में पुस्तकों की पुस्तक के माध्यम से इस यात्रा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूँ। जब हम एक साथ यात्रा करते हैं, पवित्रशास्त्र के अनुसार जो कुछ भी सत्य है उसको हम देखेंगे और अहमद और अन्य लोगों द्वारा उठाए गए चुनौतियों के लिए भविष्यद्वक्ताओं के जवाबों पर हम चिन्तन करेंगे।

परिचय के बाद (भाग I: अध्याय 1-7), हमारी यात्रा वास्तव में जहां से बाइबल शुरू होती है वहा से होगी: दुनिया के इतिहास के प्रारम्भ से। वहां से हम समय और अनंतकाल के द्वारा यात्रा करेंगे (भाग II और III: अध्याय 8-30)।

यात्रा का समापन स्वर्ग के दर्शन के साथ ही होगा।

यात्रा के विकल्प

एक ही परमेश्वर एक ही संदेश इस पुस्तक को एक में तीन पुस्तकों के रूप में देखा जा सकता है। भाग I उन बाधाओं को संबोधित करता है जो अधिकतर लोगों को बाइबल की अधिक जानकारी प्राप्त करने से रोकता है। भाग II अब तक की सबसे उत्तम उत्तम कहानी के मुख्य संदेश का अनावरण करता है। भाग III लोगों के लिए परमेश्वर के अद्भुत उद्देश्य को निकट से देखने के लिए दृश्यों के पीछे ले जाती है।

अधिकांश यात्रियों को यात्रा की तैयारी करने के लिए पहिला भाग अत्यंत लाभदायक लगेगा। फिर भी, अगर आप पहले से ही जानते हो कि भविष्यद्वक्ताओं के लेख विश्वासयोग्य है, या अगर आप परमेश्वर की कहानी सुनने और उसके संदेश को बिना देर किए समझने के लिए उत्सुक हैं, तो फिर बिना संकोच भाग II में जाने के लिए स्वतंत्रता महसूस करें। जब आप अपनी संपूर्ण यात्रा पूरी कर लेते हो, तो आप भाग I में लौट सकते हैं।

अगर आप बिना हड़बड़ी के धीरे-धीरे यात्रा करना चाहते हो, तो आप पुस्तक के 30 अध्यायों को एक महीने की अवधि में, एक अध्याय पर प्रति दिन चिंतन करना चुन सकते हैं।

अगर आप मुस्लिम हो, तो रमज़ान के 30 दिनों के दरम्यान में आप इस यात्रा को कर सकते हैं। आप विश्वास के साथ शुरुआत कर सकते हैं क्योंकि कुरान कहता है: "*धर्म के विषय में कोई जबरदस्ती नहीं है। सही बात गलत विचारों से अलग छाँट कर रख दी गयी है,*" *और: "मुसलमानों कहो कि: 'हम इमांन लाए अल्लाह पर और उस मार्गदर्शन पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब और याकूब की सन्तान की ओर उतरा था और जो मूसा और ईसा और दूसरे सभी भविष्यद्वक्ताओं को उनके प्रभु की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम हैं।' "*
(कुरान, सूरा 2:256, 136 अनुदित कुरान मजीद, मुहम्मद फारुख खां, पन्ना 61, 31[15])

जो कोई मार्ग आप चुनते हैं, यात्रा के लिए यह एक महत्वपूर्ण सलाह है: एक बार शुरू करने के बाद, यात्रा के किसी भी हिस्से को ना छोड़े।

प्रत्येक नया चरण पिछले चरण पर बनाया जाता है। भले ही आप जो सब देखते हो उसे तुरंत समझ ना पाए, अंतिम पन्ने तक पढ़े और चिंतन करते रहें। यात्रा के कुछ हिस्से अनोखे और चुनौतीपूर्ण होंगे, लेकिन उसी मार्ग पर वहां ताजगी लानेवाले सुखदायक स्थान भी होंगे।

चाहे कितनी भी बाधाएं आएं, यात्रा जारी रखें।

सत्य

दुनिया भर में कई लोग सोचते हैं कि जीवन के बड़े प्रश्नों के संबंध में क्या सही या गलत कोई नहीं जान सकता, जैसे: मानवजाति की शुरुआत कहा हुई? मैं पृथ्वी पर क्यों हूं? मेरा अंत कहा होगा? सही क्या है और गलत क्या है?

आज पश्चिम देशों में, "सब कुछ सापेक्ष है," या, "ऐसा सोचना गलत है कि व्यक्ति परम सत्य जान सकता है, इस प्रकार के वक्तव्य देना लोकप्रिय है।" ऐसी घोषणाओं के परस्पर-विरोधी स्वभाव को पहचानने के लिए किसी को तर्कशास्त्र में पीएचडी की आवश्यकता नहीं है। अगर कोई परम सत्य नहीं है, तो वे जो इस प्रकार के दृष्टिकोण को मानते है वे "सब कुछ" के विषय में दृढ़कथन कैसे कर सकते है या उस पर जोर लगा सकते है की कुछ भी "गलत" है?

हम धन्यवादी हो सकते है कि सृष्टि का सिरजनहार, जिसने उसके सत्य को मानवजाति पर प्रकट किया है, वह लोकप्रिय धारणा के साथ नहीं चलता। वे सब जो ईमानदारी के साथ उसकी

खोज करते है, उन्हें वह कहता है :

> *"तुम **सत्य को जानोगे** और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"* (यूहन्ना 8:32)

सही चुनाव

कुछ वर्षों पहले, मूसा, 79 आयु का एक बुजुर्ग पडोसी जो बीमार हालत में था, उसने मुझसे कहा कि मैं सप्ताह में तीन दिन उससे मिलूँ ताकि उसे बाइबल पढ़कर सुनाऊँ। मूसा ने अपना पूरा जीवन कुरान के अध्ययन में लगा दिया था, लेकिन मूसा का तौरात, दाऊद के भजन, और यीशु की इंजील के बारे में विचार करने के लिए मूसा ने कभी समय नहीं निकाला था-ऐसी किताबे जिसके विषय में कुरान सभी मुसलमानों को गंभीरता से लेने और विश्वास करने का निर्देश देता है।[16]

मूसा ने उसे बड़े ध्यान से सुना जब हमने प्रमुख कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन किया और उनका सृष्टिकर्ता और न्यायाधीश अपवित्र पापियों को किस तरह धर्मी घोषित कर सकता है यह सीखा। एकसे अधिक अवसर पर मूसा ने मुझे कहा, "प्रत्येक बैठक के बाद, जो हमने पढ़ा है केवल उसके विषय में मैं विचार नहीं करता, मैं उन पर चिंतन करता हूं!"

एक दिन, पवित्रशास्त्र में प्रकट महत्वपूर्ण सत्य सीखने के बाद, ज़ाहिर निराशा के साथ, मूसा ने उसकी पत्नी और बेटी से कहा जो पास ही बैठे थे, "इन बातों को किसी ने अब तक हमें क्यों नहीं सिखाया?"

बाद में, जब मूसा के पड़ोसियों ने जाना कि वह एक परदेसी के साथ बाइबल अध्ययन कर रहा है, तो अफ़वाह शुरू हो गई। इसका दबाव इतना तीव्र था कि मेरे इस बुजुर्ग मित्र ने कुछ समय के लिए उसे न मिलने को कहा, यह स्पष्ट करते हुए, "मैं सत्य का अस्वीकार नहीं कर रहा, लेकिन मेरे परिवार पर इसका बहुत अधिक तनाव है।"

छह सप्ताह रुकने के बाद (ताकि अफ़वाह को बंद हो जाने देना), मेरी पत्नी और मैं मूसा और उसके परिवार से मिलने गए। उसने बड़ी ख़ुशी से हमारा स्वागत किया और कुछ बहुत ही सोचे-समझे हुए प्रश्न पूछे। हमारे जाने से पहले, उसने टिपण्णी करते हुए कहा, "महत्वपूर्ण बात यह है कि मरने से पहले मैं सही चुनाव करू!"

मूसा समझ गया था कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि *"सच्चाई को मोल लेना और....बेचना नहीं।"*[17] चार महीनों बाद, हमारा प्रिय मित्र मर गया।

हमने जो समय साथ बिताया था उसकी याद करते हुए, मेरे प्रश्नों को उसके उत्तर को मैं कभी भूलूंगा नहीं, "मूसा, अगर तुझे आज रात को मौत आ जाए, तो अनंतकाल तू कहा बिताएगा?"

कुछ संकोच के बाद, उसने उत्तर दिया, "मैं स्वर्ग जाऊंगा।"

मैने पूछा, "तुझे यह कैसे पता है?"

पवित्रशास्त्र को दोनों हाथों से पकड़कर उसने उत्तर दिया, "क्योंकि मैं इस पर विश्वास करता हूँ!"

प्रतिज्ञा

मैं इस खोज की यात्रा को आप सभों के लिए समर्पित करता हूं, जो मूसा समान, मरने से पहले सही चुनाव करना चाहते है। ऐसा होवे कि एक सत्य परमेश्वर आपके हाथों को थामे, प्रत्येक बाधाओं पर विजय प्राप्त करने में आपकी सहायता करे, और वह कौन है और उसने आपके लिए क्या किया है इसकी स्पष्ट और अचूक समझ प्राप्त करने में आपकी अगुवाई करे।

"तुम मुझे ढूंढागे, और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास पाओगे।"
(यिर्मयाह 29:13)

यह आपसे परमेश्वर का पक्का वादा है।

पाठ 2

बाधाओं पर विजय प्राप्त करना

"इससे पहले कि आपको पता चले, अज्ञानता आपको मार डालेगी।"

— वोलोफ कहावत

करीबन तीन हजार वर्षों पहले, परमेश्वर ने घोषित किया, *"मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई।"* (होशे 4:6) आजके दिन तक, अधिकतम लोग, जिनके पास कॉलेज की डिग्री हैं वे भी, जो कुछ भी पवित्र शास्त्र के भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उसे जाने बिना जीते और मर जाते हैं।

बाइबल की पूरातनता और प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, बाइबल क्या कहती है उसकी बुनियादी समझ पाए बिना क्या एक व्यक्ति को सच में सुशिक्षित कहा जा सकता है?

जिस प्रकार दुनिया की आबादी के पास हजारों धर्म है, उसी प्रकार पवित्रशास्त्र की अनदेखी करने के उसके पास हजारों बहाने हैं। यह और अगले पाठ में हम उनमें से दस कारणों पर विचार करेंगे। और एक बार जब हमने हमारी यात्रा की शुरुआत कर दी, तो हम कई बाधाओं का सामना करने और उस पर विजय प्राप्त करने की अपेक्षा कर सकते हैं।

लोग बाइबल का अस्वीकार करने के दस "कारण" :

1. "कल्पित कहानियाँ"

धर्मनिरपेक्ष पश्चिमी और यूरोपीय राष्ट्रों में, बहुत से लोगों का यह कहना है कि बाइबल मनुष्यों द्वारा गढ़ी गई प्रेरक कल्पित कहानियों और रची गई सुंदर कहावतों के संग्रह से ज्यादा कुछ नहीं है। पवित्रशास्त्र की निष्पक्षता से जांच किए बगैर अधिकतर लोग इसी प्रकार का दृष्टिकोण रखते है।

सर आर्थर कॉनन डॉयल की उत्कृष्ट कल्पित रचना, द सेलिब्रेटेड केसेस ऑफ़ शर्लक होम्स में, जासूस के सहयोगी, डॉ. वाट्सन, होल्म्स से एक विशेष अपराधी प्रकरण के बारे में पूछताछ करता है:

"तुमने इससे क्या अनुमान निकाला है?"

"मेरे पास अब तक कोई जानकारी नहीं है," होल्म्स ने उत्तर दिया। "बिना किसी जानकारी के धारणा बनाना एक गंभीर भूल है। बेवजह व्यक्ति तथ्यों के अनुकूल धारणाएं बनाने के बजाय धारणाओं के अनुरूप तथ्यों को मोड़ना शुरू कर देता है।"[18]

बहुत से लोग पवित्रशास्त्र के साथ इस प्रकार की "गंभीर भूल" करते है। पर्याप्त जानकारी के बिना वे अपने निष्कर्ष निकालते हैं और तथ्यों को मरोड़ते हुए धारणाओं के अनुकूल करते हैं ताकि उनके दृष्टिकोन और जीवनशैली में कोई अव्यवस्था न आ जाए।

2. "बहुत सारी व्याख्याएं"

कुछ लोग धर्म पुस्तके पढ़ते नहीं क्योंकि वे एक समूह को यह कहते हुए सुनते हैं, "बाइबल यह कहती है!" तो दूसरा समूह उसके विरोध में कहता है, "नहीं, इसका अर्थ यह नहीं है! यह ऐसा कहती है!" कोई आश्चर्य नहीं कि यह धारणा कि पवित्रशास्त्र को समझा नहीं जा सकता प्रचलन में है।

जब बाइबल जीवन के निश्चित विषयों पर विविध दृष्टिकोन रखने देती है,[19] लेकिन जब अनंतकाल के परिणाम का विषय आता है तब वह विविध व्याख्याओं को कोई स्थान नहीं देती। परमेश्वर की पुस्तक को समझा जा सकता है, लेकिन वह क्या कहती है उसका हमें पालन करना चाहिए।

महान शेर्लोक होल्म्स ने वाट्सन से यह भी कहा, "आप देखते हो, लेकिन आप उसका पालन नहीं करते। फर्क स्पष्ट है। उदाहरण के तौर पर, आप ने सीढ़िया अक्सर देखी होगी जो हॉल से इस कमरे तक ले आती हैं।"

"अक्सर।"

"कितनी बार?" होल्म्स ने पूछा।

"शायद, कुछ सौ से अधिक बार," वाट्सन ने उत्तर दिया।

"तो फिर वह कितनी हैं?"

"कितनी! मुझे पता नहीं।"

"निस्संदेह! आप ने उसे देखा नहीं! लेकिन फिर भी आप ने उसे देखा है। बस यही मेरे कहने का तात्पर्य है। अब, मुझे पता है कि वहां पर सत्रह सीढियां हैं, क्योकि मैंने उसे देखा और समीक्षा

दोनोंही किया हैं।"[20]

उसी प्रकार, बहुत से लोग बाइबल में मिश्रित कथनों को देखते हैं, लेकिन कुछ ही ध्यान देते हैं कि यह वास्तव में क्या कहती है। इसके परिणामस्वरूप, इसमे कोई अचरज नहीं कि लोग तरह-तरह की व्याख्याएँ करते हैं।

यह एक स्पष्ट करनेवाला प्रश्न है: क्या मैं परमेश्वर के संदेश को समझना चाहता हूं? जिस प्रकार मैं उसी उत्साह और छानबीन से एक गुप्त ख़जाने की खोज कर सकता हूँ, क्या मैं उसी प्रकार परमेश्वर के सत्य की खोज करने के लिए तैयार हूँ? सुलैमान राजा ने लिखा : *"और प्रवीणता और समझ के लिए अति यत्न से पुकारे, और उसको चांदी के समान ढूंढे, और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे,.... परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।"* (नीतिवचन 2:3-5)

3. "मसीही"

जो लोग बाइबल का अनुसरण करने का दावा करते हैं, उनके द्वारा की गई दुष्टता के कारण, बहुत से लोग इसका इन्कार करते हैं। "उन धर्मयुद्धों का क्या जिसमें 'अविश्वासियों' को क्रूस के ध्वज के तले कत्ल किया गया है?" वे पूछते हैं। "पोप की न्यायिक जाँच का क्या? अन्याय जो आज लोगों द्वारा किया जा रहा है जो बाइबल में विश्वास करने का दावा करते हैं, उसका क्या?" सत्य यह है कि जो कोई भी मसीही कहलाता है (अर्थात मसीह-समान) और मसीह का प्रेम और दया दर्शाने में चूक जाता है वह यीशु मसीह के उदाहरण और शिक्षा के लिए एक जीवित विरोधाभास है। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: *"तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर।' परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो।"* (मत्ती 5:43-44)

औरों ने पूछा, "मसीही लोगों के विषय में क्या जो जीवन को बेईमानी, मतवाले होकर, और अनैतिकता के गुणधर्मो द्वारा व्यतीत करते हैं?" फिर से, एक व्यक्ति जो नैतिक अशुद्धता में जीवन जी रहा है जो पवित्रशास्त्र के सीधे आज्ञाभंग में जी रहा है जो घोषित करता है: *"क्या तुम नहीं जानते कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ! न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अंधेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से, और हमारे परमेश्वर के आत्मा द्वारा धोए गए, पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।"* (1 कुरिंथियो 6:9-11) "धर्मी ठहराया" जाना यह धर्मी घोषित करना है। आगे, पवित्रशास्त्र की हमारी यात्रा में, हम यह ख़ोज करेंगे कि परमेश्वर द्वारा पापियों को किस प्रकार से क्षमा किया और धर्मी घोषित किया जा सकता हैं।

फिर भी अन्य पूछते हैं, "लेकिन मसीहियों के विषय में क्या जो मूर्तियों को नमन करते हैं और मरियम और संतों के पास प्रार्थना करते हैं?" संक्षेप में, कोई भी जो ऐसी बातों का प्रयास करता है वे उनके कलीसिया की परंपरा का अनुसरण करते है इसके बजाय कि परमेश्वर के वचन का अनुसरण करे जो कहता है: *"तुम अपने लिए मुरतें न बनाना, और न कोई खोदी हुई मूर्ति या लाट अपने लिए खड़ी करना। और न अपने देश में दंडवत करने के लिए नक्काशीदार पत्थर स्थापित न करना, क्योंकि मैं प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर हूं।"* (लैव्यव्यवस्था 26:1) मूर्तियों को नमन करना, मनुष्य के अधिकार को परमेश्वर के अधिकार से ऊँचा करना, और एक सत्य परमेश्वर को जाने बिना यंत्रवत प्रार्थना करना ये सब मूर्तिपूजा के प्रकार हैं। बहुत से लोग भ्रमित हो गए हैं क्योंकि वे अनुमान लगाते हैं कि मसीही और रोमन कॅथलिक दोनों समान शब्द हैं। वे नहीं हैं। ना ही मसीही और प्रॉटेस्टंट समान शब्द हैं। जिस प्रकार एक व्यक्ति के घुड़साल में अंदर और बाहर जाने से वह घोड़ा नहीं बन जाता उसी प्रकार कलीसिया की इमारत के अंदर और बाहर करने से कोई मसीही नहीं बन जाता।

4. "ढोंगी"

और एक कारण जो कुछ लोग बाइबल न पढ़ने के लिए देते हैं, वह है, "ढोंगियों के कारण"। दुर्भाग्यवश, बहुत सारे जो बाइबल में विश्वास करने का दावा करते हैं वे कहते कुछ और करते कुछ हैं। वे परमेश्वर के संदेश में उलटफेर करते हैं और उनके स्वार्थी उद्देश्य के लिए उसके नाम का दुरुपयोग करते हैं। बहुत से प्रचारकों के विषय में देखा गया है कि वे भोग-विलासी और अनैतिक हैं। कुछ आपको कहते है कि अगर आप उन्हें पैसा भेज दे तो आप स्वास्थ्य और सम्पत्ति से आशीषित हो जाएंगे। बाइबल ऐसे ढोंगियों को उजागर करते हुए कहती हैं, *"उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े-झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है, और वे सत्य से विहीन हो गए है जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है।"* (1 तीमुथियुस 6:5)

यीशु को उसके समय के स्वार्थी, बनावटी धर्मी अगुओं के विषय में यह कहना है :

> *"हे कपटियों! यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यवाणी ठीक ही की है : 'ये लोग होठों से मेरा आदर करते हैं; पर उनका मन मुझसे दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं; क्योंकि मनुष्य की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'"* (मत्ती 15:7-9)

और अपने शिष्यों से, यीशु ने कहा,

> *"जब तु प्रार्थना करे तो कपटियों के समान न हो, क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए आराधनालयों में और सडकों के मोड़ो पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।"* (मत्ती 6:5)

क्योंकि हम में से प्रत्येक जन किसी न किसी प्रकार के ढोंग (जो हम नहीं है उसका ढोंग करते हैं) के दोषी है, क्या हम औरों के ढोंग को हमारे सृष्टिकर्ता को जानने से दूर रखे और उसके वचन को हमें जैसा वह चाहता है कि हम बने उस प्रकार बदलने न दें?

5. "जातिवाद"

कुछ लोग बाइबल का इन्कार इसलिए करते क्योंकि उन्हें लगता हैं दूसरों की तुलना में कुछ खास लोगों के समूहों के पक्ष में दिखाई देती हैं। हालांकि हम में से अधिकतर लोग कुछ हद तक जातिवाद या जातीय नस्लवाद (औरों के जातीय समूह से अपने जातीय समूह को पसन्द करना) के दोषी हैं, बाइबल यह स्पष्ट है: *"परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।"* (प्रेरितों के काम 10:34)

उदाहरण के तौर पर, क्या आपको यह पता है कि मूसा भविष्यद्वक्ता ने इथियोपिया देश के एक स्त्री से विवाह किया था?[21] क्या आपने यह कहानी पढ़ी है की परमेश्वर ने कैसे, एलीशा भविष्यद्वक्ता के द्वारा, सीरियाई सेना के एक सेनापति को कोढ़ से शुद्ध किया जब उसने अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख नम्र किया था?[22] अथवा यह कि परमेश्वर ने यहूदी योना भविष्यद्वक्ता को आदेश दिया कि नीनवे नगर (इराक में) को पश्चाताप और मुक्ति का संदेश घोषित करे? योना ने नीनवे नगर के लोगों का द्वेष किया और चाहता था कि परमेश्वर उनका नाश करे, लेकिन परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया और उन पर दया की।[23] क्या आप उस महत्वपूर्ण भूमिका परिचित हैं जो फारस (ईरान) ने दुनिया के लिए परमेश्वर के छुटकारे की कहानी में निभाई है?[24] क्या आप ने यीशु की उस छू लेने वाली एक कहानी पर विचार किया हैं, जिसमें वह एक पापी सामरी स्त्री के साथ अनंत जीवन के संदेश को साझा करता है, भले ही यहूदियों ने सामरी लोगों से कोई संबंध नहीं रखा था और सभों ने सामरी लोगों को "अशुद्ध" ऐसा नाम दिया था?[25]

हमारा संसार जातिवाद की महामारी से भरा हुआ है, लेकिन हमारा सृष्टिकर्ता नहीं। उसकी दृष्टि में यहा केवल एक ही जाति है-मानव जाति।

> *"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर, हाथ के बनाए हुए मंदिरो में नहीं रहता। न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सबको जीवन, श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्य की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने*

के लिए बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिए बांधा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं।"
(प्रेरितों के काम 17:24-28)

यह घोषणा कि परमेश्वर ने "एक ही मूल से" सभी लोगों को बनाया है इसकी आधुनिक विज्ञान द्वारा पुष्टि की गई है, जो कहती है : "मानवी अनुवांशिक कोड, या जीनोम, यह दुनिया भर में 99.9 प्रतिशत समान है। और बाकी का डीएनए हमारे व्यक्तिगत मतभेदों के लिए जिम्मेदार - उदाहरण के लिए, आँखों के रंग या रोग का ख़तरा।"[26]

"आकाश और पृथ्वी" का सृष्टिकर्ता और मालिक, जो "हम में से किसी से भी दूर नहीं है," वह व्यक्तिगत रूप से आपकी और मेरी देखभाल करता है और वह चाहता है कि हम "परमेश्वर की खोज करे" और उसके संदेश को समझे। उसने हमारे जन्म से संबंधित प्रत्येक बारीकी को क्रमबद्ध किया है। वह सभी राष्ट्र, भाषा, संस्कृति और रंग के लोगों से प्रेम करता है, और उन्हें आमंत्रित करता है कि उनके हृदय की भाषा में उसके नाम को पुकारे।

6. "बाइबल का परमेश्वर खून करने की मंजूरी देता है"

यह ई-मेल एक नास्तिक से मिला (या एक धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी से, जैसे की वह कहलाना पसंद करता है) :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

बाइबल कहती है, "मैं, प्रभु, परमेश्वर हूं जो दया और करुणा से भरा हूं, जो विलम्ब-क्रोधी है और महान प्रेम और विश्वसनीयता दिखाता है।" स्व-प्रशंसा के सुन्दर शब्द, लेकिन उनमें से एक भी उसके कार्यों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं करते। जब परमेश्वर ने दक्षिण एशिया में दिसम्बर 2004 की सुनामी में लगभग सवा लाख लोगों को तबाह होने दिया, तो वह थोड़ा भी प्रेमी नज़र नहीं आया...। कनान में तथाकथित प्रवेश में, बाइबल के परमेश्वर ने शांतिपूर्ण और निष्पाप पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और बालकों की हत्या की अनुमति दी....ऐसा क्यों है कि, मैं, एकमात्र नश्वर, मेरे तथाकथित "सिरजनहार" की तुलना में से अधिक करुणामय हूं"? अगर ये मेरी सामर्थ्य में होता कि उन्हें रोकू तो फिर अपने ग्रह पर होनेवाले संघर्ष, द्वेष, युद्ध, कत्तल, विनाश, गरीबी, भूख, बीमारी, पीड़ा, दु:ख और दुर्गति को मैं कभी होने नहीं देता। मैं चुटकी बजाके उसी समय उन सब को रोक देता!

बहुत सारे पूछते है, "अगर परमेश्वर भला और सर्व-शक्तिमान दोनोंही है, तो फिर बुराई की रोकथाम वह क्यों नहीं करता?" और फिर कुछ पूछते है, "अगर परमेश्वर भला और सर्व-शक्तिमान है, तो वह मुझे क्यों नहीं रोकता जब मैं बुरे काम करता हूं?" हम चाहते हैं कि परमेश्वर बुराई का न्याय करे, लेकिन हम नहीं चाहते कि वह हमारा न्याय करे।

इस असंगति को ध्यान में लेते हुए, हम मान लेते हैं कि हमारे मानवतावादी मित्र ने कुछ कठिन चुनौतियों को उठाया हैं। हालाँकि कोई सरल उत्तर नहीं हैं, लेकिन संतोषजनक उत्तर हैं। आगे, पवित्रशास्त्र की हमारी यात्रा में, जब हम परमेश्वर के चरित्र और पाप के व्यापक परिणाम के सम्मुख आते हैं, परमेश्वर के उत्तर यह स्पष्ट हो जाते हैं। इस बीच, यहां तीन सिद्धांत हैं जो हमें हमारे सृष्टिकर्ता का न्याय करने से रोकते हैं जब वह अनुमति देता है और यहां तक कि उन आपदाओं का आदेश देता है जो पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और शिशुओं के जीवन को छीन लेते हैं :

1) मनुष्य केवल कुछ अंश ही देखता है, लेकिन परमेश्वर संपूर्ण दृश्य को देखता है।

लोग जिसे "अन्यायी" शोकपूर्ण घटना के रूप में वर्गीकृत करते है जिसमे "निर्दोष" पीड़ित व्यक्ति "समय से पहले" मर जाते है, उसे परमेश्वर अनंतकाल के दृष्टिकोण से देखता है। वह घोषित करता है कि एक व्यक्ति का पृथ्वी पर का क्षणभंगुर अस्तित्व यह केवल मुख्य घटना के लिए प्रस्तावना है।[27] जो आँखों को दिखता है जीवन में उससे बहुत अधिक है। यह स्पष्ट करने के लिए, एक मां के पेट में एक भ्रूण की कल्पना कीजिए। अगर वह कुछ तर्क कर सकता है, उसके जगत के सीमित दृष्टिकोण के आधार पर, तो वह परमेश्वर को कह सकता है: "मैंने और अन्य गर्भस्थित शिशुवों ने गर्भ की थैली में कैद होने योग्य क्या किया हैं? बाहर बच्चे हस रहे और खेल रहे है ये हम सुनते है, और यहा हम इस अंधेरी, पानी से भरी दुनिया में उलझे हुए हैं! यह उचित नहीं है! ऐसा क्यों है कि मैं, केवल एक मात्र भ्रूण, अपने सृष्टिकर्ता से अधिक करुणामय हूं?"

प्रकट रूप से, गर्भस्थित शिशु इस प्रकार उनके सृष्टिकर्ता को चुनौती नहीं देते, लेकिन वयस्क अवश्य देते है। *"हे मनुष्य, भला तू कौन है जो परमेश्वर को सामना करता है? क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़ने वाले से कह सकती है 'तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?'"* (रोमियों 9:20)

2) मनुष्य के लिए जो गलत है वह आवश्यक रूप से परमेश्वर के लिए गलत नहीं।

जीवन का स्त्रोत और पालनहार होने के नाते, उसे यह अधिकार है कि उसे ख़त्म भी कर सके। अय्यूब भविष्यद्वक्ता, जिसने अपनी सारी संपत्ति और अपने दस बच्चों को एक के बाद एक विनाश में गवां दिया, घोषणा की: *"मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वही नंगा लौट जाऊंगा; प्रभु ने दिया था, प्रभु ने ले लिया। प्रभु का नाम धन्य है। इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मुर्खता से दोष लगाया।"* (अय्यूब 1:21-22)

हमारी आनेवाली यात्रा परमेश्वर की कुछ अनोखी फिर भी ज्ञानी रचना के बारे में दृश्यों के पीछे की समझ प्रदान करेगी।[28] विश्व के सर्वश्रेष्ठ शासक से हम मुलाकात करेंगे, जो मनुष्यों पर दबाव नहीं डालता कि वे उससे प्रेम करें और उसकी आज्ञा का पालन करें। हम यह भी खोज करेंगे कि दुनिया इस वर्तमान भीषण अवस्था में क्यों है।

3) **अंत में, परमेश्वर सभी लोगों के साथ संपूर्ण न्याय करेगा।**

जब हम अतीत और वर्तमान घटनाओं के बारे में अर्थ समझने में संघर्ष करते हैं, यह स्मरण करना यह सहायक है कि हमारे सृष्टिकर्ता के पास प्रत्येक प्राण के विषय में सभी जानकारी है; जो हमारे पास नहीं है। परमेश्वर, हमारे नहीं, लेकिन अपने नैतिक मापदंडों के अनुरूप कार्य करता है। हम उसे नहीं बताते की क्या सही और गलत हैं; बल्कि वह हमें बताता है। भले ही परमेश्वर लोगों को गलत चुनाव करने देता है जो अन्य लोगों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है, पर बुराई के प्रति उदासीन नहीं है। न्याय का दिन आ रहा है जब परमेश्वर प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चे का न्याय अपनी नैतिकता के प्रमाण के अनुसार करेगा। उसका प्रेम और न्याय की चरम सीमाएँ अनंत हैं।[29]
"प्रभु न्यायी परमेश्वर है, क्या ही धन्य हैं वे, जो उस पर आशा लगाए रहते हैं।" (यशायाह 30:18)

अगर आप, हमारे ईमेल-संवाददाता के समान, अपने आपको [आपके] सिरजनहार से अधिक करुणामय" ऐसा समझते हैं, तो पढ़ते रहें। परमेश्वर उसके रहस्य उनको प्रकट करता है जो उसका सुनने में विनम्र और सहनशील है।

> *"गुप्त बातें हमारे प्रभु परमेश्वर के वश में हैं जानता है; परन्तु जो प्रकट की गई हैं, वे सदा के लिए हमारे वंश के वश में रहेंगी, ... ।"* (व्यवस्था विवरण 29:29)

7. "…. परमेश्वर की पुस्तक में शामिल नहीं होती"

कुछ लोग यह कहकर पवित्रशास्त्र के उनके तिरस्कार को न्यायिक ठहराते हैं, "यदि बाइबल परमेश्वर द्वारा प्रेरित है तो इसमे व्यभिचार, कौटुम्बिक व्यभिचार, जातिसंहार, विश्वासघात, मूर्तिपूजा और उस समान" विद्रोंह की कहानियां समाविष्ट नहीं होती। प्रेरणा और प्रकटीकरण के उनके विचार के अनुसार, परमेश्वर की पुस्तक परमेश्वर के प्रत्यक्ष उद्धरणों तक ही सीमित होने चाहिए।

तथापि, क्योंकि धर्म पुस्तकों का अभिप्रेत है कि इतिहास की रचना के भीतर लोगों को उनके सृष्टिकर्ता से पहचान कराएं, तो इसमे क्या कोई अचम्भा होना चाहिए कि बाइबल न केवल परमेश्वर के वचनों और कार्यों को, बल्कि मानवजाति के पापों और कमियों को भी दर्ज करती है? क्या परमेश्वर को यह अधिकार नहीं है कि वह मानवजाति की असफलता की काली पृष्ठभूमि में अपनी महिमा, पवित्रता, न्याय, दया और विश्वासयोग्यता को प्रकट करे? क्या हम सर्वशक्तिमान

को यह निर्देश देने की हिम्मत कर सकते हैं कि उसे स्वयं को और अपने संदेश को कैसे प्रकट करना चाहिए या नहीं?

> *"तुम्हारी कैसी उलटी समझ है! क्या कुम्हार मिट्टी के तुल्य गिना जाएगा? क्या बनाई हुई वस्तु अपने कर्ता के विषय में कहे: 'उसने मुझे नहीं बनाया' या रची हुई वस्तु अपने रचनेवाले के विषय में कहे, 'वह कुछ समझ नहीं रखता?' "* (यशायाह 29:16)

बाइबल बहुत सारे ऐतिहासिक घटनाओं को लिपिबद्ध करती है जिन्हें परमेश्वर ने होने दिया लेकिन उन्हें मंजूरी नहीं दी थी। सत्य और जीवित परमेश्वर वह है जो बुरी परिस्थिति को कुछ तो अच्छी में परिवर्तित करने में हर्ष करता है। शायद आप ने, याकूब का ग्यारहवां पुत्र, यूसुफ की दिलचस्प कहानी को पढ़ा होगा (उत्पत्ति 37-50)। उसके दस बड़े भाईयों ने उसका तिरस्कार किया और उसे प्रताड़ित किया और उसे इश्माएलियों को गुलामी में बेच दिया था। यूसुफ को अन्यायपूर्वक कारागार में डाल दिया था, लेकिन उसी विपत्ति के कारण यूसुफ मिस्र के सिंहासन पर बैठा और उसके भाइयों, मिस्र देश और आसपास के राष्ट्रों को भूखमरी से बचाया था। बाद में, उसके भाइयों के हृदय के पूर्ण बदलाव के बाद, यूसुफ ने उन्हें कहा : *"यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।"* (उत्पत्ति 50:20)

8. "विरोधाभास से भरी हुई"

कई लोग इस पर जोर देते हैं कि बाइबल यह विरोधाभास से भरी हुई है, लेकिन बहुत कम हैं जो निष्पक्षता से इसका अध्ययन करने के लिए समय निकालते हैं। क्या किसी के राय के आधार पर पवित्रशास्त्र की निंदा करना उचित है? क्या केवल एक वाक्य यहाँ-वहाँ से पढ़कर किसी भी पुस्तक को समझा जा सकता है? क्या एक महान पुस्तक को केवल छपाई संबंधी गलती या उसके वचन में असंगति को खोंजने के लिए पढ़ना चाहिए? अवश्य ही नहीं। फिर भी उसी प्रकार बहुत सारे लोग बाइबल को पढ़ते हैं।

वर्षों पहले, बाइबल में कथित गलतियाँ और विरोधाभासों की एक लंबी सूचि के साथ मुझे एक ई-मेल आया था जिसे संवाददाता ने किसी वेबसाइट से नक़ल किया था।

यहां उसके कुछ अंश है :

भेजो **विषय** : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

आपकी बाइबल स्वयं का खंडन करती है। उदाहरण के लिए :

- पहले दिन, परमेश्वर ने उजियाला बनाया, फिर उजियाला को अंधकार से अलग किया (उत्पत्ति 1:3-5)। सूरज, जो रात और दिन को अलग करता है, उसे चौथे दिन तक बनाया नहीं गया था। (उत्पत्ति 1:14-19)

- आदम को उसी दिन मरना था जब उसने मना किया हुआ फल खाया था (उत्पत्ति 2:17)। आदम 930 वर्ष जीवित रहा (उत्पत्ति 5:5)
- यीशु ने न्याय नहीं किया (यूहन्ना 3:17; 8:15; 12:47)। यीशु ने न्याय किया (यूहन्ना 5:22, 27-30; 9:39; प्रेरितों के काम 10:42; 2 कुरिंथियों 5:10)
- इत्यादि।

अब मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ: क्या आपका धर्म मुझे प्रश्न पूछने और इसे स्वीकार करने से पहले अपने मस्तिष्क का उपयोग करने की अनुमति देता है या क्या यह मुझे अपनी आंखें बंद करने और अपने मस्तिष्क को प्रश्न उत्पन्न करने से रोकने के लिए कहता है? क्योंकि मैं अपने आप से पूछ रहा हूँ कि क्या यह संभव है कि परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में इतनी सारी गलतियाँ की हो सकती हैं और मैं स्वाभाविक रूप से उत्तर देता, नहीं!? [असल में]

वाकई, वही परमेश्वर जो कहता हैं, *"आओ, हम आपस में **वाद-विवाद** करें"* (यशायाह 1:18), मुझसे चाहता है "कि प्रश्नों को पूछे और मेरे मस्तिष्क का उपयोग करूं।" परमेश्वर प्रत्येक को आमंत्रित करता है कि हम स्वयं उसके वचन पर चिन्तन करे। किसी अन्य के "विरोधाभासों" की सूची की नक़ल उतारना और उपयोग में लाना यह नहीं चलेगा। सुलैमान ने कहा, *"भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बुझकर चलता है।"* (नीतिवचन 14:15)

संवाददाताओं के "विरोधाभासों" का समाधान तब होगा जब हम पवित्रशास्त्र के माध्यम से सोचेंगे।[30] अभी के लिए, हालाँकि, शायद हम सब इस पर सहमत हो सकते हैं : हमें ईमानदारी से स्वयं जांच करनी चाहिए क्योंकि जीवन बहुत छोटा है और अनंत काल बहुत लंबा है।

अगर आप ने कभी कोई स्वादिष्ट, रसभरा आम खाया हो, तो आप जानते है कि किसी को इसके स्वाद का वर्णन करने का प्रयास ही काफ़ी नहीं है। उसका स्वाद लेना चाहिए। उसी तरह, कोई और परमेश्वर के वचन के विषय में आप से क्या कहता है उसका स्वीकार करना यह काफ़ी नहीं है। अपने स्वयं के लिए आपको उसका स्वाद लेना चाहिए।

"परखकर देखो कि प्रभु कितना भला है।" (भजन संहिता 34:8)

यह एक व्यक्ति के स्वयं के हित में है कि पवित्रशास्त्र का सतर्क विद्यार्थी बने, एक जिसे *"लज्जित होने की आवश्यकता नहीं और जो सत्य के वचन को उपयुक्त रीति से प्रस्तुत करता है।"* (2 तीमुथियुस 2:15) संदर्भ पर ध्यान न देना (संपूर्ण भाग जिसमे अभिकथित विरोधाभास मिलता है) सत्य के वचन को काम में लाने का सही तरीका नहीं है।

उदाहरण के लिए, पवित्र शास्त्र के ऐसे कथन हैं जो हमें आज्ञा देते है कि न्याय न करे, जबकि अन्य हमें आज्ञा देते है की न्याय करे।[31] क्या पवित्रशास्त्र के वचन एक दूसरे के विरोधाभास में हैं?, नहीं वे पूरक हैं। दूसरी ओर से, परमेश्वर की पुस्तक मुझे कहती है, एक ज्ञान में सीमित प्राणी होने के नाते, स्व-धर्मी, गलतिया-ढूंढनेवाली भावना से अन्य व्यक्ति के इरादों या कार्यों का न्याय (निंदा) न करूँ। दूसरी ओर से, मुझे आज्ञा दी है कि गलत से सही का न्याय (पहचान) करू और पवित्र शास्त्र धर्म क्या कहती हैं उस के आधार पर गलत से सत्य में भेद करे।

तो फिर बाइबल में के तथाकथित विरोधाभासों के विषय में क्या?

मैंने वैयक्तिक रूप से ऐसे सभी स्पष्ट विरोधाभासों के लिए संतोषजनक समाधान ढूंढे हैं। मैंने यह भी खोज निकाला है कि जब तक लोग पवित्रशास्त्र को समझना नहीं चाहेंगे, वे अपने पुराने विरोधाभास को मिटाते ही एक नया विरोधाभास खोज लेंगे।[32]

क्या *आप* परमेश्वर के संदेश को समझना चाहते है? तो फिर परमेश्वर की पुस्तक के पास आपके स्वयं के विचार खोजने के लिए न जाए; उसके विचारों को जाने। एक-एक पुस्तक करके बाइबल का अध्ययन करें। आप जो पढ़ते है उसकी व्याख्या करने का बहुत ही कठिन प्रयास न करे। इसे स्वयं ही अपनी व्याख्या करने दे। कई सदियों से कई भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखी गई पवित्रशास्त्र, अपने आप में सर्वश्रेष्ठ व्याख्यात्मक टिप्पणी हैं।[33]

> *"वही गूढ़ और गुप्त बातों को प्रगट करता है; वह जानता है कि अन्धियारे में क्या है और उसके संग सदा प्रकाश बना रहता है।"* (दानिय्येल 2:22)

9. "मुझे नए नियम में विश्वास नहीं"

कुछ समय पहले, मुझे एक स्त्री से एक ई-मेल आया :

> भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> मुझे नए नियम में विश्वास नहीं। मुझे केवल पुराने नियम में विश्वास है। मैं नहीं मानती कि परमेश्वर के वचन को आधुनिक समय के लिए संशोधित किया और फिर से लिखे जा सकता हैं। [असल में]

अन्य लोगों समान, इस संवाददाता ने अब तक समझा नहीं कि परमेश्वर की पुस्तक में पुराना और नया नियम क्यों है। पवित्रशास्त्र के इन दो बुनियादी भाग का अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर के वचन को "संशोधित किया और फिर से लिखा गया है", बल्कि यह है की मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना, जिसकी भविष्यवाणी की गई थी, पूरी हो चुकी है और हो रही है।

इतिहास में की घटनाओं का हवाला उनके घटित होने की तिथि के अनुसार दिया जाता है। उदाहरण के लिए, अब्राहम भविष्यद्वक्ता की तिथि लगभग 2000 **ईसा पूर्व** है, लेकिन न्यूयार्क के ट्विन टावर्स की तिथि 2001 **ईसा पश्चात** की है।[34] दुनिया का इतिहास दो भागों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार परमेश्वर की पुस्तक के साथ भी है।

बाइबल में पुराना नियम और नया नियम है। क़ानूनी दस्तावेज, *अनुबंध या वाचा–दो पक्षों के बीच एक समझौता के लिए नियम* एक और शब्द है।[35] अभी के लिए, आइए हम पवित्रशास्त्र के दो भागों पर एक सरसरी नजर डाले। जैसे-जैसे हम पुराना और नया नियम के माध्यम से यात्रा में आगे बढ़ेंगे, इन दो भागों के उद्देश्य और इनकी सामर्थ्य स्पष्ट हो जाएगी।

भाग। : पुराना नियम। इब्रानी और अरामी भाषाओं में लिखा गया हैं, पुराने नियम के पुस्तकों में शामिल है *"मूसा की व्यवस्था [तौरात] और भविष्यद्वक्ताओं और भजन"* (लूका 24:44)। इन लेखों को परमेश्वर ने एक हजार से अधिक वर्षों के दौरान तीस भविष्यद्वक्ताओं को दिया हैं, जो मानव इतिहास में परमेश्वर का हस्तक्षेप के विवरण को प्रदान करते है-आदम की उत्पत्ति से लेकर फारसी साम्राज्य के समय तक (लगभग 400 ईसा पूर्व)।

भविष्यवाणी के नज़रिए से, पुराना नियम समय के घेरे को दुनिया की समाप्ति तक देखता है, सैंकड़ो ऐतिहासिक घटनाएँ घटने से पहले उनकी घोषणा करता है।[36]

परमेश्वर ने लोगों के साथ यीशु मसीह के जन्म से पहले (ईसा पूर्व) जो वाचा बांधी थी उसका वर्णन पुराना नियम करती है। इब्रानी शब्द *मसीहा* के लिए *मसीह* यह यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है, *अभिषिक्त या चुना हुआ*। जो मुख्य घटनाएँ अभी होनेवाली हैं उनकी भविष्यवाणी करने के द्वारा, ये धर्म पुस्तके आगे मसीहा की ओर इशारा करते हैं जो संसार में आनेवाला है कि लोगों को पाप और उसके परिणामों से बचाए। पुराने नियम में ये महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा भी शामिल है :

> *"मैं प्रभु यह कहता हूं : देखो, सुन ऐसे दिन आने वाले हैं, जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से **नई वाचा** बांधूंगा।"* (यिर्मयाह 31:31)

भाग ।। : नया नियम। यूनानी में लिखा गया, नए नियम के लेखों को सुसमाचार (या "इंजील" अरबी भाषा जिसका अर्थ है, "खुशखबरी") भी कहा जाता है। पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान कम से कम आठ व्यक्तियों द्वारा लिखित, नया नियम पृथ्वी पर मसीह के प्रारंभिक आगमन को अभिलिखित करता है। पुराने नियम के पवित्रशास्त्र पर यह एक व्याख्यात्मक ईश्वरीय टिप्पणी भी प्रदान करता है और भविष्यवाणी करता है कि दुनिया के इतिहास का अंत कैसे होगा। पुराने नियम की सभी भविष्यवाणियां और इसकी भविष्यवाणियां एक दूसरे के साथ पूर्ण रूप से सुसंगत हैं।

नया नियम मसीह के आगमन (ईस्वी) फलस्वरूप लोगों को परमेश्वर की महान पेशकश का

वर्णन करता है। पवित्रशास्त्र पीछे की ओर इशारा करती हैं, जो भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बताई गई सैकड़ों महत्वपूर्ण घटनाओं की ऐतिहासिक पूर्ति को दर्शाते हैं।

पुराने नियम के समान, नया नियम भी आनेवाले दिन की ओर संकेत करता है जब मसीह का पृथ्वी पर दूसरा आगमन होगा। यह इसी अच्छे कारण से मसीह ने कहा, *"यह न समझो कि मैं व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। मैं उन्हें लोप करने नहीं परन्तु **पूरा** करने आया हूं।"* (मत्ती 5:17)

पुराने और नए नियम के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। एक बीज समान जो अंकुरित होता है और एक परिपक्व पेड़ के रूप में बढ़ता है, परमेश्वर का मानवजाति के लिए सदियों पुरानी योजना पुराने नियम में जड़ पकड़ती है और नए नियम में बढ़कर परिपक्व हो जाती है। परमेश्वर की पुस्तक का प्रत्येक भाग उस संदेश की ओर इशारा करता है जो वह चाहता है कि हम समझे।

जिस स्त्री ने मुझे ई-मेल लिखा था उसकी यह बात सही हैं कि "परमेश्वर के वचन को आधुनिक समय के लिए संशोधित किया और फिर से लिखे जा सकता हैं।" जिस चीज को पहचानने में वह चूक गई वह यह कि "परमेश्वर का वचन" पूरा हो सकता और पूरा होगा।

10. "भ्रष्ट"

इस मुद्दे तक, हमने नौ बाधाओं को देखा है जो लोगों को बाइबल पढ़ने और उस पर विश्वास करने से रोकते हैं। लेकिन मुस्लिम मित्रों की सामान्य रूप से आपत्ति जो मैंने सुनी है, उसे अभी तक संबोधित नहीं किया गया है। अहमद ने पहले ही उसके ई-मेल में उसे व्यक्त किया है :

> भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> मेरा यह मानना है और मैं यह जानता हूँ कि बाइबल अधिकांश रूप से झूठ और भ्रष्ट है क्योंकि इसकी सभी पुस्तकें तोड़-मरोड़ कर पेश की गई हैं…

क्या अहमद सही है? मूल पवित्रशास्त्र को क्या भ्रष्ट किया गया है?

अगला भाग उत्तर प्रदान करता है।

पाठ 3

भ्रष्ट या संरक्षित?

"घास तो सुख जाती, और फूल मुर्झा जाता हैं,
परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।"

— यशायाह नबी (यशायाह 40:8)

दुनिया के चार भिन्न भागों से ई-मेल के निम्नलिखित अंश दुनिया भर में एक अरब से अधिक लोगों के विचार व्यक्त करते हैं :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

हम सभी ईश्वरीय धर्मग्रंथों पर विश्वास करते है, लेकिन उनके मूल स्वरूप में।

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

यह न भूलो की आपके पास पुराना नियम और नया नियम है जिसमे वचनों में फेरबदल किया गया है। पवित्र कुरान में वचन अनेक वर्षों से एक समान हैं।

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

आपकी बाइबल भ्रष्ट है जिसे आपकी गलत मान्यताओं के अनुरूप बनाने के लिए फिर से लिखी गई है, उसमें जोड़ा गया और संशोधित किया गया है।

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैं यह मानता हूं कि बाइबल सदियों और यहाँ तक कि सहस्राब्दियों पहले भी भ्रष्ट हो चुकी थी, और यह कि अधिकांश नहीं तो पूरा नया नियम पौलुस नामक एक झूठे नबी द्वारा रचा गया संपूर्ण झूठ है। इसलिए, मुझे बाइबल से संदर्भ देना यह टाइप करना और या काटना और चिपकाना यह समय की बर्बादी है।

क्या ये आरोप मान्य हैं? क्या असीम परमेश्वर ने सिमित मनुष्य को पवित्र शास्त्र को भ्रष्ट और उसमे हेरफेर करने अनुमति दी है जिसे उसने अनेक वर्षों पहले अपने भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट किया था?

मुसलमानों के लिए व्यक्तिगत शब्द

यहां पर मैं मेरे आदरणीय मुस्लिम पाठक को सीधे संबोधित करना चाहता हूं।

जैसे आप शायद जानते हो, कुरान स्पष्ट रूप से घोषित करती है कि पवित्र शास्त्र के वचन- तौरात (तौरेट), भजन संहिता (ज़बूर) और सुसमाचार (इंजील)- इन्हें *"**मार्गदर्शन और प्रकाश**" के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया है"* (सूरा 5:44-51)। *इसमे यह भी कहा गया हैं, "फिर हे नबी, हमने तुम्हारी ओर यह किताब भेजी जो सत्य लेकर आयी है और **मूल पुस्तक में से जो कुछ उसके आगे मौजूद है उसकी पुष्टि करने वालों और उसकी संरक्षक है"*** (सूरा 5:48)। और, *"और **हे नबी** तुमसे पहले भी हमने मनुष्यों ही को रसूल बनाकर भेजा था **जिन पर हम प्रकाशना किया करते थे**। तुम लोगों को यदि ज्ञान नहीं तो **पुस्तक वालों से पूछ लो"*** (सूरा 21:7)। कुरान यह भी चेतावनी देती है: *"ये लोग जो इस किताब को और **उन सारी किताबों को** झुठलाते हैं जो हमने अपने **रसूलों** के साथ भेजी थी,....वे नरकाग्नि में झोंक दिए जाएंगे"* (सूरा 40:70-72)।

कुरान बार बार घोषित करती है कि बाइबल की पुस्तकें परमेश्वर द्वारा प्रेरित है और जो उसका अस्वीकार करते हैं उन्हें दोज़ख में भेजा जाएगा। कुरान यही कहती है।[37]

कुरान की ऐसी घोषणाएं सभी जगह मुस्लिम लोगों के लिए एक गंभीर दुविधा पैदा करती है, क्योंकि बाइबल और कुरान परमेश्वर का स्वभाव और मानवजाति के लिए उसकी योजना के संबंध में दो मूलतः भिन्न संदेश प्रस्तुत करते हैं। इसी कारण से अधिकतर मुस्लिम लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि बाइबल भ्रष्ट हो गई हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों ने उस निष्कर्ष के बारे में सोचने में कई लोगों की सहायता की है।

खांस करके मुसलमानों के लिए प्रश्न

- क्या आप सोचते हो कि परमेश्वर उसके स्वयं के धर्म पुस्तकों की सुरक्षा करने में समर्थ है?
- अगर ऐसा है, तो क्या आप ऐसा सोचते हैं कि वह उनकी सुरक्षा करने के लिए इच्छुक है?
- अगर आप मानते हैं कि भविष्यद्वक्ताओं की धर्म पुस्तके भ्रष्ट किए गए हैं :
  - वे कब भ्रष्ट हुए?
  - वे कहाँ भ्रष्ट हुए?
  - किसने उन्हें भ्रष्ट किया? अगर आप सोचते हो कि मसीह या यहूदी लोगों ने धर्म पुस्तकों को बदला है, तो आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि उन्होंने पवित्र किताबों के साथ छेड़छाड़ क्यों की होगी जिनके लिए उनमें से कई स्वेच्छा से मर गए?[38]
  - आप क्या सबूत पेश कर सकते हैं?
  - सर्वशक्तिमान ने मानवजाति के लिए उसका लिखित वचन और प्रकटीकरण सीमित मनुष्यों को शायद ऐसा भ्रष्ट करने क्यों दिया?
- अगर परमेश्वर मनुष्यों को मूसा और दाऊद समान भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को भ्रष्ट करने की अनुमति दी, तो आप कैसे जान सकते हैं कि जिस पुस्तक पर आप विश्वास करते हैं वह भी इस प्रकार की अनादर से नहीं गुज़री है?

उद्देश्य यहां यह नहीं कि प्रश्नों के साथ किसी को भी दबा देना हैं, लेकिन क्योंकि इस भ्रष्टता के आरोप पर बहुत लोग विश्वास करते हैं और इसके शास्वत परिणाम है, यहां पर और एक है :

- क्या आपको लगता हैं कि कुरान के दिए जाने से पहले या बाद में पवित्र शास्त्र के साथ छेड़छाड़ की गई थी?

आगे पढ़ने से पहले, कुछ समय ले कि पहले-या-बाद में इस प्रश्न पर आपके उत्तर पर विचार करें। आप चाहें तो आगे बढ़ने से पहले अपने उत्तर को लिख भी सकते हैं।

पहले?

अगर आपका उत्तर यह है कि पवित्र शास्त्र के वचनों को कुरान के लिखे जाने से पहले भ्रष्ट किया गया हैं, तो फिर कुरान यह क्यों घोषित करती है कि वे पवित्र शास्त्र मानवजाति के लिए “मार्गदर्शन” और “प्रकाश” है और धोखा नहीं है, और न ही अंधकार है? कुरान ये क्यों कहती है, *“हमारा आदेश था कि इंजील वाले उस कानून के अनुसार फैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा*

है"? (सूरा 5:46-47) और वह यह क्यों घोषित करती है : *"अल्लाह की बातें बदल नहीं सकती।"?* (सूरा 10:64)

अगर पवित्र शास्त्र को अविश्वसनीय समझा गया, तो फिर कुरान क्यों आदेश देती है : *"अब यदि तुझे उस मार्गदर्शन की ओर से कुछ भी सन्देह हो जो हमने तुझ पर अवतरित किया है तो उन लोगों से पूछ ले जो पहले से किताब पढ़ रहे हैं"?* (सूरा 10:94 शाकीर[39]), और *"अगर तुम सच्चे हो तो लाओ तौरात और प्रस्तुत करो उसका कोई अंश"?* (सूरा 3:93)

जबकि उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो किताब पढ़ते हुए अपनी ज़बानों का इस प्रकार *"उलट-फेर"* करते हैं कि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, (सूरा 3:78), स्वयं पवित्रशास्त्र को ही शुद्ध और पूर्ण माना गया हैं।

बाद में?

दूसरी ओर, यदि आपकी प्रतिक्रिया यह है कि कुरान के लिखे जाने के बाद में पवित्र शास्त्र के वचनों में भ्रष्टता आई है, तो यह इस ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है कि आज जो बाइबल प्रचलन में है वे प्राचीन हस्तलिपियों के अनुवाद हैं जो कुरान के लिखे जाने से कई सदियों पहले की हैं।

जब तक कुरान को पहली बार पठन किया गया, तब तक पूरे यूरोप, एशिया और अफ्रीका में बाइबल को पहले ही वितरित किया जा चुका था और बहुत सी भाषाओं में उसका अनुवाद किया जा चुका था जैसे लातीनी, सीरियाई, कॉप्टिक, गोथिक, इथियोपिक, और अर्मेनियाई।[40]

इसके विषय में विचार करें। प्रसिद्द पुस्तके, पुस्तके जो बहुत सी भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हो, और ज्ञात दुनिया भर में तेज़ी से वितरित की गई हो उसमे पुरुषों के एक समूह ने भ्रष्टता डाली यह कैसे हो सकता है? कल्पना करें सभी मूल-भाषा की प्रतियां तथा अनगिनत अनुवादों को इकठ्ठा करने का प्रयास करना- और फिर एकरूपता लाने के लिए प्रत्येक को बदलने का प्रयास करना जिसे हम आज इन अनुवादों में पाते है। यह एक असंभव कार्य होगा।

निष्कर्ष यह स्पष्ट है :

- यह दावा करना कि कुरान लिखे जाने से पहले बाइबल भ्रष्ट की गई थी यह कुरान के दर्जनों वचनों के विरुद्ध है।[41]
- यह दावा करना कि कुरान के लिखे जाने के बाद में बाइबल भ्रष्ट की गई थी यह हजारों प्राचीन हस्तलिखितों द्वारा पुष्टि की गए ऐतिहासिक और पुरातात्विक प्रमाणों के विरुद्ध है।

यह निष्कर्ष प्रश्नों के नए समूह को जन्म देता है।

बाइबल लेखों की ये हजारों हस्तलिपियां और अनुवाद कहां से आएं हैं?

मूल लेखन कहां है?

मूल और उनके "वंशज"

क्योंकि पृथ्वी पर सभी वस्तुएं, जिनमें पुस्तकें भी शामिल हैं, घिस जाती है और धीरे-धीरे लुप्त हो जाती हैं, बाइबल की मूल हस्तलिपियां (जिन्हें स्वहस्त-लेख भी कहा जाता है) अब उपलब्ध नहीं हैं। हालांकि, जो हजारों प्रारम्भिक प्रतियां हैं जो मूल से "अवतीर्ण" हुए हैं जिन्हें भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखा गया हैं वे दुनियाभर में संग्रहालय और विद्यापीठों में सुरक्षित रखे गएँ हैं।

चाहे फिर तौरात, इंजील, दार्शनिक अरस्तू, इतिहासकार फ्लेवियस जोसीफस या अभी के समय में कुरान हो,[42] सभी के प्रारम्भिक दस्तावेज घिसे-पिटे और नष्ट हो गए हैं। उसी प्रकार यह प्राचीन सभी पुस्तकों के साथ है। केवल प्रारम्भिक के "वंशज" रह गए हैं।

सेनेगल में, अधिकतर लोगों का मानना है कि बाइबल को झूठा बना दिया गया है। वे उस पर भरोसा नहीं करते। विरोधाभासी रूप से, उन्हें अपने *ग्रीयोट जाति* पर भी भरोसा है। एक ग्रीयोट एक मौखिक इतिहासकार होता है जिसका मुख्य कार्य यह उसके परिवार, गोत्र और गाँव के वंशावली और मौखिक इतिहास को स्मरण करना है, और उस इतिहास को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना है। एक ग्रीयोट की विस्तृत पारिवारिक जानकारी को याद रखने और उसे अचूक रीति के साथ बताने की क्षमता सराहनीय है। फिर भी ग्रीयोट अपने काम में जीतने भी निपुण हो, समय के साथ सटीकता और बारीकियाँ गुम हो जाते है। मनुष्यों में सत्य को संरक्षित करने की मौखिक विधि लिखित पद्धति की सुस्पष्टता की बराबरी नहीं कर सकती।

क्यों बहुत से लोग मनुष्यों की मौखिक गवाही पर विश्वास करने में शीघ्रता करते हैं तथापि परमेश्वर के लिखित गवाही पर विश्वास करने में धीमे होते हैं?

क्या यह बुद्धिमानी हैं?

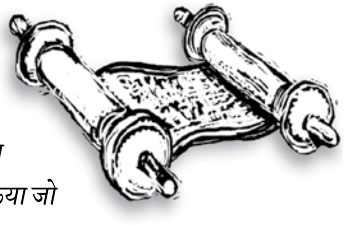

"जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है। .... जिसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया उसने उसे झूठा ठहराया, क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।" (1 यूहन्ना 5:9-10)

पोथियाँ और शास्त्री

कागज, प्रिंटिंग प्रेस और कंप्यूटर से बहुत समय पहले धर्म पुस्तकें लिखी गई हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के वचनों को पन्नों की पोथियों पर लिखा जिसे जानवरों की खाल या पैपीरस से बनाया जाता था। शास्त्री इन मूल पोथियों की प्रतियां हाथों से लिखकर बनाते थे। शास्त्री

प्राचीन जगत के प्रतिष्ठित व्यवसायिक लोग थे जो क़ानूनी दस्तावेजों को पढ़, लिख, तैयार कर सकते थे और उनकी प्रतियां बना सकते थे। कुछ शास्त्री पवित्र शास्त्र के लेखों की भी प्रतिया बनाते थे। उनका लक्ष्य बिल्कुल सटीकता के साथ उनकी प्रतियां बनाना था। "कुछ किताबों के अंत में, शास्त्री ने पुस्तक में शब्दों की कुल संख्या दी है और बताया है कि कौनसा शब्द यह प्रत्यक्ष में मध्य में है, ताकि बाद में शास्त्री दोनों ओर से गिन सकें और यह निश्चित करे कि उन्होंने एक भी अक्षर को नहीं छोड़ा है।"[43]

उनके अत्यंत सावधानी के बावजूद, मामूली विविधता प्रतियों में आ ही जाती थी: एक शब्द, वाक्यांश, या अनुच्छेद का छूट जाना या गलत संख्या।[44] तथापि, प्राचीन हस्तलिपियों में पाए जानेवाली किसी भी विविधता के द्वारा एक भी बुनियादी सत्य प्रभावित नहीं हुआ है।

विद्वानों को प्राचीन, धर्मनिरपेक्ष या पवित्र लेख की प्रतियों में साधारण गलातियों के साथ कभी कोई समस्या नहीं हुई। तथ्य यह है कि ऐसे पाठभेदों का हाथ से-नक़ल किए इन लेखों में रह जाना इस प्रकरण को मजबूत करते है कि धर्म पुस्तकों में कोई छेडछाड नहीं की गई है। कुरान के विपरीत, बाइबल के इतिहास में ऐसा कोई नहीं है जिस ने कभी "एक संपन्न प्रति" बनाने और फिर शेष हस्तलिपियों को नष्ट करने का प्रयास किया हो।[45]

परमेश्वर ने अपना संदेश हमारे लिए संरक्षित रखा है। लेकिन हम इसके बारे में निश्चित कैसे हो सकते है कि आजके पवित्रशास्त्र वास्तव में वही है जो भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों ने लिखी थी?

मृत सागर की पोथियाँ

हाल ही के समय तक, पुराने नियम के पवित्रशास्त्र की सबसे प्रारम्भिक ज्ञात प्रतियां (जिन्हें भविष्यद्वक्ताओं द्वारा ईसा पूर्व 1500 और 400 के बीच में लिखा गया था) जिनकी तारीख करीबन 900 ईस्वी की है। प्रतियां और मूल के बीच के बड़े लंबे अंतराल के कारण और सदियों से इन प्राचीन लेखों की प्रतियां बनाए जाने के कारण से, आलोचकों ने दावा किया हैं कि भविष्यद्वक्ताओं ने जो लिखा था उसे निश्चितता के साथ जानना यह असंभव है।[46]

फिर मृत सागर की पोथियाँ का पता लगा।

वर्ष : 1947

जगह : मृत सागर पास खिरबेट कुमरान

सनसनीखेज ख़बर : एक भटकी हुई भेड़ की खोज में बेडौइन के एक लड़के चरवाहे को एक गुफ़ा में मिट्टी के घड़ों में बहुत सी प्राचीन पोथियाँ मिली जो इब्रानी, अरामी और यूनानी भाषाओं में थी।

1947 और 1956 के बीच में, ग्यारह गुंफाओं में 225 से अधिक बाइबल की हस्तलिपियां प्राप्त हुई हैं। विद्वानों ने इन पोथियों को 250 ईसा पूर्व और 68 ईस्वी के बीच दिनांकित किया जब इन्हें लिखा गया था। इनमे से अधिकतर हस्तलिपियां 2, 000 वर्षों से अधिक पुरानी थी। क्या ही उत्तम खोज है!

पोथियों को कुमरान की गुंफाओं में 70 ईस्वी में (जिस वर्ष में रोम ने यरूशलेम नगर ढाह दिया था) यहूदियों के एक समूह ने जिन्हें एसेन कहा जाता है उन्होंने इसे छिपाया था। इन पुरुषों ने निश्चय किया था कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से जो भी हो जाएं, इन लेखों को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना चाहिए। यहूदी या तो मारे गए या राष्ट्रों में बिखर गए, तब भी पवित्रशास्त्र को संरक्षित रखा गया। करीबन 1, 900 वर्षों तक ये पैपीरस और पोथियाँ मिटटी के घड़ों में मृत सागर के भूभाग में अनुकूल शुष्क मौसम में छिपे रहे थे।

इन प्राचीन दस्तावेजों की ख़ोज के विषय में जब दुनिया को यह समाचार मिला, बहुतों ने सोचा कि उनमें आजकल के नए हस्तलिपियों से महत्वपूर्ण बदल होगा, जो हजारों वर्ष बाद के थे। शायद

यह दावा कि "बाइबल यह बदल दी गई है" की पुष्टि हो जाएगी!

सन्देह करनेवाले निराश हुए। केवल अक्षरों और व्याकरण में कुछ मामूली फरक पायें गएँ। इन प्राचीन हस्तलिपियों में वही वचन और संदेश था जो वर्तमान-समय के अनेक बाइबल में हैं।

इस धारणा के संबंध में कि पवित्रशास्त्र के साथ छेड़छाड़ की है या उसमें हेरफेर किया गया है, मृत सागर की पोथियों के विद्वानों का आधिकारिक निर्णय क्या है? *"अब तक के प्रमाण साबित करते है इस प्रकार की तबदीली कभी हुई ही नहीं।"*[47]

इतिहास में सबसे उत्तम रीतिसे-संरक्षित पुस्तक

जहाँ तक नए नियम का संबंध है, 24, 000 से अधिक प्राचीन हस्तलिपियां हैं, जिसमे मूल यूनानी भाषा में 5,300 हैं, जिनमे से 230 छठी शताब्दी ईस्वी से पहले की हैं। ये नए नियम को इतिहास का सबसे उत्तम रीति से प्रलेखित पुस्तक साबित करते हैं।

तुलनात्मक रूप से, यूनानी दार्शनिक, अरस्तू के लेखों पर विचार करें, जो ईसा पूर्व 384 और 322 में रहे थे। अरस्तू अब तक के सबसे अधिक प्रभावशाली विचारकों में से एक था। फिर भी जो सब कुछ हमें उसके तत्वज्ञान और तर्कशास्त्र के विषय में पता है, उससे संबंधित हस्तलिपियों की संख्या छोटी है जिसमें सबसे प्रारंभिक 1100 ईस्वी की है – मूल लेखों के समय से 1,400 वर्ष का अंतराल। अब तक किसी ने भी अरस्तू के विचारों और शब्दों की प्रामाणिकता या उनके संरक्षण पर सवाल नहीं उठाया।

नए नियम की हजारों हस्तलिपियों के अलावा, विद्वानों ने बाइबल को छोड़ अन्य पुस्तकों में नए नियम से हजारों संदर्भ मिले हैं जिन्हें 325 ईस्वी से पहले लिखा गया था (सबसे प्राचीन पूर्ण नए नियम की हस्तलिपि की तिथि जो अभी भी अस्तित्व में है)। ये संदर्भ इतने व्यापक हैं कि लगभग पूरे नए नियम का पुनर्निर्माण केवल इन्ही लेखों से किया जा सकता है।[48]

प्रमाण नए नियम को पुरातनता का सबसे उत्तम रीति से संरक्षित लेख के रूप में दर्शाते हैं।

अनेक प्रकार के बाइबल?

शायद आप ने किसी को यह कहते सुना होगा, "इतने अनेक प्रकार के बाइबल हैं! कौन सा अनुवाद यह सही है?"

प्राचीन धर्म पुस्तकों की हस्तलिपियां और उन लेखों के विविध अनुवादों के बीच का फरक समझना महत्वपूर्ण है। इन हस्तलिपियों की प्रतियां शास्त्रियों द्वारा बहुत वर्षों पहले, कुरान से सैंकड़ो वर्षो पहले, बनाई गई थी। अनेक बाइबल जो आज छपाई में हैं ये इन प्राचीन लेखों से अनुवादित

हैं।[49] पूर्ण या कुछ हिस्सों में, बाइबल को उसके मूल भाषाओं (इब्रानी, अरामी और यूनानी) से 2,400 से अधिक विविध भाषाओं में अनुवादित किया जा चूका हैं।

उन भाषाओं में से एक अंग्रेजी भाषा है।

बाइबल दर्जनों उत्तम अंग्रेजी अनुवादों में उपलब्ध हैं, जिसे *संस्करण* कहते है। प्रत्येक अंग्रेजी संस्करण पढ़ने में थोडा अलग है, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि शब्दों का एक भाषा में से दूसरी भाषा में अनुवादित किया जाता है। अनुवादक द्वारा चुने गए शब्द भिन्न हो सकते हैं, लेकिन जब विश्वासपूर्वक अनुवादित किया जाए, तो अर्थ और संदेश वैसे ही रहते हैं।

इस पुस्तक में, बाइबल सोसायटी, भारत द्वारा 1997 में अनुवादित हिंदी बाइबल का मुख्य रूप से उपयोग किया गया है। आज के अनेक हिंदी अनुवादित बाइबल में यह एक सटीक अनुवाद है। 2012 में बाइबल सोसायटी, भारत द्वारा इसे फिर से संपादित किया गया ताकि स्पष्टता से समझने में आसानी हो सकें। इसका उपयोग कई स्थानों में अधिकांश रूप से किया जाता है।

यहाँ एक ही पद का उदाहरण दो भिन्न संस्करणों से दिया गया है :

संस्करण 1997 : "जब कभी तुम उपवास करो तो पाखंडियों के समान उदास दिखाई न दो; क्योंकि वे अपना मुंह म्लान बनाए रहते हैं जिससे कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई दे। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना पूरा पूरा प्रतिफल पा चुके।" (मत्ती 6:16)

फिर से संस्करण 2012 : "जब तुम उपवास करो, तो कपटियों के समान तुम्हारे मुँह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।" (मत्ती 6:16)

भले ही शब्द भिन्न हैं, अर्थ समान है।

परमेश्वर महान है

विडंबना यह है कि दुनिया भर की मस्जिदों से दिन भर किए जाने वाली घोषणा इस दावे का सबसे उत्तम खंडन हो सकता है कि मनुष्यों ने परमेश्वर के लिखित वचन को झूठा बना दिया हैं।

मैंने आज सुबह इसे सुना है।

"अल्ला-हू अकबर! अल्लाहहह-हू अकबर!"
(परमेश्वर महान है! परमेश्वर महान है!)

जी हां, परमेश्वर महान है- मनुष्य और समय के असीमित समय से महान है। क्योंकि सभी

राष्ट्रों की आशीषे और उसके स्वयं की प्रतिष्ठा की खातिर, सत्य और जीवित परमेश्वर ने उसके संदेश को प्रत्येक पीढ़ी के लिए संरक्षित किया है।

परमेश्वर केवल अपने जगत का सृष्टिकर्ता और सिरजनहार नहीं है; वह उसके वचन का लेखक और संरक्षक भी है।

"हे प्रभु, सदा-सर्वदा के लिए तेरा वचन आकाश में स्थिर रहे।" (भजन संहिता 119:89)

अंतहीन बाधाएं

इस बिन्दु पर यह सोचते हुए अच्छा लगता सकता है कि प्रत्येक जन जो यात्रा के लिए तैयारी कर रहा है उसने बाधाओं पर विजय प्राप्त की है जो उन्हें परमेश्वर का वचन सुनने से रोकते हैं। फिर भी अनुभव कुछ और कहता है। बहुतों के लिए, सच्चाई के मार्ग पर दूसरी अटकले हमेशा आती रहेंगी।[50] हाल ही में मुझे एक ई-मेल आया :

> भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> आपके उत्तर के लिए धन्यवाद। मुझे याद है कही तो परमेश्वर ने कहा है: 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाए।' मुझे हमेशा से ही यह अचरज रहा है कि 'अपने' ये किसे संबोधित किया है। क्या बाइबल के विभिन्न संस्करण नहीं है? कौन सा सही है? क्या बहुत सारे धर्म नहीं है? क्या ट्विन टावर्स अब भी अस्तित्व में होते है अगर कोई धर्म नहीं होता? क्या मसीहियत बहुत सारे मृत्यु के लिए जवाबदेही नहीं है? और आप अपने विश्वास के बारे में इतने निश्चित क्यों हो? क्यों, क्यों, क्यों क्यों? हम सदैव कल्पित कथाओं पर प्रश्न उठाते रह सकते हैं और उत्तरों का अविष्कार करते रह सकते है, जैसे कई प्रचारक करते हैं कि पैसे आते रहे। और परमेश्वर को किसने बनाया? मै भूल गया हूं। धन्यवाद।

जबकि परमेश्वर की पुस्तक मनुष्यों के कठिन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर प्रदान करती है, किसी एक बिन्दु पर, जो चाहते है कि अनंतकाल के सत्य की खोज वे कब्र के इस ओर करें उन्होंने मनुष्यों के **क्यों** पर ध्यान केंद्रित करना छोड़ देना चाहिए और परमेश्वर के **वचनों** पर चिंतन करना चाहिए।

लोग बाइबल को नज़रअंदाज़ क्यों करते हैं इसके वास्तविक कारण

परमेश्वर के सत्य को अस्वीकार करने वालों के असल कारणों को बाइबल प्रकट करती है। यहां पर तीन कारण हैं :

1. भ्रष्ट हृदय

कुछ लोग पवित्रशास्त्र पर कभी भी चिंतन नहीं करते केवल इस कारण से कि उनके सृष्टिकर्ता-मालिक को वे असल में जानना नहीं चाहते।

मानवी हृदय (हृदयवाहिनी स्पंदन नहीं लेकिन आतंरिक नियंत्रित केंद्र-प्राण) आंकने में वचन घोषित करता है:

> *"…..वे भ्रष्ट हो गए हैं……प्रभु स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता है यह देखने के लिए कि क्या कोई ऐसा मनुष्य है, जो समझ से काम लेता है, जो परमेश्वर को खोजता है? सब मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं…."* (भजन संहिता 14:1-3)

मनुष्यों को बाइबल का अस्वीकार करना वचनों के भ्रष्ट होने से कोई लेना देना नहीं है; इसका लेना देना केवल भ्रष्ट हृदय के साथ है।

सुलैमान राजा ने लिखा : *"परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा-सादा बनाया है, परन्तु उन्होंने बहुत सारी युक्तियाँ निकाली हैं"* (सभोपदेशक 7:29)। अगर अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति पर छोड़ दिया जाए, तो हम अपने स्वयं के मार्ग को चुनने की ओर जाएंगे, अपने स्वयं की योजनाएं ढूंढ निकालेंगे, और हमारे माता-पिताओं के धर्म में जियेंगे और मरेंगे। हम वास्तव में परमेश्वर को न जानने के कारणों की ख़ोज करेंगे। पवित्रशास्त्र की अपनी यात्रा शुरू करने के कुछ थोडेसे समय बाद, हम यह जान जाएंगे कि हम ऐसे क्यों हैं। अभी के लिए, जान लीजिए कि परमेश्वर के पास उसकी पुस्तक में बार-बार चेतावनियों को दोहराने के पीछे एक अच्छा कारण है: *"जिनके कान हों, वह सुन ले।"* (मत्ती 13:9)[51]

2. चिंताएं और संपत्ति

बहुत लोग परमेश्वर के संदेश को समझने में चूक जाते हैं क्योंकि उनका पूरा ध्यान यहां और अभी पर होता हैं। "…संसार की चिन्ता और धन का मोह इस शुभ संदेश को दबा देते हैं…. ।" (मत्ती 13:22)

नासरत के यीशु ने एक धनवान मनुष्य की कहानी बतायी जिसने उसके संपूर्ण जीवन दौरान भविष्यद्वक्ताओं की पवित्रशास्त्र को नज़रअंदाज किया था। शायद इस मनुष्य ने पवित्रशास्त्र अविश्वसनीय हैं यह दावा करने के द्वारा उसके विवेक को समझाने का प्रयास किया हो। जो भी हो, यह मनुष्य आखिर में मर गया और अपने आपको नरक में पाया। जीवित लोगों को स्पष्ट चेतावनी देने के लिए, परमेश्वर ने इस मनुष्य को स्वर्ग में स्थित अब्राहम भविष्यद्वक्ता के साथ थोडीसी

बातचीत करने दी। धनवान मनुष्य ने उसकी जीभ को ठण्डा करने के लिए एक बून्द पानी के लिए बिनती की, लेकिन उसने कुछ भी न पाया। जब यह आदमी समझ गया कि वह हमेशा के लिए आशाहीन है, तो उसने अब्राहम से बिनती की कि उसके बचे हुए भाइयों के पास चेतावनी देने के लिए मृतकों में से एक व्यक्ति को भेज दे, "जिससे कि वे इस पीड़ा के स्थान में आने से बच जाएं!"

अब्राहम का उत्तर स्पष्ट था।

"अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं। वे उनकी सुनें।' वह बोला, 'नहीं, पिता अब्राहम! यदि मृतकों में से कोई उनके पास जाए तो वे मन फिराएंगे।' अब्राहम ने उत्तर दिया, 'जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते तो यदि कोई मृतकों में से जी उठे तो वे उसकी भी नहीं सुनेंगे।' "(लूका 16:29-31)

परमेश्वर ने घोषित किया है कि उसका लिखित वचन चमत्कारिक चिन्हों और अद्भुतों से बढ़कर उसकी सच्चाई की अधिक विश्वसनीय रूप से पुष्टि करता है। उसने हमारे लिए भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को दिया और संरक्षित किया है और हम "उन्हें सुने" यह अपेक्षा करता है।

3. मनुष्य का भय

कुछ लोग बाइबल का अध्ययन कभी नहीं करते क्योंकि वे डरते है कि दुसरे किस प्रकार की प्रतिक्रिया देंगे।

एक पड़ोसी ने भी एक बार मुझे कहा, "अगर मेरा परिवार नहीं होता, तो मैं बाइबल पढ़ता!" लेकिन बाइबल मुझसे कहती है, *"जो आदमी से डरता है, वह मानो अपने लिए जाल फैलता है; किंतु प्रभु से डरनेवाला मनुष्य सुरक्षित रहता है।"* (नीतिवचन 29:25)

आपके बारे में क्या? क्या आप डरते है कि परिवार और मित्र शायद क्या सोचेंगे, कहेंगे या करेंगे अगर उन्हीं भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को पढ़ते हुए आपको उन्होंने देख लिया जिनका सम्मान करने का वे दावा करते हैं?

भयभीत न हो। *"जो कोई प्रभु में विश्वास करता है वह सुरक्षित है।"*
परमेश्वर के दृष्टिकोण से, उसके संदेश को नज़रअंदाज करने का यहां कोई उचित कारण नहीं है।

पाठ 4

विज्ञान और बाइबल

“वह पृथ्वी को निराधार लटका देता है।” — अय्यूब नबी (अय्यूब 26:7)

बहुत वर्षों पहले, मेरी पत्नी और मैंने धरती की एक गहरी गुफ़ा का दौरा किया था। जब हमारे मार्गदर्शक ने हमें प्रभावी चट्टान संरचनाएं, स्टैलैक्टाइट तथा स्टैलैग्माइट की ओर इशारा किया, तब उसने कुछ इस प्रकार कहा : “यह सब एक पानी की बून्द के साथ आरंभ हुआ। एक उथल अंतःस्थलीय समुद्र ने इस क्षेत्र को कुछ 33 करोड़ वर्षों पहले ढांप दिया था, और तलछट की परतें उस पर जमा होती गई और अंत में यह कठोर चुने के पत्थर में बदल गया......”

यह इतना वैज्ञानिक लगा, जैसे कि अगर प्रारम्भ में वहां मनुष्य एक पर्यवेक्षक के रूप में था। जब वह बात कर रही थी, परमेश्वर के वचन से अय्यूब नबी मेरे मन में गूँज उठे : *“जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली थी तब तू कहां था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे”* (अय्यूब 38:4)। दौरे के अंत में, मैंने मार्गदर्शिका को सैर के लिए धन्यवाद दिया और फिर उससे पूछा कि भूवैज्ञानिकों को यह कैसे पता चलता हैं कि धरती की गहराई इतने लाखो वर्ष पुराणी हैं। उसने स्वीकार किया कि उन्हें असल में यह पता नहीं है, और फिर आगे कहा, “मैंने अभी आपको वही बताया है जैसा कहने को मुझे प्रशिक्षित किया गया है।”

वास्तविक विज्ञान

विज्ञान शब्द लातीनी संज्ञा *सायंटिया* से आता है, उसका अर्थ *ज्ञान* है।[52] क्रिया शब्द *सायरे* का अर्थ है, जानना। जानना अर्थात बिना कोई संदेह उसे सच मानना है। जबकि एक वैज्ञानिक शायद एक परिकल्पना को विज्ञान कहना चुन सकता है, लेकिन इससे वह विज्ञान नहीं बना जाता।

1970 के मध्य में, राजा फैज़ल के वैयक्तिक चिकित्सक, फ्रांसीसी डॉक्टर मौरिस बुकेल ने

एक पुस्तक लिखी, द *बाइबल, द कुरान एंड साइंस*। यह पुस्तक, मुस्लिम जगत भर में किताबों की दुकानों और मस्जिदों में प्रधान रूप से प्रदर्शित की गई थी, जो दृढ़ता से कहती थी कि बाइबल आधुनिक विज्ञान के विरोध में है। बुकेल ने यह सुझाव दिया था कि बाइबल के प्रथम अध्याय में अभिलिखित सृष्टि कथा *"प्रोबाबलेमेंट ट्राडक्शन ड्यून मीथ"* (शायद एक मिथक का अनुवाद है), कारण यह विश्व की उत्पत्ति के विषय में मनुष्यों के बदलते सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है।[53] बहुतों के समान, बुकेल वास्तविक विज्ञान के साथ विकासपरक धारणा[54] को जोड़ने की गलती करता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र भौतिक विज्ञान को सिखाने के लिए नहीं हैं, लेकिन आत्मिक विज्ञान को प्रकट करने के लिए दिया गया। परमेश्वर ने हमें उसकी पुस्तक यह दिखाने के लिए दी है कि वह कौन है, वह कैसा है, और उसने हमारे लिए क्या किया है। उसने इसलिए भी इसे दिया है कि हमें सिखाएं कि हम कहां से आएं हैं, हम पृथ्वी पर क्यों हैं, और हमारा अंत कहां पर होगा। ऐसी जानकारी को एक शोध प्रयोगशाला में खोजा या सिद्ध नहीं किया जा सकता। तथापि, क्योंकि बाइबल जीवन के प्रत्येक पहलू से संबंधित है, यह अचरज की बात नहीं कि यह प्राकृतिक जगत के विषय में भी जानकारी रखती है जो मनुष्य के लिए अंजान है जिस समय पवित्रशास्त्र लिखी गई थी।

परमेश्वर ने पहले कहा

आधुनिक-समय के वैज्ञानिकों ने इसे खोजने के बहुत वर्षों पहले जो परमेश्वर की पुस्तक में लिपिबद्द है उन वैज्ञानिक विवरणों के सात उदाहरणों पर आइए हम विचार करें। बाद में, पवित्रशास्त्र के द्वारा जब हम हमारे मार्ग पर विचार करेंगे, तब बाइबल में विज्ञान के अन्य आश्चर्यजनक उदाहरणों को भी हम देख पाएंगे।

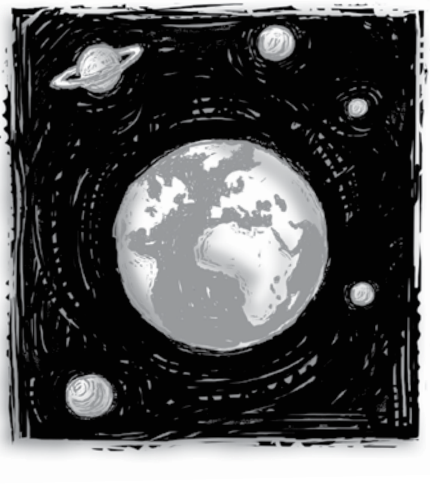

1. **गोल पृथ्वी** अधिकतर आधुनिक इतिहास की पुस्तकें सिखाती है कि 500 ईसा पूर्व में यूनानियों ने, "प्रथम रूप से इस सिद्धांत का निर्माण किया कि पृथ्वी गोल है....यूनानी तत्वज्ञानियों ने यह भी निष्कर्ष निकाला था कि पृथ्वी यह केवल एक गोला ही हो सकती है क्योंकि उनके विचार से, यह 'सबसे सिद्ध' आकार था।"[55] फिर भी हजार वर्ष से अधिक समय पहले, अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने पहले ही यह घोषित किया था कि परमेश्वर जो ***"पृथ्वी***

को निराधार लटका देता है*.... जिस सीमा पर अंधकार और प्रकाश मिलते हैं; वहां जल की सतह पर उसने* ***एक वृत्त खींच रखा है :"*** (अय्यूब 26:7, 10)। और यूनानियों से 400 वर्षों पूर्व, सुलैमान नबी ने स्पष्ट किया था कि परमेश्वर ने *"जब उसने गहरे महासागर के ऊपर* ***वितान*** *खींचा था"* (नीतिवचन 8:27)। और 700 ईसा पूर्व में, यूनानी तत्वज्ञानियों से भी 200 सालों से पहले, यशायाह ने घोषित किया था: *"वह प्रभु ही है जो पृथ्वी के* ***चक्र*** *के ऊपर विराजमान है"* (यशायाह 40:22)। इब्रानी भाषा में शब्द *चक्र* के लिए जो शब्द है उसका अनुवाद *गोला या गोलाकार* भी किया जा सकता है-यूनानियों ने या परमेश्वर ने? जी हां, यह परमेश्वर था, पृथ्वी का शिल्पकार।

2. **जल चक्र :** अय्यूब की पुस्तक भी जल चक्र का वर्णन करती है : ***"वह जल की बूंदे ऊपर खींचता है, और कुहरे के रूप में वर्षा करता है।*** *मेघ उनको उंडेलते हैं, और मनुष्यों पर उनको बरसाते हैं। क्या कोई व्यक्ति मेघों के विस्तार का अनुभव कर सकता है? क्या कोई मनुष्य परमेश्वर के निवास-स्थान में मेघ-गर्जन को समझ सकता है?"* (अय्यूब 36: 27-29)। इसी प्रकार, बाइबल जल चक्र का वर्णन करती है, जिसमे कुहरे प्रथम बाफं बन जाते है, मेघों में जल की छोटी बूंदों में संघनित होती जाती है, और फिर इतने बड़े और भारी हो जाते हैं कि जो ऊपरी हवा का दबाव उन्हें वायुमंडल में लटकाएं रखता हैं वे उस दबाव पर काबू पा सकें। अय्यूब जल के अविश्वसनीय मात्रा का भी हवाला देता है जिन्हें मेघों में संघनन के रूप में देखा जा सकता है: *"वह जल को अपने घने बादलों में बाँध कर रखता है; फिर भी बादल जल के भार से नहीं फटता।"* (अय्यूब 26:8)[56]

3. **सामान्य वंशावली :** पैंतीस सौ वर्षों पहले, मूसा भविष्यद्वक्ता ने लिखा : *"आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं* ***उन सब की आदिमाता वही हुई"*** (उत्पत्ति 3:20)। बाइबल के अनुसार, सभी मानव एक ही माता से उत्पन्न हुए हैं। विकासवादि वैज्ञानिकों को 1987 तक इस वास्तविकता पर विश्वास नहीं था। दुनिया भर में गर्भनाल से लिए गए माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए (मानव आनुवंशिक कोड का खंड मां से बच्चे तक) के व्यापक विश्लेषण के बाद, शोध से यह निष्कर्ष निकाला कि आज सभी मनुष्य एक सामान्य स्त्रीलिंगी वंशावली से आते हैं।[57] कई वर्षों बाद, अध्ययनों से यह भी निष्कर्ष निकाला है कि सभी मनुष्य एक सामान्य पुरुष-पिता के वंशज हैं।[58] इन शोधकर्ताओं को इस बात का बहुत कम एहसास था कि उनके सारे प्रयास और खर्च बाइबल की सटीकता की पुष्टि करेंगे।

4. **जीवन लहू-मूसा ने यह भी कहा :** "प्राणी का प्राण **लहू में** रहता है" (लैव्यव्यवस्था 17:11)। इस वास्तविकता को चिकित्सीय समाज द्वारा पूर्ण रूप से हाल में ही समझा गया है, जो 19वी शताब्दी तक लहूस्राव की संभावित घातक तकनीक का प्रयास करते थे।[59]

5. **पृथ्वी की बढ़ती आयु :** तीन हजार वर्षों पहले, दाऊद भविष्यद्वक्ता ने लिखा था कि पृथ्वी एक दिन *"**नष्ट**"* होगी और "वस्त्र समान ***पुराणी होगी***" (भजन संहिता 102:26)। आधुनिक विज्ञान सहमत है कि हमारा ग्रह यह धीमा होता जा रहा है, उसका चुंबकीय क्षेत्र कमज़ोर हो रहा है, और इसकी सुरक्षात्मक ओझोन परत पतली हो रही है।

6. **समुद्र-विज्ञान :** दाऊद ने भी *"समुद्र के **मार्गों**"* के विषय में लिखा है (भजन संहिता 8:8)। यह एक छोटेसे वाक्यांश ने नौसेनाध्यक्ष मॅथ्यू फोंटेन मौरी (1806-1873) को प्रेरित किया कि इन समुद्री धाराओं की खोज और लिपिकरण के लिए अपना जीवन समर्पण करे। उसने यह तर्क दिया कि क्योंकि परमेश्वर ने समुद्र में "मार्गों" के विषय में कहा है, तो उसे उनका नक्शा बनाने में सक्षम होना चाहिए। मौरी ने ठीक वैसा ही किया और समुद्र-विज्ञान का पिता" के रूप में जाना जाने लगा।[60]

7. **खगोल विद्या :** करीबन 2,000 वर्षों पहले, प्रेरित पौलुस ने लिखा था : *"सूर्य का तेज एक प्रकार का होता है, चन्द्रमा का तेज दूसरे प्रकार का और तारों का तेज अन्य प्रकार का, यहां तक कि **एक तारे का तेज दूसरे तारे से भिन्न होता है**"* (1 कुरिंथियों. 15:41)। खुली आंखो से सभी तारे एक समान ही दिखते है। आज, सामर्थ्यशाली दुर्बिनी द्वारा प्राप्त हुई जानकारी और प्रकाश के किरणों के विश्लेषण द्वारा, खगोलशास्त्री हमें बताते हैं: "तारे रंग और चमक में बहुत ही भिन्न होते हैं। कुछ तारे पीले दिखते है, जैसे सूरज। अन्य नीले या लाल रंग में चमकते हैं।"[61] "प्रत्येक तारा यह अनोखा है।"[62] पहिली शताब्दी ईस्वी में पौलुस यह कैसे जान सका?

अंधविश्वास?

भले ही बाइबल में विज्ञान के अन्य अनगिनत उदाहरणों का संदर्भ दिया जा सकता हैं, इन सात प्रकरणों में एक सीधा-सादा सबक यह है : भले ही बाइबल यह विज्ञान की पाठ्यपुस्तक नहीं है, पर जब भी यह विज्ञान पर बात करती है, वह अचूक और सत्य होती है।

बाइबल में विश्वास को कुछ "अंधविश्वास" कहते हैं। क्या यह ऐसा है? या क्या यह बुद्धिमान विश्वास है जो निर्विवाद विवरण पर आधारित है? क्योंकि जो कुछ बाइबल में लिखा गया है उसके साथ प्रमाण लगातार समन्वय में है, तो इन लेखों के सत्य को स्वीकारने में क्या ठहरेंगे, मूर्ख या बुद्धिमान – भले ही वे ऐसी बातें सिखाते हैं जिसे हम पूर्ण रूप से समझ या साबित नहीं कर सकते?

परमेश्वर ने हमें बौद्धिक रूप से आत्महत्या करने को नहीं कहा है। उसने हमें *"बहुत से पक्के प्रमाण"* दिए हैं (प्रेरित. 1:3) जो उसकी पुस्तकों की विश्वसनीयता की पुष्टि करते हैं।

इतिहास, भुगोल, पुरातत्व विज्ञान

पिछले अध्याय में, हमने कुछ ऐसे प्रमाणों की जाँच की हैं जो पुराने और नए नियम को पुरातनता की सर्वोत्तम संरक्षित पुस्तकों के रूप में स्थापित करते हैं। लेकिन उस वास्तविक जानकारी का क्या जो पवित्रशास्त्र में पाई जाती है? क्या इस पर भरोसा किया जा सकता है?

बाइबल विद्वानों और संदेहवादियों को हजारों अवसर देती हैं कि उसकी सत्यता को जांचे क्योंकि करीबन हर एक पन्ने पर एक ऐतिहासिक व्यक्ति, जगह या घटना के नाम है।

इतिहास, भूगोल और पुरातत्व विज्ञान क्या प्रकट करते हैं?

सदियों से, बहुत से लोगों ने बाइबल की ऐतिहासिक सत्यता को अविश्वसनीय ठहराने का प्रयास किया हैं। एक ऐसे संदेहवादी सर विल्यम मिचेल रामसे (1851-1939) थे, जो जगत के सबसे महान पुरातत्व विज्ञानीयों में से एक थे। विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में, रामसे ने बाइबल की सत्यता पर संदेह जताया। लेकिन उनकी ख़ोज ने धीरे धीरे उनके विचारों को बदल दिया, और 30 वर्षों के अध्ययन के बाद में उन्हें विवश किया कि लिखे, "लूका यह प्रथम श्रेणी का एक इतिहासकार है; न केवल उनके तथ्यात्मक कथन भरोसेमंद हैं ....तो इस लेखक को सबसे महान इतिहासकारों में गिना जाना चाहिए।"[63]

लूका एक चिकित्सक, एक इतिहासकार, यीशु का अनुयायी और लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम इन दोनों पुस्तकों के लेखक है। बाइबल की इन दो पुस्तकों में 95 भौगोलिक स्थानों (32 देश, 54 नगर, और 9 द्वीप), और उसके साथ अनगिनत ऐतिहासिक व्यक्तियों और घटनाओं का उल्लेख करती हैं। लूका जो लिपिबद्द करते है और जो पुरातत्व विज्ञान, भूगोल-विद्या और पवित्र शास्त्र विरहित अतिरिक्त इतिहास जो कुछ प्रकट करते है उनके बीच में असंगति को खोजने के लिए आलोचकों ने बहुत ही कठिन प्रयास किया हैं। लेकिन उन्हें निराशा प्राप्त हुई। लूका की लिखावट प्रत्येक प्रकार से अचूक सिद्ध हो गई है।

लूका रचित सुसमाचार से यह एक वाक्य इस बिंदु को स्पष्ट करता है। यह इस वाक्यांश को नासरत के यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्थापित करने के लिए रची गई है।

*"**तिबिरियुस कैसर** के राज्य के पंद्रहवे वर्ष में जब **पुन्तियुस पिलातुस** यहूदिया का हाकिम था, और गलील में हेरोदेस, इतुरैय्या और त्रखोनीतिस में उसका भाई फिलिप्पुस, और अबिलेने में **लिसानियास** चौथाई के राजा थे। और जब हन्ना और **कैफा***

महायाजक थे। उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा।" (लूका 3:1-2)

क्या लूका सही था?

यहाँ पर बहुत सारे नाम और विस्तृत विवरण हमें स्वाभाविक रूप से पूछने के लिए उकसाते हैं, "क्या लूका सही था?" एक परीक्षण के रूप में, आइए उन चार लोगों की जाँच करें जिनका उल्लेख किया गया है - पिछले संदर्भ में जिन नामों पर प्रकाश डाला गया है।

पहला, लूका ने रोमी सम्राट तिबिरियुस कैसर और प्रदेश राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस को उल्लिखित किया है। क्या वे ऐतिहासिक शख्सियत हैं? क्या उन्होंने एक ही समय शासन किया था? 1961 में, कैसरिया में हेरोद के पुनर्निर्मित रंगमंच के क्षेत्र में (इसे लूका द्वारा भी उल्लिखित किया है [प्रेरित. 12:19-24]), एक-मीटर ऊँचा पत्थर खोज में मिला है जिस पर लेख है जो प्रमाणित करते है की पुन्तियुस पिलातुस वास्तव में राज्यपाल था जब तिबिरियुस कैसर सम्राट था। पवित्र शास्त्र-विरहित इतिहासकार जोसेफस (37-101 ईस्वी) ने भी वहीं लोग, स्थान और घटनाओं के विषय में लिखा है।[64]

लूका सही था।

लूका ने लिसानियास को सीरिया के एक प्रांत अबिलेने के चौथाई के राजा, (संयुक्त राज्यपाल) के रूप में भी उल्लेख किया है। वर्षों से विद्वानों ने लूका को गलत साबित करने के लिए इस कथित तथ्यात्मक त्रुटि का इस्तेमाल किया क्योंकि इतिहासकारों को उस एकमात्र लिसानिया का पता था जो यूनान के चाल्सिस का शासक था, जिसे लूका के लेखन के समय अवधि (लगभग 27 ईस्वी) से पूर्व लगभग 60 साल पहले मार दिया गया था। इतिहासकारों को अबिलेने, सीरिया के लिसानियास चौथाई के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी, जब तक कि दमास्कस के करीब 14 और 29 ईस्वी के बीच का एक शिलालेख नहीं मिला। इसका नाम है: लिसानियास चौथाई का राजा।[65] इसलिए लिसानियास नाम के दो अलग-अलग व्यक्ति थे।

लूका सही था।

लूका ने कैफा के विषय में भी लिखा, जो यहूदी मंदिर में सह-महायाजक था जब यीशु पृथ्वी पर था। 1990 के दिसंबर में, जब पुराने यरूशलेम के ठीक दक्षिण में एक सड़क का निर्माण करने वाले मज़दूरों ने अनजाने से कैफा के पारिवारिक मकबरे की खोज की। पुरातत्व विज्ञानियों को उस स्थान पर बुलाया गया। मक़बरे में बारह आस्युअरी (अस्थि-पंजर रखने के लिए चूना पत्थर के सन्दुक)

थी। उनमें सबसे सुंदर रीति से सजाए गए आस्युअरी पर कैफा के पुत्र योसेफ का नाम खुदा हुआ था। जो उस महायाजक का पूरा नाम था जिसने यीशु का पकड़वाया था।[66] उस सन्दुक में 60 वर्ष की आयु के पुरुष का अवशेष था, लगभग निश्चित रूप से वह नए नियम के कैफा का था।[67]

लूका सही था।

जाने-माने पुरातत्व विज्ञानी नेल्सन ग्लूक ने कहा : "यह बिना किसी संदेह के स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि पुरातत्वविज्ञान की किसी भी खोज ने बाइबल के एक भी संदर्भ का कभी भी खण्डन नहीं किया है। कई पुरातात्विक खोजें की जा चुकी हैं जो बाहरी स्पष्टता या बारीक सटीकता के साथ बाइबल में ऐतिहासिक कथनों की पुष्टि करती हैं।"[68] लेकिन जगत के धर्मों द्वारा सम्मानित अन्य पुस्तकों के विषय इस प्रकार नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए, पुरातत्वविज्ञान की ख़ोज से पता चलता है कि मॉरमॉन की पुस्तक इतिहास और भूगोल-विद्या के साथ मेल नहीं खाती।[69]

पुरातत्वविज्ञानी जोसेफ फ्री, व्हीटन कॉलेज में पुरातत्वविज्ञान के विभाग के अध्यक्ष, ने अपनी पुस्तक, *आर्कीऑलॉजी एण्ड बाइबल हिस्टरी* का समापन इन शब्दों के साथ किया है : "मैंने उत्पत्ति के पुस्तक को पढ़ा है और मानसिक रूप से यह जान लिया है कि पुरातात्विक खोज 50 अध्यायों में से प्रत्येक को स्पष्ट करती हैं या उनकी पुष्टि करती हैं – यह बाइबल के शेष अध्यायों, दोनों पुराने और नए नियम के लिए भी सत्य है।"[70]

विज्ञान क्या सिद्ध नहीं कर सकता

हालाकि वास्तविक पुरातात्विक आँकड़े सुसंगत रूप से एक सटीक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में बाइबल की विश्वसनीयता की पुष्टि करता है, पुरातत्वविज्ञान ईश्वरीय प्रेरणा को सिद्ध नहीं कर सकता। और हालाकि बाइबल में प्रभावी वैज्ञानिक कथनों को देखा जा सकता हैं, विज्ञान किसी भी पुस्तक को परमेश्वर का सत्य वचन साबित नहीं कर सकती। इसे कहना आवश्यक है क्योंकि ऐसे लोग है जो अन्य लोगों को विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि उनकी धार्मिक पुस्तक यह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है क्योंकि इसमे कुछ विज्ञान-सार्थक कथन हैं।

आत्मिक सत्य को वैज्ञानिक खोज द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता, न ही किसी पुस्तक के वैज्ञानिक तथ्य यह प्रमाणित कर सकते हैं कि वे परमेश्वर की ओर से हैं। शैतान, जो लंबे समय से अस्तित्व में हैं, वह विज्ञान के विषय में भी बहुत कुछ जानता है। पवित्रशास्त्र की हमारी यात्रा के आरंभ में, हम इस पूर्व स्वर्गीय दूत से मिलेंगे, जिसे अब *शैतान* और *भूत* कहा जाता है, जो अब परमेश्वर का विरोधी हो गया है। अभी के लिए, बस ध्यान रखें कि शैतान यह अविश्वसनीय रूप से

बुद्धिमान है और मनुष्यों को प्रभावशाली चीजें लिखने के लिए प्रेरित करने में सक्षम है।

दानिय्येल भविष्यद्वक्ता एक बुद्धिमान व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में से एक सबसे गहन पुस्तक को लिखमें में इस्तेमाल किया था , फिर भी जब स्वाभाविक क्षमताओं की बात आती है, तब शैतान, एक आत्मा जो परमेश्वर के सत्य का विरोध करता है, वह "दानिय्येल से भी बुद्धिमान है" (यहेजकेल 28:3)। झूठे धर्म शैतानी दिमाग की उपज है। वह धोखा देने के कला में प्रवीण है। शब्द शैतान का अर्थ ही दोष लगाने वाला या निंदक है।

एक अरबी कहावत धोखे को इस प्रकार सारांशित करती है : *"सावधान! कुछ झूठे लोग सत्य बताते हैं।"*

कविता क्या सिद्ध नहीं कर सकती

कुछ धर्म दावा करते हैं कि उनकी पुस्तक यह परमेश्वर की ओर से है यह सिद्ध किया गया है क्योंकि वह इस भाषा शैली में लिखी गई है जिसे कोई मानव निर्माण नहीं कर सकता।[71] जैसा कि अहमद ने उसके ई-मेल में लिखा था :

> भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> कुरान किसी नबी के साथ हुआ अब तक का सबसे बड़ा चमत्कार है! ठीक है, एक आयत की रचना करके बताएं जो उसके समान है, या कुरान की आयतों में से एक के आसपास भी है!! आप ऐसा कभी भी नहीं कर पाओगे भले ही आप उच्च स्तर की अरबी भाषा में सबसे निपुण व्यक्ति होंगे......यहां पर जगत में ऐसा कुछ भी नहीं जो कुरान की महानता की समानता में आ सकता है....और अगर आप इसके विपरीत साबित कर सकते हैं, तो करें।

अहमद की चुनौती यह कुरान के दूसरे सूरा (अध्याय) के एक वचन पर आधारित है जो कहती है : *"और अगर तुम्हे इस बात में सन्देह है कि यह किताब जो हमने अपने सेवक पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं,* ***तो इस जैसा एक ही सूरा बना लाओ***...... *"* (सूरा 2:23)

इस दावे के साथ कठिनाई यह है कि इसे न ही सिद्ध न असत्य सिद्ध किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, मान ले मैं एक कला की प्रतियोगिता का आयोजन करता हूं, उसमे अपने बनाए चित्र को शामिल करता हूं, उसका स्वयं न्याय करता हूं, अपने आपको विजेता घोषित करता और फिर अन्य प्रतिस्पर्धियों को चुनौती देता हू कि, "कोई भी मेरे जैसे चित्रकारी नहीं कर सकता। अगर आपको संदेह है कि मैं दुनिया का सबसे महान चित्रकार हूँ,

तो मेरी तरह एक चित्र बनाकर दिखाएं।"

फिर क्या वह मेरे चित्र को सबसे उत्तम सिद्ध करेगा? क्या वह सिद्ध करेगा कि मैं सबसे बड़ा चित्रकार हूं? नहीं। फिर भी कोई भी मुझे गलत सिद्ध करने में समर्थ नहीं होगा! क्यों नहीं? सुंदरता देखने वाले की नज़र में है।

उसी प्रकार लयबद्ध, साहित्य-संबंधी सुंदरता के साथ है। वह व्यक्तिनिष्ठ है।

अद्भुत इब्रानी कविता और हृदयस्पर्शी अनगिनत पद्धतियां बाइबल में भरपूर हैं।[72] लेकिन यह कोई साहित्यिक वक्तुत्व के कारण नहीं कि परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि उसके वचन पर विश्वास करें।

जिस तरह विज्ञान ईश्वरीय प्रेरणा को सिद्ध नहीं कर सकता, न ही सुंदर-सुनाई देनेवाला गद्य यह सिद्द कर सकता है कि यह पुस्तक परमेश्वर की ओर से है।

यह ध्यान में रखना बुद्धिमानी है कि शैतान, जो बड़ा नक़ल करनेवाला और विडम्बक है, वह सम्मोहित करनेवाली कविताओं और *"घमण्ड की बातें"* को भी प्रेरित कर सकता है (यहूदा 16)। पवित्रशास्त्र हमें चेतावनी देता है कि धोखा न खाए, *"क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं, चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं"* (रोमियों 16:18), खांसकर जब वे वचन सृष्टिकर्ता की योजना और संदेश के विपरीत होते हैं जिसे समय के प्रारम्भ से स्पष्ट किया गया हैं।

न ही विज्ञान, न पुरातत्व विज्ञान, न कविता ये सिद्ध कर सकते है कि कोई पुस्तक यह परमेश्वर का सत्य वचन है। ईश्वरीय प्रेरणा का ऐसा प्रमाण उच्च न्यायलय के निर्णय पर आधारित होना चाहिए -मजबूत, अविवादित प्रमाण पर आधारित होने चाहिए।

यह वह प्रमाण है जिस पर हम अब विचार करेंगे।

पाठ 5

परमेश्वर का हस्ताक्षर

"विश्व के सब राष्ट एकत्र हो....लोग उनकी गवाही सुने और तब वे यह कह सके, 'यह सच है।' "

— परमेश्वर (यशायाह 43:9)

बहुत से क़ानूनी दस्तावेजों के लिए अधिकृत हस्ताक्षर की आवश्यकता होती हैं। पुराना और नया नियम धर्म पुस्तके, जो परमेश्वर के अधिकृत अभिलेख और करार होने का दावा करते हैं, एक कलम से नहीं, बल्कि पूरी तरह से विशिष्ट हस्ताक्षर के साथ हस्ताक्षरित हैं, जिसे पूर्ण भविष्यवाणी कहा जाता है।

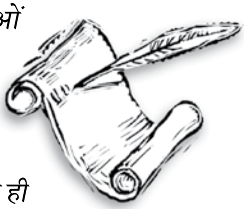

"इस्राएली राष्ट्र का राजा, उसका छुड़ानेवाला, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है : 'मैं ही आदि हूं, मैं ही अंत हूं, मेरे अतिरिक्त अन्य ईश्वर नहीं है। मेरे समान कौन है? वह इसकी घोषणा करे। वह बताए और मेरे सम्मुख अपने पक्ष को प्रस्तुत करे। प्राचीनकाल से कौन भविष्य की घटनाएँ पहले से ही बताता आया है? वे हमें बताए कि भविष्य में क्या होनेवाला है?..... तुम आपस में विचार-विमर्श करो। किसने प्राचीन काल से ये बात बताई थीं? मैंने, मुझ-प्रभु ने ही ये बातें तुम पर प्रकट की थी।' " (यशायाह 44:6-7; 45:21)

हम परमेश्वर के तर्क को समझने में गलती न करे। क्योंकि बाइबल विस्तृत भविष्यवाणियों से भरपूर हैं जो निश्चित रूप से पूरी हुई है कि वह जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के विषय में घोषित करती है हम उस पर विश्वास कर सकते हैं।

सकारात्मक सबूत

केवल एक जो समय से परे रहता है वही इतिहास को घटित होने से पहले उसे घोषित और लिपिबद्ध कर सकता है।

नश्वर पुरुष और स्त्रियां भविष्यकाल में शायद क्या घटेगा उसके विषय में सोची-समझी अटकलें लगाते हैं, लेकिन केवल परमेश्वर ही भविष्य को उसी तरह देख सकता है जैसे वह पहले ही घट चूका है। केवल परमेश्वर ही जानता है कि अब से हजारों वर्षो बाद क्या होनेवाला है। ईश्वरीय प्रकाशन के अलावा, न ही मनुष्य, न फरिश्ते, न भूत, न सैतान अधिकृत रीतिसे भविष्य में घटनेवाली घटना के बारे में भविष्य कर सकता है।

कुछ कहेंगे, "लेकिन माध्यमों, ओझों और ज्योतिषियों के विषय में क्या? वे भविष्य बताते है!"

पहला, यह समझना महत्वपूर्ण है कि शैतान अलौकिक ज्ञान और शक्ति देने में सक्षम है जिन्हें *"उसने बन्दी बनाया हैं कि उसकी इच्छा पूरी करे"*। (2 तीमुथियुस 2:26)

दूसरा, शैतान—नक़ल करनेवाला स्वामी और मनोवैज्ञानिक है जो मानवी इतिहास को हजारों वर्षो से देख रहा है—वह परमेश्वर का नकली "हस्ताक्षर" करने में काफ़ी प्रवीण हो गया है।

तीसरा, हालाकि शैतान कुछ घटनाओं के विषय में भविष्यवाणी करने में अपेक्षाकृत अच्छा है, फिर भी वह भविष्य के बारे में नहीं जानता। उसकी "भविष्यवाणियां" अक्सर गलत सिद्ध हुई हैं। इसके अलावा, वे संदिग्ध हैं। उदाहरण के लिए, एक ज्योतिषी एक जवान स्त्री से कह सकता है, "अगले कुछ वर्षो में आपका विवाह होगा और आपको सच्चा प्यार मिलेगा।" आप और मैं जानते हैं कि संभावनाएं काफी अच्छी हैं कि ऐसी "भविष्यवाणी" यह कुछ हद तक सही होगी। जब पवित्र शास्त्र की पूरी हुई भविष्यवाणियों के विषय में कहते हैं, तब हम उस प्रकार की अस्पष्ट भविष्यवाणियों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

आइए हम पवित्रशास्त्र से भविष्यवाणियों के तीन उदाहरणों पर विचार करे—एक स्थान, एक लोग और एक व्यक्ति के विषय में।

एक स्थान के विषय में भविष्यवाणीयां

600 ईसा पूर्व के करीब, यहेजकेल भविष्यद्वक्ता ने प्राचीन फेनिके नगर सोर के विरुद्ध भविष्यवाणी की थी। लेबनान के तट पर स्थित, सोर दो हजार से अधिक वर्षो से जगत की राजधानी था। वह समुद्र की रानी कहलाती थी। फिर भी जब वह उसका शासन चरम पर था,

परमेश्वर ने यहेजकेल को कहा कि सोर पर उसकी दुष्टता और अहंकार के फलस्वरूप आने वाले विनाश की घोषणा करें और उसे लिखें।

यहेजकेल भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की :

1. *बहुत से राष्ट्र सोर के विरोध में आयेंगे।* (यहेजकेल 26:3)
2. *बेबीलोन, जो राजा नबूकदनेस्सर के शासन में है, वह पहले आक्रमण करेगा।* (वचन 7)
3. *सोर की दीवार और मीनारों को गिरा दिया जाएगा।* (वचन 4, 9)
4. *सोर के लोगों को तलवार से कतल किया जाएगा।* (वचन 11)
5. नगर के रबर और तेल को समुद्र में फेंका जाएगा। (वचन 12)
6. वह *"एक चट्टान के उपरले भाग समान" कूड़ा हो जाएगा।* (वचन 4)
7. *"जाल बिछाने के लिए" मछवारों के काम का वह स्थान हो जाएगा।* (वचन 5, 14)
8. *सोर महान नगर को "फिर कभी बनाया नहीं जाएगा, क्योंकि मैं परमेश्वर ने यह कहा है।"* (वचन 14)

धर्मनिरपेक्ष इतिहास अभिलिखित करता है कि सभी आठ भविष्यवाणियाँ सच हो गई :

1. *बहुत सारे राष्ट्र सोर के विरोध में आए।*
2. पहला यह *बेबीलोन* था, जिसका नेतृत्व राजा *नबूकदनेस्सर* ने किया था।
3. 13 वर्षों की घेराबन्दी के बाद (585-572 ईसा पूर्व), नबूकदनेस्सर ने *सोर की शहरपनाह की दीवारे और मीनारे तोड़ डाली,* यहेजकेल की भविष्यवाणीयों की पहली भविष्यवाणी पूरी हुई।
4. नबूकदनेस्सर ने *नगरवासियों की कतल की* जो सोर के द्वीप किल्ले से बच कर भागने में असमर्थ हुए थे, जो मध्य समुद्र में करीबन एक किमी पर था।
5. सांसारिक इतिहास में अभिलिखित है कि 332 ईसा पूर्व में, "महान सिकंदर यह पहला व्यक्ति था जिसने सोर द्वीप के भाग पर कब्जा किया था। उसने इस नगर की शहरपनाह भाग को नष्ट करने और रास्ता बनाने के लिए मलबे के उपयोग द्वारा यह हासिल किया था।"[73] इस प्रकार, समुद्र में नष्ट किए गए नगर का मलबा डालने के द्वारा उसने भविष्यवाणी के दूसरे हिस्से को अनजाने में पूरा किया था। सिकंदर के विजय ने फेनिके साम्राज्य का स्थायी रूप से अंत कर दिया।[74]
6. नगर "*एक चट्टान के उपरले भाग समान*" कूड़ा हो गया।
7. वह "*जाल बिछाने का एक स्थान*" हो गया।
8. आगे के वर्षों में बहुत प्रयास किए गए कि सोर को फिर से बनाया जाए, केवल उसे बारम्बार नष्ट करने के लिए। आधुनिक लेबनान में, सोर नाम से एक नगर

> है, लेकिन प्राचीन फेनिके नगर जिसके विरुद्ध यहेजकेल ने भविष्यवाणी की थी वह दोबारा नहीं बन पाई। नीचे एक पत्थर के फर्श की एक तस्वीर है, नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका में इस पर यह अनुशीर्षक है : "आज फेनिके" का सोर रोमी महानगर के इस फर्श के पत्थर और स्तम्भों के नीचे दफ़न है। केवल छोटी सी खुदाई फेनिके की खोई हुए जगत तक पहुंचती है।"[75]

क्या संभावनाएँ कि यहेजकेल, अपनी बुद्धि के सहारे सोर नगर के बारे में यह आठ सटीक भविष्यवाणियाँ कर पाता?

क्योंकि केवल परमेश्वर इतिहास को घटने से पहले देखता है, केवल परमेश्वर ने ही यहेजकेल को यह जानकारी दी हो सकती है।

लोगों के विषय में भविष्यवाणी

बाइबल में अनगिनत लोग और राष्ट्रों के विषय में सैंकड़ो यथार्थ भविष्यवाणीयां है : मिस्र, इथियोपिया, अरब, फारस, रूस, इस्राएल और अन्य राष्ट्र।

जब हम पूरी हुई भविष्यवाणी के अगले उदाहरण के साथ आगे बढ़ते है, तो आइए हम यह ध्यान में रखे कि हमारा उद्देश्य इन भविष्यवाणियों को वह कहना नहीं है जो हम सुनना चाहते हैं, न ही एक राजनीतिक या धार्मिक कार्यावली को आगे बढ़ाना है। हमारा लक्ष्य यह खोजना है कि पवित्रशास्त्र क्या घोषित करती हैं।

एक विशेष राष्ट्र के विषय में पूरी हुई भविष्यवाणी का उदाहरण है जो व्याख्या में आसान लेकिन स्वीकारने में कइयों के लिए कठिन है।

1920 ईसा पूर्व के करीब, परमेश्वर ने अब्राहम को अभिवचन दिया, *"मैं यह देश तेरे वंश को दूंगा।"* (उत्पत्ति 12:7)

बाद में परमेश्वर ने उसी अभिवचन को इसहाक और याकूब के साथ दोहराया।[76]

अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों को पहले इब्री कहलाते थे, बाद में इस्राएली, और उसके बाद में यहूदी।

सैंकड़ो वर्षों बाद, परमेश्वर ने मूसा को कहा की उन्हें क्या होगा अगर वे उनके परमेश्वर पर विश्वास करने और आज्ञापालन करने में विफल हो जाएंगे :

"मैं तुमको जाति जाति के बीच तितर-बितर करूँगा और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार खींचे रहूंगा; और तुम्हारा देश सूना हो जाएगा। तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे।" (लैव्यव्यवस्था 26:33)

"जहां प्रभु तुझे ले जाएगा, वहां के लोगों के मध्य तू चकित होने का, दृष्टांत, और शाप का कारण समझा जाएगा। ....उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा, और न तेरे पाँव को ठिकाना मिलेगा! प्रभु वहां ऐसे करेगा कि तेरा ह्रदय कांपता रहेगा, तेरी आँखे धुंधली पड़ जाएगी और तेरा मन व्याकुल रहेगा।" (व्यवस्था विवरण 28: 37, 65)

पुराने नियम में इसी समान सैंकड़ो भविष्यवाणीयां है।

30 ईस्वी के करीब, भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को मानते हुए, नासरत के यीशु ने यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी की : *"जब वह [यीशु] निकट आया तो नगर [यरूशलेम] को देखकर उस पर रोया। ....क्योंकि वे दिन तुझ पर आएंगे कि तेरे बैरी मोर्चा बांध कर तुझे घेर लेंगे और चारों ओर से तुझे दबाएंगे। और तुझे और तेरे बालकों को जो तुझमे हैं मिट्टी में मिलाएंगे, और तुझमे पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तूने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई नहीं पहचाना।"* (लूका 19:41-44) और स्वयं मंदिर के विषय में बोलते हुए, यीशु ने भविष्यवाणी की : *"ये वस्तुएं तुम देख रहे हो। वे दिन आएंगे जिनमे यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहां जब यहां किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा जो ढाया न जाएगा।"* (लूका 21:6)

चालीस वर्षों बाद, हे घटनाएँ घटी।

इतिहासकार फ्लेवियस जोसेफस, जो 37 ईस्वी में जन्मे थे, उन्होंने अपनी आँखों देखा वृत्तांत अभिलिखित किया। उन्होंने लिखा कि 70 ईस्वी में रोमी सेना ने यरुशलम को घेरा, नगर के चारों ओर बांध बनाया, और तीन वर्षों की घेराबन्दी के बाद में, सेना ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया। भले ही स्वयं कैसर ने उसकी फौज को आदेश दिया था की बड़े मंदिर को कुछ न करना, फिर भी क्रोधी रोमी सैनिकों ने उसे आग लगा दी, और जो यहूदी उसके अंदर छिपे हुए थे उनको जला डाला। मंदिर का सोना और चांदी पिघल गए और उन पत्थरों के बीच में बह गए। मंदिर को तबाह किया गया, जैसे यीशु ने भविष्य किया था। *"यहाँ पत्थर पर पत्थर तक नहीं बचेगा।"*[77] और, जैसे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्य किया था, यहूदी लोग संपूर्ण जगत में बिखर गए। अगले दो हजार वर्षो तक, इतिहास इन भविष्यवाणीयों की पूर्णता की गवाही देगा जब भटकनेवाले यहूदी ये *"तू चकित होने का, दृष्टांत, और शाप का कारण समझा जाएगा। .... उन जातियों में तू कभी चैन न पाएगा!"*

हमारी व्यक्तिगत भावनाएं जो भी हो, यहां पर पवित्र शास्त्र की इस भविष्यवाणी का दूसरा

पक्ष भी है जिसे कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। परमेश्वर ने उसके भविष्यद्वक्ताओं से यह भी कहा कि, सभी कठिनाइयों के बावजूद, यहूदी लोगों को राष्ट्रों में भिन्न लोग ऐसे संरक्षित रखा जाएगा और एक दिन वे उस भूमि की ओर फिर से लौट आयेंगे जो परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को दी थी।

मूसा ने इस्राएली लोगों को भविष्यवाणी की : *"जिन देशों में तेरे प्रभु परमेश्वर ने तेरे लोगों को तितर-बितर कर दिया है, वहां से वह उन्हें पुनः एक स्थान पर एकत्र करेगा"* (व्यवस्था विवरण 30:3)। आमोस नबी भी उसके साथ जोड़ते हुए कहता है: *"मैं अपने निज लोग इस्राएलियों की समृद्धि लौटा दूंगा। वे उजाड़ नगरों का पुनः निर्माण करेंगे,.......मैं उनके देश में उन्हें पुनः रोपूंगा। जो देश मैंने उन्हें दिया है, उन्हें वहां से फिर कभी नहीं उखाडूंगा ...... ।"* (आमोस 9:14-15)

समाचार प्रचार तंत्र संसार भर में इन घटनाओं की पुर्तता का वर्णन करते हैं।

जो कुछ यहूदी राष्ट्र के साथ हुआ है वह इस संसार के इतिहास में अनोखा है। पहली बात, यह सीधे तौर पर समावेश के नियम के विरोध में जाता है। यह नियम देखा जा सकता है जब एक देश दूसरे देश पर विजय हासिल करता है। कुछ ही पीढ़ियों के भीतर बिखरे हुए लोगों को उन राष्ट्रों के द्वारा अपने अंदर सम्मिलित कर लिया गया जिनमें वे बस गए थे। उन्होंने अंतरजातीय विवाह किए , नई भाषा और संस्कृति को अपनाया, और उनकी राष्ट्रीय पहचान गँवा दी। यहूदियों के साथ यह नहीं हुआ। हालांकि लाखो लोगों ने दुस्साहसपूर्ण प्रयास किया कि मिल जाए और पूरी तरह से घुल मिल जाए, तो भी वे ऐसा नहीं कर सके।[78]

जाहिर है, कई लोगों को इस तथ्य को स्वीकार करना दर्दनाक लगता है। हाल ही में, लेबनान के एक मित्र ने लिखा : "जैसा कि भविष्यवाणी के पूरा होने के संबंध में [परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में कि यहूदी लोगों को फिर से उनकी भूमि में लाए], मैं इस तरह के विश्वास को स्वीकारने के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं कर सकता। इसे स्वीकारना यह मेरे उद्देश्य के लिए हानिकारक होगा।"

आइए इसे स्पष्टता से समझ लें। यहूदियों का लोग और राष्ट्र के रूप में बचे रहना और पुनः स्थापित होने को पहचानने का यह अर्थ नहीं कि हमें इस्राएली सरकार की नीतियों का समर्थन करना चाहिए। मैं मेरे लेबनान मित्र को समझता और उसके साथ सहानुभूति रखता हूं। 1948 में उसकी मां का परिवार और पडोसी, और अन्य लोगों के साथ, उनको उनके घरों से निकाल दिया गया। उसके देश को गंभीर परेशानी उठानी पड़ी। इसके बावजूद, समझने वाली बात यह है: पवित्र शास्त्र के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की हुई घटनाएं ये हमारी आँखों के सामने हो रही हैं।

वास्तव में अधिकांश यहूदी आज उन्हीं भविष्यद्वक्ताओं के संदेश को अस्वीकार करते हैं जिनका वे सम्मान करने का दावा करते हैं, यह भी पवित्र शास्त्र की पूर्ति है। एक राष्ट्र के रूप में वे

आत्मिक रूप से अन्धे हैं। *"हां, आज भी जब मूसा का व्यवस्थाग्रंथ पढ़ा जाता है, उनके ह्रदय पर एक आवरण पड़ा रहता है"* (2 कुरिंथियो 3:15)। एक राष्ट्र के रूप में, वे परमेश्वर की संपूर्ण आशीषों में प्रवेश नहीं करेंगे जब तक वह दिन नहीं आ जाता जब वे पश्चाताप [उनके मन और ह्रदय में स्वाभाविक बदल हो] करेंगे और परमेश्वर के युगों के संदेश पर विश्वास करेंगे।[79]

पवित्र शास्त्र के द्वारा हमारी यात्रा के अंत के करीब हम देखेंगे कि अंत के समय के लिए परमेश्वर की योजनाएं इन घटनाओं में कैसे सही बैठती हैं। हम आशीषों के विषय में कुछ भविष्यवाणियों को जानेंगे जिनको परमेश्वर ने मध्य पूर्व और संपूर्ण संसार के लिए संचित कर के रखा हुआ है।

> *"मैंने तुम्हारी भलाई के लिए याजनाएं बनाई हैं, बुराई के लिए नहीं; और मैं इन योजनाओं को अच्छी तरह जानता हूं। मैंने तुम्हारे लिए एक सुखद भविष्य की योजना बनाई है। मैं तुम्हे एक आशामय भविष्य दूंगा।"* (यिर्मयाह 29:11)

एक व्यक्ति के विषय में भविष्यवाणीयां

मसीहा-छुड़ानेवाला के विषय में संपूर्ण पुराने नियम में सैंकड़ो भविष्यवाणीयां भरी हुई हैं जिसके बारे में परमेश्वर ने उसे संसार में भेजने का अभिवचन दिया था। मृत सागर की पोथियाँ यह निश्चित करती हैं कि यह पवित्र शास्त्र मसीहा के जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई हैं। यहां पर उन भविष्यवाणियों का नमूना।

- *अब्राहम के विषय में भविष्यवाणी,* 1900 ईसा पूर्व में : **मसीहा इस संसार में अब्राहम और इसहाक के वंश के द्वारा आएगा।** (उत्पत्ति 12:2-3; 22:1-18। पूर्ण हुई: मत्ती. 1)
- *यशायाह की भविष्यवाणी,* 700 ईसा पूर्व में : **वह एक कुंवारी से जन्म लेगा, पृथ्वी पर उसका कोई शारीरिक पिता नहीं होगा।** (यशायाह 7:14; 9:6। पूर्ण हुई: लूका 1:26-35; मत्ती 1:18-25)
- *मीका की भविष्यवाणी,* 700 ईसा पूर्व में : **उसका जन्म बेतलेहम में होगा।** (मीका 5:2। पूर्ण हुई: लूका 2:1-20; मत्ती 2:1-12)
- *होशे की भविष्यवाणी,* 400 ईसा पूर्व में : **उसे मिस्र देश से बुलाया जाएगा।** (होशे 11:1। पूरी हुई: मत्ती 2:13-15)
- *मलाकी की भविष्यवाणी,* 400 ईसा पूर्व में : **अग्रदूत आने के बाद मसीहा का आगमन होगा।** (मलाकी 3:1; यशायाह 40:3-11। पूरी हुई: लूका 1:11-17; मत्ती 3:1-12)
- *यशायाह की भविष्यवाणी,* 700 ईसा पूर्व में : **वह अन्धों को आँखे, बहिरों को कान, लंगड़ों को चलने, और गरीबों को सुसमाचार प्रचार करेगा।** (यशायाह 35: 5-6; 61:1।

पूरी हुई: लूका 7:22; मत्ती. 9; इत्यादि।)

- *यशायाह की भविष्यवाणी,* 700 ईसा पूर्व में : **उसके अपने लोगों द्वारा उसका अस्वीकार किया जाएगा।** (यशायाह 53:2-3; तथा: भजन संहिता 118:21-22। पूरी हुई: यूहन्ना 1:11; मरकुस 6:3; मत्ती 21:42-46; इत्यादि।)
- *जकर्याह की भविष्यवाणी,* 500 ईसा पूर्व में : **30 चांदी के सिक्कों के लिए उसका विश्वासघात किया जाएगा, जिसका उपयोग एक खेत खरीदने के लिए किया जाएगा।** (जकर्याह 11:12-13। पूरी हुई: मत्ती 26:14-16; 27:3-10)
- *यशायाह की भविष्यवाणी,* 700 ईसा पूर्व में : **मसीहा का अस्वीकार किया जाएगा, झूठे आरोप, जाँच-पड़ताल और यहूदी और अन्य-जातियों द्वारा मृत्युदंड दिया जाएगा।** (यशायाह 50:6; 53:1-12; तथा: भजन संहिता 2 और 22; जकर्याह 12:10। पूरी हुई: यूहन्ना 1:11; 11:45-47; मरकुस 10:32-34; मत्ती 26 और 27)
- *दाऊद की भविष्यवाणी,* 1000 ईसा पूर्व में : **उसके हाथ-पैर बेध डाले जाएंगे, उसे देखनेवाले उसका उपहास करेंगे और उसके वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ डाली जाएगी, इत्यादि।** (भजन संहिता 22:16, 8, 18। पूरी हुई: लूका. 23:33-37; 24:39) (यह ध्यान में रखो कि क्रूस पर मार डालने की मृत्युदंड की शिक्षा का प्रकार ऐसे अविष्कार किए जाने से बहुत वर्षों पहले यह भविष्यवाणी की गई थी।)
- यशायाह की भविष्यवाणी, ईसा पूर्व 700 में : **भले ही एक भयंकर अपराधी ऐसे मारा गया, तो भी उसे एक अमीर मनुष्य की कबर में दफनाया जाएगा।** (यशायाह 53:8-9। पूरी हुई: मत्ती 27:57-60)
- दाऊद की भविष्यवाणी, 1000 ईसा पूर्व में : **मसीहा के शरीर को नाश होने नहीं दिया जाएगा, वह मृत्यु पर विजयी होगा।** (भजन संहिता 16:9-11 [तथा यह भी देखो: मत्ती. 16:21-23; 17:22-23; 20:17-19; इत्यादि।]। पूरी हुई: लूका 24; प्रेरितों के काम 1 और 2)

संभावना का नियम यह आदेश देता है कि कोई एक व्यक्ति ऐसे विशेष, प्रमाण योग्य भविष्यवाणीयों को पूरा नहीं कर सकता।

फिर भी वही हुआ।

शायद आप बाद में फिर इस सूची को देखना चाहो, बाइबल उठाओ और पुराने नियम की प्रत्येक भविष्यवाणी और नए नियम में दर्ज इनके पूरा होने को पढ़ें।

भविष्यवाणी के चिन्ह और नमूने

सैंकड़ो भविष्यवाणीयों के अतिरिक्त, संपूर्ण पुराने नियम में सैंकड़ो चिन्ह और नमूने पाए

जाते हैं (प्रकार, चित्र, छायां, पूर्व आकृति और दृष्टांत के रूप में संबोधित किया जाता है)। परमेश्वर ने इनमें से प्रत्येक दृश्य साधन को संसार को उसके बारे और मनुष्य जाति के लिए उसकी योजना को सिखाने के लिए बनाया है।

पवित्र शास्त्र के माध्यम से हमारी इस यात्रा में, हम ऐसे बहुत सारे चिन्हों और नमूनों से देखेंगे। उदाहरण के लिए, एक प्रसिद्द चिन्ह बलिदान किया हुए मेमना है, जिसे इस पुस्तक के अध्याय 19 से 26 में स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

अध्याय 21 में, हम एक विशेष तंबू के विषय में सीखेंगे जिसे निवास-स्थान कहा जाता है, जिसके विषय में परमेश्वर ने उसके लोगों को एक नमूने के अनुसार बनाने के लिए कहा था। निवास-स्थान और सब कुछ जो उसके साथ जाता था ये सामर्थ्यशाली दृश्य साधन थे लोगों को यह समझाने के लिए कि परमेश्वर किस समान है और पापियों को कैसे क्षमा दी जा सकती है और उसके साथ सदैव रहने के लिए कैसे पात्र ठहराए जाते है।

याकूब का पुत्र यूसुफ और नासरी यीशु के जीवन के बीच का तुलनात्मक अध्ययन यह पवित्रशास्त्र में एक प्रकार का आदिरूप जो पाया जाता है उसका एक हृदयस्पर्शी उदाहरण है। यूसुफ और यीशु के जीवन के बीच में यहां पर सैंकड़ो से भी अधिक समानताएं हैं। परमेश्वर ने यीशु का जीवन चित्रित करने के लिए यूसुफ के जीवन का उपयोग किया, जो 1, 700 वर्षों बाद में संसार में आनेवाला था।[80]

यहां पर ऐसे नमूने और भविष्यवाणीयों के लिए केवल एक ही तर्कसंगत स्पष्टीकरण है : परमेश्वर।

भविष्यवाणी का उद्देश्य

पृथ्वी पर रहते समय, मसीहा ने कहा :

> *"इस घटना के घटने से पूर्व मैं तुम्हे बता रहा हूं, जिससे जब यह घटित हो तो तुम विश्वास करो कि मैं हूं।"* (यूहन्ना 13:19)

भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना, जिसके बाद इतिहास में उसका घटित होना, परमेश्वर का एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से वह अपने संदेश और संदेशवाहक को प्रमाणित करता है। उसके वचन में हमारे विश्वास को मजबूत करने के लिए, सत्य और जीवित परमेश्वर ने घोषित किया कि *"मैं तो अंत की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी......... ।"* (यशायाह 46:10)

पवित्र शास्त्र के माध्यम से अपनी आगे की यात्रा में हम बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति में शुरू करेंगे, जो बताती है कि संसार का आरंभ कैसे हुआ। यह यात्रा बाइबल की अंतिम पुस्तक,

प्रकाशितवाक्य, जो संसार के इतिहास की अंतिम घटनाओं की भविष्यवाणी करती हैं, के साथ पूरी होगी।

हम कैसे निश्चित हो सकते है कि असत्यापित अतीत और अप्रत्याशित भविष्य के विषय में पवित्र शास्त्र के कथन सत्य हैं? हम उसी तर्क को लागू करके निश्चित हो सकते हैं जिसके द्वारा हम आत्मविश्वासी हैं कि कल सूरज उदय होगा। हजारों वर्षो से हमारे सौर मंडल का एक अचूक रिकॉर्ड रहा है। पृथ्वी घूमने से कभी नहीं चूकी। सूरज निरंतर उदय और अस्त होता रहा है। उसी प्रकार यह पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी के साथ है। जो सब कुछ सत्यापित किया जा सकता है, परमेश्वर की पुस्तक का एक अचूक रिकॉर्ड है।

परमेश्वर की चुनौती

कुछ धार्मिक लोक दावा करते हैं कि उनके पवित्र पुस्तक में भी भविष्यवाणियां हैं जो पूरी हुई हैं। जब आप लोगों को इस प्रकार दावा करते सुनते है, तब आदरपूर्वक उन्हें पूछो कि उनके पवित्र पुस्तक की सबसे विश्वसनीय भविष्यवाणीयों के तीन या चार सूचि आपको दे। संभावना कम है कि वे ऐसा करने के लिए सहमत होंगे, लेकिन अगर उन्होंने ऐसा किया, तो पहले यह सत्यापित करें कि भविष्यवाणियाँ उन घटनाओं के घटने से पहले लिखी गई हों, और फिर उनकी पूर्ति की पुष्टि करने के लिए उनकी तुलना सांसारिक इतिहास से करें। मेरे अनुभव से, ऐसी कोई भविष्यवाणी, बहुत ही कम, थोड़ी और अस्पष्ट हैं।

यह अच्छे कारण के लिए है कि सत्य और जीवित परमेश्वर सभी धर्म और अकल्पित देवताओं को निम्नलिखित चुनौती देता हैं :

> *"प्रभु कहता है, अपना पक्ष प्रस्तुत करो...वे उन्हें लाएं, और हमें बताएं कि क्या होनेवाला है। जो बातें पहले हो चुकी हैं, वे हमें बताओ, हम उन पर विचार करेंगे, हम उनका परिणाम जानेंगे। आगे घटनेवाली बातें हमें सुनाओ। भविष्य में क्या होगा, यह हमें बताओ, तब हम मानेंगे, कि तुम देवता हो। भला या बुरा कुछ ऐसा कार्य करो जिसको देखकर हम चकित और भयभीत हो जाएं। सुनो, तुम कुछ भी नहीं हो, तुम कुछ नहीं कर सकते, जो तुम्हे आराधना के लिए चुनता है, वह स्वयं घृणित है।"* (यशायाह 41:21-24)

जब बहुत सी, भविष्यवाणीयों के बारे में विचार आता है जो यथावत् पूरी हो गई हैं, तब बाइबल ही केवल वह है, केवल एकमात्र।

सत्य और जीवित परमेश्वर ने इतिहास घटने से पहले उसे लिखने के द्वारा मानवजाति के लिए अपने संदेश को प्रमाणित किया है।

पूरी हुई भविष्यवाणी *उनके हस्ताक्षर* हैं।

पाठ 6

सुसंगत गवाही

"अगर आप यह जानना चाहते है कि जल कैसा है, तो मछली से यह न पूछो।"

— चीनी मुहावरा

कल्पना करें।

गर्मी का एक दिन नदी के किनारे चलते-चलते आप तैरने का विचार कर रहे है। तथापि, आप सोच रहे है कि क्या पानी आपके पसंद अनुसार होगा की नहीं। क्या लहरे बहुत तेज है? क्या तापमान ज्यादा ठण्डा तो नहीं? यह फिर क्या हालत सही है?

चीनी मुहावरा सलाह देता, "मछली से यह न पूछो।"

यह ऐसा क्यों हैं जो मछली उस जल में रहती है वह आपको यह बताने में अयोग्य हैं कि "जल कैसा है" (इस वास्तविकता के अलावा कि वे आपकी बोली नहीं बोलते)? मछली आवश्यक जानकारी देने में असमर्थ है क्योंकि उन्हें उनके जल के अस्तित्व के घेरे से बाहर कोई मालूमात नहीं है। वह सीमित, मैला सा जगत ही जो उन्हें पता है।

इसी तरह, अगर हमें कभी उस दुनिया को समझना है जिसमें हम रहते हैं और हम यहां क्यों हैं, तो ऐसी जानकारी मनुष्य के सीमित, स्वार्थी सांसारिक दृष्टिकोन के बाहर से प्राप्त होनी चाहिए। सुसमाचार यह है कि स्वर्ग के परमेश्वर ने यह जानकारी चाहने वालों के लिए दे रखी है।

> *"समस्त पवित्रशास्त्र की रचना **परमेश्वर की प्रेरणा** से हुई है और वह धार्मिक जीवन की शिक्षा के लिए, ताड़ना के लिए, सुधार तथा उपदेश के लिए उपयोगी है..... ।"*
> (2 तीमुथियुस 3:16)

हम कैसे जान सकते हैं कि पवित्रशास्त्र *"परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा रची गई"* हैं, अर्थात्, परमेश्वर से प्रेरित हैं? पिछले पाठ में, हमने देखा कि सृष्टिकर्ता ने बाइबल के पन्नों में सैंकड़ों भविष्यवाणीयां निहित करने के द्वारा बाइबल की अधिकृतता पर उसकी मुहर लगा दी है जो तब से पूरी हो गई हैं। केवल परमेश्वर ही 100 % यथार्थता के साथ दूरस्थ भविष्य का बारम्बार भविष्य कर सकता है।

एक और तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर ने कई सदियों में बहुत से भविष्यद्वक्ताओं द्वारा उसे स्पष्ट करने के द्वारा उसके प्रकाशितवाक्य की विश्वासयोग्यता को स्थापित किया है।

एक ही गवाही काफ़ी नहीं है

परमेश्वर ने मूसा से कहा, *"किसी मनुष्य के विरुद्ध उसके कुकर्म अथवा पाप के विषय में, चाहे उसने किसी भी प्रकार का पाप क्यों न किया हो,* ***केवल एक व्यक्ति की गवाही प्रमाणित नहीं मानी जाएगी, वरन दो या तीन व्यक्तियों की गवाही के आधार पर अभियोग प्रमाणित माना जाएगा।"*** (व्यवस्था विवरण 19:15)

इस सिद्धांत को संपूर्ण जगत में माना जाता है। सत्य स्थापित करने के लिए न्यायालय में एक से अधिक गवाही की आवश्यकता होती है। इससे पहले कि किसी कथन को तथ्यात्मक रूप में स्वीकार किया जाए, उसे विभिन्न विश्वसनीय स्त्रोतों द्वारा पुष्टि किए जाना चाहिए।

उसके सत्य को प्रकाशित करने में, परमेश्वर ने उसके स्वयं के नियम को अनदेखा नहीं किया है जो स्पष्ट करता है: *"एक गवाही काफ़ी नहीं है।"* *पवित्रशास्त्र घोषित करता है कि "जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और, पृथ्वी, और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया है। उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया। तौभी अपने आपको बे-गवाह न छोड़ा .... ।"* (प्रेरितों के काम 14:15-17)

पृथ्वी पर सबसे पिछड़ी जाति के पास भी सृष्टि से बाहरी गवाही (उन बातों को देखना जो उनके सृष्टिकर्ता ने बनाया है) और विवेक की आतंरिक गवाही है (सही, गलत और अनंतकाल का जन्मजात विवेक)। पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को कुछ प्रकाश, कुछ सत्य दिया गया है। इसलिए परमेश्वर कहता है कि मानवजाति *"निरुत्तर हैं।"*[81] फिर भी, सृष्टि का सिरजनहार उन सभी को और प्रकाश प्रदान करने का वादा करता है जो मन लगाकर उसे और उसकी सच्चाई को जानना चाहते हैं।

निरंतर गवाही

परमेश्वर ने अपने आपको बे-गवाह न छोड़ा।

मानव इतिहास के प्रारम्भ के हजारों वर्षो दौरान, परमेश्वर ने या तो सीधे मनुष्यों से बात की है

या उसने अपनी सच्चाई को पहले मनुष्य की मौखिक गवाही के द्वारा प्रकट किया है।

आदम, पहिला मनुष्य, 930 वर्षों तक जीवित रहा। मानवी इतिहास की पहली शताब्दी में रहनेवाले लोग उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के विषय में सत्य जानते नहीं हैं ऐसा कोई बहाना नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्होंने मूल गवाहदार, आदम और हव्वा से वार्तालाप किया हो सकता।[82] पहिले मनुष्य की आयु आज के औसत जीवनकाल से करीबन ग्यारह गुना अधिक थी, जिसे सृष्टिकर्ता ने बाद में "सत्तर वर्ष-या अस्सी, कर दिया।" (भजन संहिता 90:10)

1920 ईसा पूर्व के करीब, परमेश्वर ने एक वयोवृद्ध मनुष्य को अलग किया जिसे उसने बाद में अब्राहम नाम दिया। परमेश्वर ने अब्राहम को अभिवचन दिया कि उससे एक राष्ट्र बनाएगा जिसके द्वारा संसार के राष्ट्रों को मानवजाति के लिए अपने स्वयं और अपनी योजना के विषय में महत्वपूर्ण सबक सिखाए। यह भी होगा कि इस चुने हुए राष्ट्र के द्वारा परमेश्वर *भविष्यद्वक्ताओं* और *पवित्रशास्त्र* को प्रदान करेगा, और मसीहा को संसार में भेजेगा। 1490 ईसा पूर्व के करीब, परमेश्वर ने उस राष्ट्र में से एक मनुष्य को उसका प्रवक्ता बनने के लिए बुलाया। उस मनुष्य का नाम मूसा था।

लिखित गवाही

परमेश्वर ने मूसा को प्रेरित किया कि उसकी पुस्तक, *तौरात* का पहिला भाग लिखे। स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता का उद्देश्य कि भविष्य में आनेवाली पीढियों के लिए-अंत के समय तक, उसका सत्य लिखित रूप में उपलब्ध कराए। उसने वचन जो लिखे जाने हैं वे मूसा के मन में डाले। परमेश्वर ने मूसा के हाथों द्वारा सामर्थी चमत्कारों के साथ राष्ट्रों को अपना वचन प्रमाणित किया। परमेश्वर ने भविष्य की घटनाओं को भी प्रकट किया जो मूसा ने मिस्र और इस्राएली लोगों पर जाहिर किया। सब कुछ बिल्कुल वैसा ही हुआ जैसे मूसा ने भविष्यवाणी की थी। परमेश्वर ने तर्कशील सन्देह के लिए कोई जगह न छोड़ी।

सबसे होशियार संदेहवादी भी स्वीकारते है कि परमेश्वर जिसने मूसा के द्वारा कहा वह सत्य और जीवित परमेश्वर था।[83]

भविष्यद्वक्ताओं की लंबी कतार में मूसा यह पहिले व्यक्ति थे जिन्होंने परमेश्वर के वचन को 1,500 वर्षों के लंबे समयकाल में अभिलिखित किया।[84] कई नबी जो विभिन्न पृष्ठभूमि से आए थे। कुछ औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थे।

भले ही वे अलग अलग पीढ़ियों में जीवित रहे, उन्होंने जो लिखा वह आरंभ से अंत तक एक परिपूर्ण एकीकृत संदेश प्रस्तुत करता है।

परमेश्वर ने मूसा, दाऊद, सुलैमान और अन्य करीबन तीस लोगों को चुना कि पुराने नियम की पुस्तके लिखे। उसने अपने वचन को पूर्ण किए गए वादों और भविष्यवाणियों के साथ और चमत्कारी चिह्नों और चमत्कारों के साथ प्रमाणित किया।

नए नियम में, मसीहा का प्रारम्भ, जीवन, वचन, कार्य, मृत्यु और पुनरुत्थान को चार मनुष्यों ने अभिलिखित किया है : मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। इन चार मनुष्यों ने सुसमाचार विवरण को लिखा (जिसे अरबी भाषा में इंजील कहते है), इस प्रकार संसार को चार अलग-अलग साक्षियों को प्रदान किया। पतरस (एक मछुआरा), याकूब और यहूदा (यीशु के सौतेले भाई), और पौलुस (एक ज्ञानी और पूर्व आतंकवादी) इन्हें भी परमेश्वर ने प्रेरित किया कि उसके लोगों के लिए परमेश्वर के वर्तमान और भविष्यकाल के उद्देश्यों के गौरवमय विस्तृत वर्णन को स्पष्ट करें। प्रेरित यूहन्ना ने बाइबल की अंतिम पुस्तक लिखी, जो सुचित्रित रूप से भविष्य का वर्णन करती है कि संसार का इतिहास, जिसे हम जानते है, उसका अंत कैसे होगा।

सुसंगत गवाही

कुल मिलाकर, परमेश्वर ने करीबन चालीस लेखकों का इस्तेमाल पंद्रह शताब्दियों से अधिक की अवधि में मानवजाति के लिए उसके प्रकाशितवाक्य को अभिलिखित करने के लिए किया। भले ही इनमे से बहुत से गवाह एक दूसरे से कभी भी नहीं मिले, फिर भी उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह एक सुसंगत कहानी और संदेश की रचना करते हैं।

कौन, लेकिन उस एक के अलावा है, जो एक जीवन की अवधि से मुक्त है, इस प्रकार के विवरण को आगे सौंप सकता है?

> *"क्योंकि नबूवत मानवी इच्छा से मुखरित नहीं हुई; बल्कि मनुष्य, पवित्र आत्मा से प्रेरणा प्राप्त कर परमेश्वर की ओर से बोले हैं।"* (2 पतरस 1:21)

सदियों से, बहुतों ने नए नियम के लेखकों और उनके संदेश को अविश्वसनीय ठहराने का प्रयास किया हैं। प्रेरित पौलुस की लिखावट पर विशेष रूप से आक्रमण किया है।

प्रेरित पतरस हमें प्रोत्साहित करते है कि पौलुस के लेखन को गंभीरतापूर्वक समझे :

> *"...प्रिय भाई पौलुस ने अपने प्रभु से प्राप्त ज्ञान के अनुसार तुम्हे लिखा है। इस संबंध में वह अपने सब पत्रों में लिख चुके हैं जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जो कठिनाई से समझ में आती हैं। अज्ञानी और चंचल बुद्धिवाले व्यक्ति इनकी, जैसे अन्य शास्त्रों की, अशुद्ध व्याख्या करके अपना सर्वनाश कर लेते हैं।"* (2 पतरस 3:15-16)

सब कुछ जो प्रेरित पौलुस ने लिखा है वह जो भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उसके साथ समन्वय में है। जैसे पौलुस ने स्वयं गवाही दी है, *"किंतु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक विद्यमान हूं, और छोटे-बड़े सबके सम्मुख साक्षी दे रहा हूं।* ***जिन बातों की भविष्यवाणी भविष्यद्वक्ताओं ने और मूसा ने की, उनसे अधिक मैं कुछ नहीं बताता। ......आप भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं?"*** (प्रेरितों के काम 26:22, 27)

सुसंगत या असंगत?

एक गवाह की विश्वसनीयता की परख व्यक्ति की गवाही में निहित सत्य की मात्रा से नहीं, बल्कि किसी भी असंगति के अभाव से होता है। यह निम्नलिखित कहानी द्वारा दर्शाया गया है :

> एक दिन हाईस्कूल के चार विद्यार्थियों को इच्छा हुई कि वे कक्षा में न जाए और अंतत: उन्होंने ऐसा ही किया। अगली सुबह उन्होंने अपने अध्यापक को समझाया कि वे उनकी कक्षा में आने को चुक गए क्योंकि उनकी कार पंक्चर हो गई थी। उन्हें राहत मिली, जब वह मुस्कुराई और कहा, "ठीक है, कल आप एक प्रश्नोत्तरी से चूक गए।" लेकिन फिर उसने कहा, "बैठ जाओ और पेन्सिल और कागज निकालो। पहिला प्रश्न यह है: कौनसा टायर पंक्चर हुआ?"[85]

इस एक मुद्दे पर लड़कों के असंगत उत्तरों ने उनके मनगढ़ंत कहानी को उजागर किया।

इन चार लड़कों की परस्पर-विरोधी गवाही की तुलना में, परमेश्वर की गवाही सुसंगत है। अनगिनत पीढ़ियों से दर्जनों गवाहदार और लेखकों के द्वारा, अपने सृष्टिकर्ता ने अचूक सुसंगति के साथ अपने आपको और उसकी योजना को प्रकट किया है।

मनुष्यों के परस्पर-विरोधी धर्म और तत्वज्ञानों के अशांत सागर के मध्य, परमेश्वर ने हमारे लिए एक अचल चट्टान प्रदान किया और उसे भी संरक्षित किया है जिस पर हम अपने प्राणों को आश्वस्त कर सकते हैं।

वह चट्टान *उसका वचन* है।

> *"इस प्रकार* ***भविष्यद्वक्ताओं का कथन हमारे लिए प्रमाणित हुआ*** *है। यह कथन अंधकारमय स्थल में प्रकाशित दीपक के सदृश है। .....इस्राएली* ***राष्ट्र में झूठे नबी थे,*** *इसी प्रकार* ***तुममे भी झूठे उपदेशक उठ खड़े होंगे।*** *वे गुप्त रूप से घटक मतभेद उत्पन्न करेंगे ......अनेक लोग उनके निर्लज्ज आचरण का अनुसरण करेंगे जिससे सत्य-मार्ग*

की निन्दा होगी। वे लोभ-वश बातें गढ़ गढ़ कर तुमसे अनुचित लाभ उठायेंगे....... ।" (2 पतरस 1:19-2:3)

झूठे भविष्यद्वक्ताएं

इस प्रकार, परमेश्वर का वचन लोभी, स्वार्थी भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है जो *"जो कपटी शब्दों के साथ आपका शोषण करेंगे।"*[86] बाइबल में पुरुषों के विषय में अनगिनत कहानियां है जिन्होंने दावा किया था कि वे परमेश्वर के लिए बोलते थे, लेकिन उनका संदेश, वास्तव में, *"झूठी आत्मा" द्वारा प्रेरित था।"* (1 राजाओं 22:22)

पवित्र शास्त्र इस्राएल के इतिहास में एक समय का वर्णन करता है जब वहां पर 850 झूठे नबी थे और केवल एक सच्चा भविष्यद्वक्ता, एलियाह था। जहां, 7,000 इस्राएली लोग एक सच्चे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे, वही लाखो अन्य लोगों ने स्वयंसेवी, झूठे गवाहदारों पर विश्वास रखने को चुना था।[87]

मीका, परमेश्वर का एक ईमानदार भविष्यद्वक्ता, उसने लिखा :

"प्रभु का यह वचन है जो भविष्यद्वक्ता मेरी प्रजा को भटका देते है और .... 'शान्ति शान्ति पुकारते हैं, और यदि कोई उनके मुंह में कुछ न दे तो उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हो जाते हैं।' " (मीका 3:5)

यही तो इतिहास का नमूना है, इसी कारण से यीशु ने चेतावनी दी :

"सकेत फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग, जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग, जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं। ***झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो!*** *जो* ***भेड़ों के भेस में*** *तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे* ***फाड़ खानेवाले भेड़िए हैं***। *उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग कंटीली झाड़ियों से अंगूर के गुच्छे और ऊंटकटारों से अंजीर एकत्र करते हैं? इस प्रकार अच्छे पेड़ में अच्छे फल लगते हैं और बुरे पेड़ में* ***बुरे फल***।" (मत्ती 7:13-17)

सदियों से, अनगिनत बुरे भविष्यद्वक्ता और शिक्षक आएं और चले गएँ। कुछ ने सैकड़ों और हजारों को प्रभावित किया, जबकि अन्य जनों ने लाखो और अरबों भी आत्माओं को *"उस मार्ग पर ले गए जो विनाश की ओर जाता है।"*

अगर आपको उन "बहुतों" में से एक होने से बचना है जो एक झूठे भविष्यद्वक्ता का आँख

बंद करके अनुसरण करते हुए "विनाश" की ओर जा रहें हैं, तो इस छननी के माध्यम से उस व्यक्ति की शिक्षा की परख करें :

एक सच्चे भविष्यद्वक्ता का संदेश हमेशा निश्चित भविष्यसूचक पवित्र शास्त्र के साथ समन्वय में होता है जो उसके पहले आए हैं।

नीचे दिए गए मनुष्यों के **तीन प्रकरण** के अध्ययनों पर विचार करें जिन्होंने दावा किया कि वे परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताएं हैं। क्या वे सच्चे या झूठे भविष्यद्वक्ता थे?

प्रकरण #1 : दफनाया हुआ "मसीहा"

इतिहास ख्रिस्त के समय के बाद से स्व-घोषित दर्जनों भविष्यद्वक्ताओं और मसीहाओं को सूचीबद्ध करता है।[88] एक था अबू इसा।

फारस का अबू इसा 7वी शताब्दी के अंत में रहने वाला एक व्यक्ति था। उसके अनुयायियों ने उसे मसीहा माना क्योंकि उसने कहा था वह उन्हें विजय की ओर ले जाएगा, और भले ही, वह अनपढ़ था, कहा जाता है कि उसने कथित तौर पर किताबें लिखीं। लेकिन उसका संदेश पवित्र शास्त्र के विपरीत है।

अबू इसा ने अपने अनुयायियों को सिखाया कि दिन में सात बार प्रार्थना करे और ईश्वरीय सुरक्षा के वादे के साथ उन्हें उसके साथ युद्ध में आने के लिए कहा। तथापि, अबू इसा युद्ध में मर जाने के बाद, उसे गाड़ा गया और वह फिर से जीवित न हो सका, उसके अनुयायियों को यह स्वीकारना पड़ा कि वह मसीहा नहीं था।

अबू के समय से बहुत पहले, यीशु ने अपने सुननेवालों को चेतावनी दी :

"झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और महान चिन्ह एवं चमत्कार दिखाएंगे कि यदि सम्भव हो तो चुने हुए लोगों को भी पथ-भ्रष्ट कर दें। ***देखो, मैंने पहले से ही तुम्हें बता दिया है।"*** (मत्ती 24:24-25)

प्रकरण #2 : आत्मघातकी "भविष्यद्वक्ता"

जिम जोन्स ने एक पंथ की स्थापना की उसे लोगों का मंदिर कहते है। 1970 की शुरुआत में, जोन्स सॅन फ्रांसिस्को, कॅलीफोर्निया में एक प्रसिद्द प्रचारक था। अनगिनत लोगों को प्रेरणा देने कि राजनीति में आये और गरीबों की सहायता करने के प्रकल्पों में सहभागी होवे उसकी इस योग्यता के लिए वह प्रसिद्द है। जोन्स अपने आपको "भविष्यद्वक्ता" कहता है और दावा करता है कि उसे

सामर्थ्य है कि कैंसर रोगियों को ठीक करे और लोगों को मृत्यु में से जीवित करे।

अंत में, जिम जोन्स ने अपने हजारों से अधिक अनुयायियों को विश्वास दिलाया कि दक्षिण अमरीका, गयाना में "जोन्स नगर" में उसका अनुसरण करे। इस नये समूह में, "भविष्यद्वक्ता जिम" ने उसके शिष्यों को शांति और आनंद के जीवन का अभिवचन दिया। लेकिन वह एक बड़ा झूठ था।

जोन्स केवल भेड़ों की खाल में फाड़ खानेवाले एक भेड़िए से अधिक कुछ न था। जैसे सॅन फ्रांसिस्को इतिवृत्त द्वारा जानकारी दी है, "नवम्बर 18 [1978] : जोन्स ने अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि सायनाइड लेने के द्वारा अपने आपको जीवित मार डालो। वे जिन्होंने इन्कार किया उन पर जहर लेने को जबरदस्ती की गई। बच्चों को इंजेक्शन द्वारा मार डाला गया। अंत में, 914 शव जोन्स नगर में मिले, जिसमे जोन्स स्वयं भी था।"[89]

प्रकरण #3 : अपुष्टिकृत "पवित्र पुस्तक"

जोसफ स्मिथ 1805 में उत्तर अमरीका में जन्मा था। गरीबी और अंधश्रद्धा के माहौल में बड़ा हुआ था, एक जवान मनुष्य के रूप में उसने लोगों को बताना शुरू किया कि वह परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता है। उसने दावा किया कि परमेश्वर ने उसे मोरोनी नामक प्रकाश के दूत के द्वारा दृष्टांत शृंखला में उससे बातें की है।

स्मिथ ने लिखा : "मैं किसी सामर्थ्य द्वारा जकड़ा गया जिसने मुझपर पूरी तरह से कब्ज़ा किया, और मुझ पर उसका इतना अद्भुत प्रभाव था जैसे कि मेरी जबान बाँध दी गई हो ताकि मैं बोल न सकू। एक गहन अँधेरा मेरी चारो ओर था, और मुझे ऐसा समझ में आता था कि कुछ समय के लिए मैं अचानक विनाश में पूरी तरह से नष्ट हो जाऊंगा।" आगे स्मिथ कहता है, कैसे एक "प्रकाश का स्तम्ब" उसके सिर पर दिखा "सूरज के प्रकाश से भी प्रखर", जो धीरे धीरे उतरा जब तक वह मुझ पर उतरा नहीं।[90] स्मिथ ने घोषणा की कि परमेश्वर ने उसे एक नयी पवित्र पुस्तक, मॉरमॉन की पुस्तक प्रकट की है। उसने अपने अनुयायियों को कहा कि बाइबल परमेश्वर से आई, लेकिन यह उसकी नयी पुस्तक परमेश्वर का नया प्रकटीकरण है। स्मिथ ने लोगों को प्रार्थना, उपवास, दानधर्म करना, अच्छे कार्य करना, और उसे एक भविष्यद्वक्ता के रूप में स्वीकारना सिखाया। इसी दौरान, उसने स्वयं स्वार्थी और कामुक जीवनशैली को अपनाया और उसे क़ानूनी किया।

भले ही योसेफ स्मिथ के "प्रकटीकरण" ये किसी अन्य गवाही के द्वारा अपुष्टिकृत थे (भले ही उसने दावा किया था कि उसके पास तीन गवाही हैं) और इस वास्तविकता के बावजूद कि उसकी पुस्तक बाइबल, इतिहास और पुरातत्वविज्ञान के विरोध में है,[91] फिर भी आज लाखो लोग मॉरमॉन धर्म

से जुड़े हुए हैं। धनवान मॉरमॉन कलीसिया जगत भर में मिशनरी भेजते है, और हररोज सैंकड़ों लोग मॉरमॉन धर्म के अनुयायी हो जाते हैं (उन्हें लैटर-डे सेंट्स भी कहा जाता हैं)। अधिकतर मॉरमॉन लोग ये ईमानदार, अच्छे लोग हैं, लेकिन अगर आप "भविष्यद्वक्ता योसेफ" के संदेश को बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं ने जो घोषित किया और लिखा, उससे तुलना करे तो, आप मूलतः दो विभिन्न संदेश प्राप्त करेंगे।

स्वयं-घोषित भविष्यद्वक्ता के परस्पर-विरोधी, अपुष्टिकृत संदेश पर अपने अनंतकाल के अंतिम स्थान का ध्यान केंद्रित करना-चाहे कितना भी रचनात्मक या बुद्धिमान वह शायद हो-यह बुद्धिमानी नहीं। "क्योंकि स्वयं शैतान ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।" (2 कुरिंथियों 11:14)

पुष्टिकृत संदेश

इस भ्रमित संसार में जहां बहुतों ने *"परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला"* है (रोमियों 1:25), एक सत्य परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से अपने सत्य को अनेक प्रतिवादों से अलग रखा है।

परमेश्वर ने अपने संदेश को कई पीढ़ियों के दौरान कई भविष्यद्वक्ताओं पर पूर्ण स्थिरता के साथ उत्तरोत्तर प्रकट करने के द्वारा स्पष्ट और पक्का किया है। केवल वही लेखक जो समय के दायरे से बाहर रहता है वही ऐसे प्रकटीकरण को प्रेरित कर सकता है।

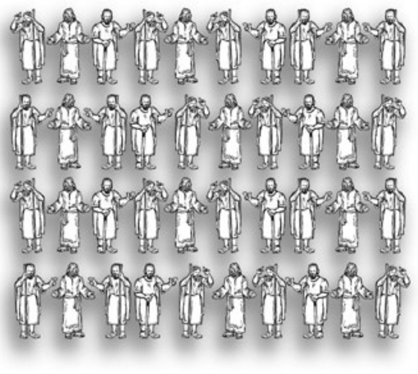

इस उदाहरण में *चालीस पुरुष* उन संदेशवाहकों का प्रतिनिधित करते है जिन्होंने, पंद्रह शताब्दियों से अधिक के दौरान पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के सुसंगत, पुष्टिकृत संदेश को अभिलिखित किया है।

एक अकेला मनुष्य किसी भी संदेशवाहक को प्रतिनिधित करता है जो प्रतिरोधी, अपुष्टिकृत संदेश के साथ बाद में आया है।

पिछले कुछ अध्यायों में हमने बहुत सारे सबूतों को देखा जो बताते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है। फिर भी इन जैसे और अन्य प्रमाण चाहे कितने ही ठोस क्यों न हो, परमेश्वर के संदेश के सबसे प्रेरणात्मक प्रमाणपत्र केवल इसे सुनने, समझने, और इसे अपनाने में पाया जाता है।

परमेश्वर की पुस्तक में कहानी का आगे बढ़ना उस एक को प्रकट करता है जो असीम रूप से हमारी कल्पना शक्ति से अधिक और परे है। यह हमारे सृष्टिकर्ता के गौरवमय और सिद्धतापूर्ण संतुलित स्वभाव का प्रदर्शन करता है। यह लोगों को मृत्यु के भय से मुक्त करता है और अनंतकाल के जीवन की निश्चित आशा प्रदान करता है। यह उनके चरित्र और आचरण को बदल देता है। यह उन्हें एक सच्चे परमेश्वर की ओर ले जाता है।

ऐसा संदेश शैतान या मनुष्य के लिए अकल्पनीय है।

लेकिन केवल मेरे कहने पर विश्वास न करें।

*“**सब बातों को जांचो-परखो**; और जो भली हों उन्हें स्वीकार करो।”*
(1 थिस्सलुनीकियों 5:21)

पाठ 7

नींव

"एक बुद्धिमान मनुष्य.....अपना मकान चट्टान पर बनाता है।" (मत्ती 7:24)

अपने पहाड़ी उपदेश में, नासरत के यीशु ने इन शब्दों के साथ समापन किया :

> *"जो व्यक्ति मेरे इन उपदेशों को सुनता और उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया। वर्षा हुई, बाढ़ आई, आंधी चली और उस मकान से टकराई, तो भी वह नहीं गिरा; क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर थी। लेकिन जो व्यक्ति मेरे इन उपदेशों को सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस मुर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना मकान रेत पर बनाया। जब वर्षा हुई, बाढ़ आई, आंधी चली और उस मकान से टकराई तो वह गिर पड़ा; और उसका विनाश भयानक था!"*
> (मत्ती 7:24-27)

मकान जो आंधी में भी स्थिर रहा और मकान जो नष्ट हुआ इनमें क्या अंतर था?
नींव।

बुद्धिमान मनुष्य ने उसका मकान एक मजबूत चट्टान पर बनाया; मुर्ख मनुष्य ने उसका मकान सरकनेवाली रेत पर बनाया।

भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में, परमेश्वर ने उस संदेश के लिए एक चट्टान सी-मजबूत नींव रखी है जो वह चाहता है कि हर कोई उसे समझे और उस पर विश्वास करे। वह नींव तौरात है (जो कि मूसा का व्यवस्था, पेन्टट्यूक या तौरेत के नाम से भी पहचाने जाते हैं)।

शुरुआतों की पुस्तक

मूसा के तौरात में पवित्र शास्त्र की पहली पांच पुस्तके हैं। शुरुआत की पुस्तक को **उत्पत्ति** कहा जाता है, अर्थात शुरुआत है। उत्पत्ति यह *शुरुआतों की पुस्तक* है, जिसमे पृथ्वी, जीवन, मनुष्य, विवाह, घरानों, समाजों, राष्ट्रों और भाषाओं के उत्पत्ति के बारे में परमेश्वर अवगत कराता है। उत्पत्ति जीवन के सबसे महान रहस्यों के जवाब प्रदान करती हैं। परमेश्वर कैसा है? मनुष्य कहां से आया? हम यहां क्यों हैं? बुराई का स्रोत क्या है? लोग दु:ख क्यों उठाते हैं? एक सिद्ध परमेश्वर असिद्ध लोगों को कैसे स्वीकार कर सकता है?

हालांकि इन और अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के जवाब पवित्र शास्त्र में आगे स्पष्ट होंगे, यहाँ उत्पत्ति में ही सृष्टिकर्ता ने अपने जवाबों के लिए जमीन तैयार की है। बाइबल की पहली पुस्तक आगे आने वाली हर एक चीज की नींव है।

परमेश्वर की कहानी

बाइबल में सैंकड़ों कहानियां हैं जो हजारों वर्षों पहले घटी थी। ये कहानियां मिलकर एक कहानी बनाते है, जो अब तक की सबसे उत्तम कहानी है। इसी कहानी में ही परमेश्वर ने एक मुख्य संदेश को सन्निहित किया है, जो अब तक की सबसे उत्तम घोषित खबर है।

परमेश्वर की नाटयमय कहानी में कई चरमोत्कर्ष शामिल हैं। जैसे-जैसे हम पवित्रशास्त्र मे आगे बढ़ते है, सुसमाचार के लिपियों में एक चरम बिन्दु आएगी। एक और चौंका देनेवाला चरमोत्कर्ष बाइबल की अंतिम पुस्तक में हमारे सामने आएगा, जिसका शीर्षक है प्रकाशितवाक्य, जिसका अर्थ है अनावरण।

इस तथ्य के बावजूद कि परमेश्वर ने मानवजाति के लिए अपनी योजना का खुलासा किया है, वह योजना अधिकांश लोगों के लिए एक रहस्य बनी हुई है।

पहली बातें पहले

उत्पत्ति की पुस्तक में बाइबल के 1,189 अध्यायों में से 50 अध्याय पाए जाते हैं[92] संपूर्ण बाइबल को बिना रुके पढ़ने के लिए करीबन तीन दिन और तीन रातें लगेगी।

हमारी आगामी यात्रा में, क्योंकि हमें पवित्र शास्त्र में बहुत सी कहानियों को देखना होगा, ऐसी बहुत सी उत्कृष्ट, महत्वपूर्ण कहानियां है जिन्हें हम देखेंगे जो मानव जाति के लिए परमेश्वर की योजना की "बड़ी तस्वीर" को प्रकट करती हैं। हमारे सफर के समय का महत्वपूर्ण भाग यह

बाइबल के पहले चार अध्यायों में बिताया जाएगा क्योंकि ये प्रारम्भ के पन्ने परमेश्वर के वचन में और कहीं ओर प्राप्त होनेवाले महान सत्य को उजागर करते है।

बाइबल के पहले कुछ अध्यायों के महत्त्व पर अत्यधिक जोर नहीं दिया जा सकता।

जब हम एक बच्चे को एक कहानी बताते या उसके लिए पढ़ते है, तब हम कहां से शुरू करते है? क्या हम कहानी के मध्य में शुरू करते और फिर अंत की ओर जाते है, एक या दो पंक्ति यहां और वहां? नहीं, हम प्रारम्भ से शुरुआत करते है। लेकिन जब पवित्रशास्त्र की बात आती है, बहुत से पाठक केवल यहां वहां घुमते रहते हैं। क्या इसलिए परमेश्वर की कहानी उनके लिए एक रहस्य ही रह जाती हैं क्योंकि वे परमेश्वर की पुस्तक के पहले पन्नों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं? क्या इसीलिए कोई आश्चर्य नहीं कि बहुत से लोग अहमद से सहमत होते है जिसने अपने ई-मेल में लिखा था, "यह पापी होने की बात तो मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती।" (पाठ 1)?

अगर हम परमेश्वर की कहानी के शुरुआत से अपरिचित है, तो हमें बाकी शेष बातों को स्वीकारने में कठिनाई होगी। एक बार हम शुरुआत के कुछ अध्यायों को समझ लें, तो बाकी अद्भुत रीति से अर्थपूर्ण बन जाएगी।[93]

बीज भूमि

गेहू के एक दाने के चित्र की कल्पना करें। वह देखने में ज्यादा कुछ न हो, लेकिन उस साधारण दिखने वाले बीज में जटिल कोड और अव्यक्त शक्ति छिपी हुई है जो पके दानों से लदे हुए एक पौधे को विकसित करने के लिए आवश्यक हैं। पवित्रशास्त्र इस प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार करता है :

> *"भूमि अपने आप उगाती है----**प्रथम** अंकुर, **तब** बालें और **तब बालों में** पूर्ण विकसित दाने।"* (मरकुस 4:28)

परमेश्वर ने दाने, फल और वनस्पतियों को इस प्रकार नहीं रचा कि वे तुरंत पक जाए, और न ही उसने अपनी कहानी और संदेश को एक ही समय में पूरा प्रकट करने के लिए रचा। जिस प्रकार परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर के लिए उत्तरोत्तर बढ़ने वाले पौधों के माध्यम से भोजन उपलब्ध कराना चुना है, उसी प्रकार से उसने सत्य को उत्तरोत्तर प्रकट करने के माध्यम से मनुष्य की आत्मा के लिए आत्मिक भोजन प्रदान करना चुना है।

> *"यह सब बकवास हैं उनके लिए : आदेश **पर** आदेश, आदेश **पर** आदेश, नियम **पर** नियम, नियम **पर** नियम, कुछ यहां, कुछ वहां।"* (यशायाह 28:10)

उत्पत्ति की पुस्तक यह एक उपजाऊ भूमि के क्षेत्र समान है जिसमे परमेश्वर ने सत्य के बीज को सफ़ाई से लगाया है। ` उन सच्चाइयों से उसका संदेश पवित्रशास्त्र की शेष पुस्तकों में अंकुरित और परिपक्व होता है, जो संसार को जीवन और ताज़गी प्रदान करता है।

एक भ्रूण

आधुनिक तकनीकी का धन्यवाद, बातें जो कभी रहस्य में छिपी हुई थी जिसे अब देखा जा सकता हैं। उदाहरण के लिए, आज हम विकसित हो रहे मानवी भ्रूण की स्पष्ट तस्वीरें देख सकते हैं। उल्लेखनीय है! आठ सप्ताहों के भीतर, मां के गर्भ में फलदायक अंडकोष मूंगफली-के आकार के शिशु के रूप में विकसित होता है, जिसमे आँखे, कान, नाक, मुंह, हाथ, पैर, और तलवे को देखा जा सकता है। यहां तक कि उंगलियों के निशान भी। भले ही वह पूरी तरह से विकसित न हो, तब भी उसमें सभी अंग पाए जाते हैं।

उसी प्रकार से, आज हमें पता है कि प्रत्येक महत्वपूर्ण सत्य जो हमारे सृष्टिकर्ता ने अपने स्वयं के विषय में प्रकट किया है और मानवजाति के लिए उसकी योजना को उत्पत्ति की पुस्तक में भ्रूण के रूप में पाई जाती है। तथापि, *"परमेश्वर का रहस्य"* (प्रकाशितवाक्य 10:7) पूर्ण पवित्रशास्त्र के शेष भागों में विकसित होता है।

आज तक, अधिकांश लोगों के लिए परमेश्वर का व्यक्तित्व और उद्देश्य एक **रहस्य** बने हुए हैं, लेकिन यह अनावश्यक है, क्योंकि *"....उस रहस्य का पूरा पूरा प्रचार करू जो युगों और पीढ़ियों से छिपा हुआ था, लेकिन* ***अब उसके भक्तों पर प्रकट है।"*** (कुलुस्सियों 1:26)

परमेश्वर हमें आमंत्रित करता है कि उसके रहस्य को समझे, लेकिन हमें इसे समझने की इच्छा होनी चाहिए।

कुछ अंश और टुकड़े

बाइबल एक टुकड़ों की पहली के समान है।

जिस प्रकार से कुछ टुकड़े जुड़ते हैं यह स्पष्ट है, जबकि अन्य ये इतने स्पष्ट नहीं हैं। धैर्य और दृढ़ता आवश्यक हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर के वचन पर मनन करने के लिए समय निकालने से ही हमारा भ्रम दूर होगा और परमेश्वर की लयबद्ध रुपरेखा सामने आएगी।

हाल ही में, लेबनान में एक उभरते पत्रकार के साथ संवाद करने का मुझे सौभाग्य मिला। भले ही हम अब तक मिले नहीं थे, फिर भी हम मित्र हो गए थे। अपने पहले ई-मेल में उसने मुझे लिखा :

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैं नहीं मानता कि परम सत्य के [संबंध] में सबूत-सकारात्मक निष्कर्ष पर पहुंचना संभव है।

मैंने उसे प्रोत्साहित किया की मन में पहले से ही स्थिर की हुई कल्पनाओं को परे करे और और अपने आपके लिए बाइबिल पढ़े, और उसे स्वयं के लिए कहने दे। यह वह कर रहा है, जो उसके बाद के ई-मेल से प्रमाणित होता है :

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैंने नए नियम को अरबी भाषा में पढ़ा है और अब मैं पुराने नियम को पढ़ने का इरादा रखता हूं । पहले, मैं केवल कुछ अंश और टुकड़ों में ही पढ़ता था । अब, बहुत सारे प्रश्न जो मैंने पूछे थे उसका उत्तर मेरे सामने है.....इस प्रकार पढ़ने से मैंने क्या प्राप्त किया? [बाइबल संदेश], के लिए एक बड़ी श्रद्धा, इसे एक व्यक्ति के जीवन को बदलने और वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए एक शक्ति के रूप में देखना, ...न कि कठोर दायित्वों की सूची के रूप में जो वास्तव में व्यक्ति को नहीं बदलते हैं ..... मैंने पाया है कि शायद एक तरीका है जिसके द्वारा हम हमारे हाथों में जो कुछ है, उसके बारे में निश्चित हो सकते हैं।

हाल ही में, उसने देखा :

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैंने एक कदम उठाया हैं जिसे मुझे बहुत पहले उठा लेना चाहिए था। मैंने यह जाना है कि इतना कहना काफ़ी नहीं है, 'मैंने बाइबल पढ़ी है। यह एक पुस्तक है जिसे नित्य पढ़ने की आवश्यकता है। यह आश्चर्यजनक है कि मेरे इतने सारे प्रश्न उस पुस्तक की छाया में कैसे गायब हो गए।

इस आदमी के लिए परमेश्वर का संदेश सामने आने लगा है।

पवित्रशास्त्र की हमारी आगामी यात्रा में, एक सत्य परमेश्वर की दिलचस्प कहानी और संदेश स्पष्ट हो जाएंगे जब हम इतिहास के महान पहेली के सबसे महत्वपूर्ण टुकड़ों को जोड़ेंगे। जब हम अपने पवित्रशास्त्र को नित्य पढेंगे तो हम यह जानने पाएंगे कि अन्य "कुछ अंश और टुकड़े" कहां पर ठीक बैठते हैं।

प्रेम पत्र

कहानी एक सैनिक की है जो एक जवान लड़की से प्रेम करता था। हालांकि उसका स्नेह उसके लिए अत्यधिक था, पर वह उसके विषय में क्या सोचती थी यह अस्पष्ट था। कुछ ही समय बाद, सैनिक को दूर देश भेजा दिया गया। उसने ईमानदारी उस लड़की को पत्र लिखे, भले ही उसने कभी भी उसके एक भी पत्र का जवाब नहीं भेजा।

आखिरकार उनकी वापसी का दिन आ ही गया। आने के बाद, उसका पहला पड़ाव उस व्यक्ति से मिलना था जिसे वह बहुत प्यार करता था। उसने उसे घर में पाया। हालांकि उसने देखकर ऐसा बर्ताव किया जैसे कि उसे खुशी हुई, तभी कमरे के कोने में एक धुल से जमी बक्से ने उसके हृदय की सच्ची स्थिति को उजागर कर दिया।

वे सब बिना खोले हुए पत्रों से भरा था-उसके पत्र।

स्वर्ग से पृथ्वी पर

पवित्रशास्त्र आपके लिए परमेश्वर की ओर से पत्रों की शृंखला के समान हैं। अपने लेखों में, सृष्टिकर्ता-स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी अपने आपको आपसे परिचित कराता है, अपने प्रेम को व्यक्त करता है और आपको बताता है कि आप महिमा में उसके साथ और उसके अनंतकाल के घर में आनंद के साथ कैसे जीवन व्यतीत कर सकते हो।

उसने 2,700 वर्षो पहले पृथ्वी पर भेजे गए "पत्र" का यहां कुछ हिस्सा है :

"सब प्यासे लोगों, जल के पास आओ। जिसके पास पैसा नहीं है, वह भी आए। सब आओ, खरीदो, और खाओ। बिना पैसे के, बिना दाम के, अंगूर-रस और दूध खरीदो। जो भोजन नहीं है, उस पर पैसा क्यों खर्च करते हो? जिससे सन्तोष नहीं मिलता, उसके लिए परिश्रम क्यों करते हो? ध्यान से मेरी बात सुनो! तब तुम्हे खाने को उत्तम वस्तु प्राप्त होगी, और तुम स्वादिष्ट व्यंजन खाकर तृप्त होगे। मेरी ओर कान दो, और मेरे पास आओ। मेरी बात सुनो, ताकि तुम्हारा प्राण जीवित रहे। तब मैं दाऊद के प्रति अपनी अटूट करुणा के कारण तुम्हारे साथ शास्वत वाचा स्थापित करूँगा। ..... पृथ्वी से जितना दूर आकाश है, उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं; उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं।" (यशायाह 55:1-3, 9)

प्रेम,

आपका सृष्टिकर्ता

क्या आप ने उन पत्रों को खोला है जो उसने आपको लिखें है? क्या आप ने उसे पढ़ा है? क्या आप ने उसे उत्तर दिया है?

यात्रा को आरंभ करते हैं।

भाग II
यात्रा

रहस्य खोज निकालना

8 - परमेश्वर कैसा है
9 - उसके समान कोई नहीं
10 - एक विशेष रचना
11 - बुराई का प्रवेश
12 - पाप और मृत्यु की व्यवस्था
13 - दया और न्याय
14 - श्राप
15 - दोहरी मुसीबत
16 - स्त्री का वंशज
17 - यह कौन हो सकता है?
18 - परमेश्वर की अनन्त योजना
19 - बलिदान की व्यवस्था
20 - एक महान बलिदान
21 - ज्यादा लहू बहा
22 - मेमना
23 - पवित्रशास्त्र की पूर्ति
24 - पूरा चुकाया दाम
25 - मृत्यु पराजित हुई
26 - धर्मनिष्ठ और परमेश्वर से बहुत दूर

पाठ 8

परमेश्वर कैसा है

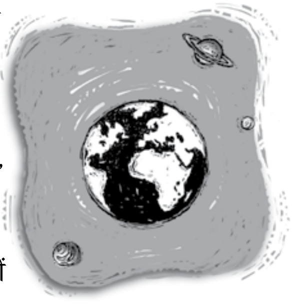

यात्रा वहीं से आरंभ होती है, जहां से परमेश्वर की पुस्तक आरंभ होती है, जो कि अब तक की सबसे बड़ी घोषणाओं में से एक है :

"परमेश्वर ने आरंभ में आकाश और पृथ्वी को रचा ।" (उत्पत्ति 1:1)

परमेश्वर के अस्तित्व का सबूत देने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया है। यह स्वयं-प्रमाणित है।

एक सुनसान समुद्र के किनारे अकेले सैर करते हुए यदि आपको ताज़े पदचिह्न मिले, तो आप तुरंत इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आप वास्तव में अकेले नहीं हैं। आपको पता है कि वे समान रूप से दिखाई देनेवाले मार्ग अपने आप निर्माण नहीं हुए हैं। आपको पता है हवा और जल ने उसे नहीं बनाया हैं। किसी के कारण वे पदचिह्न बने है।

आपको पता है।

फिर भी बहुत सारे लोग विवाद करते हैं कि उन्हें पता नहीं हैं कि रेत जिसमे पदचिह्न बने हुए हैं, और मनुष्य जिनके द्वारा वे पदचिह्न बने हुएं हैं, उन दोनों को भी **किसी** ने बनाया हैं। सृष्टिकर्ता के अलावा सृष्टि की व्याख्या करने के प्रयास में, मनुष्य ने कई विस्तृत सिद्धांतो को विकसित किया, कुछ ने कारणों की एक लड़ी की कल्पना की, जो कि समय में अरबों वर्ष पीछे जाती हैं। लेकिन उस पर बिन्दु पर पहुँचे बाद भी जिसे वे "आरंभ" कहते हैं, बुनियादी प्रश्न का उत्तर देने के आसपास भी नहीं हैं : *इसकी क्या वजह है?*

पवित्रशास्त्र कहता है : *"इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से **उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं**, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।"* (रोमियों 1:19-20)

तर्क मौलिक है: रचना रचनाकार की आवश्यकता को दर्शाती हैं।

मनुष्य-रचित बातें जैसे पैरों के निशान, कार और कम्प्यूटर्स के साथ जैसे यह सत्य है, तो इसी प्रकार पैर, जीवकोष और नक्षत्र समान यंत्ररचना के साथ यह सत्य है। फिर उसे खुली आँखों से देखे या मायक्रोस्कोप अथवा टेलिस्कोप के द्वारा, विश्व की कभी कम न होनेवाली जटिलता और गहन क्रम के लिए सृष्टिकर्ता-पालननहार की आवश्यकता को दर्शाती है।

जैसे पैरों के निशान के लिए पैरों के निशान बनानेवाले की आवश्यकता है, उसी प्रकार एक विश्व के लिए विश्व निर्माता की आवश्यकता होती है।

> *"आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है, आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।"* (भजन संहिता 19:1)

तो यह विश्व निर्माता कौन है? वह किसके समान है यह हम कैसे जान सकते है? हम जान सकते है क्योंकि उसने स्वयं को प्रकट किया है।[94]

अनंत

पीछे हमने एक ई-मेल संवाददाता से सुना जिसने व्यंगात्मक ढंग से पूछा था, "परमेश्वर को किसने बनाया? मैं भूल गया हूं।" उत्तर है : किसी ने नहीं। परमेश्वर अनंत है। *"प्रारंभ में **परमेश्वर**"* हमें सिखाता है कि हमारा सृष्टिकर्ता किसी और के समान नहीं है।

> *"पर्वतों के उत्पन्न होने के पहिले, तेरे द्वारा संसार की सृष्टि होने के पूर्व, युग-युगान्त से तू ही परमेश्वर है।"* (भजन संहिता 90:2)

पिछला, वर्तमान और भविष्य ये सभी परमेश्वर के लिए समान है। वह *".....सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, ...वह सृष्टि के आरंभ में **था**, वह **है**, और **वह आनेवाला है**।"* (प्रकाशितवाक्य 4:8)

वह अनंत और समझ से परे है।

कोई भी सृजित वस्तु परमेश्वर के विषय में सब कुछ कभी जान न सकेगी। वह "उच्च और पवित्र स्थान में निवास करता है।" (यशायाह 57:15)

वह कभी बदलता नहीं। "लेकिन तू वही है; और तेरे वर्षों का अंत नहीं होने का।" (भजन संहिता 102:27)

अधिक महान

हम जो कल्पना कर सकते है उन सभी से परमेश्वर अधिक महान है।

जिस प्रकार वह एक जो अनंत प्रयास नहीं करता कि अपने अस्तित्व का सबूत दे, क्योंकि वह स्वयं-सिद्ध है, इसलिए वह कोई प्रयास नहीं करता कि उसके अस्तित्व को स्पष्ट करे, क्योंकि हमारी सीमित सोच, समय, अंतराल और पदार्थ के बाहर जो कुछ अस्तित्व में हैं उसे समझने में असमर्थ है।

एक छोटे बच्चे के रूप में, मुझे याद है जब मैं आकाश की ओर देखता था और सोचता था कि मैं काफ़ी उंची और काफ़ी दूर तक की यात्रा कर सकता था, तब अंततः मैं एक छत और विश्व के अंत तक आ जाता। मेरे कल्पना के छत की दूसरी ओर जो अंतहीन अंतराल था उसके बारे में सोचने में मैंने गलती की थी!

कुछ बातों को केवल उसपर विश्वास करने से समझा जा सकता है जिसे सृष्टिकर्ता ने प्रकट किया हैं।

परमेश्वर के सुसंगत और सिद्ध वचन पर विश्वास यह बुद्धि और ज्ञान के उच्चतम स्तर की कुंजी है।

> *"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है। .... **विश्वास ही से हम जान जाते हैं** कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वाराहुई है, पर यह नहीं किज कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।"*
> (इब्रानियों 11:6, 3)

आधुनिक विज्ञान पुष्टि करता है कि *"जो दिखता है उसे दृश्य से नहीं बनाया है।"* भौतिकविज्ञानी हमें बताते है कि पदार्थ अदृश्य अणुओं से बना होता है, जो इलेक्ट्रॉन से बने है, जो प्रोटॉन और न्यूट्रोन से बने नाभिक के चारों ओर घुमते रहते है, जो क्वार्क से बने होते है, जो....से बने होते है? मानवजाति ने इतना कुछ खोज निकाला है, फिर भी हमें बहुत ही कम पता है। वे जो बुद्धिमान हैं वे मानव ज्ञान की सीमा को पहचानते हैं।

विज्ञान क्या सिद्ध या असिद्ध करने में कभी भी समर्थ न होगा वह *"यह कि विश्व का निर्माण*

परमेश्वर के शब्द द्वारा हुआ है।" परमेश्वर-द्वारा दिए गए हमारे छटवे इन्द्रिय: विश्वास के द्वारा ही केवल हम इसे जान सकते है :

जीवन के महान विषय और रहस्यों को *"विश्वास ही से **हम जान जाते**"* है। इसका कारण स्पष्ट है :

"परमेश्वर मनुष्य से महान है।" (अय्यूब 33:12)

तो इस महान एक ही ने अपने विषय में और क्या प्रकट किया है?

असीम

वह सर्वशक्तिमान है। *"आह! मेरे स्वामी, मेरे प्रभु! तूने बड़ी सामर्थ्य और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है। तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है।"* (यिर्मयाह 32:17) सृष्टिकर्ता उसकी सृष्टि से बढ़कर है। हम जो कुछ कल्पना कर सकते है उससे वह बहुत ही ऊँचा और उससे भी बढ़कर है।

वह सर्वज्ञानी है। *"तू मेरा उठना और बैठना जानता है, तू दूर से ही मेरे विचार समझ लेता है।"* (भजन संहिता 139:2) सृष्टिकर्ता सब कुछ जानता है-भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल। वह समय के साथ बुद्धि में नहीं बढ़ता। *"उसकी बुद्धि **असीम** है।"* (भजन संहिता 147:5)

वह सभी जगह उपस्थित है। *"तेरे आत्मा से अलग होकर मैं कहां जाऊंगा? मैं तेरी उपस्थिति से कहां भाग सकूंगा?"* (भजन संहिता 139:7) असीमित एक ही आपके साथ भी रह सकता है और उसी समय मेरे साथ भी है। जिस क्षण वह स्वर्ग दूतों के साथ बातचीत कर रहा है, उसी क्षण वह पृथ्वी पर के मनुष्यों से भी बात कर सकता है।

वह असीम है।

आत्मा

यहां पर इस असीम एक ही के विषय में और एक महत्वपूर्ण जानकारी का हिस्सा है :

*"परमेश्वर **आत्मा** है।"* (यूहन्ना 4:24)

परमेश्वर अदृश्य, असीम और वैयक्तिक आत्मा है जो सभी स्थानों में एक ही समय में उपस्थित रहता है। भले ही उसे शरीर की आवश्यकता नहीं, वह समर्थ है और जैसे वह चुनाव करता है वैसे स्वयं को प्रकट करने में मुक्त है। पवित्रशास्त्र विभिन्न अवसरों के बारे में जानकारी देती है जब

परमेश्वर पुरुष और स्त्रियों को अनोखे, दृश्य मार्गों से प्रकट हुआ था, *"आमने-सामने, जैसे एक मनुष्य उसके मित्र से बात करता है।"* (निर्गमन 33:11)

परमेश्वर जो परम आत्मा चाहता है कि आत्मिक जीव जिन्हें उसने इस उद्देश्य के लिए बनाया है कि वह उनके द्वारा जाना, भरोसा किया और आराधना किया जाए।

> *"....पिता ऐसे ही आराधक चाहता है। परमेश्वर आत्मा है; और यह आवश्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे।"* (यूहन्ना 4:23-24)

आत्माओं का पिता

परमेश्वर का एक शीर्षक "आत्माओं का पिता" है। (इब्रानियों 12:9)

पृथ्वी की रचना करने से पहले,[95] परमेश्वर ने अनगिनत लाखों शक्तिशाली, अद्भुत आत्मिक जीवों की रचना की जिन्हें स्वर्गदूत कहा जाता है। उसने उन्हें रचा ताकि वे उसके साथ स्वर्गीय निवासस्थान में रहे। स्वर्गदूत का अर्थ संदेशवाहक या सेवक। परमेश्वर, जिसका उद्देश्य था की प्रेमी प्रजा का राज्य हो जिनके साथ वह अनंतकाल बिता सके, इन आत्माओं का सृजा कि उसे जाने, उसकी आराधना, आज्ञापालन, सेवा करे और उसके साथ हमेशा आनंद से रहे।

> *"जब मैंने देखा तो उस सिंहासन और, ... ओर **बहुत से स्वर्गदूतों** का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी।"* (प्रकाशितवाक्य 5:11)

प्रारम्भ से, परमेश्वर ने इतने सारे स्वर्गदूतों की रचना की जितने वह चाहता था, क्योंकि उनकी रचना दोबारा उत्पन्न करने के लिए नहीं की गई थी। ये आत्माएं किसी भी तरह से परमेश्वर की समानता में नहीं थे, यद्यपि उनके सृष्टिकर्ता के साथ वे कुछ गुणधर्मों में एक समान थे। परमेश्वर ने उन्हें उच्च स्तर की बुद्धिमत्ता प्रदान की थी। उसने उन्हें भावना, इच्छा और उसके साथ वार्तालाप करने की क्षमता भी प्रदान की थी। अपने सृष्टिकर्ता के समान, स्वर्गदूत भी मनुष्यों के लिए अदृश्य हैं जब तक कि उन्हें किसी मिशन पर न भेजा जाए जिसमे उन्हें दृश्यमान होना पड़ता हैं।[96]

सृजित आत्मिक जीवों के उसके राज्य में, परमेश्वर ही केवल असृजित, असीमित, सर्व-शक्तिमान, सर्व-ज्ञानी, असीम आत्मा है।

सबसे ऊपर

> *"एक ही आत्मा....एक ही प्रभु,....सबका परमेश्वर और पिता भी एक ही है, जो **सबके ऊपर है**... ।"* (इफिसियों 4:4-6)

भले ही एक जो "सबके ऊपर है" वह समय और अंतराल से सीमित नहीं है, यहां विश्व में एक प्रत्यक्ष स्थान है जहां वह निवास और शासन करता है। *"प्रभु ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया हैं, और उसकी सत्ता सब पर शासन करती है"* (भजन संहिता 103:19)। परमेश्वर की महानता और उसकी निकटता पर चिंतन करते हुए, राजा सुलैमान ने अपने सृष्टिकर्ता से इन शब्दों में प्रार्थना की :

> *"क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा, स्वर्ग में वरन, **सबसे उंचे स्वर्ग में** भी तू नहीं समाता, ... ।"* (1 राजाओं 8:27)

बाइबल तीन भिन्न स्वर्गों के विषय में कहती है। मनुष्यों को दो लोग दिखते है; एक नहीं।
एक *वायुमंडलीय स्वर्ग* है-अपने सिरों के ऊपर नीला आकाश।
एक *तारों के बीच का स्वर्ग* है-काला अंतराल जिसमे परमेश्वर ने ग्रहों और तारों को रखा है।
और एक *स्वर्गों का स्वर्ग* है-प्रखर गोला जहां परमेश्वर निवास करता है। हमारे सृष्टिकर्ता के स्वर्गीय घर और स्वर्गदूतों के क्षेत्र को सर्वोच्च स्वर्ग, तीसरा स्वर्ग, पिता का घर, उसका निवासस्थान, स्वर्गलोक, और सरल रीति से स्वर्ग कहा जाता है।[97]

> *"प्रभु **स्वर्ग** से नीचे निहारता है; वह समस्त मानव जाति को देखता है; वह उस स्थान से, जहां वह सिंहासन **पर विराजमान है** धरती के समस्त निवासियों पर दृष्टिपात करता है। वही उन सब के हृदय को गढ़ता है; और उनके सब कार्यों का निरिक्षण करता है।"* (भजन संहिता 33:13-15)

परमेश्वर एक है

बाइबल का पहिला वचन पुष्टि करता है कि केवल एक ही परमेश्वर है: "*आरंभ में **परमेश्वर**।*"
पुराना और नया नियम दोनोंही घोषित करते हैं: *"हमारा प्रभु परमेश्वर, **एक ही प्रभु है**"* (व्यवस्था विवरण 6:4)। *"**क्योंकि परमेश्वर एक है**"* (रोमियों 3:30)।

परमेश्वर एक ही है।
उसे कोई प्रतिद्वंदी नहीं। उसकी समानता में कोई नहीं।

इन सिद्धांतों में विश्वास को *एकेश्वरवाद* कहते है, जिसका अर्थ, केवल एक ही परमेश्वर में विश्वास। एकेश्वरवाद *बहुदेववाद* (अनेक देवता और देवियों में विश्वास) और *सर्वेश्वरवाद* (परमेश्वर सब कुछ और सब कुछ परमेश्वर है में विश्वास) के विरोध में है। बहुदेववादी और सर्वेश्वरवादी सृष्टिकर्ता और उसकी सृष्टि के बीच के भेद को धुंधला कर देते है। परिणामस्वरूप, वे इन्कार करते हैं कि परमेश्वर गुणधर्म लक्षणों के साथ एक व्यक्तित्व है।

जटिल

*"आरंभ में **परमेश्वर**"* यह एक *प्राथमिक* सत्य है, लेकिन यह केवल एक *सरल* सत्य नहीं। अनंत एक ही जो सरल नहीं है। वह जटिल है। उसकी एकता यह बहु-आयामी एकता है।

"परमेश्वर" के लिए उपयोग किया हुआ इब्रानी शब्द पुल्लिंग बहुवचन नाम एलोहीम है। इब्रानी व्याकरण में एकवचन (एक), द्विवचन (केवल दो) और बहुवचन (तीन या अधिक) नाम के प्रकार हैं। एलोहीम यह व्याकरण सम्मत ढंग से बहुवचन है, लेकिन उसका अर्थ एकवचन ही है।

यह एक सत्य परमेश्वर अपनी क्षमता में जटिल और असीमित है। पवित्रशास्त्र के पहले तीन वाक्य घोषित करते हैं :

> *"आदि में **परमेश्वर** [बहुवचन संज्ञा] ने आकाश और पृथ्वी की **सृष्टि की** [एकल क्रिया युग्मन]। पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी। और गहर जल के ऊपर अँधियारा था; तथा **परमेश्वर का आत्मा** जल के ऊपर मंडराता था। जब **परमेश्वर ने कहा**, 'उजियाला हो', तो उजियाला हो गया।"* (उत्पत्ति 1:1-3)

इस प्रकार, परमेश्वर की पुस्तक का आरंभ का वाक्य हमें बताता है कि उसने सृष्टि निर्माण का उसका कार्य कैसे किया। उसने उसकी आत्मा और उसके वचन के द्वारा यह किया।

पहला, परमेश्वर के स्वयं के आत्मा को स्वर्ग से भेजा गया कि उसके आदेश को पूरा करे। जैसे एक कबूतर उसके घरौंदे के ऊपर मंडराता है, नए सृजे गए जगत पर *"**परमेश्वर का आत्मा** मंडरा रहा था"*। "आत्मा" के लिए इब्री शब्द जो उपयोग किया है वह रू*आख* है, जो आत्मा, श्वास या शक्ति को दर्शाता है। "परमेश्वर का आत्मा" यह स्वयं परमेश्वर की शक्ति-प्रदान करनेवाली उपस्थिति है।

> *"जब तू **अपना आत्मा** [रूआख] भेजता है, तब वे उत्पन्न किए जाते हैं .... ।"* (भजन संहिता 104:30)

आगे, *परमेश्वर ने कहा*। उत्पत्ति का पहिला अध्याय दस बार स्पष्ट करता है: *"परमेश्वर ने*

कहा... ” जब परमेश्वर ने कहा, जो उसने आदेश दिया वह हो गया।

> *“आकाश-मण्डल **प्रभु के वचन से** और उसकी समस्त स्वर्गिक सेना, उसके मुंह की **श्वास** [रूआख] से निर्मित हुई।”* (भजन संहिता 33:6)

परमेश्वर ने संसार को उसके वचन और उसकी आत्मा द्वारा निर्मित किया।

वह संचारक है

यह वास्तविकता कि परमेश्वर ने सब कुछ कहने के द्वारा निर्मित की यह हमें परमेश्वर के विषय में कुछ और भी सिखाती है :

वह संचार करता है।

इससे पहले की सृष्टि हुई यहां संचार हुआ।

> *“आदि में वचन था; और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।”* (यूहन्ना 1:1-2)

यह शब्द, *वचन*, यूनानी शब्द लोगॉस से आता है, जिसका अर्थ : विचार की अभिव्यक्ति है।[98] पवित्रशास्त्र में, लोगॉस परमेश्वर का एक वैयक्तिक उपाधि है। परमेश्वर और उसका शब्द यह एक है।

सब कुछ वचन द्वारा रचा गया।

परमेश्वर ने संसार के अस्तित्व के बारे में केवल सोचा होता और क्षण में सब कुछ रचा जाता और कार्यरत हो गया होता। लेकिन उसने यह नहीं किया। उसने उसके विचार को *व्यक्त* किया। उसने *कहा*।

वचन ने कहा और संसार छः क्रमवार दिनों में अस्तित्व में आ गया।

सर्वशक्तिमान को उसका कार्य पूरा करने के लिए क्या छः दिनों की आवश्यकता हैं?

नहीं, एक जो शास्वत है उसे किसी समय की आवश्यकता नहीं है। तथापि, अपने संसार को इस प्रकार से निर्मित करने के द्वारा, परमेश्वर ने न ही केवल सात-दिनों का सप्ताह स्थापित किया,[99] उसने हमें उसके व्यक्तित्व और गुणधर्म की भी समझ दी है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अज्ञात परमेश्वर पर न ही भरोसा, न ही उससे प्रेम, न ही उसकी आराधना की जा सकती है।

आइए हम अब सृष्टि के वृत्तांत को देखे, सुने और सीखे, जिसे स्वयं सृष्टिकर्ता द्वारा बताया गया है।

दिन 1 : उजियाला और समय—परमेश्वर पवित्र है

> *"जब परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला हो', तो उजियाला हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है; और परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को 'दिन' और अंधियारे को 'रात कहा'। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया।"* (उत्पत्ति 1:3-5)

पहले दिन, परमेश्वर ने दृश्य सृष्टि में उजियाला लाया। उसने समय को भी स्थापित किया, पृथ्वी को 24-घंटो के परिक्रमण, खगोलीय-घड़ी जो दिन और रात को नियमित करती है उसमे आरंभ भी किया। फिर भी परमेश्वर ने चौथे दिन तक सूरज, चांद और तारों का निर्माण नहीं किया था।

एक समय था जब वैज्ञानिकों ने तर्क किया कि सूरज के अस्तित्व से पहले उजियाले का अस्तित्व यह वैज्ञानिक दृष्टि से गलत है। अब ऐसा नहीं रहा। आज वैज्ञानिक भी जो सृष्टि के वृत्तांत पर विश्वास नहीं करते थे सहमत हो गए है कि पृथ्वी के सूरज के पहले और स्वतंत्र रूप से उजियाला अस्तित्व में था।[100]

पृथ्वी के उजियाला देने वाले (दिन 4) बनाने से पहले उजियाला (दिन 1) प्रदान करने के द्वारा, सृष्टिकर्ता यह प्रदर्शित कर रहा था कि उजियाला-भौतिक और आध्यात्मिक का स्त्रोत, वहीं है। उसके बगैर, यहां पर केवल अंधकार है।

पवित्रशास्त्र से जैसे ही हम जानकारी लेंते है, उजियाले के स्त्रोत से हमारा निरतंर सामना होगा, उसका स्वयं स्वर्गलोक की चोटी में समापन होगा जहां परमेश्वर के लोगों को *"...उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता नहीं होगी; क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।"* (प्रकाशितवाक्य 22:5)

उजियाला सबसे अच्छे दिमागों के लिए भी एक रहस्य बना हुआ है। भौतिकवैज्ञानीयों को उसके बारे में कुछ तो पता है कि वह क्या करता है, लेकिन वह क्या है उसके बारे में वे बहुत ही कम जानते हैं। विज्ञान में, प्रकाश परम है। वह एक सेकंड में 300,000 किमी (186,000 मील) अंतर की दूरी पूरी करता है। भौतिक विज्ञान में, जब अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने ई=एमसी^{2} की खोज की (उर्जा बराबर है द्रव्यमान गुणा उजियाला वेग का वर्ग), तब अद्भुत और भयानक परमाणु-नाभिकीय युग की शुरुआत हुई। उजियाला अपने पर्यावरण से अप्रभावित है। वह दुर्गन्धयुक्त-कूड़े के कचरे पर चमक सकती है, लेकिन उजियाला स्वयं शुद्ध है। उजियाला अंधकार के साथ नहीं रह सकता। उजियाला उसे हटा देता है।

परमेश्वर, उजियाले का स्त्रोत, अति परम है। उसका अद्भुत वैभव किसी भी जीवित प्राणी के लिए डरावना है जो उसकी उपस्थिति में निवास करने के लिए सुसज्जित नहीं हैं।

परमेश्वर शुद्ध और पवित्र है।

पवित्र शब्द का अर्थ : विशिष्ट प्रकार का, अलग किया हुआ या अलग। परमेश्वर अलग है। उसके समान कोई नहीं है। स्वर्गदूत जो स्वर्ग में उसके सिंहासन के चारों ओर रहते है निरंतर पुकारते रहते हैं, *"पवित्र, पवित्र, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु पवित्र है!"* (यशायाह 6:3)। पवित्रता ही परमेश्वर का केवल वह गुणधर्म है जो पवित्रशास्त्र में तीन के गुट में घोषित किया गया है-जोर देने के लिए। वह पवित्र है, *"वह अगम्य ज्योति में निवास करता है।"* (1 तीमुथियुस 6:16)

परमेश्वर बुराई के साथ नहीं रह सकता। वह अंधकार से उजियाले को अलग करता है। केवल पवित्र और धर्मी प्राणी ही उसके साथ जीवन व्यतीत कर सकते है।

> *"**परमेश्वर ज्योति हैं** और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं। यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अंधकार में चलें तो हम झूठें हैं और सत्य पर नहीं चलते।"* (1 यूहन्ना 1:5-6)

सृष्टि निर्माण का पहला दिन घोषित करता है कि परमेश्वर **पवित्र** है।

दिन 2 : हवा और जल—परमेश्वर सर्वशक्तिमान है

> *"फिर परमेश्वर ने कहा, 'जल के बीच एक ऐसा अंतर हो कि जल दो भाग हो जाए। ' तब परमेश्वर ने एक अंतर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया। और परमेश्वर ने उस अंतर को 'आकाश' कहा। तथा सांझ हुई, फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।"* (उत्पत्ति 1:6-8)

सृष्टि निर्माण का दूसरा दिन दो घटकों पर ध्यान केंद्रित करता है जिस पर सभी जीवित जीवजन्तु निर्भर हैं: हवा और जल।

इब्रानी शब्द आकाशमंडल जो अपने सिर के ऊपर के एक बड़े नभमंडल को संबोधित करता है, जिसमे बादलों को रखा है और वातावरण जिसमे तारे देखे जा सकते हैं। वातावरण के गैसों की पूरी तरह से संतुलित संरचना पर सोचे जैसे ऑक्सीजन और नाइट्रोजन, जल की भाप और कार्बन डाइऑक्साइड, ओझोन और बहुत कुछ। इस मिश्रण को बदलते ही हम मर जाएंगे। परमेश्वर को पता था कि वह क्या कर रहा है।

हमारे ऊपर वायुमंडल में निलंबित अरबों टन जल बाष्प के बारे में सोचें। किस प्रकार की बुद्धि और शक्ति की आवश्यकता थी कि केवल कहने के द्वारा—जीवन के लिए आवश्यक वह भारयुक्त नाजुक मिश्रण का निर्माण करे और उसे सम्भाले?

*"**क्योंकि प्रभु ने कहा, और वह हो गया**; उसने आज्ञा दी, और वह स्थित हो गया।"*
(भजन संहिता 33:9)

सृष्टि निर्माण के अन्य और दिनों जैसा, दूसरा दिन हमें स्मरण कराता है कि हमारा सृष्टिकर्ता **सर्वशक्तिमान** है।

दिन 3 : सागर, भूमि और वनस्पति—परमेश्वर भला है।

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए, और सुखी भूमि दिखाई दे", और वैसा ही हो गया। .... परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। फिर परमेश्वर ने कहा पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़ और फलदाई वृक्ष भी, जिनके बीज उन्हीं में एक एक जाति के अनुसार हैं, पृथ्वी पर उगे," और वैसा ही हो गया। ....। और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।" (उत्पत्ति 1:9-12)

तीसरे दिन परमेश्वर ने सागर से भूमि को अलग किया और सभी वनस्पति को अस्तित्व में आने को कहा। *"और परमेश्वर ने देखा कि वह अच्छा था।"* उसने हमारे ग्रह में तरल पानी के केवल सही प्रमाण को रखा है। उसे उस दिन से अब तक उसमें कुछ भी जोड़ने की कभी भी आवश्यकता नहीं हुई।[101]

परमेश्वर ने प्रत्येक पौधा और पेड़ की रचना की है कि बीज पैदा करे और *"उनकी जाति के अनुसार"* वनस्पति या फल उत्पाद करें। परमेश्वर ने ये सब अन्न क्यों बनाएं? उसने ये सब बनाएं क्योंकि उसने *"पृथ्वी की रचना की.... कि उसे आबाद करें।"* (यशायाह 45:18) हमारे सौर-मण्डल में पृथ्वी अनोखी है। यह जीवन को बनाए रखने और समृद्ध करने के लिए रचना किया गया एकमात्र ग्रह है।

उदाहरण के लिए, इस पर सोचे, कि कुछ लाभ जो हम सब्जियों से प्राप्त करते हैं: महत्वपूर्ण ऑक्सीजन, पोषण करनेवाली सब्जियां, स्वादिष्ट फल, तरोताजा करनेवाली छाँव, उपयोगी लकड़ियां, आवश्यक दवाईयां, रंग-बिरंगे और सुगंधित फूल, सुंदर प्राकृतिक दृश्य, और बहुत कुछ।

जब भोजन के बारे में सोचते है, तब परमेश्वर ने हमारे लिए खाने की केवल थोड़ी ही चीजें बनाई

होती जैसे केला, फलियां, और चावल। हम उससे जीवित रह सकते थे। लेकिन परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया। वैज्ञानिक अंदाज लगाते हैं कि हमारी पृथ्वी में भोजन और चारे के लिए वनस्पतियों के दस लाख विविध प्रकार हैं।

उत्पत्ति अध्याय एक में, परमेश्वर सात बार घोषित करता है कि उसकी सृष्टि *"अच्छी"* है। पवित्रशास्त्र में सभी जगह अंक सात सिद्धता को दर्शाता है। सब कुछ जो परमेश्वर ने बनाया वह पूर्ण रूप से अच्छा था।

वह इसलिए क्योंकि वह पूर्ण रूप से भला है।

*"परमेश्वर ....जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से **देता है**।"*(1 तीमुथियुस 6:17)

तीसरा दिन हमें सिखाता है कि परमेश्वर **भला** है।

दिन 4 : स्वर्गीय ज्योतियां-परमेश्वर विश्वसनीय है

"फिर परमेश्वर ने कहा, 'दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अंतर में ज्योतियां हों; और वे चिन्हों और नियत समयों और दिनों और वर्षों के कारण हों; और वे ज्योतियां आकाश के अंतर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरे,' ..... तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियां बनाई; उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर प्रभुता करने के लिए, और छोटी ज्योति को रात पर प्रभूता करने के लिए बनाया; और तारांगण को भी बनाया।" (उत्पत्ति 1:14-16)

चौथा दिन व्यवस्था के परमेश्वर को प्रकट करता है। वहीं एक है *"जो दिन में प्रकाश देने के लिए सूर्य को नियुक्त करता है, जिस ने रात में रोशनी के लिए चन्द्रमा और तारों को स्थित किया है"* (यिर्मयाह 31:35)। रात में, तारों की निश्चित व्यवस्था यात्रा करनेवालों को भूमि और सागर पर एक विश्वसनीय नक्शा प्रदान करती है। दिन में, सूर्य निर्भर रूप से दिनों और वर्षो को करता रहता हैं। चन्द्रमा महीने और ऋतु नियमित करता है।

सूर्य और तारों के समान, पृथ्वी का चन्द्रमा निरंतर गवाही देता है उस एक ही की जिसने उन्हें बनाया है जिस पर वे निर्भर है। परमेश्वर चन्द्रमा को *"आकाश में एक विश्वसनीय गवाही"* कहता है" (भजन संहिता 89:37)। पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान से, चन्द्र-ग्रह पृथ्वी का लगातार सामना करता है, जो इसके पिछले हिस्से को कभी प्रकट नहीं करता।[102] घड़ी की कल की सटीकता के साथ यह बढ़ता और घटता है। चन्द्रमा यह विश्वसनीय है क्योंकि एक जिसने उसे बनाया है वह विश्वसनीय है।

क्योंकि परमेश्वर विश्वसनीय है, ऐसा कुछ है जो वह नहीं कर सकता। वह अपने स्वभाव का खंडन नहीं कर सकता, न ही वह स्वयं के नियमों को नजरंदाज कर सकता है। *"..... वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता". ...परमेश्वर का झूठा ठहराना अनहोना है, ...* (2 तीमुथियुस 2:13; इब्रानियों 6:18)। कई लोग सोचते है कि परमेश्वर इतना "महान" है कि वह वो कर सकता है जो उसके अपने चरित्र के विपरीत है, या अपने वचन से मुकर सकता है। यह परमेश्वर की महानता की व्याख्या नहीं है।

अस्थिरता उसके गुणधर्म का हिस्सा नहीं है-विश्वसनीयता है। ग्रहों और नक्षत्रों के स्थिर व्यवस्था के समान, हमारा सृष्टिकर्ता-पालनहार विश्वासयोग्य है।

आप उस पर भरोसा कर सकते हैं।

> *"प्रत्येक उत्तम दान एवं सिद्ध वरदान का दाता परमेश्वर है। **ज्योतियों का पिता,** जिसमे **न कोई परिवर्तन है** और न उलट-फेर के कारण कोई छाया है, ये दान और वरदान हमें देता है।"* (याकूब 1:17)

सृष्टि निर्माण का चौथा दिन गवाही देता है कि परमेश्वर **विश्वसनीय** है।

दिन 5 : मछली और पक्षी-परमेश्वर जीवन है

पांचवें दिन, उसके असीमित ज्ञान और सामर्थ्य में, परमेश्वर ने प्रत्येक प्रकार के जीवजन्तु की रचना कि वे सागर और आकाश में आबाद रहे, उन्हें सुसज्जित किया कि उनके अनोखे वातावरण में प्रभावी रीतिसे इधर-उधर फिर सके- मछली उनके गलफड़े और मीनपंखो के साथ जल में, और पक्षी उनके पंखो और हलकी हड्डियों के साथ हवा में।

> *"फिर परमेश्वर ने कहा, जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए, और पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अंतर में उड़ें। इसलिए परमेश्वर ने जाति के जाति बड़े-बड़े जल-जंतुओं की और उन सब जीवित प्राणियों की भी सृष्टि की जो चलते फिरते हैं जिनसे जल बहुत ही भर गया, और एक एक जाति के उड़नेवाले पक्षियों की भी सृष्टि की: और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।"* (उत्पत्ति 1:20-21)

वर्णन करने के ढंग पर ध्यान दें, *"जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए।" भर जाए* का अर्थ है "एक-दूसरे से सटीक रहे, पूरी तरह से भर जाए।" सूक्ष्मजीवविज्ञानी हमें बताते है कि तालाब के जल की एक बून्द में लाखो जीवित सूक्ष्मजीव शामिल हैं और यह कि उनमें से बहुतेरे इतने जटिल होते हैं जैसे कुछ बड़े प्राणी। महासागर के जीवों की सबसे बड़ी शृंखला ब्लू व्हेल पूरी तरह से

प्लवक-छोटे पौधों और जानवरों पर अपना पोषण करती है जो समुद्र में तैरते हैं।

महासागर परमेश्वर के जीवित चमत्कारों का एक बड़ा संचय है।

वही बात पक्षियों के अद्भुत वर्गीकरण के विषय में कहा जा सकता है जो आकाश में उड़ते हैं।

"उनकी जाति के अनुसार" इन शब्दों की ओर ध्यान दें। यह वाक्यांश उत्पत्ति के अध्याय एक में दस बार दोहराए गए हैं, जो जीवजन्तुओं के प्रत्येक प्रकार की स्थिरता को घोषित करते है। जीवन के निर्माता ने आदेश दिया है कि प्रत्येक पौधा और प्राणी को *"अपनी जाति के अनुसार"* जनन करना चाहिए। क्रमिक विकास की मनुष्य की परिकल्पना यह इस अपरिवर्तनीय स्वाभाविक नियम के विरोध में जाती है। जबकि प्रत्येक प्रकार के जीवित जानवरों में विविधताएं, उत्परिवर्तन, और अनुकूलन हो सकते हैं, कोई भी विशिष्ट सीमा जिसे सृष्टिकर्ता ने स्थित किया है उससे आगे "विकसित" नहीं हो सकते। जीवाश्म अभिलेख इसका साक्षी है।

परमेश्वर ही केवल उस एकमात्र शक्ति का स्रोत और उसका पालनहार है जिसे *जीवन* कहते है। उसके बगैर केवल मृत्यु है।

> *"उसके द्वारा सब वस्तुओं की उत्पत्ति हुई, और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ उसमें से एक भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।* ***उसमें जीवन था*** *और यह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।"* (यूहन्ना 1:3-4)

पांचवें दिन जीवित जानवरोंकी प्रचुरता हमें सिखाती है कि परमेश्वर **जीवन** है।

दिन 6 : प्राणी और मनुष्य- परमेश्वर प्रेम है

छटे दिन की शुरुआत में सृष्टिकर्ता ने विलक्षण पालतू पशुओं, रेंगनेवाले जन्तुओं और कीटकों को हजारों की संख्या में बनाया।

> *"परमेश्वर ने धरती के वन पशुओं, पालतू पशुओं और भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं को उनकी जाति के अनुसार बनाया। परमेश्वर ने देखा कि वे अच्छे हैं।"* (उत्पत्ति 1:25)

परमेश्वर ने उन सभी को बनाया, कुछ बड़े और कुछ छोटे, प्रत्येक को प्राकृतिक जीवन में रहने और योगदान करने के लिए आवश्यक सहज ज्ञान देते हुए, प्रत्येक अपनी समानता में संतान पैदा करता है, प्रत्येक अपने बच्चों की देखभाल करता है।

जब परमेश्वर ने जानवरों के राज्य की रचना की तो सब कुछ "*भला था*"। अब तक दृश्य में कोई बुराई या लहूपात ने अभी प्रवेश नहीं किया था। जानवरों की रचना की गई थी कि शाकाहारी

भोजन पर जीवित रहे। परमेश्वर ने कहा, *"धरती के पशुओं, आकाश के पक्षियों, भूमि पर रेंगनेवाले जन्तुओं, प्रत्येक प्राणी को जिसमें जीवन का श्वास है, मैंने हरित पौधे, आहार के लिए दिए हैं। ऐसा ही हुआ"* (उत्पत्ति 1:30)। जीव-जंतु-जीव खाद्य श्रृंखला नहीं थी। शत्रुता और भय अज्ञात थे। परमेश्वर की दया सब में झलकती थी। मेमने के पास शेर चरेगा, और एक बिल्ली और पक्षी एक दूसरे के सहवास का आनंद लेते थे। जगत पूर्ण रूप से एक शांतिमय स्थान था।

एक बार जब परमेश्वर ने जानवरों को बनाना समाप्त कर लिया, तो यह उनकी उत्कृष्ट कृति बनाने का समय था: *पुरुष और स्त्री*। परमेश्वर की यह योजना थी जिसके द्वारा मनुष्य एक गौरवमय, आनंदी, प्रेम के अनंत राज्य में उसकी समर्पित प्रजा होकर रह जाए।

हमारे सृष्टिकर्ता के लिए, प्रेम उससे बढ़कर है जो वह करता है। प्रेम वही है जो वह है।

*"परमेश्वर प्रेम **है**।"* (1 यूहन्ना 4:8)

छठवें दिन परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य घोषणा करते हैं कि वह **प्रेम** है।

"आइए हम"

क्योंकि परमेश्वर प्रेम है कि उसने लोगों के लिए एक सुंदर संसार का निर्माण किया ताकि वे जो उसके प्रेम के पात्र और प्राप्तकर्ता हो। और इस लिए, फिर भी छठवें दिन भी:

"परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार, अपनी समानता में बनाएं,...." (उत्पत्ति 1:26)

ठहरो! एक मिनट के लिए रुको! वह क्या था? क्या परमेश्वर ने सच में कहा, *"**हम** मनुष्य को **अपने** स्वरूप के अनुसार बनाएं"*?

क्योंकि परमेश्वर एक है, तो फिर यह "हम" कौन है?
वह किससे कह रहा था?

पाठ 9

उसके समान कोई नहीं

"परमेश्वर परमेश्वर है....महान परमेश्वर, सर्वशक्तिमान और अद्भुत!"

— मूसा भविष्यद्वक्ता (व्यवस्था विवरण 10:17)

चेतावनी: यात्रा का अगला चरण यात्रियों को उनके आरामदायक क्षेत्र के बाहर ले जाएगा। दिमाग पर जोर दिया जाएगा और दिलों को परखा जाएगा। लेकिन इस विभाग में सफल होने वाले सभी लोग आगे आने वाली बाकी चुनौतियों का सामना करने तैयार होंगे।

परमेश्वर परमेश्वर है

हम में से अधिकतर लोग यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उससे महान है जो हम स्वाभाविक रूप से उसके विषय में विचार करते हैं।

हमारे विश्वास के सच्चाई की अब परीक्षा होने जा रही हैं।

सृष्टि निर्माण के छठवें दिन, परमेश्वर ने प्राणी जगत का निर्माण समाप्त करने के बाद, कहा: *"हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार, अपनी समानता में बनाएं ...... ।"* (उत्पत्ति 1:26)

अगले अध्याय में, हम उन कुछ तरीकों पर विचार करेंगे जिनमें मूल पुरुष और स्त्री को परमेश्वर के स्वभाव और समानता को प्रतिबिंबित करने के लिए बनाया गया था, लेकिन पहले और एक प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है।

क्योंकि परमेश्वर *एक* है, तो फिर उसने ऐसा क्यों कहा, "**हम** बनाएं...."? उसने इस प्रकार क्यों नहीं कहा, "**मैं** मनुष्य को मेरे स्वरूप, **मेरी** सदृशता के अनुसार बनाऊंगा"? परमेश्वर स्वयं को कभी कभी *हमें, हमारा और हम सब* इस प्रकार से संबोधित क्यों करता है?[103]

कुछ विचार-विवाद करते है कि *"हम"* और *"हम सब"* इन शब्दों का परमेश्वर का उपयोग यह "ऐश्वर्य का बहुवचन" है, जब एक राजा जो खुद को "हम" कहता है। हालांकि परमेश्वर सामर्थ्य और महिमा में प्रतापी है, इब्री व्याकरण इस स्पष्टीकरण के लिए कोई ठोस आधार प्रदान नहीं करता।

अन्य यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर स्वर्गदूतों को कह रहा है जब उसने कहा, *"हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं,"* भले ही इस वचन में स्वर्गदूतों को उल्लेख नहीं हैं, मनुष्य को स्वर्गदूतों के स्वरूप में नहीं बनाया गया है।

पवित्रशास्त्र को सरलता से पढ़ने और व्याकरण की जांच से स्पष्ट है कि हमारे सृष्टिकर्ता ने बहुवचन लेकिन एकवचन में स्वयं का वर्णन करना चुना है।

बहुवचन: "परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएं।"
एकवचन: "तब परमेश्वर ने मनुष्य को उसके स्वयं के स्वरूप में निर्माण किया।"
(उत्पत्ति 1:26-27)

परमेश्वर का स्वयं के विषय में बहुवचन और एकवचन में वर्णन यह वह जो है और जिसके साथ वह हमेशा से रहा है, उसके अनुरूप है।

परमेश्वर की एकता की जटिलता और परिमाण बहुत से लोगों की "एक" की सतही परिभाषा से बहुत आगे निकल जाती है। अनंत एक मनुष्य द्वारा कल्पना किए गए किसी भी सांचे में फिट नहीं होगा।

परमेश्वर परमेश्वर है।

*"...युग-युगान्त से **तू ही परमेश्वर है**।"* (भजन संहिता 90:2)

परमेश्वर की जटिल एकता

परमेश्वर की पुस्तक इन शब्दों के साथ खुलती है:

*"**परमेश्वर** [एलोहीम-पुल्लिंग बहुवचन नाम] ने आरंभ में आकाश और पृथ्वी को रचा [एकवचनी क्रियापद युग्मन].... जल की सतह पर **परमेश्वर का आत्मा** मंडराता था। **परमेश्वर ने कहा**, 'उजियाला हो', और उजियाला हो गया।"*[104]

परमेश्वर ने सब वस्तुएं उसके शब्द और उसकी आत्मा द्वारा बनाई।

"आकाश-मण्डल प्रभु के वचन से और उसकी समस्त स्वर्गिक सेना, उसके मुंह की श्वास से निर्मित हुई।" (भजन संहिता 33:6)

उसका शब्द

वे सब जो उनके सृष्टिकर्ता के जटिल स्वभाव के विषय में सीखना चाहते हैं, पवित्रशास्त्र काफ़ी जानकारी प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना रचित सुसमाचार इन शब्दों के साथ आरंभ होता है :

*"आदि में **वचन** था; वचन **परमेश्वर के साथ** था और वचन **परमेश्वर** था। **वह** आदि में परमेश्वर के साथ था। **उसके** द्वारा सब वस्तुओं की उत्पत्ति हुई,...... ।"* (यूहन्ना 1:1-3)

जैसे हमने पिछले अध्याय में विचार किया है, वचन यह परमेश्वर के आतंरिक विचारों की बाह्य अभिव्यक्ति है। जैसे आप आपके विचार और शब्दों के साथ एक है, उसी प्रकार परमेश्वर अपने वचन के साथ एक है। वचन को "परमेश्वर के साथ" (उससे अलग) और "परमेश्वर" (उसके साथ एक) दोनों के रूपा में घोषित किया गया है।

यह निरिक्षण करना भी सहायक है कि वैयक्तिक सर्वनाम "वह" और "उसे" इनका उपयोग किया जाता है जब *शब्द* का उल्लेख करते है।

उसकी आत्मा

जिस प्रकार प्रभु परमेश्वर अपने वचन का एक विशिष्ट, व्यक्तिगत तरीके से वर्णन करता है, उसी प्रकार उसकी आत्मा का वर्णन भी समान रूप से व्यक्तिगत है।

*"जब तू **अपना आत्मा** भेजता है, तब वे उत्पन्न किए जाते हैं; **तू** धरती की सतह को नया करता है।"* (भजन संहिता 104:30)

*"**उसके सांस से** आकाश-मण्डल साफ हो जाता है.... ।"* (अय्यूब 26:13)

*"**तेरे आत्मा** से अलग हो मैं कहां जाऊंगा?*
*मैं **तेरी उपस्थिति** से कहां भाग सकूँगा?"* (भजन संहिता 139:7)

*"**पवित्र आत्मा.....तुम्हे** सब बातें **सिखाएगा**.... ।"* (यूहन्ना 14:26)

जैसे शब्द है (जिसने सृष्टि को कहा), उसी प्रकार पवित्र आत्मा (जिसने शब्द के आदेश को पूरा किया)

परमेश्वर के साथ पूर्ण रूप से एक है।

परमेश्वर महान है

बहुत से एकेश्वरवादियों को राजा दाऊद की बहुत सी अभिलिखित प्रार्थनाओं में से इस उद्धरण से सहमत होने में कोई कठिनाई नहीं हैं : *"इसलिए हे प्रभु, हे स्वामी, तू महान है! तेरे समान और कोई ईश्वर नहीं है। तेरे अतिरिक्त और कोई परमेश्वर नहीं है। यह हमने स्वयं अपने कानों से सुना हैं।"* (2 शमूएल 7:22)

फिर भी बहुत से ऐसे हैं जो शीघ्रता से पुष्टि करते हैं "परमेश्वर महान है! परमेश्वर परमेश्वर है, उसके जैसा कोई नहीं है!" समान रूप से परमेश्वर के अपने बहुवचन लेकिन एकवचन स्वभाव के प्रकटीकरण को अस्वीकार करने के लिया समान रूप से तत्पर हैं।

क्योंकि "उसके जैसा और कोई नहीं है," क्या हम आश्चर्य में पड़े अगर हम जो स्वाभाविक रीतिसे कल्पना करते है उससे महान और अधिक जटिल है इस तरह सर्वशक्तिमान स्वयं को प्रकट करता है? परमेश्वर हमसे आग्रह करता है कि उसके विषय में सही विचारों पर चिंतन करे।

> *"...तूने सोचा कि मैं तेरे जैसा हूं। पर अब मैं तेरी भर्त्सना करता हूं.... ।"*
> (भजन संहिता 50:21)

परमेश्वर एक है

धर्मनिष्ठ यहूदी नियमित रूप से एक प्रार्थना दोहराते है जो इब्रानी में शेमा कहलाती है, जो कहती है : *"अदोनाय एलोहीयिनु, अदोनाय, **एखाद**,"* उसका अर्थ, *"हमारा प्रभु परमेश्वर, **एक ही** प्रभु है।"* *यह प्रार्थना तौरात से है : "ओ इस्राएल सुन! हमारा प्रभु [याव्हे] परमेश्वर, **एक** [एखाद] ही प्रभु है।"* (व्यवस्था विवरण 6:4)

परमेश्वर की एकता का वर्णन करने के लिए इब्री शब्द जो उपयोग किया है वह *एखाद* है। एक *संयुक्त एकता* का वर्णन करने के लिए इस शब्द का हमेशा उपयोग किया जाता है, जैसे अंगूर के गुच्छे। पवित्रशास्त्र में कहीं ओर, *एखाद* का अनुवाद *"इकाई"* किया गया है जो एक कप्तान और उसके सैनिकों को संबोधित करता है।[105] अगले अध्याय में, यह शब्द फिर से आएगा जब पहला मनुष्य और उसकी पत्नी *एखाद* हो जाते है, इसका अर्थ, *"**एक** देह"* (उत्पत्ति 2:24)। अन्य वचनों की ओर देखते हुए जिसमे इसी इब्री शब्द का उपयोग किया गया है यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर अपनी एकता का वर्णन करने के लिए जिस शब्द का उपयोग करता है, उसमें एक से

अधिक इकाई शामिल हो सकती है।

पुराने नियम में परमेश्वर की बहुवचन एकता की ओर इशारा करते हुए और उसकी पुष्टि करते हुए सैंकड़ों छंद हैं।[106] यहां एक उदाहरण है :

*"....आरंभ से ही **मैंने** तुमसे गुप्त रूप में कोई बात नहीं कही। ....अब **प्रभु परमेश्वर** ने **मुझे अपने आत्मा** के साथ भेजा है।"* (यशायाह 48:16)

यह "प्रभु परमेश्वर" कौन है?

"उसकी आत्मा" कौन है?

"मैं" कौन हैं जो शुरुआत से वहा था और "मैं" जो "प्रभु परमेश्वर और उसकी आत्मा" के साथ भेजा गया था?

इन प्रश्नों का स्पष्टता से उत्तर दिया जाएगा जब हम पवित्रशास्त्र के माध्यम से अपने तरीके से सोचते हैं।

त्रि-एकता जिस पर हम सहमत है

हमारा अंग्रेजी शब्द *एकता* जो लातिनी उनुस से आता है, जिसका अर्थ एक है। जबकि अधिकांश लोग परमेश्वर अवधारणा को एक शाश्वत त्रि-एकता एक रूप में अस्वीकार करते हैं, कुछ लोग तीन में-एक एकता को नकारने का साहस करते हैं जो हमारे दैनिक जीवन को भरते हैं।

उदाहरण के लिए, **समय** अपने भूत, वर्तमान और भविष्य के साथ एक प्रकार की त्रि-एकता बनाता है।

***अंतराल** में ऊँचाई, लंबाई और चौड़ाई समाविष्ट है।*
***एक मनुष्य** आत्मा, प्राण और शरीर से बना है।*
***एक पुरुष** यह पिता, पुत्र और पति हो सकता है।*

सूर्य भी एक त्रि-एकता है। भले ही पृथ्वी का केवल एक ही सूर्य है, फिर भी हम खगोलीय पिण्ड को हम **सूर्य** कहते है, उसका प्रकाश **सूर्य** है, और उसकी उर्जा **सूर्य** है।

क्या यह फिर तीन सूर्य है? नहीं। सूर्य तीन नहीं, लेकिन एक है। सूर्य एक और एक त्रि-एकता है इसमें कोई विरोधाभास नहीं। उसी प्रकार से परमेश्वर के साथ भी है। जैसे सूर्य की प्रकाश और उर्जा सूर्य से निकलती है, उसी प्रकार से परमेश्वर का शब्द और परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर से आता हैं। फिर भी वे एक है, जिस तरह सूर्य भी एक है।

अवश्य ही, पृथ्वी के सभी उदाहरण एक सत्य परमेश्वर की जटिलता को पूरी तरह से स्पष्ट करने में कम पड़ेंगे। सूर्य के विपरीत, वह प्रेमी, वैयक्तिक, समझा जानेवाला जीव है। इसके बावजूद, इस तरह से दृष्टांतों को हमें आम जमीन पर ले जाना चाहिए क्योंकि सभी इस बात से सहमत हैं कि सृष्टि में त्रि-एकता मौजूद है और अधिकांश सहमत हैं कि निर्माता अपनी रचना से परे है।

"....क्योंकि परिवार की अपेक्षा परिवार को बनाने वाला अधिक सम्माननीय होता है। प्रत्येक परिवार का कोई न कोई बनाने वाला होता है, लेकिन परमेश्वर सब का बनाने वाला है।" (इब्रानियों 3:3-4)

यदि परमेश्वर की सृष्टि जटिल एकता से भरी है, तो क्या हमें इससे आश्चर्यचकित होना चाहिए कि परमेश्वर स्वयं ही एक जटिल एकता है? अगर, हमारे सभी वैज्ञानिक ज्ञान के साथ, हम जगत को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं कर सकते जिसमे हम जीवित रहते हैं, तो एक जिसने इसे बनाया है उसके विषय में हम कितना कम स्पष्ट कर सकते हैं?

परमेश्वर परमेश्वर है।

*"**क्या तुम परमेश्वर के गूढ़ रहस्य का पता लगा सकते हो? क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की असीमता मालूम कर सकते हो?** परमेश्वर की बुद्धि आकाश से ऊँची है, **तुम क्या कर सकते हो?** वह अधोलोक से अधिक गहरी है, **तुम क्या यह समझ सकते हो?** उसकी माप पृथ्वी से भी लम्बी है, वह समुद्र से अधिक चौड़ी है।"*(अय्यूब 11:7-9)

यह है कि जब हम *"परमेश्वर की रहस्यता"* की जांच करते है तो हम उसके शास्वत स्वभाव के सबसे अद्भुत गुणों में से एक की खोज और अनुभव कर सकने में सौभाग्यशाली होंगे:

"परमेश्वर प्रेम है।" (1 यूहन्ना 4:8)

परमेश्वर ने किससे प्रेम किया?

परमेश्वर का प्रेम एक अतुलनीय गहरा स्नेह है जो उसके पिता-हृदय से प्रवाहित होता है और व्यवहारिक मार्गों में स्वयं व्यक्त होता है।[107] क्योंकि परमेश्वर प्रेम **है**, उसका प्रेम प्राप्त करनेवाले की प्रेमयोग्यता पर निर्भर नहीं है।

"देखो, पिता ने हमसे कितना महान प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और वास्तव में हम उसकी सन्तान हैं!" (1 यूहन्ना 3:1)

यहां सोचनेवाली बात है। प्रेम को प्राप्तकर्ता की आवश्यकता होती है। मैं केवल यह नहीं कहता, "मैं प्रेम करता हूं।" लेकिन मैं यह कह सकता हूं, "मैं मेरी पत्नी से प्रेम करता हूं, मैं मेरे बच्चों को प्रेम करता हूं, मैं मेरे पड़ोसियों को प्रेम करता हूं, और इत्यादि।"

प्रेम ध्येय चाहता है।

तो विशेष जीवों को अपने प्रेम की वस्तु बनने से पहले ***परमेश्वर ने किससे प्रेम किया***? क्या उसे स्वर्गदूतों और लोगों को बनाने की *ज़रूरत* थी? नहीं, हमारा सृष्टिकर्ता *आत्मनिर्भर* है। उसने आत्मिक जीवों और मनुष्य को इसलिए नहीं बनाया क्योंकि उसे उनकी आवश्यकता थी, बल्कि इसलिए कि वह उन्हें *चाहता* था। अंतर महत्वपूर्ण है।

जैसा कि हम पहले ही सीख चुके हैं : **परमेश्वर बोलता है।**

बोलना एक रिश्ते के संबंधो के संदर्भ में ही सार्थक तरीके से मौजूद हो सकता है। स्वर्गदूत और मनुष्य को बनाने से पहले उसने **किसके साथ बातचीत की**? उसके शब्दों को समझने के लिए कोई हो इसलिए उसे अन्य जीवों को बनाने की आवश्यकता है क्या? नहीं, परमेश्वर की सभी "आवश्यकताएं" स्वयं के भीतर है। उसे कुछ नहीं चाहिए। परमेश्वर आत्मनिर्भर और आत्मसंतुष्ट है। फिर भी यह उसके स्वभाव का हिस्सा है कि वह बोलना और बोलना चाहता है, प्रेम करना और प्रेम पाना चाहता है।

यह हमें एक और सत्य की ओर ले जाता है : ***परमेश्वर संबंधपरक है***।

प्रेम और बातचीत एक संबंध के संदर्भ में ही सार्थक तरीके से मौजूद हो सकते हैं। अन्य जानवरों को बनाने से पहले परमेश्वर ने ***किसके साथ संबंध का आनंद लिया?***

उत्तर परमेश्वर की जटिल एकता में सन्निहित है।

अनंतकाल में, उसने स्वर्गदूत या पुरुष बनाने से पहले, हमारे संबंधपरक परमेश्वर ने अपने भीतर प्रेम और संचार के एक संतोषजनक और घनिष्ट संबंध का आनंद लिया- अपने व्यक्तिगत वचन और व्यक्तिगत आत्मा के साथ।

परतों को हटाना

परमेश्वर के बहुवचन, पारस्परिक स्वभाव के बारे में ऐसे गहरे विचारों के जवाब में, एक ई-मेल संवाददाता ने लिखा :

> **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> परमेश्वर ने वह एक और केवल एक ही है यह हमें बताने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को भेजा। तो फिर आप उसका शब्द सुनते और स्वीकार क्यों नहीं करते? आपको प्रत्येक परत को हटाने की और उन्हें एक एक करके पहचान करने की क्या आवश्यकता है जब आप उन्हें सरल रीतिसे केवल एक कर सकते है?

हालांकि यह सत्य है कि हमारे अनंत निर्माता के बारे में जो कुछ भी जानने के लिए है उन सभी को समझने में हम कभी भी समर्थ नहीं होंगे, तो परमेश्वर ने स्वयं के विषय में उसके भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में जो प्रकट किया है उसे समझने में हमें ध्यान नहीं देना चाहिए क्या? अगर हमें परमेश्वर के विषय में केवल कुछ जानने का विचार है, तो हमें उसके विषय में सही ढंग से विचार करना चाहिए।

हम में से बहुत से लोग सहमत होते है कि परमेश्वर एक है। लेकिन इस एक परमेश्वर ने अपने स्वयं के विषय में क्या प्रकट किया है? पवित्रशास्त्र में हम उसके विषय में क्या खोज सकते है जब हम "प्रत्येक परत को हटाते जाते है"?

परमेश्वर जो वैयक्तिक, समझा जाने वाला और विश्वासयोग्य हैं उससे हमारा सामना होता है जो उसके शब्द और आत्मा के साथ एक है।

उसके असीमित महानता में, परमेश्वर ने स्वयं को **पिता**, उसके शब्द को **पुत्र**, और उसकी आत्मा **पवित्र आत्मा** के रूप में पहचान करायी है। एक सच्चे परमेश्वर के भीतर ये तीन व्यक्तिगत भेद हैं।

आइए कुछ वचनों को देखे जो इस सच्चाई को "पीछे हटाते" है।

परमेश्वर का पुत्र

पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि वही शब्द जो आदि में परमेश्वर के साथ था उसे परमेश्वर का एकलौता पुत्र भी कहा गया है।

> *"आदि में वचन था; वचन **परमेश्वर के साथ** था और वचन **परमेश्वर था** I.....परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, **पर एकलौते-पुत्र ने जो स्वयं परमेश्वर है, और जो पिता की गोद में है,** उसको प्रकट किया है I.......जो मनुष्य उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं; लेकिन जो मनुष्य उस पर विश्वास नहीं करता, उस पर दंड की*

आज्ञा हो चुकी है, क्योंकि उसने ***परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर*** *विश्वास नहीं किया।"*
(यूहन्ना 1:1, 18; 3:18)

सेनेगल में, लोग "अस्ताघफरुल्लाह" बडबडाते हुए "परमेश्वर का पुत्र" इस परिभाषा पर कभी कभी प्रतिक्रिया देते रहते हैं! यह अरबी सूत्र एक कल्पना लिए हुए है : "ऐसा होवे की ऐसी निंदा के लिए परमेश्वर आपको क्षमा करे!" (ईश-निंदा को "परमेश्वर का मज़ाक करने" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।) किसी अवसर पर, मैंने उनकी फटकार का जवाब उन्हीं की एक कहावत से दिया दिया है: *"एक चरवाहे को उसके मुंह पर आप तमाचा मारने से पहले, आपको यह पता लगाना चाहिए कि वह किस विषय में सीटी बजा रहा है।"* वे हंसते है और फिर मैं उन्हें कहता हूं, "परमेश्वर का पुत्र" इस अभिव्यक्ति को आप अस्वीकार करने से पहले, आपको यह पता लगाना चाहिए कि परमेश्वर ने इसके विषय में क्या कहा है।"

पवित्रशास्त्र में सैंकड़ों से भी अधिक वचन है जो सीधे परमेश्वर के "पुत्र" को संबोधित करते है, फिर भी इन में से कोई भी वचन "एक परमेश्वर से अधिक" है ऐसा सूचित नहीं करते, न ही वे ऐसा सुझाव देते है कि परमेश्वर ने "एक पत्नी ली और उसका एक पुत्र हुआ," जैसा की कुछ लोग इस शब्द की व्याख्या करना चुनते हैं। ऐसे विचार न ही केवल निन्दात्मक है; यह पवित्रशास्त्र की उथली समझ को भी प्रकट करते हैं।[108]

परमेश्वर हमें आमंत्रित करता है कि उसके विचारों को समझे।

"पृथ्वी से जितना ***दूर*** *आकाश है, उतने ही* ***दूर*** *मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं, उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं।"* (यशायाह 55:9)

बहुत वर्षों पहले सेनेगल का एक प्रसिद्द व्यवसायिक मनुष्य एक मोटर गाड़ी की दुर्घटना में मारा गया। सेनेगल के राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने यह सूचित किया कि इस मनुष्य के दो हजार कर्मचारी "उसके अपने बच्चों के समान" थे, और "सेनेगल का एक महान पुत्र" ऐसे उसकी बढ़ाई की।[109] क्या ये शब्द सूचित करते है कि सेनेगल राष्ट्र का एक स्त्री के साथ संबंध था और उससे एक पुत्र को उत्पन्न किया था? अवश्य ही नहीं! सेनेगल के लोगों को इस उपाधि से एक प्रिय नागरिक का सम्मान करने में कोई समस्या नहीं है। "सेनेगल का पुत्र" अभिव्यक्ति का अर्थ क्या है वे समझते थे। उन्हें यह भी पता था की इसका अर्थ क्या नहीं है।

पुत्र शब्द का प्रयोग कई अर्थो में किया जाता हैं। जब कुरान और अरब लोग मुसाफिरों को "रास्ते का पुत्र" कहकर संबोधित करते है (इब्न अल-साबिल [सूरा 2:177, 215), हमें पता है उनके

कहने का क्या अर्थ है। जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर उसके शब्द और उसके पुत्र का संदर्भ देता है, हमें पता होना चाहिए कि उसके कहने का अर्थ भी क्या है।

हमारा सृष्टिकर्ता जिन उपाधियों और शब्दों को महत्त्व देता है हम उनका मज़ाक ना उडाए।

*"प्राचीनकाल में **परमेश्वर** हमारे पूर्वजों से थोडा-थोडा तथा अनेक प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बातें कर, इन अंतिम युग में हम से **अपने पुत्र के माध्यम से बातें की**, जिसको उसने सब का उत्तराधिकारी बनाया है और जिसके द्वारा उसने सृष्टि की रचना की है। पुत्र परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिम्बित करता है। वह परमतत्व का प्रतिरूप है, अपने समर्थ **शब्द** से सृष्टि को धारण किए हुए है। ....."* (इब्रानियों 1:1-3)

परमेश्वर चाहता है कि हम जाने कि *"उसने अपने **पुत्र द्वारा** हमसे बातें"* की है। वह यह भी चाहता है कि हम समझे कि *उसका पुत्र यह शब्द है* जिसके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी पर की सभी चीजें सृजी गई और कायम हैं। बाइबल के अरबी अनुवाद में, पुत्र के लिए उपाधि *"परमेश्वर का शब्द"* का अनुवाद *"कलीमात अल्लाह"*, किया है, एक उपाधि जो बाइबल और कुरान दोनों मसीहा को बताते हैं। आगे हमारी यात्रा में, हम इसे बारीकी से देखेंगे।

परमेश्वर का आत्मा

परमेश्वर उसका शब्द-पुत्र के साथ जब एक है, उसी प्रकार वह उसके पवित्र आत्मा के साथ एक है।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा संसार की रचना करने और परमेश्वर के लिखित वचन को प्रेरित करने में शामिल था। बाइबल का दूसरा वाक्यांश घोषित करता है कि जब परमेश्वर ने संसार की रचना की, *"**परमेश्वर का आत्मा** जल की सतह पर मंडराता था।"* और बाद में पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है: *"क्योंकि नबूवत मानवी इच्छा से मुखरित नहीं हुई; बल्कि मनुष्य, **पवित्र आत्मा** से प्रेरणा प्राप्त कर परमेश्वर की ओर से बोले हैं।"* (2 पतरस 1:21)

कुछ लोग सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा स्वर्गदूत जिब्राएल है। अन्य लोगों ने अपने आपको यह विश्वास दिलाया कि परमेश्वर का आत्मा एक भविष्यद्वक्ता है। ऐसे निष्कर्ष भविष्यद्वक्ताओं के पवित्रशास्त्र से नहीं आते। स्वर्गदूत और मनुष्य ये निर्मित जीव हैं। पवित्र आत्मा अनिर्मित, *"सनातन आत्मा"* है। (इब्रानियों 9:14)[110]

पवित्र आत्मा *"सत्य का आत्मा"* है (यूहन्ना 14:17), जिसके द्वारा परमेश्वर जगत में उसके उद्देश्य पूरा करता हैं। वह *"मददगार"* है (यूहन्ना 14:16) जो परमेश्वर को निकटता और अनुभवात्मक

तरीके से उन सभी लोगों पर प्रकट करता हैं जो परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करते हैं। आज पृथ्वी पर बहुत सारे लोग *परमेश्वर को जाने बगैर* परमेश्वर के विषय में जानते हैं। ऐसा ज्ञान परमेश्वर या मनुष्य को संतुष्ट नहीं कर सकता। यह पवित्र आत्मा है जो लोगों के लिए यह संभव करता है कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध का आनंद ले। बाद में, हम परमेश्वर के अद्भुत पवित्र आत्मा के विषय में अधिक सीखेंगे।[111]

यात्रा कैसे चल रही है? थोड़ा जबरदस्त? इन विचारों को समझना इतना आसान नहीं है। कुछ लोग दावा करते हैं कि उनका धर्म और परमेश्वर की व्याख्या सही होना चाहिए "क्योंकि यह इतना सरल" है। परमेश्वर की उनकी व्याख्या शायद सीधी-सादी हो, लेकिन परमेश्वर सीधा-सादा नहीं है।

> *"प्रभु यह कहता है : मेरे विचार तुम्हारे विचारों के समान नहीं हैं, और न तुम्हारे मार्ग मेरे मार्गों के सदृश हैं।"* (यशायाह 55:8)

सदैव एक

पवित्रशास्त्र स्पष्ट हैं। संपूर्ण अनंतकाल में ऐसा समय कभी नहीं था जब पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अस्तित्व में नहीं थे।[112] वे हमेशा ही एक थे। मानव इतिहास के संदर्भ में, पवित्रशास्त्र पिता को प्रकट करता है जो स्वर्ग से कहता है, पुत्र वह है जिसने पृथ्वी पर कहा था और पवित्र आत्मा वह है जो दिल से कहता है।[113] प्रत्येक उसकी भूमिका में विशिष्ट है, फिर भी वे एक है।

यह ऐसा है जब लोग परमेश्वर के स्वयं के प्रकटीकरण के ज्ञान में बढ़ते है तब वे उस एक की भरपूरी में हर्षित होने लगते हैं जो प्रेम है और जो उसका असीम प्रेम व्यवहारिक तरीकों से दिखाता हैं।

प्रेम एक रिश्ते के संबंधो के संदर्भ में ही सार्थक तरीके से मौजूद हो सकता है। पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा ने हमेशा पूर्ण प्रेम और एकता के संवादात्मक संबंध का आनंद लिया है। पवित्रशास्त्र में कही ओर, हम पुत्र को यह कहते सुनते है, *"मैं पिता से **प्रेम** करता"* हूं और *"पिता पुत्र पर **प्रेम** करता है।"* पवित्रशास्त्र यह भी घोषित करता है *"आत्मा का फल **प्रेम** है।"* (यूहन्ना 5:20; 14:31; गलातियों 5:22)

मानवी संबंधों का सर्वोत्तम यह, जैसे एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच की एकता, या पिता, मां और बच्चे के बीच का संबंध, *परमेश्वर कौन है* उससे प्रवाहित होता है। पृथ्वी पर इस प्रकार के संबंध, अपने सबसे अच्छे रूप में, वे केवल परमेश्वर के अचंभित करनेवाली एकता और प्रेम का धुधला प्रतिबिंब हैं। हमारा सृष्टिकर्ता यह जो सब कुछ अच्छा है उसका मूल स्त्रोत, नमूना

और उद्देश्य है।

*"परमेश्वर **प्रेम** है।"* (1 यूहन्ना 4:8)

"परमेश्वर प्रेम है" इसके विषय में सबसे उत्तम भाग यह है कि वह आपको और मुझे आमंत्रित करता है कि उसके साथ हमेशा के लिए एक घनिष्ठ संबंध का आनंद ले! वह बस हमारा भरोसा चाहता है, भले ही उसे पूरी तरह से समझाया नहीं जा सकता।

परमेश्वर विश्वासयोग्य है

सृष्टि निर्माण के छः दिनों से परमेश्वर के विषय में हमने क्या निरिक्षण किया है उस पर विचार करे। यह गणितीय समीकरण दिखता है :

    दिन 1: परमेश्वर पवित्र है
+   दिन 2: परमेश्वर सर्वशक्तिमान है
+   दिन 3: परमेश्वर भला है
+   दिन 4: परमेश्वर विश्वसनीय है
+   दिन 5: परमेश्वर जीवन है
+   दिन 6: परमेश्वर प्रेम है
=   विश्वासयोग्य परमेश्वर

क्या यह अजब नहीं है कि हम उन लोगों पर विश्वास करने में शीघ्रता करते हैं जो इन गुणों में कम पड़ते हैं, फिर भी हम विश्वास रखने में अनिच्छुक रहते है उस एकमात्र पर जो इन गुणों को पूर्णता में प्रदर्शित करता है?

जब मैं पत्र को पत्रपेटी में डालता हूं, मैं डाक सेवा पर विश्वास रखता हूं कि उस पत्र को ठीक जगह पहुंचाएगी। तो विश्व का सृष्टिकर्ता-पालनहार पर मुझे कितना अधिक विश्वास रखना चाहिए कि उसके अभिवचनों को वह पूरा करे!

*यदि हम मनुष्यों की साक्षी मान लेते हैं तो **परमेश्वर की साक्षी उससे कहीं बड़ी है।** ....। जो व्यक्ति परमेश्वर पर विश्वास नहीं करता, वह उसे झूठा समझता है; क्योंकि उस व्यक्ति ने उस साक्षी पर विश्वास नहीं किया जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।"* (1 यूहन्ना 5:9-10)

परमेश्वर का वैयक्तिक नाम

परमेश्वर चाहता है कि हम उसे जाने, उस पर विश्वास करे और उसके नाम को पुकारे।

*"प्रभु, **तेरे नाम को जानने वाले तुझ पर भरोसा करते** हैं; क्योंकि **तू** उन लोगों को नहीं छोड़ता है, जो तुझको खोजते हैं।"* (भजन संहिता 9:10)

बहुत सारे लोग सोचते है कि परमेश्वर का नाम सरल रूप से परमेश्वर है-या एलोहीम (इब्रानी) या अल्लाह (अरबी[114]) या अलाहा (अरामी) या दिऊ (फ्रेंच) या डिओस (स्पैनिश) या गोट (जर्मन) या जो भाषा वे बोलते हैं उसके अनुसार शब्द का उपयोग करते हैं।

निस्संदेह, परमेश्वर परमेश्वर है (परमात्मा), लेकिन परमेश्वर क्या उसका नाम है? मेरा कहना यह उस समान नहीं होगा कि मेरा नाम मानव है? मैं एक मानव हूं, लेकिन मेरा एक वैयक्तिक नाम भी है। परमेश्वर परमेश्वर है, लेकिन उसके भी कई नाम है जिसके द्वारा उसने स्वयं को प्रकट किया है और जिसके द्वारा वह हमें आमंत्रित करता हैं कि हम उसे संबोधित करे।

बहुत सारे कल्पना करते हैं कि परमेश्वर गुरुत्वाकर्षण और पवन समान किसी प्रकार की शक्ति का अज्ञात स्रोत है या विज्ञान कल्पित कथा सिनेमा के लोकप्रिय शृंखला में चित्रित "शक्ति" समान है। यह परमेश्वर की बाइबल अवधारणा नहीं है।

परमेश्वर परम व्यक्तित्व है जो चाहता है कि आप उसे व्यक्तिगत रूप से जाने।

परमेश्वर की कल्पना ही केवल पवित्र शास्त्र का एक व्यक्तित्व नहीं है, यह तर्कसंगत है। मनुष्य केवल विश्व के उर्जा के गोले नहीं हैं, और न ही वह जिसने सब कुछ बनाया है। वह एक व्यक्तिगत नाम के साथ एक व्यक्तिगत जीव है।

परमेश्वर का प्राथमिक नाम उत्पत्ति के दूसरे अध्याय में प्रथम प्रकट किया है।

*"आकाश और पृथ्वी की रचना का यही विवरण है। **प्रभु** परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश को बनाया।"* (उत्पत्ति 2:4)

क्या आप ने उस नाम पर ध्यान दिया जिससे परमेश्वर स्वयं को संबोधित करता है?

उसका नाम "प्रभु" है। कम से कम इसी तरह से वह हिंदी भाषा में अनुवादित किया गया है। हम धन्यवादी हो सकते हैं कि परमेश्वर सभी भाषाओं में सुवक्ता है और हमें यह आवश्यकता नहीं हैं कि उसे किसी एक विशेष भाषा में संबोधित करे। वह हमें आमंत्रित करता है कि हम उसे अपनी मातृभाषा में बोले, किसी भी समय, किसी भी स्थान में, कौनसी भी दिशा में, हमारे हृदय की भाषा में।

मैं हूं

इब्रानी भाषा में, परमेश्वर का प्राथमिक व्यक्तिगत नाम, "प्रभु", यह चार व्यंजनों के साथ लिखा जाता है: **वायएचडब्लूएच**। जब स्वर जोड़े जाते है, तब इसका उच्चारण याव्हे या यहोवा होता है। यह नाम इब्री क्रियापद "होना" इससे लिया गया है और अक्षरशः इसका अर्थ "**मैं हूं**" या "**वह है**।" यह हमें सिखाता हैं कि परमेश्वर स्वयंभू शास्वत है। परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम पुराने नियम में 6,500 से अधिक बार उपयोग किया गया है, परमेश्वर के अन्य किसी भी नाम से अधिक।

परमेश्वर ने क्या घोषणा की उसे सुने, जब मूसा, जिसका बहुदेववादी मिस्र देश में पालनपोषण किया गया था, उसने परमेश्वर से पूछा कि वह अपना नाम बताए।

> *"परमेश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं हू, जो मैं हूं। प्रभु ने फिर कहा,' इस्राएली समाज से यह कहना : **मैं हूं** ने मुझे तुम्हारे पास भेजा हैं।"* (निर्गमन 3:14)

केवल एक व्यक्तिगत जीव "मैं हूं" कह सकता है। परमेश्वर लोगों से यह चाहता है कि वे समझे कि वह परम व्यक्ति है। उसका नाम मैं हूं है।

वह वहीं एकमात्र है जो है।

भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल ये उसके लिए कुछ भी नहीं। उसका अस्तित्व समय और अंतराल से बढ़कर है।

वह आत्मनिर्भर है।

आपको और मुझे जीने के लिए हवा, जल, अन्न, नींद, आसरा, और अन्य घटकों की आवश्यकता होती हैं, लेकिन उसे किसी बात की आवश्यकता नहीं। यह वहीं एकमात्र है जो उसके स्वयं के सामर्थ्य से तर्क करता और अस्तित्व में है। वह महान मैं हूं है-प्रभु। (नोट: हिंदी बाइबल में, जब भी परमेश्वर नाम बड़े अक्षरों में दिखता है, मूल इब्रानी भाषा का शब्द वायएचडब्लूएच है, जिसका अर्थ है स्वयं-अस्तित्व शास्वत।)

परमेश्वर ने यह मनुष्य पर नहीं छोड़ा है कि उसकी व्याख्या करे।
वह स्वयं को परिभाषित करने वाला है।

सैंकड़ों नाम

उसके अनंत अस्तित्व में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में, प्रभु के सैंकड़ों नाम और उपाधियां हैं। परमेश्वर के नाम उसके व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करते हैं। प्रत्येक उपाधि का अभिप्रेत यह है कि परमेश्वर कौन है और वह किस समान है यह हमें ठीक समझने में सहायता करे। उदाहरण के लिए, उसे ऐसे संबोधित करते है :

आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता, जीवन का स्वामी, सर्वश्रेष्ठ, सच्ची ज्योति, पवित्र जन, धर्मी न्यायाधीश, प्रभु जो प्रदान करता है, प्रभु जो स्वस्थ करता है, प्रभु हमारी धर्मियता, प्रभु हमारी शांति, प्रभु मेरा चरवाहा, प्रेम और शांति परमेश्वर, सब कृपा का परमेश्वर, शास्वत उद्धार का लेखक, परमेश्वर जो निकट है....

हमारे सृष्टिकर्ता के विषय में हमारी वर्तमान समझ जो भी हो, हम में से प्रत्येक को नम्रता से यह स्वीकार लेना चाहिए कि वह परमेश्वर है और उसके समान और कोई नहीं है। भले ही उसे पूरी तरह से समझाया या समझा नहीं जा सकता, वह चाहता है कि हम उसका नाम जाने और उस पर विश्वास करे, उसे प्रेम करे और उसके साथ सदैव के लिए रहे। मन में यही उद्धेश्य था जो परमेश्वर ने सृष्टि निर्माण के छठवें दिन कहा :

"हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार, अपनी समानता में बनाएं .... ।" (उत्पत्ति 1:26)

ऐसा कहने का उसका अर्थ क्या था? दृश्य मनुष्य अदृश्य परमेश्वर के स्वरूप को कैसे धारण कर सकता है?

पाठ 10

एक विशेष रचना

दो अध्याय पहले हमने अब तक की सबसे बड़ी घोषणाओं में से एक पर विचार किया था : *"परमेश्वर ने आरंभ में आकाश और पृथ्वी को रचा।"* (उत्पत्ति 1:1) यहां पर और एक है :

> *"परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा।"* (उत्पत्ति 1:27)

परमेश्वर ने उसके सृष्टि का मुकुट होने के लिए मानव की रचना की।

परमेश्वर के स्वरूप में

> *"परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को **अपने स्वरूप** में, **अपने सदृश** बनाएं, और समुद्र के जलचरों, आकाश के पक्षियों, पालतू पशुओं, भूमि पर रेंगने वाले जन्तुओं और समस्त पृथ्वी पर मनुष्य का **अधिकार** हो।' **अंतः परमेश्वर ने अपने स्वरूप में मनुष्य को रचा। परमेश्वर के स्वरूप में उसने उन्हें नर और नारी बनाया।**"* (उत्पत्ति 1:26-27)

परमेश्वर मनुष्य को *"अपने स्वरूप के अनुसार"* बनाने का अर्थ यह नहीं है कि पहले मनुष्य हर तरह से परमेश्वर के समान थे। परमेश्वर के समान कोई नहीं। *"परमेश्वर ने मनुष्य को **अपने स्वरूप के अनुसार** बनाया"* इसका अर्थ यह है कि मानव परमेश्वर के स्वभाव में सहभागी है। मनुष्य की रचना की गई कि परमेश्वर के व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करे। परमेश्वर ने पहले पुरुष और स्त्री को गुणधर्म प्रदान किए हैं जो उन्हें उसके साथ एक सार्थक संबंध का आनंद लेने में अनुमति देगा।

परमेश्वर ने मानव को *बुद्धिमत्ता* से आशीषित किया है, उन्हें क्षमता दी हैं की बड़े प्रश्न पूछे, तर्कसंगत सोचे, और उनके सृष्टिकर्ता के विषय में गहन सत्य को समझे।

परमेश्वर ने उन्हें *भावनाओं* के साथ बनाया हैं ताकि वे भावनाएं जैसे आनंद और सहानुभूति का अनुभव कर सके।

उसने उन्हें *इच्छा* भी दी है, जिसमे स्वतंत्रता और जिम्मेदारी ये दोनों ही हैं कि अनंत परिणाम का चुनाव कर सके।

इसके आगे, उसने उन्हें बोलने की योग्यता के साथ संपन्न किया है- कि बोले, इशारा करे और गाएं। उसने उन्हें सक्षम भी किया है कि दीर्घकालीन योजनाएं बनाएं और अद्भुत रचनात्मक के साथ उन योजनाओं को पूरा करे। सबसे महत्वपूर्ण, उसने उन्हें *अनंत प्राण और आत्मा* के साथ जिम्मेदारी दी है ताकि वे उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के साथ शायद हमेशा आराधना कर सकें और आनंद उठा सकें।

परमेश्वर ने मानव को *स्वयं के लिए* बनाया। परमेश्वर जो *"प्रेम"* है (1 यूहन्ना 4:8) उसने पुरुष और स्त्री को बनाया, इस कारण से नहीं कि उसे उनकी *आवश्यकता थी*, बल्कि इसलिए कि वह *उन्हें चाहता था*। लोग उसके प्रेम के प्राप्तकर्ता और प्रतिबिंब बनेंगे।

मानवी शरीर

हालांकि उत्पत्ति का पहिला अध्याय इस बात का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करता है कि कैसे परमेश्वर ने संसार की रचना की , तो दूसरा अध्याय विवरण भरता है, विशेष रूप से मनुष्य के निर्माण के संबंध में।

> *"तब प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से गढ़ा तथा उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका। मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।"* (उत्पत्ति 2:7)

भले ही *प्रभु* ने आकाश और पृथ्वी को शून्य से रचना की, उसने पहले मनुष्य को मिट्टी से बनाना चुना। वर्तमान दिन के जीवविज्ञानी इस वास्तविकता को मानते है: "उस तरीके से, कि शरीर करीबन अप्रभावी दिखे। सामान्यस्थान के कुछ बीस घटक जिन्होंने इसे निर्मित किया है वे सब पृथ्वी के रुखी मिट्टी में उपस्थित है।"[115]

हालांकि मानव शरीर ऐसे ही निम्न तत्वों से बना है, यह लगभग पचहत्तर ट्रिलियन (75,000,000,000,000) जीवित कोशिकाओं के साथ एक साथ रखी गई शिल्पकौशल का एक चमत्कारिक नमूना है, प्रत्येक को एक विशेष भूमिका निभानी है।

कोशिका जीवन का एक आधारभूत इकांक है। एक कोशिका इतनी छोटी होती है कि वह केवल एक शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी के भीतर से ही दिखाई देती है, फिर भी यह लाखों कार्यकारी

भागों से भरी हुई है। प्रत्येक कोशिकाओं में डीएनए के दो मीटर लंबे (छः फुट) सूक्ष्म रूप से मुड़ी हुई लडियां, व्यक्ति के मूलभूत गुणों के लिए अनुवांशिक संकेतावली है।

बील गेट्स, कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर लोकप्रिय गुरु, ने स्पष्ट किया, "मानवी डीएनए एक कम्प्यूटर प्रोग्राम की तरह है लेकिन अब तक बनाए गए किसी भी सॉफ्टवेयर की तुलना में कही अधिक उन्नत है।"[116] मानव शरीर में कम से कम 200 विभिन्न प्रकार की कोशिकाएं होती हैं। कुछ द्रव जैसे लहू बनाते हैं; अन्य नाजुक मांस-तंतु और अवयव बनाते हैं, जबकि अभी भी अन्य कठोर हड्डीयां बनाने के लिए एकजुट होते हैं, कुछ कोशिकाएं शरीर के अंगों को आपस में बांधती हैं, जबकि अन्य शरीर के कार्यों को व्यवस्थित करते हैं, जैसे कि पाचन और प्रजनन प्रणाली।[117]

शरीर की रचना और कार्यकारी भागों के बारे में सोचो: ढांचा उसके 206 हड्डियों के साथ अस्थिरज्जु, पट्ठे, स्नायु, त्वचा और बाल के साथ एकसाथ बंधे और सजाएं होते हैं; या नसों के साथ परिसंचारी प्रणाली, लहूवाहिनी और लहू, स्वयं जीवन के सामग्रियों का परिवहन करते हैं। फिर आंतें, पेट, कलेजा और गुर्दे भी हैं। फिर जटिल रूप से वायर्ड तंत्रिका-तंत्र प्रणाली भी हैं जो आपके मस्तिष्क से जुड़ी हुई है। और विश्वसनीय पम्प जिसे ह्दय कहते है, या जो परमेश्वर ने आपको आँखे, कान, नाक, मुंह और जबान, जो स्वर-रज्जु, स्वाद-कलिका और दांतों के साथ प्रदान किए हैं इन्हें ने भूले। वे पैर और हाथ निश्चय ही उपयोगी हैं! और आप ने परमेश्वर को आपको अंगूठा प्रदान करने के लिए कभी धन्यवाद दिया है क्या? झाड़ू या हथोडी उसके बगैर उपयोग करने का प्रयास करो! ये नाख़ून भी बहुत काम आते हैं....

इसमे आश्चर्य नहीं कि दाऊद भविष्यद्वक्ता ने लिखा,

> *"मैं तेरी सराहना करता हूं, क्योंकि तू भय योग्य और अद्भुत है। तेरे कार्य कितने आश्चर्यपूर्ण हैं! तू मुझे भली भांति जानता है।"* (भजन संहिता 139:14)

प्राण और आत्मा

मानवी शरीर जितना अद्भुत है, वह शरीर नहीं जो मनुष्य को इतना खांस बनाता है। प्राणी, पक्षी और मछली इन्हें भी अद्भुत शरीर हैं। मनुष्य की विशिष्टता उसके *मानवी प्राण और अनंत आत्मा* में पाया जाती है। प्राण और आत्मा है जो पहले पुरुष और स्त्री को *"परमेश्वर के स्वरूप में"* बनाए गए विशेष जीव के रूप में अलग करता है।

इस प्रकार, एक बार जब परमेश्वर ने मनुष्य का शरीर मिट्टी से बनाना समाप्त किया, उसने *"उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका; और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया"* (उत्पत्ति 2:7)।

शरीर जो परमेश्वर ने आदम के लिए बनाया वह केवल एक घर या तंबू था, जिसमे परमेश्वर ने आदम के अनंत आत्मा और प्राण को रखा था।

परमेश्वर ने मनुष्य को एक शरीर दिया ताकि वह उसके चारो ओर के जगत के बारे में अवगत रह सके, एक प्राण ताकि मनुष्य उसके आतंरिक स्वयं से अवगत रह सके और एक आत्मा ताकि मनुष्य परमेश्वर से अवगत रह सके।

शरीर प्राण के द्वारा शासित होना था, प्राण आत्मा के द्वारा शासित होना था, और आत्मा स्वयं परमेश्वर द्वारा शासित होना था।[118]

> *"परमेश्वर आत्मा है; और यह आवश्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे।"* (यूहन्ना 4:24)

एक उद्देश्य के लिए बनाया गया

सर्वश्रेष्ठ शिल्पकार ने मनुष्य को बनाया ताकि एक प्रकार का त्रि-एकता हो, जो *"आत्मा, प्राण और शरीर"* को जोड़े (1 थिस्सलुनीके. 5:23) और मनुष्य के लिए अपने सृष्टिकर्ता के साथ एक घनिष्ठ मित्रता का आनंद लेना संभव बनाता है। परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन दिया और अब यह मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य होगा कि उसके सृष्टिकर्ता-स्वामी के हर्ष और स्तुति के लिए जीवन व्यतीत करे।

> *"ये सब **मेरे नाम से** आराधना करते हैं, इनको मैंने **अपनी महिमा के लिए** रचा है,....जिनको **मैंने अपने लिए** रचा है, ताकि वे **मेरी स्तुति** सर्वत्र घोषित करे।"* (यशायाह 43:7, 21)

मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिए बनाए गए थे।

पृथ्वी मानवजाति के लिए बनाई गई थी, लेकिन मानवजाति परमेश्वर के लिए बनाई गई थी। सृष्टिकर्ता का अभिप्राय था कि पहले मनुष्य उसे जान सकें, उसका आनंद उठा सकें और उससे सदा के लिए प्रेम कर सकें। आपके और मेरे लिए भी उसका यही अभिप्राय है।

> *"तू अपने परमेश्वर को अपने संपूर्ण **हृदय**, संपूर्ण **प्राण**, संपूर्ण **बुद्धि** और संपूर्ण **शक्ति** से प्रेम कर।"* (मरकुस 12:30)

एक सिद्ध वातावरण

परमेश्वर ने आदम को बनाने के बाद, उसने योजना की और एक हरी-भरी वाटिका लगाई

जिसे अदन कहते है।

> *"प्रभु परमेश्वर ने पूर्व दिशा में अदन में एक वाटिका लगाई, और वहां मनुष्य को, जिसे उसने गढ़ा था, नियुक्त किया। प्रभु परमेश्वर ने समस्त वृक्षों को, जो देखने में सुन्दर थे, और आहार के लिए उत्तम हैं, भूमि से उगाए। उसने वाटिका के मध्य में जीवन का वृक्ष तथा भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष उगाया। एक सरिता वाटिका को सींचने के लिए अदन से निकली और वहां विभाजित होकर चार नदियों में परिवर्तित हो गई।"* (उत्पत्ति 2:8-10)

अदन, शायद उस भूमि में स्थित थी जो आज इराक नाम से पहचानी जाती है[119], वह अंतहीन आनंद का एक विशाल वाटिका थी, जो अद्भुत दृश्य, आवाजे और सुगंधों से भरी थी। एक चमकदार नदी उस वाटिका को सींचती थी। उसके किनारे स्वादिष्ट फलों के झाड़ों की कतारें थी। वहां पर चखने के लिए अनगिनत विविधताओं के फल थे, मधुर-सुगंध देनेवाले फूलों की प्रशंसा की जाती थी, ऊँचे पेड़ और हरे-भरे चरागाह जिस पर नजर टिकी रहती थी, पशु, पक्षी और कीटक जिनका अध्ययन किया जा सकता था, रहस्यमय जंगल का पता लगाया जा सकता था, सोना और बहुमूल्य पत्थर जिनकी खोज हो सकती थी। वास्तव में, परमेश्वर ने आदम को *"विपुलता में सभी चीजों का आनंद"* प्रदान किया था। (1 तीमुथियुस 6:17)

परमेश्वर ने वाटिका के बीच में दो विशेष पेड़ों को भी लगाया था: जीवन का पेड़ और भले-बुरे के ज्ञान का पेड़।

अदन का अर्थ हर्ष। परमेश्वर ने इस अद्भुत घर को मनुष्य के आनंद के लिए बनाया था, लेकिन सभी सुखों में सबसे बड़ा सुख मनुष्य के लिए अपने सृष्टिकर्ता के साथ संगति का आनंद लेना होगा।

परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना और उसके साथ हो लेना इससे कुछ भी अधिक अद्भुत नहीं है। *"...**तेरी उपस्थिति** परमानन्द हैं; **तेरे दाहिने हाथ में** सदा-सर्वदा स्वर्ग-सुख है।"* (भजन संहिता 16:11)

एक समाधान देनेवाला नियत कार्य

उद्यान जैसेही तैयार हो गया, प्रभु ने उसमे मनुष्य को रखा। परमेश्वर ने आदम को पूछा नहीं कि उसे वहां रहना है या नहीं। परमेश्वर यह मनुष्य का सृष्टिकर्ता था और इसलिए मनुष्य का स्वामी। परमेश्वर जानता है कि मानव जाति के लिए सबसे अच्छा क्या है और वह जो करता है उसके लिए उसे किसी को उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है।

"प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को लेकर अदन की वाटिका में नियुक्त किया कि वह उसमें काम करे और उसकी रखवाली करे।" (उत्पत्ति 2:15)

परमेश्वर ने उसके इस नए घर में आदम को दो जिम्मेदारियां दी।

पहली, उसने वाटिका में "*काम*" करना है, लेकिन पसीना, मेहनत और थकावट के बगैर। यह पूर्ण रूप से आनंदमय नियत कार्य होगा, क्योंकि सब कुछ अच्छा था। वहां पर कोई कांटे नहीं थे कि चुभे और जंगली घास नहीं थी कि उसे उखाड़ना पड़े।

दूसरी, आदम को जिम्मेदारी दी गई थी कि "*उसकी रखवाली*" करे। क्या यह आखरी वाक्यांश इशारा करता है कि विश्व में कुछ अनिष्टार्थी, जोखिमभरे घटक घात में बैठे हैं।

उस प्रश्न को जल्द ही पर्याप्त रूप से उत्तरित किया जाएगा।

एक सीधा-सादा नियम

क्योंकि मनुष्य एक व्यक्ति है और एक कठपुतली नहीं, परमेश्वर ने आदम को आज्ञापालन के लिए एक सीधा-सादा नियम भी दिया।

*"प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम वाटिका के सब पेड़ों के फल **निस्संकोच खा सकते हो**, पर भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल **न खाना**; क्योंकि जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम मर जाओगे।"* (उत्पत्ति 2:16-17)

स्त्री को बनाने से पहले परमेश्वर ने पुरुष को यह आज्ञा दी थी। परमेश्वर ने मानव वंश का मस्तक के रूप में आदम को नियुक्त किया था और उसने आदम को इस एक नियम का पालन करने के लिए जिम्मेदार ठहराया।

पहली स्त्री

आगे परमेश्वर ने स्त्री को बनाया। और क्या ही विशेष सृष्टि वह थी!

"प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं। मैं उसके उपयुक्त एक सहायक बनाऊंगा।'.....अतः प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया। जब वह सो रहा था तब उसकी पसलियों में से एक पसली निकाली और उस रिक्त स्थान को मांस से भर दिया। प्रभु परमेश्वर ने उस पसली से, जिसको उसने मनुष्य में से निकाला था, स्त्री को बनाया और उसे मनुष्य के पास लाया। मनुष्य ने कहा, 'अंततः यह मेरी ही

अस्थियों की अस्थि, मेरी ही देह की देह है; यह "नारी" कहलाएगी; क्योंकि यह नर से निकाली गई है।' इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी स्त्री के साथ रहेगा, और वे एक देह होंगे। मनुष्य और उसकी स्त्री नग्न थे, पर वे लज्जित न थे।" (उत्पत्ति 2:18, 21-25)

इस प्रकार परमेश्वर ने पहली शल्यचिकित्सा की, आदम की पसली से एक सुंदर और प्यारी पत्नी तैयार की और फिर वैयक्तिक रूप से उसे आदम को पेश किया।

परमेश्वर ने उसे प्रदान किए हुए घनिष्ठ और प्रेमी साथी और "सहायक" के साथ आदम कैसे आनंदित हुआ! पवित्र शास्त्र का दिवंगत विज्ञानी मॅथु हेन्री ने लिखा, "स्त्री को बनाया गया.....आदम की पसली से; उसके सिर से नहीं बनाया कि उस पर शासन करे, न ही उसे उसके पैरों से बनाया कि उसके द्वारा उसे पैरों के नीचे कुचले, लेकिन उसकी तरफ से उसके बराबर होने के लिए, उसकी बांह के नीचे सुरक्षित रहने के लिए और उसके हृदय के प्रिय होने के लिए।"[120]

पुरुष समान, स्त्री को परमेश्वर के स्वरूप और सदृश बनाया गया, कि परमेश्वर के व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करे और उसके साथ हमेशा आत्मिक एकता का आनंद ले। हालांकि सृष्टिकर्ता ने पुरुष और स्त्री के लिए एक निश्चित क्रम और विशिष्ट भूमिकाएं स्थापित की, उसने उन्हें मूल्य और महत्त्व में समान घोषित किया।

आज, परमेश्वर के अभिप्राय के विरोध में, कई समाज महिलाओं को संपत्ति के टुकड़े की तरह मानते हैं। मैंने देखा है लोग उत्सव मनाते हैं जब लड़के का जन्म होता है और निराशा व्यक्त करते हैं जब लड़की का जन्म होता है। कुछ पुरुष उनकी पत्नी से अधिक देखभाल और फिकर उनके पशुधन पर दिखाते हैं। कुछ समाज दूसरी ही चरम सीमा पर चले गए हैं, पुरुष-स्त्री की विशिष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को नजरंदाज करने को चुनाव करते हैं जो परमेश्वर ने उन प्रत्येक को नियुक्त की है। दोनों ही चरम सीमाएं स्त्रियों को नीचा दिखाती हैं।

पहला विवाह

ध्यान दे कि पहला विवाह समारोह किसने संपन्न किया।

यह प्रभु था। पवित्रशास्त्र कहता है, *"**उसने** उसे पुरुष के पास लाया।"* आरंभ से सृष्टिकर्ता लोगों के जीवनों में स्पष्ट रूप से शामिल है जिन्हें उसने स्वयं के लिए बनाया है। वही जो एक है जो घोषित करता है कि *"पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी स्त्री के साथ रहेगा, और वे* ***एक*** *देह होंगे।"* इब्रानी शब्द *"एक"* के लिए उपयोग किया गया हैं वह एखाद है, जो अखण्डता

और एकता दर्शाता है। परमेश्वर ने पहले जोड़े की रचना की कि *एकदूसरे का आनंद ले और सेवा करे, और उसका आनंद ले और उसकी सेवा करे, एक सिद्ध समन्वय में सदैव*। वह चाहता है कि पुरुष और स्त्री ने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी को उनके जीवनों का केन्द्र बनाए-व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से।

दुखद रूप से, हमारे वर्तमान जगत में अधिकतम लोग विवाह के लिए परमेश्वर के मूल ढाँचे को नजरंदाज करते हैं और इस बात से अनभिज्ञ हैं कि एक पुरुष और एक महिला के बीच के रिश्ते कितने शानदार हो सकते हैं जैसे जैसे साल बीतते जाएंगे। उसके परिणामस्वरूप, वे प्रेमी, विश्वासी, निस्वार्थी और अभिलषित संबंध जो आरंभ से प्रभु ने एक पुरुष और उसकी पत्नी के लिए अभिप्रेत किया था उसे प्रतिबिंबित करने में चुक जाते हैं।

सृष्टिकर्ता का पुरुष और पत्नी के बीच का विवाह का कर्ता उसके प्रेम के अगाध हृदय का प्रतिबिंब है। परमेश्वर विवाह के बंधन और भी अधिक घनिष्ठ, अधिक अद्भुत, बढ़ते हुए, आत्मिक संबंध को चित्रित करने का इरादा रखता है, वह लोगों को अभी और अनंतकाल तक उसके साथ आनंद लेने के लिए आमंत्रित करता है।

विवाह का कर्ता विवाह की व्याख्या कैसे करता है इसपर आप ने ध्यान दिया क्या? *"इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी स्त्री के **साथ रहेगा**, और वे **एक** देह **होंगे**।"* और पवित्रशास्त्र जोड़ता है: *"मनुष्य और उसकी स्त्री नग्न थे, पर वे **लज्जित न** थे।"*

परमेश्वर की विवाह के लिए योजना एक जोड़े के लिए यह है कि उद्देश्य में और शरीर में एक रहे, लज्जा से मुक्त रहे। इससे भी उच्च स्तर पर, परमेश्वर की योजना लोगों के लिए बेशर्मी से अनंतकाल तक उसके साथ *आत्मिक* एकता का आनंद लेने की थी।

मानवजाति को स्वामित्व दिया गया

परमेश्वर ने पुरुष को स्त्री पेश करने के बाद, उसने स्पष्ट और व्यक्तिगत रूप से उनसे बातचीत की। ऐसा नजर आता है कि परमेश्वर उन्हें प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दिए, क्योंकि पवित्रशास्त्र उसके विषय में कहता है *"प्रभु परमेश्वर उद्यान में **चलता** था।"* (उत्पत्ति 3:8)

अब कल्पना कीजिए पुरुष और उसकी पत्नी को प्रभु एक ऊँचे पहाड़ पर ले जाता है जहां से वें उनके सृष्टिकर्ता के महिमामंडित, मूल्यवान सृष्टि का नजारा देख सकते थे.....

> *"परमेश्वर ने उन्हें यह आशीष दी, **'फूलो-फलो और पृथ्वी को भर दो, और उसे अपने अधिकार में कर लो**। समुद्र के जलचरों, आकाश के पक्षियों और भूमि के समस्त*

गतिवान जीव-जन्तुओं पर तुम्हारा अधिकार हो। ' परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मैंने धरती के प्रत्येक बीजधारी पौधे और फलदायक वृक्ष, जिनके फलों में बीज हैं, तुम्हें प्रदान किए हैं। वे तुम्हारा आहार हैं।" (उत्पत्ति 1:28-29)

परमेश्वर ने आदम और हव्वा[121] और उनके वंशजों को उसकी सृष्टि के प्रभारी बनाया। उसने उन्हें मानवजाति की "पहली जोड़ी" होने का सौभाग्य और जिम्मेदारी प्रदान की। उसने सभी सृष्टि पर उन्हें स्वामित्व दे दिया। स्वामित्व का अर्थ अधिकार और नियंत्रण। आदम और हव्वा और उनके वंशज को आनंद लेना, देखभाल करना, और पृथ्वी पर बुद्धिमानी से शासन करना था। उन्हें उनका उपयोग करना था लेकिन उसका दुरुपयोग नहीं।

सृष्टिकर्ता ने सृष्टि की रचना मानवजाति के साथ समन्वय में रहने के लिए की थी। आरंभ में, पृथ्वी ने मनुष्य की जो कुछ भी इच्छा या जो आवश्यकता थी उसके साथ सहयोग किया। आदम और हव्वा को कभी यह सोचने की जरुरत नहीं पड़ी कि उनका अगला भोजन कहां से आएगा। उन्हें बस इतना करना था कि पेड़ों की अनगिनत विभिन्नताओं में से किसी एक से फल का स्वादिष्ट टुकड़ा उठाएं। कठोर मिट्टी, जंगली पौधे और कांटे, बीमारी और मृत्यु ये अस्तित्व में नहीं थें। सृष्टि का हर एक कोना आदम और हव्वा के अधीन था। मनुष्य को उस पर स्वामित्व था।

सृष्टि मनुष्य के तब तक अधीन रहेगी जब तक मनुष्य उसके सृष्टिकर्ता के अधीन रहेगा।

परमेश्वर और मनुष्य साथ साथ

आरंभ से, प्रभु परमेश्वर का अभिप्राय था की मानवजाति उसके साथ एक घनिष्ठ, मधुर संगति में जीवन व्यतीत करे। इसी कारण से उसने आदम और हव्वा को मन और हृदय (बुद्धिमत्ता और भावनाएं) प्रदान किए थें जिसके द्वारा उसे समझे और उससे प्रेम करे, और स्वतंत्रता का चुनाव करे (एक इच्छा) जिसके साथ यह तय करना है कि उस पर विश्वास करना है या नहीं और उसकी आज्ञा का पालन करना है या नहीं। चुनाव का घटक यह पूर्ण रूप से आवश्यक था। परम प्रभु आदम और हव्वा को उनके चुनाव के लिए जिम्मेदार ठहरानेवाला था।

इसके विषय में कोई गलती न करे : भले ही सृष्टिकर्ता और विश्व के स्वामी को कुछ भी और किसी की भी आवश्यकता नहीं, फिर भी वह गहन रूप से संबंधपरक है।

जैसे हम चाहते हैं कि हमें समझा और प्रेम किया जाए, उसी प्रकार परमेश्वर जिसने लोगों को अपने स्वयं के लिए बनाया है चाहता है कि वे उसे समझे और उससे प्रेम करे। यह उसके अनंत स्वभाव का हिस्सा है कि जिन्हें उसने *"अपने स्वरूप में"* बनाया है उनके साथ हृदय-स्तर की मित्रता

की इच्छा करे।

मैं लोगों को यह कहते सुनता हूं, "मैं परमेश्वर का गुलाम हूं और कुछ नही!" बेशक, परमेश्वर की सेवा करना यह एक बड़े सम्मान की बात है क्योंकि एक इच्छुक सेवक अपने मालिक के लिए काम करता है, लेकिन पवित्रशास्त्र स्पष्ट हैं : परमेश्वर की योजना यह कभी नहीं थी कि मनुष्य *"एक गुलाम" नहीं बल्कि एक **पुत्र**" होना चाहिए* (गलातियों 4:7)। *"**गुलाम** सदा घर में नहीं रहता, पर **पुत्र** सदा रहता है"* (यूहन्ना 8:35)। परमेश्वर उसके ह्रदय की इच्छा को मानव रूप से व्यक्त कर रहा है (मानवी शब्दों में), यह हमें सिखाता है जो सब उस पर विश्वास करते हैं उनके लिए उसने क्या योजना की है:

"मैं तुम्हारा पिता होऊंगा, तुम मेरे लिए पुत्र और पुत्री होंगे: सर्वशक्तिमान प्रभु का कथन हैं।"(2 कुरिंथियो 6:18)

इसके अलावा, माता-पिता का उनके बच्चों के प्रति प्रेम के साथ परमेश्वर हमारे लिए उसके प्रेम की केवल तुलना नहीं करता है। हमारा सृष्टिकर्ता इस कल्पना को अन्य स्तर पर ले जाता है, एक मनुष्य का उसके प्रिय वधू के लिए जो प्रेम है उसके साथ लोगों के लिए उसके प्रेम के बन्धन और गहराई की तुलना करता है।

"उस दिन वह मुझे 'मेरा पति' कहेगी; और मुझे 'मेरा बअल' नाम से फिर कभी नहीं पुकारेगी। ....मैं तेर साथ शास्वत विवाह-संबंध स्थापित करूंगा। तेरे साथ धार्मिकता, न्याय, करुणा और दया के बन्धन में विवाह-संबंध स्थापित करूंगा। मैं तुझसे सच्चाई के साथ विवाह करूंगा। तब तुझे मुझ-प्रभु का अनुभव प्राप्त होगा।" (होशे 2:16, 19-20)

पृथ्वी पर दो व्यक्तियों के बीच अत्यधिक संतोष देनेवाले संभव संबंध की कल्पना कीजिए, और फिर उस पर चिंतन करे: संबंध जिसका अनुभव उसके साथ करने के लिए परमेश्वर हमें आमंत्रित करता है वह पृथ्वी पर सबसे उत्तम संभव मानवी संबंध से बहुत हद तक अधिक अद्भुत है।

आपके सृष्टिकर्ता के साथ एक वैयक्तिक संबंध के बगैर, आपका जीवन यह अपूर्ण और असंतोषजनक रहेगा। सांसारिक संपत्ति, सुख, प्रतिष्ठा, लोग या प्रार्थनाएं कितने भी हो वे आपके प्राणों के भीतर के ख़ालीपन को भर नहीं सकते। केवल प्रभु ही आपके ह्रदय के भीतर के ख़ालीपन में समां सकता है जो उसने स्वयं के लिए रचा है।

"प्रभु प्यासे प्राण को तृप्त करता है, वह भूखे व्यक्ति को भली वस्तु से सन्तुष्ट करता है।"
(भजन संहिता 107:9)

यहां पर एक मुद्दा है उसे भूलना नहीं है: एक सत्य परमेश्वर धर्म के विधियों में हर्ष नहीं करता, लेकिन उनके साथ एक ईमानदार संबंध में जो उस पर विश्वास करते हैं।

अलग-अलग स्तरों पर, परमेश्वर ने आनंद लिया है और हमेशा के लिए संगति का आनंद उठाएगा :

- **स्वयं**। संपूर्ण अनंतकाल के लिए, प्रेमी संगति यह अनंत पिता, अनंत पुत्र और अनंत पवित्र आत्मा के बीच में प्रवाहित होती रही है। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र इसे लिपिबद्ध करती है पुत्र पिता को कह रहा है, *"हे पिता....क्योंकि तूने संसार की सृष्टि के पूर्व ही मुझसे प्रेम किया है।"* (यूहन्ना 17:24)
- **स्वर्गदूत**। उसने देवदूत सदृश जीवों का निर्माण किया कि उसे जाने और उससे प्रेम करे, और उसकी अद्भुत महिमा की सदैव प्रशंसा करे। *"....मेरे समस्त स्वर्गदूत उसकी आराधना करे।"* (इब्रानियों 1:6)
- **लोग**। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ताकि एक दिन उनके सृष्टिकर्ता के साथ इतना घनिष्ठ संबंध हो जाए जितना कि स्वर्गदूत भी आनंद नहीं लेते। राजा दाऊद ने लिखा : *"जब मैं देखता हूं तेरे आकाश को, जो तेरा हस्त-शिल्प है, चंद्रमा एवं नक्षत्रों को जिन्हें तूने स्थापित किया है, तब मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे। मानव क्या है कि तू उसकी सुधि ले? तो भी तूने उसे ईश्वर से कुछ घटाकर बनाया, और उसे महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया"* (भजन संहिता 8:3-5)। परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहना चाहता था। तथापि, पहले मनुष्य की परीक्षा होनी चाहिए थी।

दिन 7: सृष्टि कार्य समाप्त

सृष्टि कथन एक महत्वपूर्ण जानकारी के हिस्से के साथ पूरी होती है :

> *"परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को देखा, और देखो, वह **बहुत अच्छी थी**। सन्ध्या हुई, फिर सबेरा हुआ। इस प्रकार छठवां दिन बीत गया। यों आकाश और पृथ्वी एवं जो कुछ उनमे है, इन सबकी रचना पूर्ण हुई। जो कार्य परमेश्वर ने **किया था**, उसको उसने सातवें दिन **समाप्त किया**। उसने उस समस्त कार्य से जिसे उसने पूरा **किया** था, सातवें दिन विश्राम किया।"* (उत्पत्ति 1:31; 2:1-2)

परमेश्वर का सृजनशील कार्य समाप्त हो गया। जो सब कुछ उसने बनाया था उसमे आनंद करने का अब समय था। *प्रभु* ने सातवें दिन इसलिए विश्राम नहीं किया क्योंकि वह थक गया था।

स्वयं-अस्तित्व में एक जिसके नाम का अर्थ "*मैं हूं*" है वह कभी थकता नहीं। परमेश्वर ने विश्राम किया (काम करने से ठहर गया) क्योंकि उसका सृजनशील कार्य **समाप्त हो गया** था।

प्रभु परमेश्वर संतुष्ट हो गया।

सब कुछ सिद्ध था।

एक सिद्ध जगत की कल्पना करे जिसमे दो सिद्ध लोग रहते हो जिन्हें विशेष अधिकार प्राप्त थे कि उनके सिद्ध सृष्टिकर्ता के साथ बढ़ते रहनेवाली मित्रता का आनंद प्राप्त करे। शुरुआत में चींजे ऐसी ही थीं।

आह, आज हमारा थका हुआ ग्रह सिद्धता से दूर हो गया। बुराई और अनैतिकता, शोक और पीड़ा, गरीबी और भूख, द्वेष और हिंसा, और रोग और मृत्यु प्रचुर है।

परमेश्वर के सिद्ध पृथ्वी को क्या हुआ?

यह कहानी का अगला भाग है।

पाठ 11

बुराई का प्रवेश

*"**ओ** मेरे प्राण, प्रभु को धन्य कह; मेरे अंतर का सर्वस्व उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! .....ओ प्रभु के **स्वर्गदूतो**, महान शक्तिशालियों, तुम **उसका वचन** सुनकर उसके अनुसार **कार्य** करते हो, प्रभु को धन्य कहो! प्रभु की **समस्त सेना, उसकी इच्छा** को **पूर्ण करनेवाले** समस्त सेवक, प्रभु को धन्य कहे! प्रभु की समस्त सृष्टि, **उसके राज्य** के समस्त स्थानों में प्रभु को धन्य कहे!..... ।"* —राजा दाऊद (भजन संहिता 103:2, 20-22)

परमेश्वर ने मनुष्य को निर्माण करने से पहले, उसने अनगिनत आत्मिक जीवों की सेना का निर्माण किया जिन्हें *स्वर्गदूत* कहते हैं। परमेश्वर ने उन्हें उसके सुख और स्तुति के लिए निर्माण किया था। वे *"**उसकी** स्वर्गीय सेना"* थे, इसलिए रचा गया था कि हमेशा उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी को समझे, सेवा करे, आनंद प्राप्त करे और उसकी महिमा करे। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों का निर्माण इसलिए नहीं किया कि जानवरों समान रहे, जो मुख्य रूप से सहज प्रवृत्ति से कार्य करते हैं। जिस प्रकार मानवजाति के साथ है, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को नैतिक कर्त्तव्य प्रदान किया कि अपने स्वयं के लिए चुनाव करे कि वे उसके वचन का पालन करे, उसकी इच्छा पूरी करे और उसके नाम की स्तुति करे या फिर न करे।

प्रकाशमान जन

सबसे शक्तिशाली और सौभाग्यशाली आत्मिक-जीव को *लूसिफर* नाम दिया गया, उसका अर्थ, *प्रकाशमान जन* ।[122] इस प्रतिभाशाली स्वर्गदूत का वर्णन *"सिद्ध राजा का प्रतीक, बुद्धि से परिपूर्ण और सर्वांग सुन्दर"* ऐसा किया गया था। (यहेजकेल 28:12)

हालांकि परमेश्वर ने सब विवरण प्रकट नहीं किया है, हम जानते है कि यह इस वैभवशाली

देवदूत सदृश जीव द्वारा वह बुराई और अपूर्णता ने विश्व में पहले प्रवेश किया।

परमेश्वर लूसिफर के विषय में कहता है,

> ***अधर्म का प्रवेश तुझमे पाया गया!****.....तुझे अपने रूप का घमण्ड था; तूने अपने वैभव के कारण अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली थी। ....तूने अपने हृदय में सोचा था,* ***मैं*** *आकाश पर* ***चढूंगा****, परमेश्वर के तारों के ऊपर, ...****मैं*** *अपना सिंहासन प्रतिष्ठित* ***करूंगा****।* ***मैं*** *दूरस्थ उत्तर में स्थित....पर विराजूंगा।* ***मैं*** *बादलों के ऊपर उच्चतम स्थान पर* ***चढूंगा****,* ***मैं*** *स्वयं को सर्वोच्च परमेश्वर के तुल्य* ***बनाऊंगा****।"* (यहेजकेल 28:15, 17; यशायाह 14:13-14)

परमेश्वर की स्तुति करने और उसकी आज्ञापालन करने के बजाय, पाच बार लूसिफर ने कहा, *"मैं ऐसा करूंगा!"* वह *"सर्वोच्च परमेश्वर के समान"* बनना चाहता था।

उसकी अपनी सुंदरता और बुद्धिमत्ता से अँधा होकर, और जो सब कुछ उसके पास हैं वह उसे किसने दिया है उसे भूलकर, इस स्वर्गदूत ने स्वयं को यह सोचकर धोखा दिया कि वह परमेश्वर से अधिक बुद्धिमान है। वह चाहता था कि अधिकतम स्वर्गदूतों की सेना सृष्टिकर्ता के बजाय *उसकी* स्तुति करे, वह ही केवल आराधना और स्तुति के योग्य है।

लूसिफर ने उसके इस विद्रोह में उसके साथ एक होने के लिए स्वर्ग के एक तिहाई दूतों को भी विश्वास दिलाया था।[123] इस प्रकार, *प्रकाशमान जन* ने योजना बनाई कि परमेश्वर के स्वामित्व को गिरा दे और स्वर्ग के सिंहासन पर विराजमान होवे।

पाप ने परमेश्वर के विश्व में प्रवेश किया।

पाप क्या है?

पवित्रशास्त्र हमारे लिए पाप की व्याख्या करती है।

- *"पाप* ***अधर्म*** *है।"* (1 यूहन्ना 3:4)
- *"सब* ***अधर्म*** *पाप है।"* (1 यूहन्ना 5:17)
- *पाप यह है कि "भलाई करना जानना.....और* ***नहीं करना****।"* (याकूब 4:17)
- *पाप "सब प्रकार की* ***बुरी वासनाएं****" उत्पन्न करता है।* (रोमियों 7:8)
- *पाप यह "परमेश्वर की महिमा से* ***वंचित रहना*** *है।"* (रोमियों 3:23)

"परमेश्वर की महिमा" परमेश्वर की संपूर्ण पवित्रता और अचूक सिद्धता को संबोधित करती है। "वंचित रहना" इसका अर्थ कि सिद्ध धार्मिकता के ध्येय को पूरी तरह से चुक जाना।

पाप परमेश्वर के पवित्र स्वभाव और इच्छा के पूर्ण अनुरूप जीने में असफल होना है।

उसके आसुत प्रकार में, ***पाप*** यह अनंत जीव द्वारा चुनाव है, फिर वे देवदूत समान या मानव हो, कि परमेश्वर को ऊँचा उठाना और उसके अनुसार चलने के बजाय अपने आपको श्रेष्ठ करना और *"अपने स्वयं के मार्ग"* की ओर जाना (यशायाह 53:6)।

परमेश्वर से स्वतंत्र रूप से सोचना या कार्य करना **पाप** है। वह मार्ग था जो लूसिफर और स्वर्गदूतों ने चुना था जो उसके साथ सहानुभूति दिखा रहे थे। उनके सृष्टिकर्ता पर निर्भर रहने के बजाय, वे हृदय में घमण्डी हो गए और उनके स्वयं के मार्गों की ओर मुड़े।

> *"प्रत्येक **अहंकारी** व्यक्ति से प्रभु घृणा करता है; मैं निश्चय के साथ कहता हूं : प्रभु उसको अवश्य दंड देगा।"* (नीतिवचन 16:5)

घृणा यह एक सशक्त शब्द है, उसका अर्थ तिरस्कार, एक निन्द्य कार्य, दूषित या मूर्तिपूजा का पात्र। परमेश्वर आत्मकेन्द्रित लोगों से घृणा करता है। घमण्ड यह पाप है।

पाप को उसकी उपस्थिति में रहने की अनुमति देना परमेश्वर के लिए अधिक घिनौना होगा जितना कि आपके घर में सड़ते सूअर के शव से। एक भी पाप परमेश्वर को अस्वीकार्य है जैसे मेरे लिए मेरे चाय में जहर की एक बूंद। हमारे घर में सड़ा हुआ शव या हमारे चाय में जहर की बूंद को सहन करने में हम क्यों असमर्थ है? ऐसी बातें हमारे स्वभाव के विरोध में जाती हैं।

पाप परमेश्वर के स्वभाव के विरोध में जाता है।

> *"हे प्रभु, मेरे परमेश्वर मेरे पवित्र परमेश्वर, तू अनादि है। .....हे प्रभु, तू निर्मल आंखोवाला है, अत: तू बुराई को देख नहीं सकता।"* (हबक्कूक 1:12-13)

शैतान, भूत और नरक

क्योंकि लूसिफर परमेश्वर की महिमा को चुराना और उसके अधिकार छीनना चाहता था, परमेश्वर ने उच्च आकाश से उसके स्थान से उसे, उसके दूतों के साथ जिन्होंने उसका साथ देने का चुनाव किया उन्हें खदेड़ दिया। लूसिफर का नाम **शैतान** में बदल दिया गया था, जिसका अर्थ, अभियोक्ता। उन्हें **शैतान** भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है आरोप लगाने वाला। गिरे हुए स्वर्गदूत बुरी आत्माओं या **राक्षसों** के रूप में जाने जाते हैं, जिसका अर्थ हैं जानने वाले।

शैतान और उसके भूतों को पता हैं परमेश्वर कौन है और वे उसके सम्मुख थरथराते हैं; इसके बावजूद वे सब कुछ कर रहे हैं कि उसे पराजित कर सके।

लेकिन वे जीत नहीं पायेंगे।

पवित्रशास्त्र भविष्यवाणी करता है कि, एक पूर्व निर्धारित दिन पर, शैतान और उसके भूतों को *"अनंत अग्नि में फेंका जाएगा, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है"* (मत्ती 25:41)। यह *"अनंत अग्नि"* एक असली स्थान है जहां परमेश्वर उन सभों को हमेशा के लिए कैद करके रखेगा जो उसके पवित्र स्वभाव के अनुरूप नहीं चलते।

यूनानी नए नियम में एक शब्द का उपयोग किया गया है कि शैतान के साथ जो उसकी सेना में जाते है उनके लिए दंड का स्थान यह गेहेन्ना है, अक्सर उसे नरक ऐसे अनुवादित किया है।[124] यह शब्द अक्षरश: जलते हुए कचरे को दर्शाता है।

सेनेगल में जहां से मेरी पत्नी और मैंने अपने बच्चों की परवरिश की थी, वहां से कुछ ही दूर कचरा फेंकने की एक जगह थी जहाँ लोग उनका कचरा और परित्यक्त चीजों को फेंकते हैं। कचरे की यह जगह अक्सर धुंए से भरी रहती है जब वे जो निकट रहते है वे बदबूदार-दुर्गंधित कचरा जलाते रहते हैं। जो कुछ भी अयोग्य समझा जाता है उसे अग्नि में डाल दिया जाता है।

नरक यह परमेश्वर का "कचरा फेंकने का स्थान" है जहां वे जो मृतक हो गए हैं जो उनके पापों में मर गए थे उन्हें वर्तमान में रखा जाता है। एक दिन, शैतान और उसके भूत और नरक के सभी निवासियों को न्याय के अंतिम स्थान में फेंका जाएगा जिसे *अग्नि और धधकता कुण्ड कहते है*।[125]

परमेश्वर के विश्व को पाप हमेशा दूषित नहीं करेगा।

शैतान के लक्ष्य

शैतान और उसके भूत, अब तक अग्निकुण्ड में नहीं हैं। इसके बजाय, वे हमारे जगत में कार्यरत हैं। पवित्रशास्त्र शैतान की पहचान *"दुष्ट आत्मा के अनुसार था जो वायुमण्डल का शासक और अधिपति है जो* ***इस समय*** *परमेश्वर की इच्छा न मानने वालों के बीच कार्य कर रहा है"* के रूप में करती है। (इफिसियों 2:2)

यह समझना महत्वपूर्ण है कि भले ही शैतान सामर्थ्यशाली है, पर वह *सर्व-शक्तिमान* नहीं है। वह एक सृजित जीव और एक पतित जन है। शैतान की प्रभु से तुलना नहीं हो सकती। शैतान को *"इस युग का देवता"* कहा जाता है। उसका लक्ष्य यह है कि लोगों को एक सत्य परमेश्वर को पहचानने से रोकना और उस उद्देश्य को आत्मसात करने से रोकना जिसके लिए उन्हें निर्माण किया गया था।

"यदि हमारे शुभ संदेश [उद्धार के लिए परमेश्वर की अच्छी ख़बर] पर आवरण पड़ा भी है तो वह नष्ट होने वालों के लिए पड़ा है। इन अविश्वासियों ***की बुद्धि को इस युग के शैतान ने अन्धा कर दिया है*** *कि ये उस शुभ संदेश का प्रकाश न देख सके,...... ।"* (2 कुरिंथियों 4:3-4)

शैतान का लक्ष्य क्या है? वह मनों को कैद करने को खोजता है और लोगों को परमेश्वर का संदेश सुनने और उस पर विश्वास करने से रोकता है। वह परमेश्वर के साथ लढाई में है। यह एक लढाई है जो शैतान जीत नहीं सकता, लेकिन जो कुछ वह करा सकता है वह सब कुछ कर रहा है कि जितनों को संभव है उनको उसके साथ साथ नीचे ले आए। और वह अपेक्षा करता है कि आपको उसमे जोड़ दे।

यह जानते हुए कि आदम और हव्वा को परमेश्वर की महिमा और हर्ष के लिए निर्माण किया है, शैतान उस मित्रता को ख़राब करने की योजना करता है जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में अस्तित्व में थी। अवश्य ही, प्रभु परमेश्वर, जो *"हृदय के भेदों को जानता है"* (भजन संहिता 44:21), सब कुछ जानता है जो शैतान ने करने की योजना की है और सब कुछ जो होनेवाला है।

परमेश्वर के पास उसके स्वयं की योजना है।

एक नियम

परमेश्वर ने मनुष्य को यह चुनने की स्वतंत्रता दी कि वह अपने सृष्टिकर्ता से प्रेम, स्तुति और आज्ञापालन करे या न करे। सच्चे प्रेम पर जबरदस्ती या पहले से ही नियोजित नहीं किया जा सकता है। प्रेम में व्यक्ति का मन, हृदय, और इच्छा समाविष्ट हैं। जबकि यह सच है कि परमेश्वर उसके विश्व के ऊपर प्रधान राजा है, यह भी सच है कि वह मनुष्य को अनंतकाल के परिणाम चुनाव करने के लिए जिम्मेदार ठहराता है।

परमेश्वर ने स्त्री को बनाने से पहले, परमेश्वर ने पुरुष को आज्ञा दी थी। क्योंकि आदम यह मानव वंश का सिर था, परमेश्वर ने उसके सम्मुख परीक्षा रखी।

"प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, 'तुम वाटिका के सब पेड़ों के फल निस्संकोच खा सकते हो, पर भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना; क्योंकि जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम मर जाओगे।" (उत्पत्ति 2:16-17)

परमेश्वर के सरल निर्देश पर ध्यान दें। आदम केवल एक पेड़ को छोडकर, वाटिका के अनेक पेड़ों में से सभी स्वादिष्ट फलों को स्वतंत्रता से ले सकता था। परमेश्वर ने आदम को कहा था अगर

उसने आज्ञाभंग किया तो क्या होगा। *"जिस दिन तुम उनका फल खाओगे,* ***तुम मर जाओगे।"***

उस लकीर को पार करना यह उल्लंघन होगा, पाप के लिए और एक शब्द। जैसे लूसिफर के प्रकरण में, विश्व के प्रभु के विरोध में विद्रोह यह विनाशकारी परिणाम में अंत होगा।

भले ही पहला मनुष्य सिद्ध था, वह पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं था। इस एक नियम के साथ, मनुष्य को एक मौका दिया गया था कि उसके सृष्टिकर्ता के साथ उसके संबंध में बढे। परमेश्वर चाहता था आदम कृतज्ञता और प्रेम के हृदय से उसकी आज्ञापालन करने का चुनाव करे। यह काफ़ी आसान होना चाहिए था, यह देखते हुए कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया था।

उसके बारे में सोचो! परमेश्वर ने आदम को शरीर, प्राण और आत्मा प्रदान किया है। उसने उसे सृष्टिकर्ता के पवित्र और प्रेमी स्वभाव को प्रतिबिंबित करने के सौभाग्य के साथ आशीषित किया। उसने उसे एक शानदार वाटिका में रखा और जिसकी कल्पना कर सकते है कि उसके जीवन को शुद्ध आनंद और संतुष्टि का बनाने के लिए हर संभव लाभ प्रदान किया। परमेश्वर ने उसे स्वतंत्रता और क्षमता भी प्रदान की ताकि जिम्मेदार चुनाव करे। उसने आदम को एक प्रेमी पत्नी प्रदान की और उन्हें सृजित जगत का निरिक्षण और देखभाल की जिम्मेदारी सौंप दी। इन सबसे बढ़कर, प्रभु स्वयं आदम और हव्वा के साथ चलने और बातचीत करने के लिए वाटिका में आता था। परमेश्वर ने उन्हें उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी को पहचाने का अवसर दिया। वह एक सिद्ध जगत था।

फिर एक दिन सांप आ गया।

"क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा है?"

यह उत्पत्ति अध्याय तीन में है कि जो मानव इतिहास में सबसे दुखद और दूरगामी घटना दर्ज की गई है।

हव्वा और आदम एक दिन इस प्रतिबंधित पेड़ के निकट थे, शैतान उन्हें सांप के रूप में चालाकी से प्रकट हुआ। हमें पता है यह शैतान था क्योंकि पवित्रशास्त्र बाद में उसे *"वह पुराना सांप जो दोष लगानेवाला शैतान कहलाता है, और संसार भर को भटकाता रहता है"* इस रूप में पहचानता है। (प्रकाशितवाक्य 12:9)

जिस प्रकार परमेश्वर के पास मानवजाति के लिए योजना है, उसी प्रकार शैतान के पास है।

*"उन सब जीव-जन्तुओं में जिन्हें प्रभु परमेश्वर ने रचा था, सबसे अधिक धूर्त सांप था। उसने स्त्री से पूछा, **'क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा** है कि तुम वाटिका के किसी भी पेड़ का फल न खाना?'"*(उत्पत्ति 3:1)

शैतान ने पुरुष के बजाय स्त्री के साथ बातचीत करने का चुनाव किया। पहली बात जो उसने हव्वा से कही क्या आप ने उसे सुना?

"क्या सचमुच परमेश्वर ने **कहा**.....?"

शैतान यह नहीं चाहता था कि हव्वा ने **परमेश्वर के शब्द** पर विश्वास करे। वह चाहता था कि वह परमेश्वर के ज्ञान और अधिकार पर प्रश्न करे। उसने हव्वा को अपने सृष्टिकर्ता को चुनौती देने का साहस किया, ठीक वैसे ही जैसे लूसिफर ने किया था। आज तक शैतान सच्चाई से लड़ता है क्योंकि वह उसे बदनाम करता है और उसे निरस्त्र कर देता है। जैसे उजियाला अंधकार को दूर करता है, वैसे ही परमेश्वर का वचन शैतान के छल को दूर करता है।

शैतान ने हव्वा को **परमेश्वर की भलाई** पर सन्देह के लिए प्रोत्साहित किया और परमेश्वर के व्यक्तित्व पर भी आक्रमण किया।

*"'क्या सचमुच परमेश्वर ने कहा है कि तुम वाटिका के **किसी** भी पेड़ का फल न खाना?'"*

शैतान ने परमेश्वर के वचन को तोड़मरोड़ के पेश किया, जैसे कि उनका उदार निर्माता, जिसने उन्हें जीवन दिया था और एक को छोड़ कर सभी पेड़ों से स्वतंत्र रूप से खाने का अधिकार दिया था, उन्हें परम भलाई से दूर रखना चाहता था।

"तुम नहीं मरोगे!"

"स्त्री ने सांप को उत्तर दिया, 'हम उद्यान के पेड़ों का फल खा सकते है। लेकिन परमेश्वर ने कहा है, "वाटिका के मध्य में लगे पेड़ का फल न खाना, उसे स्पर्श भी नहीं करना, अन्यथा तुम मर जाओगे।"'

*सांप ने स्त्री से कहा, **'तुम नहीं मरोगे**। परमेश्वर जानता है कि जब तुम उसे खाओगे तब तुम्हारी आँखे खुल जाएंगी। तुम भले और बुरे को जानकर परमेश्वर के समान बन जाओगे।'* (उत्पत्ति 3:2-5)

हव्वा ने परमेश्वर के वचन और भलाई पर संदेह करे ये ही केवल शैतान नहीं चाहता था

परंतु, वह यह चाहता था कि स्त्री ***परमेश्वर की धार्मिकता*** पर भी संदेह करे, जैसा कि अगर उसने प्रतिबंधित फल चखा तो परमेश्वर वास्तव में मृत्युदंड नहीं देंगे।

परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया था :

*"जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम **मर जाओगे।**"* (उत्पत्ति 2:17)

शैतान ने उसे नकारा, यह कहते हुए, "तुम ***नहीं मरोगे***!"

शैतान की मूलभूत पद्धति बदली नहीं है। वह निरंतर से परमेश्वर का संदेश विकृत करता और उसे अस्वीकार करता है। वह चाहता है कि हम परमेश्वर के वचन, भलाई और धार्मिकता पर संदेह करे।

शैतान चाहता है हम विचार करे कि हमारे सृष्टिकर्ता पर विश्वास नहीं किया जा सकता, और यह कि वह जो दावा करता है वह असल में वह नहीं है।

बहुत ही धर्मी शैतान

शैतान धर्म को अत्यधिक चाहता है। यही कारण है कि यहां पर आज दुनिया में 10,000 से भी अधिक धार्मिक पद्धतियां हैं। ध्यान दें कि हव्वा को बताकर शैतान ने परमेश्वर के लिए बोलने का नाटक कैसे किया। "**परमेश्वर जानता है** कि जब तुम उसे खाओगे तब तुम्हारी आँखे खुल जाएंगी।"

शैतान सर्वशक्तिमान का रूप धारण करना पसंद करता है। वह परमेश्वर के सत्य को लेने और उसे अपने झूठ के साथ मिलाने में माहिर है। वह महान समन्वयवादी, नक़ल करनेवाला, साहित्यिक चोर और जालसाज है। जगत में सबसे अजीब विश्वास पद्धतियों में भी सत्य का इशारा है। वहीं तो है जो उन्हें विश्वसनीय करते हैं। फिर से, अरब मुहावरा इसे ठीक स्पष्ट करता है : *"सावधान: कुछ झूठे सत्य बताते है!"*

जालसाज धर्म की शुरुआत करने के उसके पहिले प्रयास में, शैतान ने हव्वा को कहा, *"तुम भले और बुरे को जानकर परमेश्वर के समान बन जाओगे।"* शैतान ने जब हव्वा को कहा, *"तुम परमेश्वर के समान बन जाओगे,"* तो उसने झुठ कहा, क्योंकि एक जो पाप करता है वह परमेश्वर समान नहीं लेकिन शैतान समान है, जो चाहता है कि परमेश्वर का अधिकार छीन ले। तथापि, शैतान ने जब कहा, *"तुम भले और बुरे को जान जाओगे,"* उसने सत्य कहा, लेकिन इस ज्ञान के साथ जो कटुता, दुःख और मृत्यु आएगी वह सब नहीं कहा।

ध्यान दें कि शैतान ने, परमेश्वर के बारे में बोलते हुए, केवल सामान्य शब्द परमेश्वर का उपयोग किया। शैतान बहुत ही आनंदित रहता है अगर आप एक परमेश्वर में विश्वास करते है, जब तक आप यह सोचते रहते है कि वह परमेश्वर अत्यंत दूर और अज्ञात है।

"क्या तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक है? बहुत ठीक, लेकिन दुष्टात्माएं भी तो यही विश्वास करती हैं और थर-थर कांपती हैं।" (याकूब 2:19)

शैतान और उसके भूत वे सब एकेश्वरवादी है जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सम्मुख थर-थर कांपते हैं। अब से कुछ अध्यायों के बाद में अचम्भित करनेवाली स्पष्टता के साथ इसे प्रकट किया जाएगा। शैतान और उसके पतित स्वर्गदूतों को पता हैं कि यहां पर केवल एक सत्य परमेश्वर है, लेकिन आह, वे कितना उससे घृणा करते हैं!

वे नहीं चाहते हैं कि आप आपके सृष्टिकर्ता-स्वामी को आत्मा और सच्चाई में जाने, प्रेम करे, आज्ञापालन करे और आराधना करे।

चुनाव

आदम और हव्वा का उनके प्रेमी प्रभु का शब्द और उनके सबसे बड़े शत्रु के शब्द के बीच चुनाव करने का क्षण आ गया था।

विजय के लिए तरीका स्पष्ट था : *सृष्टिकर्ता के ज्ञान पर विश्वास करना*। कितना सहज था! आदम और हव्वा को केवल इतना ही करना था कि परमेश्वर के प्रेरित, अचूक शब्द से संदर्भ देकर, कहना था, "प्रभु परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी हैं : '*भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना।*' हम उससे नहीं खायेंगे! समाप्त।"

आदम और हव्वा परमेश्वर के अपरिवर्तित शब्द पर कायम रहे होते, तो बहकानेवाला भाग गया होता। लेकिन वही तो जो उन्होंने नहीं किया।

"स्त्री ने देखा कि आहार के लिए वृक्ष उत्तम है। वह आंखो को लुभाता है, और बुद्धिमान बनने के लिए वांछनीय है। अत: उसने उसका फल तोडा, और उस को खाया। उसने अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया।" (उत्पत्ति 3:6)

स्त्री ने उसे खाया। पति ने उसे खाया।

वचन के अधीन रहने और उनके पवित्र और प्रेमी सृष्टिकर्ता के अधीन रहने के बजाय, वे परमेश्वर के शत्रु के अधीन हो गएँ। उन्होंने प्रतिबंधित दायरे में प्रवेश किया।

एक बार जब आदम ने मना किए हुए फल को चख लिया, परिणाम ये तुरंत थे।

*"**तब** उनकी आंखे खुल गई और उन्हें ज्ञात हुआ कि वे नग्न हैं। अत: उन्होंने अंजीर के पत्तों को सी कर लंगोट बनाए। उन्होंने सन्ध्या के समय वाटिका में प्रभु परमेश्वर की पग-ध्वनी सुनी। मनुष्य और उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति से स्वयं को वाटिका के वृक्षों में छिपा लिया।"* (उत्पत्ति 3:7-8)

परिवर्तन पर ध्यान दें। प्रभु जब उन्हें मिलने आया तब आनंद करने के बजाय, वे अब भय और लज्जा से भर गएँ थें।

इन घनिष्ठ संबंधपरक जीवों को क्या कारण था कि उन्हें उनके प्रेमी प्रभु से दूर भागना पड़ा? सब कुछ देखनेवाले उनके सृष्टिकर्ता से छिपने की कल्पना उन्होंने कैसे की? हमारे प्रथम माता-पिता को उनके शरीरों को पत्तों से ढकने की आवश्यकता क्यों हुई?

उन्होंने पाप किया था।

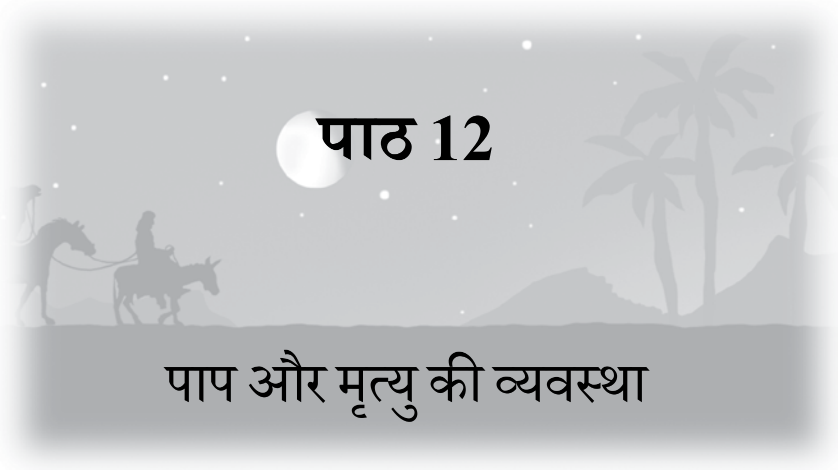

पाठ 12

पाप और मृत्यु की व्यवस्था

“....पाप करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति पाप का गुलाम है।”

— नासरी यीशु (यूहन्ना 8:34)

आदम और हव्वा ने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी की आज्ञाभंग की। शैतान समान, उन्होंने परमेश्वर के साथ उनके संबंध को गंवाया और पाप के गुलाम हो गए। बच्चों समान जिन्होंने उनके पिता की स्पष्ट आज्ञा का उल्लंघन किया था, आदम और हव्वा अब उस एकमात्र के साथ नहीं रहना चाहते थे एक जिसने उनसे प्रेम किया और उनकी देखभाल की थी। हर्ष और भरोसे की भावना अब भय, कलंकित और लज्जा की भावना से बदल गई थी।

> *“उन्होंने सन्ध्या के समय वाटिका में प्रभु परमेश्वर की पग-ध्वनी सुनी। मनुष्य और उसकी पत्नी ने प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति से स्वयं को वाटिका के वृक्षों में छिपा लिया।”* (उत्पत्ति 3:8)

आदम और हव्वा अब पाप द्वारा दूषित थे, जिससे वे अपने निर्माता और स्वामी से छिपना चाहते हैं। उनके नए तरीके से प्राप्त विवेक ने उन्हें भलाई और बुराई की संवेदना प्रदान की, सहज-ज्ञान ने उन्हें सिखाया कि केवल पवित्र लोग पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में जीवित रह सकते हैं। आदम और हव्वा अब परमेश्वर के सम्मुख पवित्र नहीं रहे और उन्हें यह पता था। परमेश्वर और मनुष्य के बीच का घनिष्ठ संबंध टूट गया था।

संबंध मृत हो गया था।

टूटी हुई शाख़

एक दिन, जब मैं एक मस्जिद के निकट एक पेड़ के नीचे कुछ लोगों के साथ बातचीत कर रहा था, बातचीत पाप और मृत्यु के विषय पर शुरू हुई।

मैंने पेड़ की एक शाखा तोड़ दी और उनसे पूछा, "यह शाख मृत या जीवित है?"

उन में से एक पुरुष ने उत्तर दिया, "वह मर रही है।"

दूसरे ने कहा, "वह मृत है।"

मैंने उसकी भर्त्सना की, "आप यह कैसे कह सकते हो यह मृत है? देखो यह कितनी हरीभरी है!"

"यह जीवित दिखती है, लेकिन यह मृत है क्योंकि यह उसके जीवन के स्त्रोत से अलग की गई है," उसने उत्तर दिया।

"बिलकुल:," मैंने प्रत्युत्तर दिया। "आप ने पवित्रशास्त्र के अनुसार मृत्यु की अचूक परिभाषा दी है। मृत्यु यह विनाश नहीं, लेकिन जीवन के स्त्रोत से अलग होना है। इसी कारण से, जब किसी प्रियजन की मृत्यु हो जाती है, शरीर को दफनाने से पहले हम कहते है, 'वह चला गया है।' हम ऐसा कहते है क्योंकि हम जानते है कि व्यक्ति की आत्मा ने उसके शरीर को छोड़ दिया है। मृत्यु का अर्थ अलग होना है।"

आगे, मैंने आदमियों के लिए उस पर ध्यान दिया जो परमेश्वर ने आदम को दी थी। फिर मैंने उन्हें पूछा, "परमेश्वर ने आदम से क्या कहा था अगर वह परमेश्वर के विरोध में पाप करेगा? उसने आदम से क्या यह कहा था अगर उसने प्रतिबंधित फल खाया, तो उसने धार्मिक विधियां, प्रार्थना, उपवास, दान-धर्म करना, और मस्जिद या चर्च को जाना करना शुरू करना चाहिए?"

"नहीं," उन्होंने उत्तर दिया, "परमेश्वर ने कहा आदम मर जाएगा।"

"ठीक। परमेश्वर ने इसे स्पष्ट किया था: पाप के लिए दंड यह मृत्यु है। लेकिन, मुझे बताओ, आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञाभंग करने और प्रतिबंधित फल खाने के बाद, क्या वे उसी दिन मर गए?"

"नहीं!" उन्होंने उत्तर दिया।

"ठीक, फिर, परमेश्वर का क्या अर्थ था जब उसने आदम से कहा, ' जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम मर जाओगे!?"

वहां से आगे मैंने मृत्यु की परमेश्वर की परिभाषा का वर्णन किया: अपने निर्माता की अवज्ञा करने के लिए मनुष्य की पसंद के कारण त्रि-आयामी अलगाव।

पाप के कारण तिगुना अलगाव

1. आध्यात्मिक मृत्यु : व्यक्ति के आत्मा और प्राण का परमेश्वर से अलग होना।

जिस दिन आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरोध में पाप किया *वे आध्यात्मिक रूप से मर गए*। पेड़ से टूटे हुए शाख़ के समान, आदम और हव्वा का प्रभु के साथ का घनिष्ठ संबंध मृत हो गया था। और यह ख़राब और ख़राब होते जाती है। आदम और हव्वा के सभी वंशज ये वहीं आध्यात्मिक मृत "शाख़" के हिस्सा हैं।

"आदम में सब मरते है....." (1 कुरिंथियों 15:22)

पवित्रशास्त्र के स्पष्ट सीख के बावजूद, बहुत सारे लोग जो विश्वास करते है कि मानवजाति आदम से अवतीर्ण हुई हैं वे इस पर जोर देते हैं कि नवजात शिशु शुद्ध, पापरहित स्वभाव के साथ जन्म लेते हैं।

टूटी हुई शाख़ पर फिर से विचार करें।

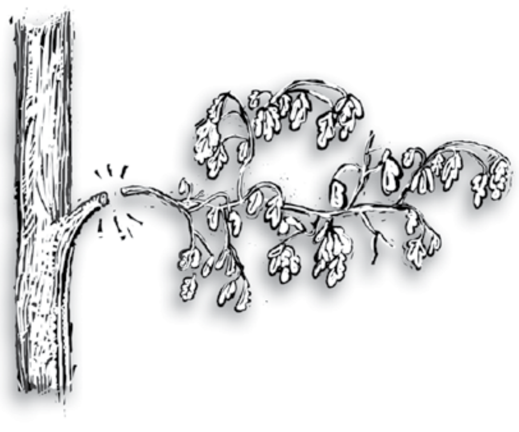

पेड़ से अलग होने के कारण से उसका कौनसा हिस्सा यह मृत है? संपूर्ण शाख़ मृत है, जिसमे उसके सिरे पर आयी हुई छोटी शाख़ भी है। अगर वे टहनियां और पत्ते बोल सकते, शायद वे कुछ इस प्रकार बोलते, "अब एक मिनट के लिए रुके! टहनी पेड़ से काट दी गई यह हमारी गलती नहीं है! किसी और ने क्या किया है

उससे हम प्रभावित नहीं होते!" लेकिन वे प्रभावित हुए हैं। उसी प्रकार, परमेश्वर का वचन घोषित करता है संपूर्ण मानवजाति "आदम में" है। हम सब उस अलग हुई, गिरी हुई "शाख़" के हिस्सा हैं, और हम उसके परिणाम भुगत रहे हैं। हमें पसंद हो या न हो, जब आदम ने पाप किया उसने स्वयं को और संपूर्ण मानवजाति परिवार जो उससे आगे आनेवाले थे दूषित कर दिया।

गांव जहां से मैं लिखता हूं वह उसका जल सेनेगल नदी से प्राप्त करता है जो बहुत किलोमीटर दूर है। हमारे गाँव में एक कुआं है, लेकिन उसका जल कोई नहीं पिता। क्यों नहीं? कुआं दूषित है। उसका जल खारा है। इस कुंए से निकाली हुई हर एक बालटी यह नमक से दूषित है। एक भी बूंद शुद्ध नहीं, नहीं, एक भी नहीं।

उसी समानता में, प्रत्येक व्यक्ति जो आदम से जन्मा है वह पाप से दूषित है। इसी कारण से छोटे बच्चे भी पाप करते है—स्वाभाविक रूप से। पाप यह उनके स्वभाव का हिस्सा है। भला और दयालु होने के लिए सचेत प्रयास और संघर्ष की आवश्यकता होती है, जबकि स्वार्थी और दुःख देनेवाले होने में कोई विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। दाऊद भविष्यद्वक्ता स्पष्ट करता है हम क्यों सहज-ज्ञान से पाप करते हैं :

> *"मैं **अधर्म में** उत्पन्न हुआ था; और **पाप में** मेरी मां ने मुझे गर्भ में धारण किया था"* (भजन संहिता 51:5)। *"दुर्जन मां के **पेट से** ही भटक जाते हैं; झूठे व्यक्ति **जन्म से ही** पथ-भ्रष्ट होते हैं"* (भजन संहिता 58:3)। *"सब मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं, **सब एक-जैसे** भ्रष्ट हो गए हैं; ऐसा कोई भी **नहीं**, जो भलाई करता हैं' नहीं, **एक भी नहीं**।"* (भजन संहिता 14:3)

सेनेगल के वोलोफ वासियों के पास बहुत सारे अच्छे मुहावरे हैं जिन्होंने कुछ लोगों को यह सत्य समझने में सहायता की हैं। उदाहरण के लिए, वे कहते है, *"एक चूहा संतान पैदा नहीं करता जो खोदते नहीं।"* इसी तरह, पाप-कलंकित आदम उस संतान को जन्म नहीं दे सकता जो पाप नहीं करते।

अन्य मुहावरा कहता है, *"एक महामारी खुद को उसके कारण तक ही सीमित नहीं करती रहती है।"* दुःखद लेकिन सत्य है। एक विरासत में जन्म दोष या एक संक्रामक रोग की तरह, आदम का पाप स्वभाव हम में और हमारे बच्चों में फैल गया है।

> *"यह बात विचारणीय है कि **एक व्यक्ति द्वारा** संसार में पाप आया और पाप द्वारा मृत्यु आई। इस प्रकार **मृत्यु का सब मनुष्यों में प्रसार हुआ**, क्योंकि **सब ने पाप किया है**।"* (रोमियों 5:12)

पहले वाक्यांश पर ध्यान दें: *"**एक व्यक्ति** द्वारा संसार में पाप आया,"* और आखरी वाक्यांश: *"**सब ने** पाप किया है।"* जन्म और व्यवहारिक रीति द्वारा हम में से हर एक जन पापी है। हम जो पाप करते है उसके लिए हम आदम को दोषी नहीं ठहरा सकते। एक बार जब व्यक्ति गलत से सही जानने में काफ़ी समझदार हो जाता है, परमेश्वर उसे जिम्मेदार ठहराता है।[126]

पवित्रशास्त्र कहता है :

*"किंतु **तुम्हारे** अधर्म के कामों ने **तुम्हारे** और **तुम्हारे** परमेश्वर के मध्य अलगाव की दीवार खड़ी कर दी है। **तुम्हारे** पापों ने परमेश्वर के मुख को **तुम से** छिपा दिया है ....।"*
(यशायाह 59:2)

संपूर्ण मानवी शाखा यह उसके सृष्टिकर्ता से अलग की गई है। मनुष्य यह आध्यात्मिक रूप से *"अपराध और पापो के कारण **मृत** है"*। (इफिसियों 2:1)

2. शारीरिक मृत्यु : व्यक्ति का आत्मा और प्राण उसके शरीर से *अलग होना*।

आदम और हव्वा ने जब पाप किया, वे केवल *आध्यात्मिक* रूप से मरे नहीं, वे भी *शारीरिक* रूप से मरने लगे। जिस तरह टूटी हुई शाख़ पर के पत्ते भी तुरंत सूखते नहीं, उसी तरह से आदम और हव्वा के शरीर जिस दिन उन्होंने पाप किया उसी दिन मृत नहीं हुए। फिर भी, उनके शरीर पर मृत्यु का आक्रमण हो चूका था, वह शत्रु जिससे वे बच नहीं सकते थे।

आदम और हव्वा और उनके वंशजों के लिए, यह कुछ समय की बात थी कि जब तक शारीरिक मृत्यु उन्हें नहीं आती। *"मृत्यु तेज ऊंट की संवारी करती है,"* एक अरब मुहावरा कहता है। कोई भी मृत्यु से बच नहीं सकते। परमेश्वर का वचन इस प्रकार कहता है:

"मनुष्य के लिए यह निर्धारित है कि एक ही बार उसकी मृत्यु हो और तत्पश्चात न्याय।"
(इब्रानियों 9:27)

3. अनंतकालीन मृत्यु : व्यक्ति का आत्मा, प्राण और शरीर परमेश्वर से सदा सर्वदा के लिए अलग होना।

एक जीवित शाखा की रचना इस प्रकार की गई है कि पत्ते, फूल और फल उत्पन्न करे। मृत शाखाओं को इकट्ठा करते और जलाते हैं। आदम ने जब परमेश्वर के विरोध में पाप किया, उसे जिसके लिए रचा गया था उस सौभाग्य को उसने खो दिया: कि संपूर्ण अनंतकाल में परमेश्वर की महिमा करे और उसके साथ जीवन व्यतीत करे। मनुष्य को, सदा सर्वदा अस्तित्व में रहने के लिए बनाया था, उसने उसके सृष्टिकर्ता-स्वामी की आज्ञाभंग की। परमेश्वर से *अनंतकाल के लिए* अलग होना यह उसका दंड था।

आदम और हव्वा के पाप के लिए प्रभु ने उसकी दया में एक समाधान प्रदान किया नहीं होता, तो जब उनके शरीर मृत हो जाते, तो शैतान और उसके भूतों के लिए तैयार किए हुए "कूड़े-के ढेर" में वे सदा-सर्वदा के लिए कैद में रखे जाने की भयानकता का सामना करते होते। बाइबल इसे *"दूसरी मृत्यु"* कहती है क्योंकि यह शारीरिक मृत्यु के बाद में आती है। इसे *"अनंतकाल का दंड"* भी कहते है।[127] एक अस्थायी शुद्धिकरण की धारणा जिससे लोग एक दिन बच निकलेंगे, मनुष्य का आविष्कार है।

अगर *"अनंतकालीन दंड"* अयोग्य या तर्कहीन ऐसा नजर आता है, शायद वह परमेश्वर के स्वभाव, पाप की गंभीरता और अनंतकाल की कल्पना को समझने में हमारी गलती के कारण से है।

बाद में हम परमेश्वर की पवित्रता और पाप की अशुद्धता पर चिंतन करेंगे।

अनंतकाल की अवधारणा के विषय में, हम इसे स्वीकार भी सकते हैं : *अनंतकाल* शब्द ही हमारी मानसिक क्षमताओं को अधिभारित करता है, क्योंकि हमारे संदर्भ का ढांचा *समय* है।

अनंतकाल यह *शास्वत* है।

अगर हम कल्पना करे कि नरक में कोई अरबों वर्ष व्यतीत कर देता है, तो हमारी सोच यह गलत है। अनंतकाल यह वर्षो से बना नहीं है। यह अनंतकाल अब है। एक बार जब लोग उस अपरिहार्य क्षेत्र में प्रवेश करते है, तो वे गंभीर तर्क को समझ लेंगे। आप एक अमीर मनुष्य के वृत्तांत को स्मरण करते हो क्या जिसका अंत नरक में हुआ था (अध्याय 3)? वह अब तक वहीं है।

परमेश्वर स्वर्ग के लिए उसके प्रवेश करने की आवश्यकताओं के विषय में स्पष्ट है :

> *"लेकिन कोई भी अपवित्र वस्तु अथवा कोई घृणित अथवा असत्य आचरण करने वाला उसमे प्रवेश **नहीं करने पाएगा**,...... ।"* (प्रकाशितवाक्य 21:27)

इस मुद्दे पर, यहां पर कोई समझौता नहीं है। जिस प्रकार परमेश्वर के प्राकृतिक नियम एक कटी हुई शाखा को मरने और मुरझाने का कारण बनते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर के आध्यात्मिक नियम को आवश्यकता है कि पाप को *आध्यात्मिक, शारीरिक और अनंतकाल के* ***अलगाव के*** साथ दंडित करना है।

पाप और लज्जा

यह समय है कि आदम और हव्वा के पास लौटे जहां हमने उन्हें आखरी बार देखा था; वाटिका के पेड़ों के बीच में परमेश्वर से छिपने का प्रयास कर रहे थे।

पाप करने से पहले, आदम और हव्वा परमेश्वर की महिमा और सिद्धता से घिरे थे। वे उनके सृष्टिकर्ता की उपस्थिति में पूरी तरह से आरामदायक थे। तथापि, उस क्षण जब उन्होंने परमेश्वर का नियम तोडा, उन्होंने अपने आपको अलग रूप से देखा। अब वे बेआराम थे, उनके शारीरिक नग्नता के केवल कारण से नहीं लेकिन उनके *आध्यात्मिक* नग्नता के कारण से भी।

उन्होंने उल्लंघन करने से पहले, आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रति सजग थे और *"उन्हें लज्जा न थी"* (उत्पत्ति 2:25)। अब वे अस्वाभाविक रीतिसे संकोच भरे थे और उनके पवित्र परमेश्वर के सम्मुख अशुद्ध महसूस कर रहे थे। आदम और हव्वा उनके सृष्टिकर्ता के प्रतिकूल हो गए। वे अब ***अपवित्र*** थे। वे अब परमेश्वर की उपस्थिति की शुद्धता और चमक में नहीं रहना चाहते थे। जैसे झींगुर कवर के नीचे दौड़ लगाते है जब प्रकाश चमकता है, उन्होंने अब *"ज्योति की अपेक्षा अंधकार से अधिक प्रेम किया, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। प्रत्येक दुराचारी मनुष्य ज्योति से बैर रखता है, वह ज्योति के समीप नहीं आता कि कही उसके कार्यों के दोष* ***प्रकट*** *न हो जाएं।"* (यूहन्ना 3:19-20)

आदम और हव्वा का पर्दाफाश और शर्मिंदगी हुई। एक सिद्ध उद्यान में उन्हें अजीब सा लग रहा था। परमेश्वर की पग-ध्वनी ने उन्हें भय से भर दिया था। अब उनके पवित्र, प्रेमी सृष्टिकर्ता के साथ वे नहीं रहना चाहते थे। फिर भी, उन्हें ढूंढने के लिए वह उद्यान में आया।

परमेश्वर के स्वभाव का यह एक हिस्सा है *"कि ढूँढ़े और बचाए जो भटक गया था।"* (लूका 19:10)

परमेश्वर मनुष्य को ढूँढ़ रहा है

> *"लेकिन प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पुकारा,* **'तू कहां है***?'*
> *उसने उत्तर दिया, 'मैंने उद्यान में तेरी पग-ध्वनी सुनी। मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैंने स्वयं को छिपा लिया है।' प्रभु परमेश्वर ने पूछा, 'किसने तुझसे कहा कि तू नंगा है? क्या तूने उस पेड़ का फल खाया है, जिसे न खाने के लिए मैंने तुझे आज्ञा दी थी?'"* (उत्पत्ति 3:9-11)

परमेश्वर का मनुष्य को पहले अभिलिखित प्रश्न पर ध्यान दें।

"तू कहां है?"

इस प्रेमी, भेदनेवाली प्रश्नावली के साथ, परमेश्वर चाहता था कि पाप ने उसे और उसकी पत्नी

को क्या किया था यह आदम समझ ले। वह चाहता था कि वे स्वीकार करे कि उन्होंने अपराध किया है। वह चाहता था कि वे समझ ले कि उनका पाप अब उनके और उनके पवित्र प्रभु के बीच आ गया है।

उनका पाप यह उनकी दुर्दशा का स्रोत था। उनके पाप के कारण वे लज्जित हुए और पेड़ों और अंजीर के पत्तों के पीछे छिपने का प्रयास किया। लेकिन आदम और हव्वा परमेश्वर से छिप नहीं सके, न ही वे उसके धर्मी, सर्व-ज्ञानी न्याय से बच सके।

पाप मृत्यु कमाता है

परमेश्वर मजाक नहीं कर रहा था जब उसने आदम को सूचित किया: *"जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम **मर जाओगे**!"* (उत्पत्ति 2:17) गहराई में हमारे हृदय के भीतर, हमें पता हैं कि वे जो उनके सृष्टिकर्ता के विरोध में विद्रोह करते हैं वे उससे अलग होने के पात्र हैं।

हम में से बहुतों ने सिनेमा देखे होंगे जिसमे "बुरे इन्सान" को मारा जाता है और "अच्छे इन्सान" विजयी होते हैं। "बुरे इन्सानों" के बारे हमें बुरा लगता है क्या? नहीं, हम सोचते है कि जिसके लिए वे पात्र थे वह उन्हें मिला। गंभीर सत्यता यह है कि परमेश्वर की आंखो में, आदम की सभी संतान "बुरे इन्सान" हैं।

> *"**सब** मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं, सब एक-जैसे भ्रष्ट हो गए हैं; ऐसा कोई भी **नहीं**, जो भलाई करता है; नहीं, एक भी नहीं।"* (भजन संहिता 14:3)

सृष्टिकर्ता के न्याय के मापदंड के अनुसार, हम सभी मृत्यु के दंड के पात्र हैं। परमेश्वर की पुस्तक इसे इस प्रकार संबोधित करती है :

> *"पाप और मृत्यु का **नियम**।"* (रोमियों 8:2)

पाप और मृत्यु का नियम यही मांग करता है कि परमेश्वर के विरोध में आज्ञाभंग का प्रत्येक कार्य परमेश्वर से अलग होने से दण्डित किया जाना चाहिए। इसमे कोई अपवाद नही होना है। पाप मृत्यु लाता है।

परमेश्वर के पवित्र और विश्वासी स्वभाव के कारण ही वह इस नियम का पालन करता है। पाप के केवल एक कार्य के द्वारा हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर की धार्मिकता और जीवन के राज्य से स्वयं को अलग किया, और शैतान के पाप और मृत्यु के राज्य में जा मिले।

तुरंत ही, वे **आध्यात्मिक** रूप से मर गए, जिस प्रकार एक शाखा एक पेड़ से कांटी जाती है। परमेश्वर के साथ उनका संबंध मृत हो गया।

साथ ही, वे **शारीरिक** रूप से मरना शुरू हुए, जिस प्रकार एक शाखा सूखते जाती है। यह केवल कुछ समय की बात थी कि जब तक उनके शरीर ये फिर से मिट्टी में न मिल जाए।

सबसे बुरा, उनके पाप और लज्जा के लिए जब तक प्रभु एक उपाय प्रदान नहीं करता, वे **अनंतकाल** के लिए मरने के भयानक संभावना का सामना कर रहे थे, अनंतकाल का अग्नि जो शैतान और उसके भूतों के लिए तैयार किया है उसमे परमेश्वर से सदा सर्वदा के लिए दूर किए जानेवाले थे।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है :

*"प्रत्येक आत्मा जो **पाप** करता है वह **मरेगा**।"* (यहेजकेल 18:20)
*"**पाप** की मजदूरी **मृत्यु** है........ ।"* (रोमियों 6:23)
*"**पाप**, बढ़कर **मृत्यु** को उत्पन्न करता है।"* (याकूब 1:15)

यह एक अच्छा कारण है परमेश्वर इस गंभीर सत्यता को *पाप और मृत्यु का नियम* कहता है। यह *नियम* है।

पाप को दण्डित करना अवश्य होना चाहिए।
उसे अवश्य पूरा किया जाएगा।

पाठ 13

दया और न्याय

मनुष्य क्या कर सकता है जो परमेश्वर नहीं कर सकता?

परमेश्वर की पुस्तक इस पहेली का उत्तर देती है।

> *"परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि वह झूठ बोले, और न वह मनुष्य का पुत्र है कि पश्चाताप करे! जो उसने कहा, क्या वह उसको न करे? जो वह बोले, क्या वह उसको पूर्ण न करे?"* (गिनती 23:19)

प्रत्येक दिन मनुष्य झूठ बोलते, उनके मन बदलते, और उनके वादों को तोड़ते हैं। असीमित सिद्ध एकमात्र उसके व्यक्तित्व के विरोध में कार्य नहीं कर सकता।

> *"वह अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य नहीं करते।"* (2 तीमुथियुस 2:13)

कुछ समय पहले, मुझे यह ई-मेल आया :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

आप कहते है अल्लाह एकपक्षीय क्षमा नहीं कर सकता। आप कहते है कि अल्लाह के हाथ उसके अपने नियम से बंधे हैं। आप ने लिखा : "परमेश्वर सब कुछ कर सकता है केवल अपने आपके विरोध में और अपने स्वयं के नियम को अनदेखा नहीं कर सकता।" अपने सबसे दयालु सृष्टिकर्ता से उसके सेवक जो क्षमा उससे मांगते हैं उन्हें क्षमा करने की क्षमता से अपने आपका प्रतिकार क्यों करे? वह उसकी दया पर ऐसे प्रतिबंध क्यों रखे?.....क्या आप यह देख नहीं सकते कि इसमे कोई अर्थ नहीं मिलता? यद्यपि उसे ऐसे नियम बनाने होते, तो वह उसे तुरंत ही तोड़ सकता है क्योंकि वह

> सर्वशक्तिमान है! यह तर्कहीन है यह वादविवाद करना कि अल्लाह उसके सर्वश्रेष्ठ शक्ति के साथ किसी भी तरह से सीमित है। अगर उसने इच्छा की, तो वह हमें नरक की अग्नि में फेक सकता है, लेकिन वह सबसे दयालु एकमात्र है और हमेशा ही उसके सेवकों को क्षमा करने को देखता है ताकि जब उनका न्याय हो तब वे सफल हो सके। ऐसा होवे की अल्लाह हम सभों को उसकी क्षमा प्रदान करे और उस दिन हम सभों पर दया करे जब हम सब एकत्र होंगे और न्याय के लिए अकेला खड़ा होना चाहिए!

पिछले पाठ में हमने जिस पर विचार किया उसके प्रकाश में, इस मनुष्य के तर्क करने के साथ क्या आप समस्या देखते है? हमारा सृष्टिकर्ता उसके स्वयं के स्थापित नियम अनदेखा करने और उसके स्वयं के पवित्र व्यक्तित्व के विरोध में जाने के लिए मुक्त है?

न्याय बगैर दया

न्यायालय के इस दृश की कल्पना कीजिए :

न्यायाधीश बेंच पर बैठा है। *बँक* डैकेती और संगीन-खून किया हुआ एक अपराधी मनुष्य उनके सम्मुख खड़ा है। न्यायालय गवाही देनेवालों से भरा है। खुनी अपराधी की पत्नी और परिवार डाका पड़े हुए *बँक* के कर्मचारियों के साथ उपस्थित है। उस क्षण को रिकोर्ड करने के लिए समाचार दल तैयार है।

इस खूनी को अब क्या सजा मिलेगी? मृत्यु का दंड? छुट्टी बगैर आजीवन कारावास?

सभी को कठघरे में खड़े रहने को कहा जाता है।

अपराधी मनुष्य को सीधे देखते हुए, न्यायाधीश ने कहा, "मैंने जांच-पड़ताल की है कि आप दानधर्म करने में ईमानदार और आपकी प्रार्थनाओं में नियमित थे। जिस तरह आप उन प्रार्थना माला को उंगली करते हैं वह प्रभावशाली है। और हमेशा अनजान व्यक्ति के साथ आपका भोजन साझा करने के लिए तैयार थे। आपका न्याय तो वास्तव में होना था, लेकिन आपके अच्छे काम आपके बुरे कामों पर भारी हुए हैं। मैं तुम पर दया करता हूं। आपको क्षमा किया गया है और जाने के लिए स्वतंत्र है।"

जज ने हथौड़े से मारा।

सभी अचंभित हो गए थे और उस कक्ष में क्रोध से बड़बड़ाने की आवाजे आने लगी थी...

न्यायालय कक्ष में ऐसे कथानक कभी सुने नहीं गए थे। परिमाण शायद उपयोग में लाए गए होंगे कि दोषी के संबंध में प्रमाणों की जांच चिन्हित करे, लेकिन एक बार कि वह अपराध का दोषी

पाया जाए, तो योग्य सजा देनी चाहिए। फिर अगर अपराधी ने "अच्छे कार्य" किए या न किए हो यह असंगत है। हम सभी को यह पता हैं।

अगर अच्छे कार्यों की यह पद्धति" बुरे कार्यो पर भारी पड़ती है यह मनुष्य के पार्थिव न्यायालय में कभी उपयोग नहीं किया जाता, तो क्या आप सोचोगे कि ऐसी अयोग्य प्रक्रिया परमेश्वर के स्वर्गीय न्यायालय कक्ष में उपयोग में लाई जाएगी।

धर्मी न्यायाधीश

हमारे कल्पना की कहानी में के न्यायाधीश समान परमेश्वर नहीं है। उसका एक शीर्षक *"**धर्मी** न्यायाधीश"* है (2 तीमुथियुस 4:8)। चार हजार वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता अब्राहम ने पूछा, *"क्या पृथ्वी का न्यायाधीश उचित न्याय न करेगा?"* (उत्पत्ति 18:25)

परमेश्वर दया दिखाने के लिए उसके न्याय को कभी अनदेखा नहीं करता। ऐसा करना यह उसके धर्मी सिंहासन के आधार को नष्ट करना और उसके पवित्र नाम की प्रतिष्ठा को कलंकित करना होगा।

> *"**धार्मिकता और न्याय** तेरे सिंहासन के मूल हैं; **करुणा और सच्चाई** तेरे आगे-आगे चलती हैं।"* (भजन संहिता 89:14)

सुझाव देने के लिए, जैसे हमारे ई-मेल संवाददाता ने किया है, कि परमेश्वर उसकी "सर्वश्रेष्ठ शक्ति" का उपयोग कर सकता है कि उसके स्वयं के नियम की अवहेलना करे यह अर्थ देता है कि "संपूर्ण पृथ्वी का न्यायाधीश", जिन पापियों का वह न्याय करनेवाला है उनसे कम धर्मी है।

यह कितना अनोखा है कि हम मानव जिन्हें न्याय की गहन और स्वाभाविक भावना होनी चाहिए , फिर भी यथार्थ सत्य का प्रतिकार करते है कि हमारे सृष्टिकर्ता के पास न्याय की वही भावना है! हमारे हृदयों में गहराई तक हम सभीं को पता है कि यहां पर न्यायाधीश के विषय में कुछ भी "महान" नहीं है जो बुराई को दंडित करने में असफल होता है।

भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने लिखा:

> *"…..उसकी **सच्चाई अपार है।** मेरा प्राण कहता है, 'प्रभु ही मेरा अंश है, अत: मैं उसकी आशा करूंगा।"* (विलापगीत 3:23-24)

ध्यान दें भविष्यद्वक्ता ने यह नहीं कहा, "महान आपकी अप्रत्याशितता है!" या "आपकी अस्थिरता महान है!" ऐसे लहरी परमेश्वर में हम किस प्रकार की आशा रख सकते हैं? परमेश्वर

विश्वसनीयता में महान है। बहुत सारे जो आदत से परमेश्वर को "दयालु और करुणामय" ऐसा संबोधित करते हैं वे भूल जाते हैं कि वह भी परमेश्वर है जो *"विश्वासयोग्य और न्यायी"* है। (1 यूहन्ना 1:9)

एक-तरफा दृष्टिकोण परमेश्वर के बारे में विकृत दृष्टिकोण की ओर ले जाता है।

परमेश्वर का सन्तुलित स्वभाव

एक पक्षी के लिए उड़ने के लिए समर्थ होने के लिए, कौनसा पंख महत्वपूर्ण है, बांया या दांया?

स्पष्ट रूप से, पक्षी को उड़ने के लिए दोनो पंखों की आवश्यकता है! जो कोई भी सोचता है कि पक्षी एक पंख से उड़ सकता हैं वह पक्षी के स्वभाव और गुरुत्वाकर्षण और वायु-गति-विज्ञान को अनदेखा कर रहा है।

उसी रीति से, कोई भी जो सुझाव देता है कि परमेश्वर उचित न्याय करने के बगैर दया दिखा सकता है वह परमेश्वर का स्वभाव और पाप और मृत्यु के नियम को अनदेखा करता है।

परमेश्वर की दया और न्याय ये हमेशा ही सिद्ध संतुलन में हैं। राजा दाऊद ने लिखा :

*"मैं करुणा **और** न्याय के गीत गाऊंगा; हे प्रभु, तेरे लिए मैं राग बजाऊंगा।"*
(भजन संहिता 101:1)

दाऊद, जिसने कुछ बड़े ही घृणित पाप किए थे, यह जानता था कि वह परमेश्वर की दया के योग्य नहीं है। परिभाषा के अनुसार दया अपात्र है।

***न्याय** यह दंड प्राप्त करना जिसके योग्य हम है।*
***दया** यह दंड प्राप्त नहीं करना जिसके योग्य हम है।*

दाऊद परमेश्वर की स्तुति गीत गाने का कारण यह था कि उसे यह पता था कि प्रभु ने एक मार्ग योजित किया है कि उचित न्याय किए बगैर अयोग्य पापियों को दया दिखाए। इसी कारण से दाऊद ने *"दया **और** न्याय"* के विषय में गाया।

पाप की क्षमा यह हमारे पवित्र परमेश्वर के लिए एक साधारण विषय नहीं है। वह इस संतुष्टि के अलावा किसी पापी को कभी क्षमा नहीं करता कि पापियों के अपराधों को पर्याप्त रूप से न्याय और दंडित किया गया है। मनुष्य के रूप में, अगर कोई हमारे साथ गलत करता है, तो हम उससे कह सकते हैं, "चलो ठीक है। बस इसे भूल जाओ। यह कोई बड़ी बात नहीं।" हम शायद अनुग्रहकारी होकर उस तरह एक व्यक्ति को क्षमा करने का चुनाव करते हैं, लेकिन अत्यधिक पवित्र न्यायाधीश

वैसे नहीं कर सकता।

परमेश्वर की दया परमेश्वर के न्याय को कभी नकारती नहीं। वह कभी नहीं कहता, "मैं तुझसे प्रेम करता हूं, ताकि मैं आपके पाप का न्याय न करू।" न ही वह यह कहता है, "क्योंकि आप ने पाप किया है, मैं आपसे प्रेम नहीं करता।" परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है, लेकिन उनको अलग करना और उनके पापों का दंड देना चाहिए।

अगर इसी समान परमेश्वर है, तो अपराधी पापियों को संभवतः वह कैसे दया दिखा सकता है?

न्याय के साथ दया

आदम और हव्वा की परिस्थिति का विचार करो।

क्योंकि ***परमेश्वर प्रेमी और दयालु है,*** वह यह नहीं चाहता कि आदम और हव्वा उससे अलग हो जाए। वह चाहता है कि वे हमेशा उसके साथ रहे और अनंतकाल के अग्नि में उनका अंत न होवे।

"प्रभु नहीं चाहता है कि किसी का विनाश हो...... ।" (2 पतरस 3:9)

तथापि, क्योंकि ***परमेश्वर पवित्र और न्यायी है,*** वह आदम और हव्वा के पाप को अनदेखा नहीं कर सका। परमेश्वर को इसका दंड देना था।

"हे प्रभु, तू निर्मल आंखोवाला है, अत: तू बुराई को देख नहीं सकता .... ।" (हबक्कूक 1:13)

तो परमेश्वर फिर क्या करेगा? पापियों को दंड दिए बगैर पाप को दंडित करने का यहां पर कोई मार्ग है क्या? पाप का मैलापन कैसे निकाला जाता और सिद्ध पवित्रता कैसे स्थापित की जा सकती है? भविष्यद्वक्ता अय्यूब के प्रश्न, इसके लिए यहां पर कोई संतोषजनक उत्तर है क्या? *"**मनुष्य** परमेश्वर के सम्मुख कैसे **धर्मी** ठहर सकता है?"* (अय्यूब 9:2) परमेश्वर का धन्यवाद हो कि इसका उत्तर है।

पवित्रशास्त्र प्रकट करता है कि अपराधी घोषित पापी जैसे आदम और हव्वा और आप और मुझ समान (रोमियों 3:26) जैसे को *"न्यायी **और** धर्मी"* दोनों ही ठहराने के लिए धर्मी न्यायाधीश ने क्या किया? उचित न्याय करते हुए आपको दया प्रदान करने के लिए उसने क्या किया यह आपको पता है क्या?

उत्तर यह आगे है। यात्रा जारी रखें।

मेरी गलती नहीं

अब तक के लिए, आइए हम उस संभाषण को सुने जो हमारे दूषित पूर्वज और उनका सृष्टिकर्ता जो उनका न्यायाधीश बन गया था।

"लेकिन प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पुकारा, 'तू कहां है?'

उसने उत्तर दिया, 'मैंने उद्यान में तेरी पग-ध्वनी सुनी। मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैंने स्वयं को छिपा लिया है।' प्रभु परमेश्वर ने पूछा, 'किसने तुझसे कहा कि तू नंगा है? क्या तूने उस पेड़ का फल खाया है, जिसे न खाने के लिए मैंने तुझे आज्ञा दी थी?' मनुष्य ने उत्तर दिया, 'जो स्त्री तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है, उसने उस पेड़ का फल मुझे दिया, और मैंने उसे खा लिया।' प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, 'यह तूने क्या किया?' स्त्री ने उत्तर दिया, 'सांप ने मुझे बहका दिया और मैंने फल खा लिया।"
(उत्पत्ति 3:9-13)

प्रभु ने आदम और हव्वा से प्रश्न क्यों किया?

माता-पिता उनके हठीले बच्चों को जिस कारण से प्रश्न पूछते है वैसे ही उसने उन्हें प्रश्न किया, तब भी जब माता-पिता जानते है कि बच्चे ने क्या किया है। परमेश्वर चाहता था आदम और हव्वा उनके पाप और अपराध को पहचाने। तथापि, उनके पाप को स्वीकार करने बजाय, प्रत्येक ने दूसरे को दोष देने का प्रयास किया।

आदम ने परमेश्वर और हव्वा को दोष दिया : यह मेरी गलती नहीं! जो स्त्री तूने मुझे दी—यह उसकी गलती है!

हव्वा ने सांप को जिम्मेदार ठहराया : सांप ने मुझे फंसाया!

क्योंकि वे मानव थे और प्रोग्राम की गई कठपुतली नहीं, परमेश्वर ने उन्होंने जो निर्णय किया था उसके लिए उन्हें जिम्मेदार ठहराया। उन्हें किसी और को नहीं लेकिन अपने आपको दोष देना चाहिए था।

"प्रलोभनों में पड़ा हुआ कोई व्यक्ति यह न कहे कि परमेश्वर उसे प्रलोभन में डालता है, क्योंकि परमेश्वर बुरी बातों से न तो प्रलोभन में पड़ता है और न किसी को प्रलोभन में

*डालता है। प्रत्येक व्यक्ति **अपनी बुरी इच्छा** से आकर्षित होता और विमुख होकर प्रलोभन में पड़ता है। बुरी इच्छा के गर्भ से **पाप** का जन्म होता है, और पाप बढ़कर **मृत्यु** को उत्पन्न करता है।"* (याकूब 1:13-15)

उनके सृष्टिकर्ता की योजना के अनुसार चलने के बजाय, आदम और हव्वा *"स्वयं की इच्छाओं"* के अनुसार चले जो उन्हें पाप और मृत्यु के मार्ग की ओर ले गया।

हव्वा शैतान द्वारा फुसलाई और ठगी गई। आदम को, जिसे परमेश्वर ने मना किया था कि भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल न खाना, उसने जानबूझकर उसके सृष्टिकर्ता की आज्ञाभंग करने का चुनाव किया।

"इसके अतिरिक्त आदम बहकावे में नहीं आया किंतु स्त्री भ्रम में पड़कर पतित हुई।" (1 तीमुथियुस 2:14)

जानबूझकर या ठगा जाना, दोनों ही अपराधी है, लेकिन आदम के वर्जित फल खाने के बाद ही पवित्रशास्त्र घोषित करता है, *"**तब उनकी** आँखे खुल गई।"* (उत्पत्ति 3:7)

परमेश्वर ने मानवजाति को धार्मिकता और जीवन के राज्य से पाप और मृत्यु के दासत्व में ले जाने के लिए हव्वा को नहीं, आदम को जिम्मेदार ठहराया। परमेश्वर ने आदम को सौभाग्य दिया था कि मानवजाति का मस्तक होवे, लेकिन बड़े सौभाग्य के साथ बढ़ी जिम्मेदारी भी आती है।

आदम के पाप ने हम सभीं को दूषित किया, लेकिन हमने जो चुनाव किए है उसके लिए हम उसे दोषी नहीं ठहरा सकते।

*"अत: **हममें से प्रत्येक** मनुष्य अपना-अपना लेखा परमेश्वर को देगा।"* (रोमियों 14:12)

पाठ 14

श्राप

छिपाने और बहाने बनाने का समय समाप्त हो गया था।

आदम ने उसके स्वयं का मार्ग चुना था, लेकिन उस मार्ग के परिणाम उसने चुने नहीं थे। संपूर्ण सृष्टि चुप रहेगी क्योंकि धर्मी न्यायी ने शापों की श्रृंखला और मनुष्य के पाप द्वारा लाए गए परिणामों की घोषणा की।

सांप

प्रभु ने "सांप" पर विनाश की घोषणा करते हुए प्रारंभ किया।

> *"प्रभु परमेश्वर ने सांप से कहा, तूने यह कार्य किया, इसलिए तू समस्त पालतू पशुओं तथा सब वन-पशुओं में **शापित है**! तू पेड़ के बल चलेगा। तू आजीवन धुल चाटता रहेगा। मैं तेरे और स्त्री के बीच तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य शत्रुता उत्पन्न करूंगा। वह तेरा सिर कुचलेगा, और तू उसकी एडी डसेगा।"* (उत्पत्ति 3:14-15)

यह सांप कौन था जिससे परमेश्वर बात कर रहा था? सृष्टिकर्ता एक रेंगनेवाले जीव-जंतु पर क्रोधित था क्या?

परमेश्वर के शब्द पवित्रशास्त्र में कभी कभी दो-स्तरिय संदेश शामिल करते है, खांस करके दृष्टांत और नबुवते। यहां *स्पष्ट रूप से ऊपरी अर्थ* है और फिर यहां *कम-स्पष्ट गहरा अर्थ* है। इस घोषणा के साथ यही तो प्रकरण है।

श्राप जो सांप पर आया उसके दो स्तर है।

स्तर 1 : एक स्थायी उदाहरण

पहले, सांप को श्राप देने के द्वारा (उस पर न्याय घोषित करने पर), प्रभु मानवजाति के समक्ष स्थायी उद्देश्य उपदेश रख रहा था। रेंगनेवाला जंतु जिसका शैतान ने उपयोग किया कि मनुष्य को पाप करने में प्रलोभन दे वह अब से जमीन पर रेंगेगा। सभी सांपों का यही लक्षण होगा। आदम और हव्वा ने पाप करने से पहले, जाहिर तौर पर सांपों के पैर अन्य सरीसृपो की तरह होते थे। आज के दिन तक, सांपों की प्रजातियां, जैसे कि अजगर और बोआ कंस्ट्रीक्टर ऊपरी-पैर की हड्डियों के अवशेष हैं।[128]

पाप अपराधी और दोषहीन दोनों के लिए समान रूप से बहुत ही जटिलताएं निर्माण करता है। यह इस कारण से है कि *"सारी सृष्टि कराह रही है"* (रोमियों 8:22)। निष्पाप प्राणी जगत भी उससे प्रभावित हुए है।

यह अच्छे कारण के लिए है कि पाप करने के लिए मनुष्य के चुनाव को ***पतन*** कहा जाता है।

स्तर 2 : शैतान का आसन्न विनाश

बाइबल कहती है, *"...पवित्रशास्त्र की कोई भी नबूवत व्यक्तिगत परिभाषा का विषय नहीं है"* (2 पतरस 1:20)। पवित्रशास्त्र पवित्रशास्त्र का अनुवाद करता है। परमेश्वर ने "सांप" पर उसके श्राप के दूसरे भाग में क्या घोषित किया वह हम पर दबाव लाता है कि पवित्रशास्त्र में गहराई में जाए।

> *"मैं तेरे और स्त्री के बीच तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य शत्रुता उत्पन्न करूंगा। वह तेरा सिर कुचलेगा, और तू उसकी एडी डसेगा।"* (उत्पत्ति 3:15)

वह सांप कौन था जिससे परमेश्वर ने बातचीत की? पवित्रशास्त्र उसे एक घमंडी स्वर्गदूत के रूप में पहचानती है जिसे *"जमीन पर फेंका गया था"* (यशायाह 14:12)। *"तब वह भयंकर अजगर-वह* ***पुराना सांप*** *जो दोष लगानेवाला* ***शैतान*** *कहलाता है, और संसार भर को भटकाता रहता है; पृथ्वी पर फ़ेंक दिया गया और उसके साथ उसके दूत भी फ़ेंक दिए गए।"* (प्रकाशितवाक्य 12:9)[129]

सांप और कोई नहीं पर शैतान था।

सांप के लिए यथास्थित भाषा उपयोग में लाकर, प्रभु, शैतान और जो उसके पीछे चलते है उनके लिए विनाश घोषित कर रहा था। वहां पर शैतान का "**वंशज**" (संतति) और स्त्री का **"वंशज"** (संतति) के मध्य *"शत्रुता"* (मेलमिलाप न होनेवाली शत्रुता) होगी। अंत में, "स्त्री का बीज" सांप के "सिर" को कुचलेगा।

यह सब कुछ परमेश्वर के समयसारिणी के अनुसार पूरा होगा।

दो "वंशज"

इन दो वंशजों के विषय में क्या बात हैं? सांप का वंशज और स्त्री का वंशज ये किसे संबोधित किया है?

सांप के वंशज उन्हें संबोधित करता हैं जो परमेश्वर के विरोध में विद्रोह करते हैं जैसे शैतान ने किया था। वे जो शैतान के झूठ के अनुसार चलते हैं, वे आध्यात्मिक अर्थ से, शैतान के बच्चें हैं।

> *"तुम तो अपने पिता शैतान से हो और अपने इस पिता की इच्छाएं पूरी करना चाहते हो। वह आरंभ से ही हत्यारा था। वह सत्य पर स्थिर नहीं, क्योंकि सत्य उसमे है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तब अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।"* (यूहन्ना 8:44)

स्त्री का वंशज फिर कौन है?

यह एक अनोखी अवधारणा है। बाइबल के संपूर्ण इतिहास में, एक व्यक्ति के भावी पीढ़ी का श्रेय स्त्री की अपेक्षा पुरुष को दिया जाता है। फिर भी जिस दिन पाप ने जगत में प्रवेश किया, परमेश्वर ने स्त्री के वंशज के बारे में बात की। क्यों?

परमेश्वर द्वारा यह घोषणा यह पहली भविष्यवाणी थी जो मसीहा की ओर इशारा कर रही थी जो एक स्त्री से जन्म लेनेवाला था, लेकिन पुरुष से नहीं। मसीहा का अक्षरशः अर्थ अभिषिक्त जन, या चुना हुआ। पुराने नियम के समय में, जब कभी एक पुरुष को परमेश्वर द्वारा चुना जाता था कि लोगों का अगुआ बने, एक अधिकृत व्यक्ति बने, जैसे भविष्यद्वक्ता, तब उसे अभिषिक्त किया जाता था (उसके सिर पर तेल डाला जाता था) यह दिखाने के लिए कि वह एक विशेष नियत कार्य के लिए परमेश्वर द्वारा चुना हुआ है।[130]

तथापि, मसीहा अन्य सभी से अलग होगा। वह अभिषिक्त जन होगा। इतिहास में बिल्कुल सही समय पर, परमेश्वर का चुना हुआ जगत में प्रवेश करेगा कि *".....मृत्यु के अधिकारी शैतान को **नष्ट** करे, और जिनको जीवन भर मृत्यु का भय दासत्व में जकडे रहा है, उन्हें **मुक्त** कर दें।"* (इब्रानियों 2:14-15)

हालांकि परमेश्वर ने मानवजाति में पाप का प्रवेश होने के पहिले दिन पर उसकी संपूर्ण योजना प्रकट नहीं की, इस गर्भित भविष्यवाणी ने आदम और हव्वा और उनके वंशज को आशा की एक झलक प्रदान की। इस प्रथम प्रतिज्ञा में अनगिनत आधारभूत सत्य सम्मिलित हैं जिन्हें परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता बाद में विस्तार से विकसित करेंगे।[131]

श्राप

स्त्री का वंशज जो सांप का सिर कुचलेगा इसके विषय में उसके विचारपूर्वक शब्दों की भविष्यवाणी के अनुसार, प्रभु ने आदम और हव्वा को उनके पाप के कुछ व्यवहारिक परिणामों से अवगत कराया। इन परिणामों को ***श्राप*** कहा जाता है।

> *"प्रभु परमेश्वर ने स्त्री से कहा, 'मैं तेरी प्रसव-पीड़ा को असहनीय बनाऊंगा। तू पीड़ा से ही बच्चों को जन्म देगी। तेरी इच्छाएं पति के लिए होगी। वह तुझपर शासन करेगा।' प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य से कहा, 'तूने अपनी पत्नी की बात सुनी, और उस पेड़ का फल खाया जिसके विषय में मैंने आज्ञा दी थी कि "उसका फल न खाना।" अतएव तेरे कारण भूमि शापित हुई। उसकी फसल खाने के लिए तुझे जीवनभर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। वह तेरे लिए कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी। तू खेत की उपज खाएगा। तू तब तक अपने पसीने की रोटी खाएगा, जब तक उस मिट्टी में न मिल जाए जिससे तू बनाया गया था। तू तो मिट्टी है, और **मिट्टी में मिल जाएगा**।' "* (उत्पत्ति 3:16-19)

आदम और हव्वा का उनके सृष्टिकर्ता के विरोध में विद्रोह करने का चुनाव यह एक भयानक किमत लेबल के साथ।

परिवार होने की ख़ुशी अब परेशानी और दर्द के साथ होगी। अनाज, फल और सब्जियां प्राकृतिक रूप से बनाने के बजाय, पृथ्वी की शापित भूमि प्राकृतिक रूप से जंगली पौधे, कांटे और ऊंटकटारे निर्माण करने लगी। विश्राम और आनंद की जगह अब संघर्ष और कठिन परिश्रम द्वारा बदल गई थी। और भी ख़राब, मनुष्य का क्षणभंगुर जीवन एक तानाशाह जिसका नाम मृत्यु द्वारा भारी पड़ गया।

मनुष्य ने स्वामित्व गंवा दिया था। पाप एक अभिश्राप लाया था।

क्या मृत्यु सामान्य है?

वे जो पवित्रशास्त्र की अवहेलना करते हैं उनमें कठिनाई, क्लेश, नुकसान, बिखरे संबंध, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु को सामान्य रूप में देखने की प्रवृत्ति रहती हैं। पाप के श्राप के विषय में सच्चाई को समझना यह समझने की कुंजी है कि हमारे कराहते ग्रह पर चीजें वैसी क्यों हैं जैसी वे हैं। कई बुद्धिमान लोग परमेश्वर के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में मानवजाति की दयनीय स्थिति की ओर इशारा करते हैं। वे इस प्रकार तर्क करते हैं ताकि वे पाप के प्रवेश और प्रभाव को नहीं पहचानते।[132]

सेनेगल में, लोग कभी कभी कहते हैं (खांस करके अंत्येष्टि के समय), "परमेश्वर ने जीवन बनाने से

पहले मृत्यु का निर्माण किया है।" अनेक लोग उस तत्वज्ञान से सांत्वना प्राप्त करते हैं। लेकिन ऐसी सोच तर्क और पवित्रशास्त्र दोनों ही के विरोध में है, जो मृत्यु को *"अंतिम शत्रु जो नष्ट हो जाएगा"* के रूप में चित्रित करता है। (1 कुरिंथियो 15:26)

बुराई, शोक, कठिनाई, क्लेश और मृत्यु शायद सामान्य दिखते हैं, लेकिन ऐसे भेदनेवाले घटक कैंसर कोशाणु जैसे एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर के लिए सामान्य है उससे अधिक इस जगत के लिए वे सामान्य नहीं हैं।

महकती गुलाब की झाड़ी में कांटे, फसल कांटने के लिए जद्दोजहद, नन्हे-मुन्ने बच्चों में दिखी जिद, पति उसके प्रेमी पत्नी से किस तरह बुरा व्यवहार करता है, बच्चे के जन्म की अद्भुतता के साथ जो पीड़ा रहती है, रोग जो शरीर के प्रतिरक्षी तत्रं का विनाश करता है, वृद्धावस्था की क्रूरता, मृत्यु की कठिन सत्यता और हमारे शरीर मिट्टी में फिर से मिल जाना-ये सब परमेश्वर की मूल योजना का हिस्सा नहीं हैं। परमेश्वर ने सृष्टि का निर्माण इसलिए नहीं किया कि अपने आपसे संघर्ष करे।

पाप ने प्रवेश करने से पहले, मनुष्य को सृष्टि पर स्वामित्व था। सभी बातें आदम और उसकी पत्नी के सिद्ध अधीनता में थी। धार्मिकता और शांति ने पृथ्वी को भर दिया था। फिर हमारे प्रारंभिक पूर्वज पाप और मृत्यु के पथ पर चले गए, और उसके साथ एक अशुद्ध और मरणासन्न मानवजाति गई।

संपूर्ण सृष्टि प्रभावित हुई

"लेकिन यह ठीक नहीं है!" कोई कहता है, "दूसरे मनुष्य के पाप के कारण क्योंकर किसी को दुःख उठाना चाहिए?"

हम सब अपने अपने चुनाव करते हैं और यह उन चुनावों के लिए परमेश्वर हमें जिम्मेदार ठहराता है, लेकिन यह भी सच है कि हम एक शापित जगत में रहते हैं। वोलोफ मुहावरे के पीछे की सत्यता स्वयं-प्रमाणित है: *"एक महामारी उसके कारण तक ही सीमित नहीं रखती है।"*

पाप का स्वभाव यह है। जीवन यह अब ठीक नहीं रहा। आदम के एक पाप के परिणाम से *"समस्त सृष्टि अब तक प्रसव वेदना के कष्ट से कराह रही है।"* (रोमियों 8:22)

पाप के श्राप के द्वारा सभी प्रभावित हुए हैं।

सुसमाचार यह है कि आरंभ से हमारे सृष्टिकर्ता के पास छुड़ाने की एक साहसी योजना थी। ठीक उसी तरह जैसे एक घड़िसाज़ एक घड़ी में एक तंत्र निर्मित करता है जिसके द्वारा उसे इन बलों से निपटने के लिए समायोजित किया जा सकता है जो इस समय से दूर ले जाने का कारण बनते हैं, इसलिए विश्व के बनानेवाले ने उसके संसार में एक "तंत्र" बनाया है जिसके द्वारा वह शैतान, पाप और मृत्यु की घातक शक्तियों को बाहर कर सके। पाप को प्रवेश करने देना, उसी प्रकार एक योजना कि पाप के श्राप को बदल दे और वे सब जो उस पर विश्वास करते हैं उन्हें उसका अनुग्रह प्रदर्शित करने में आरंभ से परमेश्वर के पास एक उद्देश्य था।

*शोक, पीड़ा, और मृत्यु ये परमेश्वर की कहानी के आरंभ से आसपास नहीं थे, न ही वे अंत में आसपास होंगे। एक दिन पाप और उसके श्राप को मिटा दिया जाएगा। "परमेश्वर उनकी आंखो से **सब आंसू पोंछ डालेगा।** इसके अनंतर **न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप** और न कष्ट, क्योंकि पहली बातें बीत चुकी हैं। ....अब से **कुछ भी शापित नहीं होगा।**"* (प्रकाशितवाक्य 21:4; 22:3) इस गौरवमय भविष्य के विषय में हमारे यात्रा के अंत के निकट हम अधिक सीखेंगे।

परमेश्वर का अनुग्रह

आदम और हव्वा ने भले-बुरे के ज्ञान के पेड़ से खाने के बाद उन्होंने क्या किया यह आपको स्मरण है क्या?

उन्होंने अपने लिए अंजीर के पत्तों का आवरण बना लिया। पाप और लज्जा को ढांकने का यह मनुष्य का पहिला प्रयास था। परमेश्वर ने आदम और हव्वा के आत्म-प्रयासों का स्वीकार नही किया। इसके बजाय, परमेश्वर ने उनके लिए कुछ किया।

> *"प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी को चमड़े के वस्त्र बनाकर पहिनाए।"*
> (उत्पत्ति 3:21)

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को जानवरों की चमड़ी से वस्त्र बनाए। यह करने के लिए, लहू बहाया गया था।

कल्पना कीजिए की प्रभु कुछ भेड़ या योग्य जानवर को चुन रहा था, उनका बलिदान करके, और फिर आदम और हव्वा के लिए "चमड़े के वस्त्र" बनाए। परमेश्वर ने उसके पवित्र स्वभाव के विषय में पाप की ऊँची किमत, और इतने शर्मनाक रूप से अयोग्य पापी व्यक्तियों को परमेश्वर के लिए कैसे स्वीकार्य बनाया जा सकता है इसके विषय में महत्वपूर्ण सबक सिखा रहा था।

आदम और हव्वा के लिए विशेष वस्त्र प्रदान करने के द्वारा, उनका सृष्टिकर्ता उसका अनुग्रह उन्हें दिखा रहा था जिन्होंने अभी उसके विरोध में विद्रोह किया था। परमेश्वर की दया के लिए वे लायक नहीं थे, लेकिन यही तो अनुग्रह है-**अयोग्य** मेहरबानी।

न्याय *यह जिसके योग्य* (= अनंतकाल का दंड) *हम है उसे प्राप्त करना है।*
दया *यह जिसके योग्य* (= दंड नहीं) *हम है उसे प्राप्त नहीं करना है।*
अनुग्रह *यह जिसके हम योग्य नहीं* (=अनंतकाल का जीवन) *है उसे प्राप्त करना।*

परमेश्वर की धार्मिकता

आदम और हव्वा के लिए जानवरों को मारने के द्वारा, परमेश्वर चाहता था कि वे समझे कि वह केवल *"अनुग्रहकारी परमेश्वर"* नहीं, लेकिन "*धर्मी परमेश्वर*" भी है (भजन संहिता 86:15; भजन संहिता 7:9)। पाप को मृत्यु के साथ दंडित करना चाहिए। आदम और हव्वा के विचारों की कल्पना कीजिए जब उन्होंने देखा की इन सुंदर जीवों से लहू बह रहा है। परमेश्वर ने उनके सम्मुख एक सुस्पष्ट उदाहरण रखा: उनके पाप के लिए दंड यह मृत्यु था। आदम और हव्वा को उसी दिन मृत्यु दिया जाना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय निर्दोष जानवर मर गए थे। परमेश्वर ने स्वयं पहिला लहू बलिदान किया। लाखो और होते रहेंगे।

यह भी ध्यान दें कि वह प्रभु था जिसने उन्हें जानवरों की चमड़ी जिसकी उसने पुर्तता की थी उसके साथ "वस्त्र आवरण" कराए थे। आदम और हव्वा ने उनके पाप और लज्जा को ढकने की कोशिश की थी, लेकिन उन प्रयासों से परमेश्वर संतुष्ट नहीं हुआ। केवल उसी के पास मार्ग है कि उनके पाप और लज्जा से उन्हें बचाए।

पापियों को बाहर किया गया

उत्पत्ति का अध्याय 3 इस प्रकार समाप्त होता है :

"प्रभु परमेश्वर ने कहा, 'देखो, मनुष्य भले और बुरे को जानकर हम में से एक के समान बन गया है। अब कही ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़ ले, और उसे खाकर अमर हो जाए। ' अत: प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के उद्यान से भेज दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे, जिसमें से उसे बनाया गया था। उसने मनुष्य को निकाल दिया। उसने जीवन के वृक्ष की ओर जाने वाले मार्ग की रखवाली करने के लिए अदन के उद्यान की पूर्व दिशा में करुबों तथा चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को नियुक्त किया।" (उत्पत्ति 3:22-24)

जिस प्रकार लूसिफर और उसके दूतों को आकाश के स्वर्ग से निकाल दिया था जब उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के विरोध में उनकी इच्छा को पूरा किया था, उसी प्रकार मनुष्य और उसकी पत्नी को पृथ्वी पर के स्वर्ग से निकाल दिया जब परमेश्वर की इच्छा के विरोध में उन्होंने कार्य किया था।

इस प्रकार, मनुष्य को परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति और जीवन के वृक्ष से (भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ के साथ भ्रमित न होना) दूर किया गया था। पवित्रशास्त्र के द्वारा हमारी यात्रा के समापन के निकट हम आकाश के स्वर्ग में इस विशेष पेड़ की और एक झलक देखेंगे। जीवन का पेड़ अनंतकाल के जीवन का वरदान चिन्हित करता है जो परमेश्वर सभी को प्रदान करता है जो उसमे और उसकी योजना में विश्वास करते हैं।

भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से खाने के द्वारा, आदम और हव्वा ने अनंतकाल के जीवन के मार्ग को इन्कार किया था और अनंतकाल की मृत्यु के मार्ग को चुना था। पाप द्वारा आकाश और पृथ्वी के बीच का हर्षपूर्ण संबंध टूट गया था।

आदम और हव्वा को गंभीर समस्या थी।

उसी प्रकार हमें भी है।

पाठ 15

दोहरी मुसीबत

भागा हुआ अपराधी जो 38 वर्षों से भाग रहा था उसे फिर से पकड़ा गया, इसे मई 2006 के मुख्य समाचार ने घोषणा की थी।

एक वृत्तांत किसी श्री स्मिथ के बारे में दिया गया था जो 1968 में कॅलीफोर्निया के कारागार से भाग गया था जब वह डकैती के लिए सजा भुगत रहा था।

38 वर्षो तक, उसके मां की शादी से पहले के नाम का उपयोग कर रहा था, वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर निवास करता रहा, अंत में अमरीका में एक भारी जंगली इलाके में रह रहा था। यह वहां पर अधिकारीयों ने उसे ढूंढ निकाला।

"उसने जमीन की ओर कुछ थोड़ा सा देखा, फिर उसने ऊपर देखा और कहा, 'हां, यह मैं ही हूं,'" खाड़ी प्रदेश शासनाधिकारी के जासूस ने कहा। "उसने यह सपने में भी सोचा नहीं होगा कि लोग उसे इतने समय तक ढूंढेंगे।"[133]

जैसे श्री स्मिथ कानून के दृढ़ हाथों से बचने में असमर्थ हो गया था, उसी तरह परमेश्वर की व्यवस्था को तोडनेवाला धर्मी व्यवस्था-देनेवाले और न्यायाधीश के असीम पहुँच से बच नहीं सकेगा।

और व्यवस्था को तोड़नेवाले ये कौन हैं?

*"**जो व्यक्ति पाप करता है वह अधर्म का कार्य करता है**; क्योंकि पाप का अर्थ है अधर्म का साथ देना।"* (1 यूहन्ना 3:4)

जो कोई परमेश्वर के भले और सिद्ध व्यवस्था का उल्लंघन करता वह व्यवस्था तोडनेवाला है।

वहीं जो लूसिफर ने किया था। वहीं जो आदम और हव्वा ने किया था। वहीं जो हमने भी किया हैं।

सभी पाप परमेश्वर के विरोध में हैं। बहुत सारे लोग उनके पाप को एक छोटी बात ऐसे देखते हैं, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में, सभी अपश्चातापी, क्षमाहीन पापियों को, वे कितने भी "भले" या धर्मी हो इसकी परवाह नहीं वे अपराधी हैं।

आशावादी मृगजल के पीछे दौड़नेवाले

कुछ समय पहले एक पडोसी ने मुझे कहा, "मैं एक आशावादी हूं; मैं सोचता हूं मैं स्वर्ग में जाऊंगा।"

उसका आशावाद और स्वयं-प्रयास क्या उसे अनंतकाल के दंड से बचा सकते है जब न्याय का समय आता है?

कॅलीफोर्निया के मृत्युमयी दरी से यात्रा करते हुए एक बार (पृथ्वी पर की सबसे उष्ण मरुभूमि), मैंने बहुत दूर स्थान पर देखा जो झिलमिलाती झील समान दिख रही थी, लेकिन जब मैं निकट गया, "झील" गायब हो गई थी। आगे देखते हुए मैंने और एक ऐसी "झील" देखी। वह भी लुप्त हो गई।

वह एक मृगजल था।

एक मृगजल यह विभिन्न तापमान और घनता की हवा की लहरों द्वारा प्रकाश किरणे चमकने के द्वारा बनता है। झीले खरी दिखती हैं, लेकिन वे खरी नहीं हैं। उसी प्रकार, एक पापी अपने स्वर्ग में जाने की संभावना के बारे में आशावादी महसूस कर सकता है, लेकिन पवित्रशास्त्र सत्य प्रकट करता है। आदम के वंशज न्याय से अपने आपको बचाने में *"बगैर सामर्थ्य"* से हैं। (रोमियों 5:6)

शुष्क मरुभूमि में भटके हुए एक मनुष्य समान जिसने अपना एकमात्र जल स्त्रोत बिखेर दिया है, मानवजाति पाप के कारण से गवां दिया हुआ अनंतकाल का जीवन फिर से प्राप्त करने में असहाय हैं।

> *"...हम भूमि पर उंडेले गए जल के समान हैं जिसको फिर एकत्र नहीं किया जा सकता है,........ ।"* (2 शमुएल 14:14)

भटका हुआ मनुष्य देख सकता है कि जो वह ईमानदारी से विश्वास करता है वह जीवन-बचानेवाला मरू उद्यान मानता है, लेकिन "मरू उद्यान" केवल अधिक गर्म गर्मी की लहरें बन जाता है। हताश, प्यासा मनुष्य मृगजल से मृगजल तक पिसता जाता रहता है जब तक कि वह अंत में मर नहीं जाता है।

उसी प्रकार यह एक पापी के आशावाद, ईमानदारी और स्वयं-प्रयास के धर्मों के साथ हैं।

*"एक ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को **उचित प्रतीत** होता है; किंतु वह पथिक को **मृत्यु** के द्वार पर पहुंचाता है।"* (नीतिवचन 14:12)

उनके दूषित स्थिति पर उपाय प्राप्त करने के प्रयास में, अरबो लोग जो दुनिया भर में उन मार्गों के अनुसार चलते हैं जो उन्हें सही दिखते हैं। वे धार्मिक विधियों को करते हैं, उनके शरीरों को विधिवत धोते हैं, यंत्रवत प्रार्थनाओं का पठन करते हैं, कुछ निश्चित भोजन से परहेज करते हैं, दानधर्म करते हैं, मोमबत्तियां जलाते हैं, अँगुलियों की माला, सूत्र को दोहराते, और जो भले काम मानते हैं। अन्य उनके आध्यात्मिक अगुओं के अधीन होने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि और अन्य जिसे पवित्र और न्यायी मानते है उन कारणों के लिए एक शहीद के समान मरने के द्वारा स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त करने की आशा रखते हैं।

क्या यह सम्भव हैं वे एक मृगजल के पीछे दौड़ रहे हैं?

स्वयं का एक अचूक दृष्टिकोण

"सत्य यह काली मिर्च है," वोलोफ मुहावरा कहता है।

अगर यह हमें असुविधाजनक करता भी है, परमेश्वर हमें अपने स्वयं के विषय में एक कठोर सत्य बताता है। वह हमें आमंत्रित करता है कि अपने पाप के विषय में हम उसके साथ ईमानदार बने। ऐसी ईमानदारी के बगैर, हम एक गंभीर बीमार पडोसी स्त्री समान है जिसे मेरी पत्नी और मैं जानते थे। उसने एक उचित चिकित्सक की अपनी आवश्यकता को पहचानने में इन्कार कर दिया, इस पर जोर देती थी कि वह ठीक हो जाएगी। कुछ सप्ताहों के बाद में वह मर गई।

पृथ्वी पर रहते हुए, मसीहा ने स्वयं-धर्मी धार्मिक अगुवों के समूह को कहा :

"यीशु ने उनकी बात सुनकर कहा, 'स्वस्थ मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, पर रोगियों को होती है: मैं धार्मिकों को नहीं, किंतु पापियों को बुलाने आया हूं।'"
(मरकुस 2:17)

पवित्रशास्त्र की स्पष्टता के बावजूद, बहुत सारे चर्च, मस्जिद और यहूदी आराधनालय लोगों को केवल इतना बताते है कि वे कितने भले है, या यह कि उन्हें कुछ थोडा ही कठिन प्रयास करने की केवल आवश्यकता हैं। परमेश्वर की मौलिक धार्मिकता और पाप के गंभीर परिणाम के विषय में वे लोगों को सिखाते नहीं।

कॅनडा में के एक मस्जिद के प्रवेशद्वार पर यह संदेश चिपकाया हुआ था :

हम सभी को स्वीकार करते है और
किसी को यह नहीं कहते कि वह एक पापी है

परमेश्वर ने स्वर्ग के प्रवेशद्वार पर एक भिन्न संदेश चिपकाया है :

*"लेकिन कोई भी अपवित्र वस्तु.......
उसमे प्रवेश नहीं करने पाएगा,...... ।"*
(प्रकाशितवाक्य 21:27)

पवित्रशास्त्र कहता है : *"**सबने** पाप किया हैं और परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए हैं"* (रोमियों 3:23)। परमेश्वर किसी को उसके अपने गुणों के आधार पर स्वीकार नहीं करता और प्रत्येक को कहता है वे पापी है।

केवल वहीं जो रास्ते में शुद्ध हो गए हैं जो परमेश्वर के न्याय और पवित्रता के सिद्ध प्रमाण को संतुष्ट करते हैं वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे।

परमेश्वर का अचूक दृष्टिकोण

एक दिन यशायाह भविष्यद्वक्ता को प्रभु की परिपूर्ण पवित्रता और अद्भुत महिमा का दर्शन दिया गया। यशायाह ने लिखा :

> *"जिस वर्ष राजा उज्जियाह की मृत्यु हुई, मैंने यह दर्शन देखा: एक बहुत उंचे सिंहासन पर प्रभु बैठा है। उसकी राजसी पोशाक के छोर से मंदिर भर गया है। उसके ऊपर की ओर साराप स्वर्गदूत खड़े थे। प्रत्येक दूत के छः पंख थे। वे दो पंखों से अपना मुंह ढके थे। उन्होंने दो पंखों से अपने पैर को ढांप लिया था; और शेष दो पंखों से वे उड़ रहे थे। एक दूत दूसरे दूत से उच्च स्वर में यह कह रहा था : **'पवित्र, पवित्र, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु पवित्र है**। संपूर्ण पृथ्वी उसके तेज से परिपूर्ण है।' उसकी आवाज से ड्योढ़ी की नींवे थर्रा गईं। भवन धुंएं से भर गया। तब मैंने कहा, **'हाय! अब मैं जीवित नहीं रह सकता! मैं अशुद्ध ओंठवाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध ओंठवाले लोगों के मध्य निवास करता हूं। मैंने साक्षात् स्वर्गिक सेनाओं के प्रभु, महाराजधिराज को अपनी आंखो से देखा।'"*** (यशायाह 6:1-5)

स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारो ओर प्रज्वलित वैभव इतना महान है कि सिद्ध पवित्र

दूत भी उनके मुख और पैरों को ढांपे रखते हैं। ये दूत परमेश्वर की पवित्रता और महिमा से इतने अचंभित हैं कि वे उसकी उपस्थिति में बैठ नहीं सकते। उसके बजाय, वे उसके सिंहासन के चारो ओर उड़ते रहते हैं, यह पुकारते हुए, *"पवित्र, पवित्र, स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु पवित्र है। संपूर्ण पृथ्वी उसके तेज से परिपूर्ण है।"*

बहुत सारे लोग पाप क्या है इसे समझने में क्यों असफल होते हैं? शायद इस कारण से कि परमेश्वर कौन है ये उन्होंने कभी देखा नहीं है। उन्होंने उसके प्रज्वलित पवित्रता पर कभी विचार नहीं किया हैं। यशायाह एक धर्मी भविष्यद्वक्ता था, फिर भी प्रभु के पवित्र वैभव के उसके दर्शन ने उसे उसके स्वयं के दूषित और गंदे विचारों से अवगत कराया। *"धिक्कार है मुझे! मैं अशुद्ध ओंठवाला मनुष्य हूं!"* उसने कहा। प्रभु की तुलना में, यशायाह जानता था कि वह और संपूर्ण इस्राएली राष्ट्र हताश स्थिति में हैं!

बाद में, यशायाह ने लिखा : *"हम सब भटकी हुई भेड़ों के सदृश थे; प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मार्ग पर चल रहा था।....हम सब अशुद्ध व्यक्ति के समान हो गए हैं, हमारे सब धर्म-कर्म गन्दे वस्त्र हो गए हैं"* (यशायाह 53:6; 64:6)। यशायाह जानता था कि किसी भी प्रकार का विधिवत धोना या स्वयं-प्रयास उसे प्रभु के सम्मुख पवित्र नहीं कर सकता।[134] अपने पवित्र सृष्टिकर्ता के अन्दाज में, *"हम **सब अशुद्ध बात** के समान हैं।"*

अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने मनुष्य के अशुद्ध स्थिति की समझ दिखाई जब उसने पूछा, *"**परमेश्वर के सम्मुख मनुष्य किस प्रकार धार्मिक सिद्ध हो सकता है?....**चाहे मैं सफेद बर्फ से भी स्वयं को धो डालू, चाहे अपने हाथों को साबुन से साफ करू, तो भी तू मुझे कीच के गड्ढे में फेंकेगा, और मेरे वस्त्र भी मुझसे घृणा करने लगेंगे"* (अय्यूब 9:2, 30-31)। *और यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के ये वचन लिखे : "चाहे तू क्षार से स्वयं को धोए, साबुन से मल-मल कर नहाए, तो भी तेरे कुकर्म का दाग मेरी आंखो के सामने हैं,' स्वामी-प्रभु की यह वाणी है।"* (यिर्मयाह 2:22)

परमेश्वर का अचूक दृष्टिकोण स्वयं के अचूक दृष्टिकोण की ओर ले जाता है। हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में अपूर्ण विचार हमें अपने आप के खोकले विचारों के साथ छोड़ जाते है।

एक मनुष्य जो गन्दे, रोग-ग्रस्त चिथड़े पहने हुए है स्वयं की कल्पना कर सकता है कि वह शुद्ध और स्वीकारयोग्य है, लेकिन वह उसे वैसा नहीं बनाता। उसी रीति से, एक पापी स्वयं को धार्मिक है ऐसी कल्पना कर सकता है, लेकिन वह उसे वैसे नहीं बनाती।

परमेश्वर की महिमा और धार्मिकता के साथ जब तुलना करते है, हमारे सबसे उत्तम प्रयास भी गन्दे वस्त्रों समान हैं।

सब के लिए सबक

इस्राली राष्ट्र की स्थापना करने का परमेश्वर का एक उद्देश्य यह था कि सभी राष्ट्रों को कुछ महत्वपूर्ण सबक सिखाएं। भले ही प्रभु निरंतर से इस्राएलियों के प्रति विश्वासयोग्य था, इस्राएली लोग लगातार प्रभु को विफल करते रहे। परमेश्वर चाहता है कि हम उनसे सीखे। *"ये घटनाएं **हमारे लिए प्रतीक** थीं कि हम बुरी बातों के लिए इच्छुक न हों जैसे कि हमारे पूर्वज थे।"* (1 कुरिंथियों 10:6)

निर्गमन, तौरात की दूसरी पुस्तक में, मूसा अभिलिखित करता है कि इस्राएली पाप को उस रूप में देखने में कैसे असफल रहे जैसे परमेश्वर इसे देखता है। मजबूत हाथों के साथ, परमेश्वर ने उन्हें मिस्र की सदियों की गुलामी से छुड़ाया था। फिर भी वहां पर बहुत कुछ था जो वे अब तक प्रभु और उसके व्यक्तित्व के विषय में समझे नहीं थे। उन्होंने कल्पना की थी कि वे किसी तरह से पर्याप्त आज्ञाकारी रह सकते है कि परमेश्वर के न्याय से बचे।

इस्राएली लोग आत्मविश्वासी थे कि उन्होंने मूसा से कहा,

*"**जो** प्रभु ने कहा है, **वह हम करेंगे**।"* (निर्गमन 19:8)

उन्होंने अपने आपको असहाय पापी के रूप में नहीं देखा, न ही उन्होंने दोषरहित धार्मिकता की परमेश्वर की आवश्यकता को समझा था। वे भूल गए थे कि केवल एक पाप ने आदम और हव्वा को उनके सृष्टिकर्ता से दूर किया था। इस्राएली लोगों को अपना पाप देखने और अपनी लज्जा का अनुभव करने में सहायता मिले, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें दस मुद्दों के साथ परीक्षा दी।

पवित्रशास्त्र बताता है कि प्रभु सामर्थ्य और महिमा में सीनय पर्वत पर कैसे उतरे। *"... मेघ **गर्जन** हुआ, **विद्युत् चमकी**। एक **सघन मेघ** पहाड़ पर उतरा और नरसिंगे का इतना **घोर स्वर सुनाई दिया** कि वे लोग भी **कांप उठे** जो तम्बुओं के भीतर थे"* (निर्गमन 19:16)। तब परमेश्वर की वाणी ने दस नियमों की गर्जना की :

दस आज्ञाएं

1. ***"तू मेरे अतिरिक्त किसी और को परमेश्वर न मानना।"*** प्रभु के अलावा किसी ओर की आराधना करना यह पाप है। अपने संपूर्ण हृदय, मन और शक्ति के साथ परमश्वर को, प्रत्येक दिन के प्रत्येक क्षण में, प्रेम करने में असफल होना, यह पाप है। (निर्गमन 20)[135]

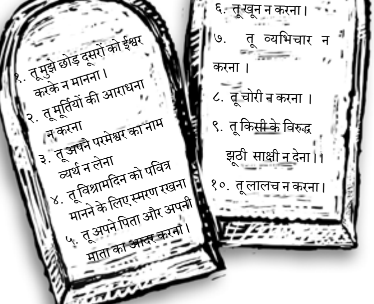

2. ***"तू अपने लिए किसी प्राणी की मूर्ति या आकृति न बनाना.....तू उनकी झुककर वन्दना न करना और न सेवा करना,....... ।"*** आकृति के सम्मुख झुकना या वस्तु को पूजने तक ही सीमित नहीं है। जो कुछ भी जो परमेश्वर के स्थान को लेता है वह इस आज्ञा के विरुद्ध अपराध है।

3. ***"तू अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना.... ।"*** अगर आप दावा करते हो कि एक सत्य परमेश्वर के अधीन हो, लेकिन उसे जानने और उसके वचन मानने की खोज नहीं कर रहे हो, तो फिर आप उसके नाम को व्यर्थ ले रहे हो।

4. ***"विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। ....उस दिन कोई कार्य न कर।"*** परमेश्वर चाहता है कि इस्राएली लोग प्रत्येक सब्त के दिन काम से विश्राम ले कि उसका सम्मान करे।

5. ***"अपने माता-पिता का आदर कर ..... ।"*** सिद्ध आज्ञाकारिता से कुछ भी कम यह पाप है। बच्चों के लिए उनके माता-पिता का अनादर करना या उनके प्रति बुरा व्यवहार करना यह इस आज्ञा का उल्लंघन है।

6. ***"तू हत्या न करना।"*** *परमेश्वर यह भी कहता है, "जो अपने भाई से बैर रखता है वह हत्यारा है"* (1 यूहन्ना 3:15)। सहयोगी मनुष्य के प्रति द्वेष हत्या के बराबर है। परमेश्वर हृदय की ओर देखता है और सभी समय निस्वार्थी प्रेम चाहता है।

7. ***"तू व्यभिचार न करना।"*** यह आज्ञा शरीर के अनैतिक उपयोग को केवल संबोधित नहीं करता, लेकिन मन और हृदय में अशुद्ध इच्छाओं को भी संबोधित करता है। *"किंतु मैं तुमसे कहता हूं; जो कोई पुरुष किसी स्त्री पर बुरी इच्छा से आंख लगाए तो वह मन में उसके साथ व्यभिचार कर चूका।"* (मत्ती 5:28)

8. ***"तू चोरी न करना।"*** जो योग्य रीति से आपका है उससे अधिक लेना, चुंगी देने या परीक्षा में फंसाना, या आपके मालिक के लिए ईमानदारी से काम नहीं करना ये सभी चोरी के प्रकार हैं।

9. ***"तू अपने पडोसी के विरुद्ध में झूठी साक्षी न देना।"*** किसी के या किसी बात के विषय में कुछ बात कहना यह पूर्णतया सत्य से कम पाप है।

10. ***"तू अपने पडोसी ....के किसी भी वस्तु का लालच न करना।"*** जो दूसरों का है उसका लालच करना यह पाप है। हमारे पास जो है उससे हमें संतुष्ट रहना है।

दोषी!

प्रभु ने इन दस आज्ञाओं की घोषणा करने के बाद, पवित्रशास्त्र बताता है, *"जब लोगों ने मेघ-गर्जन विद्युत् का चमकना, नरसिंगे का स्वर और पहाड़ से धुआं निकलता हुआ देखा तब **वे डरकर कांपने लगे। वे दूर खड़े हो गए।**"* (निर्गमन 20:18)

अब वे इस पर घमंड नहीं कर रहे थे कि "प्रभु ने जो सब कहा है!" वे सब कर सकते है।

वे परीक्षा में असफल हुए।

आपके विषय में क्या? आप ने कैसे किया?

अगर आप ने सभी दस आज्ञाओं में 100 फीसदी से कम मार्क प्राप्त किए हो (इसका अर्थ जब से आपका जन्म हुआ है उस समय से आज तक, सप्ताह में 7 दिन, एक दिन के 24 घंटो में दोषहीन आज्ञाकारिता), तो फिर, इस्राएली लोगों समान, और मुझ समान, परीक्षा में असफल हुए हो।

> *"यदि कोई संपूर्ण व्यवस्था का पालन करे पर **एक धारा** का उल्लंघन कर जाए तो उसने **समस्त व्यवस्था के प्रति** अपराध किया।"* (याकूब 2:10)

इस पुस्तक के पहले अध्याय में, हमने देखा कि बाइबल न ही केवल दुनिया में सबसे अधिक-बेचीं जानेवाली पुस्तक है; वह दुनिया की सबसे-अस्वीकार की गई पुस्तक भी है। एक कारण जो इतना अप्रसिद्ध है वह यह कि यह पुस्तक हमारे पाप को उजागर करती और हमारे घमण्ड को उतार देती है। यह हमें बताती है: *"तुम कहते हो कि तुम धनी हो, समृद्ध हो और तुम्हे किसी वस्तु का अभाव नहीं है, लेकिन तुम नहीं जानते कि तुम अभागे, दयनीय, दरिद्र, अन्धे और नग्न हो।" और : "निश्चय ही संसार में कोई ऐसा धार्मिक व्यक्ति नहीं है जो सदा भलाई ही करता है और कभी पाप नहीं करता।"* (प्रकाशितवाक्य 3:17; सभोपदेशक 7:20)

परमेश्वर की व्यवस्था हमें अपने स्वयं के विषय में अच्छा लगना नहीं कराता है। इसका अभिप्रेत इसलिए नहीं है।

तो फिर दस आज्ञाएं क्यों?

तो फिर व्यवस्था का उद्देश्य क्या है? अगर कोई भी परमेश्वर के प्रमाण में सही नहीं ठहर सकता, तो उसने उसे ज्ञात कराने का विचार क्यों किया?!

परमेश्वर द्वारा इन आज्ञाओं को दिए जाने का एक स्पष्ट कारण मानवजाति को समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक स्पष्ट नैतिक स्तर प्रदान करना है। कोई भी संस्कृति जिसमे

क्या सही है और क्या गलत है इनके विचार का अभाव हैं तो वे अराजकता या तानाशाही शासन द्वारा नियंत्रित की जाएगी। परमेश्वर जानता है कि मानवजाति को समाज में व्यवस्था के नियम की आवश्यकता है।

प्रभु ने अपनी व्यवस्था प्रदान की ताकि *"...जिससे प्रत्येक व्यक्ति का मुंह बन्द हो जाए और समस्त संसार परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हो; क्योंकि व्यवस्था के कर्मो से कोई भी प्राणी परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिक नहीं ठहरेगा : कारण यह कि* ***व्यवस्था से पाप का केवल ज्ञान होता है।"*** (रोमियों 3:19-20)

दस आज्ञाओं के तीन कार्य :

1. परमेश्वर की व्यवस्था स्वयं-धार्मिक लोगों को चुप कराती है। *"जिससे प्रत्येक व्यक्ति का मुंह बंद किया जाए और समस्त संसार परमेश्वर के सामने* ***दोषी*** *ठहरे।"* दस आज्ञाएँ हमें कहती हैं: आप कितने भले हो ऐसा आप सोचते हो इसकी परवाह नहीं, आप सिद्ध धार्मिकता के परमेश्वर के प्रमाण को कभी संतुष्ट नहीं कर पाओगे। आप व्यवस्था -तोड़नेवाले दोषी हो। घमंड करना छोड़ दो![136]

2. परमेश्वर की व्यवस्था हमारे पाप प्रकट करती है। "व्यवस्था से पाप का केवल **ज्ञान** होता है।" व्यवस्था विधान यह एक्स-रे समान है। रेडिओग्राफी एक टूटी हुई हड्डी या सड़नेवाले दात को स्पष्ट कर सकती है, लेकिन उन्हें दुरुस्त नहीं कर सकती। उसी रीति से, "व्यवस्था के कर्मो से कोई भी प्राणी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी [उसे काफ़ी अच्छा घोषित करे] नहीं ठहरेगा।" दस आज्ञाएँ ये पापियों के लिए वैसे हैं जैसे गन्दे मुख के साथ किसी के लिए आईना है। आईना गन्दगी को दिखा सकता है, लेकिन उसे निकाल नहीं सकता। परमेश्वर की व्यवस्था हमारे पाप और मैलेपन को प्रकट करती है, लेकिन उसे निकाल नहीं सकती।

कुछ थोड़े वर्षों पहले मैंने सेनेगल में एक रोमन कॅथलिक जो मध्यम-पाठशाला का गणित शिक्षक है उसे परमेश्वर के व्यवस्था विधान के उद्देश्य समझाए। यह उसके लिए एक अचम्भित करनेवाला प्रकटीकरण था। उसकी आवाज में निराशा के साथ, उसने विवेचना की, "ठीक है, फिर दस आज्ञाएँ हमें सिखाती है कि हम परमेश्वर के सम्मुख असहाय पापी है जो पवित्र है और पाप को दंडित करना चाहिए, और यह कि हम अपने आपको हमारे अच्छे कामों द्वारा या प्रार्थना और उपवास करने के द्वारा बचा नहीं सकते। तो हमें परमेश्वर के लिए ग्रहणीय कैसे बनाया जा सकता है? उपाय क्या है?"

3. परमेश्वर की व्यवस्था हमें परमेश्वर के उपाय की ओर इशारा करती है। जिस प्रकार एक अस्पताल में एक्स-रे तकनीकज्ञ एक टूटे हुए पैर के साथ मनुष्य को जानकारी देता है और उसे एक उचित चिकित्सक के पास भेजता है जो टूटी हुई हड्डी को जोड़ सके, उसी प्रकार से व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता हमें केवल "चिकित्सक" की ओर इशारा करते है जो "हमें व्यवस्था के श्राप से मुक्त करा" सकता है (गलातियों 3:13)। हम उसके विषय में अधिक जल्द ही सुनेंगे।[137]

सहायता!

यदि आप डूबनेवाले थे और पास में कोई है जो आपको डूबने से बचा सकता है, तो क्या आप सहायता के लिए रोने में घमंडी होंगे?

यह पहचानकर की आप सामर्थ्यहीन हो कि पाप के मृतमय दंड से अपने आपको बचा सके यह एक पराजय नहीं है; विजय के लिए यह पहला कदम है। मनुष्य को सहायता की आवश्यकता है—सहायता जो केवल परमेश्वर प्रदान कर सकता है।

शायद आप ने इस कहावत को सुना होगा : "परमेश्वर उन्हें सहायता देता है जो अपने आपकी सहायता करते है।" जबकि यह कहावत जीवन के कुछ क्षेत्रों पर लागु होती है, जब हमारे पापमय और आध्यात्मिक मृत अवस्था का विषय आता है, प्रत्यक्ष उसके उलटा सत्य है: परमेश्वर उन्हें सहायता देता है जो जानते है कि वे अपने आपको बचा नहीं सकते।

परमेश्वर उन्हें सहायता देता है जो स्वीकार करते है उन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

एक प्रसिद्द अफ्रीकी मुहावरा कहता है, *"भले ही अगर एक लकड़ी बहुत देर तक पानी में डूबी रहती है, वह कभी भी एक मगरमच्छ नहीं बनेगी।"*

न ही एक मनुष्य उसके दूषित स्वभाव को बदल सकता है और स्वयं को धर्मी बना सकता है। .

दूषित

आदम के बारे में सोचो। परमेश्वर ने उसे एक आज्ञा दी थी :

भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से खाना नहीं।

अगर आदम और हव्वा ने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी की आज्ञा का पालन किया होता, तो वे सदा सर्वदा, उसके साथ अद्भुत संबंध में बढ़ते हुए जीवन व्यतीत कर सकते थे। लेकिन यहीं जो हुआ नहीं।

हमारे पूर्वजों ने अपराध किया और परमेश्वर के साथ उनका संबंध टूट गया। पापी होकर, वे अब परमेश्वर से छिपने का प्रयास कर रहे थे। उन्हें लज्जा की भावना हुई और उन्होंने उनकी नग्नता को अंजीर के पत्तों से ढकने का प्रयास किया। लेकिन परमेश्वर ने उन्हें ढूंढ निकाला, उन्हें उसकी दया और न्याय की एक झलक दी, और फिर उन्हें उसकी उपस्थिति से बाहर कर दिया। जब तक वापस आने का मार्ग वह प्रदान नहीं करता, वे हमेशा के लिए निर्वासित ही रहेंगे। उनके पवित्र सृष्टिकर्ता और न्यायाधीश के सम्मुख वे दूषित और दण्डित खड़े थे।

यहां पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न है : आदम और हव्वा को कितने पाप करने थे इससे पहले की अदन के सिद्ध वाटिका से परमेश्वर ने उन्हें निर्वासित कर दें? केवल एक पाप के कारण यह हुआ था। पिछले कितने ही "भले" या अपनी ओर से उसके बाद के उनके स्वयं-प्रयास एक पाप के परिणाम को रद्द नहीं कर सके।

"भला" यह परमेश्वर का सामान्य मानक है। आदम ने जब पाप किया, तब वह परमेश्वर के लिए अब "भला" नहीं रहा। वह शुद्ध पानी के गिलास समान हो गया था जिसमे कोई सायनाइड की एक बूंद डालता है। अगर आपके पास जहर भरा पानी का गिलास है, तो उसमे और शुद्ध पानी डालने से क्या जहर निकाला जा सकता है? नहीं। न ही कितने भी भले काम हमारे पाप की समस्या को निकाल नहीं सकते। और भले ही अगर हमारे अच्छे काम पाप को निकाल सके, असलियत यह है कि हमारे पास "शुद्ध पानी," नहीं है, इसका अर्थ, सच में कोई भी धार्मिक कार्य नहीं, कि उसे हमारे पापमय स्वभाव में जोड़ सके।

परमेश्वर के लिए, हमारे उत्तम प्रयास दूषित हुए हैं।

आदम का आत्मा पाप द्वारा दूषित हो गया था, उसी तरह से हव्वा का भी। और हमारा भी हुआ है। हम सभी उसी दूषित स्त्रोत से आए हैं। दाऊद भविष्यद्वक्ता हमें परमेश्वर के फैसले देता है:

> *"प्रभु स्वर्ग से मनुष्यों पर दृष्टिपात करता है .....**सब** मनुष्य मार्ग से भटक गए हैं, **सब एक-जैसे** भ्रष्ट हो गए हैं; ऐसा कोई भी **नहीं**, जो भलाई करता है; **नहीं, एक भी नहीं**।"*
>
> (भजन संहिता 14:2-3)

हमारी दोहरी मुसीबत

अंग्रेजों के कारागाह में के एक मनुष्य की सदियों पुरानी कहानी बतायी है जिसे मरणदंड का दोषी ठहराया गया था। एक दिन कोठरी का द्वार खुल गया और जेलर आया।

“ख़ुशी मनाओ!” जेलर ने कहा। “रानी ने तुम्हे क्षमा कर दिया है।”

कारागार अधीक्षक को आश्चर्य हुआ, मनुष्य ने कोई भी भावना व्यक्त नही की।

“हे मनुष्य, मैं तुझे कहता हूं, ख़ुशी मनाओ!” दस्तावेज को पकड़े हुए जेलर ने दोहराया। “यहां पर क्षमा है। रानी ने तुझे क्षमा किया है!”

उस वक्त, मनुष्य ने उसकी कमीज उठाई और भयानक-दिखनेवाले फोड़े की ओर इशारा करते हुए, कहा, “मुझे कॅन्सर है जो मुझे थोड़े दिन या सप्ताहों में मार डालेगा। अगर रानी यह भी निकाल सकती तो, यह क्षमा मेरे लिए उपयोगी होगी।”

मनुष्य को पता था उसके अपराधों के लिए उसे क्षमा से बढ़कर आवश्यकता थी; उसे नए जीवन की आवश्यकता थी।

आदम के वंश से प्रत्येक सदस्य यह इस दोषी मनुष्य के समान है। पसंद से पापी और जन्म से पापी होने के नाते हमारे पास दोहरी दुविधा हैं: परमेश्वर के विरोध में हमारे अपराधों के लिए हमें क्षमा की आवश्यकता हैं और हमें परमेश्वर की ओर से धर्मी, अनंतकाल के जीवन की आवश्यकता हैं जो हमें पात्र ठहराएगी कि उसके पवित्र उपस्थिति में जीवन व्यतीत करे।

संक्षेप में यहां हमारी दोहरी मुसीबत हैं :

- **पाप :** हम दोषी पापी हैं। परमेश्वर ही केवल हमें पाप से शुद्ध और अनंतकाल के दंड से बचा सकता है। हमें परमेश्वर के **क्षमा** की आवश्यकता हैं।
- **लज्जा :** हम आध्यात्मिक रूप से नग्न हैं। परमेश्वर ही केवल हमें उसकी धार्मिकता का वस्त्र पहिना सकता और उसका अनंतकाल का जीवन हमें प्रदान कर सकता है। हमें परमेश्वर के **पूर्णता** की आवश्यकता हैं।

हमारे पाप और लज्जा को दोहरे इलाज की आवश्यकता है जो हम निर्माण नहीं कर सकते। परमेश्वर ने उसे हमारे लिए दे दिया यह सुसमाचार है।

पाठ 16

स्त्री का वंशज

ठण्ड, कोहरे की एक रात में दो छोटे बच्चे बड़े ही गहरे, फिसलनेवाले गड्डे में गिर गए थे। दोनों भी घायल, डरे हुए और असहाय थे। न ही वे एक-दूसरे को बचा सकते थे क्योंकि वे दोनों ही समान अवस्था में थे। मृत्यु बहुत ही जल्द उन पर हावी हो सकती थी अगर गड्डे के बाहर से सहायता प्राप्त नहीं होगी। तीन लोगों ने सहायता के लिए उनकी हताश पुकार सुनी। एक रस्सी, उनमे से एक ने नीचे अँधेरे गड्डे में डाली। बच्चों को बाहर खींचकर निकाला गया।

उनका छुटकारा ऊपर से आया।

जिस दिन आदम और हव्वा ने पहले पाप किया, वे उन दो बच्चों समान हो गए थे। वे असहाय थे कि पाप के गड्डे से अपने आपको बचा सके जिसमे वे गिर गए थे। अगर उन्हें अनंतकाल की मृत्यु से छुड़ाना हो, तो छुटकारा यह पतित मानवजाति के लिए बाहर से, ऊपर से आना चाहिए।

इस विषय में कोई गलती न करे। मानवी अवस्था यह गम्भीर, स्वयं-उपाय के बगैर है।

सदियों से, किसी भी अपवाद बगैर, आदम के सभी वंशज-पुरुष और स्त्री से जन्मे हुए-उन्होंने पाप की-वृत्ति का स्वभाव वंशागत प्राप्त किया हैं। सभी पाप के श्राप के अधीन जन्मे हुए हैं।

पाप के श्राप और परिणाम से पापियों को छुड़ाने के लिए, परमेश्वर ने योजना की ताकि एक पापरहित मनुष्य को इस जगत में लाए जो सभीं को छुटकारा प्रदान करेगा जो चाहते हैं कि पाप के गड्डे से छुटकारा पाएं।

परमेश्वर यह कैसे करेगा? आदम के पापी स्वभाव के विरासत में मिले बिना कोई कैसे मानवी परिवार में जन्म ले सकता है? परमेश्वर ने उस दिन पहला सुराग दिया जब मानवजाति को पाप ने

प्रभावित किया था।

प्रभु ने "सांप" (शैतान) को पहले ही ताकीद दी :

*"मैं तेरे और स्त्री के **वंशज** के मध्य शत्रुता उत्पन्न करूंगा। वह तेरा सिर कुचलेगा, और तू उसकी एड़ी डसेगा।"* (उत्पत्ति 3:15)

"स्त्री के वंशज" के बारे में बोलते हुए, प्रभु पहले से ही बता रहा था कि वह एक पुरुष बच्चे द्वारा होगा, जो एक स्त्री से जन्मेगा, कि पापियों को छुडाएगा और अंत में शैतान को कुचलेगा और बुराई को निकाल देगा। यह आनेवाली सैंकड़ों भविष्यवाणियों में से पहली थी, इतिहास में उस क्षण की ओर अधिक स्पष्टता के साथ प्रत्येक इशारा करती है जब यह उद्धारकर्ता-मसीहा इस जगत में आएगा।

स्त्री का वंशज क्यों?

मसीहा मानवजाति में *"**स्त्री** का वंशज"* बनके प्रवेश क्यों करेगा? उसे *"**एक स्त्री से** जन्म"* लेना है लेकिन एक पुरुष से जन्म नहीं लेना ऐसा क्यों करना है? (गलातियों 4:4)

यहां उत्तर है : जबकि पापियों का उद्धारकर्ता मनुष्य के रूप में आदम के पापी जाति से मुलाकात करेगा, तो उसे पाप के गड्ढे के बाहर से आना चाहिए। वह ऊपर से नीचे उतरेगा।

स्त्री के वंशज के विषय में इस प्राथमिक भविष्यवाणी को परमेश्वर ने घोषित करने से बहुत वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने लिखा :

*"अत: स्वयं स्वामी तुम्हें एक संकेत-चिन्ह देगा : देखो, **एक कन्या गर्भवती होगी और वह एक पुत्र को जन्म देगी।** वह उसका नाम 'इम्मानुएल' रखेगी [जिसका अर्थ 'परमेश्वर हमारे साथ']।"* (यशायाह 7:14)

उद्धारकर्ता मानवी परिवार में एक कुंवारी स्त्री के गर्भ के द्वारा प्रवेश करेगा जिसका किसी पुरुष के साथ कभी भी शारीरिक संबंध नहीं था। आदम के पापी स्वभाव के विरासत में मिले बिना आदम की पतित जाति से मिलने का मसीहा का यह तरीका होगा।

"लेकिन एक मिनट ठहरो," कोई कहता है; "स्त्रियां भी पापी हैं। भले ही मसीहा एक स्त्री से अनोखे रीति से जन्मा था, क्या वह उसकी मां के पापमय स्वभाव द्वारा दूषित नहीं होगा?"

अबसे कुछ पन्नों बाद, हम सुनेंगे कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा ने इस चमत्कारिक गर्भादान को

कैसे लाया। हालांकि, आइए हम पहले परमेश्वर की योजना में कुछ कम स्पष्ट तत्वों पर विचार करे कि वह अपने निष्पाप पुत्र को एक कुंवारी के गर्भ से इस जगत में लाए। पाप द्वारा दूषित न होकर मसीहा कैसे जन्म ले सकता है जो आदम के सभी वंशजों में फैल गया है?

पाप से बेदाग

13वे पाठ में हमने पहले ही सिखा है, परमेश्वर ने शैतान के पाप और मृत्यु के राज्य में मानवजाति को ले जाने के लिए आदम को जिम्मेदार ठहराया। हव्वा को फसाया गया था; आदम नहीं। जबकि स्त्रिया भी पुरुष समान पापमय स्वभाव से जन्मी है, पवित्रशास्त्र इसे स्पष्ट करते है कि आदम के साथ यह हमारा संबंध है जो हमारे पाप के स्वभाव के साथ जन्म लेने का कारण है।[138]

इब्रानी भाषा में, *आदम* का शाब्दिक अर्थ *लाल मिट्टी*। परमेश्वर ने लाल मिट्टी से आदम के शरीर को बनाया। आदम ने पाप करने के बाद, परमेश्वर ने उसे कहा, *"तू तो मिट्टी है, और* ***मिट्टी में ही मिल जाएगा।"*** (उत्पत्ति 3:19)

इसकी तुलना में, *हव्वा* का अर्थ है *जीवन*। यह नाम पहली स्त्री को दिया गया *"क्योंकि* ***जितने मनुष्य जीवित हैं*** *उन सब की आदिमाता वही हुई"* (उत्पत्ति 3:20)। जिस दिन पाप ने जगत में प्रवेश किया, परमेश्वर ने हमारे पाप की समस्या से निपटने के लिए अपनी योजना की घोषणा की और *"**स्त्री** के वंशज"* द्वारा जगत के लिए अनंतकाल का जीवन प्रदान करे। (उत्पत्ति 3:15)

भले ही मसीहा मांस और लहू का शरीर लिए हुए होगा, फिर भी वह आदम के पाप-संक्रमित वंश से उत्पन्न नहीं होगा। वह पाप से बेदाग रहेगा।

दिलचस्पी से, कि पूरी तरह जैविक दृष्टिकोण से, आज हमें यह पता है कि बच्चे का लिंग यह उसके पिता के "बीज" (वीर्य) द्वारा निर्धारित किया जाता है, और मां के "बीज" (अंडकोष) द्वारा नहीं। हमें यह भी पता है कि गर्भाधान से, कोख में शिशु को संचार तंत्र उसकी मां से अलग होता है। चिकित्सा विज्ञान हमें कहता है : गर्भनाल एक अनोखी रूकावट बनाता है जो मां के लहू को अलग रखता है जबकि भ्रूण को भोजन और ऑक्सीजन जाने देता है।"[139] परमेश्वर ने पहला मनुष्य निर्माण करने से पहले, उसने मसीहा के पृथ्वी पर आने के प्रत्येक विवरण की योजना की थी।

टूटी हुई शाख़ के उदाहरण का स्मरण करें। उस अलग, मृत शाखा समान, मानवी परिवार आध्यात्मिक रूप से मृत, जीवन के स्त्रोत से काटा गया था। यद्यपि पापियों का उद्धारकर्ता आदम के आध्यात्मिक रूप से मृत और पाप से-दूषित परिवार के बीच रहेगा, वह इससे उत्पन्न नहीं होगा। वह स्वयं ही *"सच्ची दाखलता"* होगा (यूहन्ना 15:1), जो जीवन का ही स्त्रोत होगा।

वह *सिद्ध* होगा।

"सिद्ध" का अर्थ यह नहीं कि उसे कभी भी उसके शरीर में फुनसी, जखम या खरोच नहीं होगी। इसका अर्थ वह व्यक्तित्व में सिद्ध होगा। उसका निष्पाप स्वभाव होगा। परमेश्वर की व्यवस्था का वह कभी उल्लंघन नहीं करेगा। वह *"पवित्र, निर्दोष, निर्मल, पापियों से भिन्न और स्वर्ग से भी उच्चतर होगा।"* (इब्रानियों 7:26)

क्या यह कोई आश्चर्य है कि निष्पाप मसीहा को ***दूसरा** आदम* और ***अंतिम** आदम* कहा गया है?

दूसरा मनुष्य

*"पवित्रशास्त्र का लेख भी यही है : '**प्रथम आदम** सजीव व्यक्ति बना' किंतु **अंतिम आदम** जीवनदायक आत्मा है। तो भी क्रम में पहले आध्यात्मिक नहीं, प्राकृतिक हुआ, और उसके पश्चात् आध्यात्मिक। **प्रथम मानव** पृथ्वी से था, मिटटी का बना हुआ था, किंतु **दूसरा मानव** स्वर्ग से है।"* (1 कुरिंथियों 15:45-47)

जिस तरह से "प्रथम मनुष्य" ने पूरी मानव आबादी को शैतान के दूषित और मृत्यु के अन्धेरे राज्य में ले गया, उसी तरह से "दूसरा मानव" कई लोगों को शैतान के राज्य से निकालेगा और परमेश्वर के धार्मिकता और जीवन के गौरवमय राज्य में ले जाएगा। इसी कारण से, जिस दिन पाप ने मानवजाति को दूषित किया, प्रभु ने शैतान को चेतावनी दी कि स्त्री का वंशज एक दिन पृथ्वी पर आएगा कि उसे कुचले और अंत में नष्ट करे।

मीका भविष्यद्वक्ता ने प्रतिज्ञा किए हुए उद्धारकर्ता के विषय में यह लिखा :

*"ओ **बैतलहम** एप्राता, तू निस्सन्देह यहूदा प्रदेश के सब नगरों में छोटा है; पर मेरे लिए तुझसे ही वह व्यक्ति निकलेगा, जो इस्राएली राष्ट्र पर शासन करेगा। **उसका उद्गम प्राचीन काल से, पुराने ज़माने से है**। .....वह पृथ्वी के सीमांतों तक महान होगा। उसके आगमन से शांति का युग आरंभ होगा!"* (मीका 5:2, 4-5)

मीका ने न ही केवल "बैतलहम"[140] के नगर में मसीहा के जन्म के विषय भविष्यवाणी की, लेकिन उद्धारकर्ता, "प्राचीन काल से, पुराने ज़माने से है" यह पहले से अस्तित्व में है

इसकी घोषणा भी की।

प्राचीन काल से अस्तित्व में रहनेवाला यह एकमात्र अनंतकाल से समय में कदम रखेगा।

भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की गई थी

जिन भविष्यद्वक्ताओं ने घोषित किया कि मसीहा यह एक कुंवारी के गर्भ में आएगा और बैतलहम में जन्म लेगा, उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि उसके आगे एक अग्रदूत आएगा जो उसके आगमन की घोषणा करेगा। उन्होंने लिखा कि परमेश्वर का चुना हुआ एकलौता जो परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र की उपाधियों को धारण करेगा। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि वह अन्धो को आंखे देगा, बहरे सुनेंगे और लंगड़े चलेंगे। वह गधे पर बैठ कर यरूशलेम में प्रवेश करेगा और उसके अपने लोगों द्वारा अस्वीकार किया जाएगा। उसकी निंदा होगी, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और क्रूस पर लटका दिया जाएगा। उसने स्वयं पाप नहीं किया होगा, लेकिन अन्य लोगों के पापों के लिए मरेगा। उसे एक अमीर मनुष्य की कबर में रखा जाएगा, लेकिन उसका शरीर सड़ेगा नहीं। इसके बजाय, वह मृत्यु पर विजय प्राप्त करेगा, अपने आपको जीवित दिखाएगा, और स्वर्ग को वापस चला जाएगा जहां से वह आया था।[141]

भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखी गई इस रूपरेखा को इतिहास में कौनसे व्यक्ति ने पूर्ण किया?
यह वही व्यक्ति है जिसने जगत इतिहास को दो भागों में अलग किया है।
उसका नाम **यीशु** है।

परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है

सदियों से, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी कि अब्राहम, इसहाक, याकूब, यहूदा, दाऊद और सुलैमान के परिवार द्वारा जगत में उद्धारकर्ता को भेजेगा। इस प्रकार, मत्ती का सुसमाचार (अरबी: इंजील), नए नियम की पहली पुस्तक, इन शब्दों से आरंभ होती हैं :

"अब्राहम के वंशज, दाऊद के वंशज यीशु मसीह की वंशावली: अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ। याकूब से यहूदा और .....।"

आगे जो आता है वह वंशावली की लंबी सूचि है जिसमे *"दाऊद जो राजा से सुलैमान उत्पन्न हुआ,"* और *"यूसुफ जो मरियम का पति, जिससे यीश का जन्म हुआ जिसे मसीह कहते है"* इससे समाप्त होता है, इन सभी का समावेश हैं (मत्ती 1:1-2, 16)। इब्रानी शब्द *मसीहा* के लिए *ख़्रिस्त* यह यूनानी शब्द है जिसका अर्थ अभिषिक्त [चुना हुआ] जन है।[142] इस तरह की वंशावलियां राजा

दाऊद के सिंहासन पर यीशु के क़ानूनी अधिकार का लिखित प्रमाण देती हैं और दिखाती हैं कि यीशु अब्राहम, इसहाक और याकूब का प्रत्यक्ष वंशज है जिसके द्वारा परमेश्वर ने पृथ्वी पर सभी लोगों को आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा की थी।

परमेश्वर के लिए समय आ गया है कि उसके छुटकारे की योजना कार्यान्वित करे, योजना *"जिसकी प्रतिज्ञा उसने पहले से ही अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पवित्र पवित्रशास्त्र में अपने पुत्र ....के संबंध में की थी।"* (रोमियों 1:2-3)

सर्वोच्च का पुत्र

लूका के पहले अध्याय में जकरयाह को जिब्राएल दूत के दर्शन की मोहक कहानी दर्ज है, जिसका काम यरूशलेम में मंदिर में बलिदान और प्रार्थनाएं करने का था। भले ही जकरयाह और उसकी पत्नी इलीशिबा बहुत ही वृद्ध हो गए थे कि उन्हें बच्चे हो, जिब्राएल ने उसे सूचना दी कि उसकी पत्नी को एक लड़का होगा, जिसका नाम उन्हें यूहन्ना रखना होगा। यह यूहन्ना मसीहा का अग्रदूत होगा।

धर्मपरायण एक जवान महिला जिसका नाम मरियम है जिसके साथ जिब्राएल के दर्शन का नाटय जारी है।

> *"छठे महीने में परमेश्वर की ओर से स्वर्गदूत जिब्राएल, गलील प्रदेश के नासरत नगर में, एक कुंवारी के पास भेजा गया। उसकी मंगनी दाऊद के वंशज, यूसुफ नामक पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम मरियम था। स्वर्गदूत ने मरियम के पास जाकर कहा, 'मरियम, आनंद मनाओ, क्योंकि परमेश्वर ने तुम पर कृपा की है। प्रभु तुम्हारे साथ है।' मरियम इस कथन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी कि यह कैसा अभिवादन है। तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, 'मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुम पर हुआ है। देखो,* ***तुम गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म दोगी। तुम उसका नाम यीशु रखना।*** *वह महान होगा और* ***सर्वोच्च परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।*** *प्रभु परमेश्वर उसके पूर्वज दाऊद का सिंहासन उसे प्रदान करेगा। वह याकूब के वंश पर सदा शासन करेगा तथा उसके राज्य का कभी अंत नहीं होगा।' मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा,* ***'यह कैसे सम्भव होगा, क्योंकि मैं अब तक कुंआरी हूं?'*** *स्वर्गदूत ने उत्तर दिया,* ***'पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और सर्वोच्च परमेश्वर की सामर्थ्य तुम पर छाया करेगी। इस कारण जो जन्म लेगा, वह पवित्र और परमेश्वर-पुत्र कहलाएगा। देखो, वृद्धावस्था में तुम्हारी***

कुटुम्बिनी इलीशिबा के भी गर्भ में पुत्र है। यह उसका जो बाँझ कहलाती थी, छठा महीना है; क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।'' (लूका 1:26-37)

पापियों का उद्धारकर्ता

कुछ महीनों के बाद, यूसुफ ने जाना कि मरियम, उसकी मंगेतर पत्नी, गर्भवती है। उसने गलती से सोच लिया: कि मरियम अविश्वसनीय रही होगी। उसने निर्णय किया कि उनके आनेवाले विवाह को रद्द करे।

''मरियम का मंगेतर यूसुफ धर्मात्मा था। वह नहीं चाहता था कि मरियम की बदनामी हो। अत: उसने मरियम को चुपचाप त्याग देने का निश्चय किया। यूसुफ इस संबंध में विचार कर ही रहा था कि प्रभु के दूत ने उसे स्वप्न में दर्शन दिया और कहा, 'यूसुफ! दाऊद के वंशज! अपनी पत्नी मरियम को स्वीकार करने से न डर; क्योंकि उसके जो गर्भ है, ***वह पवित्र आत्मा से है।*** *वह पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम* ***यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।''*** (मत्ती 1:19-21)

उत्पत्ति के पहले अध्याय में जैसे प्रकट किया है, *पवित्र आत्मा* परमेश्वर स्वयं है।[143] *परमेश्वर* ही वह है जिसने अलौकिक रूप से मरियम की कोख में उसका अनंतकाल का *शब्द* रखा है।

नाम **यीशु** यह यूनानी शब्द *येसूस* का अंग्रेजी अनुवाद है, जो इब्रानी शब्द *यहोशूवा* से या उसके छोटे प्रकार *येशुआ* से आता है

इस नाम का अर्थ : ***''प्रभु बचाता है।''***

''यह सब इसलिए हुआ कि भविष्यद्वक्ता-कथित प्रभु का यह वचन ***पूरा हो*** *: 'कुंआरी कन्या गर्भवती होगी और वह पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम ''इम्मानुएल''* (अर्थात, ''परमेश्वर हमारे साथ'') *रखा जाएगा।' यूसुफ नींद से जगा, और उसने प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार कार्य किया। उसने मरियम को अपनी पत्नी स्वीकार किया। जब तक मरियम ने अपने पुत्र को जन्म न दिया, यूसुफ ने उसके साथ सहवास नहीं किया। यूसुफ ने पुत्र का नाम* ***यीशु*** *रखा।''* (मत्ती 1:22-25)

परमेश्वर का वचन पूरा हुआ

परमेश्वर योजना को क्रियान्वित कर रहा था जिस दिन से पाप ने संसार में प्रवेश किया उसी दिन से उसने प्रकट करना आरंभ कर दिया था। "स्त्री का वंशज" यह अब जन्म लेने वाला था!

कुछ पन्नों पहले हमने मीका की भविष्यवाणी कि मसीहा का जन्म कहा होनेवाला है उसके विषय में पढ़ा था। प्रभु ने पहले से ही बताया था कि बैतलहम, राजा दाऊद के स्वयं के नगर में वह जन्म लेगा।

लेकिन यहां पर एक समस्या है।
मरियम और यूसुफ नासरत में रहते थे[144], जो बैतलहम से बहुत दिनों के यात्रापर था।
मीका की भविष्यवाणी कैसे पूरी होगी?
कोई समस्या नहीं।

इस भविष्यवाणी को पूरा करने में सहायता करने के लिए परमेश्वर रोमी साम्राज्य का इस्तेमाल करेगा।

"उन दिनों सम्राट औगुस्तुस ने आदेश निकाला कि समस्त रोमन साम्राज्य की जनगणना की जाए। यह पहली जनगणना उस समय हुई जब क्विरिनियुस सीरिया देश का राज्यपाल था। सब लोग नाम लिखवाने के लिए अपने अपने पूर्वजों के नगर को जाने लगे। यूसुफ दाऊद के कुटुम्ब और वंश का था। अत: वह अपनी मंगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती थी, नाम लिखवाने के लिए गलील प्रदेश के नासरत नगर से यहूदा प्रदेश के बैतलहम गांव को गया जहां राजा दाऊद का जन्म हुआ था। जब वे वहां थे तब मरियम का प्रसवकाल आ गया, और ***उसने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया।*** *उसने उसे वस्त्र में लपेट कर चरनी में लिटाया, क्योंकि उनके लिए सराय में स्थान नहीं था।"* (लूका 2:1-7)

प्रतिज्ञा किए गए मसीहा ने अपना प्रवेश आरामदायक और शानदार राजमहल में नहीं किया। बल्कि वह एक छोटीसी झोपड़ी में पैदा हुआ था और चरनी में रखा गया था, जो पशुओं के लिए एक चारागाह है। वह इस संसार में इस तरह से आया कि गरीब से गरीब और अधिकांश सामान्य लोग उसके पास आ सकते हैं और डरे नहीं

दूत की घोषणा

"उस प्रदेश में चरवाहे थे जो रात को मैदान में रह कर अपने रेवड़ की रखवाली कर रहे थे। सहसा प्रभु का दूत उनके समीप आकर खड़ा हो गया और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमकने लगा। वे बहुत डर गए। स्वर्गदूत ने उनसे कहा, ***'डरो मत। देखो, मैं तुम्हे बड़े आनंद का शुभ संदेश सुनाता हूं। यह आनंद का समाचार सब लोगों के लिए होगा। 'आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया है; यही प्रभु मसीह है।*** *तुम्हारे लिए चिन्ह यह है : तुम एक शिशु को वस्त्र में लिपटे हुए और चरनी में लेटे हुए पाओगे।' तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ असंख्य स्वर्गदूतों का समूह दिखाई पड़ा जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था, 'स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा हो और पृथ्वी पर उन मनुष्यों को शांति मिले, जिनसे परमेश्वर प्रसन्न है।"* (लूका 2:8-14)

संसार के इतिहास में यह एक महान रात थी। लंबे समय का इंतजार समाप्त हो गया था।

"और उसने ***अपने*** *पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया...... ।"* (लूका 2:7)

स्त्री का वंशज आ गया था। सब कुछ वैसे ही हो रहा था जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी—परमेश्वर के तरीके से और परमेश्वर के समय पर।[145]

न ही केवल परमेश्वर ने यीशु के जन्म की घोषणा की और उत्सव मनाने दूतों को भेजा था, उसने आकाश में रात में एक विशेष तारे को रखने के द्वारा इस आनंदमय घटना का सन्मान भी किया था। पूरब से खगोल विद्या जाननेवाले और संपन्न ज्ञानी पुरुषों के समूह ने निरिक्षण किया और उस तारे के पीछे चले थे। वे जानते थें कि यह प्रतिज्ञा दिए हुए मसीहा के आगमन को चिन्हित करता है। फारस देश के बहुत दूर से थकानेवाली यात्रा पूरा करने के बाद में, ये प्रतिष्ठित पुरुष यरूशलेम मे राजा हेरोदेस के पास गए। उनका एक प्रश्न था :

"वे लोगों से पूछने लगे, 'यहूदियों का राजा ***कहां है****, जिसका जन्म अभी हुआ है? हमने उसका तारा पूर्व से उदय होते देखा है और उसकी वन्दना करने आए हैं।'"*
(मत्ती 2:2)[146]

एक व्यक्ति शिशु में

तो यह शिशु लड़का कौन था जिसने एक आसरे में जन्म लिया था, जिसे एक चरवाहे में रखा गया, भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से बताया गया था, दूतों द्वारा घोषणा की गई थी, चरवाहों द्वारा दौरा किया गया, एक तारे के साथ सम्मानित किया गया और ज्ञानी पुरुषों द्वारा आराधना की गई थी?

आइए हम फिर से सुने कि दूतों ने चरवाहों से क्या कहां :

"स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'डरो मत। देखो, मैं तुम्हे बड़े आनंद का शुभ संदेश सुनाता हूं। यह आनंद का समाचार सब लोगों के लिए होगा। 'आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया है; यही ***प्रभु मसीह है****।"* (लूका 2:10-11)

उस छोटे से शरीर में जो व्यक्ति था वह **प्रभु** था।

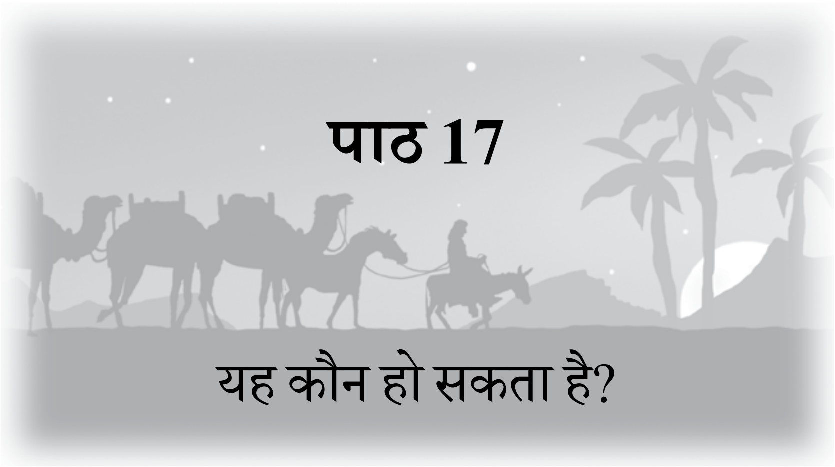

पाठ 17

यह कौन हो सकता है?

"छलांग मारनेवाले हिरण बिल खोदनेवाली संतान पैदा नहीं करती।"

— वोलोफ मुहावरा

जिस प्रकार हिरण हिरण-समान लक्षणों के साथ ही केवल संतति उत्पन्न करते है, उसी प्रकार पापी पापमय अभिलक्षणों के साथ ही केवल संतति उत्पन्न करते है। स्वयं असहाय ही रह गए, मनुष्य के पास पाप के चक्र को तोड़ने का कोई मार्ग नहीं है। और यह दिखाता है।

पापी लोग

अमरीका में के चलचित्र के व्यवसाय का विचार करे। प्रत्येक वर्ष, हॉलीवुड बहुत ही सफल चलचित्र निर्माण करते और उन्हें दूसरी जगह भेजते है जिसमे नायक और नायिका होते हैं जो स्वार्थीपन, अनैतिकता, आचारभ्रष्टता, अश्लील भाषा, हिंसा, बदला, और धोका इन सभों का प्रदर्शन करते हैं। पटकथा लेखक जानबुझकर "अच्छे व्यक्ति" को पापमय अभिलक्षणों के साथ क्यों समाविष्ट करते है जो उनके फिल्मों में चित्रित किया जाता है? ऐसे सिनेमा क्यों न बनाए जो "नायक" को धर्मी, दयालु, निस्वार्थी, क्षमाशील और ईमानदार के रूप में दर्शाता है? यह इस कारण से कि मानवजाति पाप से प्रभावित हुई है। मनुष्य के सबसे अच्छे काल्पनिक चरित्र भी मैले हो गए है। और ऐसी मलिनता हॉलीवुड तक ही सीमित नहीं है।

मनुष्य का पाप की ओर-झुका हुआ स्वभाव यह अनगिनत सूक्ष्म तरीके से स्वयं ही प्रकट होता है। उदाहरण के तौर पर, अगर आप अरब जगत से हो, आप शायद सदियों-पुराने काल्पनिक व्यक्ति जिसका नाम जुहा है उससे परिचित होंगे। जुहा की कल्पित कहानियां और उसका गधा हमें हंसाता है। इस चतुर चरित्र के विषय में सैंकड़ों छोटी कहानियां जिनके शब्दों और तरीकों की

विशेषता बुद्धि और हास्य द्वारा और अधिक से अधिक बार, आत्म-केन्द्रितता, एक अपमानजनक भावना, अशुद्ध विचार, प्रतिशोध, छल और टूटे वादों के द्वारा लिखी गई हैं। उसके बारे में विचार करें! हमारे पसंदीदा अविष्कृत चरित्र भी मैले हो गए है। यहां पर जुहा की कल्पित कहानियों में से एक सरल उदाहरण है :

> एक मित्र मेरे पास आया।
>
> "आप ने वादा किया था," मित्र ने कहा, "कि मुझे कुछ पैसे ऋण देंगे। मै आया हूं की आपको वो बात स्मरण कराऊ।"
>
> जुहा ने उसे कहा, "मेरे मित्र, मैं मेरा पैसा किसी को भी ऋण नहीं देता, लेकिन मैं आपको अपने दिल की सामग्री के लिए अपने वादे दूंगा!"[147]

हम कल्पित जुहा से इत्तफाक रख सकते है क्योंकि हमने भी वायदे किए हैं जिसका पालन करने को हमने कभी सोचा नहीं था। हमारे पतित मानवी स्वभाव में, हम जुहा समान है।

यहां, हालांकि, इतिहास[148] में एक व्यक्ति है जिसने सभी वादों को पूरा किया है। उसने हमेशा सत्य कहा है। धोखा, अपमान, धमकाना या बदला लेना उसने कभी नहीं किया।

उसका नाम **यीशु** है।

> *"मसीह ने कोई **पाप नहीं किया**, और न उनके मुंह से कपट की कोई बात निकली। उन्होंने अपशब्दों का **उत्तर अपशब्दों में नहीं दिया;** उन्होंने दुःख सहने पर भी **धमकिया नहीं दी**, वरन अपने को परमेश्वर की इच्छा पर सौंप दिया जो धर्मपूर्वक न्याय करता है"।* (1 पतरस 2:22-23)

निष्पाप एकमात्र

यीशु का जीवन पापमय-संस्कृतियों से वर्चस्वित जगत के ठोस विरोध में स्थिर है। वह अब तक जन्म लेने वाला पापरहित व्यक्ति था। *"प्रत्येक बात में उनकी परीक्षा हमारे समान ही हुई, और फिर भी वह **निष्पाप निकले**"* (इब्रानियों 4:15)। कोई अशुद्ध विचार उनके मन में कभी नहीं आया। कोई भी निर्दयी शब्द उनको ओठों पर कभी नहीं आया। जैसे ही यीशु नासरत[149] में एक मामूली से घर में उनके सौतेले भाई और बहनों के साथ वयस्क हो रहे थे, उन्होंने *स्वाभाविक रूप से* दस आज्ञाओं का और परमेश्वर के अन्य प्रत्येक नियम का पालन किया—बाह्य रूप से और आतंरिक रूप से। यीशु को भले ही हमारे समान शारीरिक शरीर था, उन्हें हमारे पाप-की ओर के झुकाव का स्वभाव नहीं था।

*"वह इसलिए प्रकट हुए कि वह संसार के पाप दूर करें। **मसीह में लेशमात्र भी पाप नहीं है।"*** (1 यूहन्ना 3:5)

तीस वर्ष के थे, तब यीशु ने पृथ्वी पर उनके अधिकृत सेवकाई की शुरुआत की थी।[150] परमेश्वर और शैतान के बीच का द्वन्द यह अब बढ़नेवाला ही था। शैतान को पता था कि परमेश्वर का पुत्र आया है कि उसे कुचले, लेकिन उसे यह पता नहीं था कि यीशु ने उसे करने की योजना कैसे की थी।

शैतान ने परमेश्वर के व्यवस्था की अवमानना करने के लिए जिस प्रकार प्रथम मनुष्य को प्रलोभन में डाला था, उसी प्रकार वह अब दूसरा मनुष्य, सिद्ध मनुष्य को प्रलोभन में डाल रहा था, कि परमेश्वर की व्यवस्था के विरोध में कार्य करे।

*"यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन नदी से लौटे तो आत्मा उन्हें निर्जन प्रदेश में ले गया। वहां शैतान चालीस दिन तक उन्हें परखता रहा। उन दिनों यीशु ने कुछ नहीं खाया; पर चालीस दिन बीत जाने पर उन्हें भूख लगी। तब शैतान ने उनसे कहा, **'यदि आप परमेश्वर के पुत्र है** तो इस पत्थर से कहिए कि यह रोटी बन जाए।' यीशु ने उत्तर दिया, 'पवित्रशास्त्र का यह लेख है : "मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित न रहेगा।"* (लूका 4:1-4)

ध्यान दें कि शैतान यीशु से कुछ भी "बुराई" करवाने का प्रयास नहीं कर रहा था। शैतान की केवल यही इच्छा थी कि यह निष्पाप मनुष्य (जिसने "उसके" प्रांत में प्रवेश किया था) ने स्वर्ग में के परमेश्वर पिता से स्वतंत्र होकर कुछ कार्य करे, क्योंकि, पाठ 11 में हमने पीछे देखा है, कि परमेश्वर से स्वतंत्र होकर सोचना या कार्य करना यह ***पाप*** है।

मुद्दा यह है : अगर मसीहा ने एक भी पाप किया होता, तो वे उनकी सेवकाई को पूरा नहीं कर सकते थे कि आदम के शापग्रस्त वंशजों को पाप और मृत्यु की व्यवस्था से छुडाए।

जिस प्रकार कर्ज में डूबा हुआ मनुष्य दूसरे का कर्ज चुकाने के योग्य नहीं होता, न ही एक पापी अन्य पापी के पाप के लिए भरपाई देने में समर्थ नहीं होता है। तथापि, परमेश्वर-पुत्र, जो मनुष्य-पुत्र[151] बन गया था, उसके अपने स्वयं के पाप के कर्ज नहीं थे। मृत्यु को वह सहज पार कर सकता था क्योंकि वह पाप से मुक्त था, लेकिन, जैसेही हमे जल्द ही यह पता चलनेवाला है, कि परमेश्वर की वह योजना नहीं थी।

इसी दौरान, शैतान ने यीशु को पाप के प्रलोभन डालने का बारम्बार प्रयास किया कि परमेश्वर की सिद्ध योजना से स्वतंत्रता में कार्य कराए। प्रत्येक समय यीशु ने पवित्रशास्त्र से संदर्भ देने का

द्वारा शैतान को उत्तर दिया।[152]

> *"तब शैतान यीशु को ऊंचे स्थान पर ले गया और क्षण भर में संसार के सब राज्य दिखा कर उनसे कहा, 'मैं आपको इन सब का अधिकार और वैभव दूंगा, क्योंकि यह सब मुझे मिला है, और मैं जिसे चाहे उसे देता हूं। यदि आप झुककर मेरी वन्दना करे तो यह सब आपका हो जाएगा।' यीशु ने उत्तर दिया, 'पवित्रशास्त्र का यह लेख है : "तू अपने प्रभु परमेश्वर की वन्दना कर और केवल उसी की आराधना कर"।'"* (लूका 4:5-8)

जैसे परमेश्वर ने आदम को सृष्टि पर अधिकार दिया था, वैसे ही अब शैतान यीशु को अधिकार प्रदान कर रहा था जो उसने, शैतान ने, चुराया था जब आदम ने उसकी आज्ञानुसार चलने का निर्णय किया था।[153]

आदम की तुलना में, यीशु ने शैतान की आज्ञा का पालन **नहीं किया**।

परमेश्वर का वचन देहधारी हो गया था।

यीशु के अनुयायी

यीशु ने अपनी अधिकृत सेवकाई की शुरुआत करने के कुछ ही देर बाद, उन्होंने बारह पुरुषों को चुना कि जहां कही वह जाए वे उसके साथ रहे। कई स्त्रियों ने भी यीशु का अनुसरण किया। यीशु ने जो सब कुछ कहा और किया था उसके लिए ये पुरुष और स्त्रियां चश्मदीद गवाहादर थें।

> *"इसके बाद यीशु प्रचार करते और परमेश्वर के राज्य का शुभ संदेश सुनाते हुए नगर-नगर और गांव-गांव में भ्रमण करने लगे। उनके साथ बारह प्रेरित थे, और कुछ स्त्रियां भी थीं जो दुष्ट आत्माओं और रोगों से स्वस्थ हुई थीं:.......... तथा अन्य अनेक स्त्रियां जो अपनी सम्पत्ति से उन लोगों की सेवा करती थीं।"* (लूका 8:1-3)

यीशु ने पुरुष, स्त्रियों और बच्चों को समान सम्मान दिखाया था। सुसमाचार पवित्र लेख कथनों के साथ भरपूर हैं जिसमे स्त्रियों से आत्म-सम्मान और दया के साथ व्यवहार करते हुए हम यीशु के विषय में पढ़ते हैं जो उस समय के यहूदी और रोमी संस्कृति से बढ़कर है।

यीशु ने पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति को असीम रूप से मूल्यवान माना, लेकिन उनका सुनने, उन पर विश्वास करने, या उनका अनुसरण करने के लिए उन्होंने किसी पर भी दबाव नहीं डाला। उन्हें उन लोगों के साथ समय बिताना पसन्द था जिनके मन और हृदय सत्य सुनने और उसे आत्मसात करने के इच्छुक थे, इसकी परवाह नहीं कि उन्हें कितना महंगा पड़ा।

एक मुख्य प्रश्न

जबकि बहुत से आम लोगों ने यीशु का अनुसरण किया, यहूदी धार्मिक नेताओं ने नहीं किया। एक दिन यीशु ने उनसे एक महत्वपूर्ण प्रश्न किया :

"मसीह के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? वह किसका वंशज है?" (मत्ती 22:42)

उन्होंने यह कहते हुए उत्तर दिया कि मसीहा राजा दाऊद का वंशज होगा। यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि दाऊद ने भविष्यवाणी की थी कि प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता दाऊद का पृथ्वी पर का पुत्र और परमेश्वर का स्वर्गीय पुत्र दोनों ही होगा।[154]

पहले, यीशु ने यही समान प्रश्न उसके शिष्यों से पूछा था :

"'मानव-पुत्र कौन है? इस विषय में लोग क्या कहते हैं?' उन्होंने उत्तर दिया, 'कुछ कहते है.......... भविष्यद्वक्ताओं में से एक।' यीशु ने कहा, 'पर मैं कौन हूं? इस विषय में तुम क्या कहते हो?' शिमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'आप जीवन्त परमेश्वर के पुत्र, मसीह है। ' यीशु ने कहा, 'धन्य हो तुम, शिमौन ..... मानवीय बुद्धि ने यह भेद तुम पर प्रकट नहीं किया वरन मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। ' " (मत्ती 16:13-17)

जल्द ही या बाद में, हम सभी को इस प्रश्न का उत्तर देना होगा: यीशु के बारे में आप क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?

कुछ क्या कहते हैं

बहुत सारे परदेशियों के लिए, यीशु एक शापग्रस्त शब्द से अधिक नहीं है।

अन्य कहते हैं वह एक बड़ा नैतिक शिक्षक था, लेकिन उससे अधिक नहीं।

धर्मनिष्ठ यहूदी यीशु के नाम का उच्चारण करने से भी बचते हैं, उसे केवल "वह मनुष्य" के रूप में संदर्भित करते हैं।

हिंदू अपने देवी-देवताओं की भीड़ के बीच यीशु को कई दिव्य आत्म-अवतारों में से एक के रूप में देखते हैं।

मेरे मुस्लिम पडोसी मुझे कहते हैं: "हम यीशु को एक बड़ा भविष्यद्वक्ता के रूप में आदर करते हैं, लेकिन वह परमेश्वर का पुत्र नहीं।"

एक संवाददाता ने कुछ इस प्रकार लिखा :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैं सऊदी अरब में रहता हूं....हम विश्वास रखते हैं कि यीशु केवल एक भविष्यद्वक्ता था और परमेश्वर का पुत्र नहीं। यीशु को जीवित मारा नहीं गया। वह फिर से आएगा और प्रत्येक जन यह देखेगा किस की तरफ वह जा मिलेगा। मैं आशा करता हूं यह आपके जीवनकाल में पूरा हो ताकि आप हमारे सुंदर धर्म से जुड़ सकें और सच्ची रोशनी देख सकें।

और एक मलेशिया के संवाददाता ने लिखा :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैं विश्वास रखता हूं कि परमेश्वर एक है और एक मानव ऐसे कभी भी नहीं था या समझा गया था....अगर कोई व्यक्ति है जो परमेश्वर के विषय में वह मानव रूप में अस्तित्व में है ऐसे सोचता है, तो फिर वह एक बड़ा ईश-निन्दक है।

यीशु मसीहा के विषय में कुरान क्या घोषणा करती है उससे ये दृष्टिकोण निकलते हैं।

कुरान क्या कहती है

कुरान बारम्बार स्पष्ट करती है कि यीशु यह "एक भविष्यद्वक्ता से अधिक नहीं था" (सूरा 4:171-173; 5:75; 2:136)। फिर भी, मुस्लिम लोगों द्वारा सम्मानित किताब भी यीशु को भविष्यद्वक्ताओं के बीच अद्वितीय घोषित करती है कि उनका कोई जैविक पिता नहीं था, उसे ईसा इब्न मरियम, "मरियम का पुत्र यीशु कहते हैं," (सूरा 19:34)। कुरान भविष्यद्वक्ताओं के पापों को संदर्भित करता है, लेकिन कभी भी यीशु को पाप का श्रेय नहीं देते। उसे "पवित्र पुत्र" कहते है।[155] जीवन निर्माण करने की सामर्थ्य, अंधों की आंखे खोलना, कोढ़ियों को शुद्ध करना और मृतकों को जीवित करने के सामर्थ्य के साथ कार्य करने वाला एकमात्र भविष्यद्वक्ता ऐसे यीशु को कुरान पेश करती हैं।[156] और यह अकेले यीशु के लिए है कि कुरान अल-मसीह (मसीहा), रूह अल्लाह (परमेश्वर का प्राण/आत्मा) और कलिमात अल्लाह (परमेश्वर का वचन)[157] जैसे उच्च ख़िताब का श्रेय देता है।

यीशु की विशिष्टता के बारे में कुरान की इन पुष्टियों पर ध्यान देने के बाद, यह बताया जाना चाहिए कि "मसीहा, मरियम के पुत्र यीशु" का कुरान का चित्रण बाइबल से मौलिक रूप से भिन्न है। उदाहरण के लिए, कुरान का वही वचन जो यीशु को ऊपर-उल्लिखित उपाधियों से संबोधित करता है, स्पष्ट करता है : *"मसीह ईसा सूत मरयम इसके सिवा कुछ न था कि **अल्लाह का एक***

रसूल था *और एक आदेश था जो अल्लाह ने मरयम की ओर भेजा और एक आत्मा थी अल्लाह की ओर से अत: तुम अल्लाह और उसके रसूलों को मानो और* ***न कहो कि 'तीन हैं। बाज आ जाओ****, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो बस एक ही पूज्य है।* ***वह पाक है इससे कि कोई उसका बेटा हो। ' "*** (सूरा 4:171 अनुदित कुरआन मजीद हिंदी अनुवाद मुहम्मद फारुख खां, पन्ना 149)

सेनेगल में, बच्चे और बुजुर्ग समान ही न ही केवल यह कहने में तत्पर है कि "यीशु,परमेश्वर का पुत्र नहीं है! परमेश्वर का कोई पुत्र नहीं!" लेकिन समान विश्वास के साथ घोषित करते है, "यीशु को क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया!"

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया नहीं यह विचार उन्हें कहां से प्राप्त हुआ?

यह विचार कुरान से आता है, जो घोषित करता है : *"अपने [यहूदी] इनकार में इतने बढे कि मरयम पर बड़ा लांछन लगाया, और स्वयं कहा कि हमने मसीह, ईसा सुत मरयम, अल्लाह के रसूल की हत्या कर दी है-हालांकि वास्तव में* ***इन्होने न उसकी हत्या की, न सूली पर चढ़ाया*** *बल्कि मामला इनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जिन लोगों ने इसके विषय में मतभेद किया हैं वे भी वास्तव में सन्देह में पड़े हुए हैं, उनके पास इस मामले में कोई ज्ञान नहीं है, केवल अटकल पर चल रहे हैं।* ***उन्होंने मसीह की, निश्चय ही हत्या नहीं की*** *बल्कि अल्लाह ने उसको अपनी ओर उठा लिया, अल्लाह बलशाली और तत्वदर्शी है।"* (सूरा 4:156-158)

बाइबल क्या कहती है

कुरान लिखे जाने से बहुत सदियों पहले, चालीस भविष्यद्वक्ता और प्रेरित जिन्होंने पुराना और नया नियम लेख लिखा जिन्होंने मसीहा और उसकी सेवकाई के विषय में कुछ भिन्न चित्रण किया हैं।

यीशु "परमेश्वर-पुत्र" इस उपाधि के संबंध में, यूहन्ना, जो यीशु के साथ तीन वर्षो से अधिक चला और बाते की थी, उसके विषय में गवाही देता है :

> *"यीशु ने अनेक आश्चर्यपूर्ण चिन्ह अपने शिष्यों के सम्मुख दिखाए जिनका विवरण इस पुस्तक में नहीं लिखा है। लेकिन जिन चिन्हों का विवरण लिखा गया है, वह इसलिए लिखा गया है कि तुम विश्वास करो कि* ***यीशु ही मसीह और परमेश्वर के पुत्र हैं,*** *और अपने इस विश्वास के द्वारा* ***उनके नाम से जीवन प्राप्त करो।"*** (यूहन्ना 20:30-31)

प्रेरित यूहन्ना ने यह भी लिखा :

आदि में शब्द था; -शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। उसके द्वारा सब वस्तुओं की उत्पत्ति हुई, और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ उसमें से एक भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। ....शब्द देहधारी हुआ और उसने हमारे मध्य निवास किया। हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।" (यूहन्ना 1:1-3, 14)

बहुत वर्षों पहले, एक मुस्लिम मित्र ने मुझे गुप्त रूप से बताया, "कुरान यीशु को कलिमात अल्लाह और रूह अल्लाह की उपाधि देता है। अगर यीशु ही परमेश्वर का शब्द और प्राण है, तो फिर वह परमेश्वर है!"

बाद में, कुछ लोगों ने मेरे मित्र को ईश-निंदा और शिर्क (अरबी: परमेश्वर के साथ किसी सहयोगी को जोड़ना[158]) का दोष लगाया। कम से कम वह अच्छे साथियों के साथ था! यीशु को भी उसी प्रकार से यहूदी धार्मिक अगुओं ने दोष लगाया था।

यीशु ने कहा :

"मैं और मेरा पिता एक है।' यहूदी धर्मगुरुओं ने पुनः यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए। *इस पर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'पिता की ओर से मैंने अनेक अच्छे कार्य तुम्हे दिखाए; उनमें से किस कार्य के लिए तुम मुझे पत्थरों से मारना चाह रहे हो?' यहूदी धर्मगुरुओं ने कहा, 'अच्छे कार्य के लिए हम तुझे पत्थरों से नहीं मारना चाहते। वरन परमेश्वर की* ***निन्दा के लिए,*** *क्योंकि* ***तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बताता हैं।***'"* (यूहन्ना 10:30-33)

यहूदी लोगों ने यीशु को वहीं कार्य करने का दोष लगाया जो लूसिफर ने करने का प्रयास किया था : उस अद्वितीय, उंचे स्थान को हड़प लें जो केवल परमेश्वर का है। उन्होंने यीशु पर खुद को परमेश्वर कहलवाने का दोष लगाया।

लेकिन उलटा उन्हें इसका प्रतिफल मिला।

देहधारणा, देवता-सदृश नहीं

न ही यीशु न ही भविष्यद्वक्ताओं ने सिखाया कि एक मनुष्य परमेश्वर बन सकता है, बल्कि, पवित्रशास्त्र में स्पष्ट है कि परमेश्वर मनुष्य बनेगा।

उदाहरण के लिए, मसीहा का जन्म होने से कुछ 700 वर्षों पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा :

"जो लोग अंधियारे में चल रहे थे, उन्होंने बड़ा उजियाला देखा; और जो घोर अंधकार से भरे हुए मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर ज्योति चमकी। ......क्योंकि हमारे लिए ***एक बालक उत्पन्न हुआ****; हमें* ***एक पुत्र दिया गया है****; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी और उसका नाम 'अद्भुत युक्ति करनेवाला,* ***पराक्रमी परमेश्वर****, अनंतकाल का पिता', और शांति का राजकुमार रखा जाएगा।"* (यशायाह 9:2, 6)[159]

यशायाह ने मसीहा के आगमन के विषय में ये शब्द भी लिखे :

".............ओ यरूशलेम को शुभ संदेश सुनानेवाली, बलपूर्वक उच्च स्वर में सुना! मत डर, ऊंची आवाज में सुना। यहूदा प्रदेश के नगरों में यह प्रचार कर, ***'देखो! तुम्हारा परमेश्वर****!' "* (यशायाह 40:9)

आरंभ से, परमेश्वर की योजना में देहधारणा सम्मिलित है (परमेश्वर मानवी देह धारण करना), देवता-सदृश नहीं (एक मानव अपने आपको एक देवता करेगा)। यह सुझाव देना कि एक मनुष्य परमेश्वर बन गया यह ईश-निंदा है, लेकिन यह समझ जाना कि अनंतकाल का शब्द मनुष्य हो गया यह परमेश्वर के युगों की योजना का अंगीकार करना है।

कागज पर और एक व्यक्ति में

अगर आप चाहते हो कि किसी को ठीक तरह से पहचाने, तो कौनसी पद्धत उत्तम होगी?

- आपके संचारण को लिखित पत्रों तक ही सीमित रखना।
- या, कुछ समय के लिए पत्रों का लेन-देन करने के बाद में, व्यक्ति को आमने-सामने मिले और साथ में समय बिताए।

पवित्रशास्त्र जितना अद्भुत हैं, परमेश्वर, जो एक वक्त आदम और हव्वा के साथ चला और बातचीत की थी और उनके वंशजों के लिए उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने की योजना बनाई, उसने कभी भी अपने संचार को कागज तक ही सिमित रखने का इरादा नहीं किया। आरंभ से, उसने एक व्यक्ति में हमारे साथ संबंध रखने की योजना की थी। प्रभु, जिसने सदियों से उसके भविष्यद्वक्ताओं से पैपीरस स्क्रोल और जानवरों की खाल पर अपना वचन दर्ज करवाया था, उसने मानव त्वचा में खुद को मानवजाति के सामने प्रकट करने का वादा किया था। परमेश्वर ने अपना शब्द एक पुस्तक के साथ हमें प्रदान करने की केवल योजना नहीं की थी, वह अपना शब्द एक शरीर में भी हमें प्रदान करनेवाले था।

"उसने संसार में प्रवेश करते हुए कहा: '.......तूने मेरे लिए एक ***शरीर*** *प्रस्तुत किया।' "*
(इब्रानियों 10:5)[160]

"इसमे सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गंभीर है- अर्थात वह जो ***शरीर में*** *प्रकट हुआ।"*
(1 तीमुथियुस 3:16)

उसके ऐश्वर्य से अयोग्य?

परमेश्वर का लोगों के साथ निवास करने की उसकी योजना के विषय में बारंबार घोषणा के बावजूद, मैं यह सुनता हूं वे जो कहते है: "यह परमेश्वर के अलौकिक प्रताप से दूर है कि वह मनुष्य बन जाए!"

हालांकि देहधारणा की अवधारणा को समझना कठिन है, क्या यह परमेश्वर के ऐश्वर्य से प्रत्यक्ष में अयोग्य है? या क्या यह परमेश्वर का स्वभाव और योजना का अंतर्गत हिस्सा है कि लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध पुनः स्थापित करे जिन्हें उसने स्वयं के लिए निर्माण किया है?

जीवन में अक्सर हमें उनकी घनिष्ठता में रहना अच्छा लगता है जिन्होंने वह अनुभव किया है जो हमने अनुभव किया है। दिलासा और सहायता देने के लिए सबसे योग्य वे हैं जो समान संघर्ष और दुखों से गुजरे हैं। हमारा सृष्टिकर्ता परम दिलासा देनेवाला है।

"जैसे परिवार के सब बच्चों का लहू-मांस एक ही होता है, वैसे ही यीशु ने हमारा लहू-मांस धारण किया *.......यीशु ने स्वयं दुःख भोगा। वह स्वयं परीक्षा में पड़े जिससे वह परीक्षा में पड़े हुए लोगों की सहायता कर सकें। ....हमारे महापुरोहित ऐसे नहीं कि हमारी दुर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति न रख सके;* ***प्रत्येक बात में उनकी परीक्षा हमारे समान ही हुई, और फिर भी वह निष्पाप निकले।"*** (इब्रानियों 2:14, 18; 4:15)

आरंभ से यह परमेश्वर की योजना थी कि मांस के शरीर की मर्यादा और असंतुष्टि अपने ऊपर ले; उनके उंगलियों के भीतर गन्दगी ले, भूख, चोट और वह अनुभव करे जो हम अनुभव करते हैं। इसके बगैर जो सिखाते हैं वे न ही केवल परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं और योजना को अस्वीकार कर रहे हैं, परमेश्वर के स्वभाव और गुणों का वे इन्कार कर रहे हैं। विश्वसनीय और प्रेमी सृष्टिकर्ता जिसकी इच्छा है कि लोग उसे व्यक्तिगत रूप से जाने इस प्रकार परमेश्वर के स्वयं के प्रकटीकरण का स्वीकार करने के बजाय, वे उसे अप्रत्याशित और अज्ञात ऐसे घोषित कर रहे हैं।

अपने आपको शून्य करके अन्य लोगों के स्तर तक आए कि उनकी सेवा करे और उन्हें आशीष प्रदान करे इसके इच्छुक न होने के विषय में कुछ भी "ऐश्वर्यपूर्ण" नहीं है। हमारे सृष्टिकर्ता ने इतिहास में हमारे स्तर तक नीचे आने के विचार को कभी भी तिरस्कृत नहीं किया। यह उनकी योजना और उनका हर्ष था कि ऐसे करे।[161]

*"**वह धनवान होने पर** भी तुम्हारे लिए **दरिद्र हो गए** जिससे उनकी दरिद्रता से तुम धनवान बन सको।"* (2 कुरिंथियो 8:9)

यह आपके और मेरे लिए है कि अनंत शब्द हमारे ग्रह पर आया। विश्व का सृष्टिकर्ता जो महिमा और सम्मान में "धनवान था", वह "गरीब हो गया", सेवक का स्थान ग्रहण किया, ताकि हम धनवान हो सके, पैसे और साधन-संपत्तियों द्वारा नहीं, लेकिन आध्यात्मिक आशीषों के साथ जैसे क्षमा, धार्मिकता, अनंतकाल का जीवन, प्रेम, आनंद, शांति और पवित्र इच्छाएं।

महानता परिभाषित की गई

बहुत से लोग सोचते हैं कि मांस और लहू के शरीर में पृथ्वी पर आने के लिए परमेश्वर बहुत महान है। यह हो सकता है वे इस प्रकार विचार करते हैं क्योंकि महानता की उनकी परिभाषा महानता की परमेश्वर की परिभाषा से भिन्न होती हैं?

यीशु ने सच्ची महानता को परिभाषित किया जब उसने अपने शिष्यों से कहा :

*"यीशु ने उनको बुलाकर कहा, 'तुम जानते हो कि जो व्यक्ति किसी राष्ट्र में शासक माने जाते हैं, वे जनता पर निरंकुश शासन करते रहते हैं, और उनके "बड़े लोग" उन पर अधिकार जताते हैं। लेकिन तुममें ऐसा नहीं होगा; वरन तुममें जो **महान** होना चाहे, वह तुम्हारा **सेवक** बने। और तुममें जो प्रधान होना चाहे, वह सबका दास बने। **क्योंकि मानव-पुत्र सेवा कराने नहीं, वरन सेवा करने और सब मनुष्यों के लिए उनकी मुक्ति के मूल्य में अपने प्राण देने आया है। ' "*** (मरकुस 10:42-45)

सबसे महान व्यक्ति वह है जो अपने आपको सबसे नम्र करता है और दूसरों की उत्तमता से सेवा करता है।[162]

यही जो हमारे सृष्टिकर्ता ने हमारे लिए किया।

तूफान और लहरों का स्वामी

एक दिन यीशु गलील समुद्र पर अपने शिष्यों के साथ उनकी नौका में थे।

*"एकाएक झील में **प्रचंड तूफान उठा**, यहां तक कि नौका लहरों से ढक गई। यीशु सो रहे थे। शिष्यों ने आकर उन्हें जगाया और कहा, 'प्रभु, हमें बचाइए, हम तो मरे।' यीशु ने कहा, 'अल्पविश्वासियो, तुम इतने डरे हुए क्यों हो?' तब यीशु ने उठकर तूफान और लहरों को आदेश दिया कि थम जाएं। अत: वे थम गए और **बड़ी शांति छा गई।***

*शिष्य चकित हो कहने लगे, **'यह साधारण मनुष्य नहीं है, क्योंकि तूफान और लहरें भी इनकी आज्ञा मानते हैं**?' "* (मत्ती 8:24-27)

शिष्यों के प्रश्न का उत्तर आप कैसे देते?

"यह कौन हो सकता है?"

स्पष्ट रूप से यीशु एक मनुष्य थे। वे नौका में सो रहे थे; वे जानते थे कि थकना, भूखे होना और प्यासे होना क्या है। लेकिन फिर वे खड़े हो गए और तूफान को डांटा। तुरंत प्रबल तूफान थम गया और तीव्र समुद्र शांत हो गया।

इसमे कोई आश्चर्य नहीं कि शिष्यों ने पूछा :

"यह कौन हो सकता है?"

हजार वर्षों पहले, परमेश्वर के एक भविष्यद्वक्ता ने लिखा है :

"हे प्रभु,....तेरे जैसा और कौन शक्तिमान है?.......तू समुद्र के उत्पात पर शासन करता है; उसकी लहरें उठने पर तू उन्हें शान्त करता है।" (भजन संहिता 89:8-9)

यह कौन हो सकता है? सुसमाचार भी यीशु के समुद्र के ऊपर चलने के विषय में कहता है।[163] फिर एक बार यीशु के शिष्य "अपने आप में समझ और कल्पना से बढ़कर आश्चर्यचकित हो गए" (मरकुस 6:51)। लेकिन यीशु लोगों को चकित करने के लिए समुद्र की लहरों पर नहीं चला; उन्होंने वह किया कि उन्हें समझने में सहायता करे कि वह कौन है।

दो हजार वर्षों पहले, अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के विषय में कहा था :

*"**केवल परमेश्वर** ने ही आकाश को वितान की तरह फैलाया है; वह **सागर की उत्ताल तरंगों को अपने वश में रखता** है।"* (अय्यूब 9:8)

यह कौन हो सकता है? परमेश्वर हमें आमंत्रित करता है कि उन बिन्दुओं को जोड़े और समझे कि यीशु कौन थे और क्या है।

दुखद रूप से, अधिकतर ऐसा कभी नहीं करते।

*"शब्द संसार में था, और संसार उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, **किंतु संसार ने उसको न जाना**।"* (यूहन्ना 1:10)

यह कौन हो सकता है? यीशु ने स्वयं इस प्रश्न का उत्तर एक दिन दिया जब वह विरोधी धार्मिक

भीड़ के साथ बात कर रह था।

"मैं हूं"

> *"फिर यीशु ने लोगों से कहां, 'मैं संसार की ज्योति हूं। मेरा अनुयायी अंधकार में नहीं भटकेगा, वरन जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा। ....मैं तुमसे सच-सच कहता हूं: यदि कोई व्यक्ति मेरे संदेश को सुनेगा और उसके अनुसार आचरण करेगा, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा।' यहूदी धर्मगुरु बोले, ...तुममें भूत है। अब्राहम मृत्यु को प्राप्त हुए और भविष्यद्वक्ता भी; और तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति मेरे संदेश को सुनेगा और उसके अनुरूप आचरण करेगा, तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा। हमारे पूर्वज अब्राहम तो मर गए। क्या तुम उनसे महान होने का दावा करते हो? नहीं भी मृत्यु को प्राप्त हुए। तुम अपने को समझते क्या हो?'......यीशु ने उत्तर दिया..... 'तुम्हारे पूर्वज अब्राहम मेरे दिन का दर्शन करने के लिए उल्लसित हुए। उन्होंने दर्शन किया और आनन्दित हुए।' यहूदी बोले, 'अभी तुम पचास वर्ष के भी नहीं, और तुम अब्राहम को देख चुके हो?' यीशु ने कहा,* ***'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं: अब्राहम के उत्पन्न होने से पूर्व मैं हूं।'*** *तब लोगों ने यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए, लेकिन यीशु छिपकर मंदिर से निकल गए।"* (यूहन्ना 8:12, 51-53, 56-59)

यहूदियों ने यीशु को पत्थरवाह करने का प्रयास क्यों किया? क्योंकि उसने कहा था: *"यदि कोई व्यक्ति* ***मेरे संदेश*** *को सुनेगा और उसके अनुसार आचरण करेगा, तो वह कभी* ***मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा****", और: "अब्राहम के उत्पन्न होने से* ***पूर्व मैं हूं****।"* यीशु ने न ही केवल मृत्यु पर उसका अधिकार और अब्राहम (जो 1900 वर्षों पहले मर गया था) पर उसकी वरिष्ठता का दावा किया था, उसने अपने आपको परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम, *"**मैं हूं**"*[164] से भी संबोधित किया था।

यीशु के श्रोता समझ गए कि उसका क्या मतलब है। इसलिए उन्होंने उस पर ईश-निंदा का दोष लगाया और उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिए।

परमेश्वर की केवल आराधना कर

यीशु ने लगातार सिखाया कि केवल परमेश्वर ही हमारी आराधना का पात्र बनने के योग्य है। इसी कारण से यीशु ने कहा, *"अपने प्रभु परमेश्वर की वन्दना कर, और केवल उसी की आराधना कर"* (मत्ती. 4:10)। फिर भी सुसमाचार कम से कम दस अवसरों का उल्लेख करता है जब लोग यीशु के सम्मुख झुके और उसकी आराधना की।

एक दिन, *"एक कुष्ठ रोगी आया और **उसकी आराधना की**,*[165] *यह कहते हुए, 'हे प्रभु, यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते है। यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श किया और कहा, 'निश्चय, मैं चाहता हूं कि तुम शुद्ध हो जाओ।' और वह तुरंत कोढ़ से शुद्ध हो गया"* (मत्ती 8:2-3)। यीशु ने कुष्ठ रोगी को उसकी आराधना करने के लिए डांटा क्या?

नहीं, उसने केवल उसे स्पर्श किया और उसे स्वस्थ किया।

यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के बाद, एक शिष्य जिसका नाम थोमा था वह उसके सम्मुख गिरा और कहा, *"मेरे प्रभु और **मेरे परमेश्वर**!"* यीशु ने उसे ईश-निंदा के लिए झिड़कारा क्या?

नहीं, यीशु ने सरलता से कहा, *"थोमा, क्योंकि तुमने मुझे देखा, इसलिए तुमने विश्वास किया। धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा तो भी विश्वास करते हैं।"* (यूहन्ना 20:28-29)

यीशु कौन है इसके विषय में यह हमें क्या सिखाता है?

आप निर्णय करे

हम में से प्रत्येक जन यीशु के विषय में विश्वास करने का क्या निर्णय करे यह हमारा व्यक्तिगत निर्णय है, लेकिन किसी को भी उसके बारे में आत्म-विरोधाभासी दृष्टिकोण अपनाने नहीं देना चाहिए। अगर यीशु यह "एक बड़ा भविष्यद्वक्ता" था, जैसे मुझे मेरे पडोसी कहते हैं, तब वह, वह भी था जिसके होने का उसने दावा किया था: अनंत शब्द और परमेश्वर का पुत्र। यीशु को "एक भविष्यद्वक्ता से अधिक कुछ नहीं" ऐसा घोषित करना, यह यीशु की गवाही और भविष्यद्वक्ताओं के संदेश दोनों का इन्कार करना होगा।[166]

सी. एस. लेवीस, पूर्व संशयवादी और बीसवी शताब्दी के बड़े बुद्धिजीवी, ने यीशु के विषय में लिखा :

> "मै यह प्रयास कर रहा हूं कि कोइ भी वास्तव में मुर्खतापूर्ण बात कहने से रोके जो लोग अक्सर उसके बारे में कहते है : 'मैं तैयार हूं कि यीशु को एक महान नैतिक शिक्षक के रूप में ग्रहण करू, लेकिन परमेश्वर होना यह उसका दावा मैं स्वीकार नहीं करता।' वह एक बात है जो हमें नहीं कहना चाहिए। एक मनुष्य जो केवल एक मनुष्य था और इस तरह की बातें कहता है जो यीशु ने कही थी वह एक महान नैतिक शिक्षक नहीं होगा। वह एक तो पागल या नहीं तो वह नरक का भूत होगा। आपको अपना निर्णय स्वयं लेना चाहिए। एक तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था और है : या नहीं तो एक मुर्ख मनुष्य या कुछ और बुरा। आप उसे एक मुर्ख कह कर चुप करा सकते हो, आप उस पर थूंक

सकते और उसे एक भूत कहके जीवित मार सकते हो; या आप उसके चरणों के पास गिरते और उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हो। लेकिन आइए हम उसके एक महान मानव शिक्षक होने के बारे में कोई संरक्षणवादी बकवास न करें। उसने हमारे लिए वह खुला नहीं छोड़ा है। उसका यह अभिप्राय नहीं था।"[167]

"हमें स्पष्ट रूप से कह"

हर बार, कोई मुझे कहता है : "बाइबल में मुझे दिखाओ जहां यीशु ने कहा, 'मैं परमेश्वर हूं!' " यीशु के समय के धार्मिक अगुओं ने उसे इसी तरह के बयान देने के लिए मजबूर करने की कोशिश की।

*यीशु ने कहा, "**द्वार मैं हूं** : जो **मेरे द्वारा** प्रवेश करेगा, वह उद्धार पाएगा। .....यहूदी धर्मगुरु उनके चारों ओर एकत्र हो गए और पूछने लगे, 'आप कब तक हमें दुविधा में डाले रहेंगे? यदि आप मसीह है तो **हमसे स्पष्ट कह दीजिए।** ' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चूका हूं, पर तुम विश्वास करते ही नहीं। जो कार्य मैं पिता के नाम से करता हूं, वे मेरी साक्षी देते हैं;.....**मैं और मेरा पिता एक है। ' यहूदी धर्मगुरुओं ने पुनः यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए।** इस पर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'पिता की ओर से मैंने अनेक अच्छे कार्य तुम्हे दिखाए; उनमें से किस कार्य के लिए तुम मुझे पत्थरों से मारना चाह रहे हो?' यहूदी धर्मगुरुओं ने कहा, **'अच्छे कार्य के लिए हम तुझे पत्थरों से नहीं मारना चाहते। वरन परमेश्वर की निन्दा के लिए, क्योंकि तू मनुष्य होकर अपने आपको परमेश्वर बताता हैं।** '"* (यूहन्ना 10:9, 24-25, 30-33)

धार्मिक भीड़ उसे पत्थरवाह क्यों करना चाहती थी?

यह इस कारण से था कि यीशु ने कहा, *"मैं और मेरा पिता **एक** है।"* उनके विचार में, यीशु का परमेश्वर के साथ एक होने का दावा यह ईश-निंदा थी। फिर भी, इन्हीं यहूदियों ने नियमित रूप से यह कहते हुए परमेश्वर में अपने विश्वास की घोषणा, *"अदोनाय एलोहीयेनु अदोनाय **एखाद**,", जिसका अर्थ: "प्रभु हमारा परमेश्वर, प्रभु **एक** ही है* [बहुवचन एकता]।" यीशु स्वयं को परमेश्वर का पुत्र घोषित कर रहा था जो हमेशा से ही परमेश्वर के साथ एक है।[168] इसी कारण से यहूदियों ने उसे ईश-निंदा करने दोष लगाया।

यीशु ने उसके अनंत अस्तित्व जैसे शब्द और परमेश्वर का पुत्र इसका कभी भी घमण्ड नहीं

दिखाया। वे चारों ओर यह कहते हुए नहीं गए, "मैं परमेश्वर हूं! मैं परमेश्वर हूं!" इसके बजाय, वह पृथ्वी पर वैसे ही रहा जैसे वह चाहता है कि समस्त मानवजाति जीवित रहे; पूर्ण विनम्रता और स्वेच्छा से परमेश्वर के प्रति समर्पण में।

यीशु ही केवल एकमात्र व्यक्ति है जो यह कह सकते है: *"**मैं अपनी नहीं**, वरन अपने **भेजने वाले की इच्छा पूर्ण करने** के लिए स्वर्ग से उतरा हूं"* (यूहन्ना 6:38)। यीशु के जीवन की महिमा यह थी कि वह, ***परमेश्वर** का श्रेष्ठ पुत्र*, जिसने ***मनुष्य** का पुत्र* बनने के लिए स्वयं को विनम्र किया था।

प्रभु यीशु ने वह कौन था इसे विनम्र लेकिन शक्तिशाली तरीके से बताने के लिए चुनाव किया।

एक बार एक धनवान जवान मनुष्य यीशु के पास आया और उसे *"**उत्तम** शिक्षक"* उपाधि के साथ संबोधित किया। तब यीशु ने उस मनुष्य से पूछा, *"तुम **मुझे** उत्तम क्यों कहते हो? **परमेश्वर** को छोड़ और कोई उत्तम नहीं"* (लूका 18:19)[169]। धनवान मनुष्य ने यीशु परमेश्वर था ऐसा विश्वास नहीं किया था, लेकिन यीशु-दैवी उत्तमता का मानवीकरण है-जो उसे आमंत्रित कर रहे है कि पहेली की टुकड़ों को इकट्ठा करे और समझे वह कौन है।

वह हमसे भी चाहता है कि समझे।[170]

वचन को कार्यों के साथ समर्थन करना

अनगिनत सामर्थ्यशाली चमत्कार जो यीशु ने किए उन्होंने पतित, पाप से-शापित सृष्टि के प्रत्येक घटकों पर अपना अधिकार और सामर्थ्य प्रदर्शित किया। वह मनुष्य के विचार जानते थे, उन्होंने पाप क्षमा किया, हजारों लोगों के लिए रोटी और मछली को बहुगुणित किया, तूफान को शांत किया और दुष्टात्माओं को निकलने के लिए आदेश दिया था। शब्द या स्पर्श के साथ, उन्होंने रोगियों को स्वस्थ किया, लंगड़ों को चलाया, अंधों की आंखे खोली, बहिरों के कान खोंले, और मृतकों को फिर से जीवित किया। जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, मसीहा पृथ्वी पर "प्रभु का हाथ" थे।[171]

जिनके पास आंखे थी कि देखे, यीशु का दिव्य प्रताप उनके अस्तित्व के हर तंतु में चमका। उनके कामों ने उनके शब्दों को विधिमान्य ठहराया था। उदाहरण के लिए, जब हमने अभी पढ़ा है, यीशु ने दावा किया वह "जीवन" है। और इस दावे को उन्होंने कैसे प्रमाणित किया? उन्होंने मृतकों को जीवन में फिर से आने की आज्ञा देकर इसे साबित कर दिया।

एक अवसर पर, प्रभु यीशु लाजर की कब्र पर थे, एक मनुष्य जो चार दिन पहले मर गया था। लाजर के शव को एक गुफां में दफनाया गया था। यीशु ने मरे हुए व्यक्ति के रोते हुए बहनों से कहा

रोना नहीं : यह कि उनका भाई फिर से जीवित होगा।

बहन ने यीशु से कहा, *"मैं जानती हूं कि अंतिम दिन पुनरुत्थान के समय वह पुनः जीवित होगा।"*

यीशु ने उत्तर दिया, *"**पुनरुत्थान और जीवन मै हूं**; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जिएगा।"* (यूहन्ना 11: 24-25)

तब उसके दावे को प्रमाणित करने के लिए, यीशु ने *"ऊंचे स्वर में पुकारा, '**लाजर, बाहर निकल आ।**' **वह मृतक बाहर निकल आया।** उसके हाथ-पैर पट्टियों से बंधे थे और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था।"*

यीशु ने उन्हें कहा, 'इसे खोल दो और जाने दो।

*"तब उन यहूदियों में से बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया,....जिन्होंने यह कार्य देखा था। पर कुछ यहूदियों ने फरीसियों के पास जाकर बता दिया ....अत: **वे उस दिन से यीशु को मार डालने के लिए परामर्श करने लगे।** ......इस पर महापुरोहित लाजर की भी हत्या करने का परामर्श करने लगे। क्योंकि उसके कारण अनेक यहूदी अपने धर्मगुरुओं को छोड़ कर चले गए और यीशु पर विश्वास करने लगे।"* (यूहन्ना 11:43-46, 53; 12:10-12)[172]

मानवी हृदय कितना कठोर है!

कठोर हृदय

यीशु के दावे और उसकी बढ़ती लोकप्रियता के प्रकाश में, द्वेष करनेवाले यहूदियों के धार्मिक और राजनीतिक अगुवें बड़े आवेश के साथ एकत्र हुए : यीशु को चुप किया जाना चाहिए! कोई भी वजह ढूँढने के लिए वे बड़े हताश थे, कोई भी वजह कि उस पर दोष लगाए ताकि वे उसे मृत्युदंड दे सके। लेकिन आप अब तक पैदा होने वाले एकमात्र सिद्ध व्यक्ति पर कैसे दोष लगाते हैं?

एक सब्त पर, यीशु आराधनालय में सिखा रहे थे....

> *"वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सुख गया था। कुछ लोग [धर्मगुरु] ताक में थे कि यीशु उसे विश्राम-दिन पर स्वस्थ करते है अथवा नहीं, जिससे वे उन [यीशु] पर अभियोग लगा सके। यीशु ने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, 'उठ, बीच में खड़ा हो;' और फिर लोगों से बोले, 'व्यवस्था की शिक्षा के अनुसार विश्राम-दिन पर भलाई करना उचित है अथवा बुराई, प्राण बचाना अथवा नष्ट करना?' वे लोग चुप्पी साधे रहे।*

*इस पर यीशु ने रोष से चारों ओर दृष्टि डाली और **उनके मन की जड़ता पर दुखित होकर** उस मनुष्य से कहा, 'हाथ बढ़ा।'*

*उसने हाथ बढ़ा दिया और उसका हाथ पुनः ठीक हो गया। **तब फरीसी बाहर निकले और तुरंत यीशु के विरुद्ध हेरोदेस-दल** [राजनीतिक पक्ष] **के साथ मंत्रणा करने लगे कि किस प्रकार उनकी हत्या करे।***

यीशु अपने शिष्यों के साथ झील की ओर निकल गए। तब ......विशाल जनसमूह .....उनके समीप आया। .....उन्होंने बहुत रोगियों को स्वस्थ किया। अत: सब पीड़ित मनुष्य उन पर गिरे पड़ते थे कि उन्हें स्पर्श करे।

*अशुद्ध आत्माएं भी जब उन्हें देखती तो उनके सामने गिर पड़ती और चिल्ला कर कहती थी, **'आप परमेश्वर के पुत्र हैं!'**"* (मरकुस 3:1-11)

राक्षसी अंतर्दृष्टि

भूतों को पता था यह स्वस्थ करनेवाला कौन था, इसी कारण से उन्होंने उसके योग्य उपाधि के साथ उसे संबोधित किया, पुकारते हुए, "आप परमेश्वर के पुत्र है!" ये पतित दूत यीशु के पूर्व इतिहास से भलीभांति परिचित थे। हजार वर्षों पहले, उन्होंने उसकी अद्भुत सामर्थ्य और अगाध ज्ञान को देखा था जब उसने कहा और स्वर्ग और पृथ्वी अस्तित्व में आ गए थे। वे थरथर कांप रहे थे जब उन्होंने उस दिन का स्मरण किया जब उसने, उसके धर्मी क्रोध में, उन्हें स्वर्ग से बाहर कर दिया था जब उन्होने उनके विद्रोह में शैतान का अनुसरण करने का चुनाव किया था।[173] और अब यहां मनुष्यों के बीच में पृथ्वी पर उनके साथ वह जीवन व्यतीत कर रहा था!

अनिष्ट संकेत मिला था।

उनके स्वामी का अधिकार कमजोर हो रहा था।

पाप का श्राप अब उलटा होने लगा था।

सार्वकालिक पुत्र ने स्वयं, एक स्त्री का वंशज होकर, उनके क्षेत्र में प्रवेश किया था। इस प्रकार, भूत "उसके सम्मुख गिर पड़ते और पुकारते, यह कहते हुए, **'आप परमेश्वर के पुत्र हैं!'** इसी दौरान, धर्मगुरु" मंत्रणा करने लगे कि किस प्रकार **उनकी हत्या करे।**"

एक बार मैंने कुछ मेहमानों को यह कहानी सुनाने के बाद में, उन में से एक मनुष्य ने विवेचना की, "अविश्वसनीय! भूतों को धर्मगुरुओं से अधिक यीशु का आदर था!"

अविश्वसनीय, लेकिन सत्य।

पाठ 18

परमेश्वर की अनन्त योजना

"यह उसी प्रभु का कथन है, जो सृष्टि के आरंभ से यह प्रकट करता आया है।"

(प्रेरितों के काम 15:18)

समय की शुरुआत होने से पहले, परमेश्वर के पास लोगों के लिए मन में एक स्पष्ट योजना थी। जिस दिन मानव परिवार को पाप ने दूषित किया, प्रभु ने अपनी योजना की घोषणा करना आरंभ किया, लेकिन सांकेतिक रूप में। पवित्रशास्त्र इस योजना को *"परमेश्वर के **रहस्य**"* के रूप में संबोधित करता है। (प्रकाशितवाक्य 10:7)

आज के दिन तक, बहुत से लोगों को मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य रहस्य बने हुए हैं, लेकिन अनावश्यक रूप से, क्योंकि *"**रहस्य** जो युगों से और पीढ़ियों से छिपा हुआ है.....**अब प्रकट किया गया है**।"* (कुलुस्सियों 1:26)

भविष्यद्वक्ताओं से अधिक सौभाग्यशाली

यहां पर एक अद्भुत विचार है। जब परमेश्वर की कहानी और संदेश समझने का विचार आता है, तब भविष्यद्वक्ता जिन्होंने पवित्रशास्त्र लिखा उनसे अधिक आप और मैं सौभाग्यशाली है।

हमारे पास परमेश्वर का पूर्ण प्रकटीकरण है; उनके पास नहीं था।

हम परमेश्वर के पवित्रशास्त्र का अंत पढ़ सकते है; वे पढ़ नहीं सके।

"इसी उद्धार के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने, जिन्होंने तुम पर होने वाले अनुग्रह की भविष्यवाणी की थी, सावधानी से खोज और छानबीन की। वे इस खोज में थे कि उनमे विद्यमान मसीह का आत्मा किस काल और किन परिस्थितियों की ओर संकेत कर रहा

> *था, जब उसने मसीह के कष्टों और उनके बाद होनेवाली महिमा की भविष्यवाणी की।* ***उन भविष्यद्वक्ताओं पर यह ईश्वरीय प्रकाशन हुआ कि वे अपने लिए नहीं किंतु तुम्हारे हित के लिए उन तथ्यों को प्रकट कर रहे हैं। अब इन तथ्यों की घोषणा तुम्हारे बीच उन लोगों के द्वारा हुई है*** *जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा की प्रेरणा से तुम्हे परमेश्वर का शुभ संदेश सुनाया है।* ***इन बातों के ज्ञान के लिए स्वर्गदूत भी उत्सुक रहते हैं।"*** (1 पतरस 1:10-12)

परमेश्वर ने उसकी योजना को सांकेतिक शब्दों में क्यों दिया

किसी ने पूछा है, "परमेश्वर ने प्रत्यक्ष में जो करने की योजना की है उसे पतित मानवजाति को तुरंत क्यों नहीं बताया? उसने उसके संदेश को रहस्य में क्यों छिपाया?

यद्यपि विश्व का सार्वभौम परमेश्वर हमें स्पष्टीकरण देने का ऋणी नहीं है, अपनी करुणा में उसने हमें उस बात की अंतर्दृष्टि दी है कि उसने मनुष्यों के लिए अपनी योजना को सांकेतिक शब्दों में क्यों दिया। यहां पर तीन कारण हैं जो परमेश्वर ने चुने है कि उसकी कार्ययोजना उत्तोरोत्तर और बुद्धिमानी से प्रकट करे।

पहला, जैसे उसने पाठ पाच और छः में स्पष्ट किया है, अपनी योजना को धीरे-धीरे प्रकट करने के द्वारा, परमेश्वर ने मानवजाति को अनगिनत **पुष्टि करनेवाली** भविष्यवाणियां और प्रतिक प्रदान किए, साथ ही साथ अनेक प्रमाणित गवाहदार, ताकि बाद की पीढियां एक सत्य परमेश्वर के संदेश को निश्चितता के साथ जान सके।

दूसरा, परमेश्वर ने अपने सत्य को इस तरीके से प्रकट किया है कि केवल जो उसे परिश्रमपूर्वक खोजने के लिए काफ़ी सावधानी लेते हैं वे ही उसे प्राप्त कर संकेंगे। *"यह परमेश्वर की महिमा है कि रहस्य, रहस्य बना रहे; पर राजा की महिमा तब होती है, जब वह रहस्यों से* ***परदा उठाता है****"* (नीतिवचन 25:2)। बहुत से लोग सत्य को उसी कारण से नहीं ख़ोज पाते जैसे एक चोर को एक पोलिस अधिकारी नहीं मिल पाता; वे ऐसा करना चाहते नहीं।[174]

तीसरा, परमेश्वर ने अपनी योजना को सांकेतिक शब्दों में लिखा है ताकि शैतान और उसके अनुयायियों से उसे **गुप्त रखे**।

> *"हम परमेश्वर के उस रहस्यमय ज्ञान का वर्णन करते है जो गुप्त है, और जिसे परमेश्वर ने युगों से पूर्व हमारी महिमा के लिए निर्धारित किया। इस ज्ञान को संसार के शासकों ने नहीं जाना अन्यथा वे महिमामय प्रभु को क्रूस पर नहीं चढाते।"* (1 कुरिंथियों 2:7-8)

अगर शैतान और जो उसके साथ हो गए है उन्होंने उसे पराजित करने की परमेश्वर की आधारभूत योजना को समझ लिया होता, तो जो उन्होंने किया वो उन्होंने नहीं किया होता। परमेश्वर ने अपनी योजना इस प्रकार रची है कि वही जिसने उसे विफल करने का षडयंत्र किया है वही उन्हें पूरा करने में सहायता करेगा।

और यूंही वह योजना क्या थी?

छुटकारा!

परमेश्वर ने संसार में एक निष्पाप उद्धारकर्ता भेजने की प्रतिज्ञा की-एक स्त्री का वंशज होकर-कि आदम के हठीले, व्यवस्था-तोड़नेवाले वंशजों को अनंतकाल के विनाश से छुडाए। मानवी इतिहास में योग्य क्षण में, परमेश्वर ने उसकी प्रतिज्ञा पूर्ण की।

> *"लेकिन जब समय पूरा हुआ तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। वह एक नारी से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। जिससे वह व्यवस्था के अधीन लोगों को* ***मोल लेकर छुडाए*** *..... ।"* (गलातियों 4:4-5)

छुटकारा का अर्थ आवश्यक किंमत भरने के द्वारा फिर से ख़रीदना।

कॅलीफोर्निया में एक लड़के के रूप में मैं वयस्क हो रहा था, मेरे पास एक छोटी कुतिया थी। मैं उसे भोजन देता, उसकी देखभाल करता और उसके साथ खेलता था। वह चारो तरफ मेरे पीछे पीछे आती रहती थी और उत्साहित होती थी जब मैं पाठशाला से घर वापस आता था। लेकिन उसमे एक खामी थी। कभी कभी वह पड़ोसियों के यहां भटकती रहती थी, यद्यपि वह फिर से आ जाती थी। जब एक दिन।

मैं पाठशाला से घर आया, लेकिन मुझे मिलने के लिए मेरी कुतिया वहां आसपास नहीं थी। सोने के समय, वह अभी भी कहीं नहीं मिली थी। अगले दिन, मेरे पिता ने सुझाव दिया कि जानवरों को आसरा देनेवाले स्थानिक संस्था को मैं फोन करु, एक स्थान जो भटकने वाले बिल्लियां और कुत्तों को सीमित समय के लिए वहां पर रखते थे। लावारिस जानवरों की हत्या कर दी जाती थी।

मैंने उस आश्रयस्थान को फोन किया। हां, उनके पास एक छोटी कुतिया थी जिसका मैंने वर्णन किया था। नगर के "कुत्ते पकड़नेवालों" ने उसे पकड़ लिया था। मेरी कुतिया अपने आपको छुड़ाने में असहाय थी। अगर कोई उसको छुड़ाने में आगे नहीं आया होता, तो उसे मार दिया होता।

मैं उस आश्रयस्थान को गया। मैं मेरी कुतिया को वापस लेने ही वाला था! लेकिन सामने के

कक्ष के अधिकारी ने मुझसे कहा कि अगर मैं उसे वापस चाहता हूं तो मुझे जुर्माना देना होगा। कुत्तों को रास्ते पर खुला छोड़ना यह नियम के विरोध में था। मैंने आवश्यक भरपाई की और मेरी कुतिया को छोड़ दिया गया। उस भयानक पिंजरे से बाहर आने से वह कितनी खुश हो गई थी और फिर से उसके साथ थी जो उसकी देखभाल करता था! उसका छुटकारा हो गया था।

अपने भटके हुए कुत्ते को वापस खरीदने का मेरा लड़कपन का अनुभव हमें अपनी स्थिति के बारे में एक धुंधली कल्पना देता है। एक विद्रोही, अपराधी घोषित पापी होकर, हमारे पास अपने आपको छुड़ाने का कोई मार्ग नहीं है। परमेश्वर ने उसके पुत्र को जगत में भेजा कि आवश्यक छुडौती किमत भरने के द्वारा हमें छुटकारा प्रदान करे। हम में से कोई भर सके उससे वह बहुत अधिक थी।

> *"उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति **छुड़ा** नहीं सकता है; और न परमेश्वर को उसके बदले **प्रायश्चित** में कुछ दे सकता है। **क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है**, ...परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से **छुड़ा** लेगा, क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर अपनाएगा।"* (भजन संहिता 49:7-8, 15)

और यूंही हमारे छुटकारे की किमत क्या थी?

भविष्यद्वक्ताओं ने उसकी घोषणा की थी

उत्पत्ति अध्याय 3 में, हमें परमेश्वर की योजना कि पापियों को शैतान के चंगुल से छुड़ाने के विषय में सांकेतिक, गर्भरुपी भविष्यवाणी का सामना करना पड़ा हैं। आइए हम फिर से सुने कि परमेश्वर ने शैतान से क्या कहा।

> *"मैं तेरे और स्त्री के बीच तेरे वंश और स्त्री के वंश के मध्य शत्रुता उत्पन्न करूंगा। वह तेरा सिर कुचलेगा और तू उसकी एडी डसेगा।"* (उत्पत्ति 3:15)

इन शब्दों के साथ, परमेश्वर ने शैतान और पाप के साथ उपाय करने की उसकी योजना की रहस्यमय और विधिवत रूपरेखा निश्चित की उस प्रकार से कि उसकी धार्मिकता के स्वभाव के साथ वह सुसंगत रहे। प्रभु यह घोषित कर रहा था कि वह मानवजाति को उद्धारकर्ता-मसीहा प्रदान करेंगा जो शैतान को उसका *"सिर"* कुचलने के द्वारा पराजित करेगा। इस भविष्यवाणी ने यह भी पहले से ही बता दिया कि शैतान मसीहा के *"एडी"* को चोट पहुंचाएगा।

> *"वह [मसीहा] तेरा [शैतान] **सिर** कुचलेगा और तू [शैतान] उसकी [मसीहा] **एडी** डसेगा।"*

स्त्री का वंशज शैतान के सिर को कैसे *"चोट पहुंचाएगा"*? इब्रानी शब्द जो "चोट पहुंचाना" के रूप में अनुवादित किया है उसका अर्थ "चोट पहुंचाना, तोड़ना, जख्मी या पीसना है।" आरंभ की भविष्यवाणी के अनुसार, शैतान और मसीहा दोनों ही 'कुचलेंगे" लेकिन उन में से केवल एक घाव यह अपरिवर्तनीय ढंग से प्राणनाशक होगा। एक कुचला हुआ सिर प्राणनाशक होता; एक कुचली हुई एडी नहीं।

परमेश्वर भविष्य कर रहा था कि, यद्यपि प्रतिज्ञा का उद्धारकर्ता शैतान और उसके अनुयायियों द्वारा "जख्मी" किया जाएगा, अंत में वह शैतान के ऊपर विजयी होगा।

बाद में परमेश्वर ने दाऊद भविष्यद्वक्ता को प्रेरणा दी कि मसीहा के इन शब्दों को लिखे:

"उन्होंने मेरे हाथ-पैर बेध डाले हैं।" (भजन संहिता 22:16)

दाऊद ने यह भी भविष्यवाणी की है कि भले ही मसीहा को मार डाला जाएगा, उनका शव कबर में नहीं सड़ेगा। प्रतिज्ञा किया हुआ छुड़ानेवाला मृत्यु पर विजय प्राप्त करेगा।

"तू ने मेरे प्राण को ....मृत्यु का ग्रास बनने नहीं दिया।" (भजन संहिता 16:10)

यशायाह भविष्यद्वक्ता ने मसीहा की पीड़ा, मृत्यु और पुनरुत्थान के उद्धेश्य की भविष्यवाणी की थी।

*"किंतु वह **हमारे पापों के कारण घायल हुआ**; वह **हमारे दुष्कर्मों के कारण आहत हुआ**। ....यह प्रभु की इच्छा थी कि वह मार सहे; प्रभु ने उसे दुःख से पीड़ित किया। जब वह **पाप-बलि** के लिए **अपना प्राण-अर्पित करता है,** तब वह अपने वंश को देखेगा; वह दीर्घायु प्राप्त करेगा। उसके हाथ से प्रभु की इच्छा सफल होगी।"*
(यशायाह 53:5, 10)[175]

हालांकि शैतान लोगों को परमेश्वर द्वारा भेजे गए मसीहा को यातना देने और उसकी हत्या करने के लिए राजी करेगा, यह सब कुछ भविष्यद्वक्ताओं द्वारा घोषित योजना के अनुसार होगा। अंतिम परिणाम यह प्रभु और उसके अभिषिक्त जन का संपूर्ण रूप से विजयी होगा।

ज्ञान के शब्द और चेतावनी

ख्रिस्त जन्म लेने से हजार वर्षो पहले, दाऊद ने लिखा :

*"**क्यों राष्ट्र षडयन्त्र करते हैं? क्यों विभिन्न देश व्यर्थ जाल फैलाते हैं? प्रभु और उसके अभिषिक्त** [मसीहा] **राजा के विरोध में** संसार के राजाओं ने संकल्प किया है, शासकों ने एक साथ मन्त्रणा की है। ....स्वामी, जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसता है;.....तब वह अपने क्रोध से उनको आतंकित करेगा, वह रोष में उनसे यह कहेगा, मैंने अपने पवित्र पर्वत सियोन के सिंहासन पर **अपने राजा** को प्रतिष्ठित किया है।"....अत: राजाओं, अब बुद्धिमान हो, पृथ्वी के शासको, सावधान हो! भयभाव से प्रभु की सेवा करो, कांपते हुए उसके चरण **चूमो** [आदर]। ऐसा न हो कि प्रभु क्रुद्ध हो, और तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध तुरंत भड़कता है। **धन्य हैं वे सब, जो प्रभु की शरण में आते हैं।"*** (भजन संहिता 2:1-2, 4-6, 10-12)

सेनेगल में, जहां कुश्ती यह राष्ट्रीय परंपरागत खेल है, लोगों का यह मुहावरा है :

"एक अंडे को चट्टान से कुश्ती नहीं करनी चाहिए।"

एक अंडे ने चट्टान के साथ कुश्ती क्यों नहीं करनी चाहिए? क्योंकि अंडे के पास प्रतियोगिता जितने की कोई संभावना नहीं है! इसी तरह, वे जो *"प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरोध में खड़े रहते हैं"* सफल नहीं होंगे। परमेश्वर की योजना का प्रतिकार करना यह *"एक व्यर्थ योजना का षडयन्त्र करना है।"*[176]

सेनेगल के लोगों के पास यह मुहावरा भी है :

"एक लकड़हारा जानबूझकर सभा-स्थल के पेड़ को नहीं काटता है।"

जगत के इस बंजर स्थान में, अधिकांश गावों में केन्द्रस्थान पर स्थित छांव देने के लिए एक बड़ा पेड़ है। यह "सभा-स्थल का पेड़" दोपहर की भीषण गर्मी से आसरा लेने की जगह देता है: एक स्थल जहां लोग आराम करते, बातचीत करते और चाय पीते हैं। गांववाले कैसे प्रतिक्रिया करेंगे अगर एक लकड़ी कांटने वाला "सभा-स्थल के पेड़" को कांटने लगे? बड़े क्रोध की भावना को दर्शाते हुए, वे उसके कांटने पर रोक लगा देते- तुरंत!

परमेश्वर की उद्धार की योजना के विरोध में जो अपने आपको खड़ा करते है वे उस लकड़हार के समान हैं जो गाँववालों के पसन्दीदा पेड़ को कांट रहा है।

वे सफल नहीं होंगे।

> *"अत: राजाओं, अब बुद्धिमान हो,..... कांपते हुए उसके चरण चूमो। ऐसा न हो कि प्रभु क्रुद्ध हो, और तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध तुरंत भड़कता है। धन्य हैं वे सब, जो प्रभु की शरण में आते हैं।"* भजन संहिता 2:10-12)

परमेश्वर की योजना से बेखबर

पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के अंतिम सप्ताह में, यीशु उसके शिष्यों को यह सूचना देने लगे कि, उन्हें उनका राजा के रूप में स्वीकार करने के बजाय, राजनीतिक और आध्यात्मिक नेताओं ने यह मांग की है की उसे मार डाला जाए। वे जिन्होंने यीशु के मृत्यु का षडयन्त्र रचा उन्हें कोई कल्पना नहीं थी कि भविष्यद्वक्ताओं ने जो नबुवते की है उसे पूरा करने में वे वास्तव में हिस्सा ले रहे हैं : यह कि मसीहा के हाथ और पैरों में किले ठोके जाएंगे यह आदम के हठीले, असहाय वंशजों को शैतान की पकड़ से छुड़ाने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा है।

> *"उस समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने लगे, 'मुझे यरूशलेम जाना **ही होगा,** यह **अनिवार्य है।** वहां धर्मवृद्ध, महायाजक और शास्त्री मुझे बहुत दुःख देंगे, मुझे मार **डालेंगे**, किंतु मैं तीसरे दिन जीवित उठाया जाऊंगा।*
>
> *इस पर पतरस उन्हें अलग ले जाकर झिड़कने लगा, 'हे प्रभु, परमेश्वर ऐसा न कहे। आप पर यह कभी न बीतेगा।' यीशु ने पतरस से कहा, **'मेरे सामने से हट, शैतान! मेरे लिए तू पतन का कारण है। तेरी भावना परमेश्वर की सी नहीं वरन मनुष्यों की सी है।'"*** (मत्ती 16:21-23)

पतरस की सोच उस प्रसिद्द विवाद करनेवाले समान थी, उसे मैंने एक घोषणा करते सुना, "क्रूसित मसीहा यह विवाहित कुंवारे समान है!"

वाद-विवाद करनेवाले की तरह, पतरस अब भी परमेश्वर की योजना को नहीं समझ पाया था। उसने सोचा कि मसीहा को तुरंत अपनी वादा की हुई विश्वव्यापी सरकार स्थापित करना चाहिए , न कि क्रूस पर किलो से ठोक दिए जाने के भय और अपमान को स्वीकार करना चाहिए!

पतरस इस विचार में सही था कि परमेश्वर ने यीशु को संपूर्ण पृथ्वी पर प्रधान शासक के रूप में स्थापित करने की योजना की थी, लेकिन वह इस विचार में गलत था कि मसीहा क्रूस का दुःख और लज्जा से बच कर यह कर सकता है। बाद में पतरस परमेश्वर की योजना को समझेगा और निडरता के साथ घोषणा करेगा : *"भविष्यद्वक्ताओं ने.........मसीह के कष्टों और उनके बाद होनेवाली महिमा की भविष्यवाणी की।"* (1 पतरस 1:10-11)[177]

मसीहा को क्रूस पर लटकाना यह एक हादसा नहीं होगा।
परमेश्वर ने इसकी "अनंतकाल से" अपेक्षा और योजना की थी।
भविष्यद्वक्ताओं ने इसे पहले से ही बताया था।
स्त्री का वंशज इसे पूरा करने आया था।
कुछ समय पहले यह ई-मेल मुझे मिला था :

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

आप **इतने अन्धे** हो कि आप विश्वास करते हो कि **परमेश्वर उसके अपने पुत्र को क्रूस पर जाने से बचा भी नहीं सकता।** कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर की एक सीमा है और वह इतना कमजोर है कि उसने मानव द्वारा उसके पुत्र को अपमानित करने और मारे जाने दिया। जो कुछ भी जिसे सीमा है वह कमजोर है और उसे परमेश्वर नहीं कहना चाहिए। **परमेश्वर के पास परम सामर्थ्य है।** वहीं एकमात्र है और एक ही हैं और उसके समान कोई नहीं है।

अल्लाहु अकबर।

पतरस समान पहले, इस ई-मेल संवाददाता ने अब तक समझा नहीं था कि मसीहा को क्यों ***"अवश्य*** *मारा जाना है और तीसरे दिन जीवित हो उठना है।"*

ऐसी भीषण योजना की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि, जैसे हमारे ई-मेल संवाददाता ने योग्य रीति से स्पष्ट किया है, "परमेश्वर के पास परम सामर्थ्य है," तो परमेश्वर शैतान को सीधे नरक में क्यों नहीं डाल दिया और आदम के पापी वंशजों को क्षमा करने की घोषणा क्यों नहीं कर दी? प्रभु ने जगत को केवल बोलने के द्वारा निर्मित किया है, तो केवल बोलने के द्वारा उसने जगत का उद्धार क्यों नहीं किया?

यह क्यों आवश्यक था कि सृष्टिकर्ता-शब्द मनुष्य बन गया? परमेश्वर की योजना में दुःख, लहू बहाना, मरने वाला मसीहा ये सब शामिल क्यों हैं?

हमारी यात्रा का अगला चरण उत्तर प्रदान करता है।

पाठ 19

बलिदान की व्यवस्था

"लहू में प्राण होने के कारण ही उससे प्रायश्चित्त होता है।"

— प्रभु (लैव्यव्यवस्था 17:11)

पहले परिवार का इतिहास उत्पत्ति, अध्याय चार में लिपिबद्ध है। ये यहां हम पहले सीखते है कि जब आदम और हव्वा को अदन के मनोहर वाटिका से बाहर कर दिया, संपूर्ण मानवजाति को बाहर कर दिया था। उनके सभी वंशज शत्रु के नियंत्रण में इस शापग्रस्त संसार में जन्म लेंगे और बढे होंगे।

पहिलौठा पापी

> *"आदम ने अपनी पत्नी हव्वा के साथ सहवास किया। वह गर्भवती हुई और उसने* ***कैन*** *को जन्म दिया। हव्वा ने कहा 'प्रभु की कृपा से मुझे बालक प्राप्त हुआ।"* (उत्पत्ति 4:1)

कैन का अर्थ प्राप्त करना। पहिले बच्चे के जन्म की पीड़ा और आश्चर्य के बीच में, हव्वा ने चिल्लाकर कहा, *"प्रभु की कृपा से मुझे बालक प्राप्त हुआ!"* शायद उसने सोचा कि कैन परमेश्वर द्वारा उन्हें पाप के घटक परिणामों से बचाने के लिए भेजा गया, वादा किया हुआ छुड़ाने वाला था।

हव्वा यह विश्वास करने में सही थी कि प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता *"प्रभु से"* आएगा। वह यह विश्वास करने मी भी सही थी कि मसीहा यह एक स्त्री से जन्मेगा, लेकिन अगर वह सोचती थी कि उसके पति की संतान वादा किया हुआ उद्धारकर्ता है, तो वह गलत थी।

इस तरह कोई भी भ्रांति बहुत जल्दी दूर हो गई।

आदम और हव्वा ने ये जल्द ही जान लिया कि उनके प्यारे छोटेसे पहिलौठे पुत्र में स्वाभाविक पाप का स्वभाव है। कैन ने स्वाभाविक रूप से पाप किया। उसने घमण्ड और मनमानी को प्रदर्शित

किया-उसके माता-पिता समान और शैतान समान। कैन प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता नहीं था। वह केवल और एक असहाय पापी था जिसे छुटकारे की आवश्यकता थी।

जब तक आदम और हव्वा का दूसरा पुत्र साथ आया, उनके पास मनुष्य की स्थिति का अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण था।

"तत्पश्चात हव्वा ने कैन के भाई ***हाबिल*** *को जन्म दिया।"* (उत्पत्ति 4:2)

आदम और हव्वा ने उनके दूसरे पुत्र का नाम *हाबिल* रखा, उसका अर्थ *व्यर्थता या शुन्यता।* उनके पास नेक संतान पैदा करने का कोई तरीका नहीं था। पापियों के लिए प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धार्कता आदम के पापी वंशजों से नहीं आ सकता था। मिलकर, आदम और हव्वा केवल उनके समान पापी को ही पैदा कर सकते थे। यदि उन्हें पाप के दंड से बचाने के लिए एक धर्मी मनुष्य होना था, तो उसे प्रभु की ओर से आना चाहिए।

उत्पत्ति अध्याय एक में जैसे हमने सिखा है, पहले पुरुष और स्त्री को परमेश्वर के *स्वरूप और सदृशता में* बनाया गया था। अद्भुत सौभाग्य में योग्य चुनाव करने की पवित्र जिम्मेदारी सम्मिलित थी। आदम और हव्वा और उनके वंशजों के लिए परमेश्वर की इच्छा यह थी कि वे उनके सृष्टिकर्ता की पवित्रता और प्रेमी स्वभाव को प्रतिबिंबित करे। हालांकि, जब आदम और हव्वा ने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी की आज्ञाभंग करने का चुनाव किया, उन्होंने उसके स्वरूप को प्रतिबिंबित करना बंद किया था। तत्काल, *परमेश्वर-केंद्रित* से *आत्म-केंद्रित* ऐसा उनका पतन हुआ। और उन्होंने उनके समान ही बच्चों को जन्म दिया।

*"आदम ...****अपने सदृश, अपने ही स्वरूप में****........उसको अन्य पुत्र-पुत्रियां भी उत्पन्न हुई।"* (उत्पत्ति 5:3-4)

जैसे वोलोफ मुहावरा कहता है : "छलांग लगनेवाले हिरण खोदनेवाली संतति निर्माण नहीं करते।" न ही पापी माता-पिता धार्मिक संतति निर्माण कर सकते है। पवित्रशास्त्र कहता है,

"यह बात विचारणीय है कि ***एक व्यक्ति द्वारा*** *संसार में पाप आया और पाप द्वारा मृत्यु आई। इस प्रकार मृत्यु का* ***सब मनुष्यों में प्रसार हुआ****, क्योंकि सब ने पाप किया है।"* (रोमियों 5:12)

पापियों की आराधना

*"**हाबिल** भेड़ों का चरवाहा था, और **कैन** खेती करनेवाला किसान था। कैन ने समय आने पर खेत की उपज प्रभु को भेट चढ़ाई! हाबिल ने अपने पशुओं के पहिलौठे बच्चे और उनका चर्बीयुक्त मांस चढ़ाया।"* (उत्पत्ति 4:2-4)

कैन खेती करनेवाला और हाबिल चरवाहा बन गए थे। यद्यपि पाप का प्रभाव उनकी चारों ओर और उनमे था, वे अभी भी परमेश्वर की सृष्टि की महिमा से घिरे हुए थे और उसकी प्रेममय देखभाल से पोषित थे। भले ही कैन और हाबिल ये दोनों पापी थे, परमेश्वर ने उनसे प्रेम किया और वह चाहता था कि वे उसे जाने और आराधना में उसके पास आए। तथापि, यह होने के लिए, उन्हें उनके पाप की समस्या के लिए उपाय की आवश्यकता थीं। परमेश्वर पवित्र है और *"यह आवश्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करे।"* (यूहन्ना 4:24)

स्पष्ट रूप से, इन लड़कों को उनके माता-पिता द्वारा अच्छा सिखाया गया था, जिन्होंने एक समय उनके सृष्टिकर्ता के साथ घनिष्ठ मित्रता का आनंद उठाया था। कैन और हाबिल दोनों ने समझ लिया था कि पाप यह परमेश्वर के प्रति अपराध है। उनके माता-पिता समान, उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से दूर किया गया था। अगर उन्हें उसके साथ संबंध चाहिए था, तो यह उसकी शर्तो पर होना चाहिए था।

सुसमाचार यह था कि परमेश्वर ने एक तरीका खुला किया था जिसके द्वारा कैन और हाबिल उनके पापों को ढांप सकते थे अगर वे उस पर विश्वास करेंगे और उस तरीके से उसके पास आएंगे जो उसने स्थापित किया है।

आइए हम इस कथन को पुनः सुने:

*"कैन ने समय आने पर **खेत की उपज** प्रभु को भेट चढ़ाई। हाबिल ने अपने **पशुओं के पहिलौठे बच्चे** और उनका चर्बीयुक्त मांस चढ़ाया। प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की। पर कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर दिया। इसलिए कैन बहुत नाराज हुआ। उसका मुंह उतर गया।"* (उत्पत्ति 4:3-5)

जैसे किसी भी कहानी को अच्छी तरह से-कहा गया है, सभी विवरण तुरंत नहीं दिए गए हैं। कहानी केवल यह बताती है कि कैन और हाबिल ने क्या किया। उन्होंने क्या किया यह क्यों किया यह पवित्रशास्त्र में और कहीं स्पष्ट किया गया है। दोनों ही जवान पुरुष एक सत्य परमेश्वर की आराधना करना चाहते थे। प्रत्येक ने *"प्रभु को .....भेंट चढ़ाई।"*

कैन फल और सब्जियों के प्रभावशाली चुनाव के साथ आया जो उसने परिश्रमपूर्वक जोते हुए थे।

हाबिल ने एक निर्दोष, निष्कलंक मेमना लाया, उसे मारा और उसके शरीर को पत्थर या भूमि से बनाए एक साधारण वेदी पर जलाया था।[178]

बाह्य दृष्टि से, हाबिल की लहूमय भेंट यह क्रूर और भयावह थी, जबकि कैन की खेंती की भेंट यह सुंदर और मोहक थी। फिर भी पवित्रशास्त्र कहता है :

> ***प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की। पर कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर दिया।*** *इसलिए कैन बहुत नाराज हुआ। उसका मुंह उतर गया।"* (उत्पत्ति 4:4-5)

परमेश्वर ने हाबिल की भेंट का स्वीकार और कैन की भेंट का अस्वीकार क्यों किया?

हाबिल ने परमेश्वर की योजना पर विश्वास किया था।

कैन ने नहीं किया था।

हाबिल का विश्वास और मेमना

पवित्रशास्त्र हमें बताता है हाबिल परमेश्वर के पास विश्वास के साथ आया, यह दर्शाता है कि परमेश्वर ने कैन और हाबिल को प्रकट किया था जो उसे आवश्यक था।

> *"**विश्वास द्वारा हाबिल** [जिसने परमेश्वर की योजना पर विश्वास किया था] **ने परमेश्वर को कैन** [जिसने परमेश्वर की योजना पर विश्वास नहीं किया था] **की अपेक्षा श्रेष्ठ बलि चढ़ाई।** विश्वास के कारण वह [हाबिल] **धार्मिक** माना गया;............यह प्रसन्नता प्राप्त करना विश्वास के बिना असम्भव है।"* (इब्रानियों 11:4, 6)

विश्वास जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है यह वह विश्वास है जो उसकी योजना पर विश्वास करता और उसके अधीन हो जाता है।

आदम और हव्वा ने जब प्रथम पाप किया, परमेश्वर ने उनके पाप की समस्या को ठीक करने के उनके स्वयं के प्रयासों को अस्वीकार कर दिया। उसके बदले में, परमेश्वर ने प्रथम पशु बलिदान किया था और आदम और हव्वा को उनके पाप और लज्जा के लिए आवरण प्रदान किया था। कुछ निर्दोष पशुओं को मार डालने के द्वारा, परमेश्वर उन्हें सिखा रहा था कि *"पाप की मजदूरी **मृत्यु** है, लेकिन परमेश्वर का वरदान हैं शास्वत जीवन ..... ।"* (रोमियों 6:23)

बाद में, कैन और हाबिल को वही सबक सिखाया गया, लेकिन केवल एक ने उस पर विश्वास किया था।

हाबिल परमेश्वर के पास विश्वास द्वारा गया, नम्रता और आज्ञाकारिता में प्रभु को एक सुदृढ़ पहिलौठा मेमना भेंट चढ़ाया था।

हाबिल को मेमने के सिर पर अपना हाथ रखकर चुपचाप प्रभु का धन्यवाद करते हुए देखें कि यद्यपि वह मृत्युदंड के योग्य था, परमेश्वर मेमने के लहू को अस्थायी भुगतान के रूप में स्वीकार करेगा। इसके बाद, हाबिल छुरा लेता है और कोमल प्राणी का गला कांटता है और देखता है उसका जीवन-लहू कैसे बाहर निकलता है।

मेमने को मारकर, हाबिल ने परमेश्वर के पवित्र स्वभाव और पाप और मृत्यु की व्यवस्था को आदर दिखाया। यह उस कारण से था कि उसने परमेश्वर की योजना पर विश्वास किया कि परमेश्वर ने हाबिल को उसके पाप से क्षमा प्रदान की और उसे धर्मी घोषित किया। हाबिल को पाप के दंड से मुक्त कर दिया गया क्योंकि वह दंड मेमने के विरुद्ध किया गया था। हाबिल का बलिदान सिद्ध बलिदान को चिन्हित और उसकी ओर इशारा करता है जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि उसे एक दिन प्रदान करेगा कि संसार के पाप उठा ले।

इसी कारण से *"प्रभु ने हाबिल और उसके बलिदान का आदर किया।"*

कैन के काम और धर्म

फिर वहां कैन था। क्या ही धर्मी जवान मनुष्य वह था! उसने परमेश्वर के सम्मुख फल और सब्जियों को प्रशंसनीय ढंग से सजाया था जिसे उत्पन्न करने के लिए उसने कठिन परिश्रम किया था। लेकिन परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार किया।

कैन की गलती झूठे देवता की आराधना नहीं थी, लेकिन एक सत्य परमेश्वर की गलत आराधना।

विश्वास के द्वारा उसके सृष्टिकर्ता के पास जाने के बदले, कैन *उसके अपने विचार और प्रयास*

के साथ आया। परमेश्वर ने उसके माता-पिता का अंजीर के पत्तों का स्वयंभू आवरण को स्वीकार नहीं किया था और न ही वह कैन की सब्जियों की स्वयंभू भेंट को स्वीकार करेगा।

कुछ वादविवाद करते है, "लेकिन कैन के पास जो था उसने वह लाया था!"

परमेश्वर को वह नहीं चाहिए था जो कैन के पास था। उसे चाहिए था कैन ने मृत्यु का भुगतान—मेमने के लहू के आधार पर उस पर विश्वास करे और उसकी आराधना करे। यदि कैन के पास मेमना न होता, तो वह हाबिल के मेमने में से एक मेमने के बदले कुछ सब्जियों दे सकता था, या हाबिल की वेदी के पास प्रभु के सम्मुख नम्रता से आ सकता था जहां मेमने का लहू बहाया गया था। लेकिन कैन इसके लिए बहुत ही घमंडी था। उसने परमेश्वर की "आराधना" उसके अपने हाथों के कामों से करने का निर्णय लिया था।

इसी कारण से परमेश्वर ने "कैन और उसकी भेंट का आदर नहीं किया।"

पाप का कर्ज

प्रभु इतना स्पष्टवादी क्यों था? उसने हाबिल का मारा हुआ मेमना क्यों स्वीकार किया लेकिन कैन की ताज़ी सब्जियों का स्वीकार क्यों नहीं किया?

परमेश्वर ने कैन की भेंट का अस्वीकार सरल कारण के लिए किया कि पाप का दंड मृत्यु है, स्वयं-प्रयास नहीं। *पाप और मृत्यु की व्यवस्था*, जो परमेश्वर ने आदम को प्रथम बतायी थी, वह बदली नहीं थी। सभी जो परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ते है वे कर्जदार है जिसका केवल *मृत्यु* से भुगतान किया जा सकता है। विश्व का धर्मी न्यायाधीश अपनी व्यवस्था के उल्लंघन को किसी भी नीचले दर्जे की बातों से दंडित करने की अनुमति नहीं देगा।

किसी भी हद तक ईमानदारी, स्वयं-प्रयास, या अच्छे काम पाप के कर्ज को रद्द नहीं कर सकते।

स्पष्टीकरण करने के लिए, कल्पना कीजिए एक प्रमुख *बँक* मुझे कुछ मिलियन डॉलर कर्ज देती है। पैसों की इतनी बड़ी रकम बुद्धिमानी से निवेश करने के बदले, मैं उसे व्यर्थ व्यय करता हूं और कर्ज का दोषी हो जाता हूं। पुलिस मेरे घर आते है और मुझे गिरफ्तार करते है। न्यायालय में, मैं न्यायाधीश को कहता हूं, "मैं अपने जीवनकाल में उन करोड़ों डॉलर का भुगतान नहीं कर पाऊंगा जो मुझ पर बकाया है, लेकिन मेरे पास मेरे वित्तीय कर्ज को मिटाने की योजना है। ये है जो मैं करूंगा: पैसों से मेरा कर्ज भरने के बदले, अच्छे कामों से मैं उसे वापस करूंगा! प्रत्येक दिन मैं *बँक* के अध्यक्ष को पका हुआ चावल का एक कटोरा लाकर दूंगा। प्रत्येक सप्ताह एक दिन मैं भोजन नहीं करूंगा और वह भोजन गरीबों को खाने के लिए दूंगा। मैं भी अपने कर्ज की लज्जा

को दूर करने के लिए दिन में कई बार मैं विधिवत स्नान करूंगा। यह मैं करता रहूंगा जब तक मेरा कर्ज भरा नहीं जाएगा।"

क्या न्यायाधीश आर्थिक कर्ज के भुगतान के लिए ऐसे तर्कहीन आयोजन का स्वीकार करेगा? कभी नहीं! न ही संपूर्ण पृथ्वी का न्यायाधीश प्रार्थना, उपवास, और अच्छे काम पाप के कर्ज के लिए भुगतान के रूप में स्वीकार करेगा। यहां पर पाप के भुगतान के लिए केवल एक ही मार्ग है। इसे **मृत्यु** के साथ ही भरा जा सकता है—*परमेश्वर से अनंतकाल के लिए अलग होना।*

पाप और मृत्यु की दृढ़ व्यवस्था से छुटकारे के लिए असहाय पापियों के लिए यहां पर कोई मार्ग है क्या?

परमेश्वर का धन्यवाद हो, यहां है।

बलिदान की व्यवस्था

मैं ताश नहीं खेलता, लेकिन मुझे पता है कि कुछ पत्ते अन्य पत्तों पर भारी होते हैं। पत्तों को दिए गए नियुक्त मूल्य के कारण, कम मूल्य के अन्य पत्तों पर वे विजय प्राप्त करते हैं।

पुराने नियम की दानिय्येल और एस्तर की पुस्तके प्राचीन राजाओं के विषय में कहती है जिन्होंने कानून बनाया था जिसमे, *"मादियों और फ़ारसियों संविधान के अनुसार न परिवर्तन हो सकता है और न उसको रद्द ही किया जा सकता है"* (दानिय्येल 6:8)। यदि कोई राजा एक निश्चित कानून को रद्द करना चाहता था, तो उसे रद्द करने के बजाय उसने एक प्रबल कानून स्थापित किया जो पिछले कानून पर "विजय" प्राप्त कर सके।[179]

इसी तरह, शुरुआत से ही, "पाप और मृत्यु की व्यवस्था" पर प्रभुता करने का परमेश्वर का धर्मी तरीका, एक प्रबल व्यवस्था लाना था, अर्थात, ***"पाप-बलि की व्यवस्था,"*** (लैव्यव्यवस्था 6:25) या, उसे ऐसा भी कहा जाता है : ***"बलिदान की व्यवस्था।"*** (लैव्यव्यवस्था 7:11)

परमेश्वर, जो अपनी सभी व्यवस्था को मान्य ठहराता है, उसने पाप और मृत्यु की क़ानूनी रूप से बाध्यकारी व्यवस्था को पराजित करने के लिए *बलिदान की व्यवस्था* को स्थापित किया।

बलिदान की व्यवस्था ने दोषी पापियों को दया प्रदान की जबकि उसी समय पाप के विरोध में न्याय का भी प्रयोग किया। (परमेश्वर ने एक सिद्ध संतुलन में दया और न्याय को मान्य क्यों ठहराना चाहिए इस पर फिर से विचार करने के लिए, पाठ 13 देखे)। लहू के बलिदान की व्यवस्था ने परमेश्वर को पापियों को दंड दिए बिना पाप को दंड देने का एक तरीका प्रदान किया। यह कैसे हो सकता है उसके विषय में यहां पर परमेश्वर का स्पष्टीकरण है :

*"क्योंकि प्राणी का प्राण **लहू** में रहता है। मैंने तुम्हें लहू इसलिए दिया है कि तुम उसको अपने प्राणों के प्रायश्चित्त के लिए वेदी पर चढाओ। लहू में प्राण होने के कारण ही उससे **प्रायश्चित्त** होता है।"* (लैव्यव्यवस्था 17:11)

इस व्यवस्था में दो आधारभूत सिद्धांत है:

1. **लहू जीवन प्रदान करता है-**परमेश्वर ने कहा : ***"प्राणी का प्राण लहू में रहता है।"*** आधुनिक विज्ञान मानता है जो पवित्रशास्त्र ने हजारों वर्षो से घोषित किया है : जानवरों का प्राण उनके लहू में है। शुद्ध लहू जीवन को सम्भालने के लिए आवश्यक सभी घटकों का परिवहन करता और अशुद्धता को शुद्ध करता है। लहू बहुमूल्य है; उसके बगैर, मानव और जानवर सभी समान रूप से मर जाते हैं।

2. **पाप को मृत्यु की आवश्यकता होती है-** परमेश्वर ने कहा : ***"लहू में प्राण होने के कारण ही उससे प्रायश्चित्त होता है।"*** प्रायश्चित्त यह शब्द इब्रानी शब्द कफार से आता है, उसका अर्थ, *"ढंकना, रद्द, शुद्ध, क्षमा और मेल-मिलाप करना* है।"[180] यह केवल बहाए-हुए लहू द्वारा ही पापी लोग शुद्ध हो सकते और उनके धर्मी सृष्टिकर्ता के साथ फिर से मेल-मिलाप कर सकते हैं। क्योंकि पाप के लिए दंड यह मृत्यु है, परमेश्वर कह रहा था वह एक स्वीकार्य बलिदान का लहू (जीवन की हानि) को भुगतान के रूप में और मनुष्य के पाप के प्रायश्चित के रूप में स्वीकार करेगा।

विकल्प

बलिदान के कानून के अंतर्निहित सिद्धांत को एक शब्द में अभिव्यक्त किया जा सकता है : **विकल्प**। एक दोषी पापी के विकल्प के रूप में एक निर्दोष जानवर मर जाएगा।

मसीहा के आने से पहले की पीढ़ियों में, प्रभु ने आदम के वंशजों को इसे ज्ञात कराया था कि योग्य जानवर, जैसे एक मेमना, भेंड, बकरी या बैल का बहाया हुआ लहू अस्थायी रूप से स्वीकार करेगा। पण्डुक और कबूतर को भी अर्पण किया जा सकता है।[181] इसकी परवाह नहीं की व्यक्ति कितना धनवान या गरीब, अच्छा या बुरा था, सभी ने परमेश्वर के पास आना है, उनके पापमय दशा को पहचानना और यह विश्वास करना है कि परमेश्वर बहाए हुए लहू के आधार पर उन्हें क्षमा प्रदान करेगा।

दंडित जानवर "निष्कलंक"[182] होना चाहिए। उसे कोई बीमारी, टूटी हुई हड्डी, जख्म, या खरोच नहीं होनी चाहिए। इसे पूर्णता का प्रतिक होना था। पापी जो बलिदान चढ़ा रहा है उसे *"अपना हाथ उसके [जानवर] के सिर पर रखना है, और उसे मार डालना है.... यह **पाप-बलि** है।"* जानवर की चर्बी वेदी पर जलाकर राख कर देनी है।

और ऐसा बलिदान क्या पूरा करेगा इसके विषय में परमेश्वर ने क्या कहा?

*"उसके पाप.... **क्षमा** किए जाएंगे।"* (लैव्यव्यवस्था 4:23-26)

जब पापियों ने उनके हाथ निष्कलंक जानवर के सिर पर रखे, उनके पाप प्रतीकात्मक रूप से जानवर को दिए गए। पाप-वाहक जानवर फिर उनके स्थान में नष्ट हो गया।

उन्हें क्षमा किया गया!

विकल्प के इस सिद्धांत के आधार पर, पाप को दंड दिया और पापी को क्षमा किया गया। पाप के लिए मौत की शिक्षा दोषी पापी के बजाय निर्दोष जानवर को दी गई।

पाप-बलि की व्यवस्था ने पापियों को सिखाया कि परमेश्वर पवित्र है और यह कि *"**लहू** [मृत्यु का भुगतान] बहाए बिना यहां **क्षमा*** [पाप के दंड को दूर करना] *नहीं है।"* (इब्रानियों 9:22)

पशु बलि के माध्यम से, परमेश्वर पाप के विरोध में न्याय को पूरा कर रहा था और असहाय पापियों को दया दिखा रहा था जिन्होंने उसपर और उसकी योजना पर विश्वास रखा था। इसी कारण से उस दिन जब प्रभु ने उसके प्राचीन लोगों को दस आज्ञाएँ दी थी, उसने उन्हें स्मरण कराया था कि व्यवस्था तोड़ने के लिए क्षमा किए जाने का एक ही तरीका यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच –एक वेदी पर लहू बलिदान के आधार पर उसके पास जाना था।

*"तू मिट्टी की एक वेदी बनाना और उस पर **मुझे** होमबलि और सहभागिता-बलि, भेंड और बैल की **बलि चढ़ाना। प्रत्येक स्थान में, जहां मैं अपना नाम स्मरण के लिए प्रतिष्ठित करता हूं, वहां मैं आकर तुझे आशीष दूंगा।"*** (निर्गमन 20:24)

पाप-के लिए- लहू प्रयोजन का यह मुख्य अभिप्रेत पाप के विरोध में परमेश्वर का धर्मी क्रोध प्रदर्शित करना था उस समय तक जब प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता आ जाए। मसीहा की सेवकाई यह बलिदान की व्यवस्था का सच्चा अर्थ पूरा करना होगा।

परमेश्वर के अनुमान में, एक मनुष्य का जीवन यह संपूर्ण जगत में सभी जानवरों से बढ़कर है। जानवरों को परमेश्वर के स्वरूप में निर्माण नहीं किया गया। जानवरों में शास्वत आत्मा नहीं होता है। इसके परिणाम स्वरूप, जानवरों का लहू जो आवश्यक था वह केवल उसका प्रतीक था कि मनुष्य के पाप के कर्ज को रद्द कर सके।

हाबिल का वध किया हुआ मेमना यह केवल पुराने नियम के कथनों के सैंकड़ों में से प्रथम अभिलिखित कहानी है जिसमे हम देखते हैं कि विश्वासी निर्दोष, निष्कलंक जानवरों के बहाए हुए लहू के साथ आराधना में परमेश्वर के पास आ रहे हैं। इन अनगिनत जानवर-बलिदान कहानियों में, एक सबसे श्रेष्ठ दिखती है।

संसार भर में मुसलमान लोगों द्वारा प्रत्येक वर्ष इसे ही स्मरण किया जाता है।

पाठ 20

एक महान बलिदान

परिवार एकत्र हुआ है। वशीभूत जानवर को जमीन पर टिका दिया जाता है। वृद्ध और जवान दोनों ही, प्रत्येक व्यक्ति भेंड या छुरा जिसे पिता पकडे हुए है उस पर हाथ रखता है।

कट तेज है और जमीन पर जानवर का जीवन को स्पंदित करता है।

बलिदान हो गया—अगले वर्ष तक।

ईद अल-अधा "बलिदान के भोजन", पर, मुस्लिम लोग चार हजार वर्ष पुराने बाइबल की घटना की ओर इशारा करते है जब परमेश्वर ने अब्राहम के पुत्र के स्थान पर एक मेंढे को मरने के लिए प्रदान किया।[183] कुरान इस उत्कृष्ट कहानी के संक्षिप्त विवरण का समापन इन शब्दों में करती है : *"और हमने एक **बड़ी क़ुरबानी मुक्ति-प्रतिदान** के रूप में दी।"* (सूरा 37:107)

इस नाटकीय कहानी के पूर्ण महत्त्व को समझने के लिए , हमें उत्पत्ति की पुस्तक की ओर लौटना होगा।

अब्राहम

अब्राहम[184] यह ऊर देश में, आधुनिक इराक में ईसा पूर्व करीबन 2000 में जन्मे थे। आदम के अन्य वंशजों समान, वे भी पापमय स्वभाव के साथ जन्मे थे। यद्यपि अब्राहम मूर्तिपूजक आराधकों के बीच में बढे हुए, वह एक सत्य परमेश्वर में विश्वास करने लगे। अब्राहम आज के अनेक लोगों समान एक मत नहीं रखते थे जो सोचते है कि उनके माता-पिताओं के धर्म के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए फिर चाहे जो भी हो।

हाबिल समान, अब्राहम ने बलि किए हुए पशुओं के बहाए हुए लहू को लेकर प्रभु परमेश्वर की आराधना की।

अब्राहम जब पचहत्तर वर्ष के थे और उनकी पत्नी पैंसठ वर्ष, तब प्रभु ने उन्हें दर्शन दिया और कहा :

> *"प्रभु ने अब्राम से कहा, 'तू अपने स्वदेश, जन्म-स्थान और नाते-रिश्तेदारों को छोड़कर उस देश को जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा। **मैं तुझसे एक बड़ा राष्ट्र उद्भव करूंगा। मैं तुझे आशीष दूंगा,** और तेरे नाम को महान बनाऊंगा कि तू मानव-जाति के लिए आशीष का माध्यम बने। जो तुझे आशीष देंगे, मैं उनको आशीष दूंगा। लेकिन जो तुझे श्राप देगा, उसे मैं श्राप दूंगा। **पृथ्वी के समस्त कुटुम्ब तेरे द्वारा मुझसे आशीष पाएंगे।**"*
> (उत्पत्ति 12:1-3)

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी कि अब्राहम से एक "बड़ा राष्ट्र" बनाए जिसके द्वारा वह पृथ्वी पर के सभी जाति वर्ग के लोगों के लिए उद्धार प्रदान करे। यह राष्ट्र "महान" होगा, आकार में नहीं, लेकिन महत्त्व में। इस नए राष्ट्र को वास्तविक बनाने के लिए, अब्राहम और उसकी नि:सन्तान पत्नी सारा को परमेश्वर द्वारा आज्ञा दी गई कि उस देश को जाए जिसकी प्रतिज्ञा उसने की है कि उनके वंशजों को प्रदान करेगा, भले ही उन्हें अब तक कोई भी संतान नहीं थी।

परमेश्वर के असंभव प्रतीत होने वाले प्रतिज्ञा के प्रति अब्राहम ने कैसी प्रतिक्रिया दी? उसने परमेश्वर पर विश्वास रखा और आज्ञा मानी, उसके पिता के घर को छोड़ा और कनान देश की ओर चल पड़े, जो आज इस्राएल और पॅलेस्टाइन नाम से जाना जाता है।

अब्राहम का विश्वास

जब अब्राहम कनान में आ पहुंचे, प्रभु ने उसे कहा, *"मैं यह देश **तेरे वंश को** दूंगा। अत: अब्राम ने प्रभु के लिए, जिसने उन्हें दर्शन दिया था, वहां एक वेदी बनाई।"* (उत्पत्ति 12:7)

परमेश्वर की प्रतिज्ञा किसी भी अद्भुत बात से कम नहीं। कनान देश कई अलग-अलग लोगों के समूह से आबाद था। अब्राहम और उनके वंशज इसे किस प्रकार प्राप्त कर सकते थे? वे और उनकी पत्नी को कोई वंशज नहीं थें।

कल्पना कीजिए एक वृद्ध दम्पति दूर देश से आपके देश घूमने के लिए आ रहे हैं। जब पहुँच जाते है, आप उन्हें कहते है, "एक दिन आप और आपके वंशज इस संपूर्ण देश पर अधिकार प्राप्त करोगे!" वृद्ध मनुष्य हंसता और कहता है, "बहुत ही मजेदार है! मेरा कोई वंशज भी नहीं है! मैं एक बुढा मनुष्य हूं; मेरा कोई बच्चा नहीं है और मेरी पत्नी बच्चे को जन्म देने में असमर्थ है और आप मुझे कह रहे है कि मेरे वंशज बढ़नेवाले है और इस देश पर अधिकार प्राप्त करनेवाले है? क्या आप बीमार है?"

इस प्रकार की चौंका देनेवाली प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की। और अब्राहम ने प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त की? पवित्रशास्त्र कहता है कि उन्होंने *"प्रभु में **विश्वास** किया, और यह उनके लिए **धार्मिकता** गिना गया"* (उत्पत्ति 15:6)।] परमेश्वर की प्रतिज्ञा में अब्राहम के बच्चे समान विश्वास के कारण, परमेश्वर ने उन्हें धर्मी घोषित किया। वे मरने के बाद, अब्राहम प्रभु के साथ उनके स्वर्गीय राज्य में हमेशा के लिए जीवन व्यतीत करेंगे।

मूल इब्रानी लेख में *"विश्वास"* के लिए अमन यह शब्द है, जिससे *"आमीन,"* यह शब्द आता है, जिसका अर्थ: "ऐसा ही हो!" या "यह विश्वसनीय और सत्य है!"

इसे न भूलों। प्रभु में विश्वास करना यह जो उसने घोषित किया है उसे सुनना और हृदय-भाव से "आमीन!" के साथ उत्तर देना है। यह ऐसी बच्चो जैसी आस्था है जो परमेश्वर से जोड़ती है। परमेश्वर के वचन को हमने स्वीकार किया है या नहीं यह हमारे कार्यों से दर्शाया जाएगा। अब्राहम का विश्वास इस तथ्य से प्रमाणित था कि उन्होंने कठिन मार्ग का चुनाव किया, उनके पिता के धर्म से मुंह मोड़ा ताकि प्रभु का अनुसरण करे।

> *"**अब्राहम ने विश्वास किया**, और यह उनके लिए धार्मिकता गिना गया" तथा वह **'परमेश्वर के मित्र'** कहलाए।"* (याकूब 2:23)

अब्राहम परमेश्वर के मित्र थे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया था। इसका अर्थ यह नहीं कि अब्राहम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परमेश्वर पर हमेशा विश्वास किया था। न्यायिक तौर पर, परमेश्वर ने उन्हें पूर्ण रूप से धर्मी घोषित किया था, लेकिन उनके प्रत्येक दिन के जीवनकाल में, अब्राहम पूर्णता से कुछ कम था।

पवित्रशास्त्र भविष्यद्वक्ताओं के पाप और उनकी कमियों को छिपाते नहीं।

इश्माएल

अब्राहम और सारा ने कनान देश में ख़ानाबदोश होकर तंबुओं में निवास किया, एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते हुए जीवन व्यतीत किया। कुछ समय पश्चात्, अब्राहम उसकी संपत्ति में बहुत अधिक धनवान हो गया।

दस वर्षो से अधिक समय बीत चूका था जब परमेश्वर ने अब्राहम से एक बड़ा राष्ट्र बनाने की प्रतिज्ञा की थी। वह अब छियासी वर्ष वृद्ध और उनकी पत्नी छिहत्तर वर्ष के हो गए थे, और अब भी उन्हें कोई संतान नहीं थी। अब्राहम एक बड़ा राष्ट्र कैसे हो सकते अगर वे पुत्रहीन है? अब्राहम और उनकी पत्नी ने निर्णय लिया कि परमेश्वर को उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए "सहायता" करे।

प्रभु को उसकी योजना उसके समय में पूरी करने के लिए रुके रहने के बदले, उन्होंने अपने सामान्य ज्ञान और स्थानीय संस्कृति का अनुसरण किया। सारा ने अपनी मिस्त्री दासी हाजिरा अब्राहम को दी ताकि वे उसके साथ सहवास कर सके और उसके द्वारा बच्चा हो। हाजिरा ने अब्राहम के बच्चे को जन्म दिया जिसका नाम उन्होंने इश्माएल रखा।

तेरह वर्षो बाद में, जब अब्राहम निन्यानवे वर्ष का था, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उन्हें दर्शन दिया और उन्हें कहा कि सारा उनकी पत्नी को एक बेटा होगा।

"अब्राहम ने मुंह के बल गिर कर प्रणाम किया। पर वह हंस पड़े। उन्होंने अपने हृदय में कहा, 'क्या सौ वर्ष के बूढ़े को भी सन्तान हो सकती है? क्या नब्बे वर्ष की सारा गर्भवती होगी?' अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, 'प्रभु, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे, यही बहुत है। ' परमेश्वर ने कहा, 'नहीं, तेरी पत्नी सारा तेरे लिए एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम इसहाक रखना। मैं उसके साथ अपनी वाचा स्थापित करूंगा। यह वाचा उसके पश्चात् भी उसके वंश के साथ शास्वत वाचा होगी। मैंने ***इश्माएल*** *के विषय में तेरी बात सुनी। देख, मैं उसे भी आशीष दूंगा। मैं उसे फलवन्त करूंगा, और उसे अत्यधिक बढ़ा दूंगा। उससे बारह कुलपति उत्पन्न होंगे। मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा। किंतु मैं इसहाक के साथ ही अपनी वाचा स्थापित करूंगा। सारा* ***इसहाक*** *को आगामी वर्ष इसी ऋतु में जन्म देगी।"* (उत्पत्ति 17:17-21)

इसहाक

परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। सारा, ने उसकी वृद्धावस्था में, अब्राहम को इसहाक नाम का एक पुत्र दिया।

"बच्चा बड़ा हुआ, और उसका दूध छुड़ाया गया। जिस दिन इसहाक का दूध छुड़ाया गया, उस दिन अब्राहम ने बड़ा भोज दिया। एक दिन सारा ने मिस्त्री हाजिरा के पुत्र को, जिसे हाजिरा ने अब्राहम से उत्पन्न किया था, अपने पुत्र इसहाक के साथ खेलते देखा।" (उत्पत्ति 21:8-9)

इश्माएल ने एक राष्ट्र का निर्माण करने के लिए इसहाक का उपयोग करने की परमेश्वर की योजना की प्रशंसा नहीं की जिसके द्वारा प्रभु संसार को उसका सत्य बताएगा और उद्धार प्रदान करगा। इसके बजाय, इश्माएल ने अपने सौतेले भाई का मज़ाक उड़ाया। तनाव इस हद तक बढ़ गया जहां अब्राहम को इश्माएल और हाजिरा को दूर भेज देना पड़ा। अब्राहम के लिए यह अत्यंत दुखदायी अनुभव था, जो उसके पुत्र इश्माएल से प्रेम करता था।

*"परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, 'तू बालक और अपनी दासी के कारण बुरा मत बन। जो बातें सारा तुझसे कहती है, उनको सुनो। क्योंकि **इसहाक** से तेरा वंश चलेगा। ...परमेश्वर बालक के साथ था। वह बड़ा होता गया। वह निर्जन प्रदेश में रहता था। वह विख्यात धनुर्धारी बना। वह पारन के निर्जन प्रदेश में रहता था। उसकी मां ने उसके लिए एक कन्या ढूंढी जो मिस्त्र देश की रहनेवाली थी, और उसके साथ उसका विवाह कर दिया।"* (उत्पत्ति 21:12, 20-21)

जैसे प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी, इश्माएल महान लोगों का पिता हो गया जिन्हें परमेश्वर ने अनेक तरीकों से आशीषित किया था। फिर भी प्रभु ने अब्राहम से स्पष्ट कर दिया था कि यह "इसहाक में" ही वह उसकी वाचा को पूरा करेगा कि संसार के लिए उद्धार प्रदान करे।

इस्राएल

बाद में, इसहाक का विवाह हुआ और उसे जुड़वा पुत्र हुए, एसाव और याकूब। परमेश्वर ने अंत में याकूब को एक नया नाम दिया, उसे कहते हुए, *"अबसे तेरा नाम **इस्राएल** होगा"* (उत्पत्ति 35:10)। याकूब को बारह पुत्र थे, इस्राएल के बारह वंशो के पूर्वज पिताओं, जिन्हें मूसा के समय में, परमेश्वर ने एक राष्ट्र में संघटित किया था। प्रभु ने अब्राहम, इसहाक और याकूब इनके वंशजों को उसके चुने हुए लोग कहा।[185]

उसने उन्हें क्यों चुना? अन्य राष्ट्रों से क्या वे अधिक उत्तम थे? नहीं, वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएलियों को कहा था कि वे *"सब लोगों से **अत्यंत दुर्बल** राष्ट्र थे"* (व्यवस्था विवरण 7:7)। परमेश्वर ने इन दुर्बल, तिरस्कृत लोगों को चुना, ताकि उसने जो पूर्ण करने की योजना की है उसके लिए कोई मनुष्य श्रेय या प्रशंसा न ले सके।

इस तरह से प्रभु परमेश्वर कार्य करने में हर्ष करता है।

*"....परमेश्वर ने जगत के **निर्बलों को चुना** है कि वह बलवानों को लज्जित करे। जो संसार की दृष्टि में **तुच्छ, नीच और नगण्य हैं**, उनको परमेश्वर ने चुना है कि बलवान को निर्बल सिद्ध करे, **जिससे कोई जानवर परमेश्वर के सम्मुख अहंकार न कर सके।**"*
(1 कुरिंथियों 1:27-29)

संचार माध्यम

परमेश्वर ने इस नये राष्ट्र को एक माध्यम के रूप खड़ा किया जिसके द्वारा वह पृथ्वी की छोर तक उसके संदेश का संचार करे। परमेश्वर ने इस "संचार माध्यम" का निर्माण रेडिओ, टेलीविजन

और इन्टरनेट के समय से बहुत पहले किया था-लेकिन वह उससे किसी भी बात में कम प्रभावी नहीं था। इस राष्ट्र के मध्य में एक सत्य परमेश्वर के सामर्थ्यशाली कार्य संपूर्ण संसार में सुने जाएंगे। उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र एक कनानी स्त्री की यह गवाही अभिलिखित करता है : *"**क्योंकि हमने सुना है** कि जब तुम लोग मिस्र देश से बाहर निकले थे तब **प्रभु** ने तुम्हारे सम्मुख लाल सागर के जल को सुखा डाला था। .....**तुम्हारा प्रभु परमेश्वर ही** ऊपर आकाश में, और नीचे पृथ्वी पर **एकमात्र ईश्वर है**।"* (यहोशू 2:10-11)

इसके अतिरिक्त, ऐसे होगा कि इस राष्ट्र से परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं को चुनेगा जो पवित्रशास्त्र लिखेंगे।

सबसे महत्वपूर्ण रूप से, इस राष्ट्र के द्वारा कि परमेश्वर एक *वंशज* प्रदान करेगा जो स्वयं ही संसार के लिए आशीष का माध्यम होगा। जैसे हमने पहले ही विचार किया है (पाठ 16 में), यह वंशज और कोई नहीं बल्कि *स्त्री का प्रतिज्ञा किया हुआ वंशज* होगा, प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता जो स्वर्ग से आया कि एक गरीब यहूदी लड़की जो कुंवारी थी उससे जन्म लिया।

हमें मंजूर है या नहीं, यह प्राचीन राष्ट्र *परमेश्वर द्वारा* स्थापित संचार माध्यम था कि पृथ्वी पर प्रत्येक राष्ट्र को उसका सत्य और अनंतकाल की आशीषे प्रदान करे। और यह सब तब आरंभ हुआ जब प्रभु ने अब्राहम से कहा कि उसके पिता के घर को छोड़े और कनान देश में जाए।

परमेश्वर के अब्राहम के साथ महान वाचा के दो मुख्य भाग थे :

1) *"मैं तुझसे एक **बड़ा राष्ट्र** उद्भव करूंगा। मैं तुझे आशीष दूंगा.... ।"*
2) *"**पृथ्वी के समस्त कुटुम्ब** तेरे द्वारा मुझसे आशीष पाएंगे।"* (उत्पत्ति 12:2, 3)

परमेश्वर का प्रेम किसी एक विशेष समूह के लिए सीमित नहीं है। उसकी इच्छा नहीं है कि केवल अब्राहम या इस्राएल को ही आशीषित करे। उसकी दया का हृदय "पृथ्वी पर सभी लोगों के लिए" इच्छा करता है। पुराना नियम इन कहानियों से भरा हैं कि परमेश्वर एक छोटे और हठीले इस्राएल राष्ट्र का उपयोग कर रहा है कि पृथ्वी पर सभी राष्ट्र और भाषाओं के समूहों को उसका अनुग्रह प्रदान करे।[186] परमेश्वर का उद्देश्य कि इस तिरस्कृत राष्ट्र के द्वारा सभी राष्ट्रों को आशीषित करे इसे मन में रखना चाहिए जब कभी बाइबल प्रभु के विषय में कहती है कि इस्राएली लोगों की उनसे रक्षा करे जिन्होंने उन्हें नष्ट करने का प्रयास किया हैं। परमेश्वर उनका समर्थन कर रहा है, इस कारण से नहीं कि वे अन्य राष्ट्रों से उत्तम है, लेकिन इस कारण से कि वे **माध्यम है** जिनके द्वारा उसने निश्चय किया है कि संसार को उसकी सामर्थ्य और महिमा प्रदर्शित करे और उद्धार प्रदान करे।

अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशजों की रक्षा करने के द्वारा परमेश्वर "पृथ्वी पर के सभी लोगों" के लिए उसके आशीषों की रक्षा कर रहा था।

इससे अधिक, प्रभु परमेश्वर की प्रतिष्ठा दांव पर थी। उसने अपने स्वयं के महान नाम द्वारा शपथ ली थी कि सभी राष्ट्रों को इस दुर्बल और तिरस्कृत राष्ट्र द्वारा आशीषित करे।[187] परमेश्वर ने अपने नाम के सम्मान के लिए, निश्चित रूप से जो प्रतिज्ञा की है वह उसे करेगा।

अगर हमारी प्रतिष्ठा, या हमारे परिवार का सम्मान दांव पर लगा हो तो क्या हम भी वही नहीं करेंगे?

परमेश्वर अब्राहम की परीक्षा लेता है

आइए हम अब अब्राहम के महान बलिदान की उत्कृष्ट कहानी की ओर फिर से जाए।

यहां रचना है : अब्राहम बहुत ही वृद्ध हो गया था। इश्माएल को बहुत वर्षों पहले दूर देश भेज दिया गया था। केवल इसहाक, अब्राहम और सारा का पुत्र, ही घर पर रह गए थे।

परमेश्वर अब अब्राहम के विश्वास की कठोर परीक्षा लेनेवाला था। प्रभु परमेश्वर संसार के सामने भी कुछ रखनेवाला था, कुछ तस्वीरें और भविष्यवाणियां जिसके विषय में उसने स्वयं योजना की थी कि आदम के वंशजों को पाप के मृत्यु के दंड से मुक्त करे।

> *"इन घटनाओं के पश्चात् परमेश्वर ने अब्राहम को कसौटी पर कसा। उसने उन्हें पुकारा, 'अब्राहम!' उन्होंने उत्तर दिया, प्रभु, क्या आज्ञा है? परमेश्वर ने कहा, 'तू अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को प्यार करता है। तू उसको लेकर मोरियाह देश जा। वहां मैं तुझे एक पहाड़ बताऊंगा, तू उस पहाड़ पर अपने पुत्र को होमबलि में चढ़ाना।'"*
> (उत्पत्ति 22:1-2)

परमेश्वर ने अब्राहम को एक विशेष पर्वत चोटी पर यात्रा करने और वहां वेदी पर उसके प्रिय पुत्र को मारना और जलाने की आज्ञा दी। क्या ही भयानक बिनती! यह ऐसा कुछ तो जो परमेश्वर ने इससे पहले किसी मनुष्य को करने नहीं कहा था और किसी मनुष्य को कभी करने भी नहीं कहेगा। फिर भी, क्योंकि इसहाक, आदम के सभी वंशजों समान, पाप का ऋणी था, उस पर दी गई सजा यह एक उचित फैसला था : मृत्यु।

> *"अब्राहम सबेरे उठे। उन्होंने अपने गधे पर जीन कसी, अपने साथ दो सेवकों एवं अपने पुत्र इसहाक को लिया, होमबलि के लिए लकड़ी कांटी और उस स्थान की ओर चले जिसकी चर्चा परमेश्वर ने उनसे की थी।"* (उत्पत्ति 22:3)

अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया, लेकिन यह आसान नहीं था। तीन अत्यंत दुखदायी दिन अब्राहम, उनका पुत्र, और दो सेवकों ने यात्रा किया, प्रत्येक कदम उन्हें वध करने के स्थान के निकट ला रहा था।

"अब्राहम ने तीसरे दिन आंखे ऊपर उठाकर उस स्थान को दूर से देखा। उन्होंने अपने सेवकों से कहा, 'तुम यही गधे के पास ठहरो। मैं और इसहाक आगे जाकर आराधना करेंगे। फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे।'" (उत्पत्ति 22:4-5)

अब्राहम ने सेवकों से कहा, *"फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे"*

अब्राहम और उनका पुत्र *"फिर से लौट आएंगे"* यह कैसे हो सकता है अगर इसहाक को वेदी पर मारा और जलाया जाएगा? कहीं ओर पवित्रशास्त्र उत्तर प्रदान करता है। क्योंकि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी है कि इसहाक से एक बड़ा राष्ट्र बनाएगा, अब्राहम ने विश्वास किया कि जब वे उनके पुत्र का बलिदान करेंगे, परमेश्वर उसे फिर से जीवित करेगा।[188] अब्राहम ने समझ लिया था कि प्रभु उसकी प्रतिज्ञाएं हमेशा ही पूरी करता है!

परमेश्वर विकल्प का प्रबंध करता है

"अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी अपने पुत्र इसहाक पर लाद दी, और अपने हाथ में अग्नि और छुरा लिया। वे दोनों एक साथ चले।" (उत्पत्ति 22:6)

जब पिता और पुत्र पर्वत पर चल रहे थे, इसहाक ने कहा,

"पिताजी!' उन्होंने कहा, 'हां मेरे पुत्र, क्या बात है?' इसहाक ने पूछा, 'आग और लकडियां तो हैं; लेकिन होमबलि का ***मेमना कहां है****?' अब्राहम ने उत्तर दिया, 'मेरे पुत्र,* ***परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेमने का प्रबन्ध करेगा।'*** *वे दोनों साथ-साथ आगे बढे। वे उस स्थान पर पहुंचे, जिसके विषय में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था। वहां अब्राहम ने एक वेदी बनाकर उसपर लकडियां रख दीं। तब उन्होंने अपने पुत्र इसहाक को बांधा और उसे लकड़ियों के ऊपर वेदी पर लिटा दिया। फिर अब्राहम ने अपने पुत्र को बलि करने के लिए हाथ बढ़ाकर छुरा उठाया। किंतु प्रभु के दूत ने स्वर्ग से उन्हें पुकार कर कहा, 'अब्राहम! अब्राहम!' वह बोले, 'प्रभु क्या आज्ञा है?' दूत ने कहा, 'बालक की ओर अपना हाथ मत बढ़ा और न उसे कुछ कर। अब मैं जान गया हूं कि तू परमेश्वर का सच्चा भक्त है। क्योंकि तूने मेरे लिए अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र को भी छोड़*

दिया। ' अब्राहम ने अपनी आंखे ऊपर उठाई तो देखा कि उनके पीछे एक मेंढा है। वह अपने सींगों से एक झाड़ी में फंसा हुआ है।'' (उत्पत्ति 22:7-13अ)

प्रभु ने हस्तक्षेप किया। अब्राहम के पुत्र का मृत्यु के दंड से बचा लिया गया था।

अब्राहम पीछे की ओर मुडा, और कुछ दूरी पर, उसी पर्वत पर, उसने झाड़ियों में कुछ हलचल देखी। वह क्या था....? क्या यह..... हो सकता है? जी हां! परमेश्वर की स्तुति हो! निष्कलंक ''मेंढा सींगो द्वारा झाड़ियों में फंसा हुआ था!''

उसकी अपनी ''बलिदान की व्यवस्था'' का पालन करते हुए, परमेश्वर ने एक विकल्प प्रदान किया था।

*''अब्राहम गए। उन्होंने उस मेंढे को पकड़ा और **अपने पुत्र के स्थान पर** उसकी होमबलि चढ़ाई।''* (उत्पत्ति 22:13ब)

अब्राहम का पुत्र मृत्यु दंड से कैसे बचा जो उसके ऊपर था?

मेंढा उसके स्थान पर मर गया था।

परमेश्वर ने एक विकल्प का प्रबंध किया था।

प्रभु प्रबंध करेगा

*"अब्राहम ने उस स्थान का नाम, **'प्रभु देखता है'** रखा। इसलिए आज तक यह कहा जाता है, **'प्रभु पहाड़ पर दर्शन देगा**।* (उत्पत्ति 22:14) *[टिप्पणी : हिंदी बाइबल में, "प्रभु प्रबन्ध करेगा" को "प्रभु देखता है" ऐसे अनुवादित किया है।]*

अब्राहम ने उसके पुत्र के स्थान पर मेंढे को मारने के बाद, उन्होंने उस स्थान का नाम, *'प्रभु प्रबन्ध **करेगा**"* ऐसा क्यों कहा?

अब्राहम ने *"प्रभु ने प्रबन्ध **किया है**"* ऐसा नाम उसे **क्यों नहीं रखा**?

*"प्रभु प्रबन्ध **करेगा**"* ऐसा कहने में, भविष्यद्वक्ता अब्राहम भविष्य में होनेवाली घटना को घोषित कर रहे थे जो दो हजार वर्षों के बाद में घटित होनेवाली थी। क्योंकि इसी पर्वत पर (जहां यरूशलेम यह बाद में बनाया गया) प्रभु और एक बलिदान का प्रबन्ध करेगा, केवल एक मनुष्य को छुड़ाने के लिए नहीं, लेकिन संपूर्ण संसार के लिए एक पूर्ण और सर्वश्रेष्ठ उद्धार मूल्य का प्रबन्ध करेगा।

क्या आप को स्मरण है कि अब्राहम ने उनके पुत्र को क्या कहा जब वे पर्वत पर चढ़ रहे थे जहां बलिदान चढाना था? उन्होंने उसे कहा,

*"**मेरे पुत्र, परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेमने का प्रबन्ध करेगा।"***

अब्राहम किस विषय में बोल रहा था? अब्राहम के पुत्र के स्थान पर प्रभु ने मेमने का प्रबन्ध किया था क्या? नहीं, उसने मेमने का प्रबन्ध नहीं किया था। परमेश्वर ने एक मेंढे का प्रबन्ध किया था। तो भविष्यद्वक्ता अब्राहम का कहने का अर्थ क्या था जब उन्होंने प्रभु स्वयं **मेमने** का" प्रबन्ध करेगा यह कहा था?

अद्भुत उत्तर जल्द ही उभर के आएगा, लेकिन पहले कुछ और कहानियां बताई जानी चाहिए।

पाठ 21

ज्यादा लहू बहा

आइए ईमानदार रहे।

जब आध्यात्मिक सत्य की बात आती है, हम कम सुननेवाले हो जाते हैं।

परमेश्वर को यह पता है।

*"समय के विचार से तो तुम्हे गुरु हो जाना चाहिए था, लेकिन अब आवश्यक हो गया है कि तुम्हें कोई पुनः परमेश्वर की गम्भीर वाणी की **प्राथमिक शिक्षा दे**। तुम्हें गरिष्ठ भोजन की नहीं, दूध की आवश्यकता है।"* (इब्रानियों 5:12)

ओह!

दयालु रूप से, परमेश्वर अत्यधिक सबर रखनेवाला शिक्षक है, प्राथमिक सत्यों को फिर से दोहराता और पुन: स्पष्ट करता हैं जिसे हमें बहुत पहले सिखना चाहिए था। हमें सहायता करने के लिए, उसने अपनी पुस्तक में सैंकड़ों कहानियां सम्मिलित की है जो सबसे महत्वपूर्ण सत्य को सुचित्रित रूप से स्पष्ट करती है :

"बिना लहू बहाए पाप की क्षमा नहीं।" (इब्रानियों 9:22)

पाप की क्षमा यह हमारे पूर्णरूप से पवित्र सृष्टिकर्ता के लिए कभी भी एक साधारण बात नही थी। जिस दिन से पाप ने संसार में प्रवेश किया था, परमेश्वर ने पापियों को सिखाने का प्रारंभ किया था कि केवल एक योग्य बलिदान का लहू ही पाप के लिए (आच्छादन) प्रायश्चित्त हो सकता है। इस प्रकार से परमेश्वर, धर्मी न्यायाधीश, पापियों को दंड दिए बगैर पाप को दंडित करेगा।

प्रभु ने आदम और हव्वा के उनके पाप को ढंकने के स्वयं-प्रयास को अस्वीकार किया। मृत्यु की भरपाई के बगैर, परमेश्वर पाप को क्षमा नहीं कर सकता था। कैन और हाबिल की कहानी ने

हमें वह सबक सिखाया था। उसी प्रकार अब्राहम और इसहाक की कहानी।

पुराने नियम की पुस्तके जो उत्पत्ति के बाद में आती हैं, जैसे निर्गमन और लैव्यव्यवस्था, ये पुरुषों और स्त्रियों की कहानियों से भरपूर हैं जो इस बलिदान की व्यवस्था के अधीन हो गए थे।[189]

"मैं लांघ के जाऊंगा"

निर्गमन की पुस्तक मोहक कहानी से संबंध जोड़ती है उस विषय में कि परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों को एक राष्ट्र में कैसे संघठित किया जैसे उसने प्रतिज्ञा दी थी।

इश्वरी रूप से रची गई घटनाओं की शृंखला के द्वारा जो परमेश्वर ने अब्राहम[190] को पहले ही बताया था, कि इस्राएल वंशज मिस्त्री फ़िरौन के शासन मे गुलाम होंगे। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी कि उन्हें दासत्व में से छुडाएगा और, उस प्रक्रिया में, संसार को उसकी योजना का यह "दृश्य" दिखाएगा कि आदम के वंशजों को उनके पाप के दासत्व से छुडाएं।

फसह के पर्व की यह कहानी है।

ईसा पूर्व करीबन 1490, प्रभु ने मिस्र देश में दस विनाशकारी विपत्तियां मूसा के शब्दों द्वारा लाई। इन चमत्कार चिन्हों में से पहले नौ, जिसमे प्रभु और बहुदेववादी मिस्र के झूठे देवताओं का पराजय हुआ, एक सत्य परमेश्वर के अधीन होना और इस्राएली लोगों को मुक्त करना यह इन्होने फ़िरौन को नहीं करने दिया।[191] लेकिन दसवी विपत्ति फ़िरौन को समझाएगी की उन्हें छोड़ दे। परमेश्वर ने मूसा को कहा कि लोगों को सूचना दे कि प्रत्येक परिवार में पहिलौठा, मिस्त्री और इस्राएली, दोनों ही मृत्यु दंड के पात्र है। नियुक्त तारीख की रात में, मृत्यु का दूत देश में से होकर गुजरेगा और प्रत्येक घर में पहिलौठे का वध करेगा।

वह एक बुरी ख़बर थी।

सुसमाचार यह था कि इस मृत्यु की विपत्ति से परमेश्वर छुटकारे के मार्ग का प्रबन्ध करेगा। प्रभु ने मूसा से कहा कि प्रत्येक परिवार से कह कि "भेड़ो अथवा बकरियों के झुण्ड से निष्कलंक, एक वर्ष का नर, ...ऐसा एक मेमना चुनना" (निर्गमन 12:5)। फिर, नियुक्त समय पर, मेमने को मार डाला जाएगा, और उसका लहू हर एक घर के चौखट के सिरे और और चौखट पर लगाना। वे सब जो घर की चौखट पर मेमने का लहू लगाएंगे और घर में ही रहेंगे जब देश में दसवी विपत्ति आएगी, वे बच जाएंगे।

प्रभु ने प्रतिज्ञा दी थी :

"जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे लिए चिन्ह ठहरेगा; अर्थात ***मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ [मूल में लाँघ के] जाऊंगा।"*** (निर्गमन 12:13)

परमेश्वर ने जैसे कहा था सब कुछ वैसे ही हुआ। मिस्त्र में उस पवित्र रात में, परमेश्वर ने उन सब पहिलौठों की रक्षा की जो लहू के भीतर थे; फ़िरौन के पहिलौठे पुत्र सहित अन्य सभी मर गए।

आइए हम यह देखने में चुक न करे कि प्रत्येक परिवार मृत्यु का गवाहदार था। जी हां, प्रत्येक परिवार।

एक तो मेमना मरा था अथवा पहिलौठा मरा था।

उस रात जिन्होंने उनके घर की चौखट पर लहू लगाया था वे अत्याचार और दासत्व के जीवन से निकल गए थे। वे एक स्वतंत्र, छुड़ाए हुए लोग निकले।

और उनके छुटकारे का उद्धार मूल्य क्या था?

मेमने का लहू

फिर एक बार, बलिदान की व्यवस्था ने पाप और मृत्यु की व्यवस्था पर विजय प्राप्त की थी। उत्तरवर्ती वर्षों में, यहूदी लोग फसह का पर्व, वार्षिक पर्व का उत्सव मनाएंगे जिसमे वे उस महान छुटकारे का स्मरण करेंगे जो परमेश्वर ने एक मेमने के लहू द्वारा प्रदान किया था।

परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई करता है

आरंभ के फसह के पर्व की रात में, परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र देश में चारसौ वर्षों की गुलामी से छुड़ाकर निर्जन प्रदेश में ले गया। परमेश्वर ने योजना की थी कि उन्हें उस भूमि में लाए जो उसने अब्राहम, इसहाक, याकूब और उनके वंशजों को प्रदान करने की प्रतिज्ञा की थी। जब वे यात्रा कर रहे थे, परमेश्वर स्वयं उनके साथ एक दृश्य, सांत्वना देनेवाले तरीके से गया।

"प्रभु दिन में उन्हें मार्ग दिखाने के लिए मेघ-स्तम्भ और रात में उन्हें प्रकाश देने के लिए अग्नि-स्तम्भ में होकर उनके आगे-आगे चलता था।" (निर्गमन 13:21)

प्रभु ने न ही केवल निर्जन प्रदेश में अपनी प्रजा की अगुवाई की और उन्हें प्रकाश दिया, वरन अपने बलवंत भुजबल से, उसने लाल समुद्र में मार्ग खोला था, और फ़िरौन की पीछा करनेवाली सेना से छुड़ाया था। और फिर, जैसे उसने मूसा को प्रतिज्ञा दी थी, वैसा ही वह उन्हें सीनय पर्वत पर ले गया।[192]

वहां उस पहाड़ की तलहटी में बीस लाख से अधिक लोगों के इस नए राष्ट्र ने पुरे एक वर्ष के लिए डेरा डाला। उस बंजर निर्जन प्रदेश में वे सम्भवतः कैसे जीवित रह सकते थे? परमेश्वर ने,

उसकी भलाई और अनुग्रह में, स्वर्ग से रोटी और चट्टान से जल का प्रबन्ध किया था।[193] भले ही इस्राएली लोग एकमात्र जिसने उन्हें गुलामी से मुक्त किया था उसे धन्यवाद देने, भरोसा करने और आज्ञा मानने में लगातार असफल हुए थे, किंतु प्रभु उनके प्रति हमेशा ही विश्वसनीय था। उसने उनका न्याय किया जब उन्होंने उसके विरोध में पाप किया और उन्हें आशीष दी जब उन्होंने उस पर विश्वास किया। प्रभु ने अपने चुने हुए राष्ट्र के साथ इस प्रकार व्यवहार किया ताकि आसपास के राष्ट्र उसके उद्धार के तरीके को देख सकें, उस पर विचार कर सकें और सीख सकें। परमेश्वर यह भी चाहता था कि लोग समझे कि वह वैयक्तिक रूप से भी जाना जा सकता है।

इस्राएली लोगों को दस आज्ञाएं (पाठ 15 देखे) और अन्य व्यवस्था देने के पश्चात्, प्रभु ने उसके लोगों को आज्ञा दी कि एक अनोखा पवित्रस्थान का निर्माण करे जिसे निवास-स्थान अथवा मिलन-शिविर कहा जाता है।

निवास-स्थान

*"वे **मेरे लिए** एक वेदी बनाएंगे **जिससे मैं उनके मध्य निवास करूंगा।** अपने **निवास-स्थान के नमूने** तथा उसके समस्त उपकरणों से सम्बन्धित **जो वस्तुएं मैं तुझे दिखाता हूं, उन्हीं के अनुरूप तू उसे निर्मित करना।**"* (निर्गमन 25:8-9)

परमेश्वर के प्राचीन लोगों ने इस विशेष तंबू को बनाने का क्या उद्देश्य था? और यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था कि इसे परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए "रचना.....के अनुसार" बनाया जाए?

परमेश्वर ने उन्हें दृश्य तरीके से यह सिखाने के लिए इस निवासस्थान का उपयोग करने की योजना बनाई कि वह कैसा है और उसके पास कैसे जाना चाहिए।

बाइबल में निवासस्थान और उसके साथ जो भी वस्तुएं थी उसके विषय में पचास अध्यायों में विवरण है, इसलिए यह सब यहां स्पष्ट नहीं कर सकते। हम केवल कुछ आधारभूत घटकों की ओर ही इशारा कर सकते हैं।

एक मार्ग

परमेश्वर ने निवास-स्थान की रचना की ताकि संसार को सिखाए कि भले ही वह पूर्णरूप से पवित्र है, वह फिर भी उसके लोगों के साथ निवास करना चाहता है। तथापि, यहां पर एक परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मुख्य अवरोध है।

वह अवरोध पाप है।

यह विशेष शिविर जो मनुष्य के मध्य में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है वह विशाल आयताकार आंगन के भीतर बंद था। इस आंगन का अहाता यह पीतल के खम्भे और पतले बुने हुए सूती वस्त्र से बना था। आंगन की उंचाई दो मीटर पचीस सेंटीमीटर होगी, इतनी उंची ताकि कोई मनुष्य उस पर से आसानी से नही देख सके। परमेश्वर चाहता था की लोग समझे कि उन्हें उसकी उपस्थिति से दूर रखा है। वह एक बुरी ख़बर थी।

सुसमाचार यह था कि परमेश्वर ने पापियों के लिए एक मार्ग प्रदान किया था कि उसके करीब आए। आंगन के द्वार पर परदा था जो नीले, बैंजनी और लोहित रंग एवं पतले बुने हुए सूती वस्त्र से बना था। एक ही मार्ग जिससे पापी परमेश्वर के पास उस एक द्वार[194] से मेमना अथवा अन्य योग्य लहू बलिदान के साथ प्रवेश कर सकते थे।

प्रभु ने इस्राएली-समाज से कहा कि बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाए और उसे पीतल से मढ़ना। इस वेदी को द्वार और परमेश्वर के विशेष शिविर के बीच में रखना। वे जो पाप-बलि चढ़ा रहे है उन्होंने उस निष्पाप जानवर के सिर पर हाथ रखना और उनकी असहाय पापी अवस्था को कबूल करना। फिर जानवर को मारा जाएगा और उसका शरीर वेदी पर जलाया जाएगा। फिर एक बार परमेश्वर लोगों को यह दिखा रहा था कि पाप और मृत्यु की व्यवस्था को बलिदान की व्यवस्था के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।[195]

परमेश्वर का नियम स्पष्ट था : बिना लहू बहाए, यहां पर पाप के लिए कोई आवरण नहीं हो सकता। पाप के लिए बिना आवरण के, यहां पर परमेश्वर के साथ कोई मेलमिलाप (योग्य संबंध) नहीं हो सकता।

परमेश्वर ने मूसा को यह भी कहा कि लकड़ी का एक अनोखा संदूक बनाकर उसे सोने से मढ़ना। लकड़ी की सामग्री में से इस वस्तु को वाचा का संदूक कहा गया। स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन का यह प्रतीक है। पत्थर की पट्टियांए जिन पर परमेश्वर ने दस आज्ञाएं खुदी हुई थी, उन्हें इस सोने के संदूक के अंदर रखा गया था। संदूक के ठोस सोने के आवरण ऊपर, जिसे दया-आसन कहा जाता है, सोने से बने दो करुबों की आकृतियां गुंथी हुई थीं। करुब तेजस्वी दूत थे जो स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारो ओर रहते हैं। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि निवास-स्थान के सबसे भीतर के कमरे में वाचा के संदूक को रखना।

परम पवित्र स्थान

निवास-स्थान दो कमरों में विभाजित किया जाएगा। सामने के कमरे को *पवित्र स्थान* कहा जाता है और भीतर के कमरे को परम पवित्र स्थान या पवित्रता में परम पवित्र। यह भीतर का पवित्र

स्थान *"जो वास्तविक पवित्र-स्थान की नक़ल मात्र है....**जो स्वर्ग में है**।"* (इब्रानियों 9:24)

परम पवित्र स्थान स्वर्ग का प्रतीक है, परमेश्वर का निवासस्थान। यह विशेष कमरा एक घनाकार आकार में था; उसकी लम्बाई, चौड़ाई और उंचाई समान होगी। पवित्रशास्त्र के द्वारा अपनी यात्रा के अंत के करीब हम स्वर्गीय नगरी को देखेंगे, जो एक दिन सभी विश्वासियों के घर होंगे, वह भी घनाकार आकार में है।

कॅथड्रल, चर्च इमारत, मस्जिद, सभागृह या पवित्र होने के नाते तीर्थ है इस तरह लोग कहते है, यद्यपि ये स्थान उन लोगों से भरे हैं जो परमेश्वर के उद्धार के मार्ग का अस्वीकार करते हैं। सच्ची पवित्रता यह एक विशेष इमारत में प्रवेश करने के द्वारा प्राप्त नहीं होती, लेकिन क्षमा और धार्मिकता का परमेश्वर का प्रबन्ध स्वीकारने के द्वारा प्राप्त होती है।

अंतर्पट

निवास-स्थान का बाह्य भाग यह साधारण था; जानवरों की चमड़ी से बनाया गया एक विशाल तंबू था। बाह्य रूप से वह अप्रभावी था, लेकिन भीतर असाधारण रूप से सुंदरता थी।[196]

निवास-स्थान के दो कमरे एक मोटे परदे द्वारा विभाजित किए गए थे उसे अंतर्पट कहते है।

> *"तू **नीले, बैंजनी और लोहित** रंग के वस्त्र से, **पतले सूत** से बुने हुए वस्त्र से एक **अंतर्पट** बनाना। उस पर कुशलता से करुबों के चित्र काढ़ना।"* (निर्गमन 26:31)

अंतर्पट मनुष्य को *परम पवित्र स्थान* से अलग करता है, जिसमे परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा और प्रकाश है। सभी के लिए, अंतर्पट घोषित करता है : **दूर रहो या मरो**!

यह खांस परदा परमेश्वर की धार्मिकता के स्तर का प्रतीक था। प्रभु ने मुसा को दस आज्ञाएं देकर उस मानक के बारे में मानवजाति को सूचित किया था। लेकिन उन दस नियमों ने केवल एक सीमित दृष्टिकोण प्रदान किया कि परमेश्वर वास्तव में क्या मांग करता है। परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ योजना उसके पुत्र को पृथ्वी पर भेजने की थी, जो यह प्रदर्शित करेगा कि उसके साथ हमेशा जीवन व्यतीत करने के लिए क्या आवश्यक है : *पूर्ण पवित्रता।*

मसीहा परमेश्वर का आदर्श होगा। परमेश्वर ने अंतर्पट की रचना की ताकि हम **उसके** विषय में विचार करे।

यह सुंदर परदा पतले बुने हुए सूत के वस्त्र से बनाया था, जो मसीहा की शुद्धता को चित्रित करता है। वह पवित्र, निष्पाप होगा।

सूती वस्त्र में बुने हुए तीन तेजस्वी रंग थे : नीला, बैंजनी और लोहित (लाल)।

नीला= स्वर्ग का रंग। मसीहा यह स्वर्ग से प्रभु होगा।

लाल = पृथ्वी, मनुष्य और लहू का रंग।[197] मसीहा देह और लहू का शरीर धारण करेगा ताकि पापियों के स्थान पर दुःख उठाए और मरे।

बैंजनी = नीला और लाल का मिश्रण। मसीहा परमेश्वर-मनुष्य होगा। बैंजनी यह राजस्व का रंग है। मसीहा उन सभी के हृदय में उसका आध्यात्मिक राज्य स्थापित करेगा जो उस पर भरोसा करते हैं। बाद में, वह पृथ्वी पर उसका भौतिक राज्य स्थापित करेगा।

जिस प्रकार बैंजनी, नीले और लाल के बीच का रंग है, वैसे ही मसीहा परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थता करने के लिए आएगा।

> *"**मानव एवं परमेश्वर के बीच मध्यस्थ भी एक** ही है, अर्थात मसीह यीशु, जो स्वयं मानव है। उन्होंने अपने आपको सबके विमोचन के लिए अर्पित कर दिया; इसकी साक्षी यथा समय दी गई।"* (1 तीमुथियुस 2:5-6)

महिमामयी मेघ

जब निवास-स्थान बनाना पूरा हुआ और सब कुछ परमेश्वर की योजना के अनुसार ठीक ज ग ह पर रखा गया, उसने स्वर्ग के सिंहासन से नीचे उसकी उपस्थिति की महिमा भेजी जो एक तेजस्वी मेघ में थी।

> *"तब मेघ ने मिलन-शिविर को ढक लिया और **प्रभु की महिमा निवास-स्थान में भर गई**। मूसा मिलन-शिविर में प्रवेश नहीं कर सके; क्योंकि उसपर मेघ का वास था, और प्रभु की महिमा निवास-स्थान में भर गई थी।"* (निर्गमन 40:34-35)

प्रभु ने वाचा के संदूक के दया-आसन के ऊपर दो करुबों के बीच में परम पवित्र स्थान में अपनी उपस्थिति की चकाचौंध करनेवाली ज्योति को रखा।

परमेश्वर एक दृश्य रूप में आया था कि उसके लोगों के साथ रहे।

*"प्रभु राज्य करता है; जातियां कापं उठें! वह करुबों पर **सवार है**; पृथ्वी डोल उठे!"*
(भजन संहिता 99:1)

उसकी महिमा को परम पवित्र स्थान में और उसके मेघ को निवास-स्थान के ऊपर रखने के द्वारा, सृष्टिकर्ता संसार के राष्ट्रों को, और जो पीढ़ी अब तक जन्मी नहीं हैं, उन्हें सबसे-महत्वपूर्ण सबक सिखा रहा था : एक सत्य परमेश्वर पापियों को आमंत्रित करता है कि उसके स्वयं के साथ संबंध रखे, लेकिन केवल निश्चित शर्तों के अधीन रहते हुए।

दृश्य स्पष्टीकरण

निवास-स्थान ने उनके लिए अनगिनत दृश्य सहायता प्रदान किए थे जो परमेश्वर और लोगों के लिए उसकी योजना के विषय में जानना चाहते थे।

दृश्य को चित्रित करो।

परमेश्वर के यथार्थ सूचना के अनुसार, गुलामी से मुक्ति प्राप्त किया हुआ राष्ट्र—इस्राएल के बारह वंशो—ने सीनय पर्वत के तले उनके तंबू क्रमिक रीति से क्रूस के आकार में बनाए थे। निवास-स्थान मध्य में था, तीन वंशों ने उनके तंबू दक्षिण दिशा में, तीन वंशों ने उत्तर दिशा में, तीन वंशों ने पश्चिम दिशा , और तीन वंशों ने पूरब दिशा में लगाए थे।[198] ऊपर प्रकाशमान महिमा के साथ मेघ मंडरा रहा था, कोई भी इसका इन्कार नहीं कर सकते कि एक सत्य परमेश्वर उनके मध्य में था।

अन्य दृश्य पाठ इस तथ्य से सीखे जा सकते है कि निवास-स्थान का तंबू केवल एक द्वार के साथ ऊँची श्वेत सूती दीवार द्वारा घेरे हुए था। द्वार के भीतर वेदी थी। पापियों को परमेश्वर की महिमा से दूर किया गया था जब तक वे प्रतीकात्मक पूर्ण बलिदान के बहाए हुए लहू के आधार पर उसके पास आते नहीं।

*"क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है। मैंने तुम्हे लहू इसलिए दिया है कि तुम उसको अपने प्राणों के प्रायश्चित्त के लिए वेदी पर चढाओ। **लहू में प्राण होने के कारण ही उससे प्रायश्चित्त होता है।**"* (लैव्यव्यवस्था 17:11)

मृत्यु के भुगतान के बगैर यहां पाप की क्षमा नहीं हो सकती। और क्योंकि प्रत्येक समय जब वे पाप करते है तब निवास-स्थान के पास बलिदान लाना लोगों के लिए असंभव था, परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि एक मेमने का वध करना और उसे सुबह और शाम, वर्ष के प्रत्येक दिन वेदी पर

जलाना। वे सब प्रभु में और उसकी योजना में विश्वास रखते हैं वे इस प्रतिदिन के चढ़ावे के लाभ का, उनके सृष्टिकर्ता के साथ पुनः स्थापित संबंध का आनंद प्राप्त कर सकते है।

> *"तू वेदी पर यह चढ़ाएगा : **प्रतिदिन** एक-एक वर्ष के दो मेमने **निरन्तर** चढ़ाना। तू पहला **मेमना** सबेरे, और दूसरा **मेमना** सन्ध्या समय चढ़ाना। .....यह **होमबलि** पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रभु के सम्मुख मिलन-शिविर के द्वार पर निरन्तर चढ़ाई जाएगी, जहां मैं तुझसे भेंट करूंगा, **जहां तुझसे वार्तालाप करूंगा।"*** (निर्गमन 29:38-39, 42)

प्रायश्चित्त-दिन

इस सत्य को आगे और स्पष्ट करने के लिए, परमेश्वर ने उसके लोगों से कहा यहां केवल एक प्रकार है जिसके द्वारा पापी लोग परम पवित्र स्थान (एक विशेष कमरा जो स्वयं स्वर्ग का प्रतीक है) में प्रवेश कर सकते हैं। एक वर्ष में एक बार, एक विशेष रूप से चुना हुआ मनुष्य, जिसे महायाजक कहते है, उसे भीतर के पवित्र स्थान में प्रवेश करने दिया जाएगा। प्रायश्चित्त-दिन[199] पर, महायाजक अंतर्पट के पीछे जाएगा। बलिदान किए हुए बकरे का लहू साथ में लेकर वह जाएगा और सात बार दया-आसन (वाचा के संदूक का ढक्कन) के सामने और उसके ऊपर दोनों जगह उसे छिड़क देगा। अगर महायाजक किसी और प्रकार से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करेगा, तो वह मर जाएगा। छिड़के हुए लहू के आधार पर, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि और एक वर्ष के लिए इस्राएली समाज के पापों को क्षमा करे, अगर वे सरलता से उसमे और उसके प्रबन्ध में विश्वास करते हैं।

निवास-स्थान का संपूर्ण विवरण, उसके लकड़ी की वस्तुएं और कार्य, इस प्रकार रचे गए थे कि संसार को एक ज्वलंत चित्र दिखाए कि किस तरह से दोषी पापियों के पाप ढांपे जाते हैं और उनके सिद्ध पवित्र सृष्टिकर्ता के साथ उनका टूटा हुआ संबंध पुनः स्थापित हो सकता हैं। ये सब आनेवाले मसीहा और उसकी सेवकाई की ओर इशारा करते हैं।

इस प्रकार, सदियों के दौरान, अपने चुने हुए राष्ट्र का माध्यम के रूप में उपयोग करते हुए, प्रभु ने सैकड़ों चित्रों को प्रसारित किया और पाप में खोए संसार के लिए कई अद्भुत प्रतिज्ञाओं को बताया।

मंदिर और उसके बलिदान

मूसा और इस्राएली समाज ने यह विशेष तंबू जो प्रभु की उपस्थिति का घर बनाने के पांचसो वर्षो बाद, परमेश्वर ने राजा सुलैमान को मार्गदर्शन किया कि इस अस्थायी निवास-स्थान को एक अधिक स्थायी मंदिर में बदले। यरूशलेम में इस नयी रचना की रूपरेखा यह उस निवास-स्थान

समान ही थी, भले ही वह अधिक विशाल और अधिक सुंदर भी था। सुलैमान का मंदिर यह प्राचीन संसार का एक वास्तुकला संबंधी चमत्कार था।

जैसे परमेश्वर की महिमा स्वर्ग से उतरी थी कि निवास-स्थान के अभिषेक के दिन पर उसके परम पवित्र स्थान को भर दे, वैसे ही परमेश्वर की उपस्थिति का महिमामयी, अनिर्मित प्रकाश ऊपर से आया था और मंदिर को भर दिया था।

> *"जब राजा सुलैमान ने अपनी प्रार्थना समाप्त की तब आकाश से आग गिरी और उसने होमबलि तथा पशु-बलि को भस्म कर दिया, और **प्रभु के तेज से मंदिर परिपूर्ण हो गया।** पुरोहित प्रभु के भवन में प्रवेश न कर सके; क्योंकि प्रभु के तेज से उसका भवन भरा हुआ था।"* (2 इतिहास 7:1-2)

मंदिर उसी पर्वत पर बनाया गया था जहां, हजार वर्ष पहले, अब्राहम ने उसके पुत्र[200] के स्थान पर एक मेंढा बलिदान किया था। यह विशेष मंदिर परमेश्वर को समर्पित करने के लिए, राजा सुलैमान ने 120,000 भेंडें और 22,000 बछड़ों का बलिदान करने की आज्ञा दी।[201] यह अपव्यय हजार वर्षों बाद निकट के पहाड़ी पर बहाए जानेवाले बहुमूल्य लहू के अनमोल मूल्य का प्रतीक था।

इस प्रकार, आदम, हाबिल, अब्राहम, मूसा, दाऊद, सुलैमान और उसके आगे के लोगों के समय से, लहू के प्रतीकात्मक लाखो बलिदान इन वेदियों पर चढ़ाएं गए कि साल-दर-साल तक पाप को ढांपे रहे.....।

फिर मसीहा आया।

पाठ 22

मेमना

"परमेश्वर प्रेम है।" (1 यूहन्ना 4:8)

"परमेश्वर महान है।" (अय्यूब 36:26)

परमेश्वर जो **प्रेम** है वह अपने लोगों के साथ एक घनिष्ठ संबंध की इच्छा करता है। परमेश्वर का सामाजिक संबंधपरक प्रकृति का विषय उनकी पुस्तक के पहिले अध्याय में प्रकट हुआ है।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को "अपने स्वरूप में" बनाया ताकि वह उनके साथ संगति का आनंद ले सके (उत्पत्ति 1:27)। यह वही "परमेश्वर हमारे साथ" विषय[202] बाइबल के आखरी अध्याय तक ले जाता है, जब उससे मुक्ति प्राप्त किए हुए लोग "उसका मुख देखेंगे" और उसके साथ हमेशा रहेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:4)। कोई भी जो यह देखने में चुक जाता है उसने परमेश्वर की पुस्तक का मुख्य विषय खो दिया है।

परमेश्वर जो **महान** है जो वह चाहता है वह कुछ भी कर सकता है।

"देख, मैं समस्त जानवरों का प्रभु परमेश्वर हूं। क्या मेरे लिए कोई काम कठिन है?" (यिर्मयाह 32:27)

कोई भी ईमानदार एकेश्वरवादी यह दावा कर सकता है कि परमेश्वर मनुष्य नहीं हो सकता अगर वैसा करना वह चाहता है। अगर यहां पर कुछ बात है जो सर्वशक्तिमान नहीं कर सकता (उसके स्वयं के विरोध में जाने के बगैर), तो फिर वह परमेश्वर से कम होगा।

प्रश्न यह नहीं है : परमेश्वर मनुष्य हो सकता है क्या?

प्रश्न यह है : परमेश्वर ने मनुष्य होने का चुनाव किया है क्या?

परमेश्वर का सच्चा निवास-स्थान

एक हजार पाच सौ वर्षों बाद परमेश्वर ने इस्राएली समाज को एक अनोखा निवास-स्थान-तंबू बनाने को कहा ताकि वह "उनके मध्य में निवास करे" (निर्गमन 25:8), पवित्रशास्त्र घोषित करता है :

> *"आदि में शब्द था; शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर था। .....शब्द देहधारी हुआ और **उसने हमारे मध्य निवास किया**। हमने उसकी **ऐसी महिमा** देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है।"* (यूहन्ना 1:1, 14)

"अपना निवास बनाया" अनुवादित वाक्यांश एक यूनानी शब्द से आया है जिसका अर्थ है कि एक तंबू या निवास-स्थान की रचना करे। इसे अक्षरशः ऐसे अनुवादित किया जा सकता है : उसने उसका तंबू हमारे मध्य में स्थित किया। पवित्रशास्त्र एक व्यक्ति के शरीर को तंबू या मंदिर के रूप में वर्णन करता है जिसमे उसका प्राण और आत्मा निवास करते है।[203] जैसे हमने पाठ 16 में सिखा है, परमेश्वर का सार्वकालिक पुत्र एक शिशु बालक के रूप में जन्मा था। उसका मानवी शरीर तंबू था जिसमे उसने निवास करने को चुना था।

मूसा के समय में, निवास-स्थान की रचना जिसमे परमेश्वर ने उसके उपस्थिति की महिमामयी, अनिर्मित प्रकाश को रखा था जिसे *जानवरों की त्वचा* से ढका हुआ था। लेकिन यीशु के रूप में, परमेश्वर का महिमामयी, अनिर्मित प्रकाश और उपस्थिति *मानवी त्वचा* में निवास करने आया है। इस प्रकार, उसके शिष्य कह सके, *"हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा!"*

पवित्रशास्त्र घोषित करता है कि यीशु *"**सच्चा निवास-स्थान**" था जो प्रभु ने खड़ा किया था, मनुष्यों ने नहीं।"* (इब्रानियों 8:2)

पुराने नियम के समय में, निवास-स्थान, और बाद में मंदिर, यह एक स्थान था जहां पापी लोग जानवरोंका बलिदान चढाते थे कि उनके पाप को ढांपे। जब यीशु एक लड़का था और जब वह वयस्क हुआ, तो उसने कई अवसरों पर यरूशलेम में मंदिर का दौरा किया, लेकिन हमने कभी भी उसके पाप के लिए बलिदान चढ़ाने के बारे में नहीं पढ़ा। क्यों नहीं? वह निष्पाप था। यीशु *"प्रकट हुआ कि **अपनी** बलि से पाप का उन्मूलन करे"* (इब्रानियों 9:26)। वह एक चढ़ावा हो जाएगा और रोमन क्रूस वेदी बन जाएगा।

यीशु प्रतीकों के पीछे की सत्यता था।

> *"**परमेश्वर देह** में प्रकट हुआ था।"* (1 तीमुथियुस 3:16)

एक अवसर पर, यीशु यरूशलेम में महान मंदिर के पास खड़े थे और मनुष्यों के एक समूह को कहा :

*"**इस मंदिर** को गिरा दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा। यहूदी धर्मगुरु बोले, 'इस मंदिर के निर्माण में छियालीस वर्ष लगे। क्या आप इसको गिराकर तीन दिन में खड़ा कर देंगे?' **लेकिन यीशु अपने देह-रूपी मंदिर के विषय में कह रहे थे।** जब वह मृतकों में से जीवित हो उठे तब यीशु के शिष्यों को स्मरण हुआ कि यीशु ने ऐसा कहा था। तब शिष्यों ने पवित्रशास्त्र के लेख पर, एवं उन शब्दों पर जो यीशु ने कहे थे, विश्वास किया।"* (यूहन्ना. 2:19-22)

यहूदी लोग समझ नहीं सके कि "मंदिर" जिसके विषय में यीशु ने कहा वह उसका शरीर था। उन्होंने सोचा की वह यरुशलम के अद्भुत मंदिर के विषय में कह रहा है। लेकिन उस मनुष्य-रचित मंदिर के पवित्र स्थान में अब परमेश्वर के प्रकाश और महिमा की उपस्थिति नहीं थी।

अब यह यीशु के शरीर रूपी "मंदिर" में थी।

पृथ्वी की अपनी सेवकाई के निकट, यीशु ने अपने तीन शिष्यों को परमेश्वर के प्रकाश और महिमा के चमकते हुए साक्षी होने की अनुमति दी।

*"यीशु ने पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ लिया और वह उन्हें एक ऊंचे पहाड़ पर एकान्त में ले गए। वहां उनके सामने यीशु का रूपान्तर हो गया। **उनका मुख सूर्य के सदृश दीप्तिवान हो उठा, और उनके वस्त्र प्रकाश के सदृश उज्जवल हो गए।** .... वह यह बोल ही रहा था कि **एक ज्योतिर्मय मेघ ने उनको ढक लिया** और मेघ में से वाणी हुई, **'यह मेरा पुत्र, मेरा प्रिय है। इससे मैं प्रसन्न हूं; इसकी बात सुनो।'"*** (मत्ती 17:1-5)

परमेश्वर का तेज, चकाचौंध, शुद्ध प्रकाश जो स्वर्ग में स्वर्गदूतों को उनके चेहरे को ढकने का कारण बनता है, वह यीशु में था।

प्रभु की वही महिमामयी उपस्थिति जो निवास-स्थान के परम पवित्र स्थान और मंदिर में निवास करती थी वही प्रभु यीशु में निवास करती थी।

तेजोमय मेघ जो कभी निवास-स्थान पर चमका था वह अब उस स्थान पर चमक रहा था जहां यीशु खड़ा था।

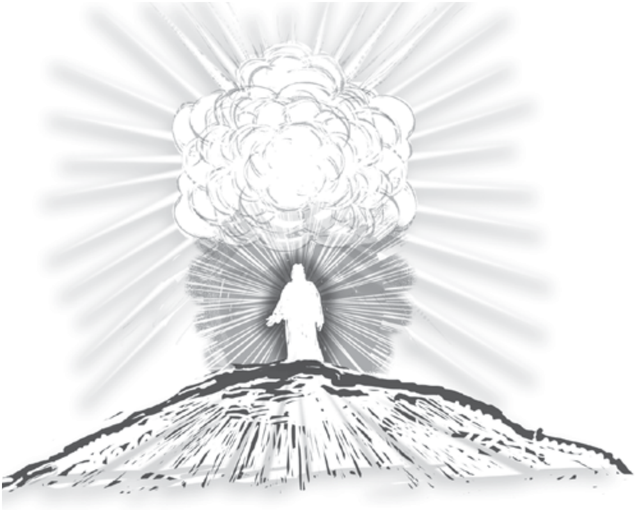

यीशु पृथ्वी पर परमेश्वर की दृश्य उपस्थिति था।
परमेश्वर के पुत्र की महिमा का यह तेजोमय प्रकाश पिता के साथ स्वर्ग से बोल रहा था :

*"यह **मेरा पुत्र, मेरा प्रिय है**। इससे मैं प्रसन्न हूं; **इसकी बात सुनो**।"*

परमेश्वर इस विषय में गंभीर है।

हजार वर्षों पहले जब परमेश्वर-पुत्र मनुष्य-पुत्र हुआ था, भविष्यद्वक्ता दाऊद ने लिखा था, *"......उसके **चरण चूमो**। ऐसा न हो कि प्रभु क्रुद्ध हो, और तुम मार्ग में ही नष्ट हो जाओ, क्योंकि उसका क्रोध तुरंत भड़कता है। धन्य हैं वे सब, जो प्रभु की शरण में आते हैं।"* (भजन संहिता 2:11-12)

"उसके चरण चूमो," इसका अर्थ ***पुत्र का आदर करो।***

समय समय से, मैं लोगों को धार्मिक अगुओं के सिर और हाथ को चुमते देखता हूं, मनुष्य जो उनके समान असहाय पापी हैं। मैं उन भक्तों को भक्तों की तीर्थ यात्रा करते हुए देखता हूं जिनकी देह मिट्टी में मिल गई है।

इसी दौरान, परमेश्वर ने संसार को घोषित किया *"कि **सब जैसे पिता का आदर करते हैं, पुत्र का भी आदर करें।** जो पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता का भी, जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। ....पिता पुत्र से प्रेम करता है .....।"* (यूहन्ना 5:23, 20)

अग्रदूत

यशायाह भविष्यद्वक्ताओं में से दूसरा भविष्यद्वक्ता था जिसने विशेष रूप से चुने हुए वंशज के विषय में लिखा जो *"प्रभु का मार्ग तैयार करेगा"* (यशायाह 40:3)। वह अग्रदूत भविष्यद्वक्ता यूहन्ना, जकरयाह का पुत्र था।[204] जब पहले के भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा दी थी, "परमेश्वर संसार में मसीहा को भेजेगा," पर भविष्यद्वक्ता यूहन्ना को घोषणा करने का विशेष सम्मान था, "प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा, प्रभु, यहां है!"

> *"उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा,* ***'मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'*** *यह वही है जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा की गई : 'जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है,* ***"प्रभु का मार्ग तैयार करो****, उसकी सड़कें सीधी करो।"* (मत्ती 3:1-3)

पछतावा

लोगों को प्रभु के आगमन के लिए तैयार करने के लिए, यूहन्ना का लोगों को संदेश यह साधारण था।

"मन फिराओ!"

मन फिराना यह शब्द मेटानोइओ इस यूनानी शब्द से आता है। इसमे दो भाग है: मेटा और नोइओ। पहला भाग का अर्थ हलचल या फरक। दूसरा भाग मन के विचारों का संदर्भित करता है। इसलिए मन फिराने का मूल अर्थ यह मन का बदलना है; कि आपके गलत विचारों को सही विचारों के साथ बदले।

'मन फिराओ' शब्द को प्रतिदिन के संदर्भ में रखने के लिए, मान लो मुझे एक शहर से दूसरे शहर बस से यात्रा करना है, शायद बैरुत से अम्मान तक। मैं उस बस में चढ़ जाता हूं यह विश्वास करके कि वह सही बस है और मेरे बैठने की जगह जाकर सोने लगता हूं। कुछ देर बाद, जब बस महामार्ग से तेजी से जा रही है, मैं जान लेता हूं कि यह अम्मान की ओर नहीं जा रही है, लेकिन इस्तानबुल के उत्तर दिशा में! मुझे क्या करना चाहिए?

मेरे पास दो चुनाव है :

अपनी ग़लती स्वीकार करने में बहुत गर्व होने कारण, मैं उसी बस में बैठा रह सकता हूं और अंत में गलत गंतव्य पर पहुँच सकता हूं।

अथवा, मैं अपने आपको दीन और पछतावा करके, अर्थात, हृदय-परिवर्तन कर सकता हूं यह स्वीकार करते हुए कि मैंने गलत बस को चुना। मेरे पछतावे की ईमानदारी स्पष्ट होती है जब मैं अगले स्टॉप पर उतर जाता हूं और सही बस में जाता हूं।

सच्चा पछतावा एक व्यक्ति को गलत बातों से मन फिराने और सत्य पर विश्वास करने की ओर ले जाता है।

पछतावे की तुलना सिक्के के एक पहलू से की जा सकती है।

एक पहलू कहता है : **पछतावा कर**!

दूसरा पहलू कहता है : **विश्वास कर**!

ये दो पहलू हमें दिखाते हैं परमेश्वर को क्या आवश्यक है:

*"....परमेश्वर की ओर **मन फिराएं** और हमारे प्रभु यीशु पर **विश्वास** करे।"* (प्रेरितों के काम 20:21)

पछतावे का अर्थ उद्धार के लिए जिस पर आप भरोसा कर रहे उसके विषय में हृदय-परिवर्तन करे। विश्वास का अर्थ उद्धार के परमेश्वर के प्रावधान में भरोसा करे।

पछतावे के बगैर यहां कोई सच्चा विश्वास नहीं है।

भविष्यद्वक्ता यूहन्ना का संदेश कुछ इस प्रकार था उसके अनुसार : "आपके गलत विचारों से पछतावा करें! यह मान लो कि आप अपने आपको नहीं बचा सकते, और स्वर्ग से प्रतिज्ञा किए गए मसीहा-राजा का स्वागत करे! वह आया है कि आपको शैतान, पाप और मृत्यु से छुडाए—अगर आप अपने आप में भरोसा करना छोड़ दे और उस पर भरोसा करना शुरू कर दें!"

वे जिन्होंने परमेश्वर के सम्मुख उनकी पापमय दशा को स्वीकारा हैं उन्हें यूहन्ना द्वारा नदी में बपतिस्मा दिया गया। इसलिए यूहन्ना यह 'यूहन्ना बपतिस्मादाता' कहलाया। जल से बपतिस्मा लेना न तो पाप को धो सकता है और न ही धो सकता है। जल में डूबना यह लोगों को बाह्य रूप से व्यक्त करने का एक तरीका था कि उन्होंने मसीहा के विषय में परमेश्वर का संदेश भीतरी रूप से आत्मसात किया है जो आ रहा है कि पछतावा किए हुए, विश्वासी पापियों को उनके दूषित अवस्था से शुद्ध करे।

चुना हुआ

अपनी पृथ्वी की सेवकाई के आरंभ में, यीशु यूहन्ना के पास आया की यरदन नदी में बपतिस्मा ले। निष्पाप मसीहा को किसी भी बात से पछतावा करने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन

बपतिस्मा लेने के द्वारा उसने पतित मानवजाति के साथ अपने आपकी पहचान करायी जिन्हें छुड़ाने को वह आया था।

यीशु के बपतिस्मा के बाद जो हुआ वह कभी न भुलने वाला दृश्य है। एक सत्य परमेश्वर का उसके जटिल एकता और ऐश्वर्य की और एक झलक यह देता है।

> *"**यीशु** बपतिस्मा लेकर तुरंत पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने **परमेश्वर के आत्मा** को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो **यह आकाशवाणी हुई :** 'यह मेरा पुत्र, मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। '"* (मत्ती 3:16-17)

सृष्टि के पहले दिन की तरह, यह कथन पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा की उपस्थिति को प्रकट करती है। हालांकि, इतिहास में इस महत्वपूर्ण क्षण में, परमेश्वर अपनी बहुवचन एकता को और अधिक स्पष्टता के साथ प्रकट कर रहा था। पवित्रशास्त्र से हमारी यात्रा में, यह एक विशेष स्थान है जहां प्रत्येक यात्रियों को रुकना, कुछ तस्वीरे लेना और उस पर चिंतन करना है।

यहां दृश्य है। नाट्यमय और प्रज्वलित आकाश के नीचे, **परमेश्वर-पुत्र** (शब्द जिसके द्वारा स्वर्ग और आकाश की रचना की गई) जल से बाहर आता है। उसी क्षण, **परमेश्वर का आत्मा** (आत्मा जो सृष्टि निर्माण के पहले दिन जल की सतह पर मंडरा रहा था) स्वर्ग से उतरता है, यीशु के ऊपर कबूतर के समान आता और स्थिर होता है। और अंत में, **पिता परमेश्वर** का आवाज स्वर्ग से उच्च स्वर में सुनाई देता है: *"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।"*

पिछले तीस वर्षों से, यीशु ने नासरत के सामान्य नगर में एक गरीब परिवार में अज्ञात जीवन व्यतीत किया था। भले ही वह लोगों की नज़रों से अज्ञात था, तब भी उन सभी वर्षो में स्वर्ग में स्थित पिता की आंखे उसके प्रिय पुत्र पर थी। और अब हम यीशु के जीवन पर परमेश्वर का आदेश सुनते है: "**जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं**।"

परमेश्वर कभी भी जन्मे हुए किसी अन्य मनुष्य के बारे में ऐसा नहीं कह सकता। केवल यीशु ने प्रत्येक बात में उसे प्रसन्न किया था-भीतरी और बाहरी रूप से। स्वर्ग से पुत्र होकर, वह जो पवित्र, निष्कलंक, और योग्य था कि जो करने वह आया था वह करे। वह मसीहा, *अभिषिक्त जन*, परमेश्वर का चुना हुआ एक जन था। परमेश्वर ने उसे तेल से नहीं (जैसे पुरोहित और राजाओं के लिए किया जाता था[205]), लेकिन स्वयं पवित्र आत्मा से अभिषेक किया था।

*"नासरत-निवासी **यीशु को परमेश्वर ने पवित्र आत्मा एवं सामर्थ्य से अभिषिक्त किया......** ।"* (प्रेरितों के काम 10:38)

यीशु ही वह था जिसके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था।

परमेश्वर का मेमना

"दुसर दिन यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु को अपनी ओर आते देखा तो कहा, ***'देखो, परमेश्वर का मेमना जो संसार के पाप का भार उठाकर ले जाता है।"*** (यूहन्ना 1:29)

भविष्यद्वक्ता यूहन्ना की घोषणा यह अर्थ से भरी थी।

- *"देखो,* ***परमेश्वर का मेमना****...."*
  यूहन्ना के श्रोतागण कुछ हद तक *मेमने* का अर्थ समझ गए थे। जबसे पाप का प्रवेश हुआ था, लोग मेमनों को पाप-बलि के रूप में ला रहे थे। पंद्रह लंबी शताब्दियों तक, मेमनों को पीतल की वेदी पर सुबह और शाम बलिदान किया जाता था। और अब *परमेश्वर का अपना मेमना* यह दृश्य में था!
  दो हजार वर्षों पहले, अब्राहम ने अपने पुत्र को कहा था, *"परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए* ***मेमने*** *का प्रबंध करेगा।"* (उत्पत्ति 22:8)
  परमेश्वर ने अवश्य वास्तव में अब्राहम के पुत्र के स्थान पर एक विकल्प प्रदान किया था, लेकिन वह *"मेमना"* नहीं था। वह एक "मेंढा" था (उत्पत्ति 22:13)। अब्राहम की भविष्यवाणी में जो "मेमना" था वह स्वयं मसीहा था। अब्राहम यीशु मसीह की ओर इशारा कर रहे थे। इसलिए यीशु ने कहा, *"तुम्हारे पूर्वज अब्राहम मेरे दिन का दर्शन करने के लिए उल्लसित हुए।"* (यूहन्ना 8:56)

- *".... जो पाप का* ***भार उठाकर ले जाता****...."*
  आदम के समय से, निर्दोष जानवरों का लहू प्रतीकात्मक रूप से उनके पाप को ढकता था जो परमेश्वर और उसकी योजना में भरोसा करते थे, लेकिन यीशु जो करने आया था वह भिन्न था। वह हमेशा के लिए पाप के दंड हटा लेगा।

- *"....**संसार के**!"*
  भूतकाल में, पाप के लिए लहू बलिदान यह एक व्यक्ति, एक परिवार अथवा एक राष्ट्र की खातिर चढ़ाया जाता था। लेकिन यीशु का लहू संसार के पाप के ऋण के भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल के लिए पूर्ण और अंतिम भुगतान होगा।

परमेश्वर के मेमने का संसार के पाप को उठाकर ले जाने का अर्थ यह है क्या कि प्रत्येक व्यक्ति जो जन्म लेता है वह परमेश्वर द्वारा अपने आप ही क्षमा कर दिया जाता है? नहीं। मानवजाति में जिस दिन से पाप ने प्रवेश किया है परमेश्वर को हमेशा ही उसमे और उसके प्रबंध में वैयक्तिक विश्वास की आवश्यकता है।[206]

*"वह अपने निज लोगों के पास आया और उसके अपनों ने ही उसको स्वीकार नहीं किया। किंतु **जितनों ने उसको स्वीकार किया** और उसके नाम पर **विश्वास किया**, उनको परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया।"*
(यूहन्ना 1:11-12)

छाया और प्रतीक

बीते हुए वर्षों में, पाप के लिए प्रत्येक निर्दोष, निष्कलंक मेमना जो बलिदान किया गया वह *"व्यवस्था में भावी कल्याण की **छाया** मात्र थे ..... ।"* (इब्रानियों 10:1)

छाया को उस वस्तु के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए जो छाया डालती है। यदि आप जमीन पर देख रहे हैं जब कोई मित्र आपकी दिशा में चल रहा है, तो आप उसे देखने से पहले उसकी परछाई देख सकते हैं, लेकिन जब वह आपके सम्मुख खड़ा हो जाता है, तो उसकी परछाई देखने के बजाय क्या आप आपके मित्र के पास नहीं देखेंगे और उससे नहीं कहेंगे?

पुराने नियम के बलिदान परमेश्वर-रचित छाया थे जो आने वाले मसीहा की रूपरेखा और घोषणा करते थे। परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि उसे देखे और सुने।

*"क्योंकि बैलों और बकरों के लहू से पाप-निवारण **सम्भव नहीं**। इसी कारण मसीह ने संसार में प्रवेश करते हुए कहा, '**तूने** बलि और भेंट की इच्छा नहीं की, **वरन तूने मेरे लिए एक शरीर प्रस्तुत किया**। तू होम-बलि तथा पाप-बलि से प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैंने कहा कि "देख, हे परमेश्वर, **मैं आता हूं** कि तेरी इच्छा पूर्ण करू, जैसा कि पवित्रशास्त्र में मेरे संबंध में लिखा हुआ है"। '....इस प्रकार वह पहले को रद्द करते है कि दूसरे की स्थापना करे। इसी इच्छा द्वारा एवं प्रभु यीशु मसीह की देह के अर्पण द्वारा, जो **सदा के लिए एक ही बार** सम्पन्न हुआ, हम पवित्र किए गए हैं।"* (इब्रानियों 10:4-7, 9-10)

जानवरों के लहू के बलिदान केवल इस बात के *प्रतिक* थे कि परमेश्वर को अंततः क्या

चाहिए। पशुओं को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया नहीं गया हैं। मेमने का मूल्य यह मनुष्य के मूल्य समान नहीं है। जिस तरह से आप खेलने की कार को कार विक्रेता के पास ले जाते और उसे एक सच्चे कार के लिए भुगतान के रूप में नहीं दे सकते, उसी तरह से मेमने का लहू मनुष्य के पाप का ऋण नहीं भर सकता। समान या बड़े मूल्य के बलिदान की आवश्यकता होगी।

परमेश्वर का मेमना यीशु उस बलिदान को प्रदान करने के लिए आया था।

एक ख़राब योजनाकार?

कुछ वर्षों पहले, मैंने तत्वज्ञान की उच्च पदवी प्राप्त किए एक व्यक्ति से बातचीत की। यीशु *"संसार के पाप को उठाकर ले जाने"* आया इस घोषणा के उत्तर में, उसने लिखा :

> भेजो　**विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> परमेश्वर ने 2000 वर्षों पहले इस पहेली को रचने का निर्णय करने से पहले जन्मे और मर गए लोगों का क्या हुआ? ऐसा लगता है कि मसीही परमेश्वर यह ख़राब योजनाकार है और देर से सोचनेवाला है क्योंकि उसे मानवजाति के पापों को क्षमा करने का एक तरीका खोजने में हजारों नहीं तो लाखो वर्ष लग गए।

ऐसा लगता है कि यह मनुष्य, जिसकी मृत्यु हो गई थी, लाखो बलि चढ़ाएं हुएं मेमने और सैकड़ों भविष्यवाणियां जो उस दिन की ओर इशारा करती है उनके पीछे के अर्थ को समझने में असफल हो गया था जब मसीहा मानवजाति के—भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल के पापों के लिए भुगतान को भुगतेगा। आरंभ से, परमेश्वर के छुटकारे की योजना में भुगतान सम्मिलित "......उसने **अतीत** में अपनी सहनशीलता के कारण हमारे पूर्वजों के पापों पर ध्यान नहीं दिया था। वर्तमान युग में परमेश्वर ने अपना धर्म प्रमाणित कर यह प्रकट किया.....।" (रोमियों 3:25-26)

परमेश्वर ने ख्रिस्त के समय से पहले पापियों को उसी आधार पर क्षमा किया जिस पर वह आज पापियों को क्षमा करता हैं—परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं और प्रावधान में विश्वास के द्वारा।

निस्संदेह, फर्क था।

विश्वासी जिन्होंने यीशु मसीह के समय से पहले जीवन व्यतीत किया था क्या उनके पापों को ढांप दिया गया था। जब यीशु ने अपना लहू बहाया था और मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, उसके बाद ही एक पापी का कर्ज अभिलेख पुस्तकों से हमेशा के लिए रद्द किया जा सकता था।

परमेश्वर का मेमना यीशु पृथ्वी पर आने से पहले, मनुष्य वेदी पर पशु बलिदान चढ़ाता था वह कुछ इस समान था की एक संघर्ष करनेवाला व्यवसायिक मनुष्य जो *बँक* से कर्ज लेता है।

एक धनी मित्र कर्ज के लिए साथी हस्ताक्षर करने के लिए सहमत होता है, प्रतिज्ञा करता है कि कर्ज भर दिया जाएगा अगर व्यवसायिक उधार लिए हुए पैसे भरने में विफल हो जाता है। प्रत्येक जाते हुए वर्ष के साथ, व्यवसायिक कर्ज भरने में विफल होता रहता है, कर्ज में डूबता और डूबता ही जाता है। और प्रत्येक वर्ष उसका अमीर मित्र *बँक* में और एक चिट्ठी पर हस्ताक्षर करता है कि संघर्ष करनेवाले व्यक्ति के कर्ज को पूरा कर सके। असफल हुए व्यवसायिक को पूरा दिवालिया होने और कारागार में जाने से कौन सम्भाले हुए है? उसके धनी, विश्वसनीय मित्र की शास्वती की चिट्ठी के द्वारा उसके कर्ज को पूरा कर दिया गया है।

पुराने नियम के पशु बलिदान पापियों की "गारंटी की चिट्ठी बने", जिसे परमेश्वर द्वारा अस्थायी रूप से स्वीकार लिया था। विश्व का अभिलेख करनेवाले के पास, उसके करार का आदर करना और उसकी पुस्तकों का संतुलन करने का दोषरहित इतिहास है, उसने प्रतिज्ञा दी है कि पाप के लिए निष्कलंक-मुक्त पशु के लहू को आवरण के रूप में स्वीकार करेगा। लेकिन पशु लहू मनुष्यों के संचित पाप के कर्ज को रद्द नहीं कर सका। यह केवल "प्रति वर्ष **पापों के स्मरण दिलानेवाले"** के रूप में कार्य करता था। *"क्योंकि बैलों और बकरों के लहू से पाप-निवारण सम्भव नहीं।"* (इब्रानियों 10:4)

इस पुस्तक में लोग और भविष्यद्वक्ताओं की कालानुक्रमिक सूचि जिसका संदर्भ दिया गया है। बाइबल स्वयं सैकड़ों अन्य नाम और कहानियां दर्ज करती है।

आदम और हव्वा	समय आरंभ होता है
कैन और हाबिल	
शेत	
1	
नूह (जल-प्रलय)	ईसा पूर्व 2500
बेबीलोन के लोग	
1	
अय्यूब	
अब्राहम	ईसा पूर्व 2000
इश्माएल	
इसहाक	
याकूब	
यहूदा	
यूसुफ	
1	
मूसा (निवास-स्थान)	ईसा पूर्व 1500
…	
दाऊद	ईसा पूर्व 1000
सुलैमान (मंदिर)	
…	
एलियाह	
एलिशा	
…	
योना	
आमोस	
होशे	
यशायाह	ईसा पूर्व 700
मीका	
यिर्मयाह	
हबक्कूक	
दानिय्येल	
यहेजकेल	
जकर्याह	ईसा पूर्व 500
मलाकी	
1	
जकरयाह और इलीशिबा	
मरियम और यूसुफ	
यूहन्ना बपतिस्मादाता	
यीशु मसीहा	ईस्वी आरंभ

पाप गंभीर समस्या है जो परमेश्वर के अनंतकालीन पुत्र के केवल लहू बहाने के द्वारा ही छुड़ाई जा सकती है। यीशु, परमेश्वर का मेमना, आया कि मानवजाति के पाप के कर्ज का भुगतान करे।

आप क्या सोचते हैं?

परमेश्वर "एक गरीब योजनाकार और देर से सोचनेवाला" है क्या? अथवा भविष्यद्वक्ता यूहन्ना और उसके अनुयायियों के पास नासरत के यीशु को *"**मसीहा**..... जिसके विषय में मूसा ने व्यवस्था में, और भविष्यद्वक्ताओं ने भी लिखा है," और "**परमेश्वर का मेमना** होकर वह संसार के पाप उठाकर ले जाता है ऐसे पहचानने में अच्छे कारण है क्या"?* (यूहन्ना 1)

हमारा सृष्टिकर्ता, उत्तम योजना करनेवाला है, इससे पहले कभी भी पाप के कर्ज का भुगतान करने के लिए कोई योजना नहीं थी। उसके अनंत दृष्टिकोण से, उसका प्रिय पुत्र था, है और सदा सर्वदा रहेगा:

*".....जिनके नाम सृष्टि के आरंभ से उस **मेमने** की जीवन-पुस्तक में नहीं लिखे है, जो बलि हुआ था।"*

(प्रकाशितवाक्य 13:8)

पाठ 23

पवित्रशास्त्र की पूर्ति

*"एक **प्रतिज्ञा** एक मेघ है; **पूर्ति** बारिश है।"* — अरब मुहावरा

पृथ्वी पर उद्धारकर्ता भेजने के विषय में हजारों वर्ष भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बारे में कहा है, *"लेकिन जब समय पूरा हुआ तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। वह एक नारी से उत्पन्न हुआ...... ।"* (गलातियों 4:4)

परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने *प्रतिज्ञाओं के मेघों* को प्रदान किया था।

नासरत का यीशु पूर्ति करने की परमेश्वर की बारिश था।

सृष्टिकर्ता की योजना यह कोई बाद में किया विचार नहीं था। यह *"**जिसकी प्रतिज्ञा उसने पहले से ही अपने भविष्यद्वक्ताओं द्वारा** पवित्र पवित्रशास्त्र में अपने पुत्र एवं हमारे प्रभु यीशु मसीह के संबंध में की थी। ....."* (रोमियों 1:2-3)

पवित्रशास्त्र मेघ हैं; मसीहा बारिश है।

यरूशलेम में गदहे पर प्रवेश

प्रभु यीशु को उसकी सेवकाई पता थी। पाचसौ वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने उस घटना के विषय में लिखा था जो मसीहा के बलिदान की मृत्यु से पहले होगी।

> *"हे सिय्योन बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम, **जय-जयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा, वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है। वह दिन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।**"* (जकर्याह 9:9)

यीशु ने यह भविष्यवाणी पूरी की। चारों ही सुसमाचार पुस्तकें इस घटना का विवरण देतीं हैं।

मत्ती, अपनी आंखो से देखनेवाला, और यीशु का शिष्य, उसने लिखा :

> *"जब वे यरुशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कह कर भेजा, 'सामने के गांव में जाओ। वहां पहुंचते ही* ***एक गदही बंधी हुई और उसके साथ बच्चा तुम्हे मिलेगा।*** *उन्हें खोलकर मेरे पास ले लाओ। यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहना कि, "प्रभु को इनका प्रयोजन है" तब वह तुरंत उन्हें भेज देगा।' यह इसलिए हुआ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह* ***पूरा हो****: 'सियोन की बेटी से कहो,* ***देख, तेरा राजा तेरे पास आता है, वह नम्र है और गदहे पर बैठा है, वरन लादू के बच्चे पर।'"*** (मत्ती 21:1-5)

इस प्रकार, यीशु ने अपने आपको राष्ट्र के लिए उनके राजा के रूप में प्रदान किया, लेकिन केवल अस्वीकार करने के लिए- जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से ही कह दिया था।[207]

सुसमाचार विस्तृत विवरण करता है, क्या हुआ जब यीशु ने गदहे पर यरूशलेम में प्रवेश किया। वह मंदिर गया और उसने उन सभी को जो पैसा कमाने के लिए दुरुपयोग कर रहे थे निकाल दिया। फिर यीशु ने उन घबराए हुए विक्रेताओं से कहा, *"पवित्रशास्त्र का लेख है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा' पर तुमने उसे 'डाकुओं का अड्डा' बना दिया है। मंदिर में यीशु के पास अन्धे और लंगड़े आए और यीशु ने उनको स्वस्थ कर दिया।"* (मत्ती 21:13-14)

अगले कुछ दिनों में, यीशु मंदिर में बैठा और लोगों को परमेश्वर की सत्य बातें सिखायी। धार्मिक गुरुओं ने उसे कुछ ऐसा कहने के लिए बहकाने की कोशिश की जिससे वे उस पर दोष लगा सके और उसे मृत्यु दंड की सजा दे सके, लेकिन वे असफल हुए। यीशु ने उनके प्रश्नों को स्वर्गीय ज्ञान से समझाया, तब प्रत्येक जन अचंभित हो गए।[208]

तब यह समय था।

समय आ गया है

यीशु ही केवल एकमात्र व्यक्ति है जिसे निश्चित रूप से पता है :

वह कब मरेगा,
वह कहा मरेगा,
वह कैसे मरेगा,
और वह क्यों मरेगा।

*"यीशु ये सब कथन समाप्त कर अपने शिष्यों से बोले, '**तुम जानते हो कि दो दिन के पश्चात् फसह का पर्व है। तब मानव-पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पकड़वाया जाएगा।**' अब काइफा नामक महापुरोहित के आंगन में अन्य महापुरोहित और समाज के धर्मवृद्ध एकत्र हुए। वे परस्पर परामर्श करने लगे कि किस प्रकार यीशु को छल से पकड़कर मार डाले; लेकिन वे कहते थे, 'फसह पर्व के दिनों में **नहीं**। अन्यथा जनता उपद्रव कर देगी।'"* (मत्ती 26:1-5)

स्वार्थी धार्मिक गुरु हताश थे। कई अवसरों पर वे *"यीशु को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे, लेकिन किसी ने उन्हें हाथ नहीं लगाया, क्योंकि **उनका समय अभी नहीं आया था**।"* (यूहन्ना 7:30)

फिर उन्हें वह समय मिला जो वे चाहते थे।

यहूदा, यीशु का बाह्य रूप से शिष्य था लेकिन भीतरी रूप से नहीं, वह मंदिर याजकों के पास गया और यीशु को पकड़वाने की पेशकश की। याजक यहूदा को तीस चांदी के सिक्के देने में सहमत हो गए। विश्वासघात के इस कृत्य ने पुराने नियम की बहुत सारी और भविष्यवाणियां पूरी की।[209]

यीशु ने उसके शिष्यों से कहा, *"**समय आ पहुंचा है**।"* (यूहन्ना 12:23)

यह परमेश्वर के मेमने के मरने का समय था।

फसह पर्व का सप्ताह

यरूशलेम के सकरे मार्ग ये स्थानिक और परदेसियों से भर गए थे जो बलिदान के वार्षिक भोज के लिए आए थें। मेमनों के मिमियाने और बैलों का आर्तनाद हवा में गूंज रहा था। खरीदार एक उचित मेमने की किमत को लेकर व्यापारियों से मोल-भाव करते थें।

यह फसह पर्व का सप्ताह था।

फसह पर्व सप्ताह-भर लम्बे उत्सव का हिस्सा था जो परमेश्वर द्वारा पंद्रह शताब्दियों पहले स्थापित किया गया था। उसके लोगों को यह अवसर था कि *भूतकाल में देखे* और स्मरण करे कि प्रभु ने "संचार के राष्ट्र" को दासत्व और मृत्यु से उस विनाशक रात में छुडाया था जब उनके पूर्वजों ने उनके घरों के द्वार पर मेमने का लहू लगाया था। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, यह वह अवसर भी था कि उस दिन की ओर देखे जब मसीहा फसह के गहन अर्थ को पूरा करेगा।

हालांकि, थोड़े, अगर कोई, समझ गए हो कि नासरत का यीशु फसह पर्व का एक अंतिम मेमना होकर उसका लहू अभी बहानेही वाला था और मेमने के प्रतीक को पूरा करनेवाला था जिसे मूसा

के समय से लगातार कई वर्षों से बलिदान किया जाता रहा था। मूसा की सेवकाई कि लोगों को मानवी दारोग़ा के शारीरिक अत्याचार से छुडाने की तुलना में मसीहा की सेवकाई यह लोगों को शैतान, पाप और मृत्यु के आध्यात्मिक अत्याचार से छुड़ाना था।

धार्मिक अगुवें यीशु को मार डालने की योजना कर रहे थे, लेकिन *"'फसह पर्व के दिनों में* ***नहीं।*** *अन्यथा जनता उपद्रव कर देगी '"* (मत्ती 26:5)। फिर भी यह उसी पर्व के दौरान की यीशु ने मरने की योजना की थी! परमेश्वर का मेमना यह फसह पर्व के उत्सव के दौरान बलि किया जाएगा।[210] सब कुछ वैसा ही हुआ जैसे परमेश्वर ने योजना की थी।

प्रतिकूल तरीके से, वे ही लोग जिन्होंने परमेश्वर की योजना का अस्वीकार किया था वे ही उसे पूर्ण करने में मुख्य भूमिका निभानेवाले थे। शैतान को जरा भी एहसास नहीं था कि यीशु को मार डालने के लिए धार्मिक अगुओं को भड़काने के द्वारा, वह उसके स्वयं के विनाश का आयोजन कर रहा था! पवित्रशास्त्र इसे घटनाओं की उलटफेर करने के रूप में कहता है: "…. ***परमेश्वर के उस रहस्यमय ज्ञान का वर्णन करते है जो गुप्त है,*** *…..इस ज्ञान को संसार के शासकों ने नहीं जाना अन्यथा वे महिमामय प्रभु को क्रूस पर नहीं चढाते।"* (1 कुरिंथियों 2:7-8)

रोटी और कटोरा

नियुक्त संध्या पर, यीशु और उसके शिष्य फसह के लिए उपरवाले एक निजी कमरे में इकट्ठे हुए थे। मेमने का और कड़वे सब्जियों का भोजन करने के बाद, प्रभु ने कुछ रोटी ली, धन्यवाद दिया, उसे तोडा, और उन्हें दिया और उन्हें उसे खाने को कहा, यह कहते हुए, *"मेरी स्मरण में यह किया करो।"* (लूका 22:19)

टूटी हुई रोटी उसके शरीर को कुचले जाने और उनके लिए दंडित किए जाने की प्रतिक थी। इसके बाद, उसने कटोरा लिया जिसमे कुचले हुए अंगूरों का रस था वह उन्हें दिया। *"यह वाचा का मेरा लहू है जो सब मनुष्यों की पाप-क्षमा के लिए बहाया जा रहा है।"* (मत्ती 26:28)

कटोरे ने लहू को प्रतिनिधित किया जो यीशु अब बहाने वाला था कि प्रतिज्ञा की नयी वाचा शुभारंभ करे।

ये दो साधारण प्रतीक परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं के मुख्य संदेश की ओर इशारा करते हैं : कि हमारा सृष्टिकर्ता देहधारण करेगा ताकि आदम के पापमय वंशजो के लिए दु:ख उठाए और उसका लहू बहाए।

बहुत से अतुलनीय अद्भुत प्रतिज्ञाओं और सत्य[211] के साथ अपने शिष्यों को सांत्वना देने के बाद, यीशु उन्हें एक निकट के उद्यान में ले गया जिसे गतसमनी कहते है। स्वयं जमीन पर औंधे मुंह होकर, अधिक पसीना और आत्मा की तीव्र वेदना में, उन्होंने प्रार्थना की, *"मेरे पिता, यदि सम्भव हो तो यह दुःख का प्याला मेरे पास से हट जाए। तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, वरन जैसा तू चाहता है वैसा हो।"* (मत्ती 26:39)

"यह कटोरा" क्या था जिससे यीशु इतना डरता था? यह पाप के लिए पीड़ा का कटोरा था, उसके पिता से अभूतपूर्व अलग होना था जो वह अब अनुभव करने वाला था, और नरक की गहन दहशत जो वह आपके और मेरे लिए भुगतने वाला था।

इस प्रार्थना को तीन बार बोलने के बाद, पुत्र ने स्वेच्छा से अपने पिता की इच्छा को सौप दिया। जैसे दाऊद भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी, मसीहा पुनः स्थापित करेगा जो उसने नहीं लिया था। *"...जो मैंने छिना नहीं, क्या उसे लौटाना होगा?"* (भजन संहिता 69:4)

यीशु पाप के लिए पूर्ण और अंतिम बलिदान हुआ।

गिरफ्तारी

जब यीशु ने उसके पिता से बातें करना समाप्त ही किया था, तब उद्यान में महायाजकों, शास्त्रियों और धर्मवृद्धों द्वारा भेजे गए सैनिकों की टुकड़ी पहुंची। मशालों, दीपकों और अस्त्र-शस्त्रों के साथ वे आए थे कि एकमात्र को गिरफ्तार करे जिसने तूफान को शांत किया था, दुष्टात्माओं को निकाला था और मृत व्यक्तियों को जीवन दिया था।

> *"**यीशु जानते थे कि उनके साथ कौनसी घटना घटने वाली है।** अत: वह आगे बढे और पूछा, 'तुम किसको ढूंढ रहे हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नासरत निवासी यीशु को।' यीशु ने उनसे कहा, 'वह मैं हूं।'......। ज्योंही यीशु ने कहा, **'मैं वह हूं,'** वे लोग पीछे हटे और भूमि पर गिर पड़े। यीशु ने फिर पूछा, 'तुम किसको ढूंढ रहे हो?' वे बोले, 'नासरत निवासी यीशु को।' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चूका कि वह **मैं ही हूं** : इसलिए यदि तुम मुझे ढूंढते हो तो इन्हें जाने दो।'"* (यूहन्ना 18:4-8)

वे जो उसे गिरफ्तार करने आए थे, यीशु ने परमेश्वर के स्वयं का नाम, *"मैं हूं"*[212] से अपने आपका परिचय उन्हें दिया था। स्पष्ट रूप से, अगर यीशु को उनके साथ जाना था, यह इसलिए क्योंकि ऐसा करने का उसने निर्णय लिया था।

जब सैनिक निकट आए, शिष्य पतरस ने उसकी तलवार निकाली, लेकिन केवल महायाजक के सेवक का कान ही काट सका। यीशु ने अनुग्रह करके उस मनुष्य का कान चंगा किया और

फिर पतरस से कहा,

> *"अपन तलवार म्यान में रखो; क्योंकि जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही मारे जाएंगे। क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से निवेदन नहीं कर सकता? क्या वह इसी क्षण मुझे स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक नहीं भेज देगा? **लेकिन तब पवित्रशास्त्र का लेख कैसे पूरा होगा जिसके अनुसार ऐसा होना अनिवार्य है?"*** (मत्ती 26:52-54)

धर्म के नाम पर हिंसा का उपयोग करने वाले सभी लोगों के लिए यीशु क्या ही विषमता प्रदान करता है! यद्यपि यीशु जानता था कि इन मनुष्यों का अभिप्रेत निंदा करना, छलावा करना और उसे मार डालना था, तब भी उसने उन्हें तिरस्कार और बदले के बजाय सहनशीलता और करुणा दिखाई।

भविष्यद्वक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी की थी

फिर, वे जो उसे गिरफ्तार करने आए थे, यीशु ने कहा, *"क्या तुम तलवारे और लाठियां लेकर मुझे पकड़ने आए हो, मानो मैं कोई डाकू हूं? मैंने प्रतिदिन मंदिर में बैठकर तुम्हे उपदेश दिए पर तुमने मुझे नहीं पकड़ा।"*

तब पवित्रशास्त्र इस कथन में जोड़ता है :

> *"'यह सब इसलिए हुआ कि **भविष्यद्वक्ताओं का लेख पूरा हो।'***
>
> *तब सब शिष्य यीशु को छोड़कर भाग गए।*
>
> *यीशु को पकड़ने वाले उनको महायाजक कैफा के पास **ले गए,** जहां शास्त्री और समाज के धर्मवृद्ध एकत्र थे।"* (मत्ती 26:55-57)

एकमात्र जिसे हवा और लहरों पर सामर्थ्य था उसने अपने आपको गिरफ्तार करने, बांधने और ले जाने दिया?

उसने उसके पिता के प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता के लिए यह किया।
उसने अनंतकाल के न्याय से आपको और मुझे बचाने के लिए यह किया।
उसने ऐसा इसलिए किया "कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पुरे हों।"

सैकड़ों वर्षों पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा, *"जैसा **मेमना वध के लिए ले जाते** समय चुप रहता है।"* (यशायाह 53:7)

अब्राहम भविष्यद्वक्ता ने घोषित किया था, *"परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए **मेमने** का प्रबन्ध*

करेगा।" (उत्पत्ति 22:8)

और मूसा भविष्यद्वक्ता ने लिखा था, *"याजक **एक मेमना लेगा** और उसे अर्पित करेगा.....वह उस पवित्र स्थान में, जहां होमबलि एवं पाप-बलि के पशु बलि किए गए थे, **मेमना बलि करेगा।**"* (लैव्यव्यवस्था 14:12-13)

इस विडंबना को न भूले।

मंदिर की कांस्य वेदी पर मेमने को मारने और जलाने के लिए जिम्मेदार याजकों ने ही यीशु को मारने के लिए गिरफ्तार किया था पकड़वाया था। फिर भी उन्हें कोई संकेत भी नहीं था की वे उस ***मेमने*** का बलिदान करने जा रहे थे जिसके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था।

धार्मिक गुरुओं द्वारा अपराधी ठहराया गया

> *"वे यीशु को महायाजक के पास ले गए। वहां सब प्रधान याजक, धर्मवृद्ध और शास्त्री उसके यहाँ इकट्ठा हो गए।"* (मरकुस 14:53)

यहूदियों के धार्मिक गुरुओं ने रात के समय में गैरकानूनी जांच का इंतजाम किया।

> *"प्रधान याजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरोध में गवाही की खोज में थें पर न पा सकें। क्योंकि बहुत से उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे पर उनकी गवाही एक सी न थी। .....तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा, 'तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं?' परन्तु वह मौन साधे रहा, और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, **'क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है?' यीशु ने कहा, 'मैं हूं, और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।** ' तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ कर कहा, 'अब हमें गवाहों का और क्या प्रयोजन है? तुमने यह निन्दा सुनी। .....।"* (मरकुस 14:55-56, 60-64)

महायाजक क्रोध में आया, अपने वस्त्र फाड़े, और यीशु को निंदा करने का दोष क्यों लगाया? उसने ऐसा किया क्योंकि यीशु ने स्वयं को परमेश्वर का पुत्र और मानव-पुत्र, मसीहा जिसके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था वह अपने आपको घोषित किया था। यीशु ने स्वयं को परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम, *"मैं हूं"* से भी संबोधित किया था। और *"तुम मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा हुआ और आकाश के मेघों के साथ आते हुआ देखोगे"*, कहने के द्वारा यीशु भविष्यद्वक्ताओं के पवित्रशास्त्र से संदर्भ दे रहा था और स्वयं को संपूर्ण पृथ्वी का

न्यायाधीश ऐसे घोषित कर रहा था।[213]

इसी कारण से महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा,

> *"क्या हमें अब भी गवाहों की आवश्यकता है? तुम परमेश्वर की निंदा सुन चुके हो। तुम्हारा क्या विचार है?* ***उन सब ने निर्णय दिया कि यीशु प्राण-दंड के योग्य हैं।*** *तब कई लोगों ने उन पर थूका और उनका मुंह ढक कर उन्हें घूंसे लगाए और कहने लगे, 'भविष्यवाणी कर।' महायाजकों के कर्मचारियों ने भी उनको पकड़कर थप्पड़ मारे।"* (मरकुस 14:63-65)

सात सौ वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने मसीहा के अपनी मर्जी से दुःख उठाने के बारे में भविष्यवाणी की थी : *"मैंने कोड़ा मारनेवालों के सामने अपनी पीठ कर दी; दाढ़ी नोचनेवालों की ओर अपने गाल कर दिए। मैंने अपमान सहा; उनके थूक से अपना मुख नहीं हटाया।"* (यशायाह 50:6)

राजनीतिक अगुओं द्वारा अपराधी घोषित किया

प्रात:काल के समय, याजक और धार्मिक अगुओं ने यीशु को पिलातुस, जो यहूदा प्रदेश का रोमन राज्यपाल था, उसके पास ले गए। धार्मिक अगुओं ने यह मांग की ताकि पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर प्राण-दंड देने की सजा दे। इतिहास में उस समय, यहूदी लोग रोमन साम्राज्य के शासनाधीन थे और उनके पास अधिकार नहीं था कि किसी अपराधी को मृत्यु दंड की सजा दे।

जांच के दौरान तीन बार पिलातुस ने घोषित किया, *"मैं इसे दोषी नहीं पाता," लेकिन भीड़, पुरोहितों द्वारा भड़कायी गई थी जिन्हें शैतान ने भड़काया था, केवल चिल्लाकर बोले,* ***"क्रूस पर चढाओ, उसे क्रूस पर चढाओ!"***[214]

पिलातुस धार्मिक अगुओं के दबाव में आया और यीशु को रोमी कानून के अत्यधिक दंड की सजा सुनाई : एक निर्दयी, हड्डियां नजर आती है वैसे कोड़े लगाना, उसके बाद क्रूस पर लटकाना।

> *"और यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढाने के लिए सौंप दिया। तब राज्यपाल के सैनिक यीशु को राजभवन में ले गए और उन्होंने यीशु के सम्मुख सैन्यदल एकत्र किया। उन्होंने यीशु के वस्त्र उतारकर उन्हें लाल जामा पहिनाया, कांटो का मुकुट गुंथकर उनके सिर पर रखा, और उनके दाहिने हाथ में नरकुल थमाया। तब वे उनके आगे घुटने टेक*

कर उपहास करने तथा यह कहने लगे, 'यहूदियों के राजा, आपकी जय हो।' सैनिकों ने उन पर थूका और वही नरकुल लेकर उनके सिर पर मारा। जब वे यीशु का उपहास कर चुके तब जामा उतार लिया, और उनके कपडे पहिना कर उन्हें क्रूस पर चढाने के लिए ले चले।" (मत्ती 27:26-31)

प्रभु का पर्वत

इस प्रकार, महिमा का प्रभु- उसका पवित्र शरीर अब कटा हुआ मांस का लहूलुहान पुंज हो गया, उसका सिर कांटो के नुकीले मुकुट पहिने था, और उसके पीठ पर भारी वजन का लकड़ी का क्रूस था-उसे शहर के बाहर ले जाया गया और उसी पर्वत टीले पर जहां, करीबन दो हजार वर्षों पहले, अब्राहम ने भविष्यवाणी की थी :

"परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेमने का प्रबन्ध करेगा....प्रभु पहाड़ पर दर्शन देगा।" (उत्पत्ति 22:8, 14)

सभी घटक ये आपस में मिल गए थे : लोग, प्रक्रिया, व्यक्ति, स्थान। सब कुछ वैसे ही हो रहा था जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी।

यह युगों के लेन-देन का समय था।

पाठ 24

पूरा चुकाया दाम

क्रूस पर चढ़ाना यह सरकारी-आदेश की कभी बनाई गई ऐसी सबसे निर्दयी रीति से मार डालने की पद्धति थी। रोमी साम्राज्य ने सबसे कुकर्मी अपराधियों के लिए इसे आरक्षित रखा था।

क्रूस पर चढाने द्वारा मार डालना वह है जिसे हम, मानवजाति ने अपने सृष्टिकर्ता के लिए चुना जब वह हमसे मिलने आया।[215]

> *"रोमन सैनिक अन्य दो मनुष्यों को भी, जो कुकर्मी थे, यीशु के साथ मृत्युदंड के लिए ले चले। जब वे उस स्थान पर आए जो 'खोपड़ी'[216] कहलाता है तब उन्होंने वहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी ओर और दूसरे को बाई ओर।"* (लूका 23:32-33)

क्रूस पर चढ़ाया!

क्रूस पर चढ़ाने की रचना की गई थी कि अपराधी व्यक्ति पर सबसे निर्दयी वेदना और सबसे सम्भव अपमान कराए।

मैंने कभी नहीं देखा, न ही मैं देखना चाहता हूं, एक चित्रकार की रचना अथवा जब यीशु को क्रूस पर लटकाया गया था तब उसने जो लज्जा और यातना सही उसे पर्याप्त मात्रा में चित्रित करनेवाला सिनेमा देखे। उदाहरण के तौर पर, कलाकार और पटकथा लेखक उस पर वस्त्र का एक टुकड़ा रखते है, लेकिन ऐतिहासिक सत्यता यह है कि रोमन सैनिक दोषी अपराधियों को एक पेड़ या एक क्रूस पर निर्दयतापूर्वक मारना और उनकी कलाई और एड़ी में किले ठोकने से पहले उन्हें निर्वस्त्र करते थे।

क्रूस पर चढाने के द्वारा मृत्युदंड बहुत ही लज्जाजनक, यातनामय और धीरे-धीरे होता था।

यीशु ने स्वेच्छा से इस भुगतान को सहा—यातना और लज्जा-आपके लिए, मेरे लिए, और आदम के समस्त वंशजों के लिए। तीव्र यातना जो यीशु पर लाद दी गई थी उसका अर्थ हमारी सहायता के लिए कि हमारे पाप जिसके पात्र है उस गंभीर दंड को समझे।

रोमी लोगों ने क्रूस पर चढ़ाया जाने की खोज करने से सदियों पहले, दाऊद भविष्यद्वक्ता ने क्रूस पर मसीहा के दुःख का वर्णन किया था :

"कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की भीड़ ने चारों ओर घेरा डाला है; ***उन्होंने मेरे हाथ-पैर बेध डाले हैं।*** *मैं अपनी एक-एक हड्डी गिन सकता हूं। वे घूरते हुए मुझपर दृष्टि डालते हैं। उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए, और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली। .....वे सिर हिलाकर यह कहते हैं, यह प्रभु पर निर्भर रहा, वही इसे मुक्त करे। वही इसको छुडाए; क्योंकि प्रभु में यह हर्षित होता है"* (भजन संहिता 22:16-18, 8)। *और यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी : "उसने मृत्यु की वेदी पर अपना प्राण अर्पित कर दिया; और वह अपराधियों के साथ गिना गया। फिर भी उसने अनेक लोगों के पाप का बोझ उठाया, और अपराधियों के लिए प्रार्थना की।"* (यशायाह 53:12)

सुसमाचार लेखों से नीचे दिए गए अंश में, देखे कि हमने अभी पढ़ी हुई भविष्यवाणियों के आधार पर कितने पुरे हुए यह हम पहचान सकते है।

"जब वे उस स्थान पर आए जो 'कपाल' कहलाता है तब उन्होंने वहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी ओर और दूसरे को बाई ओर। यीशु ने कहा, ***'पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे है।'*** *तब रोमन सैनिकों ने चिट्ठियां डालकर यीशु के वस्त्र बांट लिए। लोग खड़े-खड़े यह सब देख रहे थे। यहूदी नेता भी उपहास करते हुए यह कह रहे थे, 'इसने दूसरों को बचाया। यदि यह मसीह है, यदि इसको परमेश्वर ने चुना है, तो अब अपने को बचाए।' सैनिकों ने भी यीशु का उपहास किया। ....क्रूस पर टंगा एक कुकर्मी यीशु की निन्दा करने लगा, 'क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर हमें और अपने को बचा।' पर दूसरे कुकर्मी ने*

*उसे डांट कर कहा, 'क्या तुझे परमेश्वर का भय नहीं, क्योंकि तू भी तो वही दंड पा रहा है? हमारा दंड तो न्याय-संगत है; क्योंकि हम अपनी करनी का फल भोग रहे हैं, पर इन्होने कोई अनुचित काम नहीं किया। ' तब वह यीशु से बोला, 'हे यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं, तब मेरी सुधि लेना। ' यीशु ने उससे कहा, **'मैं तुझसे सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।** लगभग दोपहर का समय था, और उस समय से तीन बजे तक सारे देश में अंधकार छाया रहा। सूर्य का प्रकाश जाता रहा। ....।"*
(लूका 23:33-36, 39-45)

लेन-देन

कई सदियों से अपराधियों ने क्रूस की यातना सही थी। 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन से पहले, रोमन सैनिक प्रतिदिन पाच सौ यहूदियों को क्रूस पर चढाते थे।[217] कुछ पीड़ित मृत्यु से पहले बहुत दिनों तक क्रूस पर तड़पते रहते थे। यीशु ने मरने से पहले क्रूस पर छः घंटों के थोड़े समय के लिए दुःख उठाया था। तो उसके दुःख ने अनोखा ऐसा क्या किया था?

एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु के दुःख और मृत्यु के विषय में भविष्यवाणी की थी। और एक विशेषता यह है कि भले ही क्रूस पर चढ़ाएं जाने के बाद अनेक लोगों ने उनका लहू बहाया था, पर केवल प्रभु यीशु ने परिपूर्ण लहू बहाया था। और कथन जो हमने अभी पढ़ा वह यीशु के मृत्यु का और एक अनोखा पहलू प्रकट करता है।

*"लगभग दोपहर का समय था, और उस समय से तीन बजे तक **सारे देश में अंधकार छाया रहा।**"* (लूका 23:44)[218]

यीशु को सुबह नौ बजे क्रूस पर चढ़ाया गया। दोपहर से तीन बजे तक, समस्त पृथ्वी पर अंधकार छाया रहा। क्यों? उन तीन घंटों के दौरान, संसार की दृष्टि से गुप्त, सबसे गहन युगों का लेन-देन पूरा हो रहा था। परमेश्वर समय में हमारे पाप पर उपाय कर रहा था ताकि अनंतकाल में हमें उस पर उपाय न करना पड़े।

अलौकिक अंधकार के उन घंटों के दौरान, परमेश्वर जो स्वर्ग में है उसने उसके प्रिय जन, धार्मिक पुत्र पर केंद्रित, हमारे पापों को जिस अनंतकाल की शिक्षा आवश्यक थी उस पर लाद दी थी। यह उस उद्देश्य के लिए परमेश्वर-पुत्र ने मांस और लहू का शरीर धारण किया था।

"वह हमारे पापों का प्रायश्चित्त है [पर्याप्त पाप-बलि जिसने परमेश्वर के क्रोध को सह लिया], *और हमारे ही नहीं वरन समस्त संसार के पापों का।"* (1 यूहन्ना 2:2)

सात सदी पहले, यशायाह भविष्यद्वक्ता ने पहले ही युगों के इस लेन-देन का वर्णन किया था:

*"किंतु वह हमारे पापों के कारण घायल हुआ; वह हमारे दुष्कर्मों के कारण आहत हुआ। उसने अपने शरीर पर ताड़ना-स्वरूप मार सही, और उसकी मार से हमारा कल्याण हुआ। .... **लेकिन प्रभु ने हमारे सब दुष्कर्मों का बोझ उस पर लाद दिया।** .... जैसे मेमना वध के लिए ले जाते समय चुप रहता है,........। यह प्रभु की इच्छा थी कि वह मार सहे; प्रभु ने उसे दुःख से पीड़ित किया। जब वह पाप-बलि के लिए अपना प्राण अर्पित करता है, ...जो पीड़ा उसने अपने प्राण में सही है, उसका फल देखकर वह सन्तुष्ट होगा। मेरा धार्मिक सेवक अपने ज्ञान के द्वारा अनेक लोगों को धार्मिक बनाएगा; वह उनके दुष्कर्मों का फल स्वयं भोगेगा।"* (यशायाह 53:5-7, 10-11)

क्रूस पर उन घंटों के दौरान, ग्रह जब अंधकार में था, प्रभु ने उसके तैयार, निष्पाप पुत्र पर हमारे पापों का दोष और दंड रखा था। पिता और पुत्र के बीच प्रत्यक्ष में जो कुछ हो रहा था उसकी कल्पना हम कभी भी नहीं कर सकते, लेकिन एक बात निश्चित है: यह अब तक का सबसे बड़ा लेन-देन था।

अकेला!

जब पृथ्वी पर गहन अंधकार छाया था, *"यीशु ने उच्च स्वर में पुकारा, 'एली एली, लमा सबक्तनी?' अर्थात **'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तुझे मुझे क्यों छोड़ दिया?'** "* (मत्ती 27:46)

यीशु ने क्रूस पर से इस हृदय-विदारक पुकार क्यों कहा? उसने इस प्रकार आक्रोश किया क्योंकि परमेश्वर ने उसे पापों का दंड भरने के लिए अकेला ही छोड़ दिया था....

अकेला।

हम सब की ओर से, यीशु ने पाप द्वारा निर्मित तीन स्तर के अलग होने का दुःख उठाया था :

- उसने *आध्यात्मिक मृत्यु* का अनुभव किया। स्वर्ग के परमेश्वर ने उसके पुत्र से अपना पवित्र मुख मोड़ लिया था जिस पर उसने मानवजाति के पापों को लाद दिया था।
- वह *शारीरिक मृत्यु* से भी गुजरा। जिस क्षण यीशु मरा, उसका आत्मा और प्राण ने उसके शरीर को छोड़ा था।
- उसने *दूसरे मृत्यु* का स्वाद भी चखा था। उसने आपके और मेरे लिए नरक की यातना का दुःख उठाया।

नरक यह परमेश्वर द्वारा त्यागा हुआ अंधकार और अलगाव का स्थान है; एक स्थान जो सब

कुछ अच्छाई से रहित है; स्वर्गीय पिता की उपस्थिति और प्रेम से अलग एक स्थान है। क्रूस पर रहते हुए, अनंतकाल में पहले और अंतिम समय के लिए, अनंतकालीन पुत्र उसके अनंतकालीन पिता से अलग हुआ था। यीशु ने वह भयानक अलगाव सहन किया, ताकि हमें शायद वह सहना न पड़े।

परमेश्वर का पवित्र मेमना हमारा पाप-वाहक, हमारा विकल्प बन गया। उसने हमारे पापों के श्राप का पूरा भार सहा, पीड़ा, लज्जा, कांटे, और किलों का स्वीकार किया था। क्रूस की वेदी पर, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच लटका हुआ, यीशु पापों के लिए पूर्ण और अंतिम "होम-बलि" बन गया।[219]

कुछ ही घंटों में नरक

यीशु ने हमारे नरक को सहा था। लेकिन एक मनुष्य संपूर्ण मानवजाति के दंड के लिए भुगतान कैसे कर सकता है? यीशु ने कुछ घंटों के समय में अनंतकाल के दंड का दुःख कैसे उठाया था?

वह ऐसा कर सका क्योंकि जो वह है।

यह इस कारण से कि वह जो है उसे संपूर्ण अनंतकाल तक हमारे पापों का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं जैसे हमें करनी पड़ती थी। अनंतकाल का पुत्र और परमेश्वर का शब्द होने से उसके अपने पाप नहीं थे जिसका वह दंड भरे, न ही वह समय से बंधा हुआ था जैसे हम हैं।

यह इस कारण से की वह जो है इसलिए वह समय के सीमित अवस्था में *"प्रत्येक के लिए मृत्यु का स्वाद लेने"* (इब्रानियों 2:9) में समर्थ था।

जैसे प्रभु परमेश्वर को हमारे जटिल संसार का (यद्यपि उसने छः दिनों में इसे करने का निर्णय किया था) निर्माण करने के लिए किसी विशेष समय की आवश्यकता नहीं होती, न ही उसे क्रूस पर किसी विशेष समय की आवश्यकता नहीं थी कि मानवजाति का उद्धार करे (यद्यपि उसने यह छः घंटों में करने का निर्णय किया था)।

परमेश्वर के साथ, समय कुछ भी नहीं।

> *".....युग-युगान्त से तू ही परमेश्वर है। .....तेरी दृष्टि में हजार वर्ष भी बीते कल के समान हैं, वे रात के एक पहर के सदृश हैं।"* (भजन संहिता 90:2, 4)

"पूरा हुआ!"

*"यीशु यह जानते थे कि अब सब कुछ पूर्ण हो चूका अत: उन्होंने पवित्रशास्त्र का लेख पूरा करने के लिए कहा, **'मैं प्यासा हूं।'** वहां सिरके से भरा हुआ एक पात्र रखा था। लोगों ने सिरके में स्पंज को भिगोया और उसको जुफे पर रखकर उनके मुंह पर लगाया। जब यीशु ने सिरका ग्रहण कर लिया तब कहा, **'पूरा हुआ'** और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।"* (यूहन्ना 19:28-30)

यीशु मरने से कुछ समय पहले, उन्होंने एक घोषणा की :

"पूरा हुआ!"

यह वाक्य एक यूनानी शब्द टेटेलेस्टाय से अनुवादित किया है। रोमन व्यवसायिक जगत में यह एक सामान्य शब्द था। इसका उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जाता था कि कर्ज यह पूरी तरह से भर दिया गया है। प्राचीन रसीद उन पर "*टेटेलेस्टाय*" लिखा हुआ ऐसे प्राप्त हुए हैं, इसका अर्थ :

"पूरा भुगतान किया गया।"

टेटेलेस्टाय शब्द एक नियत कार्य को पूरा करने पर घोषणा करने में उपयोग किया जाता था। एक जिसने उसे विशेष कार्य करने भेजा था उसे काम का ब्यौरा देते हुए, एक सेवक यह कह सकता है, "*टेटेलेस्टाय*", इसका अर्थ :

"सेवकाई पूरी हुई।"

सुसमाचार लेखक सभी यह विवरण देते है *"यीशु ने **ऊंचे स्वर से** चिल्ला कर प्राण त्याग दिया।"* (मरकुस 15:37)

यह विजय का नारा था!

परमेश्वर के बलिदान के मेमने की ओर इशारा करने वाली भविष्यवाणियां और प्रतीक पुरे हो चुके थे।

यीशु जो मानव-पुत्र और परमेश्वर-पुत्र ने श्राप के कारण : ***पाप*** का निर्णयात्मक ढंग से उपाय किया था। उन्होंने परमेश्वर को आवश्यक उद्धार मूल्य दे दिया था कि आदम के अशुद्ध, शापित वंशजों का उद्धार करे। परमेश्वर का धर्मी स्वभाव और पाप के विरुद्ध का क्रोध पूरी तरह से संतुष्ट था। उसकी व्यवस्था फिर से लागु की गई थी।

पूरा हुआ। पूरा भुगतान किया गया। सेवकाई पूरी हुई!

*"......तुम्हारा छुटकारा नाशवान स्वर्ण और चांदी द्वारा नहीं, किंतु निर्दोष एवं निष्कलंक मेमने, **मसीह के मूल्यवान लहू** द्वारा **उद्धार हुआ** है। मसीह सृष्टि-रचना से पूर्व ठहराए गए थे और युगों के अंत में **तुम्हारे हित के लिए** प्रकट हुए।"* (1 पतरस 1:18-20)

पिछले कई सदियों से, बलिदान किए हुए निष्कलंक लाखो पशुओं से लहू बहाया गया था। अब यीशु का अपना लहू उसके निष्पाप शरीर से बहा था। *"मसीह का मूल्यवान लहू"* न केवल अस्थायी रूप से पाप को ढांप देगा; यह अभिलेख से इसे हमेशा के लिए हटा देगा। परमेश्वर की पहली वाचा ने यही भविष्यवाणी की थी।

*"देखो, समय आ रहा है, जब मैं ....**नई वाचा** स्थापित करूंगा। .....मैं उनके अधर्म को क्षमा कर दूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण नहीं करूंगा।"* (यिर्मयाह 31:31, 34)

नया नियम पवित्रशास्त्र फिर स्पष्ट करते है : *"**नई वाचा** का उल्लेख जब परमेश्वर करता है तब वह प्रथम वाचा को **पुरानी** घोषित करता है। ....."* (इब्रानियों 8:13)। अभी पाप-बलि की आवश्यकता नहीं। वेदी पर पशु बलिदान को अब क्रूस पर मसीहा की मृत्यु द्वारा रद्द किया गया है।

जैसे प्रभु परमेश्वर ने प्रथम लहू बलिदान किया था (जिस दिन आदम और हव्वा ने पाप किया था), वैसे ही उसने अंतिम ग्रहणीय लहू बलिदान प्रदान किया है।

जैसे अब्राहम ने भविष्यवाणी की, परमेश्वर ने *"स्वयं बलिदान के लिए मेमने का प्रबन्ध"* किया है (उत्पत्ति 22:8)। जबकि परमेश्वर ने अवश्य अब्राहम के पुत्र को बचाया, उसने *"अपने पुत्र को नहीं रख छोड़ा, वरन हम सबके लिए उसको दे दिया।"* (रोमियों 8:32)

यीशु के बहाए हुए लहू ने पाप और मृत्यु की व्यवस्था को सन्तुष्ट किया और बलिदान की व्यवस्था को पूर्ण किया।

यह कोई आश्चर्य नहीं है कि वह चिल्लाया, **"पूरा हुआ!"**

फटा हुआ परदा

यीशु ने "पूरा हुआ" यह घोषित करने के बाद क्या हुआ?

*"यीशु ने ऊंचे स्वर से चिल्ला कर प्राण त्याग दिया। **और मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया।"*** (मरकुस 15:37-38)

एक प्राचीन इतिहासकार वर्णन करता है कि मंदिर का परदा यह हथेली समान मोटा था और

इतना भारी था कि उसे उठाने के लिए 300 पुरुषों की आवश्यकता होती थी ।[220]

क्या कारण हुआ की इतना विशाल परदा दो भागों में फट गया?

पाठ 21 में वापस, हमने सिखा कि परमेश्वर ने उसके लोगों को सूचना दी थी कि इस विशेष परदे को निवास-स्थान में और बाद में मंदिर में लटकाए। परदा मनुष्यों को परम पवित्र स्थान से अलग करता था, वह भीतर का पवित्र स्थान जहां परमेश्वर ने एक बार उसकी उपस्थिति का चकाचौंध करनेवाला प्रकाश रखा था। यह परदा, नीले, बैंजनी और लोहित रंग के वस्त्र से, पतले सूत से बुने हुआ होगा, जो परमेश्वर के अपने पुत्र का प्रतीक होगा जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आएगा। पापियों को पवित्र सृष्टिकर्ता से उनके अलग होने का स्मरण भी यह देगा। परमेश्वर के परिपूर्ण धार्मिकता के आदर्श को जो पूरा करते उन्हें ही केवल परमेश्वर के अनंतकाल के निवास स्थान में प्रवेश दिया जाएगा।

वर्ष में एक बार, प्रायश्चित्त दिन पर, विशेष रूप से अभिषिक्त महायाजक को परदे के पीछे और परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने दिया जाएगा। परमेश्वर की उपस्थिति में बिना नाश हुए प्रवेश करने का एकमात्र मार्ग याजकों के लिए यह कि बलिदान किए हुए बकरे का लहू (मसीह के बहाए हुए लहू का प्रतीक) से भरा कटोरा अपने साथ ले जाना था। पुरोहित को भी पवित्र सूती वस्त्र पहनना है (मसीह की धार्मिकता का प्रतीक है)। वह जब परम पवित्र स्थान में होता है, महायाजक वहां सात बार वाचा के संदूक के दया-आसन के सामने और उसपर लहू छिडकेगा (पूर्णता का प्रतीक है)। वाचा के संदूक में परमेश्वर की व्यवस्था है, जो सभी पापियों को मृत्यु का दंड देती है। लेकिन परमेश्वर ने पापियों को उनके बदले में निर्दोष पशु को मरने देने के द्वारा दया दिखाई है।

पंद्रह सदियों से परदे ने परमेश्वर के परिपूर्ण पवित्रता की साक्षी दी और यह कि, मसीह के बहाए हुए लहू के बगैर, पाप के लिए यहां कोई भी स्थायी प्रायश्चित्त नहीं है। केवल परमेश्वर का चुना हुआ निष्पाप एकमात्र, जिसे परदा प्रतिनिधित करता है, वह पाप के लिए किमत भुगतान कर सकता है। इसलिए, जब समय उचित था, परमेश्वर ने उसके अपने पुत्र को भेजा कि परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति एक सिद्ध आज्ञाकारिता में जीवन व्यतीत करे, और फिर स्वेच्छा से, अपने स्वयं के लहू से, आदम के नियम तोड़नेवाले वंशजों के लिए पूर्ण भुगतान करे।

तो परदे को ऊपर से नीचे तक दो भागों में किसने फाड़ा? परमेश्वर ने यह किया। यह कृत्य पुत्र के "पूरा हुआ"[221] को पिता का "आमीन" था।

परमेश्वर संतुष्ट हुआ था।

अब पाप-बलि की आवश्यकता नहीं

क्रूस पर यीशु के बलिदान के द्वारा, पूर्ण प्रायश्चित्त (पाप की क्षमा और परमेश्वर से मेलमिलाप) पूरा हुआ था। सिद्ध विकल्प ने संसार के पाप के लिए उसका लहू बहाया था।

पाप के लिए प्रतिवर्ष बलिदान के साथ परमेश्वर के लोगों पर अब बोझ नहीं रहा था।

परमेश्वर को मंदिर विधियां अथवा महायाजकों की आवश्यकता अब नहीं होगी।

एक ही बार सभी समय के लिए बलिदान किया गया था। छाया और प्रतीक के पीछे की वास्तविकता बोल चुकी थी। "पूरा हुआ!"

वे सब जो विश्वास करते हैं, परमेश्वर स्वयं उन्हें कहता है :

> *"मैं उनके पापों एवं अपराधों को, फिर कभी स्मरण नहीं करूंगा। जहां क्षमा मिल चुकी है, वहां पाप के लिए फिर बलि नहीं चढ़ायी जाती। **भाइयों, हम यीशु के लहू द्वारा उस नवीन एवं जीवन-मार्ग द्वारा,** जो उन्होंने पट से होकर अर्थात अपनी देह के बीच से हमारे लिए खोला है-**परमेश्वर के पवित्र स्थान में साहस के साथ प्रवेश पा सकते हैं।** साथ ही हमें एक ऐसे महायाजक प्राप्त है जो परमेश्वर के भवन के अधिकारी हैं इसलिए हम, ...सच्चे हृदय और पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर के समीप चले।"*
> (इब्रानियों 10:17-22)

मृत

जिस क्षण में यीशु मर गया, न ही केवल मंदिर का परदा दो भागों में फटा, लेकिन भूकंप हुआ और भयभीत जनसमूह तितरबितर हो गया।

> *"रोमन सैनिक-अधिकारी और उसके सैनिक, जो यीशु पर पहरा दे रहे थे, भूकम्प एवं इन घटनाओं को देखकर अत्यन्त भयभीत हो उठे और बोले, 'निश्चय, यह परमेश्वर-पुत्र था।'"* (मत्ती 27:54)

बाद में, यह निश्चित करने के लिए कि वह मर गया है, एक रोमन सैनिक ने यीशु की पसली में भाला मारा। लहू और पानी बाहर निकले, चिकित्सीय सबूत प्रदान किया कि वह मर गया था। सैनिकों के कार्यों ने और भविष्यवाणियां पूरी की थी।[222]

गाड़ा जाना

"सन्ध्या होने पर अरिमतियाह का निवासी यूसुफ नामक एक धनवान व्यक्ति आया। वह स्वयं यीशु का शिष्य था। उसने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शरीर मांगा। पिलातुस ने उसे शरीर देने का आदेश दे दिया। यूसुफ ने शरीर को लिया और स्वच्छ मलमल की चादर में उसे लपेटा। तब उसे अपनी नई कबर में रखा जो उसने चट्टान में खुदवाई थी। उसके बाद वह कबर के द्वार पर भारी पत्थर लुढ़का कर चला गया।" (मत्ती 27:57-60)

भविष्यद्वक्ता यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा की कबर *"धनवान की कबर"* होगी (यशायाह 53:9)। परमेश्वर की योजना प्रत्येक विस्तार से पूर्ण हुई थी। तब भी, यीशु के शिष्य उस योजना को समझ नहीं सके। उन्होंने में सच में विश्वास किया था कि यीशु मसीहा है जो पृथ्वी पर राज्य स्थापित करेगा, लेकिन जब उन्होंने उसे मरते देखा, उनकी आशा उसके साथ समाप्त हो गई। उनका चमत्कार करनेवाला स्वामी और प्रिय मित्र का वध किया गया और उसे गाड़ा गया था।

सब कुछ समाप्त हो गया, अथवा कुछ ऐसा ही उन्होंने विचार किया।

काफ़ी अजीब, यद्यपि यीशु के शिष्य उसके तीसरे दिन जीवित होने की प्रतिज्ञा को भूल गए थे, लेकिन दुष्ट धार्मिक अगुवें भूले नहीं थे।

"दूसरे दिन, अर्थात विश्राम-दिन पर महायाजकों और फरीसियों ने पिलातुस के सम्मुख एकत्र हो उससे कहा, ***'महाराज! हमें स्मरण हैं कि उस धूर्त ने, जब वह जीवित था, कहा था कि मैं तीन दिन पश्चात् जीवित हो जाऊंगा।*** *अतएव आज्ञा दीजिए कि तीसरे दिन तक कबर पर पहरा दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि उसके शिष्य उसे चुरा ले जाए और लोगों से कहने लगें, "वह मृतकों में से जीवित हो उठे।" तब यह अंतिम धोखा पहिले से अधिक बुरा होगा।' पिलातुस ने कहा, 'तुम्हारे पास पहरेदार है। जाओ और जैसा उचित समझो कबर पर पहरा दो।' तब वे गए और उन्होंने कबर के मुंह पर मुहर लगा दी तथा वहां पहरेदारों को बैठा कर कबर को सुरक्षित कर दिया।"*
(मत्ती 27:62-66)

ठण्डी कबर पर पत्थर द्वार यीशु के शव को भीतर मोहरबन्द किए था। अच्छी तरह-शस्त्रधारी रोमन सैनिक कबर की जगह के आसपास स्वयं पहरा दे रहे थे। ऐसा नजर आता है कि इसी प्रकार से नासरत के यीशु की कहानी समाप्त हो जाएगी।

तब रविवार की सुबह आई।

पाठ 25

मृत्यु पराजित हुई

पवित्रशास्त्र आदम के विषय मे कहता है, *"और उसकी **मृत्यु** हो गई"* (उत्पत्ति 5:5)। यह वहीं उसकी पृथ्वी पर की कहानी समाप्त हो गई। आदम के वंशजों के लिए इससे कुछ अलग नहीं था। उत्पत्ति का पाचवा अध्याय स्मृति-लेख अभिलिखित करता है।

"और उसकी मृत्यु हो गई....
और उसकी मृत्यु हो गई.....
और उसकी मृत्यु हो गई......
और उसकी मृत्यु हो गई।"

पाप-संक्रमित पुरुषों और स्त्रियों का इतिहास ऐसा ही है। उन्होंने जीवन व्यतीत किया, मृत्यु हुई और उन्हें गाड़ा गया; पीढ़ी दर पीढ़ी, सदी दर सदी।

लेकिन मसीहा की कहानी कबर में समाप्त नहीं होती है।

ख़ाली कब्र

*"विश्राम-दिन के पश्चात्, सप्ताह के प्रथम दिन, भोर में, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबर देखने आई। और देखो, बड़ा भूकम्प हुआ, तथा प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा। उसने आकर पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली के सदृश ज्योतिर्मय था और उसके वस्त्र बर्फ के सदृश सफेद थे। उसके भय से पहरेदार कांपने लगे और मृतप्राय हो गए। दूत ने स्त्रियों से कहा, 'डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम क्रूसित यीशु को ढूंढ रही हो। **वह यहां नहीं है, किंतु अपने वचन के अनुसार जीवित हो उठे है**। आओ, और इस स्थान को देखो जहां वह लिटाए गए थे।*

*फिर शीघ्र जाकर उनके शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जीवित हो उठे है और तुमसे पहले गलील प्रदेश को जा रहे है। वहां तुम उनके दर्शन करोगे। देखो, जो मैंने तुमसे कहा है, उसको मत भूलना। वे तत्काल कबर से चल दी, और भय और बड़े आनंद के साथ उनके शिष्यों को समाचार देने दौड़ी। और देखो, यीशु उनसे मिले और बोले, **'सलाम।'** वे उनके निकट गई और उनके चरण पकड़कर उनकी वन्दना की। यीशु ने उनसे कहा, **'डरो मत।** जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि वे गलील प्रदेश जाए। वहां वे मुझे देखेंगे।"* (मत्ती 28:1-10)

मृत्यु मसीहा को रोक नहीं सकी। क्योंकि उसके स्वयं का कोई पाप नहीं था, परमेश्वर ने उन्हें मृत्यु से जीवित किया। यीशु ने संसार के पापों के लिए ही केवल दंड नहीं भरा, लेकिन उन्होंने उस दंड पर विजय प्राप्त की। उन्होंने स्वयं मृत्यु पर ही विजय प्राप्त की थी!

शैतान और उसके भूत थरथर कांपने लगे होंगे।
धार्मिक अगुवें उन्मत हुए होंगे।

"वे [स्त्रिया जिन्होंने पुनरुत्थित यीशु को देखा था] मार्ग में ही थी कि कई पहरेदार नगर में गए और उन्होंने महायाजकों को सब घटनाएं सुना दी। महायाजकों ने धर्मवृद्धों को एकत्र कर मन्त्रणा की और सैनिकों को बहुत धन देकर कहा, 'लोगों से कहना कि जब हम रात को सोए हुए थे तब यीशु के शिष्य आए और उसे चुरा कर ले गए। यदि राज्यपाल के कान तक यह बात पहुंचेगी तो हम उन्हें समझा देंगे और तुम्हारे लिए कोई चिन्ता की बात न होगी।' पहरेदारों ने धन ले लिया और वैसा ही किया जैसा उन्हें सिखाया गया था।" (मत्ती 28:11-15)

यीशु के शत्रुओं को पता था की कबर ख़ाली थी। वे हताश थे कि सत्य को दबाए। वे नहीं चाहते थे कि लोग जाने कि मनुष्य जिसे उन्होंने मारा है वह फिर से जीवित हो गया है!

मृत्यु पराजित हुई

अदन-वाटिका में, परमेश्वर ने आदम को चेतावनी दी थी कि अगर उसने सृष्टिकर्ता के एक नियम का आज्ञाभंग किया, तो वह *"**अवश्य मरेगा।**"* शैतान ने उसका खण्डन किया, *"तुम अवश्य **नहीं** मरोगे"* और वह आदम और संपूर्ण मानवजाति को मृत्यु और विनाश के मार्ग पर ले गया। हजारों वर्ष मृत्यु ने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को उसकी निर्दयी पकड़ में रखा था। फिर परमेश्वर-पुत्र ने मृत्यु को चुनौती दी, उसे पराजित किया, और अनंतकाल के जीवन के लिए द्वार खोल दिया।

> *"जिस प्रकार **आदम में सब मनुष्य मरते हैं**, उसी प्रकार **मसीह में सब जीवित किए जाएंगे।"*** (1 कुरिंथियों 15:22)

केवल कल ही एक बुजुर्ग पडोसी स्त्री ने मुझे कहा, "एक बात जिससे मैं जीवन में डरती हूं वह मृत्यु है।" मैं कितना खुश था कि मैं उसे उसके बारे बता सका जो मृत्यु से गुजरा और उस भयानक शत्रु पर विजय प्राप्त करते हुए जीवित निकला।

> *"जैसे परिवार के सब बच्चों का लहू-मांस एक ही होता है, वैसे ही यीशु ने हमारा लहू-मांस धारण किया जिससे वह मृत्यु द्वारा, मृत्यु के अधिकारी शैतान को नष्ट करे, और जिनको जीवन भर मृत्यु का भय दासत्व में जकडे रहा हैं, उन्हें मुक्त कर दें।"*
> (इब्रानियों 2:14-15)

मान लो यीशु केवल हमारे पापो के लिए ही मरा लेकिन मृत्यु में से जीवित नहीं हुआ। मृत्यु यह आज भी कुछ होता जिसका भय रखा जाता।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के द्वारा, प्रभु यीशु ने प्रमाणित किया कि वह शैतान के सबसे सामर्थी शस्त्र और मनुष्य के सबसे डरावने शत्रु से बड़ा है। क्योंकि यीशु ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है, वे जो उसमे विश्वास करते हैं उन्हें इस जीवन में अथवा आनेवाले जीवन में किसी बात का भय नहीं हैं।

परमेश्वर का संदेश सरल रूप से स्पष्ट है: यदि आप उसके पुत्र में विश्वास रखते हैं जिसने आपके लिए क्रूस पर दुःख उठाया, आपके लिए मृत्यु अपनाया, और आपके लिए तीसरे दिन जीवित हुआ, तो वह आपको मृत्यु की पकड़ से छुडाएगा और उसका अनंतकाल का जीवन प्रदान करेगा।

पाप द्वारा बंधक बनाए गए संसार के लिए यह परमेश्वर का सुसमाचार है।

*"...पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए **मरे**, वह **गाड़े गए** तथा **पवित्रशास्त्र के अनुसार** तीसरे दिन **जी उठे**।"* (1 कुरिंथियों 15:3-4)

विश्वास करने वाले सभी के लिए, मसीह यीशु कहता है :

"....मैं जीवित हूं इसलिए तुम भी जीवित रहोगे। ....भयभीत न हो, प्रथम एवं अंतिम मैं हूं। मैं जीवित हूं-मैं मर गया था किंतु देखो, मैं युगानुयुग जीवित हूं। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे पास है।" (यूहन्ना 14:19; प्रकाशितवाक्य 1:17-18)

शैतान पराजित हुआ

यीशु ने जब मृत्यु के क्षेत्र में प्रवेश किया और तीन दिन बाद बाहर निकला, युद्ध के संबंध में उसने प्रधानता प्राप्त की—एक सुअवसर की वह कभी छोड़ेगा नहीं।

शैतान एक पराजित शत्रु है। यद्यपि वह और उसके पिशाच हताश रीति से लढाई करते है, वे जीत नहीं सकते।

क्या आप देखते हैं कि दिन आदम और हव्वा ने पाप किया था उस दिन परमेश्वर ने अदन वाटिका में अपनी प्रतिज्ञाओं को कैसे पूरा किया? जैसे ही उसने भविष्यवाणी की थी, स्त्री का वंशज (यीशु) साप (शैतान) द्वारा जख्मी किया गया, और उसी जख्मों ने शैतान के विनाश को मोहरबंद किया।

"....परमेश्वर पुत्र इस कारण प्रकट हुआ कि शैतान के कार्यों का विनाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8)

उसका मृत्यु, गाड़े जाना और जी उठने के द्वारा, यीशु ने पाप के श्राप पर विजय प्राप्त की, जो स्पष्ट करता है :

*"....**मिट्टी** में ही मिल जाएगा।"* (उत्पत्ति 3:19)

हजारों वर्षों से, शैतान ने उपहास किया जब मृत्यु की भयभीत करनेवाली प्रक्रिया ने आदम के रोगी वंशजों को फिर से मिट्टी में बदल दिया था। लेकिन अब यहां एकमात्र था जिसका शरीर फिरसे मिट्टी में नहीं मिला!

उसका शरीर कबर में क्यों नाश नहीं हुआ?

मृत्यु को उस पर कोई सामर्थ्य नहीं थी क्योंकि वह एकमात्र निष्पाप था। हजार वर्षों पहले

दाऊद भविष्यद्वक्ता ने घोषणा की थी :

*"**न** ....अपने पवित्र जन को **सड़ने** देगा।"* (भजन संहिता 16:10)

पवित्र एकमात्र ने शैतान, पाप और मृत्यु पर हमारे लिए विजय प्राप्त की है।

प्रमाण

यीशु के मृत्यु में से जी उठने के लिए प्रमाण ये अनगिनत और विश्वसनीय हैं।[223]

कब्र ख़ाली थी।

शव आसपास कही भी नहीं मिला।

स्त्रिया सबसे पहले ख़ाली कब्र को देखने वाली थीं, उन्होंने दूत की घोषणा सुनी, यीशु को जीवित देखा, उसे स्पर्श किया और उससे बातें की। यदि सुसमाचार लेख ये मनगढ़ंत हैं, तो क्या आप सोचते हो कि चार पुरुष जिन्होंने उसे लिखा उन्होंने स्त्रियों को सभी बातों में प्रथम होने का श्रेय दिया होता?!

यीशु के जी उठने के बाद के प्रकट होने के दस्तावेज बहुत हैं। दशके बीत जाएगी, सैकड़ों विश्वसनीय गवाहदार ये गवाही देंगे कि वे पुनरुत्थित मसीहा के साथ चले और बातचीत की।

शिष्यों ने यीशु को दुःख उठाते और मरते देखा था। उनके मन दुखित हो गए थे। उनकी आशा चली गई थी क्योंकि उन्होंने उस कल्पना को गलत समझा था कि मसीहा कभी भी नहीं मर सकता। निराश हृदय लेकर और डरे हुए वे घर वापस गए थे। फिर कुछ तो हुआ। उन्होंने यीशु को जीवित देखा। अचानक उन्हें स्मरण आया कि यीशु ने उन्हें कैसे कहा था कि वह क्रूस पर मारा जाएगा और तीसरे दिन फिर से जीवित हो उठेगा।[224] अंत में, वे भविष्यद्वक्ताओं के वचन समझ गए।

ये जो पहले डरपोक थे अब मसीह के निडर गवाह बन गए।

यीशु मृत्यु से पुनरुत्थित होने के कुछ ही दिनों में, पतरस, जो भ्रमित और भयभीत हुआ था, अब यरूशलेम के प्रतिकूल रास्तों पर निडरतापूर्वक उन्हें घोषित कर रहा था जिन्होंने यीशु को क्रूस पर मारने की कपटी योजना की थी :

*"तुमने उस पवित्र और धर्मी का अस्वीकार किया....और **जीवन के अधिनायक की हत्या कर डाली। पर परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित कर दिया।** इसके हम साक्षी हैं। .....भाइयों, मैं जानता हूं कि तुमने और तुम्हारे धर्मगुरुओं ने यह काम अज्ञानता से किया। **परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुंह से पहले ही बता दिया था 'मेरा***

मसीह दुःख उठाएगा', यह भविष्यवाणी परमेश्वर ने इस रीति से पूरी की। *अतः हृदय-परिवर्तन करो और परमेश्वर के पास लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिट जाएं।"* (प्रेरितों के काम 3:14-19)

पतरस और अन्य शिष्यों के लिए, कोई भी कठिन परिश्रम बड़ा नहीं था कि उस एकमात्र के लिए सहन करे जिन्होंने उन्हें अनंतकाल का जीवन प्रदान किया था।

मसीह के शिष्यों (उन्हें मसीही [225]) भी कहते हैं) को प्रभु यीशु के लिए उनकी निडर साक्षी देने के कारण उपहास किया, कारागार में डाला और उन्हें कोड़े लगाए , और बहुतों को मार डाला गया। पतरस को स्वयं सताया गया और, सांसारिक इतिहास अनुसार, अंत में उसे क्रूस पर-उलटा लटका कर मारा गया। फिर भी पतरस और अन्य शिष्यों ने आनंद से इस तरह के सताव का स्वीकार किया क्योंकि *वे जानते* थें कि उनके उद्धारकर्ता और प्रभु ने मृत्यु और नरक[226] पर विजय प्राप्त की है। उन्हें *पता था* कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा, धार्मिकता और अनंतकाल का जीवन प्रदान किया हैं। मृत्यु अब उन्हें भयभीत नहीं कर सकती थी क्योंकि उन्हें *पता था* कि जैसे ही उनके भौतिक शरीर मरेंगे, उनका अनंतकाल के प्राण और आत्मा स्वर्ग में *"प्रभु के साथ उपस्थित"* रहेंगे। (2 कुरिंथियों 5:8)

अब उन्हें कोई भी भयभीत नहीं कर सकता था। उनके पास संसार के लिए संदेश था, एक संदेश जिसका अर्थ उनके लिए जीवन से अधिक था।

मसीह के एक अनुयायी ने उसके संदेश को अथेने के प्राचीन नगर में संदेहवादी, निंदा करनेवाले समूह को दिया था उसका यहां पर निष्कर्ष है :

"परमेश्वर ने अज्ञानता के युगों पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन अब उसकी आज्ञा है कि ***सब जगह*** *सब मनुष्य* ***हृदय-परिवर्तन करें।*** *उसने एक दिन निश्चित कर दिया है जब वह पूर्व निश्चित व्यक्ति द्वारा* ***संसार का धर्मपूर्वक न्याय करेगा। उसने इस व्यक्ति को मृतकों में से जीवित कर सब लोगों को इस बात का प्रमाण दिया है।"*** (प्रेरितों के काम 17:30-31)

उसका निष्कर्ष यह सरल और सीधा-साधा था : पश्चाताप करें! आप परमेश्वर के निश्चित न्याय से अपने आपको बचा सकते हैं ये सोचना छोड़ दो। उसके बजाय, उद्धारकर्ता पर पूर्ण रूप से निर्भर रहो जिसने आपके पापों के लिए उसका लहू बहाया और मृत्यु में से जीवित हो उठा।

सकारात्मक प्रमाण

आप और मैं किस तरह से निश्चित हो सकते है कि यीशु ही संसार का उद्धारकर्ता और

न्यायाधीश है? हमने अभी ही उत्तर पढ़ा है। परमेश्वर ने "**उसे मृतकों में से जीवित कर** सब लोगों को **इस बात का प्रमाण दिया है**।"

और कितने प्रमाण की आवश्यकता है कि यीशु ही एकमात्र है और केवल वही उद्धारकर्ता है? हम हमारे अनंतकाल के अंतिम स्थान को किसी और को क्यों सौंप दे? दुखद रूप से, संसार भर के लोग मृत व्यक्तियों की पूजा करते हैं जिन्होंने जब वे जीवित थे तब परमेश्वर की कहानी और संदेश का विरोध किया था। क्यों किसी ने उनका भरोसा किसी मनुष्य में रखना चाहिए जो मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं कर सका और जिसने परमेश्वर के वचन के विपरीत किया, जबकि परमेश्वर के चुने हुए एकमात्र ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की और भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को पूरा किया?

जैसे पूरी हुई भविष्यवाणी यह निर्विवाद प्रमाण प्रदान करने परमेश्वर का मार्ग है कि बाइबल यह परमेश्वर का वचन है, वैसे ही तीसरे दिन यीशु का पुनरुत्थान यह परमेश्वर का निर्विवाद प्रमाण है कि वही केवल हमें अनंतकालीन मृत्यु से बचा सकता और हमें अनंतकाल का जीवन प्रदान कर सकता है।

सभी लोगों के लिए उद्धारकर्ता

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। यीशु के मृत्यु और पुनरुत्थान का संदेश यह *"सर्वत्र सभी"* के लिए है। इस पर जोर देना आवश्यक है, क्योंकि कुछ लोग आपको यह कहने का प्रयास करेंगे कि यीशु केवल यहूदियों के लिए ही आया था।

सत्य से कुछ भी दूर नहीं कर सकता।[227]

जब यह सत्य है कि मसीहा की पृथ्वी पर की सेवकाई यहूदियों पर ही केंद्रित थी, राष्ट्र में उसके आने का उद्देश्य यह समस्त संसार के लिए उद्धार प्रदान करने का था। सात सदी पहले यशायाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा है परमेश्वर की उसके पुत्र के लिए प्रतिज्ञा: *"....मैं तुझे अन्य राष्ट्रों के लिए ज्योति बनाऊंगा, जिससे मेरा उद्धार पृथ्वी के सीमान्तों तक पहुंच सके।"* (यशायाह 49:6)

मसीह इस संसार में यह जानते हुए आया कि यहूदी अगुवें उसे अपने राजा के रूप में स्वीकार करने को अस्वीकार करेंगे। उसे यह भी पता था कि यह उसी अस्वीकार के द्वारा ही वह पाप के दंड का भुगतान करेगा और संसार को उद्धार प्रदान करेगा।

> *"शब्द संसार में था, और संसार उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, किंतु संसार ने उसको न जाना।*
> *वह अपने निज लोगों के पास आया और उसके अपनों ने ही उसको स्वीकार नहीं किया।*

*किंतु **जितनों ने** उसको स्वीकार किया और **उसके नाम पर विश्वास किया**, उनको परमेश्वर की सन्तान बनने का अधिकार दिया।"* (यूहन्ना 1:10-12)

यीशु मसीह सब लोगों के लिए उद्धारकर्ता है, लेकिन केवल वे ही "जो ***उसके नाम*** में विश्वास करते हैं" (इसका अर्थ, वह कौन है और पापियों को बचाने के लिए उसने क्या किया उसमे) उन्हें ही केवल *"परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया।"*

मेरे मित्र, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और उसके पुत्र समान आपके जीवन को मूल्यवान समझता है। फिर भी, विश्वास करने के लिए वह आप पर जबरदस्ती नहीं करेगा।

चुनाव करना वह आप पर छोड़ देता है।

*"परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो मनुष्य **उसके पुत्र पर विश्वास करेगा** वह नष्ट नहीं होगा, लेकिन शास्वत जीवन पाएगा।"* (यूहन्ना 3:16)

अब कोई संभ्रम नहीं

यीशु मृत्यु में से जीवित हो उठा उसी दिन, कुछ संभ्रम में पड़े शिष्यों के साथ वह चला और बातें की जो अब तक समझ नहीं पाए थे कि मसीहा के लिए लहू बहाना और मृत्यु में से फिर जीवित होना क्यों आवश्यक है। यीशु ने उनसे कहा :

***"'निर्बुद्धियों! तुम कितने मन्दमति हो! भविष्यद्वक्ताओं के सब कथनों पर विश्वास क्यों नहीं करते?** क्या यह अनिवार्य नहीं था कि मसीह ये दुःख उठाता और अपनी महिमा में प्रवेश करता?' तब यीशु ने मूसा एवं समस्त भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ कर, संपूर्ण पवित्रशास्त्र में **अपने** विषय में लिखी बातों की व्याख्या उनसे की।"*
(लूका 24:25-27)

आखिर उनका भ्रम दूर हो गया। वे इतने अंधे कैसे हो सकते थे? मसीहा अस्थायी राजनीतिक शत्रु को नष्ट करने नहीं आया था; वह आया था कि विजय प्राप्त करे उससे भी निर्दयी शत्रु पर: शैतान, पाप, मृत्यु और नरक!

उसी दिन बाद में, यरूशलेम में जहां ऊपर के कमरे में वे एकत्र थे यीशु उसके शिष्यों को प्रकट हुआ। उसने उन्हें किलों से-छिदे हुए हाथ और पैर दिखाए, उनके साथ खाया, और उन्हें कहा :

" 'जब मैं तुम्हारे साथ था तब मैंने तुमसे कहा था कि ***मूसा की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों और भजन-संहिता में जो कुछ मेरे संबंध में लिखा है, वह सब पूरा होना अनिवार्य है।*** *' तब यीशु ने शिष्यों की बुद्धि खोल दी कि वे पवित्रशास्त्र को समझ सकें, और उनसे कहा, 'पवित्रशास्त्र में यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो उठेगा। और यरूशलेम से आरंभ कर सभी जातियों में उसके नाम से हृदय-परिवर्तन और पाप-क्षमा का शुभ संदेश सुनाया जाएगा। तुम इन बातों के गवाह हो।' "* (लूका 24:44-48)

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें राष्ट्रों के सामने *"इन बातों के गवाह"* बनना हैं। उनका संदेश यह स्पष्ट था : *स्वर्ग से प्रभु ने पाप के दंड का भुगतान किया है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। जहां कहीं परमेश्वर के सम्मुख पछतावा है* (हृदय-परिवर्तन) *और प्रभु यीशु मसीह और उसके उद्धार के कार्य में विश्वास* (हृदय-स्तर पर भरोसा) *है, परमेश्वर आपको क्षमा और अनंतकाल का जीवन प्रदान करेगा।*

विश्राम लेने के लिए आमंत्रण

सृष्टि निर्माण के सातवे दिन पर विचार करो।

परमेश्वर ने उस दिन क्या किया? उसने विश्राम किया।

उसने विश्राम क्यों किया? उसने विश्राम किया क्योंकि उसका *"कार्य **समाप्त** हो गया था .... परमेश्वर ने उसके कार्य को समाप्त किया जो उसने किया था, और **उसने उस समस्त कार्य से जिसे उसने पूरा किया था**, सातवे दिन विश्राम किया।"* (उत्पत्ति 2:1-2)

परमेश्वर के सृष्टि निर्माण के कार्य में और कुछ भी जोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। *यह पूरा हुआ था*। इसी तरह परमेश्वर के उद्धार के कार्य में और कुछ भी जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। *"यह पूरा हुआ है!"*

जैसे परमेश्वर ने सृष्टि निर्माण के उसके कार्य से विश्राम किया और आनंद मनाया, वैसे ही वह आपको और मुझे आमंत्रित करता है कि उद्धार के उसके पूरे किए हुए कार्य मे विश्राम करे और आनंद मनाए। *"क्योंकि जो परमेश्वर के **विश्राम स्थल में प्रवेश करता है**, वह स्वयं **अपने कार्यों से विश्राम करता है, जैसे परमेश्वर ने अपने कार्यों से विश्राम किया।**"* (इब्रानियों 4:10)

जबकि संसार भर के दस हजार धर्म चिल्लाते हैं, "कुछ भी समाप्त नहीं हुआ है। यह करो! वह करो! कठिन प्रयास करो!" यीशु कहता है, *"हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; **मैं तुम्हे विश्राम दूंगा।**"* (मत्ती 11:28)

परमेश्वर ने आपके लिए जो किया है उसमे आप विश्राम और आनंद कर रहे हैं क्या?

प्रभु के साथ चालीस दिन

प्रभु यीशु ने मृत्यु से जी उठने के बाद में उसके शिष्यों के साथ चालीस दिन बिताए। उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय में बहुत सी बातें सिखाई। वे उसे निहारते थे और उसके पुनरुत्थित शरीर को स्पर्श करते थे—एक स्थायी, महिमामयी शरीर समय और स्थान से मुक्त—उसी प्रकार का शरीर सभी सच्चे विश्वासी एक दिन प्राप्त करेंगे।

शिष्य प्रभु यीशु के साथ चले, बातचीत की, और भोजन किया। उसने उन्हें याद दिलाया कि वह जल्द ही उन्हें छोड़कर जाएंगे, लेकिन यह कि पिता उनके भीतर रहने के लिए पवित्र आत्मा भेजेगा। उसका आत्मा संसार के राष्ट्रों को उनकी गवाही देने में मार्गदर्शन करेगा और शक्तिशाली करेगा, फिर एक दिन—यीशु—पृथ्वी पर वापस आएगा कि संसार का पूर्ण धार्मिकता से न्याय करे।

यीशु के पुनरुत्थान के बाद चालीसवे दिन, यरूशलेम के पूर्व दिशा में जैतून पर्वत पर वह उसके शिष्यों को मिला।

यह समय था की उसके *"पिता के घर"* वापस जाए। (यूहन्ना 14:2)

स्वर्गारोहण

"प्रेरितों के साथ भोजन करते समय यीशु ने उन्हें यह आदेश दिया, 'यरूशलेम से बाहर न जाना, वरन मेरे पिता की उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी है: यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, लेकिन थोड़े ही दिन पश्चात् तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।' .... ***लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे और यरूशलेम में, समस्त यहूदा प्रदेश में, सामरी प्रदेश में और पृथ्वी के सीमान्त तक मेरे साक्षी होंगे।'*** *इतना कहने के पश्चात् यीशु उनके देखते-देखते* ***ऊपर उठा लिए गए*** *और बादल ने उसे उनकी आंखो से छिपा लिया। जब यीशु के स्वर्गारोहण के समय वे लोग आकाश की ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे तब एकाएक उज्ज्वल वस्त्र पहिने हुए दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए। वे उनसे बोले, 'गलीली पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो?* ***यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग में उठा लिए गए हैं, इसी प्रकार आएंगे, जैसे तुमने उनको स्वर्ग में जाते हुए देखा है।'"*** (प्रेरितों के काम 1:4-11)

स्वर्ग का विजय उत्सव

इस प्रकार, जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, परमेश्वर-पुत्र "ऊंचे पर चढ़ गया।"[228] एकमात्र जिसने, तैंतीस वर्षों पहले, स्वेच्छा से स्वर्ग के दूतों से स्तुति होने के बदले में मनुष्यों से निंदा होने को स्वीकार किया था वह घर आ रहा था! लेकिन यहां पर उसके विषय में कुछ तो फरक था। वह जिसने मनुष्य को उसके स्वरूप में बनाया था वह अब मनुष्य का स्वरूप धारण किए हुए था।

पवित्रशास्त्र परमेश्वर पुत्र के स्वर्ग को वापस जाने के विषय में अधिक विस्तारपूर्वक प्रकट नहीं करता। लेकिन यह हमें पता है : यह एक महिमामयी घटनी थी!

हम स्वर्गदूतों के असंख्य मेजबान और आदम के छुड़ाए हुए वंशजों की कल्पना कर सकते हैं जो श्वास रोके हुए हैं क्योंकि प्रभु स्वर्ग के द्वार से अब प्रवेश ही करनेवाला था। वे उसे परमेश्वर-पुत्र और महिमा का प्रभु के रूप में अच्छी तरह से जानते थे, लेकिन अब वे उसे मानव-पुत्र और परमेश्वर के मेमना के रूप में मिलने वाले थे।

संपूर्ण स्वर्ग निस्तब्ध था।

अचानक ही तुरहियों के भव्य गीतों और दूतों की गर्जना की घोषणा के द्वारा निस्तब्धता भंग हुई : *"ओ द्वारो, मस्तक उन्नत करो! ओ स्थायी फाटको ऊंचे हो जाओ, जिससे महिमा का राजा प्रवेश करे।"* (भजन संहिता 24:7)

द्वार पूर्ण रूप से पुरे खुल गए और, स्वर्ग में गर्जन सा जयघोष था, वहां विजेता चल रहा था, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, शब्द, मेमना, युद्ध में घायल मानव-पुत्र—**यीशु**!

प्रशंसामय स्तुति स्वरों में से वह चल रहा था, पिता के राजासन की ओर जा रहा था। पीछे मुड़कर, उसने आदम के छुडाए हुए वंशजों के असंख्य जनसमूह को देखा। और फिर वह बैठ गया।[229]

विशेष कार्य पूरा किया था।

छुडाए हुए लोगों की सेना उसके सामने झुकती हैं और घोषणा करती है, मानो एक स्वर से:

"बलि किया हुआ मेमना ...योग्य है!" (प्रकाशितवाक्य 5:12)

कितना अद्भुत उत्सव वह रहा होगा! अद्भुत उत्सव वह है। यह उत्सव है जो कभी भी समाप्त नहीं होगा।

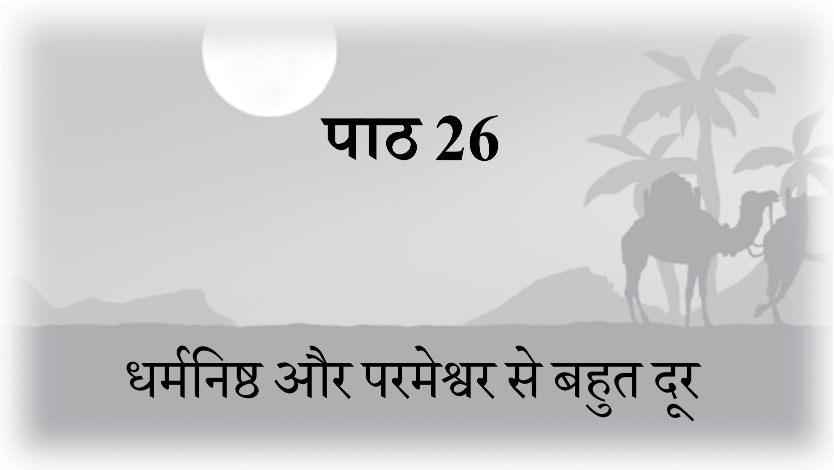

पाठ 26

धर्मनिष्ठ और परमेश्वर से बहुत दूर

शायद आप ने यह कहावत सुनी होगी : दीर्घदर्श हमेशा ही 20/20। 20/20 उपाधि यह स्पष्ट दृष्टि के लिए उत्तरी अमरीकी दृष्टमिति का मानक है। अगर आपकी दृष्टि 20/20 है, तो आपको चश्मे की आवश्यकता नहीं है।

दूरदर्शिता का लेनादेना जो कुछ पहले हो गया है उसकी ओर देखना है। दूरदर्शिता हमें कार्य के कार्यवाही को देखने देता है जो हम अथवा किसी ओर ने किया होता, लेकिन केवल बहुत देर हो जाने के बाद। इस तरह की दूरदर्शिता बहुत मददगार नहीं है।

हालांकि, जब कई शताब्दियों में परमेश्वर द्वारा प्रकट की गई कहानी और संदेश को समझने की बात आती है, तो दूरदर्शिता अत्यधिक सहायक होती है। यह हमें मुख्य रुकावटों को पराजित करने और गलत से सत्य का फर्क करने देता है। इसी कारण से यीशु ने उसके शिष्यों को कहा :

> *"**लेकिन तुम्हारी आंखे धन्य हैं, क्योंकि वे देखती हैं**; और तुम्हारे कान धन्य हैं, क्योंकि वे सुनते हैं। मैं तुमसे सच कहता हूं : **अनेक भविष्यद्वक्ताओं और धर्मात्माओं ने चाहा कि जो बातें तुम देख रहे हो, देखें,** पर वे न देख सके; और जो बातें तुम सुन रहे हो, सुने पर वे न सुन सके।"* (मत्ती 13:16-17)

मसीहा के पृथ्वी पर पहली बार आने के बाद जीवित रहने वालों के रूप में, हम धन्य हैं कि हम इतिहास में पीछे मुड़कर देख सकते हैं, पूर्ण पवित्रशास्त्र का अध्ययन कर सकते हैं, और परमेश्वर की सिद्ध योजना को स्पष्ट रूप से देखने में समर्थ होते हैं।

मन में इस विचार के साथ, और पवित्रशास्त्र के द्वारा हमारी यात्रा में जो सब कुछ हमने देखा हैं उसका विचार करते हुए, आइए हम फिर एक बार उत्पत्ति की पुस्तक की ओर जाए।

कैन और हाबिल को दूरदर्शिता के साथ देखना

उत्पत्ति का चौथा अध्याय स्पष्ट है : कैन और हाबिल दोनोंही पाप की समस्या के साथ जन्मे थे। जब वे वयस्क हुए, प्रत्येक ने परमेश्वर की आराधना करने का प्रयास किया लेकिन परमेश्वर ने केवल एक का ही स्वीकार किया गया।

> *"प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की। पर कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर दिया।"* (उत्पत्ति 4:4-5)

बाइबल की दूरदर्शिता के साथ, यीशु जो पापियों का उद्धारकर्ता की कहानी सुनने के बाद, यह समझना आसान हैं कि क्यों, हजारों वर्षों पहले, *"प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर* ***कृपा-दृष्टि की****। पर कैन और उसकी भेंट को* ***अस्वीकार कर*** *दिया।"*

हाबिल के वध किए हए मेमने ने यीशु, परमेश्वर के मेमने की ओर इशारा किया, जो पापियों के लिए अपना लहू बहाएगा। कैन की सब्जियों ने यीशु की ओर इशारा नहीं किया।

जब हाबिल भविष्य की ओर देख रहा था कि क्या होगा, आज हम पीछे मुड़कर देखते हैं कि यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा हमारे लिए क्या पूरा किया।

> *"......यीशु मसीह का लहू हमें सब पाप से* ***शुद्ध करता*** *है।"* (1 यूहन्ना 1:7)

उद्धार करनेवाला विश्वास

परमेश्वर ने हाबिल को क्षमा किया उसी तरह वह आज पापियों को क्षमा करता हैं। जब कभी पापी उसका तथा उसकी अधार्मिकता स्वीकारते और प्रभु और उसके उद्धार में विश्वास रखते हैं, उस व्यक्ति को क्षमा किया जाता है और उसे परमेश्वर की धार्मिकता का पुरस्कार दिया जाता है। इस तरह यह प्रत्येक युग के सभी भविष्यद्वक्ताओं और विश्वासियों के साथ होता हैं।

उदाहरण के लिए, जब हमने पहले ही देखा है, अब्राहम ने *"प्रभु पर* ***विश्वास किया****, और प्रभु ने अब्राहम के इस विश्वास को उनकी* ***धार्मिकता*** *माना"* (उत्पत्ति 15:6)। ऐसा कहना की अब्राहम ने *"प्रभु में विश्वास किया,"* इसका अर्थ अब्राहम को आत्मविश्वास था की परमेश्वर ने जो कहा था वह सत्य है। अब्राहम ने परमेश्वर के शब्द पर भरोसा किया। उसका विश्वास केवल परमेश्वर में था।

अब्राहम भविष्यद्वक्ता की तरह, राजा दाऊद ने भी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया। हर्ष से भरे हृदय से, दाऊद ने लिखा, *"धन्य है वह मनुष्य, जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया। धन्य है वह मनुष्य, जिसपर प्रभु अधर्म का अभियोग नहीं लगता, और*

जिसके ह्रदय में कोई कपट नहीं है" (भजन संहिता 32:1-2)। दाऊद ने यह भी पुकार के कहा, *"निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरा अनुसरण करेंगी; और मैं प्रभु के घर में युग-युगान्त निवास करूंगा।"* (भजन संहिता 23:6)

यीशु आने से पहले जिन व्यक्तियों ने जीवन व्यतीत किया था उनका, हाबिल, अब्राहम, और दाऊद समान लोगों के पाप का कर्ज ढांपा गया था क्योंकि उन्होंने उनका विश्वास प्रभु और उसकी योजना में रखा था। लेकिन जब मसीह की मृत्यु हुई, तब उनके पाप का कर्ज अभिलेख पुस्तकों से हमेशा के लिए रद्द किया गया था।

आज, हम मसीह के समय के बाद में जी रहे हैं। परमेश्वर का सुसमाचार यह है कि यदि आप उस पर विश्वास करते है जो प्रभु यीशु ने अपनी वैकल्पिक मृत्यु और विजयी पुनरुत्थान के द्वारा आपके लिए किया, तो परमेश्वर अपनी अभिलेख पुस्तकों से आपके पाप का कर्ज रद्द कर देगा, आपके खाते को मसीह की धार्मिकता के साथ जमा करेगा, और आपको "प्रभु के घर में हमेशा के लिए" जगह की गारंटी देगा।

यह सब कुछ और और बहुत कुछ आपका है अगर आप विश्वास करते हैं।

प्रभु यीशु में विश्वास करना यह आपका पूर्ण विश्वास उसमे और उसने आपके लिए जो किया है उसमे रखना है। विश्वास का अर्थ उत्तम रीति से समझने के लिए, कल्पना कीजिए बहुत सी कुर्सियों के साथ कमरे में चल रहे हैं। कुछ स्पष्ट रूप से टूटी हुई हैं। अन्य कमजोर है और टूटने ही वाली हैं। कुछ अच्छी दिख रही हैं, लेकिन नजदीक से देखने पर आप जानते हैं कि उनमे भी कुछ कमजोरिया हैं और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उस क्षण जब आप सोच रहे हैं की कमरे में कोई भी मजबूत कुर्सी नहीं है, तब आपकी आंखे एक कुर्सी पर पड़ती है जो मजबूत और अच्छी-बनावट की है। आप उस तक जाते हो और बैठ जाते हैं। आप आपका विश्वास उसमे रखते हैं। आप उस पर विश्राम करते हैं। आपको पता है यह आपको संभालेगी और आपको निराश नहीं करेगी।

यीशु मसीह उन्हें कभी भी निराश नहीं करेगा जो उसमे और उसके पूर्ण कार्य पर भरोसा करते हैं।

प्राणघातक विश्वास

हमारा विश्वास केवल लगभग उस लक्ष्य जैसा है जिसमे उसे रखा जाता है। प्रत्येक को विश्वास है, लेकिन सभी को विश्वास का समान लक्ष्य नहीं हैं।

हाबिल ने उसका विश्वास परमेश्वर और क्षमा और धार्मिकता के उसके मार्ग में रखा।

कैन ने उसका विश्वास उसकी अपनी कल्पना और स्वयं-प्रयासों में रखा।

कैन और सभी जो परमेश्वर के रोग निदान और उनके पाप की समस्या पर उपाय का अस्वीकार

करते हैं उनकी तुलना सपेरे से की जा सकती हैं जिन्हें मैंने टेलीविजन पर देखा है। एक मनुष्य को एक बड़े कोब्रा ने कांटा था, लेकिन उसने जहर-प्रतिबंधक इंजेक्शन का अस्वीकार किया जो उसकी जान बचा सकता था। उसने सोचा वह काफ़ी बलशाली है कि सांप के जहर से प्रतिरोध कर सकता है।

इस मनुष्य को विश्वास था, मजबूत विश्वास, व्यर्थ विश्वास। डॉक्टर के इलाज के बजाय उसने उसका विश्वास अपने आप में रखा था।

उसके निर्णय ने उसकी जान ले ली।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। परमेश्वर के उद्धार के बजाय, अपना विश्वास अपने स्वयं प्रयास में रखना, यह *"कैन के मार्ग से जाना"* है और *"हमेशा के लिए घोर अंधकार"* का सामना करना है (यहूदा 1:11, 13)। कैन की कल्पना, कि एक व्यक्ति स्वयं-प्रयास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह में उसके मार्ग को प्राप्त कर सकता है, यह हमेशा से ही परमेश्वर के उद्धार की योजना के विरोध में रहा है।

फिर भी आज तक बहुत सारे लोग "कैन के मार्ग" का अनुसरण करते है।

मनुष्य का मापक

एक दिन कुछ धार्मिक यहूदियों ने यीशु से पूछा, *"'परमेश्वर के कार्य करने के लिए **हम क्या करें**?'* यीशु ने उत्तर दिया, *'परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है, उस पर **विश्वास करो**'"* (यूहन्ना 6:28-29)। ये पुछताछ करनवाले "काम" करना चाहते थे। यीशु ने उन्हें कहा कि "उस पर विश्वास करे।"

भ्रम जो इन यहूदियों ने व्यक्त किया वह दूर दूर तक फैला हुआ है।

मेरी बहन और उसका पति पापुआ न्यू गिनिया के पहाड़ी देश में रहते है। आदिवासी जो अलग अलग रहते हैं उन्हें व्यवहारिक मार्ग से वे सहायता करते है और उन्हें एक सत्य परमेश्वर और उसके अनंतकाल के जीवन के संदेश के विषय में सिखाते है। यहां पर उनके एक सहयोगी की टिप्पणी है, जो एक मनुष्य के साथ हुए बातचीत को कहती है जो "परमेश्वर की बातचीत" (जैसे पापुआ के लोग बाइबल को कहते है) सुन रहा था।

> "यीशु के विषय में *'जीवन की रोटी'* ऐसा सुनने के बाद, [मनुष्य] कहा, 'यह कितना आसान है, मैंने मेरे संपूर्ण जीवन भर कार्य किया है कि स्वर्ग को जाने के मार्ग का प्रयास करू और उसे प्राप्त करू और परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध रहू, और यहां आप कह रहे हो कि हमें केवल इतना ही करना है कि यीशु में विश्वास रखना है?'

मैंने उसे कहा कि यीशु ने क्या कहा उसे फिर से सुने, *'मैं जीवन की रोटी हूं'* (यूहन्ना 6:35)। फिर मैंने उसे यूहन्ना 6:29 फिर से पढ़ने को कहा। *''परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है,* ***उस पर विश्वास करो।*** *'* उसने यूहन्ना 3:16 भी पढ़ा: *'जो मनुष्य उसके* ***पुत्र पर विश्वास करेगा*** *वह नष्ट नहीं होगा, लेकिन शास्वत जीवन पाएगा।'* मैंने उसे पूछा कि क्या परमेश्वर को हमारी सहायता की आवश्यकता है, जैसे कि परमेश्वर हमें बचाने के लिए पर्याप्त बलशाली नहीं थे।

वह मुस्कुराया, 'अवश्य ही नहीं! परमेश्वर को हमारी सहायता की आवश्यकता नहीं है।'

'तो फिर, परमेश्वर के वचन के अनुसार, क्या परमेश्वर को आपको स्वर्ग में ले जाने के लिए आपके कामों की आवश्यकता है?'

मनुष्य ने अपना सिर हिलाया और गहरा विचार करते हुए चला गया।"

परमेश्वर के संदेश की स्पष्टता के बावजूद, संसार भर में लोग, एकांत में रहनेवाले आदिवासी से लेकर आराधनालयों, मंदिरों और मस्जिदों में सभ्य सदस्यों तक, इस कल्पना से जुड़े हुए है कि न्याय के दिन, परमेश्वर उनके अच्छे और बुरे कार्य एक बड़े तराजू में तोलनेवाला है। वे कल्पना करते हैं कि अगर वे मापक के अच्छे-कार्य की तरफ कम से कम 51% तक आ गए, तो स्वर्ग में उनका स्वागत होगा, लेकिन अगर मापक 51% तथा बुरे-काम- की तरफ अधिक प्रकट करता हैं, तो उन्हें कारागार में भेजा जाएगा।

अच्छे काम बुरे कामों पर भारी पड़ने की ऐसी पद्धति मनुष्य के पृथ्वी पर के न्यायालय में कभी

उपयोग नहीं की गई। न ही यह परमेश्वर के स्वर्गीय न्यायालय में उपयोग की जाएगी।

अच्छी तरह सोच लो।

क्या आप वास्तव में चाहते हैं कि आपका अनंत भाग्य आपकी स्वयं की अच्छाई और प्रतिबद्धता पर आधारित हो?

आप धन्यवादी हो सकते है कि यह *मापक पद्धति* बाइबल में **नहीं** पायी जाती है।

परमेश्वर के मानक

परमेश्वर को सिद्धता की आवश्यकता है।

केवल वे जो परमेश्वर की धार्मिकता का पुरस्कार प्राप्त करते हैं वे उसके साथ निवास कर सकते हैं। अगर न्याय के दिन आपके लेख पत्र में पाप का एक भी दाग मिलता है, तो आप स्वर्ग में प्रवेश नही करोगे।

परमेश्वर सिद्ध धार्मिकता की मांग करता है।

जैसे हमने पहले सोचा था, पाप परमेश्वर के लिए तिरस्कृत है जैसे हमारे घर में सूअर का सड़नेवाला शव हमारे लिए होगा। क्या सड़ी-लाश पर इत्र छिड़कने से उसकी अशुद्धता और दुर्गंध दूर हो जाएगी? नहीं! न ही कितने भी मात्रा में धार्मिक विधियां उस अशुद्धता को दूर कर सकते हैं जो हमें परमेश्वर के लिए अमान्य करते है।

एक पाप भी परमेश्वर को असहनीय है जैसे जहर की एक बूंद हमारी चाय में हमारे लिए है। जहर भरे चाय में और ज्यादा पानी डालने से क्या उसके प्राणघातक गुणों को निकाल सकेंगे? नहीं! न ही कितने भी अच्छे काम हमें शुद्ध कर सकते और हमें अनंतकाल के न्याय से बचा सकते है?

हमारे पाप के कर्ज से छुटकारा पाना अथवा परमेश्वर के सम्मुख हमें धर्मी ठहराने की बात आती है, तो हम असहाय हैं। लेकिन प्रभु को धन्यवाद हो हम आशाहीन नहीं हैं। उसने हम सभी को उसकी पवित्रता और सिद्ध उपस्थिति में हमेशा के लिए जीवन व्यतीत करने के लिए जिन सब बातों की आवश्यकता है उसे प्रदान किया हैं।

विश्वास और कार्य

उन सभी को जो प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जिसने पाप के दंड को पूर्ण रूप से भुगतान किया है, परमेश्वर कहता है: *"अनुग्रह [करुणा के लिए अपात्र] से ही विश्वास [मसीह ने आपके लिए जो किया है उसमे भरोसा करना] द्वारा तुम्हारा उद्धार हुआ है। इसके स्त्रोत तुम नहीं, यह परमेश्वर का दान है –यह कर्मों के कारण नहीं हुआ कि कोई अभिमान करे।"* (इफिसियों 2:8-9)

स्वर्ग में कोई डिंग नहीं मारेगा।

उद्धार यह *"अनुग्रह द्वारा"* है। उद्धार यह *"परमेश्वर का दान"* है। यह दान जिसके हम पात्र नहीं है वह है जो कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारना है, प्राप्त करने का कोई पदक नहीं, *"ताकि कोई उसमे अभिमान करे।"* फिर भी, दुखद रूप से, अधिकतम धर्मी लोग इस विषय पर भ्रम में रहते हैं, मध्य पूर्व के इस संवाददाता समान :

भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

विश्वास में सबसे महत्वपूर्ण बातें ये एक सत्य परमेश्वर में विश्वास रखना, अच्छे कार्य करना, बुरे कार्यो को टालना हैं। ये हमारे उद्धार हैं।

यदि अनंतकाल के न्याय से उद्धार और परमेश्वर के साथ निवास करने का अधिकार हमारे अपने प्रयासों पर आधारित होता, तो हमें कभी यह कैसे पता होता कि स्वर्ग में प्रवेश पाने योग्य होने के लिए हमने काफ़ी अच्छा किया अथवा पर्याप्त मात्रा में बुराई से दूर रहे हैं? हम उद्धार की निश्चितता कभी भी नहीं कर सकते थे।

करीबन तीन हजार वर्षों पहले, योना भविष्यद्वक्ता ने घोषित किया था : *"निस्संदेह प्रभु ही उद्धार करता है।"* (योना 2:9)

इसके लिए परमेश्वर की स्तुति हो !

> *"अनुग्रह से ही* ***विश्वास द्वारा*** *तुम्हारा उद्धार हुआ है। इसके स्त्रोत तुम नहीं, यह परमेश्वर का दान है –यह* ***कर्मों के कारण नहीं हुआ*** *कि कोई अभिमान करे।"* (इफिसियों 2:8-9)

परमेश्वर का वचन स्पष्ट है : अपने आपको पाप के दंड से बचाने के लिए अपने स्वयं के कामों पर भरोसा करना यह परमेश्वर के उद्धार के दान का अस्वीकार करना है।

तो पाप को टालना और अच्छे कामों को करना यह कहा ठीक बैठता है? अगला वचन हमें कहता है :

> *"हम परमेश्वर की रचनाएं हैं, और मसीह यीशु में रचे गए हैं जिससे उन* ***भले कामों*** *को पूर्ण करें जो परमेश्वर ने पहले से तैयार किए हैं।"* (इफिसियों 2:10)

फर्क स्पष्ट है। *भले कामों* ***द्वारा*** *हमारा उद्धार नहीं हुआ हैं। भले कामों* ***के लिए*** *हमारा उद्धार हुआ हैं।*

> *"हमारा महान परमेश्वर एवं अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह.....ने हमें* ***बुराई से मुक्त करने के लिए*** *अपने आपको दे दिया और हमें पवित्र कर अपने निज लोग बना लिया जो* ***सत्कर्म करने के लिए उत्सुक रहते हैं।"*** (तीतुस 2:13-14)

इस पुस्तक की प्रस्तावना मेरे मित्र को एक गाँव के बुजुर्ग की टिप्पणी के साथ आरंभ हुई : "क्योंकि जो भले काम आप ने किए है, आप स्वर्ग जाने के लायक हो...."

परमेश्वर का वचन इस मनुष्य की सोच की गंभीर गलती को स्पष्ट दिखाता है।

कोई भी उनके अपने "भले कामों" के आधार पर "स्वर्ग जाने को लायक" नहीं है। लेकिन वे जिन्होंने परमेश्वर के अनंतकाल के जीवन का अद्भुत दान प्राप्त किया हैं वे बुराई को टालना चाहेंगे और परमेश्वर की महिमा और औरों की आशीष के लिए भले काम करेंगे।

जड़ यह फल नहीं है

भले काम उद्धार के लिए कभी भी **आवश्यकता नहीं** थे, लेकिन वे हमेशा से ही उद्धार के **परिणाम थे**। उदाहरण के लिए, यीशु ने उसके शिष्यों को सिखाया :

> *"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं : एक दूसरे से प्रेम करो-जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसा ही तुम एक दूसरे से प्रेम करो। यदि तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।"* (यूहन्ना 13:34-35)

यीशु ने लोगों को जिस तरह प्रेम किया और उनका ध्यान रखा यह उसी तरह लोगों के लिए प्रेम करना और उनका ध्यान रखना क्या उद्धार के लिए पूर्व शर्त है? नहीं। अगर ऐसा होता, तो हम में से कोई भी स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता था क्योंकि यीशु ही केवल एकमात्र है जिसने कभी अन्य व्यक्तियों को पूर्ण रूप से और हमेशा प्रेम किया था।

क्या सच्चे विश्वासियों के जीवन में लोगों से प्रेम करना और उनकी देखभाल करना एक विशेषता होनी चाहिए? बिलकुल। *"**यदि** तुम एक दूसरे से प्रेम करोगे तो इसी से **सब लोग जानेंगे** कि तुम मेरे शिष्य हो।"*

परमेश्वर के सच्चे लोग उनके विश्वास को दिखाते हैं जिस तरह वे जीवन व्यतीत करते हैं।[230]

यह महत्वपूर्ण है कि हम उद्धार के फल से उद्धार के जड़ में फर्क करें। मसीह में विश्वास करनेवालों ने पवित्र, प्रेमी, निस्वार्थी और अनुशासित जीवनों (फल) के अनुसार प्रभु को उसके उद्धार (जड़) के दान के लिए उनका धन्यवाद व्यक्त करना चाहिए।

परमेश्वर के लोग उसका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए भले काम नहीं करते; वे भले काम करते हैं क्योंकि जिसके वे लायक नहीं वह अनुग्रह उसने उन्हें दिया है।

झूठा धर्म

पहले "स्वयं-ही करे" धर्म का संस्थापक कैन है। बलिदान के मेमने के लहू के आधार पर परमेश्वर के पास जाने के बजाय, वह उसके स्वयं की कल्पनाएं और प्रयासों के साथ आया। इस प्रकार, कैन की प्रार्थनाएं परमेश्वर के लिए अपमानजनक और घृणास्पद थीं।

> *"जो मनुष्य व्यवस्था-पाठ को नहीं सुनता, **उसकी प्रार्थना भी परमेश्वर नहीं सुनता।**"*
> (नीतिवचन 28:9)

परमेश्वर की व्यवस्था में पाप को ढांपने के लिए मेमने का अथवा किसी योग्य बलिदान का लहू बहाने की आवश्यकता होती है। क्योंकि कैन परमेश्वर के पास आवश्यकता अनुसार नहीं आया, "उसकी प्रार्थना भी घृणित [तिरस्कृत] है।" कैन के पास धर्म था, लेकिन वह झूठा धर्म था। उसके चढ़ावे ने प्रतिज्ञा किए गए उद्धारकर्ता और क्रूस पर उसकी मृत्यु की ओर इशारा नहीं किया। परिणाम स्वरूप :

> *"प्रभु ने हाबिल तथा उसकी भेंट पर कृपा-दृष्टि की। पर कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार कर दिया। इसलिए कैन बहुत नाराज हुआ। उसका मुंह उतर गया। प्रभु ने कैन से पूछा, 'तू क्यों नाराज है? क्यों तेरा मुंह उतरा हुआ है? यदि तू भलाई करे तो के मैं तुझे ग्रहण न करूंगा?"* (उत्पत्ति 4:4-7)

प्रभु ने कैन के साथ दयापूर्ण बातचीत की, उसे समय दिया कि पश्चाताप करे, कि उसके अधर्मी कामों से मन फिराएं और परमेश्वर की धार्मिक योजना के लिए समर्पित हो जाए।

कैन केवल क्रोध में आया। मेमने के भयावह लहू के लिए स्वयं-प्रयास के अपने सुंदर धर्म से वह व्यवहार करनेवाला नहीं था। परमेश्वर के नाम में, वह उसके मार्ग से काम करनेवाला था।

और युही वह मार्ग उसे कहा ले गया?

विरोधी धर्म

> *"कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, 'आ, हम खेत को चलें।' जब वे खेत में थे **तब कैन अपने भाई हाबिल के विरुद्ध उठा। उसने हाबिल की हत्या कर दी।"*** (उत्पत्ति 4:8)

कैन, को बहुत ही घमंडी लगा कि पाप-बलि के लिए मेमने का वध करे, पर उसे इतना घमंडी

नहीं लगा कि अपने भाई का वध करे।

कैन ने भविष्य में आनेवाले धर्म और राजनीतिक पद्धतियों के लिए एक चरण स्थित किया था जो उनका उपहास, सताव और वध भी करे जो उनकी व्यवस्था और परंपरा के आदेश को समर्पित होने का अस्वीकार करते हैं।

कैन समान, आज संसार भर में कई धर्मी लोग अपने धर्म के समर्थन में आक्रामकता और हत्या करने का प्रयोग करते हैं। उनके कृत्यों द्वारा, वे संसार को घोषित कर रहे हैं कि उनके विश्वास में वे कितने असुरक्षित हैं और उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के कार्य करने में वे कितना कम आत्मविश्वास रखते हैं।

अमरीका में रहनेवाले एक मनुष्य ने, जिसके साथ मेरा ई-मेल द्वारा अत्यधिक संवाद था, लिखा :

> भेजो विषय : ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> आखरी मनुष्य जिसने मेरे सम्मुख पवित्र भविष्यद्वक्ता की निंदा की उसने करीबन तीन सेकंडो बाद उसके सामने के दांत गवां दिए थें। मैंने इस वास्तविकता में बड़ा हर्ष किया था कि अगली बार जब वह निंदा करेगा तो वह तुतलाने के साथ होगा। मूर्तिपूजकों को हृदय परिवर्तन करना अथवा मरना है। समाप्त।

इस मनुष्य के शब्द और कृति प्रभु यीशु के तीव्र विरोध में है, जिसने कहा, *"लेकिन सुनने वालों, मैं तुमसे कहता हूं : **तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो**। जो तुमसे द्वेष करते हैं, उनकी भलाई करो। जो तुम्हें श्राप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो। जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो।"* (लूका 6:27-28)

इसी तरह, क्रूस पर, यीशु ने उनके लिए प्रार्थना की जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, ***"पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"*** (लूका 23:34)[231]

पछतावा न करनेवाला कैन

कैन की कहानी की पर वापस आते हुए, अपने भाई की हत्या करने के बाद, परमेश्वर ने कैन को उसके गलत विचार और बुरे मार्गों से पछतावा करने के लिए एक अवसर दिया।

> *"प्रभु ने कैन से पूछा, 'तेरा भाई हाबिल कहां है?' उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता। क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?' प्रभु ने कहा, 'यह तूने क्या किया? तेरे भाई का*

लहू भूमि से मुझे पुकार रहा है। अब तू भूमि की ओर से शापित है, जिसने तेरे भाई का लहू तेरे हाथ से स्वीकार करने के लिए अपना मुंह खोला है।' " (उत्पत्ति 4:9-11)[232]

कैन ने उसके पाप को मानने और परमेश्वर के पास मेमने के लहू के साथ नम्रता से जाने का अस्वीकार किया। उसके बदले में, *"कैन प्रभु के सम्मुख से चला गया।"* (उत्पत्ति 4:16)

कैन ने कभी भी पछतावा नहीं किया। परमेश्वर के मार्ग के अधीन होने के बजाय, वह अपने स्वयं की कल्पनाओं के अनुसार ही चलता रहा। कैन ने एक बढ़नेवाली संस्कृति की स्थापना की, लेकिन यह समाज सृष्टिकर्ता परमेश्वर को सच्चाई में अधीन होने से रहित था।[233] कैन समान, उसके वंशज आत्मकेन्द्रित जीवन व्यतीत करने के स्वयं-विनाश के मार्ग पर तेजी से जा रहे थें।

उत्पत्ति का चौथा अध्याय लामेक, कैन से छटवी पीढ़ी के वंशज, की कहानी को भी अभिलिखित करता है। उसके वंशजों समान, लामेक, अहंकार, वासना, बदला और खुनी मनुष्य था। उसके पुत्रों ने विज्ञान और कला में बहुत अधिक विकास किया था। उन्हें बहुत सी बातों का बड़ा ज्ञान था, लेकिन परमेश्वर को नहीं जानते थें।

परमेश्वर के उद्धार के मार्ग से ही लोग दूर नहीं हुए थें; परमेश्वर के मार्ग अनुसार जीवन व्यतीत करने से भी दूर हो गए थें।

पछतावा न करनेवाली मानवजाति

कैन के केवल नौ पीढ़ियों बाद, प्रभु को मानवजाति के इस मूल्यांकन को देना पड़ा:

*"प्रभु ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य का दुराचार बढ़ गया है, और उसके मन के सारे विचार **निरन्तर बुराई के लिए ही** होते हैं।"* (उत्पत्ति 6:5)

भविष्यद्वक्ता नूह के समय में, केवल वह और उसका परिवार ही पृथ्वी पर वे लोग थे जो अब भी उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी पर भरोसा रखे हुए थें। मनुष्य का परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के हठीले अस्वीकार ने वैश्विक जल-प्रलय लाया। उसके अनुग्रह में, परमेश्वर ने बचने का मार्ग प्रदान किया, लेकिन केवल आठ लोगों ने ही स्वयं उसका लाभ उठाया। नूह और उसकी पत्नी, और उनके पुत्र शेम, हाम और याफत, उनकी पत्नियों साथ, वे ही केवल थे जिन्होंने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास किया था। (उत्पत्ति 6-8)

*"**विश्वास द्वारा** नूह ने अदृश्य भविष्य के संबंध में चेतावनी पाई **और श्रद्धापूर्वक** अपने परिवार की रक्षा के लिए जहाज बनाया। इस प्रकार नूह ने संसार को दोषी सिद्ध किया, और उस धार्मिकता का उत्तराधिकारी हुआ जो **विश्वास से** मिलती है।"* (इब्रानियों 11:7)

जब आज बहुत सारे वैज्ञानिक वैश्विक जल-प्रलय[234] के बाइबल के लेख की निंदा करते हैं, पर कोई भी इसका अस्वीकार नहीं करते कि आज के दिनों की सुखी भूमि का अधिकतम भाग कभी पानी से ढका हुआ था और यह कि समुद्र के लाखो अवशेष संसार के बड़े रेगिस्तान और पर्वत श्रेणियों से उत्खनन से प्राप्त हुए हैं। तूफानी बारिश के बाद मेघधनुष्य की उपस्थिति का न ही कोई अस्वीकार कर सकता है, भले ही संपूर्ण संसार को जल-प्रलय से फिर कभी विनाश नहीं करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा का चिन्ह ऐसा मानने से वे शायद मजाक उडाए।

विद्रोही और भ्रांत

जल-प्रलय के न्याय के बाद एक नई शुरुआत के साथ आशीषित होने के बाद भी, कुछ ही पीढ़ियों बाद, लोग उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के विरोध में विद्रोही हुए और उनकी अपनी कल्पनाओं का अनुसरण करने लगे। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने मानवजाति को कहा कि *"पृथ्वी को भर दो"* और फैल जाओ (उत्पत्ति 1:28; 9:1)। तो लोगों ने क्या करने का निश्चय किया था? उन्होंने प्रत्यक्ष में उसके उलटा करने का चुनाव किया।

> *"उन्होंने फिर कहा, 'आओ, हम **अपने लिए** एक नगर और **आकाश से बातें करने वाली एक मीनार बनाएं। इस प्रकार हम नाम कमा लें। ऐसा न हो कि हमें** समस्त पृथ्वी पर **तितर-बितर होना पड़े।** ' "* (उत्पत्ति 11:4)

उनकी योजना की आत्मकेन्द्रितता और विद्रोह पर ध्यान दें। उनके लिए परमेश्वर की शुभ और सिद्ध इच्छा के अनुसार चलने के बजाय, उन्होंने योजना बनाई कि उनके स्वयं के ज्ञान अनुसार चले और उनके स्वयं के नाम को उंचा करें। शायद उन्होंने सोचा कि *"आकाश से बातें करने वाली एक मीनार"* बनाने के द्वारा अगर और एक जल-प्रलय होता है तो वे सुरक्षित रह सकेंगे। वे आज के बहुत सारे धार्मिक लोगों समान हैं जो उनके अपने कठिन कामों द्वारा परमेश्वर के न्याय से बचने की आशा करते हैं।

परमेश्वर ने मनुष्य की योजना कि एक ही स्थान में रहे उसे रोक दिया। प्रभु जानता था कि ऐसी योजना तेजी से भ्रष्टाचार और मानवजाति के विनाश की ओर ले गई होती। उसको ध्यान में रखते हुए आज तक इतिहास में *"संपूर्ण पृथ्वी की एक ही भाषा और एकही बोली रहती थी"* (उत्पत्ति 11:1), आइए हम देखे की परमेश्वर ने क्या किया।

> *"प्रभु ने कहा, 'देखो, ये एक ही कौम के लोग हैं। इन सबकी भाषा भी एक है। यह तो उनके भविष्य के कार्य का आरंभ मात्र है। जो कार्य वे आगे करना चाहेंगे, वह उनके लिए असम्भव न होगा। इसलिए, आओ, हम उतरकर वहां उनकी भाषा में ऐसा संभ्रम*

*उत्पन्न करें कि वे एक दूसरे की भाषा समझ न सकें। इस प्रकार **प्रभु ने उनको वहां से समस्त पृथ्वी पर तितर-बितर कर दिया**। उन्होंने उस नगर का निर्माण करना छोड़ दिया। इस कारण उसका नाम '**बेबीलोन**' पड़ा; क्योंकि वहां प्रभु ने समस्त संसार की भाषा में संभ्रम उत्पन्न किया था। प्रभु ने वहीं से उन लोगों को समस्त पृथ्वी पर तितर-बितर किया।"* (उत्पत्ति 11:6-9)

एक दूसरे से बातचीत न कर पाने से, लोग, उनके नगर का निर्माण करना छोड़कर, संसार भर में फैल गए, थी वैसे ही जैसे परमेश्वर ने उनसे पहले करने का इरादा किया था। "इसलिए इसका नाम **बेबीलोन** पड़ा।"

बेबीलोन का अर्थ "संभ्रम"।

परमेश्वर की रूपरेखा का अस्वीकार करना यह हमेशा ही संभ्रम की ओर ले जाता है।

बहुसंख्य की गलतफहमी

नूह के समय के लोगों से और उनसे जिन्होंने बेबीलोन की मीनार बनाने का प्रयास किया उनसे एक सबक सीखना है वह यह है:

बहुसंख्य लोग गलत थे।

यद्यपि पापी लोग इस वास्तविकता में समाधान मानते हैं की अन्य लाखों उनके दृष्टिकोण समान हैं, फिर भी, परमेश्वर का न्याय उन पर हुआ। आज के दिन तक, बहुत सारे लोग सोचते हैं कि परमेश्वर और उसके संदेश की उनकी कल्पना यह सही होना चाहिए क्योंकि अन्य बहुत सारे उसी बातों में विश्वास करते हैं।

एक मनुष्य जो ब्रिटन में रहता था उसने एक टिप्पणी भेजी :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

यदि आपको नरक से बचना हैं तो सबसे तेजी से बढ़नेवाले धर्म के अनुसार चलो....

अगर तेजी से विकास अथवा बड़ी संख्या सच साबित हो सकती है, तो फिर कैन के वंशज, नूह के समय के लोग, और बेबीलोन निवासी भी अत्यधिक सही थे। लेकिन वे गलत, बहुत ही गलत थे।

*"सकरे फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि **विशाल** है वह फाटक और **चौड़ा** है वह मार्ग, जो विनाश की ओर ले जाता है। **बहुत** मनुष्य उससे प्रवेश करते हैं। लेकिन **छोटा** है*

*वह फाटक और **सकरा** है वह मार्ग, जो जीवन की ओर ले जाता है, पर **थोड़े** ही मनुष्य उसको पाते हैं।"* (मत्ती 7:13-14)

परमेश्वर की अजय योजना

पहले परिवार के विषय के कथानक की ओर लौटे, आइए हम देखे कैन ने हाबिल की हत्या करने के बाद क्या हुआ।

*"आदम ने पुनः अपनी पत्नी से सहवास किया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम '**शेत**' रखा; क्योंकि वह कहती थी, 'कैन ने हाबिल की हत्या की, इसलिए **परमेश्वर ने हाबिल के स्थान पर यह दूसरा बालक दिया है**।' शेत को भी एक पुत्र हुआ। उसने उसका नाम एनोश रखा। उसी समय से मनुष्य-जाती **प्रभु के नाम से आराधना करने लगी**।"* (उत्पत्ति 4:25-26)

परमेश्वर की इच्छा और रचना यह है कि लोग जिन्होंने उस पर भरोसा किया हैं वे विफल नहीं होंगे।

शेत नाम का अर्थ *"उसके स्थान पर नियुक्त"*। हव्वा ने समझ लिया कि परमेश्वर ने हाबिल, जिसे कैन ने मार डाला, उसके स्थान पर *"अन्य वंशज"* नियुक्त किया है। यह शेत के वंशजों द्वारा स्त्री का प्रतिज्ञा किया हुआ वंशज जन्म लेगा। मरियम, एक कुंवारी जो यीशु की माता हुई, वह शेत की वंशज थी। वह अब्राहम और दाऊद की भी वंशज थी, जैसे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी।

चाहे शैतान ने परमेश्वर की योजना को बिगाड़ने की कितनी भी कोशिश की, "संसार की स्थापना करने से पहले" प्रभु परमेश्वर द्वारा ठहराई गई योजना आगे बढ़ती रही।

कुछ भी और कोई भी इसे नहीं रोक सकता।

प्रभु का नाम

हाबिल समान, शेत ने परमेश्वर और क्षमा के उसके मार्ग पर भरोसा किया, और *"प्रभु के नाम से"* आराधना की (उत्पत्ति 4:26)। युगों से, उन लोगों से भरे संसार में जो, बेबीलोन के लोगों समान, अपने आपके लिए नाम बनाने का प्रयास करते हैं, वहां पर हमेशा से वे अभी हैं, हाबिल और शेत समान, जो **प्रभु में** विश्वास करना और उसके नाम से आराधना करने का चुनाव करते हैं।

मेरे कुछ मित्र मुझे कहते हैं कि परमेश्वर के सौ नाम हैं, लेकिन उन्हें केवल निन्न्यानव नाम पता है। क्या उनकी सूचि से गायब नाम वह हो सकता है, जिसका अर्थ है "प्रभु उद्धार करता है"?

वह कौनसा नाम है?

जी हां, यह नाम **यीशु** है।

उस नाम पर भरोसा न करना—वह कौन है और उसने क्या किया है—परमेश्वर के प्रति समर्पित नहीं होना है।

आइए हम अपने धार्मिक और विद्रोही यहूदी देशवासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना को सुने :

> *"भाइयों, मेरी यह हार्दिक इच्छा है और परमेश्वर से प्रार्थना है कि यहूदियों का उद्धार हो : मैं उनके विषय में प्रमाणित करता हूं कि उनमे* ***परमेश्वर के लिए उत्साह है*** *पर* ***यह उत्साह विवेकपूर्ण नहीं।*** *वे* ***परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली धार्मिकता से अनजान है*** *और* ***अपनी ही धार्मिकता स्थापित करने का प्रयत्न करते है,*** *इसलिए* ***परमेश्वर द्वारा दी गई धार्मिकता उन्हें मान्य नहीं।*** *क्योंकि मसीह में व्यवस्था का अंत हुआ है जिससे सब विश्वासियों को धार्मिकता प्राप्त हो। ...यदि तुम मुंह से स्वीकार करो कि 'यीशु प्रभु है,' और हृदय से विश्वास करो कि 'परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया' तो तुम्हारा उद्धार होगा;.....पवित्रशास्त्र का भी कथन है, 'जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित नहीं होगा।' अत: यहूदी और यूनानी में अब कोई भेद नहीं रहा; वही प्रभु सबका प्रभु है और वह अपने दुहाई देने वालों पर उदारता से वरदानों की वर्षा करता है। क्योंकि* ***'जो कोई प्रभु के नाम की दुहाई देगा, उसका उद्धार होगा।'"***
>
> (रोमियों 10:1-4, 9, 11-13 [योएल 2:32])

अयोग्य अथवा योग्य?

मान लो अगर मुझे आपको दस लाख रुपये का एक *बँक* चेक (तथा धनादेश) लिखना है। चेक अधिकृत दिखेगा, लेकिन वह अयोग्य ठहरेगा। क्यों?

मेरे *बँक* खाते में उतनी धनराशी नहीं है!

अब, अगर पृथ्वी पर के एक अमीर व्यक्ति ने आपके लिए दस लाख रुपये का चेक लिखना है तो क्या?

कोई समस्या नहीं। वह पूरी रकम के लिए योग्य होगा।

वही *बँक* जिसने मेरे नाम से प्रस्तुत किए हुए चेक का अस्वीकार किया था वही धनवान व्यक्ति के नाम के चेक का आदर करेंगे।

हमारा संसार लोगों से भरा है जो परमेश्वर के पास बहुत सारे नामों से जाने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन पवित्र परमेश्वर की दृष्टि में जिसने उसके पुत्र को भेजा कि मनुष्य के पाप के कर्ज का भुगतान करे, वे अयोग्य, पाप-से कलंकित नाम हैं।

जैसे *बँक* मेरे नाम में 1, 000, 000 डॉलर चेक का आदर नहीं करेंगे, वैसे ही परमेश्वर **यीशु** के नाम के अलावा किसी और नाम के द्वारा क्षमा और जीवन प्रदान नहीं करेगा।

*"किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उद्धार नहीं: क्योंकि आकाश के नीचे मनुष्यों को **कोई दूसरा नाम नहीं** मिला जिसके द्वारा हम बचाए जा सकें।"* (प्रेरितों के काम 4:12)

क्या आप चाहते है कि आपका पाप ऋण परमेश्वर की अभिलेख पुस्तक से मिटा दिया जाए और उसकी धार्मिकता की संपत्ति का श्रेय दिया जाए? क्या आप पाप के श्राप पर विजयी होना और युगान्त और अनंतकाल के लिए आपके सृष्टिकर्ता के साथ एक घनिष्ट संगति का आनंद लेना चाहते हैं?

फिर एक ही नाम चलेगा।

*"जो व्यक्ति **मुझ-प्रभु का नाम लेगा** वह संकट से मुक्त होगा।"* (योएल 2:32)

*"**प्रभु यीशु** पर विश्वास करो तो तुम एवं तुम्हारा परिवार उद्धार पाएगा।"* (प्रेरितों के काम 16:31)

क्या आप आपके हृदय में विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने दुःख उठाया, मर गए और फिर से जीवित हुए कि आपके पाप-का दंड रद्द करे? तो फिर *"आपका उद्धार होगा।"*

केवल दो धर्म

हमने यह यात्रा इस अवलोकन के साथ शुरू की कि हमारे संसार में आज दस हजार से अधिक धार्मिक प्रणालियों हैं।

असल में, यहां केवल दो है।

- मानवी उपलब्धि की प्रणाली है जो आपको ***खुद को बचाने*** के लिए कहती है।
- ईश्वरीय सिद्धि की प्रणाली है जो कहती है कि ***आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।***

जब तक आप अपने आपका उद्धार करने का प्रयास करते है, कोई धर्म अथवा नाम भी काफ़ी होगा। लेकिन एक बार जब आप आपके लिए एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को समझेंगे, तो केवल एक ही नाम काफ़ी होगा।

वह नाम **यीशु** है।

*"**इन्ही के विषय** में सब भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि **जो कोई** यीशु पर विश्वास करेगा, उसे **यीशु के नाम द्वारा** पापों की क्षमा मिलेगी।"* (प्रेरितों के काम 10:43)

भाग III
यात्रा का अंत

श्राप को उलटना

27 - चरण 1 : परमेश्वर की पिछली योजना
28 - चरण 2 : परमेश्वर की वर्तमान योजना
29 - चरण 3 : परमेश्वर की भविष्य की योजना
30 - स्वर्ग का पूर्वदर्शन

परिशिष्ट भाग
अंतिम टिप्पणियां
यात्रा पर चिंतन करना

पाठ 27

चरण 1: परमेश्वर की पिछली योजना

*"**आज ही** तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"*

—प्रभु यीशु (लूका 23:43)

कुछ मिनट पहले, मेरे लॅपटॉप कंप्यूटर की बॅटरी लगभग ख़त्म हो गई थी, लेकिन अब इसमे नई जान फूंकी जा रही है। इसके मरने की स्थिति को कैसे उलट दिया है?

मैंने इसे एक विद्युत् आउटलेट में प्लग किया।

चाहे लॅपटॉप, सेलफोन, अथवा टॉर्च में, बॅटरियां निरंतर से ख़त्म होती जाती है—उसके प्रभार को गवां देती है—जब तक वे श्रेष्ठ सामर्थ्यशाली स्त्रोत द्वारा फिर से प्रभारित नहीं की जाती।

आदम के वंशज कुछ इस तरह से ख़त्म हो रहे बॅटरियों समान हैं। हम तब से ख़त्म हो रहे हैं जब से हम गर्भ में आए हैं, पाप द्वारा लाए गए श्राप को पलटने का कोई उपाय नहीं है।

जैसे ही हम हमारी यात्रा के अंत के चरण में प्रवेश करते हैं, मुझे आपको एक भटकने वाले फ्रेंच मनुष्य की कहानी बतानी है जिसका भविष्य ख़त्म होनेवाली बॅटरी समान दिख रहा था।

बहुत ही दयनीय

मैं 26 वर्षीय ब्रूनो से मार्च 1987 में मिला।

बहुत वर्षों पहले, इस जवान मनुष्य ने जीवन के अर्थ पर चिंतन करना शुरू किया था। उसने उसके भीतर ख़ालीपन महसूस किया, ख़ालीपन जिसे न ही उसके कॅथोलिक पालन-पोषण न संसार के सुखविलास ने भरा था।

ब्रूनो जब एक छोटा लड़का ही था, तब उसने देखा था कि जिन्होंने उसे परमेश्वर के विषय में

सिखाया था उन्होंने जो प्रचार किया था उसके अनुसार आचरण करने में वे असफल हो गए थे। एक विद्रोही जवान होकर, उसने देखा की संसार अन्याय से भरा है। 18 आयु में, ब्रूनो के जीवन में एक मुख्य उद्देश्य था कि मित्रों के साथ सप्ताह का आखरी समय बिताना, शराब पीना और उसकी दयनीयता को भूल जाना। उसकी निराशा तीव्र होती गई जब उसकी लड़की मित्र एक वाहन दुर्घटना में मर गई थी। वह परमेश्वर से क्रोधित था।

ब्रूनो ने भारत की यात्रा करने का निर्णय किया। शायद वह यहां के बहुत सारे धर्मों के बीच जीवन का अर्थ प्राप्त कर सके। कई देशों से थकानेवाली समुद्री यात्रा के बाद, ब्रूनो भारत के एक भीड़ भरे शहर में आया जहां उसका सामना ऐसे तीव्र धार्मिक उत्साह और अवर्णनीय मानवी दयनीयता से हुआ। ब्रूनो के अपने शब्दों में, "मैंने लोगों को देखा, उनके धर्म और विश्वास के बावजूद, वे मुझसे भी अधिक दयनीय थे।"

भारत में करीबन एक वर्ष बिताने के बाद, ब्रूनो ने निष्कर्ष किया कि अगर उसे कभी परम सत्य खोजना है तो, परमेश्वर ने स्वयं उसे प्रकट करना होगा। तो उसने अपने सृष्टिकर्ता से इस सरल प्रार्थना को संबोधित किया, "यदि आप अस्तित्व में है, तो अपने आपको मुझे प्रकट करे!"

एक दिन, कलकत्ता के रास्ते पर चलते हुए, ब्रूनो ने एक दुकान पर एक चिन्ह देखा : बाइबल हाउस। उत्तेजना से, वह उसमे गया और क्लर्क से पूछा, "क्या आपके पास फ्रेंच भाषा का बाइबल है?" उनके पास एक प्रति थी।

उसने उसे ख़रीदा और पढ़ने लगा।

बहुत सी बातों ने उसे आश्चर्यचकित किया। उदाहरण के लिए, वह दस आज्ञाओं के पहले और दूसरी आज्ञाओं मेंही अटका रहा। जिसमे परमेश्वर कहता है, *"तू **मेरे अतिरिक्त** किसी और को परमेश्वर न मानना। तू अपने लिए किसी जानवर की मूर्ति या आकृति न बनाना ....तू **उनकी झुककर वन्दना न करना**......"* (निर्गमन 20:3-5)। फिर भी ब्रूनो ने उसके आसपास क्या देखा कि मंदिर लोगों से भरे हुए हैं जो मूर्तियों के सम्मुख झुक रहे हैं। और उसने उस धर्म के विषय में सोचा जिसमे वह पला-बढ़ा था, उसने उस पर प्रभाव किया कि धार्मिक लोग जो उसे पता है वे भी परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के दोषी हैं जब वे मरियम और संतो की मूर्तियों के सम्मुख झुकते और प्रार्थना करते हैं।

ब्रूनो अन्य एक वचन द्वारा समान रूप से प्रभावित हुआ: *"इस व्यवस्था के शब्द तेरे मुंह से कभी अलग न हों। तू रात-दिन उसका पाठ करना, ताकि तू उसमे लिखी हुई सब बातों का पालन कर सके और उनके अनुसार कार्य कर सके। तब तू अपने मार्ग पर उन्नति करेगा, तू अपने कार्य में*

सफल होगा।" (यहोशू 1:8)

उसे विश्वास हो गया कि सत्य जिसकी उसने खोज की थी वह केवल बाइबल में ही मिल सकता है, ब्रूनो भारत से चला गया और फिर से फ्रांस में आया। तथापि, उसकी बाइबल पढ़ने के बजाय, उसने उसे एक अलमारी में रख दिया और काम पर वापस चला गया और पार्टियां करना -जीवन का एक ऐसा तरीका जिसने उसे कड़वा स्वाद और खाली ह्रदय छोड़ दिया।

चार वर्ष बीत गए थे।

एक दिन, जैसे ही ब्रूनो ने उसके अर्थहीन अस्तित्व के बारे में सोचा, उसे बाइबल का वचन स्मरण हुआ जिसमे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी: *"तुम मुझे ढूंढोगे, और मैं तुम्हें मिलूंगा। जब* ***तुम मुझे सच्चे ह्रदय से खोजोगे*** *तब* ***मुझे पाओगे****"* (यिर्मयाह 29:13)। ब्रूनो ने प्रार्थना की, "ठीक है परमेश्वर, मैं मेरे संपूर्ण ह्रदय से तुझे खोजूंगा और देखूंगा कि आपकी प्रतिज्ञा यह सच है अथवा नहीं।"

घर के प्रभाव से अपने आपको अलग करने के लिए, ब्रूनो ने निर्णय लिया कि और एक यात्रा की जाए, इस वक्त अफ्रीका की। जैसे ही वह जमीन से यात्रा कर रहा था, वह बाइबल पढ़ रहा था और प्रार्थना कर रहा था, "परमेश्वर, मुझे आपके सत्य की ओर अगुवाई कर और मुझे झूठेपन से बचा।" सहारा पार करने के बाद वह उत्तरीय सेनेगल में आया। उसने एक रात उसी शहर में बितायी जहां मैं और मेरा परिवार रहता था।

अगली सुबह, ब्रूनो उस शहर में टहल रहा था। जैसे कलकत्ता में हुआ था, द्वार पर के चिन्ह ने उसका ध्यान आकर्षित किया। इसने कहा :

एकुटेज! कार ले'इटरनल दियू ए पार्ले!

(सुन! क्योंकि प्रभु ने कहा है!)

ब्रूनो ने प्रवेश किया।

यह मेरा दफ्तर था। मेरे काम से ऊपर देखते हुए, मैंने देखा भरी दाढ़ी रखा हुआ एक मनुष्य हाथ में एक छोटी, नीली, अच्छी तरह से पुरानी हुई पुस्तक पकडे हुए था- बाइबल जिसे उसने भारत में खरीदी थी। मैं अभी भी उसका पहला प्रश्न सुन सकता हूं :

"आप कौन है, कॅथलिक अथवा प्रॉटेस्टंट?"

"मैं केवल एक मसीही हूं; मसीह का अनुयायी," मैंने उत्तर दिया। ब्रूनो आश्चर्यचकित हुआ और मेरे उत्तर से प्रसन्न हुआ था, क्योंकि, बाइबल पढ़ने के द्वारा, उसने समझा था कि उसमे कहीं भी कॅथलिक अथवा प्रॉटेस्टंट लिखा हुआ नहीं था, लेकिन यह अवश्य ही मसीही—मसीह के अनुयायियों के विषय में कहता है। बाद में, ब्रूनो ने मुझे बताया कि अगर मैंने "मैं कॅथलिक हूं"

अथवा मैं प्रॉटेस्टंट हूं," ऐसा उत्तर दिया होता तो वह अपनी एडी पर मुड़ जाता और बाहर चला जाता। वह धर्म से उकता गया था। वह वास्तविकता चाहता था।

अगले कई दिनों तक, ब्रूनो ने मुझसे कई प्रश्न पूछे। मैंने उसे बाइबल में परमेश्वर के उत्तर की ओर इशारा किया। उसके जाने के पूर्व संध्या पर (उसने आशा व्यक्त की कि वह दक्षिण अफ्रीका में यात्रा करेगा), मैंने उसे चुनौती दी, "आपका बाइबल फिर से पढो और यह देखो कि परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है।"

छः सप्ताह बाद, मेरी पत्नी और मैंने ब्रूनो से एक ख़त प्राप्त किया जिसमे उसने स्पष्ट किया था कि वह करीब के मछुवारों के गाँव में एक कमरा किराए पे ले रहा था। उसने हाल ही में संपूर्ण बाइबल पढ़ना समाप्त किया था, पुराने और नए नियम की तुलना की थी।

उसने मसीह को पवित्रशास्त्र में सभी जगह में देखा था।

ब्रूनो के अपने शब्दों में, "एक रात में, जब मैं घर से बाहर अकेला था, यीशु की प्रतिज्ञा बड़ी सामर्थ्य के साथ मुझ पर आयी, *'हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ;* ***मैं तुम्हें विश्राम दूंगा'*** (मत्ती 11:28)। मेरे जीवन को उसकी सभी असफलताओं, कड़वाहट और खेद के साथ फिर से जांचने पर-एक बड़ा संघर्ष मेरे हृदय में उभर पड़ा। मैं जानता था कि अगर मैं मसीह का अनुयायी हो गया, तो मैं अभी से मेरी वासना और इच्छाओं के अनुसार चलने के लिए मुक्त नहीं रहूंगा। अंत में मैंने शरण ली। परमेश्वर ने मेरी आंखे खोल दी। मैं विश्वास करता हूं कि मसीह ने क्रूस पर उसका लहू बहाया और मेरे लिए फिर से जी उठा। शांति ने मेरी आत्मा को भर दिया। मैं रोने लगा और ठहर ही नही रहा था। मेरे पाप का भारी बोझ निकल गया था!" ब्रूनो कहता गया, "एन सोमे, जे सुस ने डे नोवीयेऊ!" ("इसका सारांश, मैं नये सिरे से जन्मा हूं!")

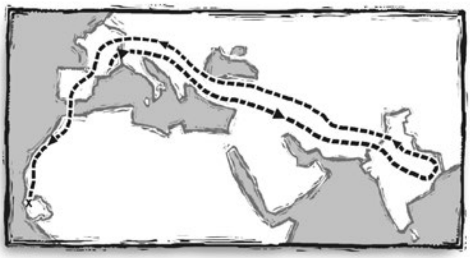

ब्रूनो जिसकी खोज कर रहा था वह उसने प्राप्त किया था : एक शुद्ध किया हुआ हृदय और विवेक, उसके सृष्टिकर्ता के साथ संबंध, और अनंतकाल का जीवन। वह अब समझ गया था कि वह इस पृथ्वी पर वह क्यों है और वह कहां जा रहा है।

उसकी खोज समाप्त हो गई थी।

*बाइबल कहती है : "यदि कोई **मसीह में** है, तो वह नई सृष्टि है। **पुरानी बातें समाप्त हो गईं। अब सब कुछ नया बन गया है।"*** (2 कुरिंथियों 5:17)

तुरंत ही, ब्रूनो का जीवन छोटे और बड़े तरीकों से बदलने लगा। उदाहरण के लिए, वह ग्यारह वर्ष का था तब से भले ही उसने धुम्रपान किया था, प्रभु ने उसे इस आदत से छुड़ाया। उसकी आत्मसंतोषी, शराबी और अनैतिक जीवनशैली अब भूतकाल की लज्जाजनक याद होकर रह गई थी। पवित्रशास्त्र ने अब उसे अर्थ दिया था और प्रार्थना यह श्वास लेने जैसी स्वाभाविक हो गई थी।

यात्रा करते रहने के बजाय, ब्रूनो ने अगले छः महीने सेनेगल में पवित्रशास्त्र की पढाई करने में बिताए, मसीह में विश्वासी लोगों के साथ समय बिताया, और अन्य लोगों को बताया कि परमेश्वर ने उसके लिए क्या किया था।

ब्रूनो अब एक नई रचना बन गया था।

भले ही दो दशक बीत चुके थे जब मैं पहले ब्रूनो से मिला था, हम आज भी एक दूसरे के संपर्क में है। आज एक "नया ब्रूनो" फ्रांस में रहता है जहां वह और उसकी पत्नी परमेश्वर के साथ चल रहे है और उनके चार बच्चों को प्रभु के ज्ञान और आशीष में बढ़ा रहे हैं।

इसका अर्थ यह है क्या कि ब्रूनो का जीवन अब सिर दर्द, संघर्ष और पीड़ा से मुक्त हो गया हैं? नहीं, वह और उसका परिवार दोनोंही विभिन्न तरह के संकटों और परीक्षाओं का सामना करते हैं, लेकिन वे अकेले नहीं।

प्रभु स्वयं ही उनके साथ है।

परमेश्वर की तीन-चरणीय योजना

शायद कोई सोच रहा हो: "एक मिनट ठहरो। अगर यीशु ने शैतान, पाप और मृत्यु को हमारे लिए पराजित किया है, तो फिर लोग, जिनमे मसीह विश्वासी भी हैं, लगातार कई तरीकों से संघर्ष में क्यों हैं? हमारा संसार बुराई और कलह से क्यों भरा हैं? प्रतिज्ञा किया गया छुटकारा और पूर्णता कहां हैं?"

उत्तर यह इस वास्तविकता में मिलता है कि मानव इतिहास में हस्तक्षेप करने की परमेश्वर की सदियों पुरानी योजना में तीन चरण शामिल हैं:

चरण I : परमेश्वर अपने लोगों को पाप के **दंड** से छुडाएगा।

चरण II : परमेश्वर अपने लोगों को पाप की **सामर्थ्य** से छुडाएगा।

चरण III : परमेश्वर अपने लोगों को पाप की **उपस्थिति** से छुडाएगा।[235]

नए नियम का निम्नलिखित संदर्भ परमेश्वर के तीन—चरण—कार्यक्रम—अतीत, वर्तमान, और भविष्य को सारांशित करता है।

> *परमेश्वर ने "हमें भयानक विपत्ति से **बचाया*** [चरण I] *और अब भी **बचा रहा है*** [चरण II] । *हम उसी पर आशा लगाए हैं कि वह आगे भी हमें **बचाता रहेगा*** [चरण III] ।*"* (2 कुरिंथियों 1:10)

पवित्रशास्त्र के माध्यम से हमारी शेष यात्रा इन तीन-चरण कार्यक्रम पर केंद्रित होगी जिससे परमेश्वर हमेशा के लिए शैतान, पाप और मृत्यु के प्रभाव को दूर करेगा। हमारी यात्रा का अंतिम चरण अत्यधिक प्रभावशाली होगा क्योंकि यह हमें स्वयं स्वर्ग की झलक देता हैं।

श्राप को उलटना: पहला चरण

जब आदम और हव्वा ने शैतान का सुना तब उन्होंने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के साथ उनकी मित्रता को खो दिया और अपने ऊपर और अपने सभी वंशजों पर पाप का श्राप लाया। मूल, सिद्ध संसार अचानक रीति से उस स्थान में बदल गया जहां लोग चाहते थे कि परमेश्वर से छिपे और उनके अपने मार्गों पर चले। शोक और पीड़ा, रोग और विकलांगता, गरीबी और भूख, दुःख और कलह, वृद्धावस्था और मृत्यु द्वारा जीवन चिन्हित हो गया था।

पाप ने श्राप लाया। लेकिन नियुक्त समय पर, जैसे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी, आदम के वंशजों को शैतान, पाप और मृत्यु से छुडाने के लिए एक स्त्री के बीज के रूप में परमेश्वर का अनंत पुत्र स्वर्ग से पृथ्वी पर आया।

> *"प्राचीनकाल में **परमेश्वर** ने हमारे पूर्वजों से थोड़ाथोड़ा तथा अनेक प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बातें की, लेकिन **वर्तमान अंतिम युग में उसने हम लोगों से अपने पुत्र के माध्यम से बातें की,** जिसको उसने सबका उत्तराधिकारी बनाया है और जिसके द्वारा उसने सृष्टि की रचना की है। पुत्र परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिम्बित करता है। वह परमतत्व का प्रतिरूप है, अपने समर्थ शब्द से सृष्टि को धारण किए हुए है। **उसने हमें हमारे पापों से शुद्ध किया और वह उच्च स्वर्ग के महामहिम पिता की दाहिनी ओर विराजमान हुआ।"*** (इब्रानियों 1:1-3)

प्रभु यीशु पाप से दूषित नहीं था।

उसने पाप से-शापित सृष्टि के प्रत्येक तत्व पर पूरा अधिकार प्रदर्शित किया। उसके मुख से

शब्द द्वारा अथवा उसके हाथों के स्पर्श द्वारा, उसने दुष्टात्माओं को भगाना, अंधों को आंखे देना, कोढ़ियों को शुद्ध करना और मृतकों में से जीवित किया था। वह पानी पर चला, तूफानों को शांत किया, और भूखों के लिए रोटियों को बढाया था। उसने पाप भी क्षमा किए और दुखित हृदयों को शांति लायी।

और फिर उसने वह किया जिसे करने वह आया था।

उसने दुःख उठाया, मर गया और फिर से जीवित हो उठा कि अपने पिता की महिमा करे, पवित्रशास्त्र को पूरा करे, और उन सबका उद्धार करे जो उसमे विश्वास रखते हैं।

> ***"मसीह ने व्यवस्था के श्राप से हमें मोल लेकर छुड़ाया और स्वयं हमारे लिए शापित हुए,*** (क्योंकि पवित्रशास्त्र का लेख है, "काठ पर लटकने वाला प्रत्येक व्यक्ति शापित है।") *यह सब इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों को मिले, और हमें विश्वास द्वारा वह आत्मा प्राप्त हो जिसकी प्रतिज्ञा की गई है।"*
>
> (गलातियों 3:13-14 [व्यवस्था विवरण 21:23])

अद्भुत अनुग्रह

यीशु, जिसने परमेश्वर की व्यवस्था का पूर्ण रूप से पालन किया, वह व्यवस्था तोड़नेवालों को "व्यवस्था के श्राप से" [जो सिद्ध आज्ञाकारिता की मांग करता है] उद्धार करने आया, कि हमारे लिए शापित हो गया!" यीशु ने स्वेच्छा से उस दंड को सहा जिसके लिए हम पात्र थे ताकि हमें अनंतकाल के दंड से छुडाए।

जब प्रभु क्रूस पर दुःख उठा रहा था, उसने पाप के श्राप को उलटने के उसके उद्देश्य को प्रदर्शित किया।

यीशु को दो अपराधियों के बीच में क्रूस पर चढ़ाया गया था जिन्हें देशद्रोह, चोरी और हत्या करने के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी। आइए हम उस बातचीत को फिर से सुने जो प्रभु और इन दो पापियों के बीच में हुई थी। पहले, दोनोंही मनुष्यों ने यीशु की निंदा की थी, लेकिन जब घंटों बीत गए, उनमे से एक ने पछतावा किया।

> *"क्रूस पर टंगा एक कुकर्मी यीशु की निन्दा करने लगा, 'क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर हमें और अपने को बचा।' पर दूसरे कुकर्मी ने उसे डांट कर कहा, 'क्या तुझे परमेश्वर का भय नहीं, क्योंकि तू भी तो वही दंड पा रहा है? हमारा दंड तो न्याय-संगत है; क्योंकि हम अपनी करनी का फल भोग रहे हैं, पर इन्होने कोई अनुचित काम नहीं किया।'*

तब वह यीशु से बोला, 'हे यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं, तब मेरी सुधि लेना। ' यीशु ने उससे कहा, 'मैं तुझसे सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।'" (लूका 23:39-43)

ये दोनों व्यवस्था तोड़नेवाले अब मरने वाले और नरक में प्रवेश करने वाले थे। फिर, इन अंतिम घंटों में, उनमें से एक ने परमेश्वर के सम्मुख अपने पाप पहचाने और निष्पाप उद्धारकर्ता पर भरोसा रखा जिसे बीच वाले क्रूस पर किलों से लटकाया था।

यीशु ने उसे एक प्रतिज्ञा दी :

"मैं तुझसे सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

शैतान और उसके पतित दूतों के लिए तैयार किए हुए स्थान में अनंतकाल बिताने के बजाय, यह क्षमा किया हुआ व्यवस्था तोडनेवाला अब उसके सृष्टिकर्ता-उद्धारक की उपस्थिति में बिताएगा।

क्या उलटफेर है!

परमेश्वर के मेमने पर उसके भरोसे के आधार पर, जो उसी क्षण में, पाप के दंड का भुगतान करने के लिए अपना लहू बहा रहा था, परमेश्वर ने इस मनुष्य के पाप अभिलिखित पुस्तकों से मिटा दिए थे, और यीशु की धार्मिकता उसे प्रदान की थी, और मेमने की जीवन की पुस्तक में उसका नाम स्थायी रूप से लिख दिया था, वह पुस्तक जो अनंतकाल के लिए उन सभी के नाम धारण करेगी जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार के दान को प्राप्त किया हैं।

इस असहाय पापी के लिए, पाप का श्राप अब हमेशा के लिए उलट दिया गया था।

क्या हत्या करने वालों को क्षमा किया जा सकता है?

यह ई-मेल एक प्रश्नकर्ता से आया है :

भेजो | **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

मैं यह जानना चाहता हूं कि "यीशु (उस पर शांति होवे) हमारे पापों के लिए हमारे स्थान पर मरा" इस वाक्य के प्रकाश में "न्याय" इस विषय को आप किस तरह से स्पष्ट करते हैं? इसका यह अर्थ होगा क्या कि मेरे पूरे जीवन में जो बुरे काम मैंने किए हैं उन सबके लिए मुझे जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा? खून करनेवाला, जो इस संसार में न्याय किए बगैर बच गया है उसे इसके बाद मुक्त छोड़ दिया जाएगा केवल इसलिए की यीशु ने उसके

> पापों के लिए भुगतान किया है.... इस दृष्टिकोण को मानना मुझे कठिन लगता है....हम सब सही मार्ग पर चले!

क्या पापियों के स्थान पर क्रूस पर यीशु की मृत्यु न्याय के अनुरूप है? क्या परमेश्वर द्वारा एक "हत्यारे" को भी क्षमा दी जा सकती है? आइए हम आखरी प्रश्न पर पहले "हत्या करनेवालों" से कुछ साक्षियों के साथ संबोधित करे जिन्हें क्षमा किया गया और रूपांतरित किया गया है।

नरभक्षी

अपनी पुस्तक लॉर्ड्स ऑफ़ द अर्थ में, बाइबल अनुवादक और मानवविज्ञानी डॉन रिचर्डसन याली लोगों के बारे में बताते हैं- इरियन, जया, इंडोनेशिया के भयंकर पहाड़ पर रहने वाले नरभक्षी। सदियों से यह उनका आचरण था कि पडोसी गांव के लोगों को यातनाएं दे, मार डाले और हां, खाए। बदला और भय जीवन के "सामान्य" मार्ग थे।

फिर सुसमाचार उन तक लाया गया।

याली और पडोसी जातियों ने मसीह में पाप क्षमा और नए जीवन के विषय में परमेश्वर का सुसमाचार सुना। बहुतों ने विश्वास किया। उनके जीवन जीने की सोच और रहन-सहन सब कुछ परिवर्तित हो गया। परमेश्वर के नए सिरे से जन्मे बच्चों के रूप में, उन्हें अब नया मानक था जो सामान्य था। वे जो पहले एक दूसरे का द्वेष करते और भय रखते थे वे अब भाई हो गए थे। उनके पहले के शत्रुओं के साथ अब मित्रता बनाने से, उन्होंने "याली गांव को जोड़नेवाली उत्तम प्रकार की फुटपाथ" बनायीं।[236]

आज ये पूर्व हत्यारे उन्हें करुणा दिखाते हैं जो उन्हें नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं, क्योंकि परमेश्वर के आत्मा ने उनके हृदय को बदल दिया और उन्हें सिखाया है: *"एक दूसरे के प्रति कृपालु और सहृदय बनो, तथा जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हे क्षमा किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को क्षमा करो।"* (इफिसियों 4:32)

एक हताश लड़की

एम्मा का सिंगापूर में एक कठोर मुस्लिम घर में पालन-पोषण किया गया था। अपने माता-पिता के तलाक और बेकार पारिवारिक जीवन के कारण, 16 साल की उम्र में उसने किसी को मारने का फैसला किया—खुद।

एम्मा ने अपने दस माले की निवासी इमारत के छज्जे से कूदने का निश्चय किया था। जब वह उसकी योजना को करने की तैयारी कर रही थी, उसने क्रोध में और हताश होकर उस परमेश्वर को

पुकारा जिसे वह नहीं जानती थी, "अगर तू वास्तव में अस्तित्व में है, तो किसी तरह से मुझे बता!" वह फिर थोड़ी कुछ सीढियाँ नीचे आयी जिसने उसे दसवे-माले की छज्जे तक लाया...

पायदान पर एक बाइबल रखी थी!

उसने उसे उठाया और अपने कमरे की ओर तेजी से चली गई। बाइबल इन शब्दों के स्थान पर खुली:

*"**प्रभु मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ अभाव न होगा।** वह मुझे हरी-भरी भूमि पर विश्राम कराता है; वह मुझे झरने के शान्त तट पर ले जाता है; **वह मुझे नवजीवन देता है,** वह अपने नाम के लिए धर्म के मार्ग पर मेरा नेतृत्व करता है। यद्यपि मैं घोर अंधकारमय घाटी से गुजरता हूं, तो भी हानि से नहीं डरता; क्योंकि हे प्रभु, तू मेरे साथ है। तेरी सोंठी, तेरी लाठी मुझे सहारा देती है। मेरे शत्रुओं की उपस्थिति में तू मेरे लिए मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल उंडेला है, मेरा प्याला छलक रहा है। **निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरा अनुसरण करेंगी; और मैं प्रभु के घर में युग-युगान्त निवास करूंगा।"***

(भजन संहिता 23)

एम्मा ने यह भजन पढ़ा, वह परमेश्वर की सत्यता और प्रेम से अभिभूत हो गई। कुछ ही समय बाद, उसने अपना विश्वास प्रभु यीशु पर रखा, जिसने कहा है, ***"अच्छा चरवाहा मैं हूं। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपन प्राण देता है।"*** (यूहन्ना 10:11)

एम्मा उसकी एक भेड़ हो गई थी। वह अब खुदको मारना नहीं चाहती थी। इसके बजाय, वह एक आनंदित पत्नी और पाच बच्चों की मां हो गई है। उसके जीवन का उसका आवेग यह है कि दूसरों को वह खोजने में सहायता करना जो उसने मसीह में प्राप्त किया है-परमेश्वर का प्रचुर प्रेम।

जब मैंने इस कहानी को सटीकता से जांचने के लिए एम्मा को भेजा था, उसने पमरेश्वर के प्रेम के बारे में बड़े अक्षरों में शब्दों को जोड़ते हुए, इसे मुझे वापस ई—मेल किया। संसार भर में स्त्रियों द्वारा सामना किए जाने वाली संभावित भारी दबावों और चुनौतियों के बीच, एम्मा प्रभु के अद्भुत प्रेम और देखभाल में अपनी दैनिक शक्ति और आनंद पाती है।

हिंसक मनुष्य

आख़िरकार, तरसुस के शाऊल का विचार करे, एक धार्मिक कट्टरपंथी व्यक्ति जिसने लोगों को परमेश्वर के नाम में मार डाला था।

शाऊल का जन्म तरसुस, एशिया मायनर (आधुनिक तुर्कस्थान), में मसीह के समय के दौरान हुआ था। शाऊल ने विश्वास नहीं किया कि यीशु ही मसीहा और परमेश्वर का पुत्र है। यीशु के स्वर्ग जाने के कुछ ही दिनों के बाद, शाऊल को यहूदी महासभा द्वारा आदेश दिया गया कि यीशु के अनुयायियों को गिरफ्तार करे, पूछताछ करे और उन्हें मरवा डाले। उसने विश्वास किया कि यीशु पर विश्वास करने वाले यहूदियों को कारागार में डालकर, कोड़े लगाकर और उनकी हत्या करने के द्वारा वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है।[237] यहां एक दिन क्या हुआ जब शाऊल और उसके लोग यहूदी मसीहियों के समूह को गिरफ्तार करने के लिए एक और अभियान चला रहे थे।

> *"जब शाऊल यात्रा करते हुए दमिश्क नगर के निकट पहुंचा तब आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर सहसा चमक उठी। वह भूमि पर गिर पड़ा और उसने एक आवाज सुनी। कोई उससे यह कह रहा था, 'शाऊल, शाऊल, तू* ***मुझे*** *क्यों सताता है.' उसने कहा, '****प्रभु****, आप कौन है?' उत्तर मिला, 'मैं* ***यीशु*** *हूं, जिसे तू सता रहा है। परन्तु उठ और नगर में प्रवेश कर। वहां तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।"* (प्रेरितों के काम 9:3-6)

शाऊल का यीशु के बारे में दृष्टिकोण अब पूरा बदल गया था। पुराने नियम के पवित्रशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते, वह अचानक समझ गया कि यीशु ही वह मसीहा था जिसके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था।

बड़ा विरोधी बड़ा समर्थक बन गया।[238]

शाऊल, जिसने बाद में उसका नाम पौलुस रखा (अर्थ "छोटा"), साक्षी दी :

> *"उन्होंने मुझे, जो पहले* ***ईश निन्दक, अत्याचारी एवं उदंड मनुष्य था****, विश्वास के योग्य समझा और इस सेवा के लिए नियुक्त किया। उनकी मुझ पर दया हुई; क्योंकि मुझसे ये सब काम अज्ञान और अविश्वास की दशा में हुए थे। हमारे प्रभु का अनुग्रह मुझे प्रचुर मात्रा में मिला, साथ ही यह विश्वास एवं प्रेम भी प्राप्त हुआ जो मसीह यीशु में है। यह बात सच और सर्वथा मानने योग्य है कि* ***मसीह यीशु संसार में पापियों के उद्धार के लिए आए, जिनमे सबसे बड़ा पापी मैं हूं।****"* (1 तीमुथियुस 1:13-15)

मसीह की विशेषता

क्या परमेश्वर द्वारा "हत्या करनेवालों" को क्षमा और परिवर्तित किया जा सकता है?

यही जो इरियन के नरभक्षियों, सिंगापुर के एम्मा और तरसुस के शाऊल के साथ हुआ था। यही जो यीशु के साथ एक तरफ क्रूस पर लटके हुए पछतावा करनेवाले हत्यारे के साथ हुआ था।

यही जो संसार भर में पापियों के साथ प्रतिदिन हो रहा है, कारागार के भीतर और बाहर, जब वे परमेश्वर के सुसमाचार पर विश्वास रखते हैं।

पापियों का उद्धार करना और उनके हृदय और जीवनों को परिवर्तित करना यह मसीही की विशेषता है। परमेश्वर की दया और अनुग्रह के विषय में जो कुछ है वह यही हैं।

निस्संदेह, पाप के अपने परिणाम हैं।

क्रूस पर उस अपराधी ने फिर भी उसके अपराध के लिए दुःख उठाया। उसने इस संसार में शांति और आनंद का अनुभव नहीं किया जो प्रभु को जानने से, उसके लिए जीने से, और अन्य व्यक्तियों को उसे जानने में सहायता करने से आती है।

फिर भी, जिस तरह से एक पापी को परमेश्वर के सामने क्षमा किया जाता है और धर्मी ठहराया जाता वह हमेशा एक जैसा होता है : उसके पापमय अवस्था को पहचानने के द्वारा और परमेश्वर के उद्धार के प्रावधान पर भरोसा करने के द्वारा।

प्रभु यीशु में विश्वास नहीं करना यह यीशु के दूसरी ओर क्रूस पर चढ़ाए गए अपश्चातापी अपराधी के साथ नाश होना है।

दया और न्याय एकसाथ

एक लेखक जिसके विषय में हमने कुछ पन्नों पहले सुना उसने पूछा : "*'यीशु हमारे पाप के लिए हमारे स्थान में मरा' इस वाक्य के प्रकाश में विषय '**न्याय**' को आप कैसे स्पष्ट करोगे?*"

अहमद ने यह प्रश्न पहले पूछा था :

> भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया
>
> क्या परमेश्वर इतना महान नहीं है कि वह लोगों को बता सके कि वह क्या चाहता है और अपने प्रिय पुत्र की बलि दिए बिना और उस पर अत्याचार किए बिना अपने पापों को मिटा दें???!

जैसा कि हमने बार-बार देखा है, ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर महान है—न्याय और विश्वासयोग्यता में—कि वह लोगों के पापों को "मिटा" नहीं दे सकता जब तक कि उन पापों का पर्याप्त रूप से न्याय और दंड न दिया गया हो।

क्या आपको पाठ 13 में के उस न्यायाधीश का उदाहरण स्मरण है जिसने न्याय का समर्थन किए बिना दया की? उसके कार्य से पुरे न्यायलय में रोष और अवमानना हो गई।

परमेश्वर लहरी न्यायाधीश जैसा नहीं है। उसके चरित्र अथवा प्रतिष्ठा पर कलंक का कण भी नहीं लग सकता। वह न्याय की किमत पर कभी दया नहीं करता। इसीलिए, अपने महान प्रेम से,

उसने अपने पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर क्रूस पर किलों द्वारा ठोका जाए और वहां परमेश्वर की दया और सत्य को पूर्ण संयोजन में प्रदर्शित करने भेजा।

> *"**करुणा और सच्चाई आपस में मिलेगी**, धार्मिकता एवं शांति परस्पर चुंबन करेंगी। धरती से सच्चाई अंकुरित होगी, और स्वर्ग से धार्मिकता दृष्टिपात करेगी।"* (भजन संहिता 85:10-11)

क्योंकि यीशु ने हमारे लिए परमेश्वर के क्रोध को सहा, परमेश्वर "स्वर्ग से नीचे देख" सकता और हमें क्षमा, सिद्धता और अनंत जीवन के अपने दान हमें प्रदान कर सकता है। हमारा स्थान लेकर, प्रभु यीशु ने परमेश्वर का न्याय, दया और अनुग्रह को प्रदर्शित किया। जैसे हमने पहले ही देखा है:

> *न्याय* वह प्राप्त करना है जिसके हम योग्य हैं।
> *दया* वह प्राप्त नहीं करना है जिसके हम योग्य हैं।
> अनुग्रह वह प्राप्त करना है जिसके हम योग्य नहीं हैं।

वे सभी जो मसीह में विश्वास करते हैं वें प्राप्त करते हैं जिसके लिए वें योग्य नहीं हैं : पाप से शुद्धता, मसीह की स्वयं की धार्मिकता, परमेश्वर के परिवार में स्थान, और अनंतकाल का जीवन। वे सभी जो मसीह का अस्वीकार अथवा उसकी उपेक्षा करते हैं वे सब प्राप्त करेंगे जिसके वे योग्य हैं : अनंतकाल का दंड।

मसीह के आगमन से सात शताब्दी पहले, मीका भविष्यद्वक्ता ने लिखा : *"...वे इस्राएल के शासक के गाल पर **प्रहार** करेंगे"* (मीका 5:1)। ज़रा सोचो! संपूर्ण पृथ्वी के न्यायाधीश ने मानवी देहधारण की ताकि अकृतज्ञ पापियों द्वारा मारा जाए जिन्हें छुड़ाने वह आया था!

न्याय, दया, और अनुग्रह इससे अधिक कोई प्राप्त नहीं करता।

> *"**जब हम असहाय थे तभी, निर्धारित समय पर मसीह हम अधर्मियों के लिए मरे।** कदाचित ही कभी कोई व्यक्ति किसी धर्मात्मा के लिए अपने प्राण दे—हां किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस करे तो करे। लेकिन परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार प्रमाणित किया है कि जब हम पापी ही थे तब मसीह हमारे लिए मरे।"* (रोमियों 5:6-8)

न्यायी और न्यायदाता

अपनी योजना के पहले चरण में, परमेश्वर ने अपने सिद्ध मानकों को कम किए बिना पापियों के

लिए क्षमा का मार्ग खोल दिया। *"जिसे यीशु में विश्वास है उनका **न्यायी** और **न्यायदाता** दोनोंही वह है।"* (रोमियों 3:26)

परमेश्वर न्यायी है क्योंकि उसने पर्याप्त मात्रा में पाप को दंडित किया है।

परमेश्वर उन सबका न्यायदाता है जो उद्धारकर्ता में विश्वास करते हैं जिसे उसने भेजा है।

जिस क्षण मैं मेरे स्वयं के प्रयासों पर निर्भर रहना छोड़ देता और मेरे भरोसे को मेरे लिए मसीह, और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान पर छोड़ देता हूं, धार्मिक न्यायाधीश मेरे सभी अपराधों को अभिलेख पुस्तक से मिटा देता है :

न्यायोचित!

न्यायोचित होना परमेश्वर के न्यायिक अधिनियम द्वारा धार्मिक घोषित किए जाना है।

वह ऐसा कैसे कर सकता है?

वह ऐसा कर सकता है क्योंकि, क्रूस पर, उसने मेरे पाप-दंड का भुगतान किया है।

जब आदम ने पाप किया, परमेश्वर ने संपूर्ण मानवजाति को अधार्मिक घोषित किया था। लेकिन क्योंकि यीशु मर गया और फिर से जी उठा, परमेश्वर ने वे सभी जो उसमे विश्वास रखते है उन्हें धर्मी घोषित किया है।

*"क्योंकि जैसे एक मनुष्य के आज्ञा-उल्लंघन से सब मनुष्य **पापी हुए**, उसी प्रकार एक मनुष्य के आज्ञा-पालन से सब मनुष्य **धार्मिक बनाए जाएंगे**।"* (रोमियों 5:19)

जैसे आदम के पाप ने कलंक और मृत्यु उत्पन्न किया था, वैसे ही मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान शुद्धता और जीवन प्रदान करता है।

*"जिस प्रकार **आदम में सब मनुष्य मरते हैं**, उसी प्रकार **मसीह में सब जीवित किए जाएंगे**।"* (1 कुरिंथियों 15:22)

जब धार्मिक न्यायाधीश स्वर्ग से नीचे देखता है, वह आपको आदम और उसकी भ्रष्ट अधार्मिकता में देखता है क्या? अथवा वह आपको मसीह और उसकी शुद्ध धार्मिकता में देखता है क्या?

स्वर्ग के न्यायालय को तीसरा पर्याय नहीं है।

मनुष्य की दोहरी मुसीबत

जैसे हम उत्पत्ति के तीसरे अध्याय में पढ़ते है, जब आदम और हव्वा ने उनके सृष्टिकर्ता की अवज्ञा की, उन्होंने अपने आप पर पाप और लज्जा की दोहरी दुविधा लायी।

उनके ***पाप*** ने उन्हें छुपने के लिए भगाया।

उनकी ***लज्जा*** ने उन्हें उनके नंगेपन को ढांपने के लिए उकसाया।

परमेश्वर ने *उसके न्याय* में अंजीर के पत्तों के उनके स्वयं-बनाए आवरण का अस्वीकार किया, लेकिन परमेश्वर ने *उसकी दया* में उन्हें बलिदान किए जानवरों की चमड़ी से वस्त्र पहनाए। जानवर का लहू रूपक था कि उनके *पाप* को दूर करने के लिए जो आवश्यक था, और जानवर की चमड़ी रूपक थी कि उनकी *लज्जा* को ढांपने के लिए जो आवश्यक थी।

हम हमारे पूर्वजों के पाप और लज्जा में सहभागी हैं। परमेश्वर के सम्मुख, हम कलंकित पापी और आध्यात्मिक रूप से नग्न हैं। हम लज्जाजनक अयोग्य है कि उसकी उपस्थिति में निवास करे। हमें ***उसकी क्षमा*** और ***उसकी पूर्णता*** की आवश्यकता हैं।

हमारी *दोहरी मुसीबत* दो प्रश्नों में संक्षेपित की जा सकती हैं :

1. पाप से हम कैसे ***शुद्ध*** किए जा सकते है जो हमें हमारे सृष्टिकर्ता से अलग करता हैं?

2. पूर्णता में हम कैसे ***वस्त्र परिधान*** कर सकते हैं ताकि हम उसके साथ हमेशा जीवन व्यतीत कर सके?

परमेश्वर का दोहरा इलाज

केवल परमेश्वर के पास मनुष्य की पापी अवस्था और धार्मिकता के अभाव के लिए इलाज है। जब यीशु, परमेश्वर के निष्पाप पुत्र, ने क्रूस पर उसका लहू बहाया, उसने **हमारे दंड** को अपने ऊपर लिया, और, एक जिसने मृत्युपर विजय प्राप्त की ऐसे, उसने हमें ***उसकी धार्मिकता*** प्रदान की।

"हमारे लिए भी यह 'माना जाना' निश्चित है---यदि हम उस परमेश्वर पर विश्वास करे जिसने हमारे प्रभु यीशु को मृतकों में से जीवित किया है: यीशु को ***हमारे अपराधों के कारण मृत्यु-दंड दिया गया था****, किंतु हमें परमेश्वर की दृष्टि में* ***धार्मिक ठहराने के लिए वह फिर जी उठे।****"*

(रोमियों 4:24-25)

"यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें समाप्त हो गई। अब सब कुछ नया बन गया है। परमेश्वर ने ... मसीह द्वारा अपने साथ हमारा मिलाप कर लिया है..... मसीह जो ***पाप*** *से अपरिचित थे, उनको परमेश्वर ने* ***हमारे लिए*** *पाप बना दिया, जिससे हम उनके द्वारा* ***परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त कर सके।****"* (2 कुरिंथियों 5:17-18, 21)

जिस क्षण आप अपने आप पर और आपके धर्म पर भरोसे छोड़ देते हैं, और आपकी आशा मसीह और सिद्ध लहू जो उसने आपके लिए बहाया उसमे रखते हो :

1) वह आपको पाप के कलंक से *शुद्ध करेगा*, और

2) वह आपको उसकी सिद्ध धार्मिकता से *परिधान करेगा*।

परमेश्वर और कोई इलाज प्रदान नहीं करता।

परमेश्वर की विनिमय योजना

उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा, प्रभु यीशु मसीह ने हमारे पाप को उठा लिया और हमें उसकी धार्मिकता प्रदान की। यह परमेश्वर की महान विनिमय योजना है : ***उसकी धार्मिकता के लिए मेरा पाप***।

ऐसे उदार दान का क्यों कोई अस्वीकार करे?

दुखद सत्यता यह है कि कई लोग परमेश्वर के प्रबन्ध का अस्वीकार करते है। फिर भी, उसका प्रबन्ध स्थिर ही रहता है : वे सभी जो परमेश्वर के उद्धार के दान को प्राप्त करते हैं उन्हें धर्मी घोषित किया जाता हैं। वे सभी जो अस्वीकार करते हैं वे उनके अपने पापों के लिए भुगतान करेंगे, कोई काल्पनिक, अस्थायी अधोलोक में नहीं, लेकिन चिरस्थायी नरक जो शैतान और उसके दानवों के लिए तैयार किया गया है।

कई धर्मी लोग इस पर जोर देते हैं, "प्रत्येक व्यक्ति ने उसके अपने पापों के लिए भुगतान करना चाहिए।" इसमे कुछ अर्थ है जिसमे सभी जो परमेश्वर की क्षमा और धार्मिकता के दान का अस्वीकार करते हैं वे ऐसा ही करेंगे। तथापि, उनके पाप के कर्ज कभी भी भरे नहीं जाएंगे, क्योंकि यह एक शास्वत कर्ज है। इसके अलावा, जब भटके हुए पापी अग्नि-कुण्ड में उनके पापों के लिए अनंतकालीन भुगतान करने जाते है, वे स्वर्ग में जीवन व्यतीत करने की आवश्यक धार्मिकता प्राप्त करने में कभी भी समर्थ नहीं होंगे। केवल परमेश्वर ही असहाय पापी व्यक्तियों को क्षमा और धार्मिकता दे सकता है जो उन्हें उसके साथ जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक है।

उद्धारकर्ता के आगमन से सात सौ वर्षों पहले, भविष्यद्वक्ता यशायाह ने परमेश्वर के विकल्प की महान योजना के बारे में लिखा था :

> *"हम सब **अशुद्ध व्यक्ति** के समान हो गए हैं, हमारे सब **धर्म-कर्म गन्दे वस्त्र हो गए हैं**। ....हम सब भटकी हुई भेड़ों के सदृश थे; प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मार्ग पर चल रहा था। लेकिन **प्रभु ने हमारे सब दुष्कर्मों का बोझ उस पर लाद दिया**। मैं प्रभु में अति आनन्दित हू, मेरा प्राण परमेश्वर में उल्लसित है, **क्योंकि***

उसने उद्धार के वस्त्र मुझे पहिनाए, उसने धार्मिकता की चादर मुझे ओढ़ाई...... ।"
(यशायाह 64:6; 53:6; 61:10)

क्या आप परमेश्वर के सम्मुख अब भी अशुद्ध वस्तु हो? अथवा आप मसीह के लहू द्वारा **शुद्ध** किए गए है?

क्या तुम आत्म-धार्मिकता के मैले चिथड़े परिधान किए हुए हो? अथवा मसीह की धार्मिकता का शुद्ध जामा आप **परिधान** किए हुए हो?

यह सब एक ही प्रश्न को ओर ले आता है।

*"किसने हमारी वार्ता पर **विश्वास** किया है?"* (यशायाह 53:1)

क्या तुमने परमेश्वर की वार्ता पर विश्वास किया है? क्या तुमने उसके सत्य के लिए अन्य सभी पर्यायों को छोड़ दिया है?

"जिससे आप जान सको"

परमेश्वर का वचन कहता है : *"मैंने **तुमको जो** परमेश्वर-पुत्र के नाम पर **विश्वास करते हो**, ये बातें लिखी हैं, **जिससे तुम जानो** कि तुम्हे शास्वत जीवन प्राप्त है।"* (1 यूहन्ना 5:13)

वर्षों पहले, मैंने एक बहुत ही धर्मी स्त्री के साथ परमेश्वर के अनंत जीवन के बारे में बातचीत की थी। भले ही वह अपने आपको मसीही कहती थी, उसने मसीह में परमेश्वर के उद्धार के प्रबन्ध पर कभी भी भरोसा नहीं रखा था।

जब मैंने उसे कहा, "मुझे पता है जब मैं मरूंगा तब मैं स्वर्ग जाऊंगा," उसने कुछ रोष में उत्तर दिया, "ओह, तुम्हे लगता है कि तुम इतने अच्छे हो कि तुम सीधे स्वर्ग जाओगे, क्या तुम जाओगे?"

"नहीं," मैंने उत्तर दिया, "इसलिए नहीं कि मैं 'इतना भला हूं। ' इसलिए कि परमेश्वर इतना भला है। वही एकमात्र है जिसने हमें कहा है 'कि [हम] **जान** सकते है कि हमें अनंत जीवन है' यदि हम उसमे और उसने हमारे लिए जो किया हैं उसमे विश्वास करते है।"

*"पाप की मजदूरी तो **मृत्यु** है, लेकिन परमेश्वर का वरदान है शास्वत जीवन जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है।"* (रोमियों 6:23)

अली कैसे जान सका

इस पुस्तक के पहिले अध्याय में, मैंने अली के बारे में उल्लेख किया है, उसे अपने परिवार द्वारा अस्वीकार किया गया क्योंकि उसने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास किया था।

ब्रूनो की तरह, अली भी 26 साल का था जब मैं उससे पहली बार मिला था। हालांकि, ब्रूनो की तरह सुखविलास-खोजनेवाला नहीं था, अली ने ईमानदारी से अपने धर्म का पालन किया था, एक विशेष रीति से प्रतिदिन की प्रार्थनाएं पढ़ी थी, पुरे महीने के लम्बे सालाना उपवास को किया था, और अन्य लोगों से ठीक बर्ताव रखने का प्रयास किया था। फिर भी उसके हृदय में उसने शांति के कष्ट का अभाव महसूस किया था।

अली रात में उसके बिस्तर पर जागता और सोचता रहता था, "मैंने मेरे धार्मिक कर्तव्यों को पूरा किया है—तो अनंतकाल से मैं इतना भयभीत क्यों हूं? हे परमेश्वर, क्या मेरे लिए यह जानने का कोई रास्ता नहीं है कि मरने के बाद मैं कहां जाऊंगा?"

अली ने यह प्रश्न उसके पिता और स्थानिक धार्मिक अगुओं से किया था, "मैं इससे कैसे निश्चित हो सकता हूं कि परमेश्वर मुझे स्वर्ग ले जाएगा?" प्रत्येक जन ने एक ही उत्तर तोते समान कहा था : "तुम जान नहीं सकते। कोई भी अपना नसीब जान नहीं सकता। केवल परमेश्वर जानता है।"

उनके उत्तर ने अली को संतुष्ट नहीं किया।

घर और पाठशाला में, अली को कुरान से सिखाया गया था कि यीशु, मरियम का बेटा, एक धर्मी भविष्यद्वक्ता था जो कुंवारी से जन्मा था। उसने यह भी सिखा था कि यीशु ही सामर्थ्यशाली-चमत्कार करने वाला था जिसे मसीहा, परमेश्वर का शब्द, और परमेश्वर का आत्मा ऐसी उपाधियां दी गई थी। "शायद भविष्यद्वक्ता यीशु जिस उत्तर को मैं खोज रहा हूं वह मुझे दे सकता है," उसने सोचा।

अली ने यीशु के विषय में पुस्तक प्राप्त करने का निर्णय लिया। कुछ सप्ताहों बाद, हम एक दूसरे से मिले। मैंने उसे एक बाइबल दी, जिसका उसने बड़े गहन रूचि के साथ अध्ययन करना शुरू किया। यहां, उसके अपने शब्दों में है, जो अली ने करीबन एक वर्ष पवित्रशास्त्र में खोजने के बाद प्राप्त किया था :

> मैंने सिखा कि सभी भविष्यद्वक्ता यीशु की ओर इशारा कर रहे हैं। मैंने पढ़ा जहां यीशु स्वयं कहता है : *"यीशु ने कहा, '**मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं।** मेरे बिन कोई पिता के पास नहीं आता। ....मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जो मेरा संदेश सुनता और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, **वह शास्वत जीवन प्राप्त करता है; वह दंड का भागी नहीं होता**, वरन वह मृत्यु को पार कर शास्वत जीवन में प्रवेश कर चूका है।"* (यूहन्ना 14:6; 5:24)
>
> इन और अन्य वचनों ने मुझे यीशु को समझने और स्वीकार करने में सहायता की

कि वह कौन है : एकमात्र उद्धारकर्ता जिसने अपना लहू बहाया और एक निश्चित उद्धार प्रदान करने के लिए मृत्यु में से जी उठा। मैंने उस पर और उस वास्तविकता पर विश्वास किया है कि उसने दुःख उठाया और मेरे पापों के लिए मेरी जगह मर गया। जिस क्षण मैंने विश्वास किया, मुझे भीतरी शांति का अनुभव हुआ जिसे मैंने पहले कभी जाना नहीं था। अद्भुत बदलाव!

मैं अब मेरे शास्वत भाग्य के बारे में चिंता नहीं करता क्योंकि मुझे पता है प्रभु ने मेरे सभी पापों के लिए पूर्ण भुगतान किया है जिसने मुझे दोषी ठहराया था। मुझे अब पता है कि मैं स्वर्ग जाऊंगा, इसलिए नहीं कि मैं भला हूं बल्कि यीशु मसीह में प्रदान किए गए परमेश्वर के अनुग्रह के कारण। अब मुझे हर एक बातों में परमेश्वर को प्रसन्न करना है, मेरा उद्धार प्राप्त करना नहीं है, लेकिन इसलिए कि परमेश्वर ने मुझे बचाया है और मेरे हृदय को बदल दिया है।

अली के लिए, पाप का श्राप पूरी तरह से उलट गया था। आज वह, उसकी पत्नी, और उनके पुत्र न ही केवल जानते हैं कि मरने के बाद वे कहां जाएंगे, पर उन्हें पता हैं कि वे पृथ्वी पर क्यों हैं : उनके सृष्टिकर्ता-उद्धारक को जाने, प्रेम करे और उसकी सेवा करे और उसे पहचानने में अन्य लोगों को भी उसके पास लाए।

मृत्यु : विश्वासियों का सेवक

पृथ्वी पर पहली बार आने पर, मसीहा ने परमेश्वर के तीन-चरण की योजना का पहिला भाग पूरा किया कि पाप के श्राप को उलट दें। उसका जीवन, मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान के द्वारा, यीशु ने पाप और मृत्यु की अभेद्य दिखनेवाली दीवार को तोड़ दिया। क्रूस पर का चोर, नरभक्षी, एम्मा, शाऊल, अली, ब्रूनो, और सभी जो ईमानदारी से परमेश्वर के संदेश में विश्वास करते हैं वे उसके लाभार्थी हैं।

मसीह में विश्वासियों के लिए, क्रूर तानाशाह, मृत्यु, को एक नम्र सेवक के पद पर फिर से नियुक्त किया है जिसका काम है कि परमेश्वर की आज्ञा से स्वर्ग के द्वार खोलना। जैसे पवित्रशास्त्र कहता है : *"प्रभु के संतो की **मृत्यु** प्रभु की दृष्टि में **मूल्यवान है**।"*[239] (भजन संहिता 116:15)

किसने सपने में भी कभी सोचा होगा कि शब्द "मूल्यवान" यह "मृत्यु" के रूप में वर्णन किया जा सकता है? परमेश्वर का धन्यवाद हो यह सभी के लिए जो विश्वास करते है- वैसे ही करता है।

*"ओ मृत्यु, कहां है तेरी विजय? **ओ मृत्यु, कहां है तेरा डंक**?"....लेकिन परमेश्वर की स्तुति हो, वह हमारे प्रभु यीशु मसीह द्वारा हमें मृत्यु पर विजय प्रदान करता है।"* (1 कुरिंथियों 15: 55, 57)

पाप के अतीत के श्राप को उलट दिया गया है।

पाठ 28

चरण 2: परमेश्वर की वर्तमान योजना

*"....मैं **उनके मन में** अपनी व्यवस्था प्रतिष्ठित करूंगा,*
*और मैं उसको **उनके हृदय पर** लिखूंगा ...... ।"*

—प्रभु (यिर्मयाह 31:33)

जबकि बहुत सारे लोग पाप के विनाशकारी श्राप के बारे में ज्यादा सोचते नहीं, अधिकांश लोग उस बंधन में जीते हैं जिसे जीवन का दैनिक श्राप कहा जा सकता है।

संसार के बहुसंख्य लोग विपत्ति, बीमारी और मृत्यु के भय में जीवन व्यतीत करते हैं। कई लोग भोजन खरीदने अथवा उनके कर्ज को भरने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं होने की चिंता करते हैं। अन्य लोग बुरा भाग्य, जादूटोना अथवा बुरी नज़र से डरते है, उनके आनंद के विषय में जोर से बोलने में सावधानी रखते है नहीं तो कुछ दुष्ट आत्मा सुन लेगी और उनके आनंद के लक्ष्य पर विपत्ति लाएगी। बुरी आत्मा और आपत्ति को दूर करने के लिए, कुछ लोग अपने आप पर और उनके बच्चों पर, साथ ही साथ उनके घरो में ताबीज अथवा तागा बांधते हैं। कई लोग सुरक्षा के लिए औषधी पीते अथवा मन्त्र उच्चारण करते है।[240]

कृतज्ञता के साथ, वे जो उनके सृष्टिकर्ता-उद्धारक को जानते और उस पर भरोसा करते हैं उन्हें ऐसी सावधानी रखने की आवश्यकता नहीं हैं क्योंकि वह बुराई के सभी शक्तियों से असीमित रूप से बड़ा है, फिर चाहे काल्पनिक अथवा प्रत्यक्ष में हो। यहां पर विश्वासियों को किसी का भय नहीं रखना हैं क्योंकि प्रभु यीशु के पास प्रत्येक शक्ति, जिसमे स्वयं मृत्यु भी है, उस पर अधिकार है।

यीशु न केवल हमारे अनंतकाल पर पाप के श्राप के प्रभाव को उलटने आया बल्कि हमारे दैनिक जीवन पर पाप के श्राप के प्रभावों को उलटने के लिए भी आया।

श्राप को उलट देना : चरण दो

पवित्रशास्त्र कहता है, *"प्रिय बालको, तुम परमेश्वर के हो। तुम विजयी हुए हो; क्योंकि जो अंतर्यामी **तुममें है, वह उससे बड़ा हैं** जो संसार में है।"* (1 युहन्ना 4:4)

विश्वासी में "**यह** जो **भीतर** है" वह कौन है?

क्रूस पर जाने की पहली रात में, यीशु ने उसके शिष्यों से कहा :

*"मैं पिता से निवेदन करूंगा और वह तुम्हें **दूसरा सहायक** देगा कि वह सदा तुम्हारें साथ रहे- अर्थात **सत्य का आत्मा**। संसार उसको स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि न तो वह उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो; क्योंकि **वह तुम्हारे साथ रहता** है और **तुममें रहेगा**। मैं तुम्हे अनाथ नहीं छोडूंगा, **मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं**। तुम्हारे साथ रहते हुए ही मैंने तुमसे ये बातें कह दी है, लेकिन **सहायक अर्थात पवित्र आत्मा**, जिसे पिता **मेरे नाम में** भेजेगा, तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको स्मरण कराएगा। 'शांति मैं तुमको दिए जाता हूं, अपनी शांति मैं तुम्हें प्रदान करता हूं-जैसे संसार देता वैसे मैं तुम्हें नहीं देता। **'तुम्हारा मन व्याकुल और भयभीत न हो**।"* (यूहन्ना 14:16-18, 25-27)

दूसरा सहायक

यीशु ने उसके शिष्यों से प्रतिज्ञा की थी, वह स्वर्ग जाने के बाद, पिता उन्हें "***दूसरा सहायक**...... पवित्र आत्मा"* भेज देगा।

ग्रीक शब्द जो *हिंदी भाषा में सहायक* के रूप में अनुवादित किया है वह पॅराक्लेटॉस है, जिसका अर्थ सहायक, सांत्वनदाता , परामर्शदाता अथवा वकील है। पवित्रशास्त्र में, पॅराक्लेटॉस यह परमेश्वर-पुत्र और परमेश्वर का पवित्र आत्मा दोनोही के लिए उपयोग किया गया है।[241]

जैसे पुत्र आया कि पापियों को पाप के दंड से बचाए, वैसे ही आत्मा आया कि विश्वासियों को पाप के सामर्थ्य से बचाए।

पवित्र आत्मा हमेशा से ही परमेश्वर के साथ था, जैसे पुत्र भी परमेश्वर के साथ हमेशा से है। इसलिए परमेश्वर की पुस्तक के आरंभ की घोषणा में वह *"**परमेश्वर का** आत्मा"* के रूप में पहचाना गया है। (उत्पत्ति 1:2)

जैसे बहुत सारे लोग करते है, वैसी सलाह देना,[242] कि पवित्र आत्मा भविष्य का भविष्यद्वक्ता था (अथवा गब्रीएल दूत!) यह न ही केवल भविष्यद्वक्ताओं के पवित्रशास्त्र के विरोध में है, लेकिन

उसके सरल विरोध में भी जाता है जो प्रभु यीशु ने कहा और किया था।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वह क्रूस पर मरने और फिर से जीवित होने के बाद, वह स्वर्ग में जाएगा ताकि पवित्र आत्मा उतर सके और वे सब जो परमेश्वर के संदेश में विश्वास रखते हैं उनके हृदयों में निवास करे। पुत्र ऊपर जाएगा और पवित्र आत्मा नीचे उतर आएगा। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा : *"तुमसे मैं सच कहता हूं; क्योंकि यदि मैं न जाऊ तो* ***सहायक*** *तुम्हारे पास नहीं आएगा, लेकिन* ***यदि जाऊं तो मैं उसे तुम्हारे पास भेजूंगा।"*** (यूहन्ना 16:7)

इतिहास में इस क्षण तक, पवित्र आत्मा कभी कभी विश्वासियों के साथ उन्हें सामर्थ्य, मार्गदर्शन और आशीष प्रदान करने के लिए रहा था। हालांकि, यीशु ने जब संसार के पाप की समस्या पर उपाय करने के केवल बाद में ही पवित्र आत्मा विश्वासियों के भीतर स्थायी रूप से निवास करने को आ सकेगा।

प्रभु यीशु एक बहुत ही विशेष घटना की घोषणा कर रहा था। *"सत्य का आत्मा....तुम्हारे साथ रहता है और* ***तुममें रहेगा।"*** (यूहन्ना 14:17)

पवित्र आत्मा आ रहा है

यीशु मृतकों में से जीवित होने के बाद, पवित्रशास्त्र अभिलिखित करते है :

> *"प्रेरितों के साथ भोजन करते समय यीशु ने उन्हें यह आदेश दिया, 'यरूशलेम से बाहर न जाना, वरन मेरे* ***पिता की उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की प्रतीक्षा करना****, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी है : यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, लेकिन थोड़े ही दिन पश्चात् तुम* ***पवित्र आत्मा*** *से बपतिस्मा पाओगे। '....* ***लेकिन जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा, तब तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे और यरूशलेम में, समस्त यहूदा प्रदेश में, सामरी प्रदेश में और पृथ्वी के सीमान्त तक मेरे साक्षी होंगे।"*** (प्रेरितों के काम 1:4-5, 8)

पिन्तेकुस्त[243] के दिन ठीक ऐसा ही हुआ था, यीशु जी उठने के पचास दिन बाद और उसके स्वर्गारोहण के दस दिन बाद।

> *"पिन्तेकुस्त-पर्व का दिन आया। उस दिन यीशु के अनुयायी [करीबन 120 विश्वासी-पुरुष और स्त्रियां] एक स्थान पर एकत्र थे। तब एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट की आवाज हुई; और उससे सारा घर, जहां वे बैठे थे, गूंज गया। उन्हें आग के सदृश जीभें दिखाई दी जो विभाजित होकर उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरी।* ***वे सब पवित्र आत्मा से भर गए*** *..... ।"* (प्रेरितों के काम 2:1-4)

नया नियम इस नाटयमय घटना को प्रेरितों के काम पुस्तक के दूसरे अध्याय में दर्ज करता है। पवित्र आत्मा के सामर्थ्य द्वारा, यीशु के शिष्यों ने बहुत से परदेसियों की विविध भाषाओं में परमेश्वर का सुसमाचार घोषित करना आरंभ किया जो यरूशलेम में आसिया, अरब और संसार के अन्य देशों से आए हुए थे।

उसी दिन पवित्र आत्मा उतरा और तीन हजार लोगों ने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास किया और उसके अनंत जीवन का दान प्राप्त किया था। विश्वासियों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी।

प्रेरितों के काम मसीह के पहले विश्वासियों के इतिहास को अभिलिखित करता है और बताता है कि पुनरुत्थित मसीहा का सुसमाचार पुरे रोमन साम्राज्य में फैल गया, तलवार की सामर्थ्य द्वारा नहीं, लेकिन परमेश्वर के प्रेम की सामर्थ्य और पवित्र आत्मा द्वारा फैल गया था।

बुलाए हुए व्यक्ति

परमेश्वर का इस वर्तमान समय में पृथ्वी पर मुख्य कार्यक्रम यह *"उसके नाम के लिए [राष्ट्रों] में से लोगों को निकाल लेना है।"* (प्रेरितों के काम 15:14)

पिन्तेकुस्त-पर्व के दिन पवित्र आत्मा के आने से विश्वासियों के एक विशेष परिवार को जन्म दिया जिसे कलीसिया कहते है। कलीसिया के लिए मूल ग्रीक शब्द एक्लेसिया है, जिसका सरल अर्थ: सभा या बुलाए हुए जन। आज शब्द कलीसिया यह गलत कल्पनाएं और अनगिनत सम्प्रदाय के साथ पहेली बन कर रह गया है। बहुत सारे अपने आपको मसीही कहते है वे जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं उसके द्वारा मसीह के नाम का खुले तौर से अनादर कर रहे हैं। बहुतों का धर्म है, लेकिन उन्हें परमेश्वर के साथ ईमानदार संबंध नहीं हैं। यीशु के लहू में विश्वास द्वारा उनके पाप से वे कभी भी शुद्ध नहीं हुए हैं।

सुसमाचार यह है कि परमेश्वर सभी जगह सब लोगों को आमंत्रित करता है कि उसके पुत्र पर भरोसा करे, उसकी विशेष नई सृष्टि हो जाए, और विश्वासियों के परिवार में दत्तक लिए जाए जो उसके साथ अनंतकाल बिताएंगे।

यीशु के आने से पहले वे सभी जिन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास किया (पुराने नियम के समय में) वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं, लेकिन केवल वे ही जिन्होंने यीशु के आने में विश्वास किया हैं वे ही जीवित जीव का हिस्सा हैं जिसे "कलीसिया" के नाम से जानते है। कलीसिया को "मसीह की देह" और "दुल्हन" भी कहते है।[244] वे सभी जो प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करतें हैं, पवित्रशास्त्र कहता है :

> *"लेकिन तुम परमेश्वर का **चुना हुआ वंश हो**,.......ताकि तुम उसके महान कार्यों की घोषणा करो जिसने तुमको अंधकार से अपनी अलौकिक ज्योति में बुलाया है। उस समय तुम कुछ भी नहीं थे, किंतु अब **परमेश्वर की प्रजा हो**। ...."* (1 पतरस 2:9-10)

बाइबल का पहला और दूसरा अध्याय प्रकट करते हैं कि, आरंभ में कैसे, परमेश्वर ने मनुष्य को उसकी अपनी विशेष सृष्टि बनाया था। तीसरा अध्याय अभिलिखित करता है आदम ने कैसे पाप किया और अपने आपको को और संपूर्ण मानवजाति को परमेश्वर से अलग किया। तथापि, पवित्रशास्त्र जो उसके बाद आता है वह स्पष्ट करता है परमेश्वर ने क्या किया है ताकि अशुद्ध पापी लोग फिर एक बार "उसके अपने खास लोग" हो जाए।

क्या आप परमेश्वर के विशेष लोगों का हिस्सा हैं? यदि है, तो फिर तुम पहले ही परमेश्वर के दूसरे चरण में प्रवेश किए हुए हो कि श्राप को उलट दे।

उद्धार किए हुए और मोहरबंद

एक पापी के जीवन में पवित्र आत्मा जो पहली चीज करता है जो परमेश्वर के उद्धार के दान को प्राप्त करता है वह उसे *नया जीवन* देना है। वे सभी जो अपने भरोसे को खुद से और अपने स्वयं के प्रयासों से यीशु मसीह को और उसने उनके लिए क्रूस पर जो पूरा किया है उस पर सौंप देते है वे पवित्र आत्मा द्वारा आध्यात्मिक रूप से फिर से जन्म लेंगे।

यीशु ने कहा,

> *"जो शरीर से जन्म लेता है, वह शरीर है; पर जो आत्मा से जन्म लेता है, वह आत्मा है। जब मैं कहता हूं कि **तुम्हें नया जन्म लेने** की आवश्यकता है तो चकित मत हो। .....परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि **जो मनुष्य उसके पुत्र पर विश्वास करेगा वह नष्ट नहीं होगा, लेकिन शास्वत जीवन पाएगा**।"* (यूहन्ना 3:6-7, 16)

" नया जन्म लेना" यह कितनी अद्भुत बात है! पापियों ने आध्यात्मिक रूप से नया जन्म लेना यह जीवित परमेश्वर का उसके सभी जटिल एकता का कार्य है। नया जन्म संभव है क्योंकि पिता ने पुत्र को भेजा है, पुत्र ने पाप के लिए उसका लहू बहाया है, और पवित्र आत्मा विश्वासियों को नए जीवन से भरता है।

पवित्र आत्मा न ही केवल अनंत जीवन देता है; वह हमें हमेशा के लिए मोहरबंद करता है, परमेश्वर के स्वयं की सम्पत्ति के रूप में चिन्हित करता है, और हम में स्थायी निवास करता है। जब

हमारा समय आता है कि इस संसार को छोड़ दे तो वह पिता के घर में हमारे सुरक्षित आगमन की गारंटी भी देता है।

> *"मसीह में तुमने सत्य वचन अर्थात अपने उद्धार का शुभ संदेश सुना है और मसीह पर **विश्वास किया है; परमेश्वर ने तुम पर उस पवित्र आत्मा की मुहर लगाई है, जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की है और जो हमारे उत्तराधिकार का बयाना है........ ।"*** (इफिसियों 1:13-14)

कोई भी चीज एक सच्चे विश्वासी को उसके अनंत उद्धार को गंवाने कारण नहीं बन सकती। "पवित्र आत्मा....**बयाना है**।"

फिर से पाप करने के लिए स्वतंत्र?

समय समय से, मैंने लोगों को व्यंगात्मक रूप से यह कहते सुना है, "ठीक है, तो मुझे केवल इतना ही करना है कि स्वर्ग में स्थान पाने की शास्वती के लिए विश्वास करना कि यीशु मेरे पापों के लिए मरा और फिर मैं पाप करता ही रहूंगा जैसे मुझे ठीक लगता है, क्या यही सत्य नहीं है?"

उसी तर्क का उपयोग करके, अगर कोई आपको बचाता है जब आप बंजर भूमि में आशाहीन रूप में गुम हो गए थे, तब आप आपके बचानेवाले को क्या यह कहोगे, "धन्यवाद! अब मैं स्वंतत्र हूं कि फिर से गुम हो जाऊ"?

अथवा यदि एक कर्ज देनेवाला आपको बड़े कर्ज से क्षमा करता है, तो क्या आप जानबूझकर उन बातों को करना चाहेंगे जो उसे अपमानित करती हैं?

अथवा यदि आप ने अभी साफ और ठीक तरह से इस्त्री किए हुए वस्त्र पहने है, क्या आप सोचते हो, "अच्छा है! अब मैं गंदगी में लेट सकता हूं!"?

ऐसी मानसिकता अकल्पनीय है।

तो फिर जब पाप और उसके परिणाम की बात आती है तो आदाम की संतान ऐसा क्यों सोचती हैं?

उत्तर यह दुर्भाग्यवश स्पष्ट है। पाप की हमारे मन और हृदयों पर मजबूत पकड़ है, यहां तक कि हमें विश्वास दिलाने की हद तक कि पाप अच्छा और चाहनेयोग्य है। निस्सन्देह, ऐसा दृष्टिकोण यह कोई नया नहीं है। आदम और हव्वा ने भी पाप को इसी दृष्टिकोण से देखा—वर्जित फल लेने की संभावना—*"बुद्धिमान बनाने के लिए **चाहने योग्य** है।"* (उत्पत्ति 3:6)

क्या समझने की आवश्यकता है कि जिस क्षण पापी व्यक्ति परमेश्वर के संदेश पर विश्वास करते

हैं, वे अब पाप के जंगल में गुम नहीं होते। उस बोझ से भरे कर्ज को पूर्ण रूप से भुगतान किया गया है। विश्वासी अब मसीह की पवित्र धार्मिकता को धारण कर चूका है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के एक नवजात बच्चे में पवित्र विश्वास स्थापित करता है कि पाप यह बुरी बात है, अच्छी बात नहीं। वह परमेश्वर के लोगों को ऐसा जीवन जीने की शक्ति भी देता है जो उसके पवित्र चरित्र और आचरण को दर्शाता है। स्वर्गीय परिवार के सदस्य होने के नाते, परमेश्वर के एक नवजात बच्चे जैसा जीवन जीना चाहेंगे जिससे परिवार का सम्मान बना रहे।

जबकि विश्वासी पवित्र आत्मा की उपेक्षा कर सकते हैं और अपने जीवन के तरीके से प्रभु का अपमान कर सकते हैं, तभी मसीह में सभी सच्चे विश्वासियों के भीतर स्वर्गीय मेहमान अतिथि रहता है। इसीलिए पवित्रशास्त्र सभी को प्रेरित करता है जिन्होंने मसीह पर भरोसा किया है :

> *"परमेश्वर के पवित्र आत्मा को **शोकित मत करो**, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए **तुम पर छाप दी गई है!**"* (इफिसियों 4:30)

प्रभु यीशु में विश्वास करने वाले उस उद्धार को कभी गवां नहीं सकते जो उन्होंने विश्वास द्वारा प्राप्त किया है, लेकिन अविश्वासियों समान जीवन व्यतीत करने के द्वारा वे *"परमेश्वर के पवित्र आत्मा को दुःख"* दे सकते हैं। *जब प्रभु के लोग आज भी संसार **में** हैं, "वे अब इस संसार **के** नहीं हैं, जैसे [वह] इस संसार का नहीं है।"* (यूहन्ना 17:16)

जैसे प्रभु यीशु इस संसार के अधार्मिक व्यवहारों का द्वेष करता है, वैसे ही उसके शिष्य भी करते है।

> *"तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह की वृद्धि हो? **कदापि नहीं**। हम जो पाप के प्रति मर चुके हैं, अब कैसे उसमे जीवन बिताएंगे?"* (रोमियों 6:1-2)

> *"अतएव अपने सांसारिक स्वभाव का दमन करो जैसे अशुद्धता, व्यभिचार, वासनाएं, बुरी इच्छाएं और लोभ का, जो मूर्ति पूजा के तुल्य है। इन कुकर्मों के कारण परमेश्वर की इच्छा न माननेवालों पर परमेश्वर का क्रोध भड़क उठता है। जब तुम इन कुकर्मों में जीवन बिताते थे तब तुम्हारा भी आचरण ऐसा ही था। किंतु अब क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा, मुंह से अश्लील बातें निकालना- इन सब को सर्वथा त्याग दो। एक दूसरे से झूठ न बोलो क्योंकि तुमने **पुराने स्वभाव एवं उसके कर्मों को छोड़ दिया है**, और **नया स्वभाव धारण कर लिया है**। यह नया-स्वभाव ज्ञान-प्राप्ति के लिए अपने **सृष्टिकर्ता का प्रतिरूप ग्रहण करता** और नवीन बनता जाता है।"* (कुलुस्सियों 3:5-10)

विश्वासियों में परमेश्वर का जीवन

यंहा तक कि जैसे परमेश्वर पुत्र विश्वास करने वाले पापियों को पाप के दंड से छुडाने के लिए आया, वैसे ही परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों को पाप की दैनिक शक्ति से छुड़ाने के लिए आया है।

यहां दिया गया है कि वह कैसे कार्य करता है।

जिस क्षण कोई व्यक्ति अपना विश्वास मसीह में रखता है, परमेश्वर का आत्मा उनकी आत्मा में आकर वास करने के द्वारा उस व्यक्ति के भीतर अपना राज्य स्थापित कर देता है। वह विश्वासियों को एक नया स्वभाव देता है जो प्रभु को प्रसन्न करना चाहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति का स्वार्थी, पापी स्वभाव हटा दिया गया है। विश्वासी प्रभु के साथ स्वर्ग में होने के बाद ही पुराने स्वभाव को हटा दिया जाएगा। इस संसार में, विश्वासी निष्पाप सिद्धता की अवस्था तक नहीं पहुंच सकते। हालांकि, उन्हें गहरा दुःख होता हैं जब वे प्रभु को अप्रसन्न करते हैं।[245]

प्रत्येक सच्चे विश्वासी के जीवन में पुराना स्वभाव (आदम से विरासत में प्राप्त किया हुआ) और नए स्वभाव (पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न किया गया) के बीच में लगातार संघर्ष चलता रहता है। मसीह का वास करने वाला आत्मा विश्वासी को परमेश्वर को प्रसन्न करने की हार्दिक इच्छा देता है। वह उसके लोगों को सिखाता है कि भले ही पाप *"**लुप्त** होनेवाले सुख"* (इब्रानियों 11:25), प्रदान कर सकता है, *"पर उन बातों का अंत **मृत्यु** है। लेकिन अब पाप से छुडाए जाने के बाद...... आपको **पवित्रता के आपके फल है"*** (रोमियों 6:21-22)। पवित्र आत्मा विश्वासियों के मन में बड़ा परिवर्तन करता है।

> *"लेकिन आत्मा का फल है प्रेम, आनंद, शांति, सहनशीलता, दयालुता, हितकामना, सच्चाई, नम्रता और आत्मसंयम। इनके विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है।"*
> (गलातियों 5:22-23)

आत्म-प्रयास के धर्म आध्यात्मिक फल नहीं देते। हालांकि धार्मिक व्यवस्था शायद व्यक्ति के बाहरी आचरण को कुछ हद तक नया कर सकते है, केवल पवित्र आत्मा व्यक्ति के भीतरी स्वभाव को बदल सकता है।

परमेश्वर अपने शासन को आपके जीवन में प्रशासित करना चाहता है। अनुसरण करने के लिए नियमों की सूचि देने के बजाय, वह अपना जीवन आप में और आपके द्वारा दूसरों की आशीष और अपने नाम की महिमा के लिए जीता है।

सूचि अथवा प्रेम?

एक मनुष्य की कहानी बतायी गई जिसकी पत्नी मर गई थी। विधुर ने एक महिला को काम

पर रखा था कि उसका घर साफ करे और उसके कपडे सप्ताह में तीन बार धोएं। उस मनुष्य ने रेफ्रीजरेटर पर काम करने की सूचि लगा दी जो वह चाहता था कि घर साफ करनेवाली जब हर एक बार आती है उसने इन कामों को करना हैं। और, हां, उसने उसके काम के लिए उसे भुगतान किया।

कुछ समय बीतने के बाद, मनुष्य उस महिला से प्रेम करने लगा और उससे पूछा की उसकी पत्नी बन जाए। उसने स्वीकार किया। उन्होंने विवाह करने के बाद, मनुष्य ने रेफ्रीजरेटर पर लगाई गई काम करने की सूचि को हटा दिया। उसने उसे अधिकृत वेतन देना भी बंद कर दिया। क्यों? क्योंकि "घर साफ करनेवाली महिला" अब उसकी प्रिय पत्नी हो गई थी! अब वह ख़ुशी से घर साफ करती थी, कपडे धोती, और घर के और सभी कामों को करती थी जो उस सूचि में कभी नही थे। क्यों? क्योंकि वह अपने पति से प्रेम करती थी और उसे खुश करना और उसकी सेवा करना चाहती थी। रेफ्रीजरेटर के नियम अब उसके हृदय में लिखे गए थे।

परमेश्वर उनके लिए वही करता है जो उसके हैं।

*"मैं प्रभु –यह कहता हूं; उन दिनों के पश्चात् मैं इस्राएल के घराने से यह वाचा स्थापित करूंगा : मैं **उनके मन में** अपनी व्यवस्था प्रतिष्ठित करूंगा, और मैं उसको **उनके हृदय पर लिखूंगा**। मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे निज लोग होंगे।"* (यिर्मयाह 31:33)

रेफ्रीजरेटर सूचि समान, मनुष्य का धर्म कर्तव्यों की सूचि आपको प्रस्तुत करता हैं जिसे पूरा करना है, यह वादा करते हुए कि आपको न्याय के दिन भुगतान मिल सकता है, "यदि परमेश्वर ने चाहा तो।"

महिमामयी तुलना में, प्रभु अपने आपके साथ तुम्हे संबंध प्रदान करता है। न ही केवल उसने आपके दंड को सहा है और आपको अनंत जीवन प्रदान किया है, लेकिन उसके पवित्र आत्मा द्वारा वह आना और आपके साथ निवास करना चाहता है यदि आप उसके प्रस्ताव का स्वीकार करेंगे।

कर्त्तव्य-कर्मों की लम्बी सूचि आप पर लादने के बदले जिसे आप कभी भी पूरा नहीं कर सकते, परमेश्वर आपको उसे प्रसन्न करने और प्रेमपूर्ण हृदय से उसकी सेवा करने की इच्छा देने का वादा करता है। सूचियों और नियमों के धर्म की तुलना में प्रेम का संबंध अच्छे कामों के लिए उत्तम प्रेरणा प्रदान करता है। वह इसलिए :

*"........इसलिए व्यवस्था की पूर्ति है-**प्रेम**।"* (रोमियों 13:10)

धर्म आपको एक नया जीवन और स्वर्ग में स्थान देने का वादा कर सकता है, लेकिन केवल पवित्र आत्मा उसे प्रदान कर सकता है। वही केवल एकमात्र है जो आपको परमेश्वर का प्रेम, आनंद,

शांति, और अनंत सुरक्षिततता से भर सकता है।

> *"और यह आशा हमें निराश नहीं होने देती, क्योंकि* ***पवित्र आत्मा द्वारा, जो हमें प्राप्त हैं, परमेश्वर का प्रेम हमारे ह्रदय में उंडेला गया हैं।"*** (रोमियों 5:5)

आनंदपूर्ण आज्ञाकारिता

निस्सन्देह, वास्तविकता यह है कि विश्वासी लोग परमेश्वर के प्रेम से भरे ह्रदय से प्रभु और लोगों की सेवा करते हैं इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें मानने के लिए कोई आज्ञा नहीं है। उदाहरण के लिए, यीशु स्वर्ग जाने से पहले, उसने अपने शिष्यों से कहा :

> *"तब यीशु ने उनके पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का समस्त अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ* ***और सब लोगों को मेरा शिष्य बनाओ।*** *उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और जिन बातों की मैंने तुम्हें आज्ञा दी है,* ***उन सबका पालन करना उन्हें सिखाओ;*** *देखो युगान्त तक मैं सदा तुम्हारे साथ हूं।"*
> (मत्ती 28:18-20)

यीशु ने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि "सभी राष्ट्रों" को उद्धार का सुसमाचार घोषित करे। एक व्यक्ति को परमेश्वर के उद्धार दान प्राप्त करने के बाद, उसे "सब बातों का पालन करना" सिखाया जाना चाहिए जिसकी यीशु ने आज्ञा दी थी। उदाहरण के लिए, यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया कि उनके शत्रुओं से प्रेम करे और सभी के लिए आनंदित सेवक बनो। मसीह के अनुयायियों का जुनून यह होना चाहिए कि एक सत्य परमेश्वर को दुनिया भर में जाना जाए, उस पर भरोसा किया जाए और उसकी प्रशंसा की जाए।

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि इन नए विश्वासियों को *"पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"* ध्यान दें कि यह ***"के नाम पर"*** (एकवचन) है, न कि "नामों में" (बहुवचन)। केवल वे ही जो अपने आपको असहाय पापी के रूप में देखते है और यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं वे ही एक सत्य परमेश्वर जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है उसके साथ अनंत संबंध में प्रवेश करेंगे।

वे जो विश्वास करते है कि परमेश्वर का संदेश एक नदी में अथवा पानी के किसी और प्रकार में बपतिस्मा लेने के द्वारा उनके विश्वास को दिखाना है।

बपतिस्मा क्यों?

क्या विश्वासी को पानी के भीतर विधिवत जाने की आवश्यकता है कि पाप से शुद्ध हो जाए? नहीं, विश्वासी को परमेश्वर द्वारा पहले ही शुद्ध और धर्मी घोषित किया गया है क्योंकि मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा जो किया है। पानी का बपतिस्मा यह आतंरिक सत्यता का बाहरी प्रतिक है। एक बार जब हम परमेश्वर के संदेश पर विश्वास कर लेते हैं, तो हमें अपने उद्धारकर्ता और नए स्वामी की आज्ञाकारिता में बपतिस्मा लेना चाहिए, लेकिन यह ऐसा बपतिस्मा नहीं है जो हमें स्वर्ग के योग्य बनाता है।[246]

तो पानी का बपतिस्मा कहा योग्य ठहरता है? प्रभु यीशु के साथ उसकी मृत्यु, गाड़े जाना और पुनरुत्थान के साथ विश्वासियों की पहचान के दृश्य रूप का प्रतिक है। पानी का बपतिस्मा परमेश्वर के छुड़ाने की योजना में अपने विश्वास की घोषणा करने का एक तरीका है। पानी मृत्यु को प्रतिनिधित करता है। जब व्यक्ति को पानी के भीतर ले जाते है, वह यह दिखा रहा है : "यीशु मेरे पापों के लिए मरा और गाड़ा गया।" और व्यक्ति जब पानी के ऊपर आता है, वह यह दिखा रहा है : "यीशु ने मेरे लिए मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। मेरी ओर से उसकी मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान के कारण, मैं पाप से शुद्ध, धर्मी घोषित हुआ हूं, और मुझे अनंत जीवन प्रदान किया गया है।

इस विषय में कोई गलती न करें। पापियों का परमेश्वर के सम्मुख स्वीकार यह केवल एक सिद्ध धार्मिकता और यीशु मसीह के पूरे किए हुए कार्य में ही प्राप्त होता है। क्षमा किया हुआ पापी के रूप में, मैं यह जानता हूं मैं प्रभु के साथ हमेशा जीवन व्यतीत करूंगा, इस कारण से नहीं कि मैं भला हूं, लेकिन इस कारण से कि *"मैं **मसीह में** पाया जाऊ। यह मेरी अपनी धार्मिकता से नहीं होगा, जिसका स्त्रोत व्यवस्था है, वरन उस धार्मिकता से होता है, जो मसीह में विश्वास करने से मिलती है,* ***जिसका उद्गम परमेश्वर है, जिसका आधार विश्वास है।****"* (फिलिप्पियों 3:9)

मनुष्यों के धर्म आपको खुद को और अपने प्रयासों को देखना सिखाते हैं। परमेश्वर का सुसमाचार आपको मसीह और उसके निष्कलंक धार्मिकता की ओर देखना सिखाता है।

विश्वासियों के लिए न्याय नहीं?

वास्तविकता यह है कि मसीह ने पापियों को अनंतकालीन दोष से बचाने के लिए सब कुछ आवश्यक किया है यह बहुत सारे लोगों में और एक प्रश्न उठाता है। एक ई-मेल संवाददाता ने पूछा :

भेजो **विषय :** ईमेल-संबंधी प्रतिक्रिया

यदि यीशु ने क्रूस पर अपना लहू बहाया कि लोगों को उनके पापों से बचाए, तो क्या यह न्याय के दिन के उद्देश्य को रद्द करता है?

नहीं, यीशु की हमारे पापों के लिए क्रूस पर मृत्यु इस वास्तविकता को रद्द नहीं करती कि विश्वासियों ने अपने आपका हिसाब परमेश्वर को देना चाहिए। पवित्रशास्त्र कहता है : *"**न्याय का समय आ पहुंचा है, और यह स्वयं परमेश्वर के परिवार से आरंभ हो रहा है।** यदि उसका आरंभ हम से ही हो रहा है तो परमेश्वर का शुभ संदेश न सुनने वालों का क्या अंत होगा?"* (1 पतरस 4:17)

दो न्याय के दिन

पवित्रशास्त्र भविष्य में होनेवाले न्याय के दो स्पष्ट रूप से विभिन्न वर्णन करता है। पहला, तब पुनरुत्थान होगा और धर्मी लोगों का न्याय होगा और उसके बाद, पुनरुत्थान और अधर्मियों का न्याय होगा।[247]

• **धर्मियों का न्याय : आप** न्याय के इस दिन का हिस्सा बनना चाहते हैं। मसीह के इस न्याय आसन पर कोई प्रश्न नहीं होगा कि उपस्थित लोगों को स्वर्ग अथवा नरक भेजा जाएगा। वे पहले ही स्वर्ग में होंगे इस वास्तविकता के आधार पर कि जब वे पृथ्वी पर रहते थे तभी उन्होंने परमेश्वर की धर्मियता का दान प्राप्त किया था। तथापि, विश्वासी के रूप में उनके कामों का इरादा और मूल्य का अंदाज परमेश्वर पर आधारित होगा, उन्हें पुरस्कार अथवा नुकसान उठाना होगा। एक विश्वासी जिसने परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन व्यतीत किया है, दूसरों की नम्रता से सेवा की, परीक्षाओं में परमेश्वर पर भरोसा किया, उसके वचन से प्रेम किया और उसे फैलाया, और प्रभु के आगमन के लिए अपेक्षा से इंतजार किया उन्हें ही पुरस्कार दिया जाएगा। जबकि स्वार्थी विश्वासी *"नुकसान उठाएगा"; फिर भी वह स्वयं बचाया जाएगा, लेकिन मानो अग्नि में झुलसा हुआ"* (1 कुरिंथियों 3:11-15 देखो)। बाइबल पांच विभिन्न *"मुकुट"* का वर्णन करती हैं जिसे विश्वासी प्राप्त करेंगे, जिसे वे कृतज्ञतापूर्वक प्रभु के चरणों के पास रख देंगे।[248] *"**हम सब को** परमेश्वर के न्याय-आसन के सम्मुख खड़ा होना है ....अत: **हममें से प्रत्येक** मनुष्य अपना-अपना लेखा परमेश्वर को देगा।"* (रोमियों 14:10, 12)

• **अधर्मियों का न्याय :** आप इस भयानक विशाल सफेद सिंहासन के न्याय का हिस्सा नहीं बनना चाहते हैं, जैसा कि इसे कहा जाता है। यह भयानक घटना उन सभी के लिए होगी जो जब पृथ्वी पर थे तब परमेश्वर के उद्धार के प्रबन्ध में भरोसा किए बिना अपने पापों में मर गए थे। वहां कोई प्रश्न नहीं होगा कि वे स्वर्ग अथवा नरक में जाएंगे। सभी को अग्नि की झील में दोषी ठहराया जाएगा, हालांकि प्रत्येक को उनके द्वारा किए गए सत्य के साथ किए गए कार्यो के अनुसार दंड की अलग-अलग दशा प्राप्त होगी। *"फिर मैंने देखा कि **प्रत्येक का उसके कर्मो के अनुसार न्याय हुआ।** तब मृत्यु और अधोलोक अग्निकुण्ड में फेंक दिए गए। यह अग्निकुण्ड द्वितीय मृत्यु है।*

जिसका नाम जीवन-पुस्तक में लिखा हुआ नहीं मिला, वह अग्निकुण्ड में फेंक दिया गया।" (प्रकाशितवाक्य 20: 11-15 देखो)

सुसमाचार यह है कि जो कोई भी इन वचनों को पढ़ रहा है उसे नष्ट होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रभु यीशु पाप के दंड से सभी को स्वतंत्रता देता है।

परमेश्वर के बच्चे

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, जिस क्षण आप प्रभु यीश मसीह और उसने आपके लिए जो किया है उसमें आपका भरोसा रखते है, आप परमेश्वर के परिवार के सदस्य हो जाओगे।

परमेश्वर अब से दूर नहीं दिखेगा।

वह आपका *पिता* होगा।

> *"किंतु जितनों ने उसको स्वीकार किया और उसके नाम पर विश्वास किया, उनको परमेश्वर की **सन्तान बनने** का अधिकार दिया। ......वरन **परमेश्वर से उत्पन्न हुए** हैं।"* (यूहन्ना 1:12-13) / .....*अब **तुम पुत्र हो क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र का आत्मा हमारे हृदय में भेजा है** जो पुकारता है, **'अब्बा, हे पिता** [पापा]।'"* (गलातियों 4:6)

यह संसार धर्मों से भरा है जो उस परमेश्वर को दर्शाते है जो बहुत दूर, विधियों-की मांग करनेवाला है, जो लोगों को स्वयं के साथ व्यक्तिगत संबंध प्रदान नहीं करता है। इसकी तुलना में, परमेश्वर जिसने उसके पुत्र को पृथ्वी पर भेजा उसने अपने आपको स्वर्गीय पिता के रूप में प्रकट किया है जो पापियों से प्रेम करता है। वे सभी जो उसके पुत्र यीशु मसीह का स्वीकार करते हैं, उन्हें शुद्ध करने का वह वादा करता है, उन्हें मसीह की सिद्धता का वस्त्र पहिनाता है, और अपना पवित्र आत्मा उनको हृदयों में भेजता है।

"आय डेअर टू कॉल हिम फादर" अपने इस पुस्तक में, पाकिस्तान की बिल्कीस शेख अपनी खोज के बारे में बताती है कि उसने एक सत्य परमेश्वर के संदेश को प्राप्त किया है। उसकी धार्मिक परवरिश की किताब के साथ बाइबल की तुलना करने के कई महीनों बाद, वह अपना अनुभव बताती है जब वह परमेश्वर के पास रो रही थी कि उसे सत्य दिखा दे :

> "मैंने दोनों किताबे उठा ली और उन्हें ऊपर उठाया, प्रत्येक हाथ में एक। 'कौनसी, पिता?' मैंने कहा। 'कौनसी आपकी किताब है?' फिर एक विलक्षण बात हुई। इस प्रकार की बात मेरे जीवन कभी भी नहीं हुई थी। क्योंकि मैंने मेरे भीतर एक आवाज सुनी, एक आवाज जिसने मुझे स्पष्ट रूप से कहा जैसे कि मैं मेरे भीतरी मन में उन शब्दों

को बारंबार कह रही हूं। वे उतने ही नए, करुणा से भरे, फिर भी उसी क्षण पूर्ण अधिकार के थे।

'किस पुस्तक में आप मुझे पिता के रूप में मिलते है?'

मैंने स्वयं ही मेरा उत्तर प्राप्त किया : 'बाइबल में। ' इतना ही बस केवल हुआ।"[249]

जैसे इस पाकिस्तान की महिला के साथ हुआ, परमेश्वर मेरा भी पिता है। जिस दिन मैंने परमेश्वर के संदेश पर विश्वास किया, आध्यात्मिक रूप से मैंने फिर से जन्म लिया। परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य के रूप में मेरे स्थान को गंवाने का कोई कारण नहीं हो सकता। यीशु ने कहा, *"मेरी भेंड़े मेरी आवाज सुनती है। मैं उन्हें पहचानता हूं, और वे मेरा अनुसरण करती है। मैं उन्हें **शास्वत जीवन** प्रदान करता हूं। **वे कभी नष्ट नहीं होंगी।** उन्हें मेरे हाथ से कोई कभी छीन नहीं सकता।"* (यूहन्ना 10:27-28)

रिश्ता और सहभागिता

तब क्या होता है जब मैं पाप करता हूं? क्या वह मुझे परमेश्वर से फिर से अलग करने का कारण होता है?

यदि एक पुत्र अपने सांसारिक पिता की अवज्ञा करता है, तो क्या वह परिवार का हिस्सा नहीं रहता?

नहीं।

पुत्र की अवज्ञा उसके अजन्मे होने का कारण नहीं है। अपने माता-पिता से उसका शारीरिक संबंध पूर्ववत नहीं किया जा सकता है। वैसे ही यह परमेश्वर के साथ आपके आध्यात्मिक संबंध के साथ है। परमेश्वर के परिवार के सदस्य के रूप में आपके स्थान को गंवाने का कोई कारण नहीं हो सकता। वे सभी जो विश्वास करते है कि *"क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं वरन अविनाशी बीज से, अर्थात परमेश्वर के जीवित तथा **अटल** वचन द्वारा, **नया जन्म** प्राप्त किया है"* (1 पतरस 1:23)। परमेश्वर आपका स्वर्गीय पिता है। मसीह की वह धार्मिकता जो तुमने पहिन ली है, कभी न छिनी जाएगी। पवित्र आत्मा आपको कभी भी नहीं छोड़ेगा।

आप अनंतकाल तक सुरक्षित हैं।

> *"मुझे पूरा निश्चय है कि न तो मृत्यु न जीवन,....हमें परमेश्वर के उस प्रेम से अलग कर सकेगी जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है।"* (रोमियों 8:38-39)

मेरी ओर से कोई भी कार्य शास्वत ***रिश्ते*** को नहीं बदल सकता जिसे परमेश्वर ने मेरे भीतर

स्थापित किया है। हालांकि, पाप परमेश्वर के साथ मेरे प्रतिदिन की **सहभागिता** में प्रभाव कर सकता है।

स्थान और अवस्था

मान लो एक पिता उसके पुत्र को बगीचे में काम करने को कहता है, लेकिन उसके बजाय लड़का उसके मित्रों के साथ फुटबोल खेलने चला जाता है। बच्चे का उसके पिता से पुत्र का स्थान अप्रभावित होगा, लेकिन पुत्र की उसके पिता के साथ की अवस्था निश्चितही प्रभावित होगी! जब पुत्र घर आएगा तब उसे प्रश्न पूछा जाएगा; वहां कुछ कठोर शब्द होंगे और कुछ योग्य अनुशासन के कार्य। पुत्र ने अपनी अवज्ञा कबूल करनी चाहिए ताकि वह फिर से अपने पिता के साथ एक घनिष्ठ रिश्ते का आनंद ले सके।

जो परमेश्वर के है उनके साथ भी ऐसा ही है। वह अपने बच्चों को अनुशासित करता है जब वे पाप करते हैं।

> *"मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना की उपेक्षा मत करना, जब वह तुझे दंड दे तब तू उससे घृणा मत करना। **जैसे पिता** अपने प्रिय पुत्र को ताड़ना देता है। वैसे ही प्रभु उस मनुष्य को ताड़ना देता है जिससे वह प्रेम करता है।"* (नीतिवचन 3:11-12)

परमेश्वर के साथ हमारे प्रतिदिन की सहभागिता के विषय में, बाइबल कहती है :

> *"यदि हम कहें कि हमारी उसके साथ **सहभागिता** है पर हम अंधकार में चलें तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर आचरण नहीं करते। .....यदि हम कहें कि हम निष्पाप हैं तो अपने को धोखा देते हैं औ हममें सत्य नहीं है। **यदि हम अपने पापों को स्वीकार करे तो परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने** और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने के लिए विश्वास-योग्य और धर्मी है।"* (1 यूहन्ना 1:6, 8-9)

वास करनेवाला पवित्र आत्मा चाहता है कि परमेश्वर के सभी बच्चों को सिखाए कि पाप के प्रत्येक प्रकार से घृणा करे, इसकी परवाह नहीं कि वे कितने छोटे दिखते हैं। वह हमें अपने जीवन में पापों के प्रति संवेदनशील बनाना चाहता है ताकि दूसरे पाप के रूप में लेबल भी न करे।

उदाहरण के लिए, यदि मैं मेरी पत्नी से निर्दयी तरीके से बोलता हूं, अथवा यदि मुझे किसी के प्रति प्रेमरहित आचरण है, जिसने मेरा बुरा किया है, या कुछ ऐसा कहा जो पूरी तरह से सत्य से कम है, तो पवित्र आत्मा मुझे मेरे पाप से दोषी ठहराता है।

इसका उपाय यह है कि मैं प्रभु के सामने "मेरे पाप कबूल कर लू" और मैंने किसी को ठेस पहुचाई है तो उससे क्षमा मांग लू। एक बार मैंने यह कर लिया, तो मैं मेरे प्रभु के साथ फिर से घनिष्ठ, मधुर सहभागिता का आनंद ले सकता हूं।

आप फर्क देखते हो क्या?

मसीह में, परमेश्वर के सम्मुख मेरा **स्थान** पूर्णता का है, लेकिन मेरे दैनिक जीवन में, मेरी **अवस्था** पूर्णता से कुछ कम है।

मेरे **लिए** उसके उद्धार का कार्य हमेशा के लिए पूर्ण हो गया, लेकिन उसका **मुझ में** कार्य लगातार होता रहेगा जब तक मैं उसे स्वर्ग में न मिलूंगा।

उद्देश्य के लिए छुड़ाया गया

मसीह का पवित्र आत्मा चाहता है कि जिस प्रकार परमेश्वर के लोग सोचते, बोलते और कार्य करते उसे परिवर्तित करे। वह कहता है :

"पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।" (1 पतरस 1:16)

वह अपने लोगों को यह भी कहता है : *"ऐसे समय में नासमझ मत बनो, वरन यह समझने का प्रयत्न करो कि प्रभु की इच्छा क्या है। मदिरा पीकर मतवाले न हो, क्योंकि मदिरा विषय-वासना की जननी है। **आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ।**"* (इफिसियों 5:17-18)

पवित्र आत्मा हमारे व्यक्तित्व को दबाता नहीं है; बल्कि, वह हमें स्वतंत्र करता है कि प्रतिदिन धर्मी और विजयी जीवन जिए जो परमेश्वर का हमारे लिए अभिप्राय है कि हम जिए। परमेश्वर ने हमें एक उद्देश्य के लिए बचाया है। हमें बुलाया गया है कि हम हमारे सभी विचार, बोलना और कार्यों में उसको उन्नत करे।

> *"क्या तुम नहीं जानते कि **तुम्हारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है** जो तुममें निवास करता है और जो तुम्हें परमेश्वर से प्राप्त हुआ है? तुम अपने नहीं हो, वरन मूल्य देकर मोल लिए गए हो। अत: अपने शरीर द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"* (1 कुरिंथियों 6:19-20)

उन सभी के लिए यह कितना जीवन-परिवर्तित करने वाला सत्य है जिन्होंने सुसमाचार में विश्वास किया हैं! परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति हमारे भीतर रहती है! यह ऐसा है जैसे हम उसके अधीन हो जाते हैं कि हमारे जीवन उसके नाम का आदर करेंगे और दूसरों को आशीष लायेंगे।

उसके लोगों के जीवनों में पवित्र आत्मा के कामों के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

वह सांत्वना देता, मजबूत करता, मार्गदर्शन देता, प्रबुद्ध करता और उपदेश देता है।

वह विश्वासियों को पवित्रशास्त्र समझने में सहायता देता है।[250]

वह उन्हें इस तरह से प्रार्थना करने में सक्षम बनाता है जो परमेश्वर से जुड़ता है।[251]

वह उसके लोगों को विशेष दान और योग्यताएं प्रदान करता है ताकि वे दूसरों की सहायता करे और दृढ़ करें।[252]

वह मसीह के अनुयायियों को सक्षम करता है कि उसके लिए काम करे और साक्षी दे इसमे परवाह नहीं कि विरोध कितना बड़ा है। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा :

> *"देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूं। इसलिए सर्प के समान चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। लेकिन मनुष्यों से सावधान रहो; क्योंकि वे तुम्हें कचहरियों में सौपेंगे और , ...तुम्हे कोड़े मारेंगे। लेकिन जब वे तुम्हे पकड़वाएं तो चिंतित न होना कि हम और कैसे कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुम्हें कहना है वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा।* ***क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, लेकिन यह तुम्हारे पिता का आत्मा है जो तुम में बोलता है।"*** (मत्ती 10:16-20)

उसके स्वरूप के समरूप

संक्षेप में, पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों के लिए संभव करता है कि मानवजाति के लिए परमेश्वर का मूल उद्देश्य पूरा करे, जो एक सत्य परमेश्वर के स्वरूप को प्रतिबिंबित करना और उसके साथ हमेशा के लिए घनिष्ठ सहभागिता का आनंद लेना है।

> *"इसी रीती से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है;......और हम जानते है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं। क्योंकि जिन के विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहिले से ठहराया भी कि वे* ***उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाए****, जिससे कि वह बहुत-से भाइयों में पहिलौठा ठहरे।"* (रोमियों 8:26, 28-29)

परमेश्वर अपने लोगों के जीवन में प्रत्येक घटना और परीक्षा का उपयोग उन्हें "अपने पुत्र के स्वरूप" में बदलने के लिए करना चाहता है।

परमेश्वर की पुस्तक का पहला अध्याय घोषित करता है कि पहले पुरुष और स्त्री को "परमेश्वर के स्वरूप और सदृश" बनाया गया। अपने सृष्टिकर्ता के विरोध में पाप करने के लिए मनुष्य के चुनाव ने उस स्वरूप को मौलिक रूप से बिगाड़ दिया। तथापि, जब योग्य समय था, परमेश्वर ने उसके परिपूर्ण, गौरवमय पुत्र को इस संसार में भेजा था।

यीशु का धर्मी जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर की योजना का पहला चरण थे कि पाप द्वारा किए गए विनाश को हटा दे। लेकिन, जैसा कि हमने इस पाठ में देखा है, यहां पर उसकी योजना में और भी बहुत कुछ है।

जिस क्षण आप और मुझ जैसे असहाय पापी लोग उद्धार के परमेश्वर के सुसमाचार में विश्वास करते हैं, वह हमें उसका पवित्र आत्मा देता है, जो हमें हमारे विचार, अभिप्राय, शब्दों और कार्यों में उसके स्वरूप और सदृशता में फिर से समरूप करने की प्रक्रिया शुरू करता है। परमेश्वर की योजना यह दूसरा चरण है कि पापों के श्राप को उलट दें।

परमेश्वर चाहता है उसके बच्चे मसीह के व्यक्तित्व और आचरण को प्रतिबिंबित करे। मसीही शब्द का अर्थ यही है। फिर भी, पवित्र आत्मा का कार्य कि हमें मसीह के स्वरूप में समरूप करे यह एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है जो उस दिन पूरी होगी जब हम उसे आमने-सामने देखेंगे।[253]

> ***"देखो, पिता ने हमसे कितना महान प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और वास्तव में हम उसकी सन्तान हैं।"*** *संसार ने परमेश्वर को नहीं जाना, इस कारण संसार हमें नहीं जानता।*
>
> *प्रियो, हम अब परमेश्वर की सन्तान हैं, लेकिन अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे; इतना जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे तब* ***हम उनके सदृश होंगे,*** *क्योंकि हम भी उनको वैसा ही देखेंगे जैसे वह है।"* (1 यूहन्ना 3:1-2)

वे सभी जो उसमे विश्वास करते हैं उनके लिए परमेश्वर-पुत्र के उद्धार के कार्य, और उन सभी में परिवर्तन के परमेश्वर के आत्मा के कार्य जो उसके अधीन हो जाते है उस कारण से, शैतान के सामर्थ्य को अप्रभावी कर दिया है और परमेश्वर के धर्मी राज्य का प्रेम, आनंद और शांति को पुनः स्थापित किया है।

उद्देश्य से भरे जीवनों और उत्कट अपेक्षा के साथ हम परमेश्वर की योजना के अंतिम चरण की प्रतीक्षा करते है जब वह हमेशा के लिए शैतान, पाप और मृत्यु को दूर कर देगा।

यीशु फिर से आ रहा है।

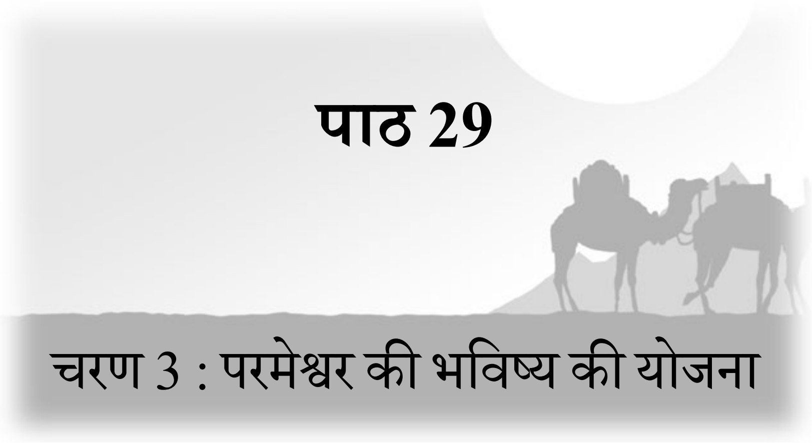

पाठ 29

चरण 3 : परमेश्वर की भविष्य की योजना

"शांति-दाता परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा।"

(रोमियों 16:20)

विश्वासियों को यह प्रतिज्ञा गूढ़, प्राथमिक भविष्यवाणी से आती है जिसे परमेश्वर ने उस दिन घोषित किया जब मानवजाति पाप से भ्रष्ट हो गई थी : *स्त्री का वंशज सांप का सिर कुचलेगा।*

विश्व का सृष्टिकर्ता-स्वामी यह सब कुछ करेगा जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है। लेकिन वह इसे उसकी अपनी कार्यावली और समय सारणी के अनुसार करेगा।

श्राप को उलट देना : तीसरा चरण

उसके प्रथम आगमन पर, प्रतिज्ञा किए गए मसीहा ने पाप के दंड का पूर्ण भुगतान करने के द्वारा शैतान को पराजित किया। विश्वासी के लिए, नरक अब अपेक्षित नहीं और स्वर्ग निश्चित है। उसके परिणामस्वरूप, शैतान का पसंदीदा शस्त्र, मृत्यु, ने उसके डंक को गंवाया है। ***पाप के दंड*** को उलट दिया गया है।

प्रभु यीशु स्वर्ग जाने के बाद में, उसने अपना पवित्र आत्मा "*सहायक*" के रूप में भेजा ताकि अपने लोगों को सक्षम करे कि उनके दैनिक जीवनों में शैतान और पाप के प्रभाव पर विजय प्राप्त करे, और उन्हें परमेश्वर के स्वरूप में फिर से आकार दें। ***पाप के सामर्थ्य*** को उलट दिया गया है।

हालांकि, यह केवल जब यीशु पृथ्वी पर वापस आएगा कि शैतान को वह पूर्ण रूप से कुचलेगा और अपने लोगों को ***पाप की उपस्थिति*** से छुडाएगा।

घटनेवाली बातें

जिस प्रकार परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहा के पहले आगमन की भविष्यवाणी की थी,

उसी प्रकार वे उसके दुसरे आगमन की भी भविष्यवाणी करते हैं।[254] और जैसा कि उसकी पहली यात्रा ठीक वैसे ही हुई, जैसी भविष्यवाणी की गई थी, उसी प्रकार उसका वापस आना होगा। वह दिन आ रहा है जब यह घोषणा स्वर्ग से गूंजेगी :

> ***"विश्व का राज्य हमारे प्रभु और उसके मसीह का हो गया। वह युगानुयुग राज्य करेगा।"*** (प्रकाशितवाक्य 11:15)

जब यीशु पृथ्वी पर वापस आयेंगे, आदम की संतान उसे कांटो का मुकुट नहीं पहनाएंगे और न ही उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे। न वे उसके नाम उच्चारण व्यर्थ करेंगे और न यह कहेंगे कि वह एक भविष्यद्वक्ता से बढ़कर और कुछ नहीं है। राजा से ऐसा असभ्य व्यवहार अब कोई पर्याय नहीं रह जाएगा।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। जब यीशु फिर से आएगा, *"प्रत्येक घुटना टिकेगा"* (यशायाह 45:23; फिलिप्पियों 2:9-11)। लेकिन यह होने से पहले, अन्य भविष्यवाणियों की शृंखला पूरी होना चाहिए।

स्वर्ग में आनंद

उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के सम्मुख संसार के राष्ट्रों ने घुटने टेकने से पहले एक घटना होनी है वह यह है कि यीशु अपने छुड़ाए हुए लोगों को स्वर्ग तक ले जाने के लिए पृथ्वी के वातावरण में उतरेगा।

> *"जयजयकार के साथ, प्रधान स्वर्गदूत का स्वर सुनाई पड़ेगा और परमेश्वर की तुरही गूंजेगी, उस समय स्वयं प्रभु स्वर्ग से उतरेंगे, और जो मसीह में मृतक हैं, वे पहले जी उठेंगे। तत्पश्चात हम भी जो जीवित बचे होंगे, उन लोगों के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि वायु मण्डल में प्रभु से मिले। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे।"*
> (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)

यह गुप्त, विलक्षण घटना किसी भी क्षण हो सकती है। जब वह होगी, तब विश्वासियों के मृत देह जिनके प्राण स्वर्ग में जीवित है, पृथ्वी पर जीवित विश्वासियों के साथ, *"बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि वायु मण्डल में प्रभु से मिले।"*[255] मसीह में विश्वासी लोग क्षण में मसीह की समानता में परिवर्तित हो जाएंगे। वे नए शरीर प्राप्त करेंगे जो स्वर्ग के लिए योग्य है, जो समय और स्थान से मुक्त हैं।

"साथ में ऊपर उठा लिए जाने" के कुछ समय बाद में, व्यक्तिगत विश्वासियों ने निस्वार्थ भाव से परमेश्वर की महिमा और दूसरों की आशीष के लिए पृथ्वी पर जो बातें की हैं उसके लिए वे

पुरस्कार प्राप्त करेंगे।[256] आगे, परमेश्वर के लोग, सदैव के लिए *"पवित्र और निष्कलंक"* रूप में उनके अनंतकाल के "दुल्हे"[257] को अधिकृत रूप से पेश किए जाएंगे, जो विजेता है जिसने अपना जीवन दिया कि उन्हें अनंतकाल के दंड से छुडाए।

> *"'आओ हम आनंदित और हर्षित हों और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेमने का विवाह आ पहुंचा है और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसे चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल पहिनने को दिया गया है। 'यह मलमल तो संतों के धार्मिकता के कार्य हैं। फिर उसने मुझसे कहा, 'लिख : "धन्य हैं वे जो मेमने के विवाह के भोज में आमंत्रित है।"'"* (प्रकाशितवाक्य 19:7-9)

अनंतकाल में सहभागिता का जो आनंद लिया वह पृथ्वी पर जो कुछ भी हमें ज्ञात है उससे अपार श्रेष्ठ है।

पृथ्वी पर आपत्ति

इसी बीच ग्रह पृथ्वी पर नीचे, "बड़ी आपत्ति"[258] का पवित्रशास्त्र वर्णन करता है जब परमेश्वर उसके क्रोध को हठीले संसार पर उंडेलता है और उसके पुत्र के दूसरे आगमन का मार्ग तैयार करता है। इस समय को "याकूब के संकट का समय" भी संबोधित करते है (यिर्मयाह 30:7), क्योंकि यह इस्राएल के राष्ट्र को पश्चाताप करने के लिए बनाया गया है।

इस समय दौरान, संसार के प्रभावी, सामर्थ्यवान शासक को पवित्रशास्त्र में *"मसीह-विरोधी"* और *"पशु"* के रूप में संबोधित किया गया है (1 यूहन्ना 2:18; प्रकाशितवाक्य 13) उसके हाथों में सत्ता होगी। बहुसंख्य लोग अंधों की तरह और अद्भुत-चमत्कार करनेवाले उसके झूठे भविष्यद्वक्ता का अनुसरण करेंगे। पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता होगी कि *".....सबको दाहिने हाथ अथवा ललाट पर छाप लगवाने को विवश करता है; और जो मनुष्य पशु के नाम की अथवा उसके नाम की संख्या की छाप नहीं लेता, वह लेन-देन नहीं कर सकता।"* (प्रकाशितवाक्य 13:16-17)

जो अधीन होने से अस्वीकार करते हैं उनका सिर कांट दिया जाएगा। यह झूठा मसीहा शांति और सम्पन्नता की प्रतिज्ञा देगा, लेकिन उसके बदले में वह लोगों को धोखा, विनाश और मृत्यु के मार्ग पर ले जाएगा।

हर-मगिदोन

बाइबल में, परमेश्वर के बहुसंख्य भविष्यद्वक्ताओं ने संसार के अंतिम युद्ध के विषय में लिखा है जो प्रगति में होगा जब प्रभु यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेंगे। यह नाटकीय संघर्ष एस्द्रालोन के

मैदान में लड़ा जाएगा, एक विशाल क्षेत्र जो यरदन नदी से भूमध्य सागर तक है। पवित्रशास्त्र इस प्राचीन और भविष्य के रणभूमि को हर-मगिदोन के रूप में भी संबोधित करता है, जिसका अर्थ, कतल करने का पर्वत है।

> *"ये चमत्कार दिखाने वाली दुष्टात्माएं हैं। वे समस्त संसार के राजाओं के पास जाकर उनको एकत्र करती हैं कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के महान दिन पर युद्ध करें। 'देखो, मैं चोर की भांति आता हूं; धन्य है वह जो सजग है और अपने वस्त्रों की रक्षा करता है कि नंगा न फिरे और लोग उसकी नग्नता न देखें!' उन्होंने राजाओं को उस स्थान पर एकत्र किया जो इब्रानी भाषा में* ***हर-मगिदोन*** *कहलाता है।"* (प्रकाशितवाक्य 16:14-16)

जकर्याह भविष्यद्वक्ता ने भी इन घटनाओं का एक नाटकीय वर्णन लिखा है जो मसीहा की वापसी के साथी होंगी।

> *"देखो, प्रभु का ऐसा दिन आनेवाला है,.....मैं युद्ध के लिए यरूशलेम के विरुद्ध सब राष्ट्रों को एकत्र करूंगा। यरूशलेम नगर पर शत्रु का कब्ज़ा होगा और वे घरों को लुट लेंगे और वे स्त्रियों को भ्रष्ट करेंगे। नगर की आधी आबादी बन्दी बनकर शत्रु के देश में जाएगी। किंतु बचे हुए लोग नगर से निष्कासित नहीं होंगे।"* (जकर्याह 14:1-2)

"सब राष्ट्र" यरूशलेम को घेरेंगे। यह बड़े पैमाने का विध्वंस होगा।

मसीहा वापस आएगा

जब सब आशा समाप्त होगी और नगर के बचे हुए निवासियों को सहायता के लिए कोई स्थान नहीं होगा कि कहां जाए वरन ऊपर, वे छुटकारे के लिए प्रभु को पुकारेंगे। फिर एक जिसके नाम का अर्थ *"प्रभु बचाता"* है वह स्वर्ग से उतरेगा। और उनके लिए अचम्भा और आश्चर्य होगा, उनका छुड़ानेवाला यह और कोई नहीं **यीशु** होगा, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था! लेकिन इस समय, गहरे पश्चाताप की आत्मा और प्राणों के तीव्र व्यथा में, वे उनके राजा का स्वीकार करेंगे।

> *"मैं ...यरूशलेम के निवासियों पर कृपा और प्रार्थना की आत्मा उंडेलूंगा। अत:* ***जब वे उस पर दृष्टि डालेंगे जिसको उन्होंने बेधा है****, तब वे उसके लिए विलाप करेंगे, जैसे कोई अपने मृत एकलौते पुत्र के लिए विलाप करता है। वे रोएंगे, जैसे कोई अपने ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु पर रोता है।"* (जकर्याह 12:10)

अंत में यहूदी राष्ट्र की आध्यात्मिक रूप से अंधी आंखे खोली जाएगी और वे जान जाएंगे

और विश्वास करेंगे कि यीशु ही केवल एकमात्र मसीहा था और है।[259]

आगे जो होगा यह संसार के इतिहास में युद्ध का बहुत ही प्रभावी प्रदर्शन होगा जब यीशु, जो शब्द, केवल बोलेगा और शत्रु विलीन हो जाएंगे।

> *"**तब प्रभु उत्तेजित होकर बाहर निकलेगा।** जैसे वह युद्ध के दिन युद्ध करता है वैसे ही **वह उन राष्ट्रों से युद्ध करेगा।** यरूशलेम नगर के पूर्व में जैतून पहाड़ है। प्रभु उस दिन उस पहाड़ पर खड़ा होगा। तब जैतून पहाड़ के दो तुकडे हो जाएंगे और उनके मध्य एक विस्तृत घाटी हो जाएगी। ....जिन राष्ट्रों ने यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था, उनको प्रभु इस महामारी से मारेगा खड़े-खड़े उनका शरीर **गल** जाएगा। उनकी आंखे उनके गोलकों में **सड़** जाएंगी। उनकी जीभ उनके मुंह में **सड़-गल** जाएगी। उस दिन का अंत नहीं होगा: न दिन बीतेगा न रात आएगी, संध्या के समय भी प्रकाश रहेगा। यह प्रभु का दिन कहा जाता है। - **प्रभु समस्त पृथ्वी का राजा होगा।** उस दिन **एक ही प्रभु होगा और उसका नाम भी एक ही होगा।**"* (जकर्याह 14:3-4, 12, 7, 9)

अंत में एक सत्य परमेश्वर का उचित रूप से आदर और स्तुति होगी।

शासन फिर से प्राप्त किया

जकर्याह द्वारा सदियों पहले लिखी इस भविष्यवाणी को हमने अभी पढ़ा है, परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता दानिय्येल को समान दिव्य दर्शन दिया है :

> *"मैंने रात के दर्शन में यह देखा: **आकाश के मेघों के साथ मानव-पुत्र के सदृश कोई आ रहा है।** वह प्राचीन युग-पुरुष के पास आया, और उसके सम्मुख प्रस्तुत हुआ। तब प्राचीन युग-पुरुष ने उसको **शासन** का अधिकार, महिमा और राज्य प्रदान किया ताकि पृथ्वी की समस्त कौमें, राष्ट्र और भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोग उसकी सेवा करें। उसका **शासन** शास्वत **शासन** है; जो कभी समाप्त न होगा; उसका राज्य युगानुयुग अटल है, जिसका कभी नाश न होगा।"* (दानिय्येल 7:13-14)

शब्द शासन तीन बार दोहराया गया है।

जब परमेश्वर ने जब पहली बार पुरुष और स्त्री को बनाया, उसने उन्हें *"..........पृथ्वी पर के समस्त गतिवान जीव-जन्तुओं पर **शासन** दिया था"* (उत्पत्ति 1:26, 28)। जब आदम ने उसके सृष्टिकर्ता के विरोध में विद्रोह किया, उसने उस शासन को शैतान को समर्पित कर दिया। लेकिन इस गृह पर राज्य, अधिकार, और नियन्त्रण जो आदम, *"पहले आदम"*, ने गंवाया था, यीशु, *"दूसरे*

आदम"[260], ने उसे फिर से प्राप्त किया।

परमेश्वर ने यीशु के शिष्य, यूहन्ना को, जकर्याह और दानिय्येल की भविष्यवाणियों के पूर्ण सामंजस्य में एक पूरक दर्शन दिया :

> *"अब मैंने स्वर्ग खुला हुआ देखा; और देखा, एक सफेद घोड़ा जिसका सवार विश्वसनीय और सच्चा कहलाता है। वह धर्म के अनुसार न्याय और युद्ध करता है। उसकी आंखे मानो अग्नि ज्वाला हैं। उसके सिर पर अनेक मुकुट हैं। उस पर एक नाम अंकित है जिसे उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। वह लहूरंजित वस्त्र पहिने है, और* ***उसका नाम है 'परमेश्वर का शब्द।*** *' स्वर्ग की सेनाएं सफेद उज्वल मलमल पहने सफेद घोड़ों पर बैठे हुए उसका अनुसरण कर रही हैं। उसके मुंह से एक तेज तलवार निकली हुई है कि वह कौमों पर प्रहार करे। वह लौह-दंड से उन पर शासन करेगा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक क्रोध की मदिरा का रसकुण्ड रौंदेगा। उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है,* ***'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।*** *'"* (प्रकाशितवाक्य 19:11-16)

जब राजाओं का राजा वापस आएगा, उसके साथ "महीन मलमल पहने हुए स्वर्ग की सेनाएं होंगी," जिसमे स्वर्ग के असंख्य स्वर्गदूत और आदम की छुड़ाई हुई संतान होगी।[261] यीशु ने उसके पहले आगमन के समय सामर्थ्य और महिमा का जो अनुग्रहपूर्ण प्रदर्शन किया था वह उसके दूसरे आगमन के समय प्रदर्शित होनेवाले अनियंत्रित सामर्थ्य और अद्भुत-प्रेरणा देनेवाली महिमा के तुल्य धुंधली होगा।

दिलों में स्वर्ग का राज

मुझे बताओ, यदि आप एक जंगल से अकेले चल रहे हैं, तो आप किसका सामना करेंगे—एक मेमना अथवा एक सिंह?

जब मसीहा पहली बार पृथ्वी पर आया था, वह एक *"मेमना"* बनकर पापियों को बचाने आया था, लेकिन अपने दूसरे आगमन पर, वह *"सिंह"* के समान पापियों का न्याय करने को आएगा।[262]

पृथ्वी पर यीशु की पहली भेट पर, उसने प्रचार किया था, *"मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है"* (मत्ती 4:17)। बल्कि अपने गलत विचारों पर पछताने और उसको अपना राजा स्वीकार करने के बजाय, यहूदियों और अन्यजातियों ने अपने राजा को क्रूस पर चढ़ाने के लिए सेना में शामिल हो गए। इस प्रकार, उन्होंने परमेश्वर के युगों की योजना को अनजाने में पूर्ण किया कि मसीहा इस संसार के पाप के कर्ज का भुगतान करने के लिए उसका लहू बहाएगा।

सुसमाचार यह है कि जब कभी पापी लोग उनका भरोसा प्रभु यीशु में और जो उसने उनके लिए किया है उसमे रखते हैं, परमेश्वर अपना राज उनके दिलों में स्थित करता है और उन्हें हमेशा के लिए अपनी प्रजा बनाता है।

क्या आपको पता है कि मसीह में प्रत्येक सच्चा विश्वासी यह पहले ही स्वर्ग का पंजीकृत नागरिक है?

> *"हमारी नागरिकता स्वर्ग में **है** जहां से हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की प्रतीक्षा करते हैं। वह अपनी सामर्थ्य से सब वस्तुओं को अपने अधीन करेंगे, और उसी सामर्थ्य से हमारे अधम शरीर का ऐसा रूपान्तर करेंगे कि वह उनके महिमामय शरीर के सदृश तेजोमय हो जाएगा।"* (फिलिप्पियों 3:20-21)

पृथ्वी पर स्वर्ग का राज

यीशु जब पृथ्वी पर वापस आएगा तो वह उसका राज्य यरूशलेम में स्थापित करेगा, जहां से वह एक हजार वर्ष के लिए पृथ्वी पर शासन करेगा। अंत में, उसका राज्य आएगा और उसकी इच्छा *"जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी"* होगी (मत्ती 6:10)। बुराई को किसी भी राष्ट्र में अब से सहा नहीं जाएगा, *क्योंकि "वह स्वयं लौह-दंड से उन पर शासन करेगा।"* (प्रकाशितवाक्य 19:15)

कई लोग यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर-पुत्र शारीरिक तौर से पृथ्वी पर वापस आएगा। फिर भी पवित्रशास्त्र इस मुद्दे पर स्पष्ट रूप से कहता है। जिस प्रकार से परमेश्वर के पुत्र ने उसके पहले आगमन समय शारीरिक देह धारण की थी और फिर अपने पुनरुत्थित, भौतिक शारीरिक, और असीमित शरीर में वापस स्वर्ग में चढ़ा, उसी प्रकार से वह शारीरिक रूप से वापस आएगा। स्वर्गदूतों ने यीशु के शिष्यों को उस दिन बताया जब वह स्वर्ग लौट आया :

> *"**यही यीशु**, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग में उठा लिए गए है, **इसी प्रकार आएंगे**, जैसे तुमने उनको स्वर्ग में जाते हुए देखा है।"* (प्रेरितों के काम 1:11)

शैतान को बंदी बनाया

परमेश्वर की पुस्तक में यीशु मसीह के हजार वर्ष के शासन के विषय में बहुत कुछ कहना है। हम केवल कुछ मुख्य घटनाओं को सारांशित कर सकते है।

यीशु के पृथ्वी पर लौटने के बाद, उसकी पहली पहल शैतान उस पुराने "सांप" के साथ करना है जिसने सबसे पहले मानवजाति को आत्मविनाश के मार्ग पर ले गया था।

"तब मैंने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा। उसके पास अतल कुण्ड की कुन्जी और हाथ में एक बड़ी जंजीर थी। उसने अजगर को, उस पुराने सर्प को जो दोष लगाने वाला शैतान कहलाता है, पकड़ा और एक हजार वर्ष के लिए बांध कर अतल कुण्ड में फेंक दिया और कुण्ड को बन्द कर मुहर लगा दी कि वह हजार वर्ष पुरे होने तक राष्ट्रों को पथ-भ्रष्ट न करे। इसके पश्चात् उसे कुछ समय के लिए छोड़ना आवश्यक होगा।" (प्रकाशितवाक्य 20:1-3)

शैतान को बांध दिया जाएगा और पूरे एक हजार वर्ष के लिए अलग रखा जाएगा। इस बुरे जन को बंद करने के साथ और धर्मी जन के राज्य में, अंत में वहां *"पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों में सद्भावना होगी।"* (लूका 2:14)

परमेश्वर का धर्मी शासन, जिसके लिए संसार इच्छा कर रहा है, वह एक सत्यता बन जाएगी।

*".....स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनंतकाल तक न नष्ट होगा और ......**सदा सर्वदा सुदृढ़ बना रहेगा।**"* (दानिय्येल 2:44)

सच्चा समर्पण

करीबन तीन हजार वर्षों पहले, सुलेमान[263] राजाने मसीहा के भविष्य के राज्य के विषय लिखा था जब पृथ्वी के प्रत्येक राष्ट्र और व्यक्ति सच्चे समर्पण में उसके सम्मुख झुकेंगे। आज बहुत से लोग परमेश्वर को समर्पित होने का दावा करते हैं लेकिन उस दिन, सभी लोग वास्तव में उसे जानेंगे और उसके प्रति समर्पित होंगे।

*"**उसके दिनों में** धर्मी फुले-फलें; और जब तक चन्द्रमा टल न जाए, असीम शांति बनी रहे। वह समुद्र से समुद्र तक, तथा महानद से **पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करे**! मरुभूमि के खानाबदोश उसके सामने झुकें, और उसके शत्रु मिट्टी चाटें। तर्शिश और द्वीप-द्वीप के राजा उसे भेंट लाएं; अरब और इथियोपिया देश के राजा उपहार लाएं। **सब राजा उसको साष्टांग प्रणाम करें, समस्त राष्ट्र उसकी सेवा करें। वह दुहाई देनेवाले दरिद्र को, पीड़ित और निस्सहाय व्यक्ति को मुक्त करता है।** वह दुर्बल और दरिद्र पर दया करता है, वह दरिद्रों के प्राण की रक्षा करता है। वह दमन और अत्याचार से उनके प्राण का उद्धार करता है, **उसकी दृष्टि में उनका लहू अनमोल है। वह चिरंजीव हो!** अरब का स्वर्ण उसे भेंट किया जाए; उसके लिए प्रार्थना निरन्तर की जाए; दिन भर उसके लिए आशीष मांगी जाए। **देश में प्रचुर अन्न हो**; पर्वतों के शिखर पर खेत लहलहाए।*

*उसकी बालें लबानोन के वृक्षों के समान झूमें, और नगर के निवासी घास के समान खिले। **उसका नाम सदा बना रहे,** जब तक सूर्य है, तब तक उसका वंश राज्य करे। लोग उसके कारण स्वयं को धन्य माने, **समस्त राष्ट्र उसको धन्य कहें। इस्राएल का प्रभु परमेश्वर धन्य है,** उसने ही आश्चर्यपूर्ण कार्य किए हैं। उसका महिमायुक्त नाम सदा धन्य है। समस्त पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए! आमेन और आमेन!"*
(भजन संहिता 72:7-19)

यह भजन मसीह के भविष्य के राज्य के विषय में स्पष्ट समझ प्रदान करता है जिसमे वह *"पृथ्वी की छोर तक **प्रभुता** करे"।*

सिद्ध शासन

"वह दुर्बल और दरिद्र पर दया करेगा"। मसीहा का शासन आज के भ्रष्ट, उपद्रवी संसार के बिल्कुल विपरीत होगा। पतन के बाद पहली बार सभी के लिए स्वतंत्रता और न्याय होगा। प्रत्येक शिशु, बच्चे, स्त्री और पुरुष के जीवन को मूल्यवान मानकर सम्मान दिया जाएगा। *"वह दमन और अत्याचार से उनके प्राण का उद्धार करता है, उसकी दृष्टि में उनका लहू **अनमोल** है।"*

समाचार माध्यम नियमित रूप से बार-बार राजनीतिक और धार्मिक नेताओं की वार्ता देते हैं जो शांति के लिए आग्रह करते है और हथियारों में कमी के लिए बातचीत करते हैं। हालांकि, उनके सीमित अधिकार और शक्ति के कारण, ये नेता उस शांति का निर्माण करने में असमर्थ है जिसका वे दावा करते हैं। लेकिन जब वह लौटता है, जिसे हवा और लहरे अधीन रहती है, तो पृथ्वी अंत में सच्चा न्याय और *"असीम **शांति**"* का आनंद उठाएगी।

सदियों से, इस संसार के राजा और शासक जीते और ***मरते रहे*** हैं। लेकिन यीशु, राजाओं का राजा, पवित्रशास्त्र घोषित करता है: *"उसका नाम **सदा बना रहे**"।* पृथ्वी मनुष्य पुत्र के शासन के हजार वर्ष के शासन में अतुलनीय शांति और संपन्नता में बढ़ेगी जिसने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की है।

*"सब राजा **उसको** साष्टांग प्रणाम करें, ... । ...... लोग **उसके** कारण स्वयं को धन्य माने, समस्त राष्ट्र **उसको** धन्य कहें।"* (भजन संहिता 72: 11, 17)

प्रभु स्वयं इस थके हुए संसार को एकमात्र धर्मी सरकार प्रदान करेगा जिसे वह कभी भी जान पाएगा। आदम की छुड़ाई हुई संतान, महिमामय देहों और पवित्र स्वभावों के शास्वत अधिकारी, उसके साथ हमेशा के लिए राज्य करेंगे।

उसका राज्य भ्रष्टता से मुक्त रहेगा।

"वह व्यक्ति जो धन्य और पवित्र है इस प्रथम पुनरुत्थान में जीवित होगा। ऐसे लोगों पर द्वितीय मृत्यु का कोई अधिकार नहीं। ये लोग परमेश्वर और मसीह के पुरोहित होंगे और ***उनके साथ हजार वर्षों तक राज्य करेंगे।"*** (प्रकाशितवाक्य 20:6)

जबकि सब प्रकार के शासन असफल हुए हैं—राजतन्त्रवादी, सर्वसत्तावादी, प्रजातन्त्रवादी, धार्मिक—उसका राज्य कभी असफल नही होगा।

वह जैसे सिद्ध है वैसे ही यह होगा।

शांति का राजकुमार

पहले हमने मसीह के पहले आगमन के विषय की विभिन्न भविष्यवाणियों पर विचार किया था। उदाहरण के लिए, भविष्यद्वक्ता मीका ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा बैतलहम में जन्मेगा। लेकिन क्या आपने ध्यान दिया कि मीका की भविष्यवाणी ने इसकी भविष्यवाणी की थी कि मसीहा एक दिन संपूर्ण पृथ्वी पर शासन करेगा?

"ओ बैतलहम एप्राता, तू निस्सन्देह यहूदा प्रदेश के सब नगरों में छोटा है; पर मेरे लिए तुझसे ही वह व्यक्ति निकलेगा, जो इस्राएली राष्ट्र पर ***शासन करेगा।*** *उसका उद्गम प्राचीन काल से, पुराने ज़माने से है। .... क्योंकि* ***वह पृथ्वी के सीमान्तों तक महान होगा। उसके आगमन से शांति का युग आरंभ होगा।"*** (मीका 5:2. 4-5)

यशायाह, मीका का समकालीन, उसने भी एक लडके के विषय में भविष्यवाणी की थी जो पैदा होने वाला था और अनंत पुत्र जो दिया जाने वाला था। यशायाह की भविष्यवाणी ने पुत्र के विश्वव्यापी शासन की ओर भी इशारा दिया था।

"क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमें एक पुत्र दिया जाएगा; और ***प्रभुता उसके कांधे पर होगी****, और उसका नाम 'अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनंतकाल का पिता और शांति का राजकुमार रखा जाएगा।* ***उसकी प्रभुता की बढ़ती का और उसकी शांति का अंत न होगा।*** *वह दाऊद की राजगद्दी और उसके राज्य को उस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धार्मिकता के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा ...... ।"* (यशायाह 9: 6-7)

अंत में, संपूर्ण संसार परमेश्वर के पुत्र को उसके उचित उपाधियों से संबोधित करेगी।"उसका

यह नाम रखा जाएगा :

अद्भुत युक्ति करनेवाला,
पराक्रमी परमेश्वर,
अनंतकाल का पिता और,
शांति का राजकुमार।"

जातियां *"उस समय से आगे **सर्वदा**"* न्याय और शांति का आनंद लेंगी। मनुष्य के साथ रहने की परमेश्वर की इच्छा वास्तविकता होगी। सदैव।

*"उस दिन अनेक राष्ट्र **मुझ-प्रभु से मिल जाएंगे**, और वे मेरे **निज लोग** बन जाएंगे। **मैं तुम्हारे मध्य में रहूंगा**।"* (जकर्याह 2:11)

आज के लिए सुसमाचार यह है कि वे सभी जिनके हृदयों में मसीह का आत्मा निवास कर रहा हैं वे इसी क्षण परमेश्वर की उपस्थिति और शांति का आनंद ले सकते हैं।

अब कोई अज्ञानता नहीं

जब परमेश्वर पहली बार मनुष्यों के बीच रहा, तो अधिकांश लोग यह पहचानने में विफल रहे कि वह कौन था। आज तक, ज्यादातर लोग यीशु को अपना राजा मानने से इन्कार करते हैं। फिर भी, स्वर्ण-युग आ रहा है जब पृथ्वी पर हर आत्मा उसे स्वीकार करेगी जो उसने होने का दावा किया था।

*"**मैं-प्रभु** यह कहता हूं: नए चांद के दिन से दूसरे नए चांद के दिन तक, एक विश्राम-दिन से दूसरे विश्राम-दिन तक समस्त जानवर मेरी आराधना के लिए **मेरे सम्मुख** उपस्थित होंगे।"* (यशायाह 66:23)

धर्म, संप्रदाय और जातियों से अब पृथ्वी भरी नहीं जाएगी। न ही कोई यीशु, परमेश्वर-पुत्र की ऐतिहासिक सत्यता का अस्वीकार करने की हिंम्मत करेगा, जो क्रूस पर मर गया और मृतकों में से जीवित हुआ था। भले ही सब लोग उस पर भरोसा नहीं रखेंगे, पर सब लोग उसके और उसके संदेश के विषय में सत्य जानेंगे।

"जैसे जल से सागर पूर्ण है, वैसे पृथ्वी भी प्रभु की महिमा के ज्ञान से परिपूर्ण होगी।"
(हबक्कूक 2:14)

अब कोई युद्ध नहीं होगा

पृथ्वी पर प्रभु के शासन के साथ, उत्तर और दक्षिण, पूरब और पश्चिम के बीच के झगड़े भूतकाल की बीती बातें हो जाएंगे। इस्राएल और आसपास के राष्ट्रों के बीच के झगड़े समाप्त हो जाएंगे। अफ्रीका महाद्वीप के भयानक दुःख हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे। ऐसा और अन्य महाद्वीपों में भी होगा। गृहयुद्ध और अत्याचार का अंत हो जाएगा। सच्ची शांति, समृद्धि, और उद्देश्य पृथ्वी पर व्याप्त होंगे।

> *"**देश-देश के लोग यरूशलेम में आएंगे और यह कहेंगे : 'आओ, हम प्रभु के पर्वत पर चढ़ें**; आओ, हम याकूब के परमेश्वर के भवन की ओर चलें, ताकि प्रभु हमें अपना मार्ग सिखाए, और हम उसके सिखाए हुए मार्ग पर चलें।' सियोन पर्वत से प्रभु की व्यवस्था प्रकट होगी, यरूशलेम नगर से ही प्रभु का शब्द सुनाई देगा। प्रभु राष्ट्रों के मध्य न्याय करेगा; वह भिन्न-भिन्न कौमों को अपना निर्णय सुनाएगा। तब विश्व में शांति स्थापित होगी: राष्ट्र अपनी तलवारों को हल के फाल बनायेंगे, वे अपने भालों को हंसियों में बदल देंगे। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगा, **वे युद्ध-विद्या फिर नहीं सीखेंगे।**"* (यशायाह 2:3-4)

शांति और एकता विश्व में होगी जब लोग एक सत्य परमेश्वर को जानेंगे और उसकी आराधना करेंगे।

बेबीलोन का भ्रम उलट दिया जाएगा। फिर एक बार, संपूर्ण संसार एक ही भाषा बोलेगा:

> *"उस समय मैं कौमों की बोली बदल दूंगा। मैं उन्हें शुद्ध बोली प्रदान करूंगा। लोग मुझ-प्रभु का नाम पुकारेंगे, और कन्धे से कन्धा मिलाकर मेरी सेवा करेंगे।"*
> (सपन्याह 3:9)

श्राप हटा लिया गया

इस हजार वर्ष समय की सम्पन्नता में और जोड़ने के लिए, प्रभु श्राप हटा देगा जो पाप के कारण पृथ्वी पर आया था।

जब यीशु पहली बार पृथ्वी पर रहे, तभी उसने श्राप को उलटने की अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। उसने भूतों को निकाला, विकृतियों को उलट दिया, रोगों को ठीक किया, मृतकों को जिलाया, बहुतों को भोजन से तृप्त किया, और प्रकृति पर पूर्ण नियंत्रण प्रदर्शित किया था। इस तरह के कार्यों से उसने निरुत्तर प्रमाण प्रदान किया कि वह वादा किया हुआ मसीहा और राजा था।

यीशु ने उसके पहले आगमन के समय जो कुछ एक नमूना प्रकार में प्रदान किया था, वह उसके दूसरे आगमन के समय विश्व भर में प्रदान करेगा।

वह शैतान और उसके दुष्टात्माओं को बांध देगा। वह विकृतियों, रोग और स्वाभाविक कारणों से मृत्यु को हटा देगा। भूमि अब से जंगली घास और कांटे उत्पन्न नहीं करेगी। किसान पहले की तरह प्रचुर मात्रा में फसल काटेंगे। दरिद्रता और भूख ये पुरातन शब्द हो जाएंगे।

प्रत्येक राष्ट्र इस संसार के इतिहास के स्वर्ण युग का अनुभव करेंगे।

यीशु के पहले आगमन पर पृथ्वी के नागरिकों द्वारा अस्वीकार किए गए स्वर्ग के राज्य को उसके दूसरे आगमन पर विश्व स्तर पर स्थापित किया जाएगा।

> *"तब अन्धो की आंखे खुल जाएंगी, बहरों को कानों से सुनाई देने लगेगा! लंगड़ा भी हिरन के समान छलांग मारेगा! गूंगे की जीभ आनंद के गीत गाएगी! निर्जन प्रदेश में जल-धाराएं बहेंगी! मरुस्थल में झरने फूटेंगे!.... भेड़िया और मेमना एक-साथ खाएंगे; सिंह बैल के समान भूसा-खाएगा,* ***सांप मिट्टी खाकर पेट भरेगा।*** *वे मेरे पवित्र पर्वत पर किसी को हानि नहीं पहुंचाएंगे, और न किसी का अनिष्ट करेंगे।' प्रभु की यह वाणी है।"* (यशायाह 35:5-6; 65:25)

यहां तक कि जानवर जगत भी शांति से एक-साथ रहेंगे, पाप के प्रवेश करने से पहले शाकाहारी रचना और अदन-वाटिका की स्थितियों की ओर लौटेगा।

फिर भी, पाप की जड़ तब भी उन लोगों के दिलों में पाई जाएगी वे जिन्होंने मसीह के हजार वर्ष के शासन के दौरान जन्म लिया था। जैसे की प्रत्येक युग में, आदम की संतान को उद्धार के उसके प्रबन्ध में केवल विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर के क्षमा के दान को प्राप्त करने की आवश्यकता है।

क्या आपने ध्यान दिया कि आखरी वचन जो हमने पढ़ा वह सांप के विषय में क्या भविष्यवाणी करता है? *"सांप मिट्टी खाकर पेट भरेगा।"* हजार वर्ष के राज्य के दौरान, सांप अपने पेट पर रेंगते रहेंगे। उनका जमीन पर सरकते हुए जाना यह याद दिलाएगा कि श्राप को हमेशा के लिए उलट ने की परमेश्वर की योजना के तीसरे और अंतिम चरण में अभी भी एक और नाटकीय घटना का होना बाकी है।

बुराई का अंत का डंक

पहले हमने सिखा कि "उसने अजगर को, उस पुराने सर्प को जो दोष लगाने वाला शैतान कहलाता है, पकड़ा और एक हजार वर्ष के लिए बांध कर अतल कुण्ड में फेंक दिया और कुण्ड को बन्द कर मुहर लगा दी कि वह हजार वर्ष पुरे होने तक राष्ट्रों को पथ-भ्रष्ट न करे। ***इसके पश्चात् उसे***

कुछ समय के लिए छोड़ना आवश्यक होगा।" (प्रकाशितवाक्य 20:2-3)

परमेश्वर शैतान को फिर से क्यों मुक्त करेगा? क्यों न उसे बंद ही रखा जाए?

प्रभु, अपने अनंत ज्ञान में, मनुष्य के पापी, पतित हृदय को बुराई को हमेशा के लिए दूर करने से पहले अंतिम बार उजागर होने देगा। जैसे-जैसे मानवता समय-समय पर अनंतकाल में संक्रमण करती है, तब यह सत्य प्रत्यक्ष स्पष्ट हो जाएगा: आदम के वंशज उनके पतित स्वभाव से ऊपर उठने में असहाय थे। केवल प्रभु परमेश्वर पापियों को धर्मी और उनके हठीले हृदयों को परिवर्तित कर सकता है।

> ***"मनुष्य का हृदय छल-कपट से भरा होता है, निस्सन्देह वह सब से अधिक भ्रष्ट होता है।*** *मनुष्य के हृदय को कौन समझ सकता है? केवल मैं हृदय की जांच करता हूं, मैं प्रभु, मनुष्य के मन को परखता हूं, और हर एक मनुष्य को उसके आचरण के अनुकूल उसके कर्मों के फल के अनुसार पुरस्कार देता हूं।"* (यिर्मयाह 17:9-10)

मनुष्य का हृदय कितना "छल-कपट" से भरा है? एक सिद्ध वातावरण, एक सिद्ध राजा के साथ एक सिद्ध राज्य के भीतर में हजार वर्ष रहने के बाद भी, जिस क्षण शैतान को छोड़ा जाएगा, उस हजार वर्ष के दौरान जन्म लिए हुए बड़े झुण्ड शैतान के झूठ पर विश्वास करेंगे और उसके साथ हो लेंगे! वे परमेश्वर के शत्रु के साथ एक हो जाएंगे और उनके सृष्टिकर्ता के विरोध में विद्रोह करेंगे, जैसे उनके पूर्वजों ने अदन-वाटिका में किया था।

बुराई का यह अंतिम डंक होगा।

शैतान का अंतिम प्रयास

> *"हजार वर्ष पूर्ण होने पर शैतान कारागार से छोड़ा जाएगा; और वह पृथ्वी के चारों कोनों में निवास करने वाली कौमों, गोग और मागोग, को भड़काने और युद्ध के लिए एकत्र करने निकलेगा। उनकी संख्या समुद्र के बालू के समान असंख्य होगी। उन्होंने विस्तृत भूमि पर आक्रमण किया और भक्तों की छावनी एवं नगरों को घेर लिया।* ***तब स्वर्ग से अग्नि गिरी और उसने उन्हें भस्म कर दिया।"*** (प्रकाशितवाक्य 20:7-9)

विद्रोही मानवता की शैतान की सेना को प्रभु यरूशलेम को घेरने देगा, लेकिन जब वे एकत्र होंगे, तभी स्वर्ग से अग्नि गिरेगी और उन्हें भस्म करेगी। शैतान और वे सभी जिन्होंने उसका साथ दिया उन्हें मार्ग के अंत में पहुंचना होगा।

सांप को कुचल दिया

आगे क्या होता है वह इतिहास में सबसे पवित्र घटना है :

*"**उन्हें भटकाने वाला शैतान अग्नि और गंधक के कुण्ड में दाल दिया गया** जहां पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता है। वे दिन-रात युगानुयुग यातना में तड़पते रहेंगे। **फिर मैंने एक विशाल सफेद सिंहासन देखा; और उसे भी देखा जो उस पर विराजमान है। उसकी उपस्थिति से पृथ्वी और आकाश भागे और उन्हें कोई स्थान नहीं मिला।** तब मैंने छोटे और बड़े, सब मृतकों को सिंहासन के सम्मुख खड़े देखा। पुस्तकें खोली गईं। अब दूसरी अर्थात जीवन-पुस्तक भी खोली गई। पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर मृतकों का कर्म के अनुसार न्याय हुआ। समुद्र ने अपने मृतक दे दिए एवं मृत्यु और अधोलोक ने अपने-अपने मृतक; और प्रत्येक का उसके कर्मों के अनुसार न्याय हुआ। तब मृत्यु और अधोलोक अग्नि-कुण्ड में फेंक दिए गए। **यह अग्निकुण्ड द्वितीय मृत्यु है। जिसका नाम जीवन-पुस्तक में लिखा हुआ नहीं मिला, वह अग्निकुण्ड में फेंक दिया गया।"*** (प्रकाशितवाक्य 20:10-15)

युगों का संघर्ष यह हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा।

विशाल सफेद सिंहासन न्याय के बाद में, पाप का श्राप इतिहास बन जाएगा। लेकिन बुराई पर परमेश्वर के न्याय से जो सबक सिखा है वह कभी भी भुला नहीं जाएगा। संपूर्ण सृष्टि पाप की घृणितता और परमेश्वर की धार्मिकता की साक्षी होगी।

अंत में, सांप के सिर को कुचला जाएगा।

शैतान और वे सब जो उसके साथ हो लिए उन्हें हमेशा के लिए *"अनंत अग्नि जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया है"* उसमे कैद किए जाएंगे (मत्ती 25:41)। दोषी उस अनंत कारागार से कभी भी छुट नहीं पाएंगे। न ही वे उनकी सजा के लिए परमेश्वर को दोष देने में समर्थ होंगे, यहां तक कि जब एक परिपूर्ण राजा के साथ एक सिद्ध पृथ्वी पर एक हजार वर्ष की आशीष मिली, उन्होंने फिर भी उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी के विरोध में विद्रोह करने को चुना।

मनुष्य के पास कोई बहाना नहीं होगा।

एक सत्य परमेश्वर की प्रतिष्ठा और संदेश की हमेशा के लिए पुष्टि की जाएगी।

वे सभी जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे होंगे वे प्रभु के साथ अनंतकाल में होंगे, *"किंतु कायरों, अविश्वासियों, घृणित व्यक्तियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूगरों, मूर्तिपूजकों एवं सब मिथ्यावादियों का स्थान अग्नि और धधकते कुण्ड में होगा। यही है द्वितीय मृत्यु।"* (प्रकाशितवाक्य 21:8)[264]

बुराई अपना विकृत सिर फिर कभी भी ऊपर नहीं उठाएगी। सारी सृष्टि हमेशा के लिए एक सत्य परमेश्वर के अधीन हो जाएगी।

उसके साथ!

आगे क्या होता है उसकी कल्पना करना भी लगभग अद्भुत है।

"फिर मैंने सिंहासन से गम्भीर वाणी सुनी, ***'देखो, मनुष्यों के बीच परमेश्वर का शिविर। परमेश्वर उनके साथ निवास करेगा।*** *वे लोग उसकी प्रजा होंगे और* ***परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा।*** *वह उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आंखो से सब आंसू पोंछ डालेगा। इसके अनंतर* ***न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप और न कष्ट,*** *क्योंकि पहली बातें बीत चुकी हैं। तब जो सिंहासन पर विराजमान है उसने कहा,* ***'देखो, मैं सब कुछ नया कर देता हूं।*** *'"* (प्रकाशितवाक्य 21:3-5)

जिस प्रकार पुराने नियम के पहले दो अध्याय परमेश्वर की मूल सृष्टि का वर्णन करते है, उसी प्रकार नए नियम के आखरी दो अध्याय उसके नई सृष्टि का वर्णन करते है। शैतान, पाप और मृत्यु को निष्कासित करने के बाद में, सब कुछ एक बार फिर सृष्टिकर्ता के पवित्र स्वभाव के साथ पूर्ण सामंजस्य में होगा। मनुष्य या स्वर्गदूत फिर पाप के शिकार नहीं होंगे। आवश्यक सबक सीख लिए होंगे और *"वे लोग उसकी प्रजा होंगे और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा।"*

परमेश्वर की योजना में आदम के पाप के प्रभावों को दूर करने के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल है। वह इसमे *"सभी बातों को नया"* बनाता है। प्रभु के लोग उसके चकाचौध भरी उपस्थिति के योग्य महिमामय स्वर्गीय शरीर का आनंद लेंगे। अनंतकाल तक, प्रत्येक राष्ट्र और युग से मोल देकर छुड़ाई हुई आत्माएं उसकी विस्मयकारी और अनंत योजना में हिस्सा लेंगी। विश्वासियों के रूप में, यह हमारा आनंद होगा कि हम हमेशा उसके साथ रहे और यह उसका आनंद होगा कि हम वहां हैं।

"परमेश्वर हमारे साथ" यह शीर्षक पूर्णकालिक वास्तविक होगी।

उसके समान!

उद्धारकर्ता और उसके लोगों के बीच में मधुर सहभागिता कभी भी समाप्त नहीं होगी। आदम ने जो कुछ पृथ्वी के स्वर्ग में गंवाया था वह पुनः स्थापित किया जाएगा और आकाश के स्वर्ग में उससे बढ़कर होगा। परमेश्वर जब पहला पुरुष और स्त्री का निर्माण करने ही वाला था, उसने कहा,

"हम मनुष्य को ***अपने स्वरूप*** *के अनुसार,* ***अपनी समानता में*** *बनाएं।"* (उत्पत्ति 1:26)

सब कुछ उसी प्रकार हुआ जिस प्रकार उसने उसकी योजना की थी।

स्वर्ग पुरुषों और स्त्रियों से भर जाएगा जो उनके चरित्र और आचरण में **उसके** स्वरूप और सदृश दिखते हैं। पाप की संभावना भी नहीं रहेगी। परमेश्वर के लोग धार्मिकता में मुहरबंद होंगे। दाऊद भविष्यद्वक्ता ने इसे पहले ही देख लिया था जब उसने लिखा: *"परन्तु मैं तो* ***धर्मी होकर*** *तेरे मुख का दर्शन करूंगा; जब मैं जागूँगा तब* ***तेरे स्वरूप से*** *सन्तुष्ट होऊंगा।"* (भजन संहिता 17:15)

छुडाए गए पुरुष, महिलाएं और बच्चे परमेश्वर की नई सृष्टि के रूप में हमेशा सुरक्षित रहेंगे, *"उसके* ***पुत्र के स्वरूप में*** *समरूप"*। (रोमियों 8:29)

"प्रियो, हम अब परमेश्वर की सन्तान है, लेकिन अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे; इतना जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे तब ***हम उनके सदृश होंगे,*** *क्योंकि हम भी उनको वैसा ही देखेंगे जैसे वह है।"* (1 यूहन्ना 3:2)

उसके लिए!

आरंभ से, सृष्टिकर्ता का उद्देश्य मानवजाति के मध्य में उसका शासन इस प्रकार स्थापित करना था कि हम उसकी महिमा, पवित्रता, प्रेम, न्याय, दया और अनुग्रह को जाने और उसकी प्रशंसा करें।

शैतान के साथ पुरे लंबे युद्ध के दौरान, यह हमेशा परमेश्वर की योजना थी कि *"........अपने नाम के लिए अन्य जातियों में से अपने निज लोगों को चुने"* (प्रेरितों के काम 15:14)। प्रभु पृथ्वी पर जो जितने के लिए आया था वह उसे प्राप्त होगा: उसके अपने स्वरूप में मोल देकर छुडाए हुए लोग, जो धन्यवादी और प्रशंसात्मक हृदयों से, उसे प्रेम करेंगे, आनंद लेंगे, और उसकी हमेशा स्तुति करेंगे।

परमेश्वर की योजना का तीसरा और अंतिम चरण कि श्राप को उलट दे यह किसी क्षण भी शुरू हो सकता है। क्या आप तैयार हैं? क्या यीशु के वापस आने का विचार आपको आनंद के साथ अथवा भय के साथ भरता हैं?

बाइबल हमें अंत के समय के बारे में और भी कई अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जिसे देखने के लिए हमारे पास समय नहीं है कि हम पवित्रशास्त्र के माध्यम से इस यात्रा को देखें। अभी के लिए, यह जानना काफी है कि हमारा विश्वसनीय सृष्टिकर्ता अपनी पुस्तक के अंतिम अध्याय में दबी एक छोटीसी भविष्यवाणी पर अच्छा ही करेगा :

"अब से ***कुछ भी शापित नहीं*** *होगा।"* (प्रकाशितवाक्य 22:3)

पाठ 30

स्वर्ग का पूर्वदर्शन

दुनिया की अधिकांश आबादी बुराई के प्रति यिन-यांग का दृष्टिकोण रखती है। यिन का अर्थ अंधेरा और यांग का अर्थ उजियाला है। शायद आप ने यिन-यांग प्रतिक देखा हो- एक गोला जिसमे काला और सफेद रंग का अनोखा मिश्रण है। हालांकि इस प्राचीन चीनी तत्वज्ञान में सत्य है, यह भलाई और बुराई, सही और गलत, जीवन और मृत्यु के बीच के अंतर को धुंधला करता है। यह भलाई और बुराई को मनुष्य के अस्तित्व की एक स्वाभाविक और कभी न ख़त्म होने वाली विशेषता के रूप में देखता है।

जैसे हमने देखा है, बाइबल भलाई और बुराई का एक अलग विश्लेषण प्रदान करती है। यह इस विचार का समर्थन नहीं करता है कि पीड़ा और दुःख हमेशा से रहे है और हमारे विश्व का अभिन्न अंग रहेंगे। पवित्रशास्त्र स्पष्ट है। एक दिन आ रहा है जब बुराई, यातना और मृत्यु अपना अंतिम सिर झुकायेंगे और इतिहास के मंच से गायब हो जाएंगे।

यह आलेख परमेश्वर के अपरिवर्तनीय योजना को दर्शाता है :

← अनंतकाल	[समय]	अनंतकाल →
पूर्ण रूप से भला	**[भला/बुरा]**	**पूर्ण रूप से भला**

भलाई और बुराई के वर्तमान मिश्रण को एक तरफ किया है। यह हमेशा के लिए आसपास नहीं होगा।[265]

परमेश्वर की पुस्तक के पहिले दो और अंतिम दो अध्यायों में पाप-मुक्त संसार को चित्रित किया गया है, एक संसार जिसमे परमेश्वर को उचित रूप से प्रेम किया और उसे गौरवान्वित किया गया है। यह उस पहले और अंतिम दो अध्यायों के बीच में है जहां हम देखते है परमेश्वर अपनी योजना

कार्यान्वित कर रहा है कि पाप और उसके श्राप से निपटे, और अपने लिए ऐसे लोगों का उद्धार करे जो उसे जानते है, उसे प्रेम करते है और उसके साथ अनंतकाल बिताना चाहते हैं।

किसी भी भली कहानी की तरह, परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में आरंभ, मध्य और अंत हैं।

आरंभ : उत्पत्ति 1 और 2 :

एक सिद्ध संसार—बुराई के प्रवेश से पहले।

मध्य : उत्पत्ति 3 से प्रकाशितवाक्य 20 :

एक भ्रष्ट संसार—परमेश्वर का हस्तक्षेप।

अंत : प्रकाशितवाक्य 21 और 22 :

एक सिद्ध संसार—बुराई को मिटाने के बाद।

अंत की पुस्तक

जैसे बाइबल की पहली पुस्तक यह आरंभ की पुस्तक है, वैसे ही बाइबल की अंतिम पुस्तक अंत की पुस्तक है।

उत्पत्ति	**प्रकाशितवाक्य**
◊ सब बातों का आरंभ	√ सब बातों का अंत
◊ स्वर्ग और पृथ्वी की रचना	√ नया स्वर्ग और पृथ्वी की रचना
◊ परमेश्वर पृथ्वी के लिए सूर्य की रचना करता है	√ परमेश्वर स्वर्ग का प्रकाश है
◊ शैतान का मनुष्य का पहला प्रलोभन	√ शैतान का मनुष्य का आखरी प्रलोभन
◊ परमेश्वर का प्रथम न्याय	√ परमेश्वर का अंतिम न्याय
◊ पाप और मृत्यु का प्रवेश	√ पाप और मृत्यु का उन्मूलन
◊ "पहला आदम" स्वामित्व गंवाता है	√ "अंतिम आदम" स्वामित्व पुनः स्थापित करता है
◊ परमेश्वर शैतान को कुचलने की प्रतिज्ञा देता है	√ शैतान को अग्निकुण्ड में डाला जाता है
◊ पहला मेमना बलिदान किया जाता है	√ परमेश्वर के मेमने को गौरवान्वित किया जाता है
◊ मनुष्य सांसारिक स्वर्ग से निष्कासित किया जाता है	√ मनुष्य आकाश के स्वर्ग में
◊ मनुष्य को जीवन के पेड़ से दूर किया जाता है	√ मनुष्य जीवन के पेड़ से खा रहा है
◊ मानवजाति परमेश्वर से दूर की गई	√ छुटकारा पाई हुई मानवजाति हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ

सूचि और बढ़ सकती है, लेकिन आपको इसका अंदाजा है।

प्रकाशितवाक्य

जैसा कि हम एकसाथ हमारी यात्रा पूरी करते है, हम परमेश्वर की कहानी के "अंत" पर चिंतन करना चाहते है, जो वास्तव में एक पूरी नई शुरुआत का उद्घाटन है।

बाइबल की अंतिम पुस्तक इन्ही शब्दों के साथ शुरू होती है :

> *"यह यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य है। यह परमेश्वर ने यीशु मसीह को प्रदान किया कि वह अपने सेवकों पर सब बातें प्रकट करें जो शीघ्र होने वाली हैं। यीशु मसीह ने अपना स्वर्गदूत भेजकर, अपने सेवक यूहन्ना को सब कुछ बताया; और यूहन्ना ने परमेश्वर के संदेश के विषय में और यीशु मसीह की साक्षी के विषय में जो कुछ देखा, उसकी यह गवाही दी। धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के वचनों को पढ़ता है, और धन्य हैं वे जो इसको सुनते, तथा इसमे लिखी हुई बातों का पालन करते हैं; क्योंकि समय निकट है। ....* ***यीशु मसीह ने हमसे सदा प्रेम किया है। उन्होंने अपने लहू द्वारा हमें हमारे पापों से मुक्त कर दिया है। ......उनकी स्तुति और पराक्रम युगानुयुग होता रहे। आमीन। देखो, यीशु मेघों सहित आ रहे है। उनको सब लोग अपनी आंखो से देखेंगे---वे भी देखेंगे जिन्होंने उन्हें बेधा था।*** *पृथ्वी की सब जातियां उनके कारण पश्चाताप में विलाप करेंगी। तथास्तु। आमीन। प्रभु परमेश्वर जो है, जो सृष्टि के आरंभ में था, और जो आनेवाला है, उसी सर्वशक्तिमान प्रभु का यह कथन है, 'अल्फा और ओमेगा मैं हूं।'"*
>
> (प्रकाशितवाक्य 1:1-3, 5-8)[266]

परमेश्वर ने यह वचन "उसके सेवक यूहन्ना" को दिया था। यूहन्ना बारह शिष्यों में से एक था जो यीशु की पृथ्वी पर सेवकाई में उसके साथ था।[267] जब यीशु स्वर्ग को चले गए उसके छः दशकों बाद में, पवित्र आत्मा ने यूहन्ना को प्रेरित किया कि परमेश्वर के ग्रंथालय के इस अंतिम पुस्तक को लिखे।

प्रकाशितवाक्य का अर्थ खोलना। यह मनोरंजक पुस्तक उन घटनाओं का खुलासा करती हैं जिसकी कल्पना कोई मनुष्य नहीं कर सकता। यह रूपरेखा देती है कि प्रभु कैसे उसके पवित्र नाम को साबित करेगा और स्वामित्व को पुनः स्थापित करेगा जिसे मनुष्य ने पाप द्वारा गंवा दिया था। यह पुस्तक स्वर्ग का पूर्वदर्शन भी हमें देती है।

सिंहासन

परमेश्वर के कुछ चुने हुए भविष्यद्वक्ता और प्रेरितों को परमेश्वर के निवास-स्थान की झलक दी गई है, लेकिन यूहन्ना प्रेरित से अधिक स्पष्ट रूप से कोई नहीं। यूहन्ना ने लिखा :

> *"इसके पश्चात् मैंने आंखे ऊपर की तो मुझे **स्वर्ग में एक द्वार दिखाई दिया जो खुला हुआ था।** जिस व्यक्ति को मैंने पहले तुरही सदृश वाणी से अपने साथ बातें करते सुना था, वह कह रहा है, 'यहां ऊपर आओ, मैं तुम्हे वें बातें बताऊंगा जिनका इसके पश्चात् पूरा होना अनिवार्य है।' उसी क्षण मुझ पर आत्मा उतरा। मैंने देखा कि **स्वर्ग में एक सिंहासन रखा है एवं सिंहासन पर कोई विराजमान है।** वह व्यक्ति सूर्यकान्त और रुधिराख्य मणि* [दो बहुमूल्य पत्थर[268]] *के सदृश दिखाई दे रहा है; और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत सदृश मेघ-धनुष दृष्टिगोचर हो रहा है।"* (प्रकाशितवाक्य 4:1-3)

यूहन्ना ने स्वर्ग के सिंहासन के कक्ष का वर्णन करने के लिए संघर्ष किया। यह अकथनीय रूप से गौरवशाली था। परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर मंडरा रहे स्वर्गदूत थे जो लगातार घोषणा कर रहे थे : *"सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, **पवित्र, पवित्र, पवित्र है।** वह सृष्टि के आरंभ में था, वह है, और वह आनेवाला है!"* (प्रकाशितवाक्य 4:8)

यूहन्ना केवल यह बता सकता था कि उसने जो कुछ देखा वह पृथ्वी पर कुछ समान था, लेकिन सब कुछ असीम रूप से अधिक सुंदर और शानदार था। उसने जगमगाते प्रकाश और तीव्र, अलौकिक रंगों के स्थान को देखा। उसने गडगडाहट की गर्जन सुनी और असंख्य हर्षोल्लास की आवाजें सुनी, लेकिन जिस चीज ने यूहन्ना को सबसे ज्यादा आकर्षित किया था वह जो सिंहासन पर विराजमान था।[269]

रोमांच

संसार के धर्म स्वर्ग को अनेको मार्गो से चित्रित करते है।

कुछ वर्णन सकारात्मक रूप से उबाऊ हैं। शायद आप ने व्यंग-चित्र देखे हो : लोग मेघों के चारों ओर बैठे है, कर्त्तव्यपूर्वक वीणा बजाते है। बाइबल परमेश्वर के प्रतापी निवास का वर्णन इस प्रकार नहीं करती है।

अन्य लोग स्वर्ग को बिना रुके कामुकता के पुरुष-केंद्रित उद्यान के रूप में वर्णित करते है। यह कल्पना भी गलत है। प्रभु जब यहां पृथ्वी पर थे, तब उन्होंने सिखाया कि, उनके पिता के घर में, मूल्य देकर छुडाए हुए उनके लोग *"न तो वे विवाह करते और न विवाह में दिए जाते है, वरन*

स्वर्गदूतों के सदृश होते है।" (मत्ती 22:30)

स्वर्ग यह परमेश्वर-केंद्रित क्षेत्र है जहां अनंत ज्ञान और प्रेम के सान्निध्य में होने का आनंद, आश्चर्य, और रोमांच कभी कम नहीं होगा। स्वर्ग एक ऐसी जगह है जहां रिश्ते पृथ्वी पर ज्ञात किसी भी चीज से कही उंचे तल पर होते हैं। परमेश्वर ने सांसारिक विवाह को हमें उस महिमामय संबंध का एक हल्का सा विचार देने के लिए बनाया है जो प्रभु और उसके छुड़ाए हुए लोगों के बीच अनंतकाल तक रहेगा। यहां तक कि सबसे अच्छे सांसारिक विवाह भी उस गहन आनंद और पवित्र संगति को दर्शाने से कम हैं जो लोग मसीह के साथ एकजुट होकर उसके साथ आनंद लेंगे। पवित्रशास्त्र इसे *"एक **महान** रहस्य" कहता है* (इफिसियों 5:32) *और आगे कहता है, "धन्य है वें जो **मेमने के विवाह के भोज** में बुलाए गए हैं!"* (प्रकाशितवाक्य 19:9)

स्वर्ग उसके साथ होने के बारे में है।

अकथित हजारो वर्षो पहले बनाए गए स्वर्गदूत आज पहले से कही अधिक परमेश्वर की उपस्थिति से भयभीत हैं। तो ऐसा आदम के मूल्य देकर छुड़ाए हुए सन्तान के लिए होगा। प्रभु हमारे परमेश्वर के ऐश्वर्य, ज्ञान और सिद्धता को समझने के लिए हमें संपूर्ण अनंतकाल की आवश्यकता होगी!

> *"हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे प्रति कितने मूल्यवान है। उनका योग कितना बड़ा है! यदि मैं उनको गिनूं, तो मुझे ज्ञात होता कि वे धूलकण से भी अधिक हैं; जब मैं जागता हूं, तब भी मैं **तेरे साथ हूं**।"* (भजन संहिता 139:17-18)

प्रभु के साथ रहने का रोमांच और आनंद कभी भी पुराना नहीं होगा। प्रश्न यह नहीं कि क्या हम कभी ऊबेंगे, बल्कि यह है, क्या हम कभी उससे अपनी आंखे हटा पाएंगे?

> *"तू मुझे जीवन-मार्ग दिखाता है; **तेरी उपस्थिति परमानन्द है**; तेरे दाहिने हाथ में सदा-सर्वदा स्वर्ग-सुख है।"* (भजन संहिता 16:11)

जमाव

प्रेरित यूहन्ना ने प्रभु को सिंहासन पर देखने की केवल झलक प्राप्त नहीं की, उसने मूल्य देकर छुड़ाए हुए लोगों का जमाव भी देखा।

> *"इसके पश्चात् मैंने दृष्टि की तो **मुझे प्रत्येक कौमें, कुल, राष्ट्र एवं भाषा का एक विशाल जन समुदाय दीख पड़ा, जिसकी गणना कोई नहीं कर सकता।** वे*

सिंहासन और मेमने के सम्मुख खड़े थे। वे सफेद वस्त्र पहिने .... और उच्च स्वर से जयजयकार कर रहे थे, 'सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेमने की जय!'" (प्रकाशितवाक्य 7:9-10)

क्या आपको याद हैं कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब के वंश में जन्मे हुए उद्धारकर्ता के माध्यम से पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों और लोगो को अपनी आशीष देने का वादा किया था?[270] परमेश्वर ने यूहन्ना को भविष्य में देखने और अपने प्रतिज्ञा को पूरे होते देखने की अनुमति दी।

परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर पृथ्वी पर प्रत्येक कौंम, प्रत्येक राष्ट्र, और प्रत्येक भाषा का प्रतिनिधित्व किया जाएगा। कृतज्ञापूर्ण और आनंदपूर्ण वाणी के साथ, मूल्य देकर छुड़ाए हुए पापियों की असंख्य भीड़ हमेशा मेमने की स्तुति और आराधना करेगी जिसने उन्हें अनंत मृत्यु से छुड़ाने के लिए अपना लहू बहाया और उन्हें अनंत जीवन की आशीष दी।

*"वे यह नया गीत गाने लगे : **'तू इस पुस्तक के लेने** और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि **तूने वध होकर अपने लहू से** हर एक कुल, और भाष और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए **लोगों को मोल लिया है,** और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं। ' जब मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी, और वे उंचे शब्द से कहते थे, **'वध किया हुआ मेमना** ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान,और शक्ति, और आदर, और महिमा और धन्यवाद के योग्य है।'"* (प्रकाशितवाक्य 5:9-12)

मेरा उद्धारक!

चार हजार वर्षो पहले, अय्यूब भविष्यद्वक्ता ने उल्लसित होकर कहा था :

*"मुझे तो निश्चय है **कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है**; और वह अंत में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नष्ट हो जाने के बाद भी, **मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा। उसका दर्शन मैं आप अपनी आँखों से अपने लिए करूंगा**, और कोई दूसरा नहीं। यद्यपि मेरा **ह्रदय अंदर अंदर ही चूर चूर** भी हो जाए।"* (अय्यूब 19:25-27)

"परमेश्वर को देखने" के लिए आपका ह्रदय अय्यूब के समान तरसता है क्या? क्या आप उसे

अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानते हैं?

सभी सच्चे विश्वासी अय्यूब की निश्चित आशा में सहभागी हैं। मेरे मित्र, मैं आपके लिए नहीं बोल सकता, लेकिन मैं यह जानता हूं कि मैं अपने उद्धारकर्ता को आमने-सामने देखूंगा! *"परमेश्वर-पुत्र, जिसने **मुझसे** प्रेम किया और **मेरे लिए** अपने आपको दे दिया"* उसके साथ मैं चलूंगा और बोलूंगा। (गलातियों 2:20)

जी हां, मैं हर युग से परमेश्वर के लोगों के साथ, परिवार और मित्रों के साथ जो पहले से ही प्रभु के साथ है, सहभागिता के अद्भुत समय की आशा करता हूं, और मेरे संपूर्ण हृदय से, मैं आशा करता हूं आप भी उनके साथ होंगे। लेकिन, इससे बढ़कर, मुझे यीशु को देखना है!

उसने मेरा नरक मेरे लिए अपने ऊपर ले लिया।

निस्संदेह, सबसे आश्चर्यकारक सत्य में से एक यह है जिस पर मेरा मन विचार करने का प्रयास कर सकता है :

वह चाहता है कि मैं **उसके** साथ अनंतकाल बिताऊ!

जिस रात यीशु को पकड़वाया गया कि उसे दोषी ठहराए जाए और क्रूस पर चढ़ाया जाए, उसने प्रार्थना की :

> ***"हे पिता, मैं चाहता हूं, कि जिनको तूने मुझे दिया है, वे भी जहां मैं हूं, मेरे साथ हों,*** *जिससे वे उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है; क्योंकि तूने संसार की सृष्टि के पूर्व ही मुझसे प्रेम किया है।"* (यूहन्ना 17:24)

परमेश्वर के संदेश का यह मुख्य विषय है। उसने मनुष्य की रचना की कि उसके साथ रहे, लेकिन उसका निमंत्रण स्वीकारने के लिए वह आप पर दबाव नहीं डालेगा।

वह चुनाव आप पर छोड़ता है।

> *".....जो विजय प्राप्त करे, उसे मैं परमेश्वर की स्वर्ग-वाटिका में स्थित जीवन-वृक्ष का फल खाने को दूंगा। ....संसार-विजेता कौन है? केवल वह जिसका विश्वास है कि यीशु परमेश्वर-पुत्र है।"* (प्रकाशितवाक्य 2:7; 1 यूहन्ना 5:5)

परिपूर्ण घर

बाइबल के अंतिम दो अध्यायों में यूहन्ना की अनंतकाल के घर के आधार की झलक दर्ज है, जहां प्रत्येक युग के विश्वासी लोग उनके सृष्टिकर्ता-उद्धारक के साथ एकसाथ रहेंगे और उन सब में

सहभागी होंगे जो उसने उसके लोगों के लिए तैयार किया है।

> *"तब मैंने **नए आकाश और नई पृथ्वी** को देखा; क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी का लोप हो चूका था और समुद्र का भी पता नहीं था। मैंने देखा कि पवित्र नगरी नूतन यरूशलेम, परमेश्वर के पास से तथा स्वर्ग से उतर रही है। .... ।"*
> (प्रकाशितवाक्य 21:1-2)

गौरवमय नगरी *"परमेश्वर से स्वर्ग से नीचे उतरेगी"* कि फिर से सृजित हमारे ग्रह के साथ एक हो जाए। नई पृथ्वी में "कोई समुद्र नहीं" होगा। अब कोई अलग महाद्वीप नही होगा।

> *"वह उनकी आंखो से सब आंसू पोंछ डालेगा। उसके अनंतर न मृत्यु रहेगी, न शोक, न विलाप और न कष्ट, क्योंकि पहली बातें बीत चुकी हैं।"* (प्रकाशितवाक्य 21:4)

सब कुछ सिद्ध होगा। स्वर्गीय नगरी कल्पना से बढ़कर महिमामय होगी। यूहन्ना को उसका वर्णन करने में कठिनाई हुई।

> *"वह नगर वर्गाकार है, जितना लम्बा है उतना ही चौड़ा। उसने मापदंड से नगर को नापा तो वह दो हजार दो सौ बीस किलोमीटर निकला; उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई समान है। ....*
>
> *नगर का परकोटा सूर्यकान्त मणियों से निर्मित है; और स्वयं नगर निर्मल कांच के समान विशुद्ध सोने का है। शहरपनाह की नींव के पत्थर अनेक प्रकार के रत्नों से मढ़े हुए हैं। .... ।*
>
> *बारह फाटक बारह मोतियों के बने हैं। प्रत्येक फाटक एक संपूर्ण मोती का है। **नगर का चौक विशुद्ध सोने से निर्मित और कांच के सदृश पारदर्शक है**। मैंने नगर में कोई मंदिर नहीं देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना उसके मंदिर हैं। उस नगर को प्रकाश देने के लिए सूर्य और चन्द्रमा की आवश्यकता नहीं; **क्योंकि परमेश्वर का तेज उसे प्रकाशित करता है और मेमना उसका दीपक है**। समस्त जातियां उसकी ज्योति में चलेंगी ....*
>
> *लेकिन कोई भी अपवित्र वस्तु अथवा कोई घृणित अथवा असत्य आचरण करनेवाला उसमें प्रवेश नहीं करने पाएगा, **वरन केवल वे लोग जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं।"*** (प्रकाशितवाक्य 21:16-24, 27)

यह विशाल नगरी प्रत्येक विवरण में महिमामय होगी; उसके रास्ते भी *"विशुद्ध सोने के, कांच*

के सदृश पारदर्शक है।" प्रत्येक वस्तुएं ऐसी रची गई हैं कि प्रभु की महिमा को प्रतिबिंबित करे। नगरी को कोई मंदिर अथवा सूर्य नहीं है, क्योंकि प्रभु स्वयं ही नगरी का उपासना केंद्र और प्रकाश स्त्रोत है। *"मेमना उसका दीपक है।"* स्वर्ग भी उसी एकमात्र द्वारा प्रकाशित होगा, जिसने सृष्टि के पहले दिन, कहा,

> *"उजियाला हो।"* (उत्पत्ति 1:3)

उस नगरी का प्रकाश यह वही चकाचौंध करनेवाला वैभव होगा जो निवास-स्थान और मंदिर के परम पवित्र स्थान में निवास करता था, और स्वयं प्रभु यीशु में जिसने कहा,

> *"**मैं** संसार की **ज्योति हूं**।"* (यूहन्ना 8:12)

इस स्वर्गीय नगरी को एक सिद्ध घनाकार होगा, जैसे तंबू में परम पवित्र स्थान था जो स्वर्ग का प्रतिक है। नगर का आयाम उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई प्रत्येक दिशा में, 2200 किलोमीटर (1500 मील) हैं। स्पष्ट रूप से, नगरी नई पृथ्वी के वायुमण्डल के माध्यम से और अंतरिक्ष में बाहर निकल जाएगा।

इस महिमामय घर में कभी पैदा हुए हर एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त मकान होगे। हालांकि, सभी लोग वहां पर नहीं होंगे, "लेकिन केवल वे लोग होंगे जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं।"

अंतिम अध्याय में नगर के भीतर पाए जाने वाले उद्यान का वर्णन है।

> *"अब उसने मुझे स्फटिक-सी स्वच्छ जीवन-जल की सरिता दिखाई जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकल रही थी। नगर चौक के बीच में बहती हुई इस सरिता के दोनों तटों पर **जीवन-वृक्ष है,**.......अब से कुछ भी शापित नहीं होगा। इस नगर में परमेश्वर और **मेमने का** सिंहासन होगा और मेमने के सेवक उसकी सेवा करेंगे; वे उसके **मुखमण्डल के दर्शन करेंगे** और उनके ललाट पर उसका नाम अंकित होगा ...... और वे **युगानुयुग राज्य** करेंगे।"* (प्रकाशितवाक्य 22:1-5)

सिद्ध कहानी

परमेश्वर की कहानी का चक्र पूरा हो गया है।

> *"नगर चौक के बीच में बहती हुई इस सरिता के दोनों तटों पर **जीवन-वृक्ष** है।"*

जो एक सुंदर उद्यान में आरंभ हुआ वह एक भव्य नगरी में अत्युत्तम उद्यान में पूरा होता है। अदन-वाटिका के विपरीत, आकाश के स्वर्ग में भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष नहीं होगा, लेकिन वहां जीवन-वृक्ष होगा जिससे आदम और हव्वा को दूर किया गया था जब उन्होंने पाप किया था। स्वर्गीय नगर में सिद्ध पवित्रता और अनंत जीवन ही एकमात्र विकल्प होगा।

परीक्षा और विश्वास से जीने का समय इतिहास होगा।

*"इस नगर में **परमेश्वर** और **मेमने** का सिंहासन होगा और मेमने के सेवक उसकी सेवा करेंगे; वे उसके **मुखमण्डल के दर्शन करेंगे**.......और वे **युगानुयुग राज्य करेंगे**।"*

अनंतकाल में परमेश्वर के लोग कभी भी यह नहीं भूल पाएंगे कि *"परमेश्वर और......मेमने"* द्वारा कितना महान भुगतान किया गया है कि उनके असहाय प्राणों को न्याय से मुक्त करे और उन्हें योग्य ठहराए कि उसके साथ हमेशा के लिए जीवन व्यतीत करें।

प्रभु और उसके लोगों के बीच मधुर, अटूट सहभागिता एक निरंतर विशेषता होगी। यह कि परमेश्वर हमारे साथ होना चाहिए और यह कि हमें उसके साथ होना चाहिए यह किसी भी बात से अद्भुत होगा जिसे आदम और हव्वा जान सकते थे यदि उन्होंने कभी पाप नहीं किया होता।

यह और भी बढ़िया क्यों होगा?

उत्तर यह शब्द **छुटकारे** में पाया जाता है।

*"उसने तो हमें अंधकार के साम्राज्य से **छुड़ा कर** अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है, जिसमें हमें **छुटकारा** अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"* (कुलुस्सियों 1:13-14)

पाप और मृत्यु के अंधेरे कालकोठरी में कानून तोड़ने वालों की निंदा के रूप में सबसे ख़राब संभावित भाग्य से ***बचाए जाने से*** ज्यादा आश्चर्यजनक क्या हो सकता है, और फिर परमेश्वर के प्रकाश और प्रेम के राज्य में उसके पसंदीदा नागरिकों के रूप में सर्वोत्तम संभव स्थिति में ***लाया जा रहा*** है?

यही जो हमारे सृष्टिकर्ता-उद्धारक ने सभी लोगों के लिए किया है जो उद्धार के लिए केवल उसमे विश्वास रखते है। उसके महान प्रेम के द्वारा, उसके असीम अनमोल लहू के साथ, उसने असहाय पापियों को नरक से छुड़ाया है और स्वर्ग के लिए उन्हें योग्य ठहराया है।

यह एक सिद्ध कहानी है, छुटकारे की कहानी की अनंतकाल तक समीक्षा की जाएगी और उसकी प्रशंसा की जाएगी।

"इसके पश्चात् मैंने दृष्टि की तो मुझे प्रत्येक कौम, कुल, राष्ट्र, एवं भाषा का एक विशाल जन समुदाय दीख पड़ा, जिसकी गणना कोई नहीं कर सकता। वे सिंहासन और मेमने के सम्मुख खड़े थे। ....और ***उच्च स्वर से जयजयकार कर रहे थे, 'सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेमने की जय!'"*** (प्रकाशितवाक्य 7:9-10)

हमेशा ख़ुशी ख़ुशी

विश्व भर में, सभी उम्र के लोग रोमांस और छुटकारे की कहानियां, सुखद अंत वाली कहानियां पसंद करते हैं।[271]

फिर किसी गांव के कहानी बतानेवाले द्वारा प्राचीन पौराणिक कथा को नाटकीय रीतिसे किसी समूह को बताना हो जो रात में आकाश के नीचे एक टिमटिमाती आग के चारों ओर साथ में बैठे है, अथवा सोते समय माता-पिता द्वारा बच्चे को पढ़ी गई कोई परी कथा सुनाना हो, कहानियां एक समान कथानक साझा करती है। वह कुछ इस प्रकार होती है:

संकट में एक जवान कुंवारी, कुछ दुष्ट चरित्र द्वारा, अलौकिक हस्तक्षेप और एक बहादुर योद्धा अथवा खुबसूरत राजकुमार के कुछ संयोजन द्वारा उसकी निराशाजनक स्थिति से छुड़ाई जाती है। उसके प्रिय को छुड़ाने के बाद, नायक उसे अपनी दुल्हन बनाता है, कि उसके साथ उसके भव्य घर में रहे।

परी कथा का अंत कैसे हुआ?

और वे इसके बाद हमेशा ख़ुशी ख़ुशी से जीए।

लोग ऐसी कहानियां क्यों सुनाते है? वे उन्हें इसलिए सुनाते है क्योंकि परमेश्वर ने मानव के प्राणों में बुराई से छुटकारा पाने, प्यार करने, और हमेशा ख़ुशी से जीने की इच्छा पैदा की है। यही कारण है कि बच्चों और वयस्कों को समान रूप से ऐसी कहानियां पसंद आती हैं।

लेकिन परमेश्वर की कहानी कोई काल्पनिक कहानी नहीं है।

कल्पना की एक उपज इतिहास में निहित है, न ही पुरातत्व द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है। एक मनगढ़ंत कहानी दर्जनों लोगों द्वारा कुछ पंद्रह सदियों से नहीं लिखी गई है, और न ही वह सैकड़ों विस्तृत भविष्यवाणियों द्वारा इसकी शुरुआत की गई है। एक विश्वास करने वाला नायक यीशु के स्वर्गीय ज्ञान के साथ नहीं बोल सकता, न ही वह

उन्हें बताएगा कि वह बचाव के लिए आया है :

> *"यीशु ने बारह प्रेरितों को अपने साथ लिया और उनसे कहा, 'देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं। जो बातें भविष्यद्वक्ताओं ने मानव-पुत्र के विषय में लिखी हैं, वे सब यहां पूर्ण होंगी। लोग ...उसका उपहास और अपमान करेंगे, उस पर थूकेंगे, और कोड़ों से पीटने के पश्चात् उसे मार डालेंगे; पर वह तीसरे दिन जी उठेगा।"* (लूका 18:31-33)

काल्पनिक कहानी नरक में जानेवाले पापियों को शुद्ध किए विवेक और अनंत जीवन की गारंटी प्रदान नहीं कर सकते।

स्वैर कल्पना हमें अपने सृष्टिकर्ता के साथ एक व्यक्तिगत संबंध नहीं दे सकती है और हमारे पापी और स्वार्थी हृदयों को परमेश्वर की महिमा करने में और दूसरों की सेवा करने के जूनून के साथ परिवर्तित नहीं कर सकती है।

केवल परमेश्वर की कहानी ऐसा कर सकती है।

यह एक सच्ची बात है।

संक्षेप में :

एक सत्य परमेश्वर की कहानी और संदेश यह उसके अनंत पुत्र के विषय में है जो मनुष्य बना, एक सिद्ध जीवन व्यतीत किया, उसका सिद्ध लहू बहाया, और मृत्यु में से जीवित हो उठा कि असहाय पापियों को शैतान, पाप, मृत्यु और नरक से बचाए, ताकि वह उन सभी लोगों के साथ जो उस पर विश्वास करते हैं, अपने पिता के घर की महिमा में उसके ज्ञान और प्रेम के असीम आनन्द का भागी बना सके।

संकट में पड़े संसार के लिए यह परमेश्वर का सुसमाचार है।

उसने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसके कारण ही हम हमेशा सुखी रह सकते हैं।

> *"मैं यह जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है, वह **सदा बना** रहेगा।"* (सभोपदेशक 3:14)

निमंत्रण और चेतावनी

परमेश्वर की पुस्तक इन शब्दों के साथ समाप्त होती है :

> *" '**मुझ-यीशु ने** स्वयं अपना स्वर्गदूत भेजा है कि .... तुम्हारे सामने यह साक्षी दे .... अल्फा और ओमेगा, प्रथम और अंतिम, आदि और अंत मैं हूं।' .....**और आत्मा और दुल्हिन*** [मुक्त किए गए पापी] ***कहती है, 'आओ!'*** *सुननेवाला भी कहे, 'आओ।' जो*

*प्यासा है वह आए, और **जो चाहता है वह बिना मूल्य दिए, जीवन-जल ग्रहण करे।** जो व्यक्ति इस पुस्तक में लिखी भविष्यवाणी की वाणी को सुनते हैं, उन सबको मैं चेतावनी देता हूं कि **यदि कोई व्यक्ति इनमें कुछ जोड़ेगा** तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखी विपत्तियां उस पर डालेगा, और **यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक के शब्दों में से कुछ मिटाएगा** तो परमेश्वर भी इस पुस्तक में उल्लिखित जीवन-वृक्ष एवं पवित्र नगर से उसका हिस्सा मिटा देगा। इन बातों की साक्षी देनेवाले का कथन है, 'निश्चय, मैं शीघ्र आ रहा हूं।' आमीन, आइए, प्रभु यीशु। सब पर प्रभु यीशु का अनुग्रह रहे।"*

(प्रकाशितवाक्य 22:16, 13, 17-21)

इस प्रकार, अंतिम "आमीन" के साथ (अर्थात, यह विश्वसनीय और सत्य है), लेखक, जो समय से बाहर अस्तित्व में है, अपनी कहानी और संदेश का समापन करता है।

परमेश्वर और मनुष्य एकसाथ

आपको स्मरण है क्या आदम का उत्तर जब प्रभु उद्यान में *"तू कहा है?"* यह पुकारते हुए आया था।

आदम ने लज्जाजनक उत्तर दिया था :

"मैंने उद्यान में तेरी पग-ध्वनि सुनी। मैं डर गया।" (उत्पत्ति 3:10)

पुरुष और स्त्री ने उनके सृष्टिकर्ता-स्वामी से छिपने का प्रयास किया था क्योंकि उन्होंने पाप किया था।

लेकिन अब, इतिहास के अंत में, विश्वास रखनेवाले पुरुष, स्त्री और बच्चे उनके सृष्टिकर्ता-उद्धारक के आने और उन्हें उनके साथ हमेशा के लिए ले जाने के वादे पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं?

उन्होंने आनंदपूर्ण उत्तर दिया :

"आमीन, आइए, प्रभु यीशु।" (प्रकाशितवाक्य 22:20)

ऐसा परिवर्तन किसने लाया? आदम के कुछ वंशज अब उनके प्रभु से छिपना क्यों नहीं चाहते? इसके बदले उसे आमने-सामने देखने की दृष्टि से वे इतने आवेशित क्यों है?

उत्तर एक सत्य परमेश्वर के संदेश में मिलता है :

> *"परमेश्वर ने हमारा उद्धार किया है और हमें समर्पित जीवन के लिए बुलाया है। यह हमारे कर्मों के कारण नहीं, वरन परमेश्वर के उद्देश्य एवं अनुग्रह के कारण हुआ जो मसीह यीशु में युगों से पूर्व हमारे लिए तैयार किया गया था, लेकिन अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने से स्पष्ट प्रकाशित हुआ है; क्योंकि उन्होंने मृत्यु की शक्ति को नष्ट कर अपने शुभ संदेश द्वारा जीवन एवं अमरत्व को प्रकाशवान कर दिया है।"* (2 तीमुथियुस 1:9-10)

एक नियम

जैसे परमेश्वर ने आदम को पृथ्वी पर स्वर्गीय उद्यान में उसका एक नियम स्पष्ट किया था, वैसे ही उसने आकाश के स्वर्गीय नगरी के संबंध में आदम के वंशजों को उसका एक नियम स्पष्ट किया है :

> *"लेकिन कोई भी अपवित्र वस्तु अथवा कोई घृणित अथवा असत्य आचरण करनेवाला उसमें प्रवेश **नहीं करने पाएगा**, वरन **केवल** वे लोग जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं।"* (प्रकाशितवाक्य 21:27)

क्या आपका नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखा है? अगर है, तो फिर यहां उसकी ओर से आपके लिए एक वैयक्तिक संदेश है :

> *"**तुम्हारा** मन व्याकुल न हों। परमेश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर भी विश्वास करो। 'मेरे पिता के घर में बहुत निवास-स्थान हैं। यदि न होते तो मैं **तुमसे** कह देता: क्योंकि मैं **तुम्हारे** लिए एक स्थान तैयार करने जा रहा हूं। यदि मैं जाकर **तुम्हारे** लिए स्थान तैयार करू तो मैं फिर आऊंगा, और **तुमको** अपने यहां ले जाऊंगा, जिससे जहां मैं हूं वहां **तुम** भी रहो। ... मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता।"* — यीशु (यूहन्ना 14:1-3, 6)

परिशिष्ट भाग

इस पुस्तक को लिखना मेरे लिए एक आनंदित करनेवाली यात्रा थी। मेरे गौरवशाली सृष्टिकर्ता-उद्धारक के व्यक्तित्व, कहानी और संदेश पर विचार करने में वर्णन से परे आशीषित किया गया है। इस परियोजना के दौरान उसकी उपस्थिति और मार्गदर्शन स्पष्ट रहा है। सब स्तुति उसी की हो।

धन्यवाद

हालांकि मैंने नामों की एक लंबी सूची शामिल करने से परहेज किया है, मेरी अत्युत्तम पत्नी कॅरल का सहनशील सहयोग और प्रतिभाशाली मित्रों और परिवार के अमूल्य योगदान के बगैर यह पुस्तक वह नहीं हो सकती थी जो अब है। पुस्तक का पृष्ठभाग और चित्रांकन मेरे भाई डेव का कार्य है। मैं अपने हृदय से आप सभी का धन्यवाद करता हूं।

> *"परमेश्वर अन्यायी नहीं कि तुम्हारे कार्यों को एवं उस प्रेम को भूल जाए जो तुमने, उसके नाम की महिमा के उद्देश्य से किए हैं...... ।"* (इब्रानियों 6:10)

मैं उन अनगिनत मुस्लिम जिज्ञासुओं का भी आभारी हूं जिनके ई-मेल ने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया।

सबसे अधिक, इस संक्षिप्त यात्रा में शामिल होने के लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं इसे संक्षिप्त कहता हूं क्योंकि यह इससे भी बड़ा हो सकता था। वचन जो हमने इस पुस्तक के साथ पढ़े हैं वे बाइबल के संपूर्ण वचनों में से 4 फीसदी से भी कम है। तो भले ही हम हमारे यात्रा के अंत में आ गए हैं, हमने असल में अभी आरंभ किया है।

सतत यात्रा

हालांकि एक सत्य परमेश्वर ने अपना संदेश सभी लोगों के लिए स्पष्ट किया है जो चाहता है कि उसे समझे, वह स्वयं जटिल, गहरा, और असीम है। न ही मनुष्य न स्वर्गदूत उसके विषय में जो सब कुछ जानना है उसको कभी समझ सकेंगे। प्रेरित यूहन्ना ने इस सत्यता को सुसमाचार लेख के अंत के वचन में व्यक्त किया है :

"और भी अनेक कार्य हैं जो यीशु ने किए। यदि उनमें से प्रत्येक के बारे में लिखा जाता तो मैं जानता हूं कि जो पुस्तकें लिखी जाती, वे संसार भर में नहीं समातीं।"
(यूहन्ना 21:25)

मैं इससे सहमत हो सकता हूं। एक ही परमेश्वर एक ही संदेश पुस्तक को लिखने का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू शायद कौनसे वचनों को चुने और कौनसे छोड़ दूं यह था। सचमुच, परमेश्वर का वचन अक्षय है। यह प्राण के लिए स्वादिष्ट और सन्तुष्ट करनेवाला है। जैसे लेबनान में रहनेवाले मित्र ने खोजा था (पाठ 7), "मैने यह समझा है कि यह कहना काफ़ी नहीं कि, 'मैंने बाइबल पढ़ी है।' यह एक पुस्तक है जिसे लगातार पढ़ने की आवश्यकता है।"

अब जब आप ने इस यात्रा को पूरा कर लिया है, आप शायद यह चाहेंगे कि एक ही परमेश्वर एक ही संदेश को फिर से पढ़े और जितने वचनों का हवाला दिया हैं उसे बाइबल में देखे, उस भाग को पढ़े जिसमे प्रत्येक हवाला पाया जाता है। इससे भी बेहतर, अपने सृष्टिकर्ता के पूरे पुस्तकालय को, किताब दर किताब पढ़िए, जब आप उससे यह प्रार्थना करते है :

"तू मेरी आंखे खोल कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।"
(भजन संहिता 119:18)

यदि आपको लगता है कि आगे और भी दस्तावेज अथवा स्पष्टीकरण की आवश्यकता हैं, तो अंतिम टिप्पणियों की ओर देखो। पुस्तक के अंत में पाठ समीक्षा प्रश्न है उस पर विचार करने के लिए समय निकाले। और आपकी टिप्पणियां अथवा प्रश्न मुझे लिखने में संकोच न करे।

इस 3,500 पुराने आशीष के साथ मैं आपसे विदाई लेता हूं :

"प्रभु तुम्हें आशीष दे, और तुम्हारी रक्षा करे;
प्रभु अपने मुख का प्रकाश तुम पर प्रकाशित करे,
और तुम पर अनुग्रह करे;
प्रभु तुम्हारी ओर उन्मुख हो,
और तुम्हें शांति प्रदान करे।" (गिनती 6:24-26)

पॉल डॅन ब्रॅमसेन

pdbramsen@rockintl.org

अंतिम टिप्पणियां

"जो मैं देख नहीं पाता, वह मुझे सिखा।"

(अय्यूब 34:32)

प्रस्तावना

1. साहेल: अर्धशुष्क प्रदेश जो अफ्रीका को उसके उष्णकटिबंधीय वर्षावन से सहारा को अलग करता है। रेत और झाड़ियों की यह पट्टी सेनेगल से सूडान तक फैली हुई है।

2. एकेश्वरवादी एक परमेश्वर में विश्वास रखते है, बहुदेववादी अनेक देवता और देवियों में विश्वास रखते हैं, सर्वेश्वरवादी सब कुछ देवता का हिस्सा है ऐसा मानते है, धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी परमेश्वर के बदले मनुष्य को उंचा करते है, और अनीश्वरवादी दावा करते है कि परमेश्वर नहीं है।

पाठ 1 : सच्चाई को मोल लेना

3. एक ही परमेश्वर एक ही संदेश में, यह वाक्यांश और भविष्यद्वक्ताओं के पवित्रशास्त्र से 1,000 से भी अधिक अन्य हवाले बाइबल से लिए गए हैं। कभी कभी वचन के कुछ हिस्से का भी हवाला दिया गया है, जैसे की यहां पर है। नीतिवचन अध्याय 23, पद 23, उसके पूर्णता में ऐसे पढ़ा जाता है: *"सच्चाई को मोल लेना, बेचना नहीं, और बुद्धि, और शिक्षा और समझ को भी मोल लेना।"*

4. बैरेट, डेविड बी.,जॉर्ज टी. कुरियन और टॉड एम. जॉन्सन. वर्ल्ड क्रिस्चियन एन्साइक्लोपीडिया: ए कम्प्यारीटिव सर्वे ऑफ चर्चेस एंड रिलिजियंस इन द मॉडर्न वर्ड. लन्दन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001.

5. आज, पवित्रशास्त्र 2,479 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध हैं, संपूर्ण बाइबल अब तक कम से कम 451 भाषाओं में अनुवादित की गई है, और नया नियम 1, 185 भाषाओं में। उसके साथ ही, बाइबल के कुछ हिस्से (पुस्तके) कुछ 843 भाषाओं में उपलब्ध हैं।" (युनायटेड बायबल सोसायटी, 2010, www.ubs-translat I ons.org/about_us)

6. फॉक्स, जॉन (जी. ए. विल्यम्सन द्वारा सम्पादित). फॉक्स बुक ऑफ़ मार्टिर्स. टोरंटो: लिटल, ब्राउन एंड कंपनी, 1965.

7. "मसीही राष्ट्र" ऐसा किसी देश के बारे में कहना यह गलत है क्योंकि मसीह ने कहा, "मेरा *राज्य इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक मेरी ओर से लड़ते और मैं*

यहूदी धर्मगुरुओं के हाथ न पड़ता। पर मेरा राज्य यहां का नहीं है।" (यूहन्ना 18:36)

8. वुर्मब्रैंड, रिचर्ड. टॉर्चर्ड फॉर ख्राइस्ट-३०वी एनिवर्सरी एडिशन. बार्टलेस्विले, ओके: लिविंग सैक्रिफाईस बुक कंपनी., 1998.

9. द वे ऑफ़ राईचीयसनेस रेडिओ शृंखला को कुछ 100 भाषाओं में अनुवादित किया है अथवा कर रहे हैं कि जगत भर में प्रसारित करे। www.one-god-one-message.com

10. कुरान का पूरा वचन ऐसे स्पष्ट करता है: *"फिर हमने इन पैगम्बरों के पश्चात् मरयम सुत ईसा को भेजा। तौरात में से जो कुछ उसके सामने मौजूद था वह उसकी पुष्टि करने वाला था। और हमने उसे इंजील प्रदान की जिसमें मार्ग की सूचना और प्रकाश था और वह भी तौरात में से जो कुछ उस समय मौजूद था उसकी पुष्टि करने वाली थी और अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन और नसीहत थी"* (सूरा 5:46)। जब तक दर्शाया नहीं गया, एक ही परमेश्वर एक ही संदेश में कुरान का हिंदी अनुवाद जो उपयोग किया गया है वह मुहम्मद फ़ारुख रवां से है. अनुदित कुरआन मजीद. नई दिल्ली:स्टार ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, 1997. **नोट**: कुरान को अध्यायों में विभाजित किया गया हैं उन्हें सूरा कहते हैं। कुरान के अनुवाद के आधार पर आयतों की संख्या थोड़ी भिन्न हो सकती है। किसी आयत की खोज करते समय, आसपास के आयतों को खोजना आवश्यक हो सकता है।

11. "हम" यह कौन है? कुरान में, अल्लाह अक्सर अपने आप को उत्तम पुरुषवाचक बहुवचन में संबोधित करता है। बाइबल में, प्रभु भी कभी कभी स्वयं को बहुवचन में संबोधित करता है। **नोट**: अरबी भाषा बोलनेवाले "अल्लाह" शब्द का तो इस तरह से उपयोग करते हैं: "अल्लाह" अरबी ईसाईयों, अन्य गैर-मुस्लिम और मुस्लिम द्वारा प्रयुक्त "परमेश्वर" के लिए सामान्य शब्द है। जब इस तरह से उपयोग किया जाता है तब यह परमेश्वर का उचित नाम नहीं है। अरबी भाषा बोलने वालों में, किसी एक समूह के पास सामान्य शब्द अल्लाह नहीं है। मुस्लिम "अल्लाह" शब्द का उपयोग परमेश्वर के प्राथमिक उचित नाम के रूप में करते है। इसके विषय में पाठ 9 में और अधिक जानकारी दी गई है।

12. एक ही परमेश्वर एक ही संदेश में ई-मेल के अंश उन लोगों की पहचान की रक्षा के लिए गुमनाम रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं जिन्होंने उसे लिखा हैं।

13. "पी. बी. यु. एच." का अर्थ "उन पर शांति हो", यह मुस्लिम लोगों द्वारा भविष्यद्वक्ता का नाम लिखने अथवा बोलने के बाद में हमेशा जोड़ा जाता है। अरबी सूत्र जिसका उपयोग मुस्लिम लोग मुहम्मद का नाम लेने के बाद में करते है वह यह है: सल्लाह, अल्लाहु अलैहि वा सल्लम (एस. ए. डब्ल्यू.), इसका अर्थ: *"अल्लाह की प्रार्थनाएं और शांति उन पर रहे।"* वे इस चलन का आधार कुरान के इस वचन से करते है: *"अल्लाह और उसके फरिश्ते उन पर 'दरूद' भेजते हैं, हे लोगो जो ईमान लाये हो, तुम भी उन पर दरूद और सलाम भेजो"* (सूरा 33:56)। इस सूत्र का उपयोग बाइबल

के साथ असंगत है, जो कहती है : *"और जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है"* (इब्रानियों 9:27)। एक बार किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने के बाद, उसका अनंतकाल नियत हो जाता है। कितनी भी प्रार्थना करने से यह नहीं बदल सकता कि वह अनंतकाल कहा या कैसे व्यतीत करेगा (प्रकाशितवाक्य 22:11)।

14. [सीक] यह लॅटिन भाषा में "इस प्रकार" और "अत:/तथा" के लिए उपयोग किया जाता हैं। यह छपे हुए उद्धरण के बाद कोष्टक में लिखा जाता है यह दिखाने के लिए कि मूल को सटीक रूप से उद्धृत किया गया है, भले ही इसमे स्पष्ट त्रुटि हो। **नोट :** संक्षिप्त करना और सुधारने के अलावा अक्षर विन्यास और व्याकरण को (कि उन्हें अधिक समझने योग्य करे), ई-मेल उद्धरण जो एक ही परमेश्वर एक ही संदेश में उपयोग किए गए हैं उन्हें उसी तरह से पेश किया हैं जैसे उन्हें प्राप्त किया था। उदाहरण के लिए, "अहमद" से प्राप्त इस ई-मेल में कोई भी बड़े अक्षर लगभग नहीं हैं। इसे सही किया गया है।

15. अनुदित कुरआन मजीद। सय्यद अबुल आला मौदूदी, हिंदी अनुवाद- मुहम्मद फ़ारुख रवां। नई दिल्ली : स्टार ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, 1997।

16. उदाहरण के लिए, कुरान सूरा (अध्याय) 40, वचन 70-72 में कहती है : *"ये लोग जो इस किताब को और **उन सारी किताबों को झुठलाते हैं जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजी थीं,** शीघ्र ही इन्हें मालूम हो जाएगा जब तौक इनकी गरदनों में होंगे, और जंजीरे, जिनसे पकड़ कर वे खौलते हुए पानी की ओर खींचे जाएंगे और फिर नरकाग्नि में झोंक दिए जाएंगे। इसके साथ ही: "फिर हमने इन पैगम्बरों के पश्चात् मरयम सुत ईसा को भेजा। **तौरात में से जो कुछ उसके सामने मौजूद था वह उसकी पुष्टि करने वाला था।** और हमने **उसे इंजील प्रदान की** जिसमें मार्ग की सूचना और प्रकाश था और वह भी तौरात में से जो कुछ उस समय मौजूद था उसकी पुष्टि करने वाली थी और अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिए सर्वथा **मार्गदर्शन और नसीहत थी**"* (सूरा 5:46)। *हे ईमान लाने वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर **और उसकी किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है** और हर उस किताब पर जो इससे पहले वह उतार चूका है। जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों और **उसकी किताबों और उसके रसूलों** और अंतिम दिन का इनकार किया वह गुमराही में भटक कर बहुत दूर निकल गया। ...हे भविष्यद्वक्ता, हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार प्रकाशितवाक्य भेजी है जिस प्रकार नूह और उसके बाद के पैगम्बरों की ओर भेजी थी। हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक, याकूब और याकूब की सन्तान, ईसा, अय्यूब, युनुस, हारून और सुलैमान की ओर प्रकाशना भेजी। हमने दाऊद को **जबूर दी**"* (सूरा 4:136, 163)। कुरान के ऐसे और वाक्यों के लिए, पाठ 3 का पहला पन्ना और उसके साथ जुड़े फुटनोट देखो।

[17] नीतिवचन 23:23। सत्य को "मोल लेने" के बजाय, कई लोग उस डर के कारण उसे "बेचते" है कि परिवार अथवा मित्र उनके बारे में शायद क्या सोचेंगे अगर वे उन्हें बाइबल अध्ययन करते देखेंगे (भले ही यह संसार की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है और उसमें प्राचीन वचन हैं, जिसके विषय में कुरान मुस्लिम लोगों को आदेश देती है कि वे उसमे विश्वास करे)।

पाठ 2 : बाधाओं को पराजित करना

[18] डोयले, सर आर्थर कोनन। ट्रेजरी ऑफ़ वर्ल्ड मास्टरपीसेस: द सेलेब्रेटेड केसेस ऑफ़ शेर्लोक होल्म्स। आर. आर. डोंनेल्ले एंड सन्स कंपनी, 1981, पन्ना 17। (1891 में ग्रेट ब्रिटन में प्रथम प्रकाशित हुई।)

19. रोमियों 14:1-15:7; मत्ती 7:1-5

[20] डोयले, पन्ना 16

[21] गिनती 12

[22] 2 राजाओ 5

[23] योना 4

[24] बाइबल की इन पुस्तकों को देखें: दानिय्येल, एज्रा और एस्तेर

[25] यूहन्ना 4

[26] "द ग्रेटेस्ट जर्नी," नैशनल जिओग्राफिक मैगझिन, मार्च। 2006, पन्ना 62।

[27] भजन संहिता 90:1-12; मरकुस 8:36; 2 कुरिंथियों 4:16-18; रोमियों 8:18; याकूब 4:13-15

[28] मानव इतिहास में, परमेश्वर ने पृथ्वी पर विविध विनाशकारी घटनाओं की अनुमति दी और/अथवा उन्हें भेजा है। नूह की पीढ़ी में, सौ वर्षो के शांति और चेतावनी के बाद, परमेश्वर ने संसार भर में जल-प्रलय भेजा जिसमे आठ मनुष्यों को छोड़कर सभी नाश किए गए (उत्पत्ति 6-8)। (बहुत सारे लोग इस सार्वभौमिक जल-प्रलय को एक पौराणिक कथा मानते है भले ही भूगर्भीय और जीवाश्म अभिलेख इसकी पुष्टि करते है।) अब्राहम के समय में, तीन मनुष्यों को छोड़कर सभी उस अग्नि में नाश हो गए जो सदोम और अमोरा नगरों पर पड़ी थी। मूसा के समय के दौरान और उसके बाद, परमेश्वर ने इस्राएली समाज को आदेश दिया था कि कनानी राष्ट्रों को नाश करे (यहोशू 1-10)। ये युद्ध परमेश्वर की ओर से विशेष आदेश अंतर्गत किए गए थे और हमेशा उसमे स्वर्ग से चमत्कारिक हस्तक्षेप हुआ था, जैसे कि इस्राएलियों के नगर के बाहर सात लगातार दिनों तक सात चक्कर लगाने के बाद यरीहो की दीवार का गिर जाना (पुरातत्व विज्ञान द्वारा पक्का किया गया है)। परमेश्वर ने इन राष्ट्रों का न्याय करने से पहले सैकड़ों वर्ष प्रतीक्षा की, उन्हें समय दिया कि मन फिराएं और मूर्तिपूजा, अनैतिकता

और मनुष्य-बलि देने से फिर जाए (उत्पत्ति 15:16; निर्गमन 12:40), फिर भी उन्होंने अब्राहम, यूसुफ और मूसा समान धर्मी मनुष्यों की साक्षी को नजरंदाज किया। केवल थोड़े ही कनानी लोगों ने मन फिराया और एक सत्य परमेश्वर में विश्वास किया जिसने मिस्र देश पर दस अद्भुत महामारी भेजी थी और लाल समुद्र में से मार्ग निकाला था। जब परमेश्वर ने अपने न्याय को पूरा करने के लिए अपने प्राचीन लोगों का उपयोग किया, तो वह न्यायोचित और अपक्षपाती रहा। उदाहरण के लिए, तौरात अभिलिखित करते है कि परमेश्वर ने सबसे पहले इस्राएलियों को महामारी से सजा दी (मूर्तिपूजा और व्यभिचार करने के कारण) जिसमे 24,000 इस्राएली लोग मर गए थे (गिनती 25-31)। परमेश्वर ने सबसे पहले इस्राएलो लोगों का न्याय करने के बाद ही उसने उन्हें भेजा कि आसपास के भ्रष्ट और दुष्ट राष्ट्रों पर उसका न्याय कार्यान्वित करे। यह गलत है ऐसा मानना कि वे इतने अधिक भ्रष्ट थे कि *"उनकी भूमि भी अशुद्ध हो गई थी"* (लैव्यव्यवस्था 18:25)। परमेश्वर की भलाई और सहनशीलता बड़ी है, किंतु उसका क्रोध भी बड़ा है और उसका न्याय निश्चित है।

29. एक कारण कि परमेश्वर बुराई का न्याय तुरंत नहीं करता ताकि पापियों को पश्चाताप करने और उद्धार के उसके प्रबन्ध को स्वीकार करने का समय मिले: *"हे प्रियो, यह बात तुमसे छिपी न रहे कि प्रभु की दृष्टि में एक दिन हजार वर्ष के बराबर है और हजार वर्ष एक दिन के बराबर। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने में विलम्ब नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं, परन्तु **वह तुम्हारे प्रति धीरज रखता है। वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु यह कि सब पश्चाताप करें।**"* (2 पतरस 3:8-9)

30. इन तीन तथाकथित विरोधाभासों के उत्तर एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 8, 12, 28 और 29 प्रदान करते हैं।

31. मत्ती 7:1-20; रोमियों 14 और 1 कुरिंथियों 6 की तुलना करें।

32. अनेक वेबसाइट निरंतर "बाइबल में 101 स्पष्ट विरोधाभासों" की लम्बी सूचि को निरंतर पोस्ट करते है, हालांकि बहुत वर्षो से एक अन्य लेख पोस्ट किया जा रहा है जो कहलाता है: "101 **क्लियर्ड-अप'** कॉण्ट्राडिक्शन्स इन द बाइबल।"

www.debate.org.uk/top I cs/apolog/contrads

33. बाइबल का कोई भी वचन सही ढंग से अनुवादित करने के दो नियम: आसपास का हवाला पढ़े। वचन से वचन की तुलना करें। उदाहरण के लिए, व्यवस्था विवरण में (बाइबल की पाचवी पुस्तक), मूसा ने इस्राएली समाज को यह भविष्यवाणी कही: *"तेरा प्रभु परमेश्वर तेरे मध्य से, तेरे जाति-भाइयों में से तेरे समान एक भविष्यद्वक्ता तेरे लिए उत्पन्न करेगा। तू उसकी बातें सुनना"* (व्यवस्था विवरण 18:15)। मूसा का कहने अर्थ क्या था जब उसने इस्राएलियों को कहा कि परमेश्वर *"तेरे मध्य से, तेरे जाति-भाइयों में से"* एक भविष्यद्वक्ता उत्पन्न करेगा? कुछ कहते है कि मूसा इश्माएलियों के

विषय में कह रहा था; अन्य कहते है वह इस्राएलियों के विषय में कह रहा था। आसपास का हवाला सही उत्तर प्रदान करता है (उदाहरण के लिए, व्यवस्था विवरण 17:15, 20; 18:2, 5, इत्यादि.)। यह विशेष "भविष्यद्वक्ता" कौन था जिसके विषय में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा दी थी कि *"उसे उत्पन्न करेगा"?* हालांकि बहुत सारे लोग अपने-अपने विशेष धर्म के संस्थापक के साथ इस भविष्यवाणी को ठीक रूप से जोड़ने का प्रयास करते है, सही अनुवाद पवित्रशास्त्र में आगे स्पष्ट किया गया है। यूहन्ना 5:43-47, यूहन्ना 6:14, और प्रेरितों के काम 3:22-26।

34. बीसी=ईसा पूर्व/एडी-अन्नो डोमिनी, अर्थ, "हमारे प्रभु के वर्ष में।" आज बहुत सारे बीसीई (बिफोर कॉमन एरा) और सीई (कॉमन एरा) का उपयोग करते हैं जो "मसीह" को संक्षिप्त नाम से हटा देता है, हालांकि इतिहास में विभाजन बिन्दु अभी भी मसीह का जन्म है।

35. अगर आप ने *बँक* से पैसे उधार लिए हैं, तो फिर आप ने एक प्रकार की एक अनुबंध-एक क़ानूनी दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए होंगे। इस अनुबंध के अनुसार *बँक* का हिस्सा आपको वादा की गई राशी देना था; आपकी भूमिका एक निर्दिष्ट अवधि में ऋण का भुगतान करने की थी। अनुबंध के आपके हिस्से का सम्मान करने में विफलता यह अप्रिय परिणाम में हो सकता है। इसी तरह, बाइबल हमारे सृष्टिकर्ता द्वारा मानवजाति के लिए प्रदान किए गए अनुबंधों की व्याख्या करती है, ऐसे वादे जो आपके और मेरे जैसे लोगों के लिए उसकी अनंत आशीषों का आनंद लेना संभव बनाते हैं। परमेश्वर लोगों के साथ "एक वाचा" (यिर्मयाह 31:31) बनाना पवित्रशास्त्र में अनोखा है।

36. पाठ 5 में हम पवित्रशास्त्र के इस ईश्वरीय प्रमाण चिन्ह के विषय में विचार करेंगे। परमेश्वर द्वारा इतिहास के घटित होने से पहले उसकी घोषणा करने का एक शक्तिशाली उदाहरण दानिय्येल की पुस्तक के अध्याय 7 से 12 में पाया जाता है। 400 ईसा पूर्व से मसीह के समय तक के संसार के साम्राज्यों के इतिहास का वर्णन दानिय्येल करता है और आगे उन घटनाओं का वर्णन करता है जो अंत के दिनों में होने वाले है। दानिय्येल ने इन सभी बातों को 600 और 530 ईसा पूर्व के बीच में लिखा था।

पाठ 3 : भ्रष्ट या संरक्षित?

37. कुरान के हवालों के अधिक उदाहरण जो मुस्लिम लोगों को स्पष्ट करते है कि बाइबल के वचन परमेश्वर द्वारा प्रेरित है: सूरा 2:87-91,101,136,285; 3:3-4; 4:47,54,136,163; 5:43-48,68; 6:92; 10:94; 20:133; 21:105; 28:43; 29:46; 32:23; 40:53-54,70-72; 45:16; 46:12; 57:27, इत्यादि.

38. सदियों से, पुराने नियम के लेखों को यहूदी धार्मिक समुदाय द्वारा ईर्ष्यापूर्वक संरक्षित किया गया है। ज़रा सोचो। क्या वे किसी को अपने पवित्रशास्त्र के साथ छेड़छाड़ करने की अनुमति

देते, जिसके लिए बहुत से लोग मरने को तैयार थे? इतिहास में कोई अन्य ज्ञात प्रकरण नहीं है जहां एक धार्मिक समाज (मसीही) ने एक पुस्तक (पुराना नियम) पर अपना विश्वास आधारित किया है जिसे अन्य धार्मिक समाज (धर्मनिष्ठ यहूदी) ने सम्मान दिया और उसकी रक्षा की है। क्या केवल इस तथ्य ने किसी के लिए भी पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को बदलना असंभव नहीं बना दिया होता?

39. अनुदित कुरआन मजीद। सय्यद अबुल आला मौदूदी, हिंदी अनुवाद- मुहम्मद फ़ारुख रवां। नई दिल्ली: स्टार ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, 1997।

40. मेट्जगर, ब्रूस एम. एंड मायकल डी. कुगन। द ऑक्सफोर्ड कम्पैनियन टू द बायबल। न्युयोर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993, पन्ना 754।

41. फुटनोट नंबर 37 देखे।

42. हमारे पास 750 ईस्वी (मुहम्मद की मृत्यु के 100 से अधिक वर्षों के बाद) से पहले का कोई प्रमाण योग्य कुरान या इस्लामी दस्तावेज नहीं है। www.debate.org.uk/ debate-top l cs/h l stor l cal/ l s-quran

43. मेट्जगर एंड कुगन, पन्ना 683।

44. यहां प्राचीन हस्तलिपियों में पाए जाने वाले भिन्नता का एक उदाहरण दिया गया है। पुराने नियम के दूसरे राजा में, हम पढ़ते है : *"जब यहोयाकीन राजा बना तब वह **अठारह** साल का था"* (2 राजाओ 24:8)। इसी दौरान, दूसरा इतिहास की पुस्तक स्पष्ट करती है : *"जब यहोयाकीन राजा बना तब वह **आठ** साल का था"* (2 इतिहास 36:9)। इस प्रकार की भिन्नताएं किस तरह से स्पष्ट की जा सकती है? कुछ विद्वानों का सुझाव है कि 8 साल की आयु के समय में जवान यहोयाकीन के पिता ने उसे शासन करने में सहभागी किया होगा, और यह कि उसने उसके पिता की मृत्यु के बाद 18 साल की आयु के समय से शासन करना शुरू किया होगा, जो संभव है। हालांकि, एक संभावित व्याख्या यह है कि यह संख्यात्मक भिन्नता केवल "18" के बजाय "8" लिखने वाले प्रारंभिक सदियों के शास्त्रियों का परिणाम है। यदि ऐसा होता, तो वह गलत संख्या उन सभी हस्तलिपियों में पाई जाती, जो उस लिखनेवाले की नक़ल से "उतारी" गई होगी। जो भी प्रकरण हो, इस तरह की विविधताएं हमें किसी भी तरह से परमेश्वर के संदेश को प्रभावित या परिवर्तित नहीं करती हैं। अधिकतर प्रकरणों में, प्राचीन बाइबल हस्तलिपियों की विशाल मात्रा विद्वानों को विभिन्न ग्रंथों की तुलना करके सही प्रतिपादन निर्धारित करने की अनुमति देती है।

45. हदीस अभिलेख करते है : *"उसमान ने तब थाबित पुत्र जईद, 'अझ-झुबैर पुत्र अब्दुल्लाह, अल-आस पुत्र सईद और हिशाम पुत्र हरी पुत्र अब्दुर रहमान को आदेश दिया कि **हस्तलिपियों को परिपूर्ण नक़ल में फिर से लिखो**.... उन्होंने वैसा किया, और जब उन्होंने बहुत सी नकले*

लिखी, 'उसमान ने मूल हस्तलिखित हफ्सा को वापस की। 'उसमान ने प्रत्येक मुस्लिम प्रांत को एक नक़ल भेजी जो उन्होंने नक़ल की हुई थी, और ***आदेश दिया कि कुरान के साहित्य की अन्य सभी प्रतियाँ चाहे वे कुछ अंशो में हस्तलिपियां हो अथवा संपूर्ण हो, उन्हें जला दिया जाए।"*** (हदीस, सही बुखारी, खंड, नंबर 510) (हदीस [कहना"] ये प्राचीन लिखावटें है जो मुहम्मद की पत्नियों और सहयोगियों द्वारा लिखी गई है। मुस्लिम लोग बहुत सारे विश्वास और आचरण हदीस पर आधारित करते है।

46. मृत समुद्र की पोथियों की खोज से भी पहले, जिसने साबित किया कि वे अपरिवर्तित रहे हैं, कोई वर्तमान समय के पुराने नियम पवित्रशास्त्र की तुलना सेप्टूयाजिंट (पुराने नियम के यूनानी अनुवाद जो ईसा पूर्व करीब करीब 270 में पूरा हुआ था) से सरल रूप से कर सकता है। सेप्टूयाजिंट उस दावे को सही सिद्ध करता है कि पुराना नियम पवित्रशास्त्र अदुषित और संरक्षित है।

47. अबेग, मार्टिन जूनियर., पिटर फ्लिंट एंड यूजीन उल्रीच। द डेड सी स्क्रोल्स बायबल। सैन फ्रांसिस्को: हार्पर, 1999, पन्ना 16।

48. मॅकडॉवेल, जोश। ए रेडी डिफेन्स। नॅशविले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर, 1993, पन्ने, 42-48।

49. नए नियम की पवित्रशास्त्र की पुस्तके कुछ प्राथमिक यूनानी लेखों (मेजोरिटी टेक्स्ट , टेक्स्टस रिसेप्टस, अलेक्झान्ड्रीयन टेक्स्ट)) से अनुवादित हैं। एनकेजेवी टेक्स्टस रिसेप्टस से नए नियम का अनुवाद करता है, जबकि एनआयवी अलेक्झान्ड्रीयन टेक्स्ट से अनुवाद करता है। जहां यूनानी नए नियम के ग्रंथों के बीच "महत्वपूर्ण" भिन्नताएं होती हैं, अधिकांश बाइबल अनुवादों में हाशिया मे एक टिप्पणी शामिल होती है जो उन विविधताओं को दर्शाता है। सबसे लंबा अनुच्छेद जो संदिग्ध है वह मरकुस 16:9-20 और यूहन्ना 7:53-8:11 हैं, लंबाई 12 पद। जबकि ये अनुच्छेद कुछ पुराने बचे हुए हस्तलिपियों (अलेक्झान्ड्रीयन टेक्स्ट)) में अनुपस्थित है, वे अन्य (मेजोरिटी टेक्स्ट) सैकड़ों में पाए जाते हैं। ध्यान रखें कि पुराना अर्थ सटीक नहीं है, चूंकि विभिन्न ग्रंथ विभिन्न प्राचीन प्रतियों से निकले हैं। सबसे अधिक संभावना है कि एक विचलित नक़ल करने वाले ने गलती से इन चयनों को छोड़ दिया। जो भी हो, इन छोड़े गए अनुच्छेदों में सिखाए गए सभी सत्य पवित्रशास्त्र में कहीं और भी सिखाए जाते हैं। परमेश्वर का संदेश हमेशा अप्रभावित रहा है। क्या यह बुद्धिमानी होगी कि परमेश्वर के संदेश का अस्वीकार करे क्योंकि कुछ थोड़े प्राचीन नकलों में थोड़े खंड नहीं मिलते हो-खंड जो किसी भी तरह से परमेश्वर के संदेश को बदलते नहीं?

50. हाल के दिनों में, पुस्तके प्रकाशित हुई हैं और फिल्मे बनाई गई हैं जो बाइबल पर संदेह करने के लिए गणना की जाती हैं। कुछ बाइबल टीकाकार विरोधात्मक "पर्यायी सुसमाचार" की ओर इशारा करते हैं। ऐसे सभी "सुसमाचार" मसीहा के समय के बहुत बाद में लिखे गए थे और ऐतिहासिक पुष्टि की कमी है।

51. यह वाक्य मत्ती 11:15; 13:43; मरकुस 4:9, 23; 7:16; लूका 8:8; 14:35; प्रकाशितवाक्य 2:7, 11, 29; 3:6, 13, 22; 13:9 में भी पाया जाता है।

पाठ 4 : विज्ञान और बाइबल

52. वेबस्टर्स न्यू वर्ल्ड कॉलेज डिक्शनरी। न्यूयॉर्क: सायमन एंड शुस्टर, 1997। देखो: विज्ञान।

53. बुकैली, मौरिस। ला बायबल, ले कोरान एट ला सायन्स। पॅरिस: सेघर्स, 1976, पन्ना 35। डॉ. बुकैली की पुस्तक के उत्तर में, डॉ. विल्यम कॅम्पबेल ने लिखा, 'द कुरान एंड द बायबल इन द लाईट ऑफ़ हिस्टरी एंड सायन्स। दूसरा सम्पादन; मिडल ईस्ट स्त्रोत, 2002। डॉ. कॅम्पबेल का सावधानीपूर्वक-संशोधन विखंडन को भी ऑनलाइन साथ भाषाओं में पढ़ सकते है। https://answer l ng- l slam.org/Campbell

54. जैविक विकास से पता चलता है कि शैवाल और वानर जैसे जीवन रूपों की आबादी, लाखो पीढ़ियों में फैले जाने पर, पौधों और लोगों की आबादी में बदल सकते हैं। विकासवाद के अनुसार, मनुष्य, बंदर और छोटी मछलियां एक पूर्वज से साझा करते हैं। सत्य यह है कि न ही अनियमित क्रमिक विकास न उद्देश्यपूर्ण निर्मिती को आधुनिक विज्ञान द्वारा साबित नही कर सकते। दोनों को विश्वास की आवश्यकता है।

55. http://www.gma.org/space1/nav_map.html

56. अतिरिक्त वचन जो जल विज्ञान चक्र की पुष्टि करते हैं: भजन संहिता 135:7; यिर्मयाह 10:13; सभोपदेशक 1:7; यशायाह 55:10

57. न्यूजवीक मॅगझिन: "डीएनए का एक निशान .....[वैज्ञानिकों को] एक स्त्री तक ले गया, जिससे हम सभी अवतरित हुए।" न्यूजवीक, जनवरी 11, 1988, पन्ने 46-52।

58. टाइम मॅगझिन: "..... एक पूर्वज आदम था जिसके गुणसूत्रों पर आनुवंशिक सामग्री अब पृथ्वी पर हर मनुष्य के लिए आम है।" टाइम, दिसम्बर 4, 1995, पन्ना 29। **नोट**: वैज्ञानिकों का दावा हैं कि हमारे समान पुरुष पूर्वज यह हमारे समान स्त्री पूर्वज की तरह पुराने नहीं हैं। उनका दावा बाइबल के अनुरूप है, जो दर्शाता है कि हम सभी नूह के वंशज हैं। लेकिन हमारी आम मां हव्वा है, क्योंकि नूह के तीन पुत्र और तीन बहुएं थीं जिनसे सभी लोग आते हैं।

59. www.pbs.org/wnet/redgold/basics/bloodletting.html

60. www.bible.ca/tracks/matthew-fontaine-maury-pathfinder-of-sea-ps8.htm **नोट**: मौरी ने यह खोज लगाई कि समुद्र के मार्ग इतने स्थित है कि जहाज चलानेवाला अक्षरशः सागर से "उसके मार्ग स्पष्ट देख" सकता है। (रोझवाडोव्सकी, हेलेन एम. फाथोमिंग द ओशन। कैम्ब्रिज, एमए: द बेलक्नैप प्रेस ऑफ़ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005, पन्ना 40); जब दाऊद ने "समुद्र के मार्ग" के

विषय में लिखा था, उस समय उसे और उसके लोगों को केवल वे ही समुद्र मालूम थे वे भूमध्य सागर, गलील समुद्र, मृत समुद्र और लाल समुद्र। पानी के इन क्षेत्रों को “मार्ग” अथवा महत्वपूर्ण निरिक्षण किए जानेवाले प्रवाह नहीं थे।

61. वर्ल्ड बुक एनसायक्लोपेडिया 1986; स्टार्स।

62. “एक स्पष्ट अंधेरे रात में, कुछ हजार तारे आंखो को दिखते है। दूरबीन और शक्तिशाली टेलिस्कोप के साथ, हम बहुत सारे तारे देख सकते हैं जिनको गिनने की हम कभी अपेक्षा नहीं कर सकते। भले ही प्रत्येक वैयक्तिक तारा अनोखा है, फिर भी सभी तारों में बहुत कुछ सामान्य है।” (कॉर्नेल यूनिवर्सिटी ऐस्ट्रोनोमी वेबसाइट: http://cur l ous.astro.cornell.edu/stars.php) बाइबल भी स्पष्ट करती है कि तारों की गिनती नहीं कर सकते। (उत्पत्ति 15:5; 22:17)।

63. रामसे, सर विल्यम मिटशेल। बियरिंग ऑफ़ रीसेंट डिस्कवरी ऑन द ट्रस्टवर्दीनेस ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट। ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: बेकर बुक हाउस, 1953, पन्ना 222।

64. जोसेफस, फ्लावियस। जोसेफस: द इसेंशियल वर्क्स। (पॉल एल.माइर, सम्पादक) ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: क्रेगल पब्लिकेशन, 1988, पन्ने 268, 277।

65. ब्रूस, एफ. एफ. आर्कियोलोजिकल कन्फर्मेशन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट। (रिविलेशन एंड द बायबल। कार्ल हेनरी द्वारा सम्पादित) ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: एमआय: बेकर बुक हाउस, 1969।

66. जोसेफस, फ्लावियस। ऐंटीक्वीटीस 18:2, 2: 4, 3

67. कैफा के शव पेटी के चित्र और विवरण: बरियल बॉक्स: http://www.kchanson.com/ANCDOCS/westsem/caiaphas.html

68. ग्लुएक, नेल्सन। रिवर्स इन द डेजर्ट। न्यूयॉर्क: फरार, स्ट्रॉस एंड कुडाही, 1959, पन्ना 136। ग्लुएक मिडल ईस्ट खुदाई में विशेषज्ञ था।

69. मोर्मोनिजम यह ऐसा धर्म है जिसका दुनियाभर में लाखों लोग अनुसरण करते हैं। बाइबल के विपरीत, मॉरमॉन की पुस्तक की पुरातत्व द्वारा पुष्टि नहीं की गई है। वाशिंग्टन, डीसी में स्मिथसोनियन संस्था ने निष्कर्ष निकाला है: “स्मिथसोनियन के पुरातत्व विज्ञानी नए जगत के पुरातत्व ज्ञान और [मॉरमॉन की पुस्तक] के विषय का विषय-वस्तु के बीच कोई सरल संबंध नहीं है। (मार्टिन, वाल्टर। द किंगडम ऑफ़ द कल्ट्स। मिनियापोलिस, एमएन: बेथानी हाउस पब्लिशर्स, 1997, पन्ने 200-202)। पाठ 6 में उसी विषय पर फुटनोट 91 भी देखे। पुरातत्व के तुलनात्मक दृष्टिकोन के लिए क्योंकि यह बाइबल और कुरान से संबंध दिखाती है, देखे: http://www.debate.org.uk/?s=archaeology

70. फ्री, जोसफ पी. एंड हॉवर्ड एफ। वोस। आर्कियोलॉजी एंड बायबल हिस्ट्री। ग्रैंड रैपिड्स,

एमआय: झोंडरवन, 1992, पन्ना 294।

71. मुस्लिम और मॉरमॉन दोनों ही दावा करते हैं कि उनकी पवित्र पुस्तकें परमेश्वर की ओर से हैं, इसका सबसे बड़ा प्रमाण उस साहित्यिक शैली में देखा जा सकता है जिसमे वे लिखी गई हैं। एक मुस्लिम वेबसाइट स्पष्ट करती है: "द ग्रेट चैलेंज....ऑफ़ द होली कुरान:....जबसे कुरान प्रकट हुआ है, चौदा सौ साल पहले, कोई भी कुरान के अध्यायों में उसकी सुंदरता, वक्तृत्व, वैभव के समान एक भी अध्याय की रचना नहीं कर पाया है...." (www. I slam-gu I de. com/frm-ch1-2.htm). मॉरमॉन वेबसाइट समान दावा करते है: "मॉरमॉन की पुस्तक चुनौती देती है: .....आपको कई प्राचीन हिब्रू कविता और लेखन शैलियों का उपयोग करके अपना रिकोर्ड लिखना है जिसे आपके रिकोर्ड को प्रकाशित करने के अनेको वर्षों बाद तक फिर से खोजा नहीं जाएगा और अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया के लिए घोषित नहीं किया जाएगा....." www.fwrb.org/BOMChallenge.html

72. भजन संहिता 119, बाइबल में सबसे बड़ा अध्याय, पवित्रशास्त्र में प्राप्त होने वाले साहित्यिक रचना के जटिल प्रकार के उदाहरण प्रदान करता है। भजन संहिता 119 यह अक्षर परिवर्णी रचना है, प्रत्येक भाग में 8 पद के साथ 22 खण्डों में रचा गया है। प्रत्येक खण्ड के सभी 8 पद इब्रानी वर्णमाला के अक्षर के साथ आरंभ होते है। खण्ड 1 में, प्रत्येक पद अलीफ (इब्रानी वर्णमाला का पहला अक्षर) के साथ आरंभ होता है। विभाग 2, सभी आठ पद बेथ (वर्णमाला का दूसरा अक्षर) के साथ आरंभ होते है, और इसी तरह संपूर्ण इब्रानी वर्णमाला में है। इसकी नक़ल करने का प्रयास करे। नहीं, मत करो। इसके बदले, भजन संहिता 119 पढो और उसके शब्दों की सामर्थ्य में डूब जाइए। *"मेरे सब शिक्षकों की अपेक्षा मुझे में अधिक समझ है; क्योंकि तेरी साक्षियां मेरा दैनिक पाठ है।"* (भजन संहिता 119:99)

पाठ 5 : परमेश्वर का हस्ताक्षर

73. वालनफेल्स, रोनाल्ड एंड जॅक एम. ससून। द ऐन्शियंट नियर ईस्ट। संच 4। न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर्स सन्स, 2000; ये भी देखे: कार्ल रोबक। द वर्ल्ड ऑफ़ ऐन्शियंट टाइम्स। न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर्स सन्स, 1966, पन्ना 355।

74. महान सिकंदर ने नौ महीने (332 ईसा पूर्व) की घेराबन्दी के बाद नगर को कमजोर कर दिया, भले ही उसने इसे पूरी तरह से नष्ट नहीं किया। इस झटके से सोअर पूरी तरह उबर नहीं पाया...." (अवेरी, कॅथरिन बी. एंड जोथाम जॉन्सन। द न्यू सेंचुरी क्लासिकल हैंडबुक। न्यूयॉर्क: ऐपलटन-सेंचुरी-क्रॉफ्ट, इंक., 1962, पन्ना 11**30**।)

75. मॅथ्यू, सॅम्युएल डब्ल्यू। "द फोनिशियन: सी लॉर्ड्स ऑफ़ एंटीक्विटी," वाशिंग्टन, डीसी: नैशनल जिओग्राफिक, औगुस्त 1974, पन्ना 165।

[76]. उत्पत्ति 26:3; 28:15 **नोट**: भूमि जिस राष्ट्र को प्रदान करने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की थी वह अब्राहम, इसहाक और याकूब से आता है वह युक्तिपूर्वक "राष्ट्रों के बीच में" स्थित है। (यहेजकेल 5:5) प्रेरितों के काम 1:8; 2:5 भी देखें।

[77]. जोसेफस, फ्लावियस, द कम्प्लीट वर्क्स ऑफ़ जोसेफस। (विल्यम व्हिस्टन) ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: क्रेगल पब्लिकेशन, 1967, पन्ने 566-568, 580-583, 588-589।

[78]. यह स्पष्ट करने के लिए, कि विश्व युद्ध।। से पहले, हिटलर के जर्मनी में अनगिनत यहूदी नहीं चाहते थे कि उन्हें यहूदियों के रूप मे पहचाना जाए। वे जर्मन बोली बोलते थे, जर्मन महसूल भरते थे और विश्व युद्ध। में जर्मन के लिए युद्ध भी लढ़े। फिर भी नाजियों ने उन्हें यहूदी करार दिया। और कुछ ही वर्षों में, 60 लाख लोगों को "विध्वंस....जिसे इतिहास सबसे उत्तम रीतिसे दस्तावेज किया हुआ अपराध कहते है" जीवित मार डाला गया। (फिलिप्स, जॉन। एक्सप्लोरिंग द वर्ल्ड ऑफ़ द ज्यूं। नेपच्यून, एनजे: लॉईझिओक्स ब्रदर्स, 1993, पन्ना 109) प्रमुख लेख भी देखें: "नाजियों ने स्वीकार किया यूरोप में 60 लाख यहूदियों का क़त्ल।" बौर्न, एरिक। द पॅलेस्टाइन पोस्ट, सन्डे, दिसम्बर 16, 1945।

[79]. यशायाह 44:18; यिर्मयाह 5:21; यूहन्ना 5:39-47; 2 कुरिंथियों 3:12-16; रोमियों 9-11। **नोट** : 2600 वर्षों पहले, परमेश्वर ने यहेजकेल को प्रकट किया था कि इस्राएल का नया जन्म तीन विशिष्ट चरणों में होगा। उसने इस्राएल की तुलना सुखी हड्डियों की घाटी से की थी, जो एक शरीर के रूप में जुड़ेंगे और आखिर में उनमे जान फूंकी जाएगी (यहेजकेल 37:1-14)।

[80]. उत्पत्ति 37-50 की तुलना सुसमाचार में अभिलिखित यीशु के जीवन से करो। अनुशंसित पाठ: योसेफ मेक्स मी थिंक ऑफ़ जीजस, विल्यम मॅकडोनाल्ड द्वारा। ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: गॉस्पल फोलियो प्रेस।

पाठ 6 : सुसंगत गवाही

[81]. *"**परमेश्वर से संबंधित ज्ञान मनुष्यों पर प्रकट है; क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है।** इसलिए परमेश्वर का प्रकोप मनुष्यों की समस्त अभक्ति और अधार्मिकता पर स्वर्ग से प्रकट होता है, क्योंकि वे सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। क्योंकि जगत की सृष्टि से ही परमेश्वर के अदृश्य गुण, अनन्त सामर्थ्य और परमेश्वरत्व उसकी रचना के द्वारा **समझे जाकर स्पष्ट दिखाई देते हैं, इसलिए उनके पास कोई बहाना नहीं।"*** (रोमियों 1:19-20)। लोग जिनके पास पवित्रशास्त्र नहीं है, *"इस प्रकार वे व्यवस्था के कार्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दर्शाते हैं और उनके विवेक भी साक्षी देते हैं, और उनके **विचार** कभी उन्हें **दोषी या कभी निर्दोष** ठहराते हैं,......"* (रोमियों 2:15)। फिर भी, अधिक सत्य की खोज करने के बजाय, अधिकतर लोग झूठ का अनुसरण करते हैं।

82. बाइबल में अभिलिखित वंशावलियों के युगों को गिनने के द्वारा, हम सीखते है कि आदम तब तक नहीं मरा जब तक नूह का पिता (आदम के बाद 9वीं पीढ़ी) 50 वर्ष से अधिक का नहीं हो गया (उत्पति 5)।

83. *"जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, 'इसमे तो परमेश्वर का हाथ है।"* (निर्गमन 8:19)। निर्गमन 12:30-33 भी देखें। संपूर्ण कहानी के लिए: निर्गमन 5-14।

84. जब मूसा ने पवित्रशास्त्र का पहला खण्ड लिखा, तो यह संभव है कि अय्यूब की पुस्तक तौरात से पहले लिखी गई थी (अब्राहम के समय के आसपास), यह अस्तित्व में समाप्त साहित्य के सबसे पुराने टुकड़ों में से एक है। यदि यह तिथि सही है, तो फिर बाइबल लगभग 2,000 वर्षों की अवधि में लिखी गई थी।

85. देहान, डेनिस। अवर डेली ब्रेड, मई 6, 2006। ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: आरबीसी मिनिस्ट्रीस।

86. कोई पूछते है, "परमेश्वर झूठे भविष्यद्वक्ताओं को उनके झूठे संदेश क्यों देने देता है?" मूसा ने उस प्रश्न का उत्तर तौरात में दिया है। *"**यदि तेरे मध्य में कोई भविष्यद्वक्ता** अथवा स्वप्न-द्रष्टा **का जन्म हो**, वह तुझे चिन्ह अथवा आश्चर्यपूर्ण कार्य दिखाए और जिस चिन्ह अथवा आश्चर्यपूर्ण कार्य के विषय में वह बोला था, वह सच प्रमाणित हो जाए, और तब वह यह कहे, "आओ, हम दूसरे देवताओं का अनुसरण करें", जिनको तू नहीं जानता है, और "आओ, हम उनकी आराधना करें", **तो तू उस भविष्यद्वक्ता** अथवा स्वप्न-द्रष्टा **की बातों को मत सुनना**; क्योंकि **तेरा प्रभु परमेश्वर** यह जानने के लिए **तेरी परीक्षा ले रहा है**, कि क्या तू अपने संपूर्ण हृदय से, संपूर्ण प्राण से अपने परमेश्वर को प्रेम करता है।"* (व्यवस्था विवरण 13:1-3)

87. 1 राजाओं 18; 1 राजाओं 19:18; रोमियों 11:14

88. स्मिथ, जेम्स ई। वाट द बायबल टिचेस अबाउट द प्रॉमिस्ड मसीहा। नॅशविले, टीएन: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1993, पन्ने 470-474; उसी के साथ: फिलिप्स, जॉन। एक्सप्लोरिंग द वर्ल्ड ऑफ़ द ज्यूं। नेपच्यून, एनजे: लॉईझिओक्स ब्रदर्स, 1993, पन्ने 80-81)

89. टेलर, जॉन। "जोन्स कैप्टिवेटेड सैन फ्रांसिस्कोस लिबरल ईलाईट," सैन फ्रांसिस्को क्रोनिकल, नवम्बर 12, 1998।

90. स्मिथ. जोसफ। पर्ल ऑफ़ ग्रेट प्राइज। जोसफ स्मिथ- हिस्ट्री; 1:15-16।

91. बाइबल विपरीत, जिसकी पुष्टि इतिहास और पुरातत्व विज्ञान द्वारा की जाती है, मॉरमॉन की पुस्तक निराधार है। प्रोफ़ेसर थॉमस स्टुअर्ट फर्गुसन ने अपने "पवित्र पुस्तक" के लिए सबूत की पुष्टि करने के एकमात्र उद्देश्य के लिए मोर्मोनिज्म के अपने ब्रिघम यंग विश्वविद्यालय में पुरातत्व विभाग की स्थापना की। 25 वर्षों के समर्पित संशोधन के बाद, विभाग को मॉरमॉन की पुस्तक में

वर्णित वनस्पतियों, जीवों, स्थलाकृति, भूगोल, लोग, सिक्कों या बस्तियों की पुष्टि करने के लिए कुछ भी नहीं मिला। फर्गुसन ने निष्कर्ष निकाला कि मॉरमॉन की पुस्तक का भूगोल "काल्पनिक" है। (मार्टिन, वाल्टर। द किंग्डम ऑफ़ द कल्ट्स। मिनियापोलिस, एमएन: बेथानी हाउस पब्लिशर्स, 1997, पन्ने 200-202)

पाठ 7 : नींव

[92.] बाइबल में 66 व्यक्तिगत पुस्तकें हैं- पुराने नियम में 39 और नए नियम में 27। बाद में इतिहास में, रोमन कॅथोलिक चर्च (जो, बहुत सारे प्रॉटेस्टंट चर्च के समान, परमेश्वर के वचन से बढ़कर उनकी चर्च प्रथाओं को उंचा उठाते हैं) ने निर्णय लिया कि पुराने और नए नियम के बीच मे और अतिरिक्त 11 पुस्तके जोड़ दे। इन पुस्तकों को, *अपोक्रिफा* (अथवा ड्युटेरोकॅनोनिकल पुस्तके), कहते है, जो मुख्य रूप से पुराने और नए नियम के बीच के समय में लिखी गई है। हालांकि उसमे दिलचस्प ऐतिहासिक और पौराणिक साहित्य है, इब्रानी विश्वासियों ने उन्हें प्रेरित पवित्र वचन के रूप में कभी भी स्वीकार नहीं किया। 1947 में मृत समुद्र के पास खोजी गई कई हस्तलिपियां भाष्य है जो *अपोक्रिफा* के पुस्तकों पर नहीं लेकिन पुराने नियम के केवल 39 पुस्तकों पर टिप्पणी करते हैं। *अपोक्रिफा* को नए नियम में कभी भी उद्धृत नहीं किया गया है। 39 पुस्तकें जो पुराने नियम में हैं वे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखी गई हैं जिनसे परमेश्वर ने सीधे बात की और जिनसे उसने अपने वचन की पुष्टि की, *"परमेश्वर ने भी चिन्हों, चमत्कारों, एवं अनेक सामर्थ्यपूर्ण कामों द्वारा और पवित्र आत्मा के वरदानों को अपनी इच्छा-अनुसार बांटने के द्वारा इसकी साक्षी दी"* (इब्रानियों 2:4)। नए नियम के अनुसार, विश्वासी जो मसीह की पृथ्वी पर यात्रा के बाद के समय में रहते थे, उन्होंने प्रेरितों के अधिकार को और नए नियम के पवित्रशास्त्र को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और पवित्रशास्त्र के बराबर स्वीकार किया। अपोक्रिपा के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।

[93.] लूका 24:25-48; यूहन्ना 5:39-47। संसाधन जो परमेश्वर के संदेश को कालानुक्रमिक रूप से प्रस्तुत करते हैं: www.one-god-one-message.com www.goodseed.com

पाठ 8 : परमेश्वर कैसा है

[94.] विश्वविज्ञानियों ने प्रयास किया कि विश्व के इतिहास के बारे जानकारी प्राप्त करे जिसे उन्होंने "संयुक्त अवलोकन और सैद्धांतिक प्रयास" पर आधारित किया। (लोएब, अब्राहम। "द डार्क एजेस ऑफ़ द यूनिवर्स," सायंटिफिक अमेरिकन, नवम्बर 2006) जबकि उनका ज्ञान अवलोकन और ***अनुमान*** पर आधारित था, उनका ज्ञान जिन्होंने विश्वास किया था कि बाइबल अवलोकन और **प्रकाशितवाक्य** पर आधारित है-प्रकाशितवाक्य जिसमे ईश्वरीय हस्ताक्षर है (जैसे एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ

5 और 6 में अवलोकन किया गया है)। परमेश्वर ने अपने सत्य को इस प्रकार से प्रकट किया है कि हम उसे सत्य के रूप में जान सके।

95. अय्यूब 38:6-7 की पुस्तक दर्शाती है कि जब परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना की तब स्वर्गदूत देख रहे थे और आनंदित हो रहे थे। अय्यूब यह एक काव्यात्मक पुस्तक है; इस प्रकार स्वर्गदूतों को "सबेरे के तारे" और "परमेश्वर पुत्र" ऐसा वर्णन किया गया है। ये दो वक्तव्य विभिन्न जीवोंको नहीं दर्शाते। यह दुहरा वर्णन यह समानता का उदाहरण है, इब्रानी कविता का गुणधर्म। अय्यूब 1:6; 2:1 को भी देखें।

96. बाइबल की 66 पुस्तकों में से आधे से अधिक में स्वर्गदूतों का उल्लेख हैं। उदाहरण के लिए: उत्पत्ति 3:24; 16:7-11; 18:1-19:1; 1 राजाओं 19:5-7; भजन संहिता 103:20-21; 104:4; दानिय्येल 6:22; इब्रानियों 1:4-7,14; 12:22; मत्ती 1:20; 2:13,19-20; 22:30; 26:53; लूका 1और 2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, प्रकाशितवाक्य 5:11; 18:1; 22:6-16,

97. व्यवस्था विवरण 10:14; 2 कुरिंथियों 12:2,4; यूहन्ना 14:2; भजन संहिता 33:13; 115:3; 1 राजाओं 8:39

98. वाइन, डब्ल्यू. ई., एम. ए. अन एक्स्पोजीटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स। वेस्टवुड, एनजे: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी; 1966, पन्ना 229।

99. परमेश्वर की सृष्टि के छः दिनों और विश्राम के सातवें दिन ने मानव जाति के लिए ईश्वरीय रूप से नियुक्त समय चक्र की शुरुआत की जो आज तक संपूर्ण जगत में मनाया जाता है। दिनों, महीनों और वर्षों के विपरीत, सप्ताह का खगोल विज्ञान से कोई संबंध नहीं है। यह परमेश्वर द्वारा ठहराया गया है।

100. "बिग बँग" परिकल्पना के समर्थक इसका सिद्धांत देते हैं कि प्रकाश, सूर्य और पृथ्वी से 9,000,000,000 वर्षों पहले अस्तित्व में था! (लोएब, अब्राहम। "द डार्क एजेस ऑफ़ द यूनिवर्स," सायंटिफिक अमेरिकन, नवम्बर 2006, पन्ना 49।)

101. अगली बार आप जब पानी पीते हो, आप शायद आपके सृष्टिकर्ता को कहना चाहेंगे, "आपका धन्यवाद हो!" इस वास्तविकता के बावजूद की H2O (पानी) हमारी प्यास बुझाता और हमें जीवित रखता है, यह सच में अद्भुत है। पानी जो एकमात्र ऐसा द्रव है जो जमने पर फैलता है; इस प्रकार यह कम घना हो जाता है और तैरता है। यदि पानी अन्य पदार्थों की तरह व्यवहार करता है और जमने पर संघनित हो जाता है, तो यह समुद्रों, झीलों और नदियों के तल में डूब जाएगा। इसका अधिकांश भाग पिघलेगा नहीं और अंततः हमारा साफ पानी तली में जमकर बन्द हो जाएगा। अच्छी बात है कि हमारे निर्माता ने इसके बारे में सोचा!

102. मनुष्य ने पहली बार 24 दिसंबर, 1968 को चंद्रमा के अंधेरे पक्ष को देखा था, जब अपोलो 8 अंतरिक्ष यान ने चन्द्रमा की परिक्रमा की थी। दिलचस्त बात यह है कि उसी दिन, तीन अंतरिक्ष यात्रियों ने उत्पत्ति अध्याय 1 पढ़ा जैसा की दर्शक टेलीविजन पर देख रहे थे। (रेनोल्ड्स, डेविड वेस्ट। अपोलो: द एपिक जर्नी टू द मून। न्यूयॉर्क: हारकोर्ट, इंक., 2002, पन्ने 110-111)

पाठ 9 : उसके समान कोई नहीं

103. बाइबल में अतिरिक्त उदाहरण जहां परमेश्वर स्वयं को "हम" और "हमारा" इस प्रकार से सम्बोधित करता है: उत्पत्ति 3:22; 11:7; यशायाह 6:8 (नोट: कुरान में, "अल्लाह" निरन्तर बहुवचन में बोलता है। एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 3 में उद्धृत कुरान की आयतें इसे प्रदर्शित हैं।)

104. उत्पत्ति 1:1-3 जबकि उत्पत्ति का प्रारंभिक भाग त्रि-एकता के रूप में परमेश्वर के अस्तित्व की व्याख्या नहीं करता है, जिस तरह से इसे कहा गया है वह बाइबल में बाद में प्रकट किए गए स्पष्टीकरणों के साथ पूर्ण सामंजस्य में है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट करते हैं कि ईश्वरत्व के तीनों व्यक्ति सृष्टि कार्य में सहभागी थे।

105. दाऊद जब इस्राएल का राजा बना, पवित्रशास्त्र बताता है: *"बिन्यामिन कुल के लोग अब्नेर के नेतृत्व में एकत्र हो गए। उन्होंने एक [**एखाद**] दल बना लिया। वे अम्माह पहाड़ी के शिखर पर खड़े हो गए"* (2 शमुएल 2:25)। घोषित करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया जाता है: *"प्रभु **एक** ही है"* इस एकता का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है जिसमें अनेकता है।

106. पुराने नियम के बहुत सारे वचन परमेश्वर की जटिल एकता की पुष्टि करते है: उत्पत्ति 17:1-3; 18:1-33 परमेश्वर शारीरिक रूप में अब्राहम के सामने प्रकट हुआ। ये आमने-सामने की मुलाकातें थी न कोई सपना या दृष्टांत था। उत्पत्ति 35:9-15; निर्गमन 3:1-6; 6:2-3; 24:9-11; 33:10-11. निर्गमन 33:11 की तुलना 33:20 से करें। मूसा ने ईश्वरत्व में से एक व्यक्ति (पुत्र) के साथ आमने-सामने बातचीत की, लेकिन उसे ईश्वरत्व के अन्य व्यक्ति (पिता) का चेहरा देखने की अनुमति नहीं थी। जटिल? जी हां। परमेश्वर परमेश्वर है। यूहन्ना 1:1-18 देखें। यहां और भी पुराने नियम के अंश हैं जिन्हें परमेश्वर की बहुवचन एकता की अवधारणा के अलावा ठीक से नहीं समझा जा सकता है: भजन संहिता 2; भजन संहिता 110:1 (मत्ती 22:41-46 से तुलना करो); नीतिवचन 30:4; यशायाह 6:1-3 (यूहन्ना 12:41 से तुलना करो); यशायाह 26:3-4; यशायाह 40:3-11; यशायाह 43:10-11 (यशायाह 7:14; 9:6-7); यशायाह 48:16; यशायाह 63:1-14; यशायाह 49:1-7; यिर्मयाह 23:5-6; दानिय्येल 7:13-14; होशे 12:3-5; मीका 5:2; मलाकी 3:1-2, इत्यादि।

107. लूका 15:11-32; यूहन्ना की पहली पत्री भी पढ़ें।

108. भजन संहिता 2 पढ़ें, जिसमे दाऊद भविष्यद्वक्ता मसीहा को परमेश्वर-पुत्र के रूप में संबोधित

करता है। पुत्र के कुछ अन्य नामों और उपाधियों पर भी विचार करें। उसे कहा गया है: "द्वार," (यूहन्ना 10) लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वह लकड़ी अथवा धातु का द्वार है। उसे ऐसे भी बुलाया गया है: "जीवन की रोटी", (यूहन्ना 6) लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वह रोटी का एक टुकड़ा है। न ही "परमेश्वर-पुत्र" का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने अपने लिए एक पत्नी ली और उसे एक पुत्र हुआ। यूहन्ना, अध्याय 1, 3 और 5 पढ़ें।

109. ले सोलेइल, मार्च 14, 1984: «बियानफैतेऊर सिंसेरे, ईल कंसीडरेट सेस 2.000 एम्प्लोयीस **कॉम्मे सेस एन्फंट्स** एट पर्टागियेट लेउर प्रोब्लेमेस, लेउर सोसिस एट लेउर जोई। ; ए 'वाईयूक्स' कॉम्मे ल'अपेलाइएंट फमिलेरेमेंट एट तेंड्रेमेंट सन पर्सनल, एटईट **उन ग्रैंड फिल्स डू सेनेगल**. » (अनुवाद: "एक ईमानदार मानवतावादी, वह अपने 2000 कर्मचारियों को अपने बच्चों समान मानता था, उनकी समस्याओं, देखभाल और आनंद में सहभागी था। "वृद्ध मनुष्य" जैसा कि उनके कर्मचारी उन्हें प्यार से बुलाते थे, वह सेनेगल का एक महान पुत्र था।")

110. स्वयं परमेश्वर की तरह, पवित्र आत्मा को हमारे पूर्व कल्पित सांचे में नहीं ढाला जाएगा। परमेश्वर के एक भविष्यद्वक्ता ने, जिसे स्वर्ग की एक झलक दिखाई गई थी, उसने पवित्र आत्मा को *"......सिंहासन के सामने **सात** दीप जल रहे हैं। ये दीप परमेश्वर की **सात** आत्माएं हैं"* (प्रकाशितवाक्य 4:5)। एक अन्य भविष्यद्वक्ता ने उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया जो केवल परमेश्वर से आने वाले सात गुणों को प्रदान करता है: *"**प्रभु** की आत्मा, **बुद्धि** और **समझ** की आत्मा, **सम्मति** और **सामर्थ्य** की आत्मा, **ज्ञान** और **प्रभु के भय** की आत्मा .... ।"* (यशायाह 11:2)

111. जब पृथ्वी पर था, तब परमेश्वर के पुत्र ने अपने शिष्यों को प्रतिज्ञा दी थी, *".....**पवित्र आत्मा**, जिसे **पिता मेरे नाम** में भेजेगा, तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको स्मरण कराएगा"* (यूहन्ना 14:26)। ये शब्द उस पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं जो हमेशा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच में मौजूद रही है। पिता और पुत्र की तरह, पवित्र आत्मा एक व्यक्तिगत व्यक्तित्व है ("वह...)। पवित्र आत्मा के बारे में अधिक जानकारी के लिए, पाठ 16, 22, और 28 देखें। उससे भी बेहतर, पवित्र आत्मा की भूमिका पर बारीकी से ध्यान देते हुए बाइबल के धर्मपत्रों और प्रेरितों के काम को पढ़ें।

112. सुसमाचार लिपिबद्ध करते है पुत्र पिता से बात कर रहा है, "....अपने साथ मुझे उस महिमा से परिपूर्ण कर, जो संसार की उत्पत्ति **से पहले** मेरी थी और तेरे साथ थी। ....हे पिता, ...तूने संसार की सृष्टि **के पूर्व** ही मुझसे प्रेम किया है" (यूहन्ना 17:5, 24)। मीका 5:2; यशायाह 9:6 भी देखें। पवित्र आत्मा के लिए, उसके कई नामों में से एक "**सनातन** आत्मा" है। (इब्रानियों 9:14)

113. निर्गमन 20:22; इब्रानियों 12:25; लूका 3:22; 5:24; यूहन्ना 1:1-18; 3:16-19; 17:22; प्रेरितों के काम 5:3; 7:51: गलातियों 4:6; इत्यादि.

[114] अरबी भाषा में, अल्लाह शब्द, अपने मूल अर्थ में, अंग्रेजी शब्द परमेश्वर का अरबी समकक्ष है। चाहे उत्पत्ति 1:1 जैसे पुराने नियम के पद्य में है: "आदि में **परमेश्वर ने**.....," अथवा नए नियम के वचन में जैसे यूहन्ना 1:1: "आदि में वचन था; वचन **परमेश्वर** के साथ था और वचन **परमेश्वर** था।", अरबी भाषा में परमेश्वर के लिए सामान्य शब्द अल्लाह है, जिसका अर्थ परमात्मा है। यह समझना महत्पूर्ण है कि परमात्मा होने के व्यक्तिगत नाम है जिनके द्वारा वह चाहता है कि वह पहचाना जाए। "अल्लाह" परमेश्वर का उचित, व्यक्तिगत नाम नहीं है, हालांकि कई लोग ऐसा मानते हैं। न ही "परमेश्वर" यह उसका उचित, व्यक्तिगत नाम है, हालांकि कुछ ऐसा सोच सकते हैं।

पाठ 10 : एक विशेष रचना

[115] गिनीज, अल्मा ई. एबीसी ऑफ़ द ह्यूमन बॉडी। कॉर्पोरेट ऑथर: द रीडर्स डायजेस्ट असोसिएशन, 1987, पन्ना 22।

[116] गेट्स, बिल। द रोड अहेड। न्यूयॉर्क: पेंग्युइन ग्रुप, 1995, पन्ना 188।

[117] एक महान आध्यात्मिक सत्य को चित्रित करने के लिए, बाइबल मानव शरीर की सामंजस्यपूर्ण प्रणाली का वर्णन करती है: "उन्ही में समस्त देह अपनी सब संधियों द्वारा संयुक्त और सुगठित रहती है, तथा प्रत्येक अंग की उचित क्रिया-शीलता द्वारा अपनी वृद्धि करती, एवं प्रेम में अपनी उन्नति करती है" (इफिसियों 4:16)।

[118] ये विचार जॉन फिलिप्स की उत्पत्ति पर शानदार कॉमेंटरी से अनुकूलित है (फिलिप्स, जॉन। एक्सप्लोरिंग जेनेसिस। चिकागो: मुड़ी प्रेस, 1980)। **नोट**: पवित्रशास्त्र आत्मा, प्राण और शरीर के बीच में अंतर करता है. 1 थिस्सलुनीकियो 5:23; इब्रानियों 4:12-13; यूहन्ना 4:24 देखे।

[119] यह धारणा कि अदन-वाटिका इराक क्षेत्र में स्थित था यह उत्पत्ति 2:13-14 के भूगोल विद्या की जानकारी पर आधारित है। **नोट:** कुछ लोग अदन-वाटिका को स्वर्ग का उद्यान कहते हैं, यद्यपि पवित्रशास्त्र ऐसा नहीं करता। पृथ्वी के अदन वाटिका को आकाश के स्वर्ग से भ्रमित नहीं होना चाहिए।

[120] हेन्री, *मॅथ्यू*। *मॅथ्यू* हेन्री की कॉमेंट्री। ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: झोंडरवन, 1960, पन्ना 7।

[121] आदम (आदामा) यह मनुष्य के लिए इब्री शब्द है, शाब्दिक अर्थ लाल मिट्टी क्योंकि उसे जमीन से लिया गया। हव्वा (चव्वा) का अर्थ जीवन-"क्योंकि वह सभी जीवितों की माता बनी।" (उत्पत्ति 3:19-20)

पाठ 11 : बुराई का प्रवेश

122. *"ओ भोर के चमकते हुए तारे, ओ **उषा-पुत्र**, आकाश से तू कैसे नीचे गिर गया! अरे, तूने तो राष्ट्रों को धुल-धूसरित किया था। अब तू कैसे स्वयं भूमि की धुल चाट रहा है"* (यशायाह 14:12)। इस पद में, नाम उषा-पुत्र, का अर्थ **लूसिफर** है, जो इब्रानी मूलपाठ में नहीं पाया जाता। इब्रानी शब्द हेलेल का यह लातिनी अनुवाद है, जिसका अर्थ, चमकने वाला है। यशायाह 14 और यहेजकेल 28 दोहरी व्याख्या की व्यवस्था का एक उदाहरण प्रदान करते हैं। उपरी तौर पर, ये मार्ग सांसारिक राजाओं का उल्लेख करते हैं। यशायाह "बाबेल के राजा" को संबोधित करता है और यहेजकेल "सूर के राजकुमार" के बारे में लिखता है। फिर भी दोनों ही पद के कथन मात्र मनुष्यों पर लागू नहीं हो सकते। जब इन हवालों का अध्ययन अन्य हवालों के प्रकाश में किया जाता है (लूका 10:18; अय्यूब 1:6-12; प्रकाशितवाक्य 12:10; 1 पतरस 5:8; इत्यादि.), तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ये अंश इन दुष्ट राजाओं के पीछे भड़काने वाले और प्रभावित करने वाले शैतान के पतन पर टिप्पणी हैं।

123. प्रकाशितवाक्य 12:4

124. मत्ती 10:28; 23:33; मरकुस 9:43-48

125. प्रकाशितवाक्य 20:10-15

पाठ 12 : पाप और मृत्यु की व्यवस्था

126. एक सामान्य प्रश्न: शिशु और छोटे बच्चे जो मर जाते हैं तब उनका क्या होगा? क्या उनके जन्मजात पाप स्वभाव के लिए उनका न्याय किया जाएगा (भजन संहिता 51:5; 58:3)? धर्मी न्यायाधीश सही करेगा (उत्पत्ति 18:25)। वह किसी व्यक्ति की उस बात के लिए निंदा नहीं करता है जिसे वह समझने में अक्षम है। वह लोगों को उसके लिए जिम्मेदार ठहराता है जो वे जानते हैं और जान सकते थे यदि उन्होंने परमेश्वर के सत्य को खोजने का प्रयास किया होता (रोमियों 2:11-15; भजन संहिता 34:10; यशायाह 55:6)। मनुष्य नैतिक चुनाव करने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हो जाने पर परमेश्वर के समान जिम्मेदार ठहरता है (व्यवस्था विवरण 1:39; यशायाह 7:16; 2 शमूएल 12:23; मत्ती 18:10; 2 तीमुथियुस 3:14-17)। केवल परमेश्वर ही जानता है कि किस उम्र में एक व्यक्ति अपने पापों और विकल्पों के लिए जिम्मेदार ठहरता है। प्रकरण जो भी हो, हम में से प्रत्येक के लिए परमेश्वर का संदेश है: "देखो, **यही** है प्रसन्नता की बेला, **यही** है उद्धार का दिन!" (2 कुरिंथियों 6:2)

127. प्रकाशितवाक्य 20:14-15; 2:11; 21:8; मत्ती 25:46

पाठ 13 : दया और न्याय

इस पाठ में कोई सन्दर्भ नहीं है।

पाठ 14 : श्राप

128. "अजगर और बोआ कंस्ट्रीक्टर .....में पिंड समान पैर उनके त्वचा के नीचे है और छोटे, आधे-इंच के पंजे जो उस पिंड के ऊपर निकल आते है लेकिन वे गुदे के करीब उनके पेट के निकट चिपके रहते हैं। वास्तव में, पिंड भी ये पैर नहीं लेकिन कुछ हद तक ऊपर के-पैर के शेष भाग (जांघ अथवा जांघ की हड्डी) की हड्डियां हैं। नर अब भी स्पर्स का उपयोग करते है लेकिन केवल प्रेमालाप और लड़ाई के दौरान चलने के लिए नहीं। किसी और सांपों को पैर नहीं होते हैं।" http://usatoday30.usatoday.com/tech/column l st/apr l lholladay/2005-06-10-wonderquest_x.htm कुछ लोग इस जैविक तथ्य को अपने विकासमूलक परिकल्पना के समर्थन में करते हैं। यहां पर समझने वाली अहम् बात यह: सांपों की शरीर रचना हजारों साल पहले पवित्रशास्त्रों में दर्ज की गई बातों के अनुरूप हैं।

129. ये भी: प्रकाशितवाक्य 20:2; लूका 10:18 और 2 कुरिंथियों 11:3, 14: *"जैसे **साप ने हव्वा को धूर्तता से धोखा दिया**, वैसे ही **स्वयं शैतान** ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।"*

130. निर्गमन 29:7; 1 शमूएल 10:1; 2 राजाओं 9:6; भजन संहिता 45:7

131. पाठ 18 तीन कारण प्रस्तुत करता है कि क्यों परमेश्वर ने उसकी छुड़ाने की योजना गुप्त रखी। पवित्रशास्त्र का कालक्रम के अनुसार अध्ययन करने का एक आनंद पापियों को शैतान, पाप, और मृत्यु से छुड़ाने के लिए परमेश्वर की योजना के प्रकट होने वाले नाटक की खोज करना है। परमेश्वर ने, अपने ज्ञान में, अपनी योजना धीरे धीरे प्रकट की है, *"नियम पर नियम, कुछ यहां, कुछ वहां।"* (यशायाह 28:10)

132. हास्य चित्रकथा जिसका शीर्षक, "आप उसे बुद्धिमान कहे?" इसमे, टाइम पत्रिका बुद्धिमान रचनाकार (परमेश्वर) की कल्पना का अपमान करते है : "क्या वृद्धावस्था को अधिक सहजता और गरिमा के साथ नहीं सम्भाला जा सकता था? उदाहरण के लिए : क्या होगा अगर वृद्ध व्यक्ति झुर्रिया और निर्बल होने के बजाय, केवल काव्यात्मक रूप से फीके पड़ जाते हैं? (हैंडी, ब्रूस एंड ग्लिनिस स्विनी। टाइम, जुलाई 4, 2005, पन्ना 90) उसी के साथ, द बुक ऑफ़ द इम्प्रोबेबिलीटी ऑफ़ गॉड, उस अध्याय में जिसका शीर्षक नायदर इंटेलीजंट नॉर डिजाइन, स्पष्ट करता है : "क्या यह अत्यधिक मानव अहंकार से अधिक है जो इस तरह के ख़राब रचना वाले प्राणी के लिए बुद्धिमान रचना का प्रस्ताव करता है?" (ब्रूस और फ्रांसिस मार्टिन इन द द इम्प्रोबेबिलीटी ऑफ़ गॉड, मायकल मार्टिन और रिकी मोनिएर द्वारा। एमहर्स्ट, न्यूयॉर्क: प्रोमेथियुस बुक्स, 2006, पन्ना 220)

पाठ 15 : दोहरी मुसीबत

133. असोसिएटेड प्रेस, मई 20, 2006 http://forums.anandtech.com/ arch | ve/ | ndex. php/t-1869858.html

134. रस्मी शुद्धिकरण पुराने नियम के व्यवस्था का हिस्सा थी (लैव्यव्यवस्था देखे)। इसका उद्धेश्य यह था कि परमेश्वर के सम्मुख पापियों को उनकी आध्यात्मिक अशुद्धता दिखाना था। क्योंकि उसने मसीहा द्वारा संपूर्ण शुद्धता और धार्मिकता प्रदान की है, ऐसे अनुष्ठानों की अब परमेश्वर को आवश्यकता नहीं हैं। प्रेरितों के काम 10 और कुलुस्सियों 2 पढ़ें। आज के दिन तक, धर्म बाहरी शुद्धता पर जोर देती हैं। यह ई-मेल मुझे लन्दन में रहनेवाले एक मुस्लिम व्यक्ति से आया: "सभी गैर-मुस्लिम जिसमे मसीही भी शामिल हैं ये अशुद्ध हैं.... मुस्लिम लोग इतने शुद्ध और अल्लाह के करीब है क्योंकि वे शुद्धिकरण करते हैं....."

135. परमेश्वर ने मौखिक रूप से जब दस आज्ञाए दी थी (निर्गमन 20), उसने मूसा को ऊपर पर्वत पर बुलाया और उसे पत्थर की दो पट्टीयां दी जिस पर प्रभु ने स्वयं ही दस आज्ञाओं को लिखा (निर्गमन 24:12; 31:18)। *"पट्टियां परमेश्वर की कृति थी। जो लेख उन पट्टियों पर खुदा हुआ था, वह परमेश्वर का लेख था।"* (निर्गमन 32:16)

136. लूका 18:9-14; इफिसियों 2:8-9।

137. मसीहा ही है जिसने परमेश्वर की सारी व्यवस्था का पालन किया है और कह सकता है, *"हे परमेश्वर! मैं तेरी इच्छा को पूर्ण कर सुखी होता हूं। तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में है"* (भजन संहिता 40:8) । व्यवस्था उसकी ओर इशारा करती है। *"इस प्रकार मसीह के पास लाने के लिए व्यवस्था हमारी **संरक्षक रही** जिससे हम **विश्वास द्वारा** धार्मिक ठहरें"* (गलातियों 3:24)। मनुष्य के पाप के लिए परमेश्वर का समाधान रोमियों 3:20-27 में शक्तिशाली तरीके से रेखांकित किया गया है।

पाठ 16 : स्त्री का वंशज

138. *"जिस प्रकार आदम में सब मनुष्य **मरते** हैं, उसी प्रकार मसीह में सब **जीवित** किए जाएंगे"* (1 कुरिंथियों 15:22); रोमियों अध्याय 5; गलातियों 4:4-5 भी पढ़ें।

139. निओबर्थ प्रेग्नन्सी केअर सेंटर: www.neob | rth.org.za/development. html

140. "बेतलेहेम एप्राता" यरूशलेम की दक्षिण में स्थित शहर बेथलहम का पुराना नाम था (उत्पति 35:16-19; 48:7)। राजा दाऊद बैतलहम में जन्मा था (1 शमूएल 16:1, 18-19; 17:12), उसके महान वंशजों की तरह (मत्ती 2:1-6; लूका 2:1-12)। यीशु के दिनों में रहने वाले यहूदी भ्रमित थे क्योंकि वह नासरत, गलील में बड़ा हुआ था (यूहन्ना 7:41-42)।

141. बाइबल के सन्दर्भों के लिए, पाठ 5 में भविष्यवाणियों की सूचि देखें।

142. "मसीहा" अर्थ पर अधिक जानकारी के लिए पाठ 14 देखे, उपशीर्षक में: दो "वंशज"।

143. उत्पत्ति 1:2; परमेश्वर के पवित्र आत्मा को गेब्रियल के साथ न उलझाएं। स्वर्गदूत गेब्रियल एक सृजित जीव था। पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर का असृजित, सदा-सक्रीय आत्मा है। पाठ 9 और 28 देखें।

144. यीशु के जन्म के बाद, मरियम अपने पति युसुफ के साथ किसी भी सामान्य जोड़े की तरह रहती थी, और साथ में उनके पुत्र और पुत्रियां हुई (मत्ती 13:55-56; लूका 8:19; यूहन्ना 7:3-10)।

145. भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा एक कुंआरी से जन्म लेगा: यशायाह 7:14; वह अब्राहम, इसहाक, याकूब और यहूदा के पारिवारिक वंश से आएगा: उत्पत्ति 17:18-21; 26:3-4; 28:13-14; 49:8-10; वह राजा दाऊद के शाही वंश का होगा: 2 शमूएल 7:16; उसका जन्म बैतलहम में होगा: मीका 5:2।

146. मत्ती 2। हेरोदेस राजा अन्य "राजा" के जन्म के विचार से ईर्षालु था और बैतलहम और उसके आसपास के स्थानों में दो वर्ष और उससे छोटे सभी लड़कों का क़त्ल का आदेश दिया और इसके द्वारा यीशु को मार डालने का प्रयास किया। शैतान इन सबके पीछे था। उसका लक्ष्य स्त्री के वंश को नष्ट करना था, जिसने "उसके राज्य" पर आक्रमण किया था! हालांकि, परमेश्वर ने यूसुफ को चेतावनी देकर और मरियम और छोटे बालक को शरण के लिए मिस्त्र ले जाने का निर्देश देकर यीशु को मारने के शैतान के प्रयासों को रोक दिया। भविष्यद्वक्ताओं द्वारा इन घटनाओं को पहले से ही बताया गया था (मत्ती अध्याय 2; मीका 5:2; होशे 11:1; यिर्मयाह 31:15)। हेरोदेस राजा के मरने के बाद, यूसुफ, मरियम और यीशु नासरत को वापस आ गए जहां बालक यीशु मर्दानगी में बढ़ा।

पाठ 17 : यह कौन हो सकता है?

147. जय्युसी से लिया गया, सल्मा खाद्रा। टेल्स ऑफ़ जुहा। इंटरलिंक बुक्स। नॉर्थमटन, एमए, 2007, पन्ना 19।

148. यहां कुछ प्राचीन, गैर-बाइबल ऐतिहासिक लेखक हैं जिन्होंने नासरत के यीशु का उल्लेख किया: टासीटस, रोमन इतिहासकार (55-120 ईस्वी) [टासीटस 15:44]; जोसेफस, यहूदी इतिहासकार (37-101 ईस्वी) [एंटीक्विटिस 18:3]; द तालमुद, रब्बिनिकल कॉमेंटरी ऑन द तोरह [द बाबेलोनियन तालमुद। सन्हेद्रीन, 43अ]; एक यूनानी नाम लुसियन [द डेथ ऑफ़ पेरेग्वायर, पन्ने 11-13 इन द वर्क्स ऑफ़ समासोता, एच. डब्ल्यू. फौलर और एफ. जी. फौलर द्वारा अनुवादित, 4 संच, ऑक्सफोर्ड: क्लारेंडन प्रेस, 1949; सुटोनियस (ईसा पश्चात् 69-122), सम्राट हद्रियन का मुख्य सचिव [क्लौदीयस, 25]। **नोट:** जे. ओसवाल्ड सैंडर्स लिखते है: "यहां तर्क देना कि बाइबल का मसीह केवल मानवीय कल्पना की संतान है और कोई ऐतिहासीक वास्तविकता

नहीं थी, तो सुसमाचारों को साहित्य के क्षेत्र में उतना ही महान चमत्कार बना देना जितना कि इतिहास के क्षेत्र में जीवित मसीह। अर्नेस्ट रेनान ने टिप्पणी की कि एक यीशु का अविष्कार करने के लिए यीशु को ही लेना होगा। जे.जे. रुस्सेएउ ने तर्क दिया कि यह अधिक अकल्पनीय है कि इस तरह के इतिहास को लिखने के लिए बहुत से लोग सहमत हों, बजाय इसके कि कोई इसका विषय बनाए।" (सैंडर्स, जे. ओसवाल्ड। द इनकम्पैरेबल क्राइस्ट। मूड़ी प्रेस। चिकागो, 1971, पन्ना 57।)

149. मत्ती 13:55-56। यीशु नासरत में बड़ा हुआ (मत्ती 2:22-23; लूका 2:51-52), अपने क़ानूनी पिता, यूसुफ के साथ बढ़ई का काम करते हुए (मरकुस 6:3)। यीशु की दीनता ने उन्हें नाराज किया जिन्हें एक विजेता नायक चाहिए था, एक दीन सेवक नहीं।

150. अब यीशु ने लगभग तीस वर्ष की आयु में अपनी सेवकाई आरंभ की (जैसा कि माना जाता था) यूसुफ का पुत्र था .... ।" (लूका 3:23)

151. यीशु अक्सर अपने आपको "मनुष्य-पुत्र कहकर संबोधित करता था, एक मसीहा विषयक उपाधि जिसका अर्थ, "मानवता/मानवजाति का पुत्र" (यूनानी:ऐन्थ्रोपॉस)। क्या उपाधि है! फिर हमें वह पसंद हो या नहीं, हम सब "मानवजाति के पुत्र (रिश्तेदार) है। लेकिन परमेश्वर-पुत्र के गौरवान्वित प्रकरण में, उसने मनुष्य-पुत्र बनना और स्वयः को मानवजाति के साथ अपनी पहचान बनाना ***चुना***। इस प्रकार, यह उपाधि यीशु के ईश्वरत्व पर उतना जोर देता है जितना कि यह उसकी मानवता पर ज़ोर देता है, क्योंकि यह मानवता में परमेश्वर के व्यक्तिगत हस्तक्षेप की ओर इशारा करता है। दानिय्येल 7:13-14; मत्ती 8:20; लूका 5:24; 22:69-70; यूहन्ना 5:27; 13:31; प्रकाशितवाक्य 1:13-18; 14:14।

152. उदाहरण के लिए, पुराने नियम का यह पद जिसका यीशु ने उद्धरण दिया (लूका 4:4 में) यह मूसा के तौरात: व्यवस्था विवरण 8:3 से है।

153. मनुष्य के पाप के कारण, शैतान वास्तव में "इस संसार का शासक" और "वायुमण्डल का शासक और अधिपति" हुआ, और परमेश्वर की इच्छा न मानने वालों के बीच अब भी कार्य कर रहा है" (यूहन्ना 12:31; इफिसियों 2:2)। परमेश्वर का पुत्र आ गया कि मनुष्य का अधिकार फिर से पुनः स्थापित करे जो उसने पाप के द्वारा गंवाया था।

154. भजन संहिता 110 और भजन संहिता 2; मत्ती 21:41-46

155. कुरान 19:19; की तुलना 48:2; 47:19 के साथ करें

156. कुरान 19:19; 3:45-51; 5:110-112; 19:19

157. कुरान 4:171

158. इस्लाम में अंतिम पाप यह "शिर्क" है (अरबी भाषा में जोड़ना)। शिर्क किसी भी चीज़ या किसी

को भी खुदा के बराबर मानने का गुनाह है।

159. प्रतिज्ञा किए गए मसीहा को दी गई उपाधियों पर ध्यान दें: अद्भुत=यह उपाधि केवल परमेश्वर के लिए उपयोग की जाती है। इसका अर्थ है सामान्य से अलग। युक्ति करनेवाला= मसीहा यह ज्ञान का मूर्तिमान होगा। पराक्रमी परमेश्वर= परमेश्वर स्वयं मानवी शरीर धारण करेगा। अनंतकाल पिता= वह अनंतकाल का स्वामी होगा। शांति का राजकुमार=वह उन सबको प्रदान करेगा जो उस पर विश्वास करते है: परमेश्वर की शांति (रोमियों 5:1), दूसरों के साथ शांति (इफिसियों 2:14-18), भीतरी शांति (फिलिप्पियों 4:7), और अंत में, सार्वभौमिक शांति (पाठ 29 देखें)।

160. दाऊद भविष्यद्वक्ता ने मनुष्य के रूप में प्रभु के पृथ्वी पर आने की भविष्यवाणी की थी: "अत: मैंने कहा, *"देख **मैं आ गया हूं।** पुस्तक में **मेरे** विषय में यह लिखा है"* (भजन संहिता 40:7)। मलाकी ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर अपने दूत को अपने आगमन के पूर्व भेज रहा है। वह मेरे मार्ग को तैयार करेगा।" (मलाकी 3:1)

161. क्या हमारे स्तर तक नीचे आना परमेश्वर के प्रताप के अधीन है? कल्पना कीजिए आप और आपका मित्र दो आध्यात्मिक अगुवे, उमर और हारून के बारे में बात कर रहे हो। आपका मित्र कहता है, "हारून खिलौने की कारों से खेलता है, लेकिन उमर नहीं खेलता।" एक जिसे हारून के लिए बड़ा आदर है, आप उत्तर देते हो, "कभी नहीं! यह हारून ने कभी नहीं किया होगा कि खिलौने की कार से खेले!" शुरू में ऐसी प्रतिक्रिया उचित लगती है। फिर कहानी स्पष्ट होती है कि उमर और हारून दोनों के छोटे बेटे हैं जो अपने पिता के लिए फर्श पर उतरना और उनके खिलौने से खेलना पसंद करते हैं। अब क्या हुआ अगर हमें पता चला कि हारून अपने बेटे के साथ इस तरह से समय बिताकर खुश था, जबकि उमर ने ऐसा करने से इनकार कर दिया क्योंकि उसने इसे अपनी गरिमा के नीचे समझा? तो कौन उत्तम पिता होगा, मनुष्य और अगुवा, उमर अथवा हारून? इसी तरह, जब लोग कहते हैं, "सर्वशक्तिमान के महिमा से कम है कि वह एक आदमी के रूप में पृथ्वी पर प्रकट हो," उनके इरादे नेक हो सकते हैं, लेकिन परमेश्वर के प्रताप को बढ़ाने के बजाय, वे उससे खिलवाड़ कर रहे हैं।

162. यूहन्ना 13 बताता है यीशु अपने शिष्यों के पैर धो रहा है, एक सेवक का काम! सुसमाचार पढ़ना परम सेवक से मिलना है: स्वयं प्रभु।

163. मत्ती 14; मरकुस 6; यूहन्ना 6

164. यीशु जो मसीहा है अपने अनंत अस्तित्व की घोषणा कर रहा है। यदि वह केवल यह कहना चाहता कि वह अब्राहम से पहले अस्तित्व में था, तो उसने कहा होता, "*अब्राहम से पहले, मैं हूं*" के बजाय अब्राहम से पहले, **मैं था**। याव्हे के विषय में पाठ 9 देखें (निर्गमन 3;14)।

165. यीशु की आराधना करने वालों के लिए आराधना के लिए प्रयुक्त शब्द वही शब्द है जो परमेश्वर की आराधना के लिए प्रयुक्त होता है। (मत्ती 8:2 की तुलना प्रकाशितवाक्य 7:11 से करें। दोनों ही प्रकरणों में, आराधना के लिए यूनानी शब्द प्रोस्कुनेओ है, जिसका अर्थ 'उपासना, आराधना में स्वयं झुकना है।)

166. अगर आप अभी भी प्रमाणरहित धारणा से जकड़े रहेंगे कि बाइबल के साथ छेड़छाड़ की गई हैं, तो पाठ 3 फिर से पढ़ें, जिसका शीर्षक है: "भ्रष्ट या संरक्षित?"

167. लेवीस. सी.एस. मियर क्रिस्चियानिटी। न्यूयॉर्क: मॅकमिलन-कॉलियर, 1960, पन्ने 55-56।

168. परमेश्वर की जटिल एकता की समीक्षा के लिए, पाठ 9 फिर से पढ़ें।

169. कई लोग यीशु और अमीर युवा शासक की इस कहानी के दूसरे पहलू से चुक जाते हैं। वह व्यक्ति दौड़ता हुआ यीशु के पास आया और पूछा, "हे उत्तम गुरु, **अनन्त जीवन** पाने के लिए मैं क्या करू?" (मत्ती 19:16; मरकुस 10:17; लूका 10:25) भीड़ के लिए, युवा मनुष्य का प्रश्न उचित लगा, लेकिन प्रभु को नहीं। यीशु को पता था कि इस धर्मी मनुष्य ने परमेश्वर की अपार पवित्रता और मनुष्य की अत्यंत पापी अवस्था के बारे में मूलभूत सत्य को अभी ग्रहण नहीं किया है। इस स्वधर्मी मनुष्य ने सोचा था कि वह स्वर्ग में जाने के लिए उसके मार्ग को प्राप्त कर सकता है; कि वह किसी तरह से काफ़ी भला हो सकता है। वह एक बच्चे समान था जो पीतल के सिक्कों को गन्दे मुट्ठी में पकडे हुए संसार के सबसे संपन्न मनुष्य के सामने खड़ा था और उसे पूछ रहा था, "मैं आपको कितने दूं कि मैं आपकी जायदाद का वारिस हो सकू?" यीशु ने इस मनुष्य को कैसे उत्तर दिया? उसने उसे फिर से तौरात और दस आज्ञाओं की ओर वापस निर्देशित किया ताकि वह उसे दिखा सके कि वह कभी भी, अपनी शक्ति से पूर्ण धार्मिकता के परमेश्वर के स्तर को संतुष्ट नहीं कर सकता। उन लोगों के लिए "अनंत जीवन" नहीं है जो सोचते हैं कि वे कुछ "भली बातें" करने के द्वारा गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं।

170. यीशु ने यह भी कहा: *"तुम्हारा मन व्याकुल न हों।* ***परमेश्वर*** *पर विश्वास करो और* ***मुझ पर भी*** *विश्वास करो।* ***...मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता। ....जिसने मुझे देखा, उसने पिता को देख लिया।*** *फिर तुम कैसे कहते हो, "हमें पिता का दर्शन कराईए? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि* ***मैं पिता में हूं और पिता मुझे में?*** *जो मैं तुमसे कहता हूं, वह अपनी ओर से नहीं कहता, लेकिन मुझमे निवास करनेवाला पिता अपने कार्य कर रहा है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमे: और नहीं* ***तो इन कार्यों के कारण ही विश्वास करो।"*** (यूहन्ना 14:1, 6, 9-11)

171. यशायाह 53:1; यूहन्ना 12:38; लूका 1:51; यशायाह 40:10-11; 51:5; 52:10; 59:16; 63:5; यिर्मयाह 32:17 भी देखें।

[172.] जब परमेश्वर ने दो भविष्यद्वक्ताओं (एलियाह और एलीशा) को सक्षम किया कि मृत व्यक्ति को फिर से जीवन दे, तब किसी भी भविष्यद्वक्ता ने कभी भी जीवन का स्रोत होने का दावा नहीं किया। केवल यीशु ही कह सकता था, *"पुनरुत्थान और जीवन **मैं हूं**।"*

[173.] मसीहा पृथ्वी पर आने से पहले, वह स्वर्ग में था। वह तब था जब लूसिफर को वहां से निकाला गया था। इस प्रकार, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा: *"मैंने शैतान को बिजली के सदृश आकाश से गिरा हुआ देखा।"* (लूका 10:18)

पाठ 18 : परमेश्वर की अनंत योजना

[174.] इब्रानियों 11:6; यिर्मयाह 29:13; यशायाह 29:11; मत्ती 11:25; 13:13-14; लूका 8:4-15; यूहन्ना 6। परमेश्वर के कई सत्य कुछ पक्के अभिप्राय से अनिश्चितता के साथ प्रकट होते हैं, ताकि केवल वे ही जो उसके सत्य की खोज करते है वे उसे प्राप्त करेंगे। परमेश्वर लोगों को सुनने, समझने और विश्वास करने के लिए दबाव नहीं डालेगा। जो इच्छुक है उसके सत्य की खोज करेंगे। जो जानबूझकर अंधे है वे नहीं करेंगे।

[175.] क्या आपने ध्यान दिया कि कई भविष्यवाणियां भूतकाल में लिखी गई थीं, हालांकि वे घटना के सैकड़ों वर्षों पहले लिखी गई थीं? परमेश्वर की योजना विफल नहीं हो सकती। जब सृष्टिकर्ता कहता है कुछ तो घटेगा, तो उसका अर्थ है वह हो गया है। वह यह भी कि मसीहा को *"मेमना जो संसार की स्थापना से वध किया गया है"* कहते है। (प्रकाशितवाक्य 13:8)

[176.] भजन संहिता 2 पढ़ें, जो मसीहा के पहली बार पृथ्वी पर आने से 1000 वर्ष पहले लिखा गया है। पवित्रशास्त्र में कही ओर, मसीहा, उसका दूसरा आगमन (एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 29 में वर्णन किया है), स्वर्ग से गिरने वाले एक विशाल पत्थर के समान है। वह "पत्थर" उन सभी को "चूरकर चूर" कर देगा जिन्होंने उसके अधीन होने से इन्कार कर किया है (दानिय्येल 2:34-35; मत्ती 21:33-44)।

[177.] पतरस के अधिक वचनों के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 2-5; प्रेरितों के काम, 10; 1 पतरस 1:10-12; 2:21-25; 3:18 इत्यादी पढ़ें। प्रेरित पौलुस द्वारा लिखे गए इन वचनों पर भी विचार करे: *"जो विनाश के पथ पर है, उनके लिए **क्रूस का संदेश मुर्खता है**, किंतु हमारे लिए जो मुक्ति के मार्ग पर है, **वह परमेश्वर की सामर्थ्य है**। ....**परमेश्वर की दुर्बलता** मनुष्यों की शक्ति की अपेक्षा शक्तिमान है। ....परमेश्वर ने जगत के **निर्बलों** को चुना है कि वह बलवानों को लज्जित करे।"* (1 कुरिंथियों 1:18, 25, 27)

पाठ 19 : बलिदान की व्यवस्था

178. हाबिल को ये सब करना कैसे पता है? परमेश्वर ने उसे कहा था। इब्रानियों 11:4 हमें कहता है कि वह "विश्वास से" बलिदान लाया-विश्वास उसमे जो परमेश्वर ने आज्ञा दी थी और प्रतिज्ञा की थी। बाद में, पवित्रशास्त्र वैकल्पिक बलिदान के विषय में परमेश्वर के विस्तृत नियमों को प्रारूप में प्रदान करेगा, जिसे हाबिल ने आज्ञाकारिता में बहुत पहले प्रस्तुत किया था। उत्पत्ति 4:4 स्पष्ट करता है कि हाबिल ने उसके पशुओं (लैव्यव्यवस्था 5:6 देखें) से पहिलौठा (निर्गमन 13:12-13 से तुलना करा) मेमना लाया था, और उनका चर्बीयुक्त मांस चढ़ाया था (लैव्यव्यवस्था 3:16 देखें)। यह नहीं बताया गया है कि हाबिल ने अपना मेमना वेदी वर चढ़ाया कि नहीं, लेकिन यह सम्भव है कि उसने ऐसा ही किया होगा, जैसा उसके बाद आने वाले विश्वासियों ने किया। उत्पत्ति 8:20; 12:7; 13:4,18; 22:8-9; निर्गमन 20:24-26; लैव्यव्यवस्था 17:11; इत्यादि।

179. दानिय्येल 6; एस्तर 3:8-15; 8:7-17

180. स्ट्रोंग, जेम्स। द एक्झोस्टीव कॉनकॉर्डन्स ऑफ़ द बायबल। न्यूयॉर्क: अबिंगडन-कोक्सबरी प्रेस, 1948, पन्ना 57। उत्पत्ति 6:14 ("आच्छादन") की लैव्यव्यवस्था 5:18 ("प्रायश्चित्त") से तुलना करें। वही इब्रानी शब्द कफार (प्रायश्चित) इन वचनों में उपयोग किया गया है।

181. लैव्यव्यवस्था 5:7

182. 50 से अधिक बार पवित्रशास्त्र घोषित करता है कि बलिदान यह "निष्कलंक" रहना है। उदाहरण के लिए, *"यदि वह रेवड़ में से भेड़ अथवा बकरों की होमबलि चढ़ाता है तो उसे* ***निष्कलंक*** *नर पशु चढ़ाना होगा।"* (लैव्यव्यवस्था 1:10)

पाठ 20 : एक महान बलिदान

183. ईद-अल-अधा यह वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी छुट्टी है। यह उस घटना की ओर इशारा करता है जब परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र के स्थान पर बलि देने के लिए एक मेंढा प्रदान किया था। व्यापक रूप से फैले हुए मुस्लिम विश्वास अनुसार पुत्र जो बलि चढ़ाया गया था वह इश्माएल था, इसहाक नहीं-भले ही कुरान स्वयं यह कभी स्पष्ट नहीं करती कि वह इश्माएल था, लेकिन बाइबल स्पष्ट करती है कि वह इसहाक था। ईद का बलिदान संपूर्ण मुस्लिम जगत में मनाया जाता है। इसे मक्का यात्रा (हज) में अंतिम रस्म के रूप में भी किया जाता है। यात्री ईद की सबेरे की प्रार्थना के बाद पशु (सामान्य रूप से भेड़ या गाय) का लहू बहाकर हज को पूरा करते हैं। अधिकतर मुसलमानों का मानना हैं ये रस्म उन्हें एक प्रकार का "नया जन्म" प्रदान करता है और यदि उन्होंने इसे उचित ढंग से किया तो उनके पाप धुल जाते हैं। हालांकि, मुसलमान यह भी मानते है कि ये अनुष्ठान उद्धार का आश्वासन नहीं दे सकते क्योंकि हज और ईद के बलिदान के तुरंत बाद

वे ज्यादा पाप जमा करना शुरू कर देते हैं। बाइबल के दृष्टिकोण के लिए, इब्रानियों पाठ 10 और यूहन्ना अध्याय 3 पढ़ें।)

184. सबसे पहले, अब्राहम का नाम अब्राम था। जगह की कमी के कारण, कहानी के इस भाग को एक ही परमेश्वर एक ही संदेश में नहीं समझाया गया है। उत्पत्ति 17 देखें। अब्राहम की पूरी कहानी के लिए उत्पत्ति 11 से 25 पढ़ें; उसी तरह रोमियों 4, गलातियों 4 और इब्रानियों 11 भी पढ़ें।

185. व्यवस्था विवरण 7:6-7; 14:2

186. कुछ उदाहरण हैं जिनमे परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र का उपयोग किया कि गैर-यहूदी लोगों को आशीष दे: यूसुफ ने मिस्र देश के लाखो लोगों का जीवन बचाया (उत्पत्ति 37-50)। नाओमी, अब्राहम की पुत्री, दो मोआबी स्त्रियों, ओर्पा और रुत के लिए आशीष बनी (पुराने नियम में रुत की पुस्तक)। भविष्यद्वक्ता एलियाह सिदोन की विधवा के लिए आशीष था (1 राजाओं 17; लूका 4:26)। योना, भले ही अनिच्छापूर्वक, नीनवे शहर के लोगों को उद्धार का संदेश सुनाया (योना)। राजा सुलेमान अरब की रानी शबा देश के लिए आशीष बना (1 राजाओं 10; लूका 11:31)। दानिय्येल ने बेबिलोन के लोगों को आशीष दी (दानिय्येल 1-6)। एस्तर और मोर्दकै फारसी साम्राज्य के लिए आशीष लेकर आएं (एस्तर), इत्यादि।

187. उत्पत्ति 12:2-3; 22:16-18; इब्रानियों 6:13-20; यूहन्ना 4:22; प्रेरितों के काम 1–10, इत्यादि।

188. "विश्वास द्वारा अब्राहम ने, परीक्षा का अवसर आने पर, इसहाक को बलि चढ़ाया। उनसे प्रतिज्ञा की जा चुकी थी और कहा जा चूका था कि ***'इसहाक से तेरा वंश चलेगा,' तो भी वह अपने एकलौते पुत्र को अर्पित करने को तैयार हो गए; क्योंकि वह जानते थे कि परमेश्वर मृतकों तक को जीवित कर सकता है****, और एक अर्थ में इसहाक इस प्रकार उन्हें पुनः प्राप्त भी हो गए।"* (इब्रानियों 11:17-19)

पाठ 21 : ज्यादा लहू बहा

189. मैंने पुराने नियम में "बलिदान कहानियां" गिनना शुरू किया, लेकिन 200 वी कहानी पर पहुँचने के बाद मैंने गिनना बन्द कर दिया! चार शब्द: "लहू", "बलिदान," "अर्पण." और "वेदी" बाइबल में 1400 से भी अधिक बार पाएं जाते हैं।

190. उत्पत्ति 15:13-14 *"प्रभु ने अब्राम से कहा, 'निश्चयपूर्वक जान ले ली तेरे वंशज पराए देश में प्रवास करेंगे। वे वहां गुलाम बनकर रहेंगे। उन्हें* ***चार सौ वर्ष*** *तक दुःख सहना होगा। किंतु जो देश उन्हें गुलाम बनाएगा, उसे मैं दंड दूंगा।* ***इसके पश्चात् वे अपार सम्पत्ति के साथ वहां से निकल आएंगे।"*** परमेश्वर की प्रतिज्ञा का पूरा होना यह निर्गमन 1:1-12; 12:35-41 में अभिलिखित है

। परमेश्वर अधिपति है। उसकी योजना हमेशा ही पूरी होती है।

[191.] निर्गमन 5-11

[192.] कुछ समय पहले, सीनै पर्वत पर एक जलती हुई झाड़ी में से, परमेश्वर ने मूसा को प्रतिज्ञा दी थी: *"मैं तेरे साथ रहूंगा। मैंने तुझे भेजा है; इस बात का यह चिन्ह है: जब तू मेरे लोगों को मिस्त्र देश से बाहर निकाल कर लाएगा तब इस पर्वत पर मेरी, अपने परमेश्वर की, सेवा करना।"* (निर्गमन 3:12)

[193.] निर्गमन 13-17, *"प्रभु ने चट्टान को तोड़ा, और जल बहने लगा, निर्जल भूमि पर नदी दौड़ पड़ी!"* (भजन संहिता 105:41)

[194.] निर्गमन 28:9-19; बाद में, जब मसीहा पृथ्वी पर था, उसने कहा, *"मैं **द्वार** हू: जो मेरे द्वारा प्रवेश करेगा, वह **उद्धार** पाएगा"* (यूहन्ना 10:9)। तंबू में के प्रत्येक घटक उसके व्यक्तित्व और काम की ओर इशारा करते है।

[195.] *"वह अपने चढ़ावे के पशु के सिर पर **अपना हाथ रखेगा,** और मिलन-शिविर के द्वार पर उसको **बलि करेगा।** तब पुरोहित, हारून के पुत्र, **वेदी के चारों ओर लहू को छिड़केंगे।** ...हारून के पुत्र इसको वेदी की होमबलि की अग्नि के ऊपर राखी हुई लकड़ी पर **जलाएंगे।** ....."* (लैव्यव्यवस्था 3:2, 5)

[196.] तंबू ने उद्धारकर्ता का एक प्रकार का चित्र प्रस्तुत किया जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आएगा। वे जो सच में उस उद्धारकर्ता को जानते है, उनके लिए *"वह प्रत्येक दृष्टि में सुन्दर है"* (श्रेष्ठगीत 5:16), तंबू के भीतर के हिस्से की तरह। वे जो उसे नहीं जानते, *"वहां कोई सुन्दरता नहीं जिसे हम निहार सके"* (यशायाह 53:2-3)।, तंबू के बाहरी हिस्से की तरह।

[197.] आदम (अदाम) "मनुष्य" के लिए इब्रानी शब्द है और इसका शाब्दिक अर्थ "लाल मिट्टी," है क्योंकि परमेश्वर ने आदम के शरीर को भूमि की मिट्टी से बनाया था।

[198.] गिनती 3:23-39

[199.] लैव्यव्यवस्था 16; आज यहूदी लोग प्रायश्चित्त के दिन को योम किप्पुर कहते है, लेकिन यह दिन अपने मूल अर्थ से रहित है क्योंकि उनके पास मंदिर नहीं, याजकाई नहीं, और बलिदान का मेमना नहीं है। विडंबना यह है, यहूदी धर्म के प्रतीकों में से एक आज एक दीवार है (पश्चिमी दीवार; मंदिर पर्वत भाग को बढ़ाने के लिए हेरोदेस महान द्वारा निर्मित एक बनाई रखी दीवार)। यहूदी उसके सम्मुख रोज़ाना खड़े होकर मसीहा के लिए प्रार्थना करते है- जो पहले ही आ चूका है-आनेवाला है! भविष्यद्वक्ताओं द्वारा जैसे भविष्यवाणी की थी, यहूदी राष्ट्र की आंखे आध्यात्मिक रूप से बंद है (यशायाह 6:10; 53:1; यिर्मयाह 5:21; यहेजकेल 12:2; 2 कुरिंथियों 3:12-4:6)। एक दिन उनकी आंखे यह समझने के लिए खुल जाएगी कि यीशु (येशुवा) ही वह एकमात्र है जिसने मंदिर, याजकाई, और

बलिदान के प्रतीकों को पूर्ण किया है (इब्रानियों 8-10; इफिसियों 2)। आध्यात्मिक नेत्रहीनता की दीवार गिर जाएगी (इफिसियों 2:14; रोमियों 9-11)। उपशीर्षक के तहत इस पुस्तक में पाठ 5 देखें: लोगों के विषय नबुवतें। अंतिम टिप्पणियों को भी पढ़ें।

[200]. 2 इतिहास 3:1, की उत्पत्ति 22:2 से तुलना करो। यह उसी स्थान पर मुस्लिम लोगों ने 7वी शताब्दी में चट्टान मस्जिद का गुम्बज बनाया था।

[201]. इतिहास 7:5

पाठ 22 : मेमना

[202]. पवित्रशास्त्र में प्रभु की एक शीर्षक इम्मानुएल है, जिसका अक्षरशः अर्थ, *"परमेश्वर हमारे साथ (है)"*। (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23)

[203]. 2 कुरिंथियों 5;1-4; 1 कुरिंथियों 6:19; 2 पतरस 1:13-14; इफिसियों 2:21

[204]. यशायाह 40:3-9; मलाकी 3:1; लूका 1; यूहन्ना 1

[205]. संपूर्ण बाइबल में, जब भी किसी एक मनुष्य को परमेश्वर द्वारा याजक या राजा के रूप में चुना गया, एक अधिकृत व्यक्ति जैसे भविष्यद्वक्ता यह दिखाने के लिए उसका तेल से अभिषेक करेगा कि उसे एक विशिष्ट कार्य के लिए परमेश्वर द्वारा चुना गया था। परमेश्वर ने स्वयं पवित्र आत्मा से अपने पुत्र का अभिषेक किया। पवित्रशास्त्र में, तेल का उपयोग अक्सर पवित्र आत्मा के प्रतिक के रूप में किया जाता है। **नोट:** जिस प्रकार ईश्वरत्व के तीनों व्यक्ति सृष्टि के कार्य में सहभागी थे, उसी प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मुक्ति के कार्य में भी सहभागी थे।

[206]. *"धार्मिक जन **विश्वास द्वारा** जीवित रहेंगे"* (हबक्कूक 2:4)। जब बलिदान जो यीशु करने आया था वह *"संसार के पाप उठा ले जाने"* के लिए पर्याप्त होगा, इससे केवल उन लोगों को लाभ होगा जो मानते थे कि यीशु का बलिदान उनके लिए था। इस सच्चाई को सेनेगल में हमारे "धार्मिकता का मार्ग" रेडिओ कार्यक्रमों द्वारा चित्रित किया जा सकता है (www.twor.com; www.lesprophetes.com). कई प्रसारणों पर, श्रोताओं को पवित्रशास्त्र की एक मुफ्त प्रति प्रदान की जाती है। वे सभी जो लिखते और माँगते हैं, इसे नि:शुल्क प्राप्त करते हैं। क्या यह भेंट उन सभी लाखों लोगों के लिए मान्य है जो ट्यून इन करते हैं? जी हां। क्या सभी श्रोता हमें पवित्रशास्त्र की अपनी मुफ्त प्रति का अनुरोध करने के लिए लिखते हैं? नहीं। ज्यादातर इस पेशकश का लाभ नहीं उठाते हैं। उसी तरह, अपने पुत्र के सर्व-पर्याप्त बलिदान के द्वारा, परमेश्वर ने सभी लोगों के लिए क्षमा और अनंत जीवन प्रदान किया है। हालांकि, आदम की संतानों में से केवल कुछ थोड़े फीसदी लोग परमेश्वर की इस पेशकश का स्वीकार करते हैं। लूका 14:15-24 देखें।

पाठ 23 : पवित्रशास्त्र की पूर्ति

[207.] यशायाह 53; भजन संहिता 22। दानिय्येल 9:24-27 भी देखें, जो युगों के लिए परमेश्वर की योजना को रेखांकित करता है। इस कुल योजना का एक हिस्सा था: *"अभिषिक्त काटा जाएगा, और उसके पास कुछ नहीं रह जाएगा।"* (दानिय्येल 9:26)

[208.] मत्ती, अध्याय 21 से 25

[209.] धोखा दिया: भजन संहिता 41:9; जकर्याह 11:12-13 और मत्ती 26:14-16; 27:3-10 देखें।

[210.] जब यहूदी अपना वार्षिक फसह पर्व मना रहे थे, यीशु अंतिम और सिद्ध फसह पर्व का मेमना बन जाएगा, जो विश्वासियों को पाप के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बचाएगा। *"वास्तव में **हमारे फसह पर्व के मेमने, मसीह** का बलिदान हुआ है।"* (1 कुरिंथियों 5:7)

[211.] यूहन्ना रचित सुसमाचार, अध्याय 13 से 17।

[212.] यीशु ने उन लोगों से जो उसे पकड़ने आए थे, बस इतना ही कहा, *"मैं हूं"* था। वाक्यांश *"मैं वह हूं"* अंग्रेजी अनुवादकों ने इसका अनुवाद किया हैं, लेकिन शब्द *"वह"* यूनानी पाठ में नहीं पाया जाता। यीशु घोषित कर रहा था कि वह कौन है: अनंत स्वयं-अस्तित्व *"मैं हूं"* जो स्वर्ग से नीचे आया था। इसमे कोई आश्चर्य नहीं, इसलिए, कि जब यीशु ने उत्तर दिया, *"मैं हूं, "* तब धार्मिक गुरु और सैनिक पीछे हो गए और जमीन पर गिर पड़े।

[213.] *""मैंने रात के दर्शन में यह देखा: **आकाश के मेघों के साथ मानव-पुत्र के सदृश कोई आ रहा है"*** (दानिय्येल 7:13) / **नोट:** अपने वस्त्र फाड़ना अत्यंत शोक अथवा क्रोध दिखाने का एक प्रथागत मार्ग था। दिलचस्प रूप से, परमेश्वर ने मूसा को जो व्यवस्था दी थी वह स्पष्ट करती है, *"जो पुरोहित अपने पुरोहित-भाइयों में प्रमुख है,....वह अपने वस्त्र नहीं फाडेगा"* (लैव्यव्यवस्था 21:10)। इस कानून नुसार (मत्ती 27:65; मरकुस 14:63), कैफा ने स्वयं को महायाजक पद से अयोग्य ठहराया। नया शास्वत महायाजक स्वयं यीशु था जो बलिदान के रूप में अपने शरीर को चढाने के लिए पृथ्वी पर आया था। केवल वही एक है जो वास्तव में पापी मनुष्य को पवित्र परमेश्वर से मेल करा सकता है (इब्रानियों 2;17; 3:1; 4;14-16; 7:26; 8:1; 9:11, 25; 10:19-22)।

[214.] यूहन्ना 18:38; 19: 4, 6; यूहन्ना 19:15; लूका 23:21

पाठ 24 : पूरा चुकाया दाम

[215.] यदि आपने अभी तक एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 8 और 9, और 16 और 17 को नहीं समझा है, तो आपको यह कथन निंदनीय लग सकता हैं। मैंने कुछ लोगों को व्यंगात्मक ढंग से यह कहते हुए भी सुना है, "तो जब 'परमेश्वर' कुंवारी की गर्भ में था, और बाद में क्रूस पर,

तब विश्व की जिम्मेदारी कौन उठा रहा था?" यह प्रश्न पवित्रशास्त्र और परमेश्वर जिसने उसे दिया है उसका गलत दृष्टिकोण को दिखाता है। "यीशु ने उत्तर दिया और उन्हें कहा, *'तुम पवित्रशास्त्र से और परमेश्वर की सामर्थ्य से परिचित नहीं, इसलिए भूल में पड़े हो"* (मत्ती 22:29)। क्योंकि परमेश्वर सदैव एक जटिल त्रि-एकता में अस्तित्व में है, पृथ्वी पर और स्वर्ग में एक ही समय में होने से कोई समस्या नहीं होती है। यदि सूर्य एक ही समय बाह्य अंतरिक्ष में हो सकता है तो उसकी किरणे और गर्मी पृथ्वी पर हमारे साथ है, तो सूर्य का निर्माणकर्ता स्वर्ग में और पृथ्वी पर एक साथ क्यों नहीं हो सकता?

216. इब्रानी गुलगुता के लिए कलवरी (क्रैनियोन) यह यूनानी नाम है, जिसका अर्थ कपाल-स्थान (मत्ती 27:33; मरकुस 15:22; यूहन्ना 19:17)। यह टेकडी जहां यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, जो पुराने यरूशलेम के बाहर स्थित है और एक खुली खोपड़ी की तरह गोलाकार है, यह उसी पहाड़ी की चोटी का हिस्सा है जहां अब्राहम ने अपने पुत्र के एवज में मेंढा अर्पण किया था।

217. इतिहासकार जोसेफस ने सूचित किया है कि 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन के पहले, रोमन सैनिकों ने "प्रतिदिन पांच सौ यहूदियों को पकड़ा; नहीं, कुछ दिन उन्होंने ज्यादा लोगों को पकड़ा.... सैनिकों ने यहूदियों प्रति क्रोध में और द्वेष में आकर, जिन्हें उन्होंने पकड़ा था उन्हें किलों से क्रूस पर चढ़ाया था, एक के बाद एक, और अन्य लोगों के बाद अन्य लोगों को, क्रूस पर उपहास करने के तरीके से चढ़ाया जाता था; जब उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी, तो उस कमरे में क्रूसों की घटी और क्रूसों में लोथों की घटी थी।" जोसेफस ने यह भी लिखा कि पीड़ित व्यक्ति को "पहले कोड़े लगाए जाते थे, और फिर सभी प्रकार के अत्याचार से उत्पीडित किया जाता था।" (जोसेफस, एंटीक्विटिस, 11:1, पन्ना 563)

218. यहूदियों ने समय की गणना सुबह 6.00 बजे से की। "अब यह तीसरा पहर था (6.00+3 घंटे=9.00), और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया....अब जब छठा घंटा हुआ (12.00 दोपहर), तब वहां पर नौवें घंटे (15.00) तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा।" (मरकुस 15:25,33)

219. उत्पत्ति 8:20; 22:2-8; निर्गमन 29:18। वाक्यांश "होमबलि" पुराने नियम में 169 बार पाया जाता है। यीशु पाप के लिए अंतिम होमबलि बन गया। मरकुस 12:33; इब्रानियों 10:6-14। **नोट:** प्रभु यीशु जब क्रूस पर टंगे हुए थे तब परमेश्वर ने यीशु को क्यों त्याग दिया यह आगे समझने के लिए, यशायाह 53 और भजन संहिता 22 पढ़िए। उसी भजन संहिता में जहां दाऊद ने भविष्यवाणी की थी कि मसीहा यह कहेगा, *"मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"* (भजन संहिता 22;1), दाऊद हमें बताता है परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्यों त्याग दिया। ***"तू पवित्र है!"*** (भजन संहिता 22:3)। परमेश्वर ने यीशु से अपना मुंह मोड़ लिया, क्योंकि परमेश्वर पूर्ण रूप से पवित्र है और *"दुष्टता की ओर देख नहीं सकता"* (हबक्कूक 1;13)। अंधेरे के उन घंटों के दौरान,

निष्पाप मनुष्य का पुत्र दुष्टों के स्थान पर दुःख उठा रहा था जो परमेश्वर ने उस पर लाद दिए थे जैसे कि वह पापी था। यीशु, परमेश्वर का पवित्र मेमना, पाप-उठानेवाला हो गया (पापी हुए बिना)। एक गीतकार ने इसे अच्छी तरह से व्यक्त किया है: "यह सब रहस्यमय है! अमर्त्य मर जाता है! कौन उसकी अनोखी योजना का पता लगा सकता है?" (अमेझिंग लव, चार्ल्स वेस्ली, 1707-1788)

220. इदरशेइम, अल्फ्रेड। द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ़ जीजस द मसीहा। 1883, पन्ना 614।

221. इब्रानियों 9 और 10 पढ़ें। **नोट:** एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 22 में जैसे स्पष्ट किया गया है, परमेश्वर की महिमा, जो कभी तंबू और मंदिर के परम पवित्र स्थान में वास करती थी, अब परदे के पीछे नहीं थी। वह यीशु में थी।

222. यूहन्ना 19:31-37; निर्गमन 12:46; भजन संहिता 34:20; जकर्याह 12:10; 13:6

पाठ 25 : मृत्यु पराजित हुआ

223. मत्ती 28; मरकुस 16; लूका 24; यूहन्ना 20-21; 1 कुरिंथियों 15। **नोट:** बहुत से लोग यीशु के पुनरुत्थान का खंडन करने के लिए निकल पड़े थे, उन्होंने पुस्तकों को इस भारी प्रमाण की घोषणा करते हुए समाप्त कर दिया है कि यीशु वास्तव में मृतकों में जीवित हो उठे थे। उदाहरण के लिए, मॉरीसन, फ्रैंक। हु मूव्ड द स्टोन? ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: झोंडरवन, 1987; मॅकडॉवेल, जोश। एविडंस दयाट डिमांड्स अ वर्डिक्ट। नैशविले, टीएन: थॉमस नेल्सन, इंक., 1993; स्ट्रोबेल, ली। द केस फॉर ख्राइस्ट। ग्रैंड रैपिड्स, एमआय: झोंडरवन, 1998।

224. यीशु ने केवल यही नहीं कहा था कि वह "**तीसरे दिन** जी उठेगा," (मत्ती 16:21) लेकिन उसने यह भी कहा था, "जैसे योना तीन दिन और तीन रात एक बड़े मछली के पेट में था, उसी प्रकार मनुष्य-पुत्र **तीन दिन और तीन रात** पृथ्वी के भीतर में रहेगा" (मत्ती 12:40)। कई समझदार तर्क देते हैं कि अगर यीशु को शुक्रवार की रात में कब्र में रखा गया था और केवल रविवार सुबह तक कब्र में था, तो यह पूरे तीन दिन नहीं है। हालांकि, जिस अवधि के दौरान यीशु को कब्र में लेटना था, उसे एक पूर्ण संख्या में व्यक्त किया गया है, बोलने के यहूदी तरीके के अनुसार, जो एक के किसी भी हिस्से को चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, पूरे दिन के रूप में माना जाता था (उदाहरण, मत्ती 27:63-64; उत्पति 42:17-18; 1 शमूएल 30:12-13; एस्तेर 4:16-5:1)। यहां पर और एक मुद्दा है: पवित्रशास्त्र में यह नहीं कहा गया है कि यीशु को शुक्रवार को क्रूस पर चढ़ाया गया था। जबकि बहुत से लोग तुरंत चिल्लाते है "विरोधाभास"। बाइबल में ऐसे स्पष्ट "विरोधाभासों" को हल करने के लिए कई अच्छी व्याख्याएं हैं।

225. प्रेरितों के काम 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16

226. प्रेरितों के काम 5:41 *"वे इस बात से आनंदित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम*

उसके नाम के लिए अपमानित होने के योग्य तो ठहरे।" पतरस को कारागार में डाला गया और पीटा गया: प्रेरितों के काम 5; साथ ही प्रेरितों के काम 12। यीशु ने शहीद के रूप में पतरस की मृत्यु की भविष्यवाणी की: यूहन्ना 21:18-19।

227. कुछ हवाला देते हैं जो यीशु ने एक गैर-यहूदी स्त्री से कहा था, *"इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया!"* (मत्ती 15:24), लेकिन वे आपको यह नहीं बताते कि यीशु ने उसकी पुत्री को स्वस्थ किया! (यीशु की सेवकाई और गैर-यहूदियों पर करुणा के अधिक उदाहरणों के लिए, देखें मत्ती 12:41-42; 21:33-43; लूका 9:51-55; 10:30-36;17:11-19; यूहन्ना 4; 1 यूहन्ना 2:1-2; लूका 24:45-48.)

228. भजन संहिता 68:18; 110:1; भजन संहिता 24

229. [यीशु] *वह पापों को धोकर उंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा* ***बैठा"*** क्योंकि "उसने हमें हमारे पापों से शुद्ध किया" (इब्रानियों 1:3)। *"हर एक याजक* ***खड़े होकर*** *प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार-बार चढ़ाता है। परन्तु यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा* ***बैठा****"* (इब्रानियों 10:11-12)। इब्रानियों 8:1; 12:2; प्रकाशितवाक्य 3:21 भी देखें।

पाठ 26 : धर्मनिष्ठ और परमेश्वर से दूर

230. याकूब 2:18; मत्ती 5:13-16; इब्रानियों 11

231. जब परमेश्वर सरकारों को अपने लोगों के अधिकार की रक्षा करने देता और उन्हें जिम्मेदारी देता है कि उनकी "तलवार" "परमेश्वर के सेवक, उन पर क्रोध व्यक्त करे जो बुराई का आचरण रखते है" के रूप में उपयोग करे इसकी मान्यता देता है (रोमियों 13:1-4; उत्पत्ति 9:6), परमेश्वर के सत्य को फैलाने के लिए हिंसा का उपयोग यीशु के उदाहरण और शिक्षा के पूर्ण विरोध में है, जिसने कहा, *"तुमने सुना है कि कहा गया था, 'अपने पडोसी से प्रेम करना और अपने शत्रु से द्वेष रखना।' किंतु मैं तुमसे कहता हूं:* ***अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे द्वेष करते हैं, उनकी भलाई करो और जो तुम्हे श्राप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो। जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो।*** *जिससे तुम अपने पिता की, जो स्वर्ग में है, सन्तान बन सको; क्योंकि वह दुर्जन और सज्जन दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, तथा धार्मिक और अधार्मिक दोनों पर वर्षा करता है। यदि तुम केवल उन्ही से प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते है तो तुम्हें क्या फल मिलेगा? क्या कर लेने वाले पापी यह नहीं करते? यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन-सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्य जाति के लोग ऐसा नहीं करते?"* (मत्ती 5:43-47)। इसके विपरीत, कुरान कहती है: *"युद्ध करो किताब वालों में से उन लोगों के विरुद्ध जो अल्लाह और अंतिम दिन*

पर ईमान नहीं लाते और जो कुछ अल्लाह और उसके रसूल ने अवैध ठहराया है उसे अवैध नहीं करते और सत्य धर्म को अपना धर्म नहीं बनाते। (उन से लड़ो) *यहां तक कि वे अपने हाथ से रक्षा-कर दे और छोटे बनकर रहे।"* (कुरान, सूरा 9:29)

232. *"जो संदेश तुमने आरंभ से सुना है वह यह है, "**हम एक दूसरे से प्रेम करें।"** और **कैन** के सदृश न बनें जो शैतान से था और जिसने अपने भाई की हत्या की। **उसने क्यों हत्या की? इस कारण कि उसके कार्य दुष्टतापूर्ण थे और उसके भाई के कार्य धार्मिक थे**"* (1 यूहन्ना 3:11-12) । दो प्रभावकारी शक्तियां जिन्होंने कैन को प्रेरित किया कि हाबिल की हत्या करे वे शैतान और ईर्ष्या थी (मत्ती 27:18 से तुलना करे)।

233. प्रश्न पूछनेवालों की उत्कृष्ट चुनौतियों का सामना कैसे करे: *"कैन को उसकी पत्नी कहां से प्राप्त हुई?"* उत्पत्ति 5 उत्तर प्रदान करता है। आदम और हव्वा के और *"पुत्र और पुत्रियां"* हुई (उत्पत्ति 5:4)। जाहिर है, कैन ने अपनी एक बहन से विवाह किया था। इससे अब तक अनुवांशिक रूप से कोई हानिकारक प्रभाव उत्पन्न नहीं किया। बाद में, परमेश्वर ने इस प्रकार के रिश्तेनातों में विवाह करने का अंकुश लगा दिया। और हाबिल की हत्या करने के बाद क्या हुआ? हाबिल का शरीर धुल में लौट आया, लेकिन उसका प्राण और आत्मा स्वर्ग गए, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसके पापों से क्षमा किया था और उसे उसके विश्वास के आधार पर धर्मी घोषित किया था। इब्रानियों 11:4

234. मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने नूह के दिनों विश्व-व्यापी बाढ़ और भूवैज्ञानिक उथल-पुथल का वर्णन किया है: उत्पत्ति 7-8; भजन संहिता 104:6-8; अय्यूब 22:16; मत्ती 24:37-39; 2 पतरस 2:5-6।

पाठ 27 : चरण 1 : परमेश्वर की पिछली योजना

235. किसी न किसी रूप में, बाइबल का प्रत्येक भाग तीन विषयों में एक से संबंधित है: परमेश्वर ने क्या किया है परमेश्वर क्या कर रहा है, परमेश्वर अभी और क्या करेगा धार्मिक दृष्टि से, पवित्रशास्त्र के इन तीन विषयों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है: न्यायीकरण=आप जब सुसमाचार पर विश्वास करते हो, परमेश्वर आपको आपके **स्थान** में पूर्ण रूप से धर्मी घोषित करता है (रोमियों 3-5)। पवित्रीकरण=अब जब आप धर्मी ठहराए गए हो, तो परमेश्वर आपके **आचरण** में धार्मिकता का जीवन व्यतीत करने के लिए आपका सहायक है (रोमियों 6-8 और 12-15)। महिमामय होना=स्वर्ग में आप आपके स्थान और आपके आचरण दोनों में **पूर्ण रूप से धर्मी** होंगे। (प्रकाशितवाक्य 21-22)

236. रिचर्डसन, डॉन। लॉर्ड्स ऑफ़ द अर्थ। ऑक्सनार्ड, सीए: रीगल बुक्स; 1977, पन्ने 354। (डॉन, रिचर्डसन द्वारा और एक उत्कृष्ट कॅनीबल-कनवर्जन कहानी के लिए पढो: पीस चाइल्ड। ऑक्सनार्ड, सीए: रीगल बुक्स; 1975।)

[237] प्रेरितों के काम 26:9-11; 7:58-60; 8:1-3; 9:1-2

[238] प्रेरितों के काम 9:1-31; उसी के साथ प्रेरितों के काम, अध्याय 11; 13-14; 16-28। प्रेरितों के काम में, अध्याय 22 और 26 में, पौलुस उसके परिवर्तन की कहानी बताता है। गलातियों 1:13, 23; फिलिप्पियों 3:6; 1 कुरिंथियों 15:9 इत्यादि., भी देखें।

[239] बाइबल के शब्दों में एक "संत' वह है जो परमेश्वर के लिए अलग किया गया है; जिसे ईश्वर ने क्षमा और धार्मिकता के मार्ग में विश्वास के माध्यम से पवित्र घोषित किया गया है। कुछ मृत लोगों को "अलग संचयित" करने और इस तरह उन्हें "संत" बनाने की मानव निर्मित परंपरा बाइबल की शिक्षाओं के पूरी तरह से विपरीत है (देखें व्यवस्था विवरण 33:2-3; भजन संहिता 30:4; नीतिवचन 2:8; दानिय्येल 7:21-27; मत्ती 27:52; प्रेरितों के काम 26:10; इफिसियों 1:1, 2:19, इत्यादि)।

पाठ 28 : चरण 2 : परमेश्वर की वर्तमान योजना

[240] अधिकांश लोगों को इस बात का एहसास नहीं होता हैं कि जब वे सुरक्षा के लिए इस तरह के तरीकों का इस्तेमाल करते हैं तो वे दुश्मन का पक्ष ले रहे होते हैं। व्यवस्था विवरण 18:10-14; यशायाह 47:13; प्रेरितों के काम 19:19; गलातियों 5:19-21

[241] 1 यूहन्ना 2:1; यूहन्ना 14-16

[242] पाठ 1 में, हमने अहमद का एक ई-मेल उद्धृत किया है जो उसने लिखा था: "....आपकी बाइबल में, मूल बाइबल में, और पुराने नियम में भी, मुहम्मद (पीबीयुएच) के आने की भविष्यवाणियां हैं, अब भी "अहमद जिस प्रमुख अनुच्छेद का उल्लेख कर रहा था उनमे से एक यूहन्ना 14 से16 है।

[243] पिन्तेकुस्त का अर्थ पचासवा। यह पुराने नियम का उत्सव था जिसमे इस्राएली लोग परमेश्वर को उसके आशीष के लिए धन्यवाद देते हैं (लैव्यव्यवस्था 23:16)। आरंभ से, परमेश्वर ने इस दिन परम आशीष को भेजने की योजना बनाई थी: उसका पवित्र आत्मा।

[244] 1 कुरिंथियों 12:27; इफिसियों 4:21; 5:25-32; प्रकाशितवाक्य 19:7-9; 22:17; यूहन्ना 3:29

[245] 1 यूहन्ना 1:8-10; 2:1-2; रोमियों 6-8

[246] जिस क्षण आप अपने गलत विचारों से पश्चाताप करते हैं और प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं जो आपके पापों के लिए मर गया और फिर से जी उठा, आपने "यीशु का बपतिस्मा" लिया हैं (रोमियों 6:3), पानी से नहीं (जो बाद में होता है), लेकिन पवित्र आत्मा से (रोमियों 6:1-5; प्रेरितों के काम 1:5; 1 कुरिंथियों 12:13)। "यीशु का बपतिस्मा लेने" का अर्थ "उसके साथ एक हो जाना, समरूप होना"। जब आप विश्वास करते हैं, तो आप परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बन जाते हैं, जो उन सभी से बने हैं जो उसके निष्पाप पुत्र के साथ "एक साथ जुड़ गए हैं" (रोमियों 6:5)। आपका नया,

अनंत स्थान "मसीह में है।"

[247.] प्रेरितों के काम 24:15; लूका 14:14; यूहन्ना 5:28-29; दानिय्येल 12:2; प्रकाशितवाक्य 20:6, 11-15; प्रकाशितवाक्य 22:12

[248.] 2 कुरिंथियों 5:10। पवित्र शास्त कम से कम पांच विशेष मुकुटों (ट्राफियों /पुरस्कारों) के बारे में बात करता है जो विश्वासी प्राप्त कर सकते हैं: 1 कुरिंथियों 9:25; 1 पतरस 5:4; याकूब 1:12; 1 थिस्सलुनीकियों 2:19-20; 2 तीमुथियुस 4:8। ये मुकुट हमारी महिमा के लिए नहीं, बल्कि उसके लिए होंगे (प्रकाशितवाक्य 4:10)। प्रभु किसी भी अच्छे काम को नहीं भूलेगा जिसे उसके छुडाए हुए लोगों ने उसके नाम और उसकी महिमा के लिए किया है (मत्ती 10:41-42; इब्रानियों 6:10)।

[249.] शेख, बिल्कीस। आय डेअर्ड टू कॉल हिम फादर। न्यू यॉर्क: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1978; पन्ना 53।

[250.] 1 यूहन्ना 2:27; यूहन्ना 4:14; 14:26; 16:13; यिर्मयाह 31:33-34; इफिसियों 4:21

[251.] यांत्रिक रूप से प्रार्थना करना और वास्तव में परमेश्वर से जुड़ने और हमारी प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर के उत्तर प्राप्त करने के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। रोमियों 8:26-27; इफिसियों 6:18; 1 यूहन्ना 5:14-15; यूहन्ना 14:13-14; 15:7; फिलिप्पियों 4:6-9

[252.] रोमियों 12; 1 कुरिंथियों 12; इफिसियों 4

[253.] 2 कुरिंथियों 3:18; फिलिप्पियों 1:6; 3:20-21

पाठ 29 : चरण 3 : परमेश्वर की भविष्य की योजना

[254.] अब से कुछ पन्नों के बाद हम पुराने नियम के कई पदों को पढ़ेंगे जिसमे भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहा के पृथ्वी पर दूसरे आगमन की भविष्यवाणियां की हैं और उन घटनाओं का वर्णन किया हैं जो उसकी वापसी के साथ होंगी। जिन कुछ अनुच्छेदों पर हम विचार करेंगे वे यह है: जकर्याह, अध्याय 14, दानिय्येल 7:13-14, भजन संहिता 72 और यशायाह 9:6-7

[255.] 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; 1 कुरिंथियों 15:51-58

[256.] उपशीर्षक के तहत पाठ 28 देखें: न्याय के दो दिन।

[257.] इफिसियों 5:27 और आसपास के पदों को पढ़े। एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 10 में इस विस्मयकारक विषय पर ध्यान दिया गया है। पवित्रशास्त्र प्रभु को "दूल्हा" और उसके लोगों को उसकी "दुल्हिन" के रूप में लगातार चित्रित करता है। विवाह, अपने आदर्श रूप में, हमें घनिष्ठ, आध्यात्मिक संबंध का एक हल्कासा विचार देने के लिए बनाया गया था, जिसे प्रभु परमेश्वर अनंत काल तक अपने लोगों के साथ आनंद लेने की योजना बनाता है (यशायाह 54:5; 62:5; भजन संहिता 45; श्रेष्ठगीत; होशे 2:16, 19, 20; मत्ती 9:15; 25:1-13; यूहन्ना 3:29; 2 कुरिंथियों 11:2-3; इफिसियों

5:22-33; प्रकाशितवाक्य 21:2, 9; 22:17)।

258. मत्ती 24:21; प्रकाशितवाक्य 7:14; महा संकट का सबसे पूर्ण वर्णन यह प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 से 19 में पाया जाता है।

259. रोमियों 11:26-27। **नोट:** यह घटना उत्पत्ति 37-45 में यूसुफ की कहानी में पहले से चित्रित है। अद्भुत समानता!

260. 1 कुरिंथियों 15:45-47; रोमियों 5:12-21। एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 16 में भी शब्द जैसे "पहला आदम" और "अंतिम आदम" उल्लिखित किए गए हैं। जिस तरह आदम के पाप ने सभी लोगों को मौत के घाट उतार दिया, उसी तरह यीशु की धार्मिकता और बहाया गया लहू उन सभी के लिए अनंत जीवन सुनिश्चित करता है जो विश्वास करते हैं।

261. 2 थिस्सलुनीकियो 1:7-10; प्रकाशितवाक्य 19: 6-14; यहूदा 14; जकर्याह 14:5

262. यशायाह 53:7; यूहन्ना 1:29; प्रकाशितवाक्य 5:5; 2 थिस्सलुनीकियों 1:5-10; यूहन्ना 3:17-18; 12:47; दानिय्येल 9:24-27; यशायाह 53 की तुलना जकर्याह 14 से करें। इन संदर्भो में "दुःख सहना" और "महिमा" के बीच के अंतरों पर भी ध्यान दें: लूका 24:25-26; 1 पतरस 1:10-12; इब्रानियों 2:9; फिलिप्पियों 2:5-11; भजन संहिता 22; इत्यादि।

263. भजन संहिता 72 का शीर्षक यह है: सुलैमान का भजन।" ऐसा प्रतीत होता है कि सुलैमान ने इस भजन को लिखा था, यद्यपि यह इस कथन के साथ समाप्त होता है: "यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुई" (भजन संहिता 72:20)। यह पद भजन संहिता की पुस्तक में पाए जाने वाले पांच खंडो में से दूसरे खंड के अंत का संकेत देता है। दाऊद इस दूसरे खंड का प्राथमिक लेखक था।

264. किसे हमेशा के लिए दोषी ठहराया जाएगा? "**कायर** [और] **अविश्वासी**," इसका अर्थ, वे जिन्होंने परमेश्वर के संदेश पर कभी भी विश्वास नहीं किया क्योंकि वे डरते थे कि उनके परिवार और मित्र क्या कहेंगे अथवा करेंगे। यीशु जब यहां पृथ्वी पर था, उसने अपने सुनने वालों को सरल रूप से चेतावनी दी थी, *"उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते है, पर आत्मा को नहीं मार सकते, वरन उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। ....यह न समझो कि मेरे आगमन से पृथ्वी पर शांति होगी। नहीं, मैं शांति नहीं, वरन विभाजन की तलवार चलवाने आया हूं। मैं आया हूं कि पुत्र को उसके पिता के, पुत्री को उसकी माता के और बहु को उसकी सांस के विरुद्ध कर दूं। मनुष्य के शत्रु उसके घर के लोग ही होंगे। जो पुत्र अपनी माता या पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा शिष्य बनने के योग्य नहीं; जो पिता अपने पुत्र या पुत्री को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा शिष्य बनने के योग्य नहीं।"* (मत्ती 10:28, 34-37)

पाठ 30 : स्वर्ग का पूर्वदर्शन

[265.] मत्ती 13:24-30। यीशु का यह दृष्टांत घोषणा करता है कि भलाई और बुराई का मिश्रण यह केवल एक सीमित समय तक रहेगा।

[266.] प्रकाशितवाक्य के पहिले अध्याय का शेष भाग प्रभु यीशु का अद्भुत-प्रेरणा देने वाला वर्णन प्रदान करता है, अधिकांश पुस्तकों, फिल्मों और धर्मो में देखे गए उनकी तुलना में आश्चर्यजनक रूप से भिन्न चित्रण।

[267.] मरकुस 3:14-19; यूहन्ना 19:26-27; यूहन्ना ने बाइबल की निम्नलिखित पुस्तकें लिखी: यूहन्ना रचित सुसमाचार; 1 यूहन्ना; 2 यूहन्ना; 3 यूहन्ना और प्रकाशितवाक्य।

[268.] जास्पर पत्थर बहुत से रंगों में होता हैं। कार्नेलियन पत्थर या सामान्य रूप से निर्मल लाल है। प्रकाश के संपर्क में आने पर इसका रंग गहरा हो जाता है।

[269.] देखो सिंहासन पर कौन है। यशायाह 6 (यशायाह का दृष्टांत, जो एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 15 में भी प्रस्तुत किया है) की तुलना यूहन्ना 12:36-41 से करें।

[270.] उत्पत्ति 12:2-3; मत्ती 1। (परमेश्वर की अब्राहम को प्रतिज्ञा के बारे में अधिक जानकारी के लिए, एक ही परमेश्वर एक ही संदेश के पाठ 20 की समीक्षा करें।)

[271.] उदाहरण के लिए, सिंड्रेला की उत्कृष्ट परिकथा, जो पहले चीन में बताई गई थी, यूरोप, अमरीका, फारस, इराक, मिस्र, कोरिया, भारत आदि के संस्करणों में भी आती है। प्रत्येक देश का अपना संस्करण है, लेकिन विषय समान हैं। दुनिया भर के लोगों के दिलों में छुटकारे और अनंत जीवन की लालसा अंतर्निहित है। सुलैमान ने लिखा: *"वस्तुतः परमेश्वर ने हर एक काम का समय निश्चित किया है, और प्रत्येक काम अथवा प्रत्येक वस्तु अपने नियत समय पर ही सुंदर लगती है। उसने मनुष्य के ह्रदय में अनादी-अनंत काल का ज्ञान भरा है, फिर भी मनुष्य यह भेद जान नहीं पाता है कि परमेश्वर ने* ***आदि से अंत तक*** *क्या कार्य किया है।"* (सभोपदेशक 3:11)

यात्रा पर चिंतन करना

विचार-विमर्श मार्गदर्शिका
अध्याय समीक्षा प्रश्न

इस खंड के प्रश्नों को पवित्रशास्त्र के माध्यम से आपकी यात्रा से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में आपकी सहायता करने के लिए रचे गएँ हैं। क्या आप भविष्यद्वक्ताओं के मुख्य संदेश को समझते हैं? क्या आप उस संदेश पर विश्वास करते हैं? क्या आप दूसरों को परमेश्वर की कहानी और संदेश दोबारा सुनाने के लिए तैयार हैं? इस अंतिम खंड के माध्यम से सोचने से आप इन प्रश्नों का उत्तर स्पष्टता और आत्मविश्वास के साथ दे सकते हैं।

आप स्वतंत्र रूप से पाठों के समीक्षा प्रश्नों की नक़ल कर सकते हैं। उनका उपयोग व्यक्तिगत प्रतिबिंब या छोटे समूह का अध्ययन, कक्षाओं, जेलों, घरों या पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में किया जा सकता है।

"हे परमेश्वर मुझे परख........और मुझे शास्वत मार्ग पर ले चल!"

— भविष्यद्वक्ता दाऊद (भजन संहिता 139:23-24)

पाठ 1

सच्चाई मोल लेना

1. संसार भर में 10,000 धर्मों के साथ, क्या सत्य को त्रुटि से अलग करना संभव है? अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण साझा करें। (पन्ने 6-7)

2. बाइबल इतिहास में सबसे अधिक बिकनेवाली और सबसे अधिक अनुवादित पुस्तक है। आपकी राय में, यह इतनी लोकप्रिय क्यों है? (पन्ना 7)

3. कुरान बाइबल के शास्त्रों के बारे में तीन बातें कहती है उन्हें बताओ। (पन्ना 9 -10)

4. किसी व्यक्ति पर सुरक्षित रूप से भरोसा करने से पहले आपको उसके बारे में क्या जानने की आवश्यकता है? परमेश्वर पर भरोसा करने से पहले आपको उसके बारे में क्या जानने की आवश्यकता है? (पन्ना 10)

5. क्या आपको लगता है कि यह निश्चित रूप से जानना संभव है कि आप अनंत काल कहां व्यतीत करेंगे? अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। (पन्ने 15-16)

आपके अपने शब्दों में

नीतिवचन 23:23 को समझाइए। *"सच्चाई को बेचना नहीं, वरन उसको खरीदना; बुद्धि, शिक्षा और समझ को मोल लेना।"* (पन्ने 6, 16)

पाठ 2

बाधाओं को पराजित करना

1. “आप देखते हैं, लेकिन आप निरिक्षण नहीं करते” ऐसा शेर्लोक होल्म्स ने डॉ. वैट्सन से कहा। “देखना” और “निरिक्षण” करने के बीच क्या अंतर है? (18-19)

2. संसार की सबसे अधिक बेचीं जानेवाली पुस्तक को पढ़ने के लिए समय न निकालने के लिए सुशिक्षित लोग तीन बहाने दे सकतें हैं। क्या आप सोचते हैं कि इन बहानों में कोई भी वैध हैं? (17-29)

3. क्या बाइबल के संदेश को मानने का दावा करने वाले कुछ लोगों की शर्मनाक जीवनशैली के कारण उसे अस्वीकार करना बुद्धिमानी हैं। (19-20)

4. तीन मार्गदर्शिका सिद्धांतों के नाम बताएं जो लोगों को बाइबल समझने में सहायता कर सकते हैं। (27)

5. एक या दो कारण दीजिए कि बाइबल में पुराना नियम और नया नियम क्यों है। (27-29)

आपके अपने शब्दों में

होशे 4:6 को समझाइए। *“मेरे निज लोग ईश्वरीय ज्ञान के अभाव में नष्ट हो गए।”* (17)

पाठ 3

भ्रष्ट या संरक्षित?

1. कुरान के अनुसार, परमेश्वर ने कौनसे उद्देश्य से पवित्रशास्त्र (तौरात, भजन संहिता, सुसमाचार) को मानवजाति को प्रकट किया? (31)

2. कौनसे तीन विचारों को-उत्तेजना देनेवाले प्रश्न आप किसी ऐसे व्यक्ति से पूछ सकते हैं जो दावा करता है कि बाइबल को गलत साबित किया गया है? (32-34)

3. कई विद्वान् बाइबल को इतिहास में सबसे अच्छा प्रलेखित पाठ मानते हैं। क्या आप सहमत हैं? अपनी स्थिति स्पष्ट करें। (35-37)

4. बाइबल हस्तलिखित और बाइबल अनुवाद के बीच क्या अंतर है? (37-38)

5. दो अथवा तीन सच्चे कारणों के नाम बताईएं जिसके लिए मनुष्य बाइबल को नजरंदाज करते हैं। (39-41)

आपके अपने शब्दों में

लूका 16:31 को समझाइए। *"जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते तो यदि कोई मृतकों में से जी उठे तो वे उसकी भी नहीं सुनेंगे।"* (40-41)

पाठ 4

विज्ञान और बाइबल

1. बाइबल में हजारों वर्ष पूर्व उद्‌घोषित तीन वैज्ञानिक तथ्यों के नाम लिखिएं जिनकी हाल की सदियों में आधुनिक विज्ञान द्वारा पुष्टि की गई हैं। (43-45)

2. क्या बाइबल में अंध विश्वास या बुद्धिमान विश्वास की आवश्यकता है? अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। (45)

3. इतिहास और पुरातत्व कैसे बाइबल की सटीकता की पुष्टि करते हैं? (46-48)

4. कुरान की चुनौती जो सूरा 2:23 में प्रस्तुत की गई है वह क्या साबित करती है? स्पष्ट कीजिए। (49-50)

5. क्या विज्ञान, पुरातत्व, और कविता अपने आप में एक कथित “पवित्र पुस्तक” को परमेश्वर का उत्प्रेरित वचन साबित कर सकते हैं? अपनी स्थिति का बचाव करें। (48-50)

आपके अपने शब्दों में

अय्यूब 38:4 को समझाइए। *“जब मैंने पृथ्वी की नींव डाली थी तब तू कहां था? यदि तू स्वयं को समझदार समझता है तो तू मेरे इस प्रश्न का उत्तर दे।”* (42)

पाठ 5

परमेश्वर का हस्ताक्षर

1. क्या हम आश्वस्त हो सकते हैं कि बाइबल अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जो घोषणा करती है वह सही है? स्पष्ट कीजिए। (51-52, 59)
2. नबुवतें जो बाइबल में पाए जाने वाली भविष्यवाणियां और जादूटोना करने वालों, ज्योतिषियों और माध्यमों द्वारा की गई भविष्यवाणियों में क्या अंतर है? (52)
3. एक बाइबल भविष्यवाणी के बारे में बताएं कि धर्मनिरपेक्ष इतिहास सटीक रूप से पूरा होने की पुष्टि करता है। (52-58)
4. बाइबल में भविष्यवाणी का क्या उद्देश्य है? (59)
5. पूरी हुई भविष्यवाणियां किस प्रकार "परमेश्वर का हस्ताक्षर" है? (51-52, 59-60)

आपके अपने शब्दों में

यूहन्ना 13:19 को समझाइए। "इस घटना के घटने से पूर्व मैं तुम्हें बता रहा हूं, जिससे जब यह घटित हो, तो तुम विश्वास करो कि मैं हूं।" (59)

पाठ 6

सुसंगत गवाही

1. आपकी राय में, एक मनुष्य की गवाही सत्य को सिद्ध करने के लिए अपर्याप्त क्यों है? (62)

2. परमेश्वर के बारे में कौनसी दो "गवाहियां" हर जगह सभी लोगो को दी गई हैं? (62)

3. उन दस लोगों के नाम बताइएं जिनका परमेश्वर ने मानवजाति के लिए अपना संदेश लिखने में इस्तेमाल किया। (63)

4. एक गवाह की विश्वसनीयता कैसे परखी जा सकती है? (65)

5. हम एक सच्चे भविष्यद्वक्ता को झूठे भविष्यद्वक्ता से कैसे अलग कर सकते हैं? (66-70)

आपके अपने शब्दों में

मत्ती 7:15-17 पर टिप्पणी करें। *"झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान! वे तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं, पर भीतर से वे फाड़ खानेवाले भेड़िए हैं। उनके कामों से तुम उन्हें पहचान पाओगे। .... इस प्रकार अच्छे पेड़ में अच्छे फल लगते हैं और बुरे पेड़ में बुरे फल।"* (66)

पाठ 7

नींव

1. यीशु के पहाड़ी उपदेश में, बुद्धिमान मनुष्य और मुर्ख मनुष्य के बीच क्या अंतर था? इमारत के लिए –और विश्वास के लिए नींव क्यों महत्वपूर्ण है? (71-72)

2. उत्पत्ति की पुस्तक (अर्थात आरंभ) जीवन के कई महान रहस्यों के उत्तर प्रदान करती है। जीवन के कुछ सबसे बड़े प्रश्न क्या हैं? (72)

3. जब हम एक कहानी बताते है, तो हम कहां से आरंभ करते है? क्यों? (73)

4. किस तरह से परमेश्वर के प्रकट सत्य की तुलना वनस्पति और भ्रूणों से की जा सकती है? (73-74)

5. लेबनान में लेखक के मित्र ने जब स्वयं के लिए बाइबल का अध्ययन किया तो उसे क्या पता चला? (75)

आपके अपने शब्दों में

यशायाह 55:9 में परमेश्वर की घोषणा को सारांशित करें। *"पृथ्वी से जितना दूर आकाश है, उतने ही दूर मेरे मार्ग से तुम्हारे मार्ग हैं; उतने ही तुम्हारे विचार मेरे विचारों से दूर हैं।"* (76)

पाठ 8

परमेश्वर कैसा है

1. आपकी राय में, क्यों अपनी पुस्तक के पहिले अध्याय में, परमेश्वर अपने अस्तित्व को सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं करता है? (80-82)

2. स्वर्गदूत क्या हैं और परमेश्वर ने उन्हें क्यों बनाया है? (84)

3. परमेश्वर एक कैसे हो सकता है, फिर भी एक समय में एक से अधिक स्थानों पर हो सकता है? (83, 85-87)

4. परमेश्वर के व्यक्तित्व और चरित्र के बारे में हमें कुछ जानना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है? (88)

5. परमेश्वर के छः चारित्रिक लक्षणों (विशेषताओं) की सूचि बनाइए जिन्हें उसने सृष्टि के छ: दिनों में प्रदर्शित किया। (88-94) इन छ: गुणों में से, क्या कोई ऐसा गुण है जिसके लिए आप आज विशेष रूप से धन्यवादी हैं? क्यों?

आपके अपने शब्दों में

भजन संहिता 33:9 को समझाइए। *"क्योंकि प्रभु ने कहा, और वह हो गया; उसने आज्ञा दी, और वह स्थित हो गया।"* (90)

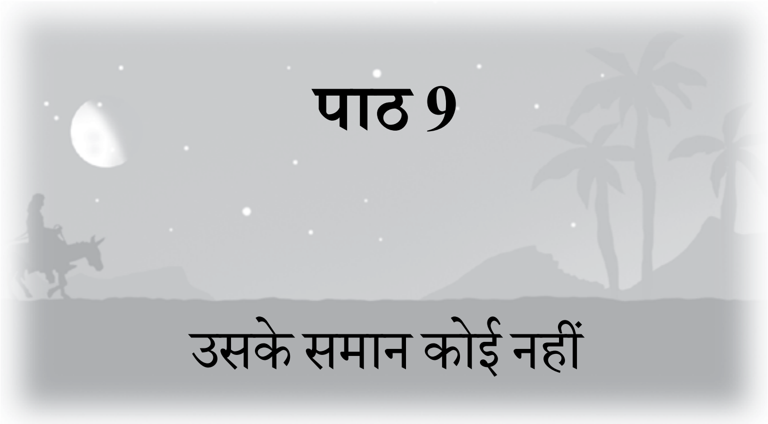

पाठ 9

उसके समान कोई नहीं

1. उत्पत्ति के पहले अध्याय में, परमेश्वर, जो एक है, बहुवचन सर्वनाम "हम" और "हमारे" के साथ अपना परिचय देता है। आप इसके लिए सबसे अच्छी व्याख्या क्या मानते हैं? (95-98)

2. क्या रोजमर्रा की जिंदगी से तीन-एक-एकता हमारे निर्माता की जटिल प्रकृति को बेहतर ढंग से समझने में हमारी मदद कर सकती है? स्पष्ट करें। (99-100)

3. "परमेश्वर-पुत्र" पद का क्या अर्थ नहीं है? (102-104)

4. पवित्र आत्मा के बारे में तीन बातें बताएं जो पवित्रशास्त्र प्रकट करता है। (104-105)

5. परमेश्वर की बाइबल की परिभाषा लोकप्रिय अवधारणा से अलग कैसे है कि परमेश्वर एक अज्ञात शक्ति है? (107-109)

आपके अपने शब्दों में

भजन संहिता 9:10 को समझाइए। *"प्रभु, तेरे नाम को जानने वाले तुझ पर भरोसा करते हैं; क्योंकि तू उन लोगों को नहीं छोड़ता है, जो तुझको खोजते हैं।"* (107)

पाठ 10

एक विशेष रचना

1. पहला पुरुष और स्त्री को "परमेश्वर के स्वरूप में" रचा गया। तीन मानवी गुणों के नाम बताओ जो इसकी पुष्टि करते हैं। (110-111)

2. परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को किस "वस्तु" से बनाया? उसने पहले मनुष्य को किससे बनाया? (111)

3. दो महान उद्धेश्य बताएं जिसके लिए परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की। (108, 118-120)

4. वे कौनसे दो अतिवादी दृष्टिकोण हैं जो स्त्रियों का अनादर करते और मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना के विरुद्ध जाते हैं? (116)

5. सृष्टि के सातवे दिन का क्या महत्त्व है? (120-121)

आपके अपने शब्दों में

यूहन्ना 8:35 को समझाइए। *"गुलाम सदा घर में नहीं रहता, पर पुत्र सदा रहता है।"* (119)

पाठ 11

बुराई का प्रवेश

1. परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था वह पूर्ण रूप से भला था। तो फिर शैतान और पाप कहां से आया? (122-123)

2. परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता पाप की बहुत सारी स्पष्ट व्याख्याएं प्रदान करते हैं। इन में से एक व्याख्या का हवाला दें और फिर व्यक्तिगत कहानी के साथ इसे स्पष्ट करें। (123-124)

3. बाइबल में नरक को चित्रित करने के लिए किस शब्द-चित्र का प्रयोग उपयोग किया गया है? (125)

4. शैतान का एक ही उद्देश्य क्या है? (125-126)

5. यदि मनुष्य भले और बरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाए , तो परमेश्वर ने क्या कहा की होगा? (126) शैतान ने क्या कहा कि क्या होगा? (128)

आपके अपने शब्दों में

याकूब 2:19 को समझाइए। "क्या तुम्हारा विश्वास है कि परमेश्वर एक है? बहुत ठीक, लेकिन दुष्टात्माएं भी तो यही विश्वास करती हैं और थर-थर कांपती है।" (130)

पाठ 12

पाप और मृत्यु की व्यवस्था

1. कौनसा शब्द मृत्यु का सबसे अच्छा वर्णन करता है? एक टूटी हुई शाख इसे कैसे दर्शाती है? (133)

2. परमेश्वर ने आदम से कहा, "क्योंकि जिस दिन तुम उनका फल खाओगे, तुम मर जाओगे" (उत्पत्ति 2:17)। जिस दिन आदम ने वर्जित फल खाया, उस दिन उसकी मृत्यु किस प्रकार हुई? (134, 136)

3. आदम के पाप का आप पर और आपके परिवार पर क्या प्रभाव पड़ा है? (134-136)

4. आदम के एक पाप के परिणामस्वरूप मानवजाति में फैली तीन प्रकार की मृत्यु के नाम लिखिए। किस प्रकार की मृत्यु सबसे भयानक होती है? (134-137)

5. पाप किस प्रकार लज्जा उत्पन्न करता है? (137-138)

आपके अपने शब्दों में

यहेजकेल 18:20 में वर्णित पाप और मृत्यु की व्यवस्था को समझाइए। *"केवल पाप करनेवाला प्राणी ही मरेगा।"* (140)

पाठ 13

दया और न्याय

1. मनुष्य क्या कर सकता है जो परमेश्वर नहीं कर सकता? (141)

2. अदालत के काल्पनिक दृश्य में, न्यायाधीश की दया ने किस प्रकार न्याय का खंडन किया? (142-143)

3. परमेश्वर दया दिखाने के लिए न्याय की उपेक्षा क्यों नहीं कर सकता? (143-145)

4. परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रश्न क्यों किया जब वह पहले से जानता था कि उन्होंने क्या किया है? (146)

5. पाप और मृत्यु के मार्ग पर मानवजाति का ले जाने के लिए परमेश्वर ने आदम को क्यों जिम्मेदार ठहराया? (146-147)

आपके अपने शब्दों में

भजन संहिता 89:14 को समझाइए। *"धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के मूल हैं; करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती हैं।"* (143)

पाठ 14

श्राप

1. "सांप" का क्या महत्त्व है और परमेश्वर ने उसे क्यों श्राप दिया? (148-149)

2. प्रतिज्ञा किया हुआ "स्त्री का वंशज" कौन है? इस शब्द के बारे में क्या अनोखा है? (150)

3. अभिशाप ने हमारी दुनिया को प्रभावित करने के कुछ तरीकों का नाम बताइए। (151-152)

4. क्या दुःख, मुसीबते, और मृत्यु परमेश्वर की सृष्टि के लिए उसकी मूल योजना का सामान्य हिस्सा हैं? समझाइए। (151-153)

5. आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, वें लज्जित हुए और उन्होंने अपने लिए अंजीर के पत्तों का आवरण बना लिया। क्या परमेश्वर ने उनके स्वयं-प्रयास को स्वीकार किया? अपनी लज्जा को ढांपने के लिए परमेश्वर ने उन्हें क्या प्रदान किया? (153)

आपके अपने शब्दों में

उत्पत्ति 3:21 में दर्शाया गए "अनुग्रह" का अर्थ समझाएं। *"प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी को चमड़े के वस्त्र बनाकर पहिनाए।"* (153-154)

पाठ 15

दोहरी मुसीबत

1. यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम अपने बारे में सही नज़रियां रखें? (158-159)
2. यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के बारे में सही नज़रियां रखें? (159-160)
3. आपने दस आज्ञाओं में से कितनी आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन किया है? (161-162)
4. उदाहरण के लिए एक दर्पण का उपयोग करते हुए, दस आज्ञाओं का प्राथमिक उद्देश्य की व्याख्या करें। (163-164)
5. परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य की "दोहरी मुसीबत" क्या है? (166-167)

आपके अपने शब्दों में

याकूब 2:10 को समझाइए। *"यदि कोई संपूर्ण व्यवस्था का पालन करे पर एक धारा का उल्लंघन कर जाए तो उसने समस्त व्यवस्था के प्रति अपराध किया।"* (163)

पाठ 16

स्त्री का वंशज

1. यह क्यों आवश्यक है कि मसीहा एक स्त्री से जन्म ले, लेकिन एक पुरुष से नहीं? (168-170)

2. पवित्रशास्त्र ने मसीहा को "अंतिम आदम" और 'दूसरा आदम" कहकर क्यों संबोधित किया यह समझाइए। (171)

3. आनेवाले मसीहा के बारे में भविष्यद्वक्ताओं ने कम से कम पांच बातों के बारे में भविष्यवाणियां की हैं उनके नाम बताएं। (172; पन्ने 57-58 भी देखें)

4. गब्रीएल ने मरियम से कहा कि उसके नवजात बच्चे को "परमेश्वर का पुत्र" कहा जाएगा। लूका 1:26-37 (पन्ना 173), फिर से पढ़ें, पन्ने 102 और 104 की समीक्षा करें (अध्याय 9), और फिर अपनी संक्षिप्त व्याख्या दें कि क्यों यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है।

5. "यीशु" नाम का अक्षरशः अर्थ क्या है? (174)

आपके अपने शब्दों में

लूका 2:10-11 को समझाइए। *"स्वर्गदूत ने उनसे [चरवाहों से] कहा, 'डरो मत। देखो, मैं तुम्हें बड़े आनंद का शुभ संदेश सुनाता हूं। यह आनंद का समाचार सब लोगों के लिए होगा। 'आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया है; यही प्रभु मसीह है।"* (176-177)

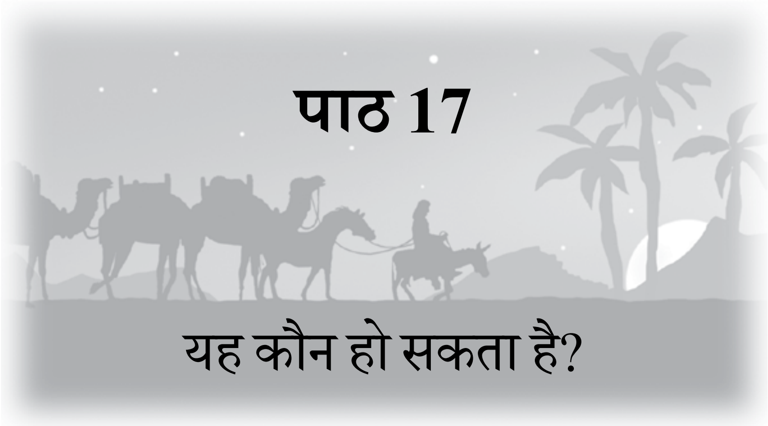

पाठ 17

यह कौन हो सकता है?

1. मसीहा सभी अन्य मनुष्यों से कैसे भिन्न था? (178-180)
2. यहूदी धार्मिक अगुवों ने यीशु को पत्थरवाह करने का प्रयास क्यों किया? (185, 190, 192)
3. क्या आप उनसे सहमत हैं जो यह कहते हैं कि यीशु "एक भविष्यद्वक्ता से अधिक और कुछ नहीं"? क्यों अथवा क्यों नहीं? (191, 183)
4. यीशु के कार्य उसके वचन को किस प्रकार से वैध ठहराते है? (193-194)
5. क्या आप सहमत हैं कि धार्मिक अगुवों से अधिक दुष्टात्माओं ने यीशु को अधिक आदर दिखाया? अपने विचार का समर्थन करें। (194-195)

आपके अपने शब्दों में

मत्ती 22:42 में यीशु के प्रश्न का उत्तर दें। *"मसीहा के विषय में तुम क्या सोचते हो? वह किसका पुत्र है?"* (182-185)

पाठ 18

परमेश्वर की अनंत योजना

1. किस प्रकार आप भविष्यद्वक्ताओं से अधिक सौभाग्यशाली हो? (196)
2. आप किसी के बच्चे को कैसे समझाएंगे कि किसी चीज़ या किसी व्यक्ति को “छुड़ाने” का क्या अर्थ है? (198-199)
3. भविष्यद्वक्ता दाऊद ने मसीहा के बारे में भविष्यवाणी की हुई दो प्रमुख घटनाओं के नाम लिखिए। (200)
4. वोलोफ कहावत, “एक अंडे को चट्टान से नहीं लड़ना चाहिए”? इससे हम क्या महत्वपूर्ण सबक सीख सकते है? (201)
5. परमेश्वर की छुटकारे की योजना का कौनसा भाग समझने में पतरस असफल रहा था? (202-203)

आपके अपने शब्दों में

गलातियों 4:4-5 को समझाइए। *“लेकिन जब समय पूरा हुआ तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। वह एक नारी से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ जिससे वह व्यवस्था के अधीन लोगों को मोल लेकर छुडाए और हम परमेश्वर के पुत्र बनें।”* (198)

पाठ 19

बलिदान की व्यवस्था

1. आदम और हव्वा ने अपने पहले बच्चे के जन्म के कुछ ही समय बाद किस अप्रिय सच्चाई का पता लगाया? (204-205)

2. दो मुख्य कारण बताइए कि परमेश्वर ने हाबिल और उसकी भेंट को स्वीकार किया। परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को अस्वीकार करने के दो मुख्य कारण बताए। (207-209)

3. क्या आप जानते हैं कि आप अपने पापों को मिटाने के लिए क्या कर सकते हैं? प्रार्थनाओं और भले कामों से पाप-कर्ज चुकाना क्यों असंभव है? (209-210)

4. परमेश्वर को सभी पापों को दंड देना चाहिए। क्या पापी को दंड दिए बिना पाप को दंडित करने का परमेश्वर के पास कोई तरीका था? (210-211)

5. समझाएं कि किस प्रकार बलिदान की व्यवस्था ने पाप और मृत्यु की व्यवस्था को "पराजित" कर दिया। (210-212)

आपके अपने शब्दों में

"प्रायश्चित्त" की व्याख्या कीजिए और लैव्यव्यवस्था 17:11 में मूसा को परमेश्वर ने दिए हुए पद को समझाएं। *"क्योंकि जानवर का प्राण लहू में रहता है। मैंने तुम्हें लहू इसलिए दिया है कि तुम उसको अपने प्राणों के प्रायश्चित्त के लिए वेदी पर चढाओ। लहू में प्राण होने के कारण ही उससे प्रायश्चित्त होता है।"* (210-211)

पाठ 20

एक महान बलिदान

1. परमेश्वर ने अब्राहम से एक महान राष्ट्र बनाने और उसके वंशजों को कनान देश देने की प्रतिज्ञा की। अब्राहम के परिस्थिति में कौनसे दो घटक थे जिसने इन दो प्रतिज्ञाओं को असंभव प्रतीत किया? (214)

2. परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी क्यों घोषित किया? “परमेश्वर में विश्वास” करने का क्या अर्थ है? (215)

3. उन तरीकों का नाम बताइए जिनमे परमेश्वर ने अपनी सच्चाई और आशीषों को इस्राएल के प्राचीन राष्ट्र के माध्यम से सभी राष्ट्रों तक पहुंचाया। (218)

4. परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि वह अपने पुत्र इसहाक को होमबलि के रूप में बलिदान करे। क्या अब्राहम ने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर ने अपना वादा (इसहाक के वंशजों से एक महान राष्ट्र उत्पन्न करे) तोड़ा है? समझाएं। (219=220; अंतिम नोट #188 भी देखें)

5. अब्राहम का पुत्र वेदी पर क्यों नहीं मरा? (220-222)

आपके अपने शब्दों में

उत्पत्ति 22:14 के बारे में अपनी समझ व्यक्त करें। *“अब्राहम ने उस स्थान का नाम, ‘प्रभु देखता है’ रखा। इसलिए आज तक यह कहा जाता है, ‘प्रभु पहाड़ पर दर्शन देगा।’”* (222)

पाठ 21

ज्यादा लहू बहा

1. फसह पर्व की कहानी में, किस तरह से मिस्र देश भर में हर घर में मौत देखी गई? (225)
2. दो महत्वपूर्ण पाठों के नाम बताएं जो परमेश्वर ने लोगों को मिलापवाले तंबू से सीखने के लिए दिए थे। (226)
3. वाचा का संदूक क्या दर्शाता था? (227)
4. एक बार जब मिलाप का तंबू पूरा हो गया, तो परमेश्वर ने स्वर्ग से क्या भेजा? (229)
5. परदे का उद्देश्य क्या था? (228) क्या मनुष्य के लिए परदे के पार जाने और परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का कोई मार्ग था? समझाइए। (231)

आपके अपने शब्दों में

इब्रानियों 9:22 को समझाइए। *"बिना लहू बहाए पाप की क्षमा नहीं।"* (223)

पाठ 22

मेमना

1. परमेश्वर की पुस्तक का प्रमुख विषय क्या था? (233)

2. कम से कम दो तरीकों के नाम बताइएं कि मसीहा ने मिलाप वाले तंबू के प्रतीकों को पूरा किया। (234-236)

3. रोजमर्रा के जीवन से एक दृष्टांत का उपयोग करते हुए समझाइए कि, "पश्चाताप" करने का क्या अर्थ है। (237-238)

4. परमेश्वर ने यीशु के बारे में क्या कहा जो वह किसी अन्य व्यक्ति के बारे में नहीं कह सकता? (239)

5. किस तरह से बलिदान किए गए मेमने मानवजाति के पाप ऋण चुकाने के लिए परमेश्वर की योजना की छाया और प्रतिक प्रदान करते हैं? (241-244)

आपके अपने शब्दों में

यूहन्ना 1:29 को समझाइए। *"दूसरे दिन यूहन्ना बपतिस्मादाता ने यीशु को अपनी ओर आते देखा तो बोले, देखो, परमेश्वर का मेमना जो संसार के पाप का भार उठाकर ले जाता है।"* (240)

पाठ 23

पवित्रशास्त्र की पूर्ति

1. "एक प्रतिज्ञा एक मेघ है; पूर्ति यह बारिश।" समझाइए कि कैसे इस अरब मुहावरे का उपयोग पृथ्वी पर एक उद्धारकर्ता भेजने के लिए परमेश्वर की योजना को दर्शाने के लिए किया जा सकता है। (245)

2. यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि फसह पर्व के दौरान उसे मारा जाएगा। आपको क्यों लगता है कि परमेश्वर ने इस विशेष समय में अपने पुत्र के मरने की योजना बनाई थी? (247-248; पन्ने 224-225 भी देख)

3. अपने शिष्यों के साथ फसह पर्व के भोज में, यीशु ने रोटी तोड़ी और सबको प्याला भी दिया। रोटी क्या दर्शाती है? प्याला क्या दर्शाता है? (248)

4. जब सैनिक यीशु को पकड़ने के लिए आए तो उसने अपना बचाव क्यों नहीं किया? (249-250)

5. महायाजक ने यीशु पर ईशनिंदा का आरोप क्यों लगाया? (251-252)

आपके अपने शब्दों में

उत्पत्ति 22, पद 8 और 14 में अब्राहम की दो भविष्यवाणियां समझाइए। *"परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेमने का प्रबन्ध करेगा। ....प्रभु पहाड़ पर प्रबन्ध करेगा।"* (253)

पाठ 24

पूरा चुकाया दाम

1. वध करने का अब तक का सबसे क्रूर राज्य-प्रायोजित तरीका आप किसे मानते हैं? यीशु के लिए धार्मिक और राजनीतिक नेताओं ने फांसी का कौनसा तरीका चुना? (254)

2. पाप के कारण अलगाव के तीन स्तर क्या हैं? आप इस अवधारणा के बारे में कैसा महसूस करते हैं कि, क्रूस पर, यीशु ने तीनों स्तरों का अनुभव किया? (257 [मृत्यु के तीन-स्तरीय अलगाव की समीक्षा करने के लिए, पन्ने 133-137 देखें])

3. यीशु के लिए क्रूस पर मरना क्यों आवश्यक था? (256-260)

4. कैसे प्रभु यीशु कुछ ही घंटों में पापियों के लिए अनंतकल के लिए दंड को भोग सकता है? (258-260)

5. मंदिर के परदे का ऊपर से नीचे तक फट जाने का क्या महत्त्व था? (260-262)

आपके अपने शब्दों में

यूहन्ना 19:30 को समझाइए। *"जब यीशु ने सिरका ग्रहण कर लिया तब कहा, 'पूरा हुआ' और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।"* (259-260)

पाठ 25

मृत्यु पराजित हुआ

1. यह अफवाह किसने फैलाई कि शिष्यों ने यीशु के शव को कब्र से चुरा लिया है? उन्होंने यह कहानी क्यों गढ़ी? (266-267)

2. किस प्रकार यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और पुनरुत्थान की घटना शैतान के लिए पराजय थी? (268-269)

3. आप कौनसा प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं जो यह सिद्ध करे कि यीशु मृतकों में से जी उठा? (269-270)

4. पवित्रशास्त्र के माध्यम से हमारी यात्रा के शरुआत में, हमने देखा कि परमेश्वर ने सृष्टि का अपना कार्य पूरा करने के बाद “विश्राम” किया। परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के बारे में हम इससे क्या महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं? (273)

5. पुनरुत्थित होने के बाद यीशु ने चालीस दिन क्या किया? आपको इसके बारे में सबसे रोमांचकारी क्या लगता है, अगर कुछ है? (274-275)

आपके अपने शब्दों में

1 कुरिंथियों 15:3-4 के महत्त्व को समझाइए। “पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिए मरे, वह गाड़े गए तथा पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठे।” (268)

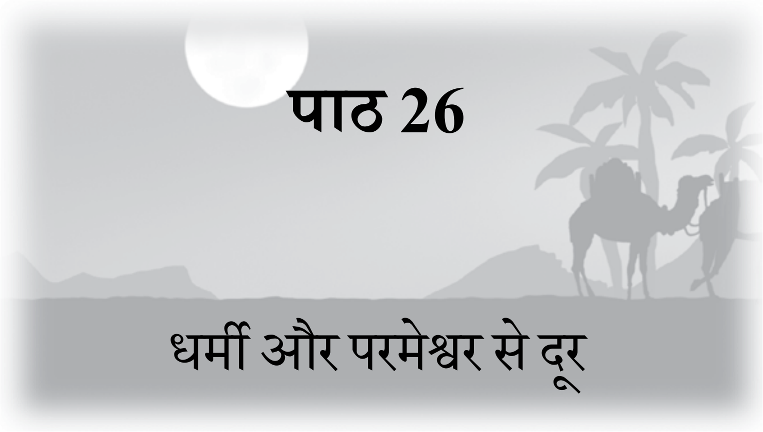

पाठ 26

धर्मी और परमेश्वर से दूर

1. यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले परमेश्वर ने पापों को कैसे क्षमा किया? परमेश्वर आज पापों को कैसे क्षमा करता है? ढांपे गए पापों और रद्द किए गए पापों के बीच के अंतर के बारे में संक्षिप्त स्पष्टीकरण को शामिल करो। (277-279; पन्ने 240-244 भी देख)

2. हमारे विश्वास की वस्तु हमारे विश्वास के शक्ति (या राशी) से अधिक महत्वपूर्ण क्यों है? (278-279)

3. क्या आपको लगता है कि परमेश्वर लोगों को अपने स्वर्गीय घर में प्रवेश करने की अनुमति देगा यदि उनके अच्छे काम उनके बुरे कामों से अधिक हैं? उद्धार की इस "मापने की विचारधारा" पर अपनी स्थिति स्पष्ट करें। (279-281)

4. बाइबल के अनुसार, एक पापी कैसे अनंत न्याय से बच सकता है और परमेश्वर के पवित्र और सिद्ध उपस्थिति में हमेशा के लिए जीने के योग्य हो सकता है? (281-283)

5. भले काम उद्धार की आवश्यकता के बजाय उद्धार का परिणाम क्यों है? (282-284)

आपके अपने शब्दों में

प्रेरितों के काम 16:31 को समझाइए। *"प्रभु यीशु पर विश्वास करो तो तुम एवं तुम्हारा परिवार उद्धार पाएगा।"* (291)

पाठ 27

चरण 1: परमेश्वर की पिछली योजना

1. पाठ 27 में सत्य-खोजनेवाले यात्री (294-298), क्रूस पर टंगा अपराधी (300-301), एक नरभक्षी जाति (302), एक जवान आत्मघाती लड़की (302-303), एक धार्मिक कट्टरपंथी (303-304), और एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम जवान लड़की (310-312). के बारे में परिवर्तित करनेवाली कहानियां मौजूद हैं। आप किस कहानी को सबसे अच्छी तरह से पहचानते हैं और क्यों?
2. क्रूस पर टंगे एक अपराधी से, यीशु ने कहा, "आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा!" पश्चातापी अपराधी किससे बचाया गया? उसी तरह, यीशु की प्रतिज्ञा के आधार पर, जिस अपराधी की मृत्यु हुई, उसी क्षण उसने अपने आपको किस स्थान पर पाया? (300-301)
3. आप एक बच्चे को न्याय, दया और अनुग्रह की अवधारणाओं को कैसे समझाएंगे? (305)
4. मनुष्य की "दोहरी मुसीबत" क्या है? परमेश्वर का "दोहरा इलाज" क्या है? (307-309)
5. बाइबल के अनुसार, क्या लोग जान सकते हैं कि वे अनंतकाल कहां व्यतीत करेंगे? क्या आप जानते हैं कि मरने के बाद आप कहां जाएंगे? अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। (310 -312)

आपके अपने शब्दों में

2 कुरिंथियों 5:21 को समझाइए। *"मसीह जो पाप से अपरिचित थे, उनको परमेश्वर ने हमारे लिए पाप बना दिया, जिससे हम उनके द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त कर सकें।"* (308-310)

पाठ 28

चरण 2 : परमेश्वर की वर्तमान योजना

1. आज अत्यधिक लोग भय की जकड में क्यों जीवन व्यतीत करते हैं? (313)

2. पवित्रशास्त्र के अनुसार, पवित्र आत्मा कौन है और उसने उनके लिए क्या किया है जिन्होंने मसीह पर विश्वास रखा है? (314-315)

3. क्या कोई जो परमेश्वर की आत्मा द्वारा नया जन्मा पाया है, पाप करना और परमेश्वर को अप्रसन्न करना चाहेगा? "सूचि या प्रेम" उदाहरण का उपयोग करते हुए, एक ऐसे व्यक्ति के बीच अंतर स्पष्ट करें जो केवल एक धर्म का पालन करता है और एक व्यक्ति जो वास्तव में परमेश्वर के साथ एक वास्तविक संबंध का आनंद लेता है। (320-322)

4. पानी के बपतिस्मा का सच्चा अर्थ क्या है? (323)

5. एक विश्वासी का स्थान और एक विश्वासी की अवस्था के बीच में एक महत्वपूर्ण अंतर है। पिता/पुत्र के उदाहरण का उपयोग करते हुए, इस अंतर का वर्णन करें। (326-328)

आपके अपने शब्दों में

1 पतरस 1:16 को समझाइए। *"तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।"* (328)

पाठ 29

चरण 3 : परमेश्वर की भविष्य की योजना

1. शैतान को कुचलने और पाप को दूर करने के परमेश्वर के तीन चरणों की योजना का वर्णन करें। (331; पन्ना 298 भी देखें)

2. मसीह का पृथ्वी पर दूसरा आगमन उसके पहले आगमन से आश्चर्यजनक रूप से कैसे भिन्न होगा यह बताएं। (336-337)

3. भजन संहिता 72:7-19 फिर से पढ़ें, फिर कुछ तरीकों की सूचि बनाएं कि संसार के शासक और लोग यीशु मसीहा-राजा के प्रति अपनी अधीनता दिखाएंगे। (338-340)

4. यीशु मसीह के हजार-वर्षो के शासन के दौरान, आदम के पाप द्वारा लाया गया श्राप ज्यादातर उठा लिया जाएगा। इसका पृथ्वी ग्रह पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा? (342-343)

5. क्या आप इससे सहमत हैं कि प्रकाशितवाक्य 20:10-15 इतिहास में सबसे पवित्र घटना का वर्णन करता है? अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए। (344-345)

आपके अपने शब्दों में

1 यूहन्ना 3:2 में आप क्या देखते हैं इसे समझाइएं। *"प्रियो, हम अब परमेश्वर की सन्तान हैं, लेकिन अभी तक यह प्रकट नहीं हुआ कि हम क्या होंगे; इतना जानते हैं कि जब मसीह प्रकट होंगे तब हम उनके सदृश होंगे, क्योंकि हम भी उनको वैसा ही देखेंगे जैसें वह है।"* (347)

पाठ 30

स्वर्ग का पूर्वदर्शन

1. "यिन-यांग" का दृष्टिकोण किस प्रकार से बाइबल के विरुद्ध है? (348-349)

2. स्वर्ग के विषय में लोगों की दो गलत धारणाओं के नाम लिखिए। परमेश्वर के स्वर्गीय घर का सच्चा ध्यान क्या है? (351-352)

3. मुक्ति की अद्भुत कहानी जो उत्पत्ति में आरंभ हुई और प्रकाशितवाक्य में समाप्त होती हैं। एक मिनिट अथवा दो से (अथवा, अगर लिखा, तो अधिकतम 300 शब्द) अधिक न लेते हुए, उस कहानी को सारांशित करें कि परमेश्वर ने असहाय विश्वासियों को शैतान, पाप और अनंत मृत्यु से कैसे छुडाया। (349, 356-359)

4. आपको क्या लगता हैं कि लोगों को "अंतत: हमेशा सुखी रहने लगे" कहानियों सुनने में मजा क्यों आता हैं? क्या आप बाद में ख़ुशी से रहेंगे? आपके उत्तर का आधार क्या है? (358-361)

5. पवित्रशास्त्र के माध्यम से यह अनहोनी यात्रा आपके लिए कैसे लाभदायक रही?

आपके अपने शब्दों में

बताएं कि प्रकाशितवाक्य 21:27 में वर्णित तस्वीर में आप कहा फिट बैठते हैं। *"लेकिन कोई भी अपवित्र वस्तु अथवा कोई घृणित अथवा असत्य आचरण करने वाला उसमें प्रवेश नहीं करने पाएगा, वरन केवल वे लोग जिनके नाम मेमने की जीवन-पुस्तक में लिखे हैं।"* (361)

पत्रिका

पत्रिका

पत्रिका

महिमा का राजा

सचित्र पुस्तक

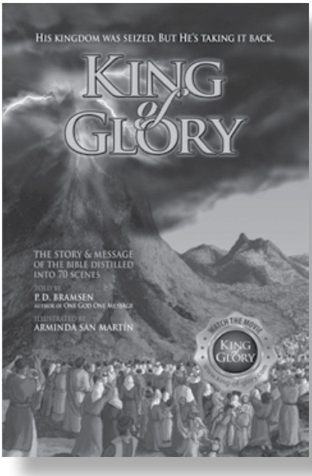

भविष्यद्वक्ताओं के लेखों को 70 दृश्यों में सारभूत किया हैं

पी. डी. ब्रॅमसेन, लेखक
आर्मिंडा सॅन मार्टिन, चित्रकार

अब तक की सबसे उत्तम कहानी और संदेश 70 उज्वल और स्पष्ट चित्रों के साथ -70 आसानी से पढ़ी जाने वाली कहानियों में अनावरण किया गया। विश्व का राजा और उसकी विद्रोही प्रजा को बचाने की योजना के बारे में यह कालानुक्रमिक वर्णन सभी उम्र के लोगों के लिए है।

“हमें बहुत पसंद है। यह बहुत अच्छी तरह से बनाया गया है। समझने के लिए बहुत कुछ है। हम इसे एक परिवार के रूप में पढ़ रहे हैं, एक रात में 7 या 8 दृश्य। हमारा 12 साल का बेटा उसे अपने कमरे में ले गया और नीचे नहीं रख सका। उसने हमसे कहा, ‘पापा और ममा, यह अब तक का सबसे शानदार तरीका है जिसे मैंने बाइबल सिखाते हुए सुना है।’” — हॉली, चार बच्चों की मां, साउथ पॅसिफिक

रॉक इंटरनॅशनल

प्रस्तुत करता है

महिमा का राजा

सिनेमा

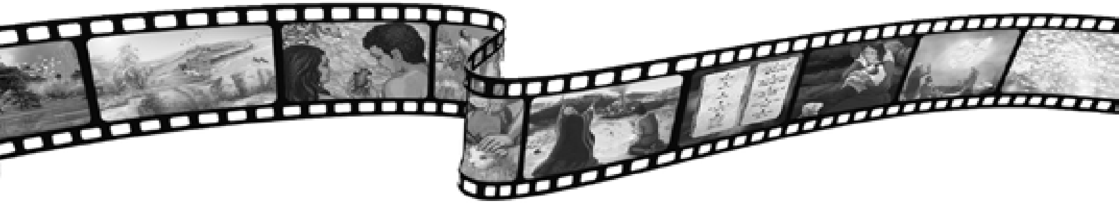

पुस्तक के माध्यम से एक मनोरम, आंखे-खोलनेवाली,
शब्द-दर-शब्द ऑडियो दृश्य यात्रा

• 222 मिनिट • 70 दृश्यों को 15 उपख्यान में आयोजित किया है • सभी उम्र और संस्कृति के लोगों के लिए • कई भाषाओं में उपलब्ध है

www.king-of-glory.com

एक ही परमेश्वर एक ही संदेश

इसे साझा करें!

सम्मोहक स्पष्टता के साथ, भविष्यद्वक्ताओं के धर्मग्रंथों के माध्यम से यह आमंत्रित और सूचित यात्रा समय और अनंतकाल के लिए आशा प्रदान करती है। कई भाषाओं में उपलब्ध है।

www.One-God-One-Message.com

"इस पुस्तक को पढ़ने के बाद बाइबल का तर्क समझने में आता है और मेरे मन को प्रेरित करता है। इसने मुझमे बाइबल पढ़ने की रूचि उत्पन्न की है।" — मोहम्मद, मीडल ईस्ट

"यह पुस्तक सच्चाई की एक खदान है; लेखन शैली अनोखी है; यह मानव हित से भरा है।" — विल्यम मॅकडोनाल्ड, बिलीवर्स बाइबल कमेंट्री के लेखक

Relief Opportunity & Care for Kids

ROCK INTERNATIONAL

Resources Of Crucial Knowledge

www.rockintl.org

रॉक इंटरनॅशनल यह एक गैर-लाभकारी संगठन है जो इस दु:ख से भरे संसार में यीशु के प्रेम को दिखाने की खोज करती है; एक ऐसा स्थान जहां बच्चे खतरे, दुर्व्यवहार और उपेक्षा के बीच राहत, अवसर, और देखभाल पाते है; एक ऐसा स्थान जहां जवान और बूढ़े समान रूप से ऐसे संसाधन पाते है जो अब तक की सबसे उत्तम कहानी और संदेश की स्पष्ट समझ पैदा करते हैं।